प्रकाशकका निवेदन

प्रिय पाठकों ! सस्ती साहित्य-पुस्तक-मालाका यह चतुर्थ पुष्प, चण्डीचरणसेन ग्रन्थावली, प्रथम खंड (टामकाकाकी कुटिया) आज आपकी सेवामें भेंट करता हूँ। अँग्रेजीमें 'मिसेज़ स्टो' कृत "अंकिल टॉम्स केबिन" (UNCLE TOM'S CABIN) नामक पुस्तकका बड़ा आदर है। इस पुस्तकमें अमेरिकामें गुलामोंपर किये गये अत्याचारका जीता-जागता चित्र खींचा गया है। इसमें आँखों-देखी सत्य घटनाका—केवल नाम और पते बदलकर—वर्णन किया गया है। इस उपन्यासने अमेरिकाके गोरे समाजमें बड़ा उथल-पुथल मचा दिया था। इसके प्रथम संस्करणकी ३१३००० प्रतियां केवल यूनाइटेड स्टेट्समें ही बिक गयी थीं और केवल दस वर्षमें ही इसके १४०० संस्करणसे भी अधिक छप गये। अपने देशवासी भारतीयोंके लिए उपयोगी समझकर, बङ्गालके ख्यातनामा स्वर्गीय चण्डीचरणसेनजीने इसे बंगला भाषामें अपने साँचेमें ढालकर "टामकाकार कुटीर" के नामसे प्रकाशित किया। यह पुस्तक इन्हीं चण्डी बाबूकी पुस्तकका अनुवाद है। चण्डी बाबू उपन्यास लिखनेमें कितने सिद्धहस्त हैं, यह उनकी 'महाराज नन्दकुमारको फाँसी', 'दीवान गंगागोविन्दसिंह', 'मानकुमारी', आदिके पढ़ने वाले पाठकोंसे छिपा नहीं है। यदि हिन्दी-प्रेमी पाठकोंने इसे पसन्द किया, तो चण्डीबाबू-लिखित अन्य ग्रन्थ भी इसी सस्ती साहित्यपुस्तकमालामें प्रकाशित किये जायेंगे।

प्रकाशक

स्थायी ग्राहकोंकी आवश्यकता

है, इसलिये कि दूकानदार, छोटे-बड़े, प्रसिद्ध-अप्रसिद्ध प्रायः सभी हमसे अधिकसे अधिक कमीशन चाहते हैं। साधरण कमीशनपर वेचनेको तैयार नहीं हैं। इसलिये आपसे निवेदन है कि आप इस मालाके स्थायी ग्राहक अवश्य बनें। पर्याप्त ग्राहक होनेपर हम पुस्तकोंका मूल्य और भी कम रख सकेंगे।

अभी भी हमारी मालाकी प्रत्येक पुस्तकका मूल्य एक रुपयेमें ५१२ पृष्ठके हिसावसे होता है। स्थायी ग्राहकोंको तो वह लगभग ७०० पृष्ठके पड़जाता है। कागज, आकार आदि इसी पुस्तकके अनुसार होगा।

सस्ती साहित्य-पुस्तक-मालाके नियम

१—एक रुपया प्रवेश-शुल्क देकर प्रत्येक सज्जन स्थायी ग्राहक बन सकते हैं। यह शुल्क लौटाया नहीं जायगा।

२—स्थायी ग्राहकोंको मालाकी प्रत्येक पुस्तककी एक-एक प्रति पौने मूल्यमें मिलेगी।

३—मालाकी प्रत्येक पुस्तक लेने न लेनेका अधिकार ग्राहकोंको होगा। इसमें हमारा किसी तरहका बन्धन नहीं है।

४—पुस्तकके प्रकाशित होनेपर उसके मूल्य आदिकी सूचना ग्राहकोंको दे दी जायगी और उसके १५ दिन बाद पुस्तक वी० पी० से भेज दी जायगी।

५—जिन लोगोंको जो पुस्तक न लेनी हो, वह सूचना पाते ही उत्तर दें। जिसमें वी० पी० न भेजी जाय। वी० पी० लौटानेसे उनका नाम ग्राहक-श्रेणीसे पृथककर दिया जायगा। यदि वे पुनः नाम लिखाना चाहेंगे, तो वी० पी० खर्च देकर लिखा सकेंगे।

पताः—सस्ती साहित्य-पुस्तक-माला कार्य्यालय,
बनारस सिटी।

साहित्य-सेवा-सदन, काशी

पुस्तकोंका संक्षिप्त सूचीपत्र

काव्य-ग्रन्थ-रत्न-माला—रत्न १

बिहारी-सतसई सटीक

(सम्पूर्ण)

टीकाकार-लाला भगवानदीनजी प्रो० हिन्दू यूनिवर्सिटी, काशी। इसमें बिहारीके प्रत्येक दोहेके नीचे उसके शब्दार्थ, भावार्थ, विशेषार्थ, वचन-निरूपण, अलंकार आदि सभी ज्ञातव्य बातोंका समावेश किया गया है। सरस्वती शारदा, सौरभ आदि पत्रिकाओंने तथा बड़े बड़े दिग्गज विद्वानोंने इस टीकाकी मुक्तकंठसे प्रशंसा की है। प्रथम संस्करण हाथो-हाथ बिक गया। द्वितीय परिवर्द्धित तथा संशोधित संस्करण छपकर तय्यार है। मूल्य १।=) सचित्र १॥)

काव्य-ग्रन्थ-रत्न-माला—रत्न २

श्रीकृष्ण-जन्मोत्सव

लेखक—श्रीयुत देवीप्रसाद 'प्रीतम'। यह ग्रन्थ भगवान श्रीकृष्णकी जन्म-सम्बन्धिनी पौराणिक कथाओंका एक खासा दर्पण है यह पुस्तक भगवद्भक्तोंके पढ़ने तथा बालकोंको उपहारमें देन योग्य है। मूल्य केवल ।-), एंटीक कागज़के सचित्र संस्करण का ।=)

काव्य-ग्रन्थ-रत्न-माला—रत्न ३

रामचन्द्रिका

हिन्दी साहित्यके आचार्य महाकवि केशवकृत रामचन्द्रिका-का संशोधित तथा शब्दकोष और भरपूर टिप्पणी-युक्त संस्करण। (छप रही) है।

काव्य-ग्रन्थ-रत्न-माला-रत्न ४

केशव-कौमुदी

इस पुस्तकमें रामचन्द्रिकाके मूल छन्दोंके नीचे उनके शब्दार्थ, भावार्थ विशेषार्थ, नोट, अलङ्कारादि दिये गये हैं। कविके चमत्कार-निदर्शनके साथ-ही-साथ काव्यगुण-दोषोंकी विवेचना की गई है। आये हुए लक्षण भी दिये गये हैं। टीकाकार हिन्दू-विश्वविद्यालयके प्रोफेसर लाला भगवानदीनजी हैं। इसमें रंग-विरंगे चित्र भी हैं। प्रथम भाग (पूर्वार्द्ध) का मू०२।।।), सजिल्द) । २) द्वितीय भाग (उत्तरार्द्ध)२।), स० २।।)

काव्य-ग्रन्थ-रत्न-माला-रत्न ५

रहिमन-विलास

रहीमकी कविताओंके इस संग्रहमें कई विशेषतायें हैं। इसका पाठ बड़े परिश्रमसे संशोधित किया गया है। अभी तक ऐसा अच्छा और इतना बड़ा संग्रह कहींसे भी प्रकाशित नहीं हुआ है। इसमें श्रृङ्गार-सोरठ, मदनाष्टक, रहीम-काव्य, पाठान्तर तथा भरपूर टिप्पणियां भी दी गई हैं। द्वितीय संशोधित तथा परिवर्धित संस्करण छप रहा है।

काव्य-ग्रन्थ-रत्न-माला—रत्न ६

विनय-पत्रिका सटीक

टीकाकार—वियोगी हरि। इसमें भी मूल पदोंके नीचे शब्दार्थ, प्रसंग आदि देकर खूब सरल भाषामें भावार्थ दिया गया है। भावार्थके नीचे टिप्पणी देकर वेदान्तकी बारीकियोंको खूब ही समझाया गया है। संस्कृत तथा हिन्दी-कवियोंके चुने हुए अवतरण भी प्रसंग-पुष्टिके लिए दिये गये हैं। मूल्य ७७० पृष्ठोंकी पुस्तकका २।।), सजिल्द २।।।), कपड़ेकी जिल्द ३) ।

काव्य ग्रन्थ-रत्न-माला—रत्न ७

गुलदस्तए-विहारी

लेखक—देवीप्रसाद 'प्रीतम'। यह गुलदस्तए-विहारी विहारी-सतसईके दोहोंपर रचे हुए, उर्दू शैरोंका संग्रह है। इन शैरोंकी पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी, पद्मसिंह शर्म्मा, मिश्र-बन्धु, लाला भगवानदीन, वियोगी हरि आदि उद्भट् विद्वानोंने मुक्तकंठसे प्रशंसा की है। मू० ॥।=)। स०राजसंस्करणका १॥)

भारतेन्दु स्मारक-ग्रन्थ-मालिका—संख्या १

कुसुम-संग्रह

सम्पादक-पं० रामचन्द्र शुक्ल, प्रो० हिन्दू-विश्व-विद्यालय तथा लेखिका हिन्दी-संसारकी चिरपरिचित श्रीमती बङ्गमहिला। इस पुस्तकमें बङ्गभाषाके रवीन्द्रनाथ ठाकुर, देवेन्द्र कुमार राय, रामानन्द चट्टोपाध्याय आदि धुरन्धर विद्वानोंके छोटे-छोटे उपन्यासों तथा लेखोंका अनुवाद है। भारतीय महिलाओंके लिए बड़े कामकी है। इसे संयुक्त-प्रान्तकी गवर्नमेण्टने पुरस्कार पुस्तकों तथा पुस्तकालयों (Prize books and Libraries) के लिए स्वीकृत किया है। मूल्य १॥)

भारतेन्दु-स्मारक-ग्रन्थ-मालिका—संख्या २

मुद्राराक्षस

भारत-भूषण भारतेन्दु हरिश्चन्द्रजीके मुद्राराक्षसका अभीतक कोई शुद्ध तथा विद्यार्थियोंके लिये उपयोगी संस्करण नहीं निकला था। जो संस्करण आजकल बाजारमें बिक रहा है वह अत्यन्त अशुद्ध है। इसमें आलोचनात्मक भूमिकाके साथ-ही-साथ भरपूर टिप्पणी भी दी गयी है। सं० ब्रजरत्नदास, संशोधक-बा० श्यामसुन्दरदास तथा पं० रामचन्द्र शुक्ल। लगभग साढ़े तीन सौ पृष्ठकी पुस्तकका १)।

पुस्तक-भवन, काशी द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

एम० ए० बनाके क्यों मेरी मिट्टी खराब की ?

इसके पढ़नेमें दिल लगता है, और कुतूहल पैदा होता है। आजकल युनिवर्सिटीकी उपाधियोंके लिये लालायित होनेवाले नवयुवकोंको यह पुस्तक एक बार अवश्य पढ़नी चाहिये।

शैलबाला

यह एक ऐतिहासिक मनोरंजक तथा चित्ताकर्षक उपन्यास है। इसमें कुमार अमरेन्द्र और गोविन्दप्रसादका अत्याचार, दृढप्रतिज्ञ सुरेन्द्रसिंहकी वीरता, शैलबालाका आदर्श प्रेम और सतीत्व-रक्षा, योगिनीकी अद्भुत लीला इत्यादि पढते-पढते कभी आपको हँसी आवेगी तो कभी रुलाई, कभी घृणा उत्पन्न होगी तो कभी आसक्ति। इस उपन्यासके पढ़नेसे आपको पता चलेगा कि अन्तमें धर्मात्माओंकी, अनेक कष्टोंके सहनेपर, कैसी जीत होती है और दुरात्माओंकी कैसी दुर्दशा। मूल्य २०० पृष्ठोंकी सचित्र पुस्तकका केवल १)

विसर्जन

लेखक रवीन्द्रनाथ ठाकुर। यह अहिंसात्मक करुणरस-पूर्ण नाटक है। इसमें जीव-बलि निषेध किया गया है, और उससे उत्पन्न हानियोंका दिग्दर्शन कराया गया है। पुस्तकके भाव बड़े ऊँचे दर्जेके हैं। मूल्य ॥)

बाल-मनोरंजन

इसमें बालकोंके लिये शिक्षाप्रद मनोरंजक कहानियोंका संग्रह है। पुस्तककी भाषा बडी ही सरल है। दो भागोंमें समाप्त हुई है। मूल्य प्रत्येक भागका ।=)

॥ श्रीः ॥

दास काकाकी कुटिया

पहिला परिच्छेद

दास-व्यवसायीकी दया

माघका महीना है। संध्याका समय है। केण्टाकी प्रदेशके एक नगरके एक घरमें दो सज्जन, भोजनोपरान्त, संनिकट बैठकर, एकाग्र मनसे कुछ वादविवाद कर रहे हैं।

मैंने दोनोंका सज्जन नामसे ही परिचय कराया है किन्तु इसी समय यदि कोई ज़रा भी ध्यानसे देखे तो वह स्पष्ट जान जायगा कि इन लोगोंमेंसे एक सज्जनको ठीक सज्जनोंकी श्रेणीमें नहीं रखा जा सकता। इस व्यक्तिका शरीर नाटा एवं स्थूल है। उसके शरीरकी गठन भी साधारण है। वेष-भूषा अत्यन्त आडम्बरपूर्ण है। उसके हाव-भावसे सज्जनोंके अनुकरणकी चेष्टा प्रकट हो रही है मानों यह वर्त्तमान कालमें अर्थ-संचय-दूषक सामाजिक रचनाकी अन्धकार-पूर्ण, अन्तर्दृष्टाओं गुहासे मस्तक निकालनेकी चेष्टा कर रहा है। यह व्यक्ति स्वभावतः अशुद्ध भाषामें बात-चीत कर रहा है। बीच-बीचमें उसके मुखसे अनेक अश्लील शब्द भी निकल पड़ते हैं।

द्वितीय व्यक्ति गृहका स्वामी है। इसका आकार-प्रकार सज्जनोचित है। इसका नाम आर्थर शेल्बी है। पहिले व्यक्तिका नाम हेली है।

दोनोंकी बहुत देर तक बात-चीत होती रही। मैं उन लोगोंके कथोपकथनके मध्य-भागसे आरम्भ करता हूँ।

शेल्बी कह रहे थे—मैं इस प्रकारका प्रबन्ध करना चाहता हूँ।

हेली—नहीं, मिस्टर शेल्बी। मैं इस भाँतिके प्रबन्धसे किसी प्रकार सहमत नहीं हो सकता, कभी नहीं।

शेल्बी—मुख्य बात क्या है, सो तो जानतेही हो। टाम साधारण दासोंकी भाँति नहीं है। जिस किसी स्थानपर दे., मैं टामको इसी मूल्यपर सहजमें ही बेच सकता हूँ। टाम सच्चरित्र, विश्वस्त, एवं प्रत्येक कार्यमें दक्ष है। वह मेरे सब कामोंको अत्यन्त सुन्दर रूपसे सम्पादन करता है।

हेली—क्रीत दासोंका चरित्र जैसा होता है, तुम्हारे टामका भी वैसाही होगा?

शेल्बी नहीं जी, नहीं। टाम सचमुच ही सच्चरित्र एवं धार्मिक व्यक्ति है। इन कई वर्षोंमें मैं कितनेही काम उसके विश्वासपर छोड़ता आया हूँ किन्तु उसने कभी भी विश्वासघात नहीं किया।

हेली—अनेक लोग ऐसाही सोचते हैं। काफ़िर दास बिलकुल धर्मज्ञानसे शून्य होते हैं, किन्तु मैं तो ऐसा नहीं समझता। मैं, गत वर्ष एक दास ओर्लिन्स ले गया था। वह बड़ा धर्मात्मा, शान्त तथा सुशील था। उसको ले जानेसे मुझे बड़ा लाभ हुआ। वह जिनके पास था, उन्हें किसी बातकी बड़ी आवश्यकता थी, वे बड़े विपन्न थे इसीलिए बहुत सस्तेमें ही वह मिल गया था। अन्तमें उसे बेचनेपर मुझे

बड़ा लाभ हुआ था। सच्चा धर्म तो बहुत ही मूल्यवान वस्तु है। इसके होनेसे गुलामोंका दाम बहुत बढ़ जाता है किन्तु माल सच्चा होना चाहिए।

शेल्वी—यदि संसारमें किसीके पास सच्चा धर्म-भाव है तो वह व्यक्ति टाम ही है। इसी, गत वर्षमे, मैंने किसी कार्य वश, टामको सिनसिनेट भेजा था। वहाँसे वह शीघ्रही मेरे प्राप्य पाँच सौ रुपये लेकर लौट आया। वहाँपर कई दुष्ट लोगोंने उसे रुपये लेकर भाग जानेकी सलाह दी; किन्तु टामने उनलोगोंकी बातोंपर कान ही न दिया। इस प्रकारके सच्चरित्र तथा विश्वस्त दासको बेचनेकी क्या मेरी इच्छा है? टामके मूल्यसे तो मेरा सारा ऋण चुकाया जा सकता है। तुममें यदि विवेक है तो उसके अनुरोधसे टामको लेकर मुझे ऋण देनेसे अवश्यही मुक्त कर दोगे।

हेली—भाई, वाणिज्य-व्यवसायी लोग जितना विवेक रखकर व्यवसाय चला सकते हैं उतना विवेक मुझमें भी है। किन्तु इस वर्ष बाज़ारकी व्यवस्था बहुत अच्छी नहीं है, यदि ऐसा न होता तो मैं तुम्हारा अनुरोध अवश्य मानता।

शेल्वी—तब तुम और क्या चाहते हो?

हेली—टामके साथ क्या एक लड़का या लड़की नहीं दे सकते?

शेल्वी—मेरे पास बेचनेके लिए और कोई लड़का या लड़की नहीं है। मैं कभी अपने दास, दासियोंको बेचनेकी इच्छा नहीं करता। नितान्त बाध्य होकर ही इस बार एक दास बेंच रहा हूँ।

शेल्वीकी बात समाप्त भी न होने पायी थी कि घरका द्वार खुला एवं पाँच-छः वर्षके एक वर्णसंकर (Quadroon) बालकने उस घरमें प्रवेश किया। बालक देखनेमें बड़ा सुन्दर

था। उसकी उज्ज्वल, कृष्ण, कुंचित, केशराशि उसके सुको-मल मुखके चारो ओर छायी हुई थी। उसकी दृष्टि उज्ज्वल होनेसे मृदुता-पूर्ण थी। उसके पहिननेके श्वेत वस्त्र उसके मुखकी शोभा और भी बढ़ा रहे थे। बालकका लज्जायुक्त नि-र्भीक-भाव देखकर ही समझा जा सकता है कि वह अपने स्वामीके निकट आदर प्राप्त किये हुए है।

शेल्बी बालकको देखते ही बोला—जिम, "इन्हें लेना तो" यह कहकर, एक मुट्ठी किस्मिस उसकी ओर फेंक दिया। बालक किसमिस लेने दौड़ा, यह देखकर उसका स्वामी हँसने लगा। किसमिस उठा लेनेपर, शेल्बीने, बालकको और पास बुलाया, उसके मस्तकपर हाथ रखकर तथा उसकी ठुड्डी पकड़कर प्यार करने लगे। अन्तमें बोले—जिम, तुम किस प्रकार का नाचना, गाना जानते हो, इन सज्जनको दिखा तो दो। तब बालकने अङ्ग भंगीके साथ, मुक्त कंठसे, निग्रो दासलोगोंकी अभ्यस्त एक गीत गायी।

हेलीने, 'वाह वाह' कहकर एक नारंगी छीलकर एक फली बालककी ओर फेंकी।

शेल्बीने कहा—जिम, तुम्हारा चाचा वात रोगग्रस्तके होनेके समय किस प्रकार चलता था, दिखाओ तो।

देखतेही देखते बालकके अंग प्रत्यंग मानो विकल हो गये। वह अपने स्वामीकी छड़ी लेकर मलिन मुखसे, वृद्धकी भाँति, चारों ओर, थू-थू करते हुए लँगड़ाकर घरके भीतर चलने लगा।

इसी प्रकारसे बालकने स्वामीकी आज्ञासे नाना प्रकारकी अपनी अनुकरण-निपुणता प्रदर्शित की

देखते-देखते, हेली बोल उठा,—वाह! वाह! कैसा ल डका है! तुमसे कहता हूं सुनो, इस लड़केको तुम दामके

साथ दे दो। ऐसा करने पर मैं तुम्हें एक बार अच्छा कामकर एक बार ही। यही करो—एक बार ही सब तय।

इसी समय एक वर्णसंकर युवतीने, धीरे-धीरे कठिन काम कर, घरमें प्रवेश किया। बालकको देखकर, एकबारे बच्चोंको ओर देखनेसे ही, उसे उस बालककी माता समझ लिया जा सकता है। दोनोंके ही नेत्र काले हैं। दोनोंके ही काले-काले सघन बाल एक समान रूपके हैं। हेली उसका सौंदर्य देखकर, एक टक उसीकी ओर देखने लगा। यह देखकर युवतीका मुख लज्जासे लाल हो गया। दास व्यवसायीने एक बार देखकर ही उसके प्रत्येक अंगकी गठन देख ली।

शेल्वी इलाइजाको देखकर बोले—इलाइजा! क्या चाहती हो।

"मैं हेरीको खोजने आयी हूँ।" बालक पाये हुए खाद्य द्रव्यको माताको दिखाकर उसके पास दौड़ गया।

शेल्बीने कहा—तो ले जाओ। युवती बालकको गोदमें उठाकर तुरंत वहाँसे चली गयी।

इलाइजाके चले जानेपर हेलीने कहा—क्या ही सुन्दरी दासी है! अर्लिन्समें इसे बेचकर तुम अतुल सम्पत्ति सञ्चित कर सकते हो। मैं हज़ार रुपये मूल्यपर जिन स्त्रियोंको बिकते देखता हूँ वे इससे किसी प्रकार भी सुन्दर नहीं होती।

शेल्वी—मैं इसे बेचकर अर्थ-सञ्चय करना नहीं चाहता।

यह कौन सी बात है? बोलो तुम इसके लिए कितने रुपये चाहते हो? कितने रुपये कहूँगा? तुमको कितना मिलने पर देना स्वीकार होगा?

हेली! इसको मैं कभी भी नहीं बेचूंगा। इसके शरीर-की तौलके बराबर स्वर्ण पानेपर भी मेरी पत्नी इसे बेचनेके लिए सहमत न होगी।

हेली बोला—स्त्रियाँ तो लाभ हानि कुछ समझतीं ही नहीं।

था। उसकी उ... ल्य है, सो तो वे जानतीं नहीं, किन्तु तुम एक
मल मुसके न...को समझाकर कहो। इसके बेचनेसे कितने
होनेसे म्न...च्छे गहने बन सकेंगे, कितने सुन्दर-सुन्दर कपड़े
...यें जा सकेंगे। तत्पश्चात् देखूंगा कि तुम्हारी स्त्री इसको बेचना चाहती है कि नहीं!

शेल्बी कुछ विरक्त होकर दृढ़ भावसे बोले—हेली! बारम्बार क्यों यही बात कहते हो? मैंने कह दिया कि इसे न बेचूंगा, इसे न बेचूंगा, एकबार, दोबार, कह दिया कि मैं ऐसा न करूंगा।

तब हेली बोला—अच्छा, तो लड़केको तो दोगे? मैं इसे कुछ अधिक मूल्यमें ही खरीदता हूं, तब तो यह तुम्हें अवश्य ही स्वीकार करना पड़ेगा।

शेल्बी—इस बालकसे तुम्हारा क्या प्रयोजन है?

हेली—मेरे एकभाई बिक्रीके लिए कई एक सुन्दर-सुन्दर बच्चे चाहते हैं। तुम्हारे समान बड़े लोग इस प्रकारके बच्चे, खरीदनेके लिए बड़ी इच्छा प्रकट करते हैं। ऐसे बच्चे एक प्रकारसे बड़े कामकी वस्तु हैं, बाजारमें इनका विलक्षण मूल्य है। कैसा गाना, बाना जानता है, यही तो बेचनेकी वस्तु है!

शेल्बी—मेरी इसको बेचनेकी इच्छा नहीं है। मेरे हृदयमें दया है। माताकी गोदसे इसे छीन लेना मेरा काम नहीं है।

हेली—हां, यह तो मैं समझता हूं। इस प्रकारके छोटे लड़कोंको बेचते समय उनकी माताएं चिल्लाने लगती हैं और तुम वही चिल्लाना सुनकर विरक्त हो जाते हो। किन्तु एक कौशल से काम करलेनेपर, जाननेसे यह चीत्कार न सुननी पड़ेगी। तुम मेरी बात सुनो। इसको बेचनेके कुछ पहिले किसी

कार्यके बहानेसे इसकी मांको किसी दूसरे अच्छा कामकर तत्पश्चात् इसे क्रेताके ले जानेपर जब वह घर ल तब उसे एक जोड़ा कर्णफूल अथवा इसी प्रकारद कठिन काम वस्तु मोल ले देना, ऐसा करनेपर उसका शोक नष्ट हो बच्चोंको

शेल्वी—शोक नष्ट हो जायगा, ऐसा विश्वास नहीं होर है।

हेली—शोक छूटेगा नहीं तो क्या? यह क्या कोई श्वेताङ्ग लोगोंकी भांति है? किसी चतुराईसे कार्य करना ही पड़ेगा। कोई कोई कहते हैं कि दास-विक्रीका व्यवसाय मनको कठोर बना देता है। कहां, मैं तो ऐसा कुछ समझ नहीं पाता। छोटे लड़के लड़कीको बेचनेके समय उनकी मां चिल्लाने लगती हैं, किन्तु एक चतुराईसे कार्य करनेसे ही उनके चीत्कारका निवारण किया जा सकता है। इन कौशलोंके न जाननेसे, हम वाणिज्य-व्यवसायी लोगोंमें से अनेक लोगोंकी बड़ी हानि होती है। अर्लिन्समें एकवार एक आदमीका व्यापारमें बहुत रुपया नष्ट होगया। उस मनुष्यने एक दासी खरीदी थी, उसके एक छोटा बच्चा था, वह किसी दूसरे स्थानपर बिका था। क्रेताने बच्चेको उसकी गोदसे छीनकर भूमिमें बैठा दिया और अच्छी तरहसे बांधकर घर लेगया। उसीसे वह स्त्री रोते-रोते पागलकी भांति होगयी, तत्पश्चात् कई दिनपर वह मर गयी। उन सज्जनने, कुछ लाभकी आशासे उसको हज़ार रुपये देकर मोल लिया था। इसीसे, उसकी इस प्रकारसे मृत्यु हो जानेसे उनकी एक हजार रुपयेकी हानि हुई। मैं सदा कौशलसे काम साधता हूं। इसीलिए मेरे कार्यमें किसी प्रकारकी हानि या बाधा नहीं पहुँचती। तुमने जो कहा है वह सत्य है। दास-दासियोंके साथ दया तथा स्नेहपूर्ण व्यवहार करना उचित है। मैं सदैव ही दयाके साथ कार्य करता हूं। मैं किसी स्त्रीकी गोदसे लड़केको न लेकर, उसको किसी कार्य-

था । अन्य स्थानमें भेजकर, उसकी अनुपस्थिति था । उसकी उ...लजाता हूँ । इससे दया, मया, स्नेह, धर्म्म सभी मल मुझके च...ती है । मैं सदैव इसी प्रकार दया-मयाको होनेसे ...रखकर कार्य करता हूँ, इसीसे क्षति किसे कहते हैं, जानता ही नहीं । बहुतेरे मेरी दयाकी कथा सुनकर हँसते हैं । वे समझते हैं कि मुझमें दया नहीं, किन्तु मैं क्या कभी क्षति-ग्रस्त हुआ हूँ । दया-मयाके साथ कार्य करनेसे क्या किसीकी कभी हानि हो सकती है ?

हेलीकी दयाकी कथा सुनकर गेल्वी हँसनेलगे; उनके हँसनेसे साहस पाकर हेली फिर कहनेलगा-यह बड़े आश्चर्यकी बात है कि लोग यह सब समझते नहीं । पहिले टमलकार नामके एक आदमी मेरे साझीदार थे-आदमी अच्छा था । काम भी खूब करता था, ऐसा आदमी मिलता नहीं किन्तु खरीदे हुए दासोंके लिये वह यम था । मैंने टमलकार को समझानेका कितना ही यत्न किया । मैं कहता था टमलकार-जब लड़कियां रोती हैं, तब उन्हें मारते मारते उनका सिर फोड़ देनेसे क्या लाभ होता है ? उनके रोनेसे हानि ही क्या है ? रोना तो स्वाभाविक है । जो स्वाभाविक है वह तो रुक नहीं सकता. उसे छोड़कर,मार खानेसे देखनेमें बुरा लगता है,...उससे हमारी कितनी हानि होती है । मैं और भी कहता था कि तुम मधुरवाणीसे इन लोगोंसे क्यों नहीं बोलते. आठो पहर इन लोगोंको मारनेसे जो काम नहीं होता, वह बीच-बीचमें दो एक मीठी बातें कर देनेसे ही बन जाता है । किन्तु टमलकार ये सब बातें नहीं समझता था । उसके साथ रहनेपर जब मेरी हानि होने लगी, तब मैंने उसके साथ साझे-का कारबार करना छोड़ दिया । किन्तु आदमीका स्वभाव भला था । इस प्रकारका दूसरा आदमी नहीं है ।

शेल्वी—क्या तुम हालकारसे बढ़कर अच्छा कामकर सकते हो ?

हेली-इसमें भी क्या कुछ सन्देह है ? जो बहुत कठिन काम होते हैं उन्हें मै बड़ी सावधानीसे करता हूं। छोटे बच्चोंको बेचनेके समय मैं उनकी माताओंको दूसरी जगह भेजदेता हूं। आखोंके दूर चली जानेपर मन भी दूर चला जाता है। अन्तमें जब उनके मिलनेकी आशा नहीं रहती, तब वे दुःख सहन कर लेती हैं। श्वेताङ्ग लोगोंकी भाँति, मैं स्त्री-पुत्र तथा परिवारके साथ एकत्र रहूँगा, काले दासोंको ऐसी आशा न करनी चाहिए। जिन्होंने बराबर उपयुक्त शिक्षा पाई है, वे दास दासियां इस प्रकारकी आशा नहीं रखतीं।

शेल्वी—तो मैं समझता हूं कि मेरे दास दासियोंने उपयुक्त शिक्षा नहीं पायी।

हेली—यह जान पड़ता है कि नहीं पाई। तुम सब केण्टाकी प्रदेशके लोग क्रीतदास लोगोंको बहुत खराबकर देते हो। तुमलोग उनका भला करना चाहते हो, किन्तु करते हो ठीक उसके विरुद्ध। एक क्रीतदास आज एक जगह, कल टमके घर जायगा, परसों डिक उसको खरीद लेगा, तत्पश्चात् किसी और एक आदमीका हो जायगा, इसी प्रकार वह सारे संसार में घूमेगा। हमारी सम्मतिमें उसको यदि तुम बड़े यत्नके साथ पालकर स्त्री, पुत्रके साथ मिलकर रहनेकी आशाको यदि स्थान देने दोगे, तो उसका कष्ट नितान्त दुस्सह हो जायगा। ऐसी दशामें इन लोगोंको प्यार करनेकी शिक्षा नहीं देनी चाहिए। तुमलोग काले और गोरेके बीचमें कुछ भेद रखना नहीं चाहते। किन्तु, क्या काले कभी गोरोंके बराबर हो सकते हैं ?

हेली इसप्रकार अंग्रेज वणिकोंके दया-धर्मके निगूढ़ तत्त्व

की व्याख्या कर मन ही मन अपनेको अन्य दयालुओंकी भांति सहृदय समझकर सोचने लगा। एवं अन्तमें एक ग्लास शेरी (शराव) द्वारा तृष्णा निवारणकर शेल्वीसे पूछा, "तुम क्या करोगे, वोलो ?"

शेल्वीने कहा—मैं अपनी पत्नीके साथ सलाह कर जो होगा वह फिर कहूंगा, किन्तु तुम जिस लिए आये हो, उसे मत प्रकट करना। कारण कि इस विक्रीकी कथाके प्रकट होतेही मेरे घरमें बड़ी गड़बड़ी मच जायगी। मेरी स्त्री प्राणान्त होने पर भी दास-दासी वेचनेसे सहमत न होगी।

हेली—मैं अभी ही एक दूसरे स्थानपर जानेवाला हूं-इसलिये आज ही तुम्हें यह सब ठीक करना होगा।

शेल्वी—तुम्हारे छः या सात वजे आनपर जैसा होगा, वैसा कहूंगा।

यह वात सुनकर हेलीके चले जानेके अनन्तर शेल्वी मन ही मन सोचनेलगे कि ऋण है या भयानक विपत्ति। इस दुष्टके ऋणी न होनेपर यदि यह मेरे पास टामको खरीदनेका प्रस्ताव करने आता तो मैं अवश्य ही इसका सत्कार लातोंसे करता। टाम अत्यन्त स्वामिभक्त है। किन्तु मैं ऋणके द्वारा इस दुष्टके हाथोंमें पड़ गया हूं, इसलिए वाध्य होकर टामको वेचना पड़ा, किन्तु इलाइजाके पुत्रके वेचनेका विषय किस प्रकारसे अपनी स्त्रीके सामने उपस्थित करूंगा।

उस समय केन्टाकी प्रदेशमें क्रीतदासोंके प्रति दक्षिण-प्रदेशोंकी भांति घोर अत्याचार नहीं किये जाते थे। लुसियाना आदि प्रदेशोंके अंग्रेज वणिकगण समधिक अर्थ लाभ करनेकी आशासे दास-दासियोंसे दिनरात काम कराते तथा एक भी त्रुटि होने पर वेतोंसे पीटते थे। पक्षान्तरमें केन्टाकी प्रदेशके दो एक सहृदय अंग्रेज दास-दासियोंके प्रति सर्वदाही सद्-

व्यवहार करते थे। दास-दासी भी अपने स्वामियोंमें अनुरक्त रहती थीं। किन्तु इन लोगोंमें आपसमें आदर्श सद्भावका संचार होने पर भी उससे दासत्व-प्रथासे समुत्पन्न कष्ट, यंत्रणा रत्तीभर भी घटती न थी। देशके प्रचलित कानूनके अनुसार ऋणके लिए सहृदय अंग्रेजोंके दासगण नीलामकर दिये जाते थे शेल्वी कभी भी निर्दयी न थे। वरन साधारणतः उन्हें सहृदय कहना स्वीकार किया जा सकता है। दास-दासियोंके प्रति निष्ठुर व्यवहार करके उनके हाथ कभी कलंकित न हुए थे, किन्तु वे उस दास-व्यवसायी निष्ठुरप्रकृति विशिष्ट हेलीने साहबके ऋणसे जकड़ गये थे। इस समय उस ऋणको चुकानेके लिए दास-दसियोंको वेचनेके अतिरिक्त और कोई अन्य उपाय ही न था। हेली ने पहिले ही उनके टाम नामक प्रभुभक्त दासको खरीदना चाहा था। टामको न वेचनेसे उनका सर्वस्व नीलाम हो जायगा। पहिले हेलीके साथ शेल्वीकी इसी ऋणके सम्बन्धकी बात-चीत हो रही थी। अन्तमें हेलीके टामको खरीदनेका प्रस्ताव करने पर अब तो शेल्वीको उससे सहमत होना पड़ा, किन्तु इलाइ-जाके बालकको वेचेंगे कि नहीं, यह अबतक भी निश्चित न हुआ था।

इलाइजाने, पुत्रको खोजनेके लिये शेल्वीके घरमें प्रवेश करनेपर सुन पाया कि हेली उसके बालकको वेचनेका प्रस्ताव-कर रहा है। इलाइजाने मनमें सोचा था कि भीतर ठहर-कर उन लोगोंकी सब बातें सुनूँगी, किन्तु शेल्वीसाहबकी मेमने उसे किसी दूसरे कामके लिये जानेको कहा, इसलिए वह उसी क्षण वहाँसे चली गयी। अपनी सन्तानकी बिक्रीकी बात सुनकर उसके हृदयमें भयका संचार हुआ। उसका हृदय कांपने लगा। वह हत् बुद्धि हो गयी। शेल्वीसाहबकी

मेमने उससे वस्त्र ले आनेको कहा, वह एक ग्लास लेकर उप-स्थित हुई, और जब एक ग्लास लानेको कहा तो एक बोतल ले आई। मेम, इससे चिढ़कर स्नेहपूर्ण वाक्यसे तिरस्कार करती हुई बोली—बेटी, तुमको क्या हो गया है?"

तब इलाइजा रोती रोती बैठ गयी शेल्बीकी मेमने फिर पूछा—बेटी, तुम्हें क्या हो गया है?" इलाइजा और भी रोने लगी। बहुत देरके पश्चात् इलाइजा बोली—माँ, बाबाके पास एक दास-व्यवसायी सज्जन आये हैं। मैंने उनकी बात-चीत सुनी है—उसी लिए—" शेल्बी साहबकी मेमने कहा, "तुम्हारा भला हो! दास-व्यवसायी आये हैं तो उससे क्या हुआ?"

तब इलाइजाने रोते-रोते फिर कहा—माँ! बाबा क्या मेरे हेरीको बेचेंगे?

शेल्बीकी मेमने तब प्रेम-पूर्ण वाक्यसे कहा—मूर्ख लड़की! तेरे हेरीको कौन बेचेगा? तू जानती नहीं कि तेरे बाबा दक्षिण-प्रदेशके निष्ठुर लोगोंके हाथ कभी दास दासी नहीं बेचते। वे अपने दास-दासी कभी न बेचेंगे। कौन तेरे हेरीको बेचता है। तू जिसप्रकार हेरी-हेरी करके उसके लिए पागल हो गयी है उसीप्रकार पृथ्वीके सब लोग तेरे हेरीके लिए पागल होंगे? तू शीघ्र आकर मेरे बाल बाँध दे, तू उन सब बातोंपर कभी ध्यान मत दे।

इलाइजाने कहा—माँ, अन्तमें बाबा यदि हेरीको बेचें ही तो आप अपनी सम्मति मत दीजियेगा।

शेल्बीकी मेम विरक्त होकर बोलीं—निरी-निर्बोध है। तू शान्त हो। मैं अपनी संतान बेचने दूंगी, किन्तु तेरी संतान कभी न बेचनेदूंगी, किन्तु मैं देखती हूँ कि लड़का लड़का करके पागल हुई जा रही है। हमारे घर किसीके आतेही,

चट तुझे यही जान पड़ता है कि तेरे लड़केको खरीदने का आया हूं।

शेल्बीकी मेमके इस प्रकार समझाने पर इलाइजा आश्वस्त हुई और उसके बाल बांधने लगी। शेल्बीसाहबकी मेम अत्यन्त सहृदय थीं। उनका हृदय, ज्ञान, धर्म और सद्भावसे परिपूर्ण था। दास दासियोंको वे बिना कारण ही प्यार करती थीं तथा दासत्वप्रथासे अत्यन्त घृणा करती थीं। शेल्बीसाहबकी धर्म पर कुछ विशेष श्रद्धा न थी। शेल्बी साहबने सब प्रकारके सदनुष्ठानोंका भार अपनी स्त्रीपर ही छोड़ दिया था। जान पड़ता है, वे सोचते थे, कि नाना प्रकारके सदनुष्ठानों द्वारा उनकी स्त्री जो अपरिमित पुण्य संचय कर रही है उसीके द्वारा हम दोनोंको ही स्वर्ग प्राप्त हो सकेगा। एक व्यक्तिके लिए तो इतने अधिक पुण्यकी आवश्यकता न होनी चाहिए। इसलिए स्त्रीको स्वर्ग प्राप्त करने के लिए जितने पुण्यकी आवश्यकता होगी, उसके पश्चात् जो बच रहेगा उसी पुण्यसे वे अनायासही स्वर्ग प्राप्त कर सकेंगे। किन्तु पाठक! इस समय एक बार शेल्बीके निर्जन गृहमें प्रवेश करें। देखें शेल्बी क्या विचार रहे हैं। शेल्बी चारो ओर अन्धकार देखते हैं। इलाइजाके पुत्रको बेचनेके विषयमें स्त्रीके निकट किस प्रकारसे बोलेंगे, यही सोच रहे हैं। शेल्बी इलाइजाके दुःखसे उतने दुखी नहीं हैं। उन्हें स्त्रीका भय व्याकुल कर रहा है। कुछ भी निश्चय नहीं कर पा शेल्बीसाहबकी मेम जानती हैं कि शेल्बी दयावान मनुष्य हैं इसीलिए उन्होंने इलाइजाको सरल भावसे इस प्रकार आश्वासन दिया था। वे भूल कर भी नहीं समझती थीं कि उसके स्वामी ऐसा काम करेंगे। इसीसे इतने लगते सन्देहको उन्होंने रत्ती भर—एकबार—भी स्थान न दे सुनकर

था। इसीलिए उससे इस विषयमें और कुछ पूछताछ न
र वे दोपहरको अपने एक साथिनसे मिलने चली गयीं।

दूसरा परिच्छेद



माताका व्यवहार

शेल्बीके घरमें इलाइजा बड़े स्नेहके साथ पाली गयी थी। शेल्बीसाहबकी मेम इलाइजाको सदा अपनी पुत्रीकी भाँति स्नेहपूर्ण दृष्टिसे देखती थीं। अमेरिकावासी अन्यान्य अनेक अंग्रेज वणिक सुन्दरी दासियोंके गर्भसे सन्तान उत्पन्नकर, उन सन्तानोंको बाजारमें बड़े बड़े दामोंमें बेचते थे। उन पापाचारी कलङ्कित-हृदय श्वेताङ्ग अंग्रेज धनियोंके घर इन सब दुर्भागी सुन्दरी दासियोंके सतीत्वकी रक्षाकी कोई सम्भावना न थी। किन्तु सौभाग्यवश इलाइजाके अदृष्टमें तद्रूप दुःख, यंत्रणा एवं पाप-भोग नहीं घटित हुआ। शेल्बीकी मेमने उसे खीष्ट धर्ममें दीक्षित किया था। उसको बड़े यत्नसे धर्मशास्त्र पढ़ाया था। इस कारण इलाइजाने ऐसे सत्संगमें रहकर अत्यन्त पवित्र चरित्र प्राप्त कर लिया था। वह युवती थी। शेल्बीकी मेमने जार्ज हेरिस नामक एक सुशील एवं बुद्धिमान वर्णसंकर दासके साथ उसका विवाह कर दिया था। जार्ज हेरिस शेल्बीके एक पडोसीका दास था। वह सब प्रकारसे इलाइजाके योग्य पात्र था। किन्तु जार्जका मालिक दास-दासियोंके प्रति बड़ा निष्ठुर व्यवहार करता था, उन लोगोंको यंत्रणा देता और बेंत लगाता। एक अंग्रेज

वणिकके औरससे अफ्रिकाकी क्रीतदासीके गर्भसे जार्जका जन्म हुआ था। पूर्वोक्त वणिक्की मृत्यु हो जाने पर उसके ऋणके लिए जार्ज, उसकी माता तथा भाई, बहनें नीलाममें बेची गयीं। जार्जके वर्त्तमान स्वामी ने उसे नीलाममें खरीद कर विल्सन नामक एक व्यक्तिके पाटके कारखानेमें नौकर रख दिया था। जार्ज विल्सनके कारखानेमें कार्य कर जो कुछ पैदा करता था वह सब अपने स्वामीको देता था। अपने-अपने उपार्जित द्रव्यपर दासोंका कोई अधिकार न था। गो, अश्वको जिस प्रकार लोग किराये पर देकर धन उपार्जन करते हैं, अमेरिकावासी श्वेताङ्ग बनिये उसी प्रकार क्रीत दास-दासियोंको भाड़े पर देकर धनोपार्जन करते थे।

जार्ज विल्सनके कारखानेमें नौकर होकर विश्वस्त रूपसे सब काम करता था। क्रीतदास होने पर भी उसकी बुद्धि बड़ी प्रखर थी। पटुवेको साफ करनेका उसने एक नया प्रकार तैयार किया। विल्सनसाहबने, उसका इस प्रकार अध्यवसाय,परिश्रम,कार्यचातुर्य्य,प्रखर ज्ञान और साधुता देख और उससे अति संतुष्ट होकर, उसे अपने यहांका कार्याध्यक्ष बना दिया था। कारखानेके अन्यान्य नौकर लोग उसकी विशेष श्रद्धा करने लगे। किन्तु जार्ज एक क्रीत दास है। उसकी बुद्धि, सहृदयता, उसकी साधुता, कुछ भी से, उस पापाचारी, नीचाशय, नर-पिशाच, सदृश श्वेताङ्ग बनियेके अत्याचार से न छुड़ा सका।

जार्जका स्वामी उसको इस प्रकार प्राधान्य प्राप्त करते देखकर मनही मन अत्यन्त अप्रसन्न हुआ। ये सब नीच-प्रकृति दिशिष्ट श्वेताङ्ग बनिये क्रीत दासोंकी किसी प्रकारकी उन्नति देखतेही सर्वान्तःकरण से उनसे प्रतिहिंसा करने लगते थे। जार्ज लोगोंकी श्रद्धा आकर्षित कर रहा है, यह सुनकर

उसके स्वामीके हृदयमें द्वेषानल जलने लगी। उसने मनमें निश्चय किया कि विल्सनके कारखानेसे जार्जको हटाकर एक किसी कठिन कार्यमें लगाऊँगा। इस प्रकार संकल्प करके वह एक दिन विल्सनके कारखानेमें जाकर बोला—मैं जार्जको तुम्हारे कारखानेमें अब और काम न करने दूँगा।

विल्सन कहने लगा—जार्जके परिश्रमसे मेरे कारखाने की विशेष बढ़ती हुई है। इस कारण जार्जको हटा लेनेसे मेरी बड़ी हानि होगी। जार्जके लिए विल्सनने दूना भाड़ा देना चाहा। किन्तु जार्जका मालिक उससे सहमत न हुआ। उसने जार्जको विल्सनके कारखानेसे हटाकर मिट्टी खोदनेके काम पर नियुक्त किया और सदा उसे पीटने लगा। जार्जने विल्सनके कारखानेमें रहनेके समय, इलाइजासे विवाह किया था। विल्सन जार्जको बहुत चाहता था। इसलिए जार्ज दैनिक कार्य समाप्त होने पर, शेल्बीके घर जाकर अपनी स्त्रीसे भेंटकर आ सकता था, किन्तु अब स्त्रीसे भेंट करनेकी सुविधा न रही। उसके मालिकने, उसे शेल्बीके घर जानेका निषेध किया एवं स्वयं अपने घरमें ही एक दासीको स्त्री-स्वरूप ग्रहण कर सन्तान उत्पादन करनेकी आज्ञा दी। इलाइजा जार्जकी प्राण थी। वह किस प्रकारसे अपनी प्राणप्रियाको छोड़ेगा। क्या दास-दासियोंके हृदयमें प्रेमका संचार नहीं होता? इलाइजाके गर्भसे अवस्थाक्रमसे उसके तीन सन्तान उत्पन्न हुई थीं। उनमेंसे दो मर गयी थीं, केवल एक जीवित है। यह सन्तान ही इन दोनोंके हृदय-बन्धनकी गांठ है। क्या मनुष्य कभी भी इस प्रकारके स्नेह और ममताका परित्याग कर सकता है? जार्जका शरीर दासत्व-शृंखलासे बँधा हुआ है। किन्तु ऐसा होनेसे ही उसका समुन्नत हृदय भला लोहेकी सिकड़ियोंसे कैसे बाँधा जा सकता है

जार्जने देखा अब इसका कोई दूसरा उपाय नहीं। केवल एक मात्र मृत्यु ही उसको इस दासताकी कठिन यंत्रणासे बचा सकती है। इसलिए "या तो स्वाधीनता या मृत्यु" ही जार्ज का मन्त्र हुआ। अब वह भागनेका उद्योग करने लगा।

तीसरा परिच्छेद

पति-पत्नी

दोपहरको शेल्बीसाहबकी मेमके अपने पड़ोसीसे मिलने जानेसे-इलाइजा घरमें अकेली बैठी अनेक प्रकारकी चिन्तायें कर रही थी। इसी समय पीछेसे किसीके आकर कन्धेपर हाथ रखनेसे वह चौंक पड़ी। किन्तु पीछे फिरते ही उसने देखा कि उसका स्वामी है। इलाइजा जार्जको देखते ही अत्यन्त आनन्दित होकर कहने लगी—जार्ज, तुम अच्छे समय में आये। माँ, घूमने गयी हैं।

किन्तु आज जार्जके मुखपर हँसी नहीं है। उसका हृदय दुःखसे भरा हुआ है। जार्ज आज जन्म भरके लिए इलाइजासे विदा होने आया है। आज जार्ज इलाइजाके साथ प्रसन्न मुखसे बात नहीं कर सकता। इलाइजाकी गोदके बालकने जार्जका हाथ पकड़ा। आज जार्जने उसे प्यार नहीं किया। आज उसने उसके उस सुकोमल मुखका चुम्बन न किया। इलाइजा जार्जकी ऐसी अवस्था देखकर अत्यन्त भयभीत हुई। उसने पूछा—आज तुम्हें क्या हुआ है? तुम ऐसे उदास क्यों हो? हेरीको लो! हेरी तुम्हारी गोदमें आना चाहता है।

जार्जने उत्तर दिया – ईश्वर करता कि हेरीका जन्म न होता ! ऐसा होनेसे ही अच्छा होता, परमेश्वरका हमलोगों को मनुष्य-जन्म न देना ही अच्छा था।

इलाइजा डरकर उसके कन्धेपर हाथ रखकर रोने लगी।

जार्ज फिर कहने लगा – इलाइजा, हमलोगोंका परस्पर मिलाप न होनाही अच्छा था।

इलाइजा और भी अधिक दुःख प्रकट करती हुई बोली— जार्ज, तुम क्या कहते हो ? मैं तुम्हारा मुख-कमल देखकर सम्पूर्ण दुःख भूल जा सकती हूं। आज तुम्हें क्या हो गया है !

" इस संसारमें सुख नहीं ! शान्ति नहीं ! यह जीवनधारण करना विडम्बनामात्र है। ईश्वर मुझे शक्ति दें कि आज मृत्युका आलिङ्गन कर सकूं।"

" जार्ज तुम क्या कह रहे हो ? ईश्वर जिस अवस्थामें रखें, उसमें ही संतुष्ट रहना उचित है। मैं समझती हूं कि विल्सनके कारखानेसे तुमको हटा लिया गया है, इससे तुम्हें ऐसा दुःख हुआ है। किन्तु धैर्य-धारण कर देखो, ईश्वर क्या करते हैं !"

"मैंने यथेष्ट सहन किया है। मैंने यथेष्ट धैर्य्यावलम्बन करके देखा है, किन्तु अब सहन नहीं होता। इलाइजा ! अब और धैर्य नहीं धारण कर सकता। सहिष्णुता और धैर्यकी भी कुछ सीमा है। यह रक्त, मांस जितना सह सकता है उसकी अपेक्षा सौगुना अधिक सहन कर चुका। मानव-प्रकृति जहां तक धैर्य धारण कर सकती है, उसकी अपेक्षा अत्यधिक धैर्य धारण कर चुका। किन्तु अब नहीं धर सकता। विल्सनके कारखानेमें काम करके जो कुछ पाता था, उसका एक पैसा भी मैं कभी अपने पास नहीं रख सका। कौड़ी कौड़ीका हिसाब करके सबका सब उस दुरात्मा मालिकको दे दिया। पारि-

तोषिकके रूपमें भी जो कुछ कभी पाया है, वह भी उसीको दे दिया है। किन्तु कारखानेके सभी लोग मुझपर श्रद्धा करते हैं, मुझे चाहते हैं, मेरे साथ सद्व्यवहार करते हैं, यही उस दुरात्मा मालिकको सह्य न हुआ। इसीसे उसने मुझे कारखानेके काम परसे हटा लिया। हटाकर ले आते समय मैंने कुछ भी न कहा। अपनी दुरवस्था समझकर उसके ये सारे दुरव्यवहार प्रसन्नतापूर्वक सहन कर लिये। किन्तु तो भी वह मेरे ऊपर अत्याचार करनेमें शिथिल न हुआ।

इलाइजा—सहन करोगे क्यों नहीं, सहन करना ही पड़ेगा। वह तुम्हारा मालिक है, उसकी जो इच्छा होगी, वही कर सकता है।

"जो इच्छा होगी वही कर सकेगा, उसने कहाँसे यह अधिकार पाया है? किसने उसे मेरे ऊपर इतनी क्षमता दी है। मुझमें क्या मनुष्यात्मा नहीं है? उसीकी भाँति क्या मैं मनुष्य-जन्म धारण नहीं किये हूँ? मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि मैं उसकी अपेक्षा सौगुना सत्यवादी हूँ। मैं जानता हूँ कि उसकी अपेक्षा मैं अधिक लिखना-पढ़ना जानता हूँ। मैं उसकी अपेक्षा सौगुनी अधिक श्रद्धा लोगों की प्राप्त कर सकता हूँ, तब फिर क्यों वह विना अपराधके ही यथेच्छ कष्ट देगा? मुझे इस प्रकार मारनेकी क्षमता किसने उसे प्रदान की? मैंने उससे छिपाकर लिखना-पढ़ना सीखा है, वह मेरे लिखने पढ़नेकी शिक्षामें किस प्रकार बाधा डाल रहा है। किन्तु किस अपराधसे उसने मेरे प्रति ऐसा घोर अत्याचार आरम्भ किया है। वह मुझे पशुकार्यमें लगाना चाहता है-पापानुष्ठानमें नियुक्त करना चाहता है। मुझे जहाँ तक पतित बना सकता है, वह अवश्य बनावेगा। दुष्टने

संकल्प करके मुझे मिट्टी खोदनेके काम पर नियुक्त किया है। मैं और कितना सह सकता हूँ।"

"जार्ज, मैं अत्यन्त डर गयी हूँ। तुम्हारी चेष्टाओंसे यह स्पष्ट जान पड़ता है कि तुम आत्महत्या अथवा ऐसे ही किसी दूसरे पापकर्ममें प्रवृत्त होगे। मैं तुम्हारे हृदयका दुःख समझती हूँ। किन्तु सावधान! सावधान!! अन्तमें मेरे तथा हेरीके मंगलके लिए धैर्यधारण करो!"

"और धैर्य नहीं धारण कर सकता। दिन पर दिन दुःख और दुरवस्था बढ़ रही है। रक्त,मांस कब तक सहन करेगा? दुरात्मा नाना प्रकारसे मेरे ऊपर अत्याचार कर रहा है, मेरा अनेक प्रकारसे अपमान कर रहा है। कोई एक कारण पाते ही पीटता है। लोगोंके रत्ती भर भी मेरे प्रति श्रद्धा-प्रकाश करते ही वह क्रोधित होकर कहता है कि तेरा उन्नत मस्तक नत करूँगा। कल उसका एक छोटा लड़का एक घोड़ेको निरन्तर कोड़ेसे पीट रहा था, मैंने उससे कहा कि इस प्रकार घोड़ेको मत पीटो! इतना कहते ही वह दुष्ट बालक मुझे चाबुकसे पीटने लगा। मैंने उसके हाथका चाबुक छीन लिया। इससे वह मुझे लात मारकर अपने पिताके पास जाकर बोला कि मैंने उसका अपमान किया है। उसका पिता यह सुनकर पासके वृक्षमें मेरे हाथ पैर बाँधकर मेरी पीठपर लगातार चाबुक मारने लगा। यह देखो, मेरी पीठपर घाव हो गये हैं। जार्ज इलाइजाको अपनी पीठ दिखाकर फिर कहने लगा—किसने इस दुरात्माको मेरे ऊपर इतना प्रभुत्व करनेको कहा है? इलाइजा! तुम्हारे मालिकने प्रेमके साथ तुम्हारा लालन-पालन किया है। इसलिए उनके प्रति तुम्हारी यथेष्ट भक्ति है। किन्तु मैं इस प्रकारके व्यक्ति पर कैसे भक्ति करूँ? तुम्हारे मालिकने तुम्हारे लिए बहुत रुपये

खर्च किये हैं। किन्तु इस दुरात्माने मुझे जिस मूल्य पर खरीदा था, उससे कई गुना अधिक रुपया मैं कमाकर उसे दे चुका। अब मैं और कभी न इस प्रकारका नीच व्यवहार सहन करूँगा। कभी नहीं, कभी नहीं !"

यह करुण कथा सुनकर इलाइजा स्तम्भित हो गई। उसके मुखसे शब्द बाहर नहीं निकले। बड़ी देरके पश्चात् बोली-इस समय तुम क्या करना चाहते हो ? तुम जानते नहीं कि दुःख-सुखमें सदा उसी मङ्गलमय भगवानपर निर्भर रहना होगा !

" इलाइजा तुम्हारे हृदयमें धर्मभाव है, इसलिये तुम इस समय ऐसी बातें करती हो। पर मेरा हृदय तो केवल प्रति-हिंसासे परिपूर्ण है। मैं, ईश्वर हैं, इसपर विश्वास नहीं कर सकता। ईश्वरके होते हुए मेरी ऐसी दुर्दशा क्यों ?"

"जार्ज, ऐसी बात कभी मुँहपर मत लाना। इस प्रकार की दुरवस्था ही क्यों न हो, पर ईश्वरके अस्तित्वपर विश्वास करना ही होगा। मुझे लड़कपनमें माता बतलाती थीं कि चाहे किसी प्रकारकी दुरवस्था क्यों न हो, मनुष्यको ईश्वरपर विश्वास करना उचित है।"

"तुम्हारी माता ऐसा कह सकती हैं। जो लोग सदा सुख, स्वातंत्र्य भोगते हैं, जिसकी ऊँची अट्टालिका है, ऐश्वर्य है, सुख और शान्ति है तथा जिसे इच्छानुसार कार्य करनेकी स्वाधीनता रहती है, वे सहज ही इस प्रकारका उपदेश दे सकती हैं। किन्तु यदि वे एकवार मेरी जैसी अवस्था को प्राप्त होनेपर परमेश्वरके प्रति उसी प्रकार अविचल विश्वास स्थापित कर सकें तो मैं उनकी बातपर विश्वास कर सकता हूँ। मैं यदि सुख, शान्तिसे रहता, मुझे यदि मनुष्यके अधिकार प्राप्त होते,तो मैं भी इसी प्रकार कह सकता। तुमने अभीतक मेरी सब दुर्दशाओं की पूरी कथा नहीं सुनी। मेरी सब कथा

सुनो! मेरे मालिक ने कहा है कि अब वह मुझे तुम्हारे पास कभी न आने देगा। तुम्हारे मालिक दास-दासियोंके प्रति सद्व्यवहार करते हैं, यह सुनकर वह दुरात्मा उनके ऊपर बड़ा क्रुद्ध हुआ है। वह कहता है कि दास-दासियोंके प्रति सद्व्यवहार करने से उनका स्वभाव पलट जाता है। वह स्वाधीनता प्राप्त करनेकी चेष्टा करने लगते हैं। विशेषतः उसको यह विश्वास हो गया है कि तुम्हारे साथ विवाह करके मैंने तुम्हारी उक्त अनाले कुछ स्वाधीन भाव धारण कर लिये हैं। इसलिए वह मुझे तुम्हारे पास एक वार भी नहीं आने देगा। अपने घरकी मिना नामकी एक दासीसे विवाह करनेके लिए वह मुझसे कहता है। मिनासे विवाह न करनेपर निश्चय ही वह मुझे दक्षिण-प्रदेशोंमें बेच देगा।"

"कैसे वह मिनाका तुम्हारे साथ विवाह कर देगा! धर्मके मतके अनुसार पादरीके सामने हमलोगोंका विवाह हुआ है।"

"तुम जानती नहीं कि इस देशके कानूनके अनुसार खरीदे गुलाम लोगोंको विवाह करनेका कोई अधिकार नहीं। तुम्हारे या मेरे मालिक जितने दिन मुझे तुम्हारे पास आने देते हैं उतने दिन तुम मेरी स्त्री हो, मैं तुम्हारा स्वामी हूँ। तुम्हारे मालिक चाहें तो इसी समय तुम्हें किसी दूसरे पुरुष को दे दे सकते हैं। मेरा मालिक चाहे तो मुझे दूसरी स्त्री ग्रहण करनेके लिए वाध्य कर सकता है। मेरी तरह दुर्दशा-ग्रस्त खरीदे हुए गुलामोंका स्त्रीपर कोई भी अधिकार नहीं, सन्तानपर कोई अधिकार नहीं। घरमें पले पशु-पक्षियोंकी जो अवस्था है, हमलोगोंकी भी वही अवस्था है। तुम्हारा मालिक यदि चाहे तो इसी समय तुम्हारे पुत्रको तुमसे छीन

कर बेच सकता है। इसीलिए मैंने पहिले ही कहा कि तुम्हारे साथ कभी भी मेरा परिचय न होना ही अच्छा था। मैं यदि मनुष्य-जन्म धारण न करता, यदि हमलोगोंके सन्तान न होती, तभी अच्छा था। हमलोगोंका जन्म लेना एक विडम्बना मात्र है। हमलोगोंका विवाह ही एकमात्र चिर दुःख-का कारण हुआ। हमारी सन्तान, हमलोगोंके हृदयकी शोकाग्नि स्वरुप होकर, बहुत कालतक हमें जलायेगी। तुम्हारी यह सन्तान एक दिन तुम्हारे हृदयमें शोकाग्नि जलायेगी, इसमें कोई सन्देह नहीं।"

"मेरा मालिक तो अत्यन्त दयालु है।"

"दयालु होनेसे क्या होगा? आज यदि वह मर जाय तो पड़े। उसकेऋणके लिए तुमको सन्तानके साथ नीलाममें बिकना पड़े। इस सन्तानको जितनाही प्यार करोगी, उतना ही इसके लिए दुःख सहना पड़ेगा। इस सन्तानका पैदा न होना ही उत्तम था।"

जार्जकी बात सुनते ही, आदिसे लेकर अन्ततक उसके मालिकके साथ दास-व्यवसायी हेलीकी जो बात-चीत हुई थी वह, इलाइजा को स्मरण हो आई। वह उस समय अस्थिर हो गयी। इलाइजा अत्यन्त बुद्धिमती थी। उसने जार्जके सामने अपने मनका भाव प्रकट न किया। इस समय जार्ज अपनी ही यन्त्रणाओंसे दुःख-सागरमें निमग्न होरहा था। जार्ज एक प्रकारसे पागल हो गया था। इसलिये इस समय उससे यह बात कहनेसे वह नितान्त विह्वल हो जायगा, इसमें कुछ सन्देह नहीं। यह सोचकर ही इलाइजाने जार्जसे हेरीके बेचनेकी शंकाका विषय उपस्थित नहीं किया।

कुछ समयके बाद जार्ज फिर इलाइजाका हाथ पकड़कर

कहने लगा—इलाइज़ा, मैं चला। जान पड़ता है कि इस जीवनमें यह मेरी अन्तिम भेंट है।"

"चले! कहाँ चले?"

"मैं इस समय केनाडा उपनिवेशमें जानेकी चेष्टा करूंगा। वहाँपर दासत्व-प्रथा प्रचलित नहीं है। केनाडा प्रदेशमें पहुँचते ही मैं स्वाधीन हो जाऊँगा। यदि मैं केनाडा जा सका तो उसके पश्चात् तुम्हें तुम्हारे मालिकसे खरीद लूँगा और वहाँ ले जाऊँगा। और यदि भागते हुए मैं पकड़ा गया तो निश्चय ही प्राण त्याग दूँगा। यह घोर दुःख सहनेके लिए और जीवन धारण न करूंगा।"

"किन्तु मेरी एक बात मानो। पकड़े जानेपर तुम आत्म-हत्या न करना!"

"मुझे आत्म-हत्या न करनी पड़ेगी। मुझे पकड़ लेनेपर वही मेरी हत्या करेगा।"

"तुम भाग जाना चाहते होतो जाओ, किन्तु इस हतभागिनीके प्यारको देखकर तथा इस सन्तानकी भलाईके लिए आत्म-हत्या अथवा नर-हत्या कर किसी पापके द्वारा अपने पवित्र हाथ कलङ्कित मत करना। मैं फिर कहती हूँ, मङ्गलमय ईश्वर की प्रार्थना करो, उसीकी करुणापर निर्भर रहो!"

"इलाइज़ा मैंने मन ही मन क्या तय किया है, सुनो! इस समय तक मेरे मालिकके मनमें भागनेके विचारके संबन्धमें रत्तीभर भी संदेह उपस्थित नहीं हुआ है। मैं आज रातमें ही भागनेकी सब तैयारी करूंगा। और कई एक क्रीतदास इन सब कामोंमें मुझे सहायता देंगे। सब ठीक हो जानेपर इस सप्ताहमें ही मैं भागनेका एक विलक्षण सुयोग पाऊँगा। तुम मेरे लिए ईश्वरसे प्रार्थना करो। तुम्हारा हृदय, भक्ति, विश्वास, तथा सद्भावसे भरा है। तुम्हारी प्रार्थना ईश्वर सुनेगा!

मेरा हृदय सूख गया है। अत्याचारसे सताया हुआ हृदय सदा द्वेष और हिंसासे परिपूर्ण रहता है। इस हृदयपर ईश्वरका अधिकार नहीं। ऐसा हृदय ईश्वरके नामपर नहीं पिघल सकता। ऐसे हृदयमें धर्म-विश्वासकी जड़ नहीं जम सकती। इसलिए संसारमें कोई न्यायवान, मङ्गलमय ईश्वर राज्य करता है, इसपर मैं कभी विश्वास नहीं कर सकता।"

"जार्ज! जार्ज! मैंने बारबार कह दिया कि इस प्रकारकी बातें जिह्वापर मत लाओ। किसी प्रकारकी दुरवस्था क्यों न हो, धैर्य धारणपूर्वक सदा स्वस्थ होकर मंगलमय भगवानके चरणोंमें आत्म-समर्पण कर दो? हम लोगोंकी भाँति निःसहाय, भलाई रहित, अनाथ और दुर्व्वल क्रीतदासोंका ईश्वरको छोड़कर और कोई सहायक है? वह दयामय ईश्वर ही निःसहायका सहायक है, निरुपायका उपाय, एवं निराधारका आधार है। उसी ईश्वरके हृदयमें रहनेसे तुम्हें पाप और कलंक छू तक न सकेंगे।"

इलाइजाकी बात समाप्त होते ही जार्ज "विदा हुआ" कहता हुआ बार-बार सतृष्ण नेत्रोंसे उसका मुख देखने लगा। इलाइजा अब अपनी रुलाई न रोक सकी। उसके रोनेसे जार्जका हृदय पिघल गया। जार्जके दोनों नेत्रोंसे भी लगातार आँसू झरने लगे। तब वह आँखें पोछते पोछते हेरीके मुखका चुम्बनकर वहाँसे चला गया। इलाइजा बालकको गोदमें लेकर जिस मार्गसे जार्ज जा रहा था, उसी ओर एक टक देखती रही। कुछ समय पश्चात्, जार्जके आँखोंसे ओझल हो जानेपर, उसे चारो ओर अन्धकारही अन्धकार दिखाई पड़ने लगा। आज सूर्यास्तके साथ ही साथ इलाइजाकासुख-सूर्य

भी अस्त हो गया। किन्तु उसके दुःखकी घोर अन्धकार-पूर्ण अर्धरात्रि कुछ देर पश्चात् ही आवेगी।

चौथा परिच्छेद

टामका परिवार

पाठको! स्मरण होगा कि टामको बेचनेके विषयमें हेलीके साथ शेल्बीकी जो बात-चीत हो रही थी, वही पहिले परिच्छेदमें लिखी गयी है। वह परिच्छेद पढ़कर पाठकगण केवल यही जान सकते हैं कि शेल्बीसाहबके पास टाम नामका एक खरीदा हुआ प्रभुभक्त दास है एवं उसे खरीदनेके लिए ही हेली शेल्बीके पास आया है। मैं इस परिच्छेदमें टामका कुछ विशेष परिचय दूंगा। टामको अफ्रिकावासी क्रीत-दास होनेपर भी विलक्षण धर्माधर्मका ज्ञान था। वह निरा सीधा-सादा तथा सच्चरित्र था। स्वार्थपरता तो उसके हृदयमें छू तक न गयी थी। श्वेताङ्ग लोगोंकी तरह अर्थ-गृध्र किंवा निष्ठुर कहना कभी कोई स्वप्नमें भी न विचारता था। शेल्बी ऋणके जालमें न फँसते तो स्वप्नमें भी उसे बेचनेसे सहमत न होते।

शेल्बीसाहबके निवास घरसे थोड़ी ही दूर पर उनके दासोंके रहनेके लिए, कई एक छोटे छोटे घर थे। उन्हीं घरोंमें सब दास-दासियां रहती थीं। अमेरिकावासी प्रायः सभी ऐश्वर्यशाली धनिकोंके घर इन अफ्रिकानिवासी असभ्य काले दास-दासियोंसे परिपूर्ण थे। इनमेंसे बहुतसे महापुरुषलोग

इन अभागे दास-दासियोंको सदा : किया है कि किसी नि-
पर घोर अत्याचार करते, किन्तु उ ारी स्वीकृति किसी प्र-
व्यक्ति भी थे, इसमें संदेह नहीं। सच
रहते हैं। उन भले अंग्रेजोंके घर रे हाथ बेच दिया, तब
और स्वच्छन्दतासे वास करते थे
चुका है कि शेल्बीसाहबकी मेमका श होकर बेचा है।
सद्गुणोंसे समालङ्कृत था। गुल —मैं भी यदि तुम्हारी ही
अत्याचार करना तो दूर रहा, सत स्वयं उसपर कोई नि-
उन्नत बनाया करतीं और उन्हें लि हले ही कह दिया है कि
दिया करतीं। उनको, सदुपदेश दे हूँ।
की चेष्टा किया करतीं।

शेल्बीके पास जो कई एक दा इजाके पुत्रको खरीदकर
पुराना था। क्लोई नामकी एक दा भावसे एकान्तमें बैठकर
हुआ था। उससे उसे तीन चार चने लगे कि दास-व्यव-
क्लोई शेल्बीके घरकी प्रधान रसो दिनके एक क्षण पहिले
अन्यान्य दास-दासियोंपर सदा बेचूंगा और लिखा पढ़ी
मनमें यह समझती थी कि उसके
केन्टाकी प्रदेश भरमें कठिनतासे खं
में किसी प्रकारकी त्रुटि दिखलानेप छेद
इसीलिए जो कुछ खाद्यद्रव्य वह तै
लोगोंको उत्तम जान पड़ता था।
भी थे। वह पतिव्रता तथा सन्ता
घर अन्य दास-दासियोंसे कुछ दुःख-प्रद है
त्रयोदश वर्षीय पुत्र मास्टर जार्जके म और इलाइजाके पुत्र-
लेकर पढ़ता था। प्रतिदिन संध्य अपने सोनेके कमरेमें
दासोंको एकत्र करके, अपने घरमें य सहित एक कोचपर
एकाग्रचित्तसे ईश्वरोपासना करता मेम एक बड़े दर्पणके

भी अस्त हो गया। कि टामका हृदय, अशिक्षित होनेपर
पूर्ण अर्धरात्रि कुछ देर पर पूर्ण था। टाम अत्यन्त सरस भाषामें
। दूसरे गुलाम लोग टामको
. समझते थे।
नौंधसायी हेलीने शेल्बीके घरपर बैठ
लाव किया था, उस समय शेल्बी-
लमें था। जार्ज इस विषयको रत्ती
टा। स्कूलसे घर आकर दूसरे दिन
कि लिए उसके घर जाता था, आज
पाठको! स्मरण होगा बैठकर उसे पढ़ा रहा था। किन्तु
साथ शेल्बीकी जो बात- अस्त होगा, आज टामको इस पवि-
छेदमें लिखी गयी है। से जन्म भरके लिए अलग होना
फैसला यही जान सकते थे मास्टर जार्ज, किसीने स्वप्नमें
पर गयी हुआ प्रभात

हेलीसे कहा—तुमने यह स्वीकार किया है कि किसी निष्ठुर वणिकके पास न बेचूँगा; तुम्हारी स्वीकृति किसी प्रकार टूटे नहीं।

हेलीने कहा—जब टामको हमारे हाथ बेच दिया, तब यह बात बार बार क्यों कहते हो?

शेल्बीने कहा—मैंने अत्यन्त विवश होकर बेचा है।

हेली तब हँसते हुए कहने लगा—मैं भी यदि तुम्हारी ही भाँति विवश हो जाऊँ तो? किन्तु मैं स्वयं उसपर कोई निष्ठुर अत्याचार न करूँगा। मैंने पहिले ही कह दिया है कि मैं दया-धर्म रखकर व्यवसाय करता हूँ।

इस प्रकार हेलीके टाम तथा इलाइजाके पुत्रको खरीदकर चले जानेपर शेल्बीसाहब विमर्ष भावसे एकान्तमें बैठकर चुरुट पीने लगे तथा मन ही मन सोचने लगे कि दास-व्यवसायी लोग कैसे पाजी होते हैं। खरीदनके एक क्षण पहिले कहा कि टामको भले आदमीके हाथ बेचूँगा और लिखा पढ़ी होते ही अपनी प्रतिज्ञा भूल गया।

पाँचवाँ परिच्छेद

दास-दासी विक्रय महा दुःख-प्रद है

इस प्रकार संध्याको ६,७ बजे टाम और इलाइजाके पुत्रको बेचकर, शेल्बीसाहब रात्रिमें अपने सोनेके कमरेमें जाकर, दुःखके बोझसे दबे हुए हृदय सहित एक कोचपर बैठकर पत्रादि पढ़ने लगे। उनकी मेस एक बड़े दर्पणके

सामने खड़ी होकर संध्याकालके वस्त्रोंको उतार कर रात्रिके वस्त्र पहन रही थीं। किन्तु शेल्बीको इस प्रकार मलिन मुख देखते ही इलाइज़ाकी पुत्र-विक्रयवाली बात उन्हें तुरन्त स्मरण हो आयी। तब उन्होंने स्वामीको सम्बोधित कर पूछा- आर्थर! आज हमारे घर जो बड़े ठाट-बाटके साथ कपड़े लत्ते पहिने हुए आये थे, वे सज्जन कौन थे?

"उनका नाम हेली था!

"हेली कौन? वे यहाँ क्यों आये थे?"

"मेरे साथ नेलज नगरमें एक व्यापार होता था, उसीके विषयमें कुछ कार्य वश आये थे।"

"केवल कुछ दिन कारबार होनेसे उन्होंने तुम्हारे साथ इतनी आत्मीयता दिखाते हुए यहाँ आकर भोजनादि किया?"

"एक हिसाब ठीक करनेके लिये मैंने उन्हें यहाँ बुलाया था।"

"वे दास-व्यवसायी थे क्या?"

यह प्रश्न सुनकर, शेल्बी और भी उदास होकर बोले— यह बात क्यों पूछती हो?

"संध्याको इलाइज़ा मेरे पास आकर घबड़ाकर कहने लगी कि तुम उसके साथ उसके बच्चेके बेचनेकी बातचीत कर रहे थे। मैं बड़ी चकित हुई। वस्तुतः इलाइज़ा निरी अबोध है।"

यह बात सुनकर शेल्बी अत्यन्त अस्थिर होकर बोले— इलाइज़ाने क्यों ऐसा कहा?

"इलाइज़ाने तो कहा है, किन्तु मैंने उसी समय इलाइज़ाको समझा दिया कि तू निरी अबोध है।"

"एमिलि! मैं सदैव ही मनमें सोचता रहता हूँ, कि इस प्रकारके लोगोंके हाथ दास, दासियोंको बेचना अन्याय है, किन्तु अवस्थानुसार इस समय न बेचनेसे भी नहीं बनता। हेलीके समान

निर्दय व्यक्तिके हाथ मुझे अपना कोई दास-दासी बेचनी ही पड़ेगी।"

"हेलीके हाथ! कभी सम्भव नहीं। तुम ठट्ठा कर रहे हो क्या?"

"मैं हँसी नहीं करता। मैं बहुत दुखित हूँ कि टामको बेचना पड़ा!"

"क्या! मेरे टामको बेचोगे? ऐसे प्रभु-भक्त और विश्वासपात्र दासको! तुमतो, उसकी प्रभु-भक्तिके पुरस्कार स्वरूप, उसे स्वाधीनता देना स्वीकार कर चुके हो न! दासताके बन्धनसे मुक्त करके उसे स्वाधीनता देंगे, ऐसा विश्वास तुम और मैं-दोनोंही सैकड़ो बार उसे बंधा चुके हैं। उसे किस प्रकार बेचोगे? तब जान पड़ता है कि तुमने इलाइजाके पुत्रको भी बेच दिया?"

"एमिलि! तुमसे ये सब बातें छिपानीं वृथा हैं। मैं सचमुच ही इलाइजाके पुत्र तथा टामको बेचनेमें सहमत हो गया। किन्तु इसके लिए तुम मुझे एकदम निर्दय मत समझ लेना! ऐसा व्यवहार तो सभी करते हैं।"

"तो तुमने दूसरे किसी को न बेचकर टामको तथा इलाइजाके पुत्रको ही क्यों बेच दिया?"

"टाम और इलाइजाके पुत्रका मूल्य और सबकी अपेक्षा अधिक मिला; इसलिए ही उनलोगोंको बेचना पड़ा। हेली इलाइजाको इनलोगोंकी अपेक्षा अधिक मूल्यमें खरीदना चाहता था; किन्तु इन दोनोंके बदले इलाइजाको देनेमें क्या तुम सहमत होती?"

"पापिष्ठ! वह क्या अब मेरी इलाइजाको भी लेना चाहताहै?"

"तुम्हारे मनमें कष्ट होगा, यही समझ कर इलाइजाको

बेचनेमें मैं किसी प्रकार भी सहमत नहीं हुआ। इस कारण तुम मुझे उतना दोषी नहीं बता सकती।"

"आर्थर! मुझे क्षमा करो। मैं हठात् तुम्हारे मुखसे यह बात सुनकर एकदम हतबुद्धि हो गयी हूँ। किन्तु तुम जरा विचार कर देखो, टामकी भाँति प्रभुभक्त दास क्या हृदय रहते कोई बेचता है? टामके काले होनेपर भी उसका हृदय बड़ा उच्च है। आर्थर! मैं तुमसे निश्चय कहती हूँ कि तुम्हारी भलाईके लिए टाम प्राण देनेमें भी न हिचकेगा। वह खिलवाड़की तरह तुम्हारे लिए अपने प्राण दे सकता है।"

"एमिलि! यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ, किन्तु क्या करूँ! मैं ऋणसे जकड़ गया हूँ। इस समय और कोई दूसरा उपाय नहीं है!"

"हम लोगों की विषय-सम्पति जो कुछ है वह सब क्यों नहीं बेच दिया? धन-सम्पत्ति की ममता मैं अनायास छोड़ सकती हूँ। सब प्रकारकी असुविधाएं, तथा सब प्रकारकी दारिद्र-यन्त्रणाएं मैं बड़े आनन्दसे सहन कर सकती हूं। तुम मेरी हृदय-वेदना नहीं समझ सकते। मैंने बड़े यत्नसे इन दास-दासियोंका पालन-पोषण किया है, उनलोगोंको धर्म शिक्षा दी है। उनलोगोंकी सब त्रुटियोंको दूर करनेका प्रयत्न करती रही हूं। उनलोगोंके साथ सदा धर्मालोचना करती आई हूँ। किन्तु अब यदि अपने ही धनके लिए हम इनलोगोंको उनके परिवार से अलग करके भिन्न-भिन्न स्थानोंमें बेच दूं, तो फिर भला कैसे उन्हें मुहँ दिखाऊँगी। स्त्रीके प्रति स्वामीका क्या कर्त्तव्य है, स्वामीके प्रति स्त्रीका क्या कर्त्तव्य है, सन्तान के प्रति माता-पिताका क्या कर्त्तव्य है, एवं माता पिताके प्रति उनकी संतानका क्या कर्त्तव्य है, इन सबकी शिक्षा मैं इनलोगोंको दिन दिन भर देती रही हूँ। किन्तु इस प्रकार

की शिक्षा देकर अब मैं स्वयं सन्तानको माताकी गोदसे, स्वामीको स्त्रीके साथसे आजन्मके लिए अलग करनेको तैयार हुई। मैंने कई बार इलाइजाको बतलाया है कि सन्तानके हृदयको धर्म तथा सद्भावसे परिपूर्ण किये बिना माताका कर्त्तव्य पूरा नहीं होता। मैं इलाइजाको उसके संतानके मंगलके लिए सदा ईश्वरसे प्रार्थना करनेके लिये कहती हूँ। किन्तु इस समय मैं किस प्रकारसे उसके हृदयसे उसकी शिशु-संतानको जीवन भरके लिए विच्छन्न करने दूँगी! मैं इन दास-दासियोंसे बारंबार कहती आई हूँ कि संसारमें जितनी धन-सम्पत्ति है, उसकी अपेक्षा एक एक मनुष्यात्मा कहीं अधिक मूल्यवान है। इस कारण धन-सम्पत्तिके लिए मनुष्यात्माको अवनत बनाना अथवा मनुष्यकी आत्माको नष्ट करना नितान्त अनुचित है! किन्तु इस समय उसी धनके लिए मैं स्वयंही उस मनुष्यकी आत्माको नष्ट करनेपर उद्यत हुई हूँ। ऐसे निष्ठुर नर-पिशाच दास-व्यवसायीके हाथ इन लोगोंको सौंप देनेपर भला इन लोगोंकी किसी प्रकार की नैतिक अथवा आध्यात्मिक उन्नति सम्भव हो सकती है?"

"प्रिये! तुम्हारा दुःख देखकर मुझे भी कष्ट होता है। इसे मैं नहीं सह सकता। देखो, मेरेलिए और कोई दूसरा उपाय नहीं। इन दो जनोंको न बेचनेसे निर्दयी हेली डिग्री जारी कराकर हमारा घर-द्वार तथा सारे दास-दासियोंको नीलाम करा लेगा। दोको बेचकर अन्य लोगोंकी रक्षा करना ही मुझे उचित समझ पड़ता है। शेल्बीकी ये सब बातें सुनकर उनकी मेम, धीरे धीरे एक दीर्घ निश्वास छोड़कर फिर कहने लगीं—इस घृणित दासत्व-प्रथाको आश्रय दे रखनेके कारण सचमुच ही ईश्वर हमलोगोंसे विमुख हैं। यह दासत्व-प्रथा अत्यन्त जघन्य है, इसमें कुछ संदेह नहीं!

यह घृणित पैशाचिक दासत्व-प्रथा क्या दास क्या मालिक दोनोंको ही घोर नरकमें ले जाती है। दोनों अंतरात्माको कलंकित कर देती है। मैं बिल्कुल निर्बोध हूँ, इसीसे मनमें सोचती थी कि दासोंके प्रति सद्व्यवहार करनेसे ही दासत्व-प्रथाका कलंक मिटेगा। दासत्व-प्रथा सम्बन्धी देश-प्रचलित नियम भी अत्यन्त घृणित और नीति-विरुद्ध है। इस नियमके अनुसार दास-दासी रखना निरा अन्याय है। दास दासियोंके प्रति सद्व्यवहार करनेसे ही इस प्रथाका कलंक नहीं छुड़ाया जा सकता। इस प्रकार, सद्व्यवहार द्वारा, तो इस कुत्सित प्रथाकी कुछ थोड़ीसी ऊपरी मलिनता धोयी जा सकती है; किन्तु इस प्रथाका भीतरी कलङ्क समूल नहीं उखाड़ा जा सकता। मैं समझती हूँ कि सद्व्यवहार एवं धर्म-शिक्षा द्वाराही अपने दासोंकी अवस्था उन्नत बना सकती हूँ। किन्तु मैंने कैसी मूर्खताकी! एकबार भी दासत्व प्रथाको आश्रय न देना ही ठीक था!"

शेल्वी अपनी स्त्रीका इस प्रकार परिताप सुनकर कहने लगे—प्रिये! यह बड़ा आश्चर्य है कि तुम दासत्व-प्रथा-विरोधी-सम्प्रदायकी एक सदस्य बन गयीं!

"आर्थर! मैं इस दासत्व-प्रथाको कभी भी न्याय-संगत नहीं समझती। दास-दासी रखनेकी मेरी कभी इच्छा नहीं होती।"

शेल्वी—किन्तु अनेक धार्मिक पादरियोंने इसका समर्थन किया है। उसदिन हमारे बड़े पादरी ब्रान्सनसाहबने गिर्जामें जो उपदेश दिया था, उसे तो तुमने सुना था न?

"मैं तुम्हारे बड़े पादरीका उपदेश नहीं सुनना चाहती अब और कभी किसी ब्रान्सनका उपदेश सुनने गिर्जाघरमें न जाऊंगी। पादरी और खीष्टीय धर्मोपदेशक गण धनाढ्य

वनियोंका मत समर्थन करते हुए उपदेश देते हैं। उन लोगोंके क्या कोई स्वाधीन विचार हैं ? अर्थही इस अनर्थका जड़ है। धनके लोभसे उन्हें निन्दित देशाचारका भी समर्थन करनेमें लज्जा नहीं आती। केवल वनियोंके मनोराज्यके लिए वे इस प्रकारके निन्दित मतका प्रचार करते हैं।"

"इस समय तुम अब वड़ा धर्म-धर्म मत करो ! देखती तो हो, धर्म-प्रचारक गण समयपर कैसे मतोंका प्रचार करते हैं। उन लोगोंके ये पतित मत हम जैसे पापियोंको भी घृणित ज्ञात होते हैं। धर्म क्या है ! ऐसा समझना वड़ा कठिन है। किन्तु यदि मैं ऋणसे जकड़ा न होता तो ऐसा कार्य न करता। मैंने कैसे दबावमें पड़कर यह कार्य किया है, वह तो तुम जान सकती हो। अवस्थानुसार मैंने जो कुछ किया है, वह युक्ति-सिद्ध है या नहीं, तनिक विचारकर देखो।"

"हाँ,समयानुसार ठीक ही किया है; किन्तु दुःखका विषय यह है कि मेरा कोई मूल्यवान गहना ऐसा नहीं जिसे वेचकर मैं इलाइजाके हृदय-धनकी, उस दुःखिनीके जीवन-सर्वस्वकी रक्षाकर सकूं। मेरी यह घड़ी वेचनेपर जो मूल्य प्राप्त होगा, उससे इलाइजाकी सन्तानको बचा सकते हो ? इलाइजाके बालकको बचानेके लिए मेरा जो कुछ है, वह सब देनेके लिए तत्पर हूं।"

"एमिलि ! तुम्हारी इस प्रकारकी शोचनीय अवस्था देखकर मैं वड़ा दुखी हुआ। किन्तु विक्रीका कवाला लिखा जा चुका है। हेलीने उस कवालेपर मेरा हस्ताक्षर भी करा लिया है। अब इस समय कोई और दूसरा उपाय नहीं। हेली मेरा सर्वस्वनाशकर सकता था, किन्तु इलाइजाके पुत्रको बेचकर ही इस वार मैंने उसके नाथसे अपनी रक्षाकी है।"

"हेली क्या निपट निर्दयी है ?"

"उसे निर्दय नहीं कह सकता। किन्तु इस प्रकारके अर्थ-गृद्ध लोग संसारमें और हैं या नहीं, यह नहीं जानता। वह अर्थ-लाभके लिए अपनी स्त्रीको भी भाड़ेपर दे सकता है; एवं अपनी माता तकको बेचनेके लिए अनायासही सहमत हो जा सकता है।"

"यह जानकर भी तुमने ऐसे मनुष्यके हाथ टाम तथा इलाइजाके बच्चेको समर्पणकर दिया। कितने दुःखका विषय है!"

"क्या करूँ! बेचे बिना काम नहीं चलता। ऐसे कामोंसे मैं स्वयं घृणा करता हूँ, किन्तु हेली कलही आकर इन लोगोंको ले जायगा। मैं प्रातःकाल घोड़ेपर चढ़कर कहीं चला जाऊँगा। टामको ले जानेके समय मैं यहाँ नहीं रह सकता। तुम भी इलाइजाको साथ लेकर कहीं दूसरी जगह चली जाना। हेलीका, हमलोगोंकी अनुपस्थितिमें ही इन लोगोंको ले जाना ठीक होगा।"

"मैं इस प्रकार कपटाचरण करके इलाइजाको दूसरी जगह नहीं ले जा सकती। मैं इस प्रकारके निष्ठुर काममें सहायता नहीं कर सकती। टामको ले जाते समय मैं उसके साथ साक्षात् करूँगी। उसे आशीर्वाद दूंगी। किन्तु इलाइजाका स्मरण होते ही मेरा हृदय फटा जाता है। मैं हतबुद्धि हो जाती हूं! माताकी गोदसे बालकको अलग करना कितना दुःखद कार्य है, यह तुम नहीं समझ सकते!"

जिस समय शेल्बी और उनकी मेम दोनों शयनागारमें ये सब बातें कर रहे थे, उस समय इलाइजाने उस कोठरीके बगलकी कोठरीमें छिपकर उनकी सब बातें सुनीं। उनकी बात-चीत समाप्त होनेपर इलाइजा अपने घरकी ओर चली। भयसे उसको प्राण तथा मन चंचल होगये। वह काँपती हुई "दयामय ईश्वर! रक्षा करो!" "परमेश्वर! रक्षा करो"

कहती अपने घरमें घुसी। खटियें परसे, सोये हुए बालकको, अपनी गोदमें ले मुख चूमकर कहने लगी—दुःखिनीके धन! तुमको बेच दिया किन्तु यह प्राण रहते तुमको न छोड़ेगी। त्रास और भयसे उसके नेत्रोंका जल भी सूख गया था। हृदय के नितान्त सूख जानेपर आंखोंमें जल नहीं रहता, उस समय हृदयको फाड़कर रक्तके निकल आनेकी तैयारी होने लगती है। इस समय इलाइजाकी वही दशा हुई। उसका हृदय फटनेका उपक्रम हुआ, किन्तु निराशा अनेक समय मनुष्यको साहस प्रदान करती है। इसलिए इस समय इलाइजा केवल साहसका ही सहारा ले रही है। वह एक पेंसिल और कागज लेकर लिखने लगीः—

"माँ! मुझे कृतघ्न मत समझना। तुम बाबाके साथ इस समय जो बात-चीत कर रही थीं, वे सब मैंने बगलवाली कोठरीमें छिपकर भली भाँति सुन लीं। मैं अपनी सन्तानकी रक्षा करनेके लिए भागनेको विवश हुई। तुमने बहुत दिनों से हृदयसे मुझे प्यार किया है। मङ्गलमय ईश्वर तुम्हारा मंगल करें"—उसने अति शीघ्रतासे यह पत्र लिखकर खटिये पर रख दिया। तदुपरान्त बच्चेको शीतसे कष्ट न पहुँचे, इसलिये कई एक कपड़े, कई बनातें एवं कई एक दुशाले साथ लेकर घरसे बाहर निकली। घरसे निकल पहले वह टामके घरकी ओर चली। धीरे धीरे उस घरके द्वार पर आघात करने लगी। टाम अधिक रात्रि तक जागकर उपासना किया करता था, इसलिये वह अब भी जाग रहा था। टामकी स्त्री आन्टक्लोई किवाड़ खोलतेही इलाइजाको देखतेही अत्यन्त चकित हुई। इलाइजा अत्यन्त त्रस्त होकर बोली—टाम, मैं हेरीको लेकर इसी समय भागूंगी। बाबाने हेरीको और तुम्हें एक दास-व्यवसायीके हाथ बेच दिया है।

टाम एवं क्लोई दोनोंको ही यह आकस्मिक घटना सुनकर अत्यन्त आश्चर्य हुआ। टाम एक दीर्घ साँस लेकर एकदम स्तब्ध हो गया। उसके मुँहसे कोई बात न निकल सकी। किन्तु आन्टक्लोई बोली कि हमने क्या अपराध किया है जो इस प्रकारसे बेच दिया? तब इलाइजाने, कोठरीमें छिपकर शेल्बी तथा उनकी मेमकी जो सब बातें सुनी थीं, वे सब विस्तार पूर्वक कहने लगी—किसी अपराधके लिए नहीं बेचा है। ऋणसे जकड़जानेके कारण बेचा है। किन्तु माँ असीम दुखी हुई हैं। माताका हृदय सचमुच धर्मभावसे पूर्ण है, इसमें कुछ सन्देह नहीं। मैं कृतघ्नतासे ऐसी माताको छोड़ कर भागने पर सन्नद्ध हुई हूँ, किन्तु देखो, इसके अतिरिक्त दूसरा कोई उपाय ही नहीं। भागे बिना हेरीकी रक्षा न कर सकूँगी।" तब आन्टक्लोईने टामसे कहा—तुम भी क्यों न भाग जाओ, मैं तुम्हारे वस्त्रादि ले आती हूँ, तुम्हारा तो दूसरी जगह जानेका अनुमतिपत्र ही था।

टामने कहा—मैं कभी न भागूँगा, यदि मुझे बेचकर अन्यान्य दास-दासियोंकी रक्षा कर सकते हैं, तो मेरा बिकना ही अच्छा है। मङ्गलमय परमेश्वर सर्वज्ञ ही हैं। इसी स्थान पर रहनेसे ही मेरे साथ रहेंगे, यह बात नहीं। वे सर्वत्रही हैं। विशेषतः मैं कभी भी विश्वासघात न करूँगा। मुझपर विश्वास करके ही मालिकने इच्छानुसार आ जा सकनेका यह अनुमति-पत्र दिया है। भला मैं कैसे विश्वासघात करके, भागनेके उद्देश्यसे, उस अनुमति-पत्रका उपयोग करूँगा?

टाम भागनेकी अनिच्छा दिखला कर सिर नीचा करके बैठकर आँसू बहाने लगा। खटिये पर सोयी हुई सन्तानोंके मुखकी ओर देखकर वह धीरे धीरे दीर्घ निस्वास छोड़ने लगा। इसके पश्चात् इलाइजा आन्टक्लोईसे कहने लगी—

आज संध्याको मेरे स्वामी यहाँ आये थे। उनके मालिकने उनके प्रति घोर अत्याचार करना आरम्भ किया है। इस कारण वे भी भागनेका उद्योग कर रहे हैं। उनके साथ भेंट होनेपर मेरे इस भागनेका हाल कह देना। उनको यह विशेष प्रकारसे समझा देना कि यदि इस लोकमें उनसे मेरी भेंट न होगी तो परलोकमें अवश्य ही हमलोग परस्पर मिलेंगे। जीवन-मरणमें वेही मेरी गति हैं। वे ही मेरे एक मात्र आश्रय हैं।

इलाइजाकी बात समाप्त होनेपर आन्टक्लोईने अश्रुपूर्ण नेत्रों सहित उसका चुम्बन किया और रोतेरोते उसे विदाई दी।

घोर अन्धेरी रात है। सारा संसार नीरव हो गया है। उस घोर अन्धकारमयी रात्रिमें सन्तानको गोदमें लेकर उन्नीस वर्षीया युवती अकेली ही मार्गमें चलने लगी।

किन्तु पाठक! इलाइजा क्या सचमुच ही एकदम आश्रय हीन, तथा सहायशून्य हो गयी है? एक बार ज्ञान-चक्षु खोलिये, देखियेगा कि इलाइजा एकदम अनाथिनी नहीं है। जो अनाथोंके नाथ, निराश्रयोंके आश्रय हैं, वेही उसके साथ हैं। अर्थ-गृद्ध गोरे बनिये कालोंसे घृणा कर सकते हैं। किन्तु सर्वसाक्षी परमेश्वरके निकट गोरे-कालेमें कोई भेद नहीं!

छठवाँ परिच्छेद

इलाइजाकी खोज

रात्रि समाप्त हुई। प्रातः कालीन शीतल, मन्द, सुगन्धित पवन चलने लगी। प्रभातकालीन सूर्य आकाशमें उदित

होकर—क्या काले क्या गोरे सभीके ऊपर समान भावसे, हृदयको प्रफुल्लित करनेवाली, अपनी प्रभा फैला दी। समस्त संसार पुनर्जीवित होकर अपने अपने निर्दिष्ट कार्य-साधनमें प्रवृत्त हुआ। किन्तु शेल्वीके शयन-गृहका द्वार अब तक नहीं खुला। गतरात्रिमें शेल्वी तथा उनकी मेम शीघ्र नहीं सो सके, इसलिए आज वे बहुत देरमें सोकर उठे हैं। मेम साहिबा शय्यासे उठतेही बारबार इलाइजाको पुकार नेलगीं किन्तु कोई उत्तर न मिला। बहुत देरके बाद आन्टि नामक एक दासको इलाइजाको बुला लानेके लिये कहा। आंटिने इलाइजाके घरसे लौट आकर मेमसे कहा कि उसका घर सूना पड़ा हुआ है। उसकी वस्तुएं इधर उधर बिखरी पड़ी हैं। जान पड़ता है वह भाग गयी।

यह बात सुनतेही शेल्वी तथा उनकी मेमने यह सहज ही जान लिया कि इलाइजा अपने बच्चेको लेकर भागी है। मेम अकस्मात् बोल उठीं—परमात्मा इलाइजाकी सन्तानकी रक्षा करें। किन्तु शेल्वी उसे सुनकर अत्यन्त विरक्त हो कहने लगे,—"प्रिये! तुम बिल्कुल निर्बोधकी भांति बातें करती हो। हेली समझेगा कि मैंने ही इलाइजाके भाग जानेका षड्यन्त्र रचा है। विशेषतः उसके ऐसा सोचनेका एक विलक्षण कारण है। मैं पूर्वसे ही इलाइजाके पुत्रको बेचनेकी अनिच्छा प्रकट करता था। यह कहकर शेल्वी नीचेके घरमें आये। इधर इलाइजाके भागनेकी बातको लेकर घरके दास दासियोंमें तरह-तरहके आन्दोलन आरम्भ हो गये। कोई कहने लगा कि यह सम्वाद सुनतेही क्रेता हेलीसाहब रुपये के शोकमें पागल हो जायगा। कोई कहने लगा—हेलीसाहब जैसा अर्थ-पिशाच है, उससे तो यह सम्वाद सुनतेही भारी धूमधाम मचावेगा। और किसी किसीने कहा—अनेक प्रकार

के पतित शब्दोंसे अत्यन्त नीच भाषामें अवश्य बकवाद करेगा। इस प्रकार की बात-चीत हो रही थी कि इसी समय हाथमें चाबुक लिये हुए हेलीसाहब आ उपस्थित हुआ। एवं इला-इजाके भागनेका समाचार सुनकर अत्यन्त कुड़बुड़ाकर, हरा-मजादी, बदजात, बदमाश, इत्यादि सुललित वाक्यों द्वारा उसका सत्कार करने लगा। अन्तमें हिताहित ज्ञानसे शून्य होकर, जिस घरमें शेल्बी तथा उनकी मेम बैठी हुई थीं, उसी घरमें घुसा एवं शेल्बीको पुकार कर कहने लगा—तुमने बड़े अन्यायका कार्य किया है।

शेल्बीने कहा—हेली! भद्रताके अनुरोधसे इस प्रकार चिल्लाओ मत, शान्त रहो देखते नहीं कि मेरी स्त्री यहींपर है!

किन्तु अर्थ-पिशाच हेलीको क्या इस समय भद्राभद्रका ज्ञान है। उसने फिर कहा—तुमने बड़ा अन्याय किया।

तब तो शेल्बी अपने क्रोधको और न रोक सके, हेलीका तिरस्कार करते हुए कहने लगे—तुम क्या एकदम निर्लज्ज हो? प्रतिष्ठित महिलाके सामने इस प्रकार माथेपर टोपी लगाये हुए खड़े हो?

यह कहकर शेल्बीने अपने नौकर आन्टीसे टोपी उतारकर फेंक देनेको कहा। आन्टीने उसी समय हेलीके मस्तकपर की टोपी और हाथका चाबुक छीन लिया। तब हेलीने कुछ शान्ति धारण करते हुए शेल्बीसे कहा—भाई! तुम्हें सत्यता-से कार्य करना चाहिए था। शेल्बी हेलीकी बात सुनते ही और भी क्रोधित होकर बोले—क्यों, मैंने असत् उपाय अवल-म्बन किया है? मेरी सत्यताके सम्बन्धमें जो सन्देह करेगा, उसे इसी क्षण गर्दनियां देकर बाहर निकलवा दूँगा।

अर्थ-पिशाच बनिये सदा कापुरुष होते हैं। इसीलिए

शेल्बीको क्रोधित देख, डरकर हेली कहने लगा—मेरा बड़ा दुर्भाग्य है। यदि यह न होता तो ऐसा क्यों होता?

तब शेल्बीसाहब क्रोधको रोककर हेलीसे कहने लगे—तुम्हारे इस प्रकारसे क्षति-ग्रस्त न होनेपर मैं कभी भी तुमको ऐसे घरमें न पैठने देता। किन्तु तुम मेरे साथ कारबार करके इस प्रकार क्षति-ग्रस्त हो गये हो, यही देखकर मैं तुम्हें अपना घोड़ा और अपने आदमी देता हूं। तुम खोजकर इलाइजाको पकड़ो और अपनी खरीदी हुई सम्पत्ति ले जाओ!

शेल्बी साहबकी मेम, अर्थ-गृद्ध हेलीका यह व्यवहार देख अत्यन्त त्यक्त-विरक्त होकर उस स्थानसे चली गयीं। तब शेल्बीने अपने आन्टी नामक दासको पुकारकर कहा—आन्टी! तुम और साम हेली साहबके साथ घोड़ेपर चढ़कर इलाइजाको खोजनेके लिए जल्दी जाओ!

आन्टीने घोड़सालमें आकर सामसे ये सब बातें कहीं और घोड़ा तैयार करनेको कहा।

साम मालिककी आज्ञा सुनते ही शीघ्रतासे घोड़ा तैयार करने लगा—एवं उत्साह पूर्वक कहने लगा—अभी, इसी समय इलाइजाको पकड़ लाऊँगा।

आन्टीने फिर उसके कानमें कहा—साम! तुम समझे नहीं, मेम साहबकी इच्छा नहीं है कि इलाइजा पकड़ी जाय। घोड़ा ठीक करनेमें खूब देरी करो।

सामने पूछा—तुमने यह कैसे जाना कि मेमकी इच्छा नहीं है?

आन्टीने उत्तर दिया—जब मैंने मेमसे कहा कि इलाइजा भाग गयी है, तब मेमने कहा—परमेश्वर इलाइजाकी सन्तान की रक्षा करें। किन्तु साहब उसे सुन उनपर बिगड़ उठे।

साम दुष्टमति समझनेमें पारदर्शी था। जहाँ उसने सुन पाया कि इलाइजाको पकड़नेका उद्देश्य मेमका नहीं है, तहाँ फिर क्या उसने जल्दीसे घोड़ा सजाया! वह घोडसालमें जाकर एकबार घोड़ेको पकड़े फिर छोड़दे, फिर पकड़े, फिर छोड़दे, फिर पकड़े, इसी प्रकार केवल समय काटने लगा। उसने घोड़ेकी ज़ीन लगाकर उसके नीचे एक काँटी इस तरह से लगादी कि सवारके चढ़ते ही काँटी धँसनेसे घोड़ा चौंक पड़े और सवारको धड़ामसे धूलमें पटक दे। हेली साहबके घोड़ेकी ज़ीनके नीचे भी इसी प्रकारसे काँटी लगा दी।

शेल्वी बार-बार सामको पुकारकर कहते—साम इतनी देरी क्यों कर रहे हो?

साम कहता—हुजूर! घोड़ा बड़ा दुष्ट है। यह क्या एक घड़ीका काम है?

इस प्रकार करते-करते क्रमशः समय बीतने लगा। इधर शेल्वीकी मेमने सामको बुलाकर कहा—साम! घोड़ेके दो पैरोंमें न जाने क्या हो गया है, इसे बड़े वेगसे दौड़ाकर बहुत मत थकाना। सामके और किसी प्रकारकी बुद्धि न रहनेपर भी, दुष्ट कार्यका मर्म जानलेनेमें वह विशेष पटु था। इसी अभिप्रायसे मेम साहिबाने उससे ऐसी बातें कहीं कि जिनका मर्म समझनेमें वह पूर्ण चतुर था। घोड़ा ले आनेमें सामको देर करते देख हेली स्वयं घोड़सालमें आया। आन्डी और सामको शीघ्र घोड़ेपर सवार होनेको कहकर उसने अपने घोड़ेपर चढ़नेका उद्योग किया किन्तु पीठपर बैठतेही उस का घोड़ा बड़े जोरसे उछल पड़ा और वह धड़ामसे मिट्टीपर गिर पड़ा। हेलीका घोड़ा उसे मिट्टीपर पटककर मैदानकी ओर भाग चला। आन्डी, साम, तथा शेल्वी साहबके कई अन्य दास हाँ, हाँ, पकड़ो, पकड़ो, करते हुए घोड़ेके पीछे

पीछे दौड़ चले। इस प्रकार समय प्रायः दोपहरका होगया, एवं दोपहरके अन्तमें सामने घोड़ेको पकड़कर हेलीके पास लाकर उपस्थित किया।

हेली सामको डपटकर बोला—तुमने मेरा तीन घण्टेका समय नष्ट किया। अब बहुत शीघ्र घोड़ेपर चढ़कर मेरे साथ चलो!

सामने कहा—आपका घोड़ा पकड़नेमें जो कष्ट मैंने पाया है उसे अधिक क्या बताऊँ! आपको बहुत शीघ्र जाना होगा, इसलिए इतना परिश्रम किया। मेरा प्राणान्त होना चाहता है। आपका कार्य था, कर दिया; दूसरेका होता तो कभी न जाता। किन्तु अब भोजन किये बिना कैसे जाऊँगा। घोड़ा भी बहुत थक गया है। आप कोई चिन्ता न करें। इलाइजा इतना नहीं भाग सकती। भोजनादि करके जानेपर भी उसे पकड़ ले सकते हैं।

इसी समय शेल्बीकी मेम हेलीके पास आकर बड़ी शिष्टताके साथ कहने लगीं—महाशय! समय दोपहरका हो गया है; इस समय भोजनादि किये बिना कैसे जायँगे। कृपा करके आज हमारे घर ही भोजन कीजिए। शेल्बीकी स्त्री हेलीकी भाँति नर-पिशाचसे बातचीत करनेसे भी घृणा करती थीं, किन्तु आज उन्होंने उसके साथ भोजन करनेमें भी घृणा न की। हेली वाणिज्य इत्यादि कारबारकी चातुरी बहुत शीघ्र समझ जाता था; पर स्त्रियोंकी चालाकी समझ लेना साधारण बात नहीं है। जो हेली संसारके सब मनुष्योंको ठग सकता था, आज वही उस स्त्रीके जालमें पड़कर स्वयं ठगा गया!

सातवाँ परिच्छेद

———०———

माताका उद्योग

हेली शेल्वीकी मेमके अनुरोधसे भोजनके लिए ठहर गया। किन्तु इधर इलाइज़ा बड़ी शीघ्रता पूर्वक पैर बढ़ाये हुए चली जा रही थी। इलाइज़ाकी उस समयकी दुदर्शा देखकर पाषाण-हृदय भी पिघल जाता। इस संसारमें इलाइज़ाका और कोई नहीं था। उसका स्वामी घोर अत्याचार से पीड़ित होकर भागनेकी चेष्टा कर रहा है, किन्तु न भाग सकनेपर वह आत्महत्या करेगा। इस जीवनमें अब इलाइज़ाको अपने स्वामीके दर्शनों की आशा नहीं है। यह संसार उसके लिए समुद्रके समान है। सांसारिक घटनास्रोत उसे कहां ले जायगा, वह नहीं जानती। इस संसार-समुद्रमें उसका कोई अवलम्ब नहीं ! कोई उसका सहायक नहीं ! वह अपने पुत्रको गोदमें लेकर इस विशाल विश्वसागरमें कूद पड़ी है। पर सर्व प्रकार आश्रयहीन होनेपर भी इलाइज़ाको जीनेकी आशा बनी हुई है। जीवनका कोई निर्दिष्ट लक्ष्य रहनेसे, मनुष्य-सब प्रकारसे आश्रयहीन होनेपर भी-उस लक्ष्यानुसरणमें बड़े-बड़े कष्टोंको भी कुछ न समझता हुआ लगाही रहता है। किसी यन्त्रणाको भी वह यन्त्रणा-स्वरूप नहीं देखता। जिसके जीवनका कोई लक्ष्य नहीं, कोई उद्देश्य नहीं, वह संसारके सब प्रकारके कार्योंमें ही कष्ट देखता है। सब प्रकारके भोगोंमें ही वह दुर्भोग पाता है।

डाकूके हाथसे अपनी संतानकी रक्षा करनी ही, इलाइज़ाका प्रधान लक्ष्य था। जीवनका यही उद्देश्य है। इस लक्ष्यके

साधनके लिए कोई भी कष्ट उसको कष्ट नहीं दे सकता। कोई दुःख उसके सामने दुःखद रूपसे नहीं पड़ा रह सकता। वह कृशाङ्गी अत्यन्त दुर्बल इलाइजा छः वर्षके बालकको गोदमें लिए बिना रुके हुए बड़ी शीघ्रतासे चली जा रही है। बालक बड़ी सरलतासे उसके साथ दौड़ा जा सकता है, किन्तु पीछे बालक छिन जायगा, यह सम्भावना उसके हृदय में इस प्रकार समागयी है कि उसने बालकको एकबार भी गोदसे न उतारा। कुछ दूर जाती थी, फिर पीछे घूमकर देखती थी। वृक्षके एक पत्तेके गिरनेके शब्दसे चौंककर वह पीछे फिरकर देखने लगती, एवं "ईश्वर रक्षाकर, ईश्वर रक्षाकर !" कहकर बड़े जोरसे चिल्लाने लगती। बालक एक बार जाग पड़ा तब इलाइजाने उससे कहा—चुप न रहोगे तो मैं तुमको बचा न सकूँगी। बालक उसी क्षण उसका गला पकड़कर ठीक उसी प्रकार होगया जिस प्रकार निद्रित अवस्थामें था। स्नेहमें कैसी आश्चर्यमयी शक्ति है। बालकके अङ्ग-स्पर्शसे इलाइजाके शरीरमें नव उत्साहका संचार होता जाता था। वस्तुतः मानसिक अवस्था मनुष्यको कितना बलिष्ठ बनाती है, इसका अनुमान नहीं किया जा सकता। जिनसे शारीरिक बल न होनेके कारण, कोई कार्य नहीं होता, वे सचमुच ही भ्रमात्मक मनका पोषण करते हैं। मानसिक शक्ति, मानसिक तेज, मग्न अथवा दुर्बल शरीरको अतुल बल वीर्य प्रदान करता है। शरीरपर मनका अपूर्व प्रभाव, अपूर्व प्रभुत्व परिलक्षित होता है। मानसिकबल कभी कभी, रक्त, मांस तथा हड्डियोंसे बने हुए इस शरीर को, लोहेके समान कठोर और दृढ़ बना देता है। वीरशिरोमणि नेपोलियनका वीरत्व क्या दैहिक बलसे उत्पन्न हुआ था? नहीं, वह मानसिक बलका अनिवार्य फल था। मनमें बल

है। कल उसकी सूचना पाकर बड़ी व्यग्र होकर आयी हूँ। आज नदी पार न होने से कल उसे देख पाऊँगी अथवा नहीं, इसमें संदेह है!

वृद्धाने इस प्रकार उसकी कातरोक्ति सुन एक पुरुषको बुलाकर कहा—सलमन! देख तो नदी-पार जानेके लिए कोई नौका है या नहीं?

सलमनने कहा—आज पार होनेकी कोई सम्भावना नहीं; किन्तु कल एक नौका मिल सकती है। तब इलाइजाने उस स्त्रीके, फूसके घरमें ठहरनेके अनुरोधसे, सहमत होकर, उस पान्थशालाकी अटारीपर आकर, बालकको सुलाया, एवं स्वयं उसके पास बैठकर सोचने लगी।

इधर दास-व्यवसायी हेली साहब शेल्बी साहबके घर भोजनकी प्रतीक्षा करने लगे। शेल्बी साहबकी मेमने आन्ट क्लोईको बहुत शीघ्र खाना तैयारकर ले आनेको कहा। किन्तु क्लोई आज शीघ्रतासे नहीं रांध सकती। आज उसके चूल्हे की आग बार-बार बुझ जाती है। एक बार एक वस्तु तैयार करते करते नष्ट होजाती है। अतः फिरसे उसे तैयार करना पड़ता था। इस प्रकार पाक-शालामें बड़ी गड़बड़ी होने लगी। उधर शेल्बीका एक एक दास समय समयपर पाक-शालामें आकर क्लोईको जल्दी करनेके लिए कह जाता। एक दासने आकर क्लोईसे कहा कि हेली साहब विलम्ब देखकर अधीर होरहे हैं। क्लोई कह उठी—उसे अधोगतिमें जाना होगा! जैक नामक एक दूसरे दासने कहा—क्या केवल अधोगतिमें ही जायगा? उसे अनन्त नरकमें जाना होगा। क्लोईने फिर कहा—अनन्त नरक ही उसके लिए उपयुक्त स्थान होगा। सैकड़ों लोगोंके हृदयको कष्ट देता है। सन्तानको माताकी गोदसे छीन लेता है। स्त्रीको स्वामीसे हीनकर देता है, बालक-

साथ कोई पितृहीन बना देता है, ईश्वर क्या इसके कुकर्म देखते नहीं? पापिष्ट निश्चय ही अनन्त नरककी ज्वालामें जल मरेगा। जैकने कहा—जिस दिन जिस समय उसको अनन्त नरकाग्नि-से जलकर मरते देखूंगा, उस दिन मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी।

इसी समय टाम वहाँ आकर उपस्थित हुआ। टामका हृदय दया और धर्मसे परिपूर्ण है। टाम क्लोईको समझाने लगा—हमलोगोंके दुर्भाग्यमें जो था वह हुआ, किन्तु इसके लिए किसी अन्य मनुष्यके प्रति विरुद्ध भाव धारणकर विद्वेष भावको हृदयमें स्थान देना अनुचित है।

टामने ज्यों ही अपनी स्त्री क्लोईके साथ बातचीत करनी आरम्भ की कि एक दास आकर उसे शेल्बी साहबके पास बुला ले गया। शेल्बीने हेलीको दिखाकर कहा—टाम, मैंने तुमको इस व्यक्तिके हाथ बेच दिया है। किन्तु ये तुमको आज न ले जा सकेंगे। ये इस समय किसी कार्य-वश कहीं अन्यत्र जा रहे हैं। कई दिन बाद आकर तुम्हें ले जायेंगे। अतएव जब ये तुम्हें लेने आवें उसी समय इनके पास आकर उपस्थित होना। तुम्हारे इस प्रकार उपस्थित न होनेसे, इस व्यक्तिको मैं एक हजार मुद्रा दूंगा, ऐसा प्रतिज्ञा-पत्र लिख चुका हूं। इस विषयमें अब कोई त्रुटि न हो!

टामने कहा—आप जैसा कहेंगे मैं वैसा ही करूंगा। मैं आठ वर्षकी अवस्थासे आपके वशमें आया हूं। आपकी माता-ने एक वर्षकी अवस्थाके समय आपको मेरी गोदमें देकर कहा था—"टाम यह तुम्हारा भावी प्रभु है। इसे यत्नके साथ पालो।" इस समय तक मैंने आपकी आज्ञाका प्रति पालन किया एवं आपके सर्व प्रकारके कार्य करता रहा हूं। किन्तु आप ही बतलाइये कभी मैंने विश्वासघात किया है?

शेल्बीने टामकी ऐसी बातें सुन मुख नीचाकर लिया तथा अश्रुपूर्ण नेत्रोंके साथ कहने लगे—टाम, तुमने कभी विश्वासघात नहीं किया। मैं ऋणसे विवश हो गया हूं इसासे तुमको मैंने बेच दिया है।

शेल्बीकी मेमने कहा—टाम, मैं रुपया एकत्र कर अवश्य इनके पाससे खरीद लूंगी।

मेमने उसी समय हेलीसे भी कहा—टामको आप जिस व्यक्तिके हाथ बेचें उसका नाम-धाम, तथा पता हमारे पास लिख भेजियेगा।

हेली—मैं चार पैसे लाभ के ही लिए व्यापार करता हूं। कुछ समयके पश्चात् मैं फिर आप लोगोंके ही हाथ बेच सकता हूं।

शेल्बीकी मेम, हेलीके समान नरपिशाचके साथ बातचीत करनेसे घृणा करती थी पर आज उसके साथ नाना विषयोंपर बातचीत करने लगीं। किन्तु इन बातोंका उद्देश्य क्या? किसी प्रकार समय व्यतीत हो जाय यही इन बातोंका उद्देश्य है।

तीसरे पहर साम और आन्डी घोड़ोंके साथ द्वारपर आकर उपस्थित हुए। हेली, शेल्बी तथा उनकी मेमसे विदा होकर इलाइजाको पकड़नेके उद्देश्यसे चला। घोड़ेपर चढ़नेके समय हेलीने सामसे पूछा—क्या तुम्हारे मालिकके पास शिकारी कुत्ते हैं? साम भलीभाँति जानता था कि उसके मालिकके पास कोई शिकारी कुत्ता नहीं है; किन्तु इस समय दुष्टतासे, समय नष्ट करनेके लिए उसने कहा—हाँ, हमारे यहां बहुतसे कुत्ते हैं, आप ठहरिये, मैं लिये आता हूँ। यह कहकर कई एक घरके पालतू कुत्ते लेआया। हेलीने उन्हें देख बिगड़कर कहा—ये कुत्ते मैं नहीं चाहता। मग्गू दासीको पकड़नेके लिए शिकारी कुत्तोंके लिए मैंने कहा था। तुम बेटा बड़े बदमाश हो। तुम्हारे, कुत्ते लानेकी कोई आवश्य-

कता नहीं। तुम चलो। कुछ दूर चलकर हेलीने कहा—बराबर ओहिओ नदीकी ओर चलो।

सामने अत्यन्त गम्भीरतासे कहा—महाशय, नदीकी ओर कई मार्ग गये हैं। एक परिष्कृत नया मार्ग और दूसरा वह जिससे पहिले लोग जाते आते थे, किन्तु आजकल वह खराब हो गया है। उस रास्तेसे आजकल बहुत लोग नहीं जाते आते। इस समय आप किस मार्गसे जानेकी इच्छा करते हैं?

आन्डी सामकी दो रास्तेकी बातें सुनकर अपनी हँसी रोक न सका। वह ही ही कर हँस उठा।

किन्तु साम और भी गम्भीर मूर्ति धारण कर आन्डीको डाँटकर कहने लगा—आन्डी! तुमको भले बुरेका ज्ञान बिल्कुल नहीं है। यह क्या हँसनेका समय है। हेलीसाहबका जिससे कार्य-सिद्ध हो, वही देखना होगा। तत्पश्चात् हेलीसे पुनः कहने लगा—महाशय! इलाइजा, जान पड़ती है, इसी अपरिष्कृत मार्गसे ही गयी है। उस रास्तेसे बहुत लोग नहीं आते जाते। किन्तु हमलोगोंको उस रास्तेसे सुविधा न होगी। वह रास्ता जगहजगहपर बन्द हो गया है। अतएव चलिए हमलोग इस नये मार्गसे होकर ही चलें। इस अच्छे रास्तेसे ही जाना भला है।

हेलीसामकी ये बातें सुनकर सोचने लगा कि जनशून्य मार्गसे ही इलाइजा भागकर गयी होगी किन्तु ये बच्चू बड़े धूर्त हैं। पहिले भूलसे इस मार्गका हाल बतला दिया, अब दुष्टतासे मुझे बहका कर दूसरे रास्तेसे ले जानेकी चेष्टा कर रहे हैं। अतएव इसी पुराने रास्तेसे ही चलना ठीक है। वस्तुतः इस संसारमें संदिग्ध-चित्त व्यक्ति सहसा झूठ और सचका निर्णय नहीं कर सकता। हेलीने अपरिष्कृत मार्गसे ही

जानेका निश्चय कर अपने साथियोंसे अपने पीछे-पीछे आनेको कहा।

साम वारवार निषेध कर कहने लगा—महाशय, इस मार्गसे मत जाइए। नहीं तो अवश्य ही मार्ग भूल जाना पड़ेगा। जान पड़ता है यह रास्ता स्थान स्थान पर बन्द हो गया है।

सामकी इस बातसे हेलीका सन्देह और भी बढ़ गया। वह सामसे बिगड़कर बोला—मैं तुम्हारी बात नहीं सुनना चाहता। इस एकान्त मार्गसे ही जाना होगा।

वास्तवमें वह जन-शून्य मार्ग बहुत दिन हुए बन्द हो गया था। यह बात सामको भली भाँति ज्ञात थी। उसकी चालाकीको न समझ कर हेलीने उसी मार्गका अनुसरण किया, यह देखकर वह मन ही मन हँसने लगा। थोड़ी दूर जाकर बोल उठा—यह बड़ा खराब रास्ता है। जान पड़ता है इस रास्तेसे न जा सकेंगे।

हेली उसकी यह बात सुनकर निस्सीम क्रोधित होकर कहने लगा—तेरे कहनेसे तो मैं रास्ता छोड़ूँगा नहीं। तू चूप रह।

साम शान्त हो गया। एवं अत्यन्त अधीनता दिखलाते हुए उसने कहा—अच्छा, जिस मार्गसे आपकी इच्छा हो चलिए।

इस प्रकार चलते चलते साम और आण्ड्री व्यर्थ ही चिल्ला उठे। "वह इलाइजा है" "यह कपड़ा दिखाई पड़ता है" "यह इलाइजा दिखलाती है" इनलोगोंकी चिल्लाहटसे घोड़े वारवार चौंकने लगे एवं उनको सम्भालनेमें व्यर्थ समय बीतने लगा। अन्तमें एक घण्टे तक चलनेके बाद वे लोग एक बड़े मैदानके पास आ पहुँचे। आगे बढनेके लिए सामने कोई मार्ग न दीखा। देखनेसे यही जान पड़ता था कि

यह रास्ता यहीं समाप्त हो गया है। तब साम हेलीको पुकार कर कहने लगा—मैंने पहिले ही कहा था कि यह रास्ता बन्द हो गया है। किन्तु आपने मेरा कहना न माना। अपने देशके रास्तों तथा घाटोंको हम लोग अधिक जानते हैं। आप विदेशी होकर भला यह सब कैसे जानेंगे ?

हेलीने क्रोधपूर्वक कहा—बेटा, तुम बड़े बदमाश हो। तुमने जान बूझकर ऐसा किया है !

साम इस प्रकार अपमानित होकर धीरे-धीरे कहने लगा-महाशय, मैंने तो पहले ही आपको इस रास्तेसे आनेको मना किया था, किन्तु आपने मेरी एक भी बात न सुनी ? मेरा क्या अपराध है ?

हेलीको अब और कुछ कहनेकी सामर्थ्य न रही। सचमुच ही सामने इस रास्तेसे न आनेके लिए दो तीन बार प्रत्यक्षरूप से असम्मति प्रकटकी थी। तुरन्त ही वह घोड़ेको फेरकर उस साफ़ रास्तेकी ओर बड़े वेगसे चल पड़ा। चलते चलते संध्या समयकी गोधूलीमें वह उसी धर्मशालाके निकट आ उपस्थित हुआ जहाँपर इलाइजाने आश्रय ग्रहण किया था। अपने बच्चेको सुलाकर इलाइजा हवामें खड़ी होकर नदीकी ओर देख रही थी। इसी समय सामकी आँखें उसपर पड़ीं। हेली और आण्टी दोनों उसके पीछे थे। उन लोगोंने अब तक इलाइजाको नहीं देख पाया था। सामने इस समय दुष्टतापूर्वक सिरकी टोपी फेंक दी। हवासे टोपी गिर गयी कहकर बड़े जोरसे चिल्लाने लगा। उस चिल्लाहटके शब्द इलाइजाके कानमें पड़े। उसने उस ओर देखतेही साम और हेलीको देख लिया और उसी क्षण सोते हुए बच्चेको गोदमें उठाकर फांदकर पीछेकी ओरका द्वार खोलकर भागने लगी। इसी समय हेली भी उसे देख घोड़ा छोड़कर व्याघ्रकी

तरह उसके पीछे-पीछे दौड़ने लगा। किन्तु इलाइजाके उस क्लान्त शरीरमें अकस्मात् मानो हजारों हाथियोंका बल समा गया था। वह बिजलीकी भाँति दौड़कर निकटस्थ ओहिओ नदीमें कूद पड़ी। उस समय जलपर बरफ तैर रही थी। बरफपर उसका बोझ पड़नेसे वह, बरफ सहित जलमें डूब जाने लगी। अपनी भारसे, बरफके एक खंडके पानीमें डूबनेपर, वह दूसरे खंडपर, उसके डूबनेपर तीसरेपर, पैर रखती, कूदती-फाँदती चलने लगी। उसके पैर क्षत-विक्षत हो गये। उसके पैरोंसे, बर्फकी रगड़से फूट-फाटकर, बड़े वेगसे रक्त बहने लगा। किन्तु पुत्रको इतनी दृढ़तासे पकड़े हुए थी कि वह एक बार भी न गिरा। थोड़ी ही देरमें इलाइजा नदीके दूसरे किनारे आ पहुँची। नदीके किनारे उस समय एक आदमी खड़ा था। वह, इलाइजाका हाथ पकड़ उसे, किनारेपर चढ़ाकर, पूछने लगा—तुम कौन हो? तुममें तो अद्भुत साहस देखता हूँ।

इस व्यक्तिके कंठस्वरसे इलाइजाने इसे पहिचान लिया। यह व्यक्ति शेल्बीके घरके समीपही कहीं पर कृषिकर्म करता था। इलाइजाने उसका नाम लेकर कहा—सिम! मेरी रक्षा करो, मेरी रक्षा करो। मैं जहाँ छिप सकती हूँ वह स्थान बतला दो। मेरी इस शिशु-संतानको मालिकने बेच दिया है। क्रेता उसे पकड़ने आया है। सिम! तुम्हारे भी संतान हैं!

सिमने कहा—मैं भरसक तुम्हारा उपकार करूँगा। तुम्हें कुछ डर नहीं। तुम सारी आशंकाएँ दूर करो! पासके इसी ग्राममें चली जाओ। थोड़ी दूरपर यह जो श्वेतवर्णकी अट्टालिका दिखाई पड़ती है, वहाँ जानेपर तुम शरण पा सकती हो।

इलाइज़ाने उस समय सिमको सच्चे हृदयसे आशीर्वाद देकर सन्तानको गोदमें लेकर उसी घरकी ओर चली।

इलाइज़ाके चली जानेपर सिम सोचने लगा कि इसे न पकड़कर मैंने जो भागनेका मार्ग बतला दिया है इससे सम्भव है शेल्बी हमारे ऊपर अप्रसन्न हों; किन्तु उनके असंतुष्ट होनेसे होता क्या है? इस प्रकार दुर्वस्थापन्न स्त्रीके साथ क्या कोई निष्ठुर व्यवहार कर सकता है? सिम अशिक्षित तथा नास्तिक था। उसके हृदयमें इन भावोंका जगना असम्भव नहीं है। किन्तु यदि वह सुशिक्षित कानूनदाँ होता, तो देश-प्रचलित प्रथाकी गौरव-रक्षाके लिए अवश्य ही इलाइज़ाको पकड़कर विचारालयमें उपस्थित करता।

अब हम सिम और इलाइज़ासे विदा लेकर पाठकोंको, इस समय हेली क्या कर रहा है, यह बतलाते हैं। हेली इलाइज़ाको शीघ्रतापूर्वक बरफ़परसे जाते देख अवाक् हो गया। वह साम और आण्डीको पुकारकर कहने लगा—औरतको सात भूतोंने चांप लिया। औरत ठीक बिल्लीकी भाँति उछलती हुई चली जा रही है।

साम और आण्डी हेलीकी बात सुनकर हँसने लगे। उन्हें हँसते देखकर हेली बड़े गर्जन-तर्जनके साथ उन्हें मारनेको उद्यत हुआ। वे कुछ चुप होकर कहने लगे—महाशय! अब हम लोग विदा हुए। घोड़ा लेकर और दूर जानेसे मेमसाहब बिगड़ने लगेंगी। विशेषकर इस स्थानमें अब और विलम्ब करनेकी कोई आवश्यकता नहीं यह कहकर वे दोनों हँसते-हँसते चले गये।

न रहनेपर शरीर शीघ्र ही शिथिल हो जाता है। मानसिक-बल देहको सदा बिजलीकी भांति सतेज बनाता रहता है। जिसमें मानसिक बल नहीं है, वास्तवमें वही मनुष्य दुर्बल है।

दुर्बल होनेपर भी इलाइजाके मनमें यथेष्ट बल था। बालकको गोदमें लेकर बड़े वेगसे चलकर उसने लगभग दस कोसका मार्ग समाप्त किया। क्षणभर भी कहीं नहीं ठहरी। जीवनके लक्ष्य-साधनकी इच्छाने ही इसकी अन्तरात्माको इतनी सबल बना दिया है। उसी आन्तरिक बलने इसके शरीरको इस प्रकार बलिष्ठ बनाया। इस प्रकार चलते-चलते रात्रि समाप्त हुई। राजपथसे सैकड़ों लोग घोड़े तथा गाड़ियों पर चढ़ चढ़कर आने जाने लगे। तब इलाइजाने मनमें सोचा कि इस समय बालकको गोदमें लेकर द्रुतगतिसे चलनेसे लोग उसके भग्गू होनेका सन्देह करेंगे। इसलिए बालकको नीचे उतारकर उसने अपने पहिलेके वस्त्रोंको ठीककर लिया। बालक धीरे-धीरे उसके पीछे-पीछे चलने लगा। कुछ देरके बाद एक उपवनमें जाकर वह अपने साथ जो कुछ खाद्य-पदार्थ ले आयी थी, वह बालकको खिलानेलगी। बालकने देखा कि उसकी माता कुछ खाती नहीं।

तब अपने हाथसे, कुछ खाद्य-द्रव्य लेकर उसने माताके मुखमें दिया। किन्तु इलाइजा उसे खा न सकी। दुःख-भय तथा त्राससे उसका मुख सूख गया था। बालकके पुनः खानेके लिए कहनेपर वह रोते रोते बोली—बेटा! तुमको लेकर जबतक किसी निरापद स्थानमें न पहुँच जाऊँगी, तबतक मैं कुछ नहीं खा सकती। बालकके खा चुकनेपर इलाइजा पुनः ओहिओ नदीकी ओर चली। मनमें सोचने लगी कि ओहिओ नदी पार कर लेनेपर ही उसकी सारी आशंकाएँ दूर हो सकती हैं। क्रमशः और दो तीन गाँव पारकर गयी

एवं अब वह पूर्णतया एक अपरिचित स्थानमें आ उपस्थित हुई। इस स्थानमें उसपर पलायक होनेका संदेह होनेकी कम आशा थी। इलाइजा अफ्रिकावासी दास-दासियोंकी भाँति काली न थी। अँग्रेजके औरससे उसका जन्म हुआ था। वह देखनेपर अँग्रेज कुल-कामिनी ही जान पड़ती थी। अतएव इस स्थानपर इलाइजाकी विपदाशंका कुछ घटी। किन्तु यहाँ तक यह विपदाशंका ही उसे सबल बनाये हुए थी। आशंकाके कम होनेके साथही साथ उसका शरीर भी शिथिल होने लगा। क्रमशः उसे, भूख-प्यास तथा यात्राके क्लेशका अनुभव होने लगा। यहाँपर उसे कोई पहिचान न पावेगा, यह समझकर, उसने एक निकटस्थ दूकानपर जाकर तथा कुछ खानेका समान लेकर एकान्तमें बैठ, भोजन किया। फिर बालकको लेकर धीरे-धीरे चलने लगी। सूर्यास्तके कुछ काल पहिले ही वह ओहियो नदीके किनारेके एक गाँवमें आ पहुँची। सतृष्ण नेत्रोंसे, वह बार-बार नदीके दूसरे किनारे की ओर देखने लगी, और सोचने लगी कि अब किस प्रकार नदीके पार जाऊँ। नदीपार करनेकी ही उसे एक मात्र चिन्ता है। बरफ़ गल गयी है। नौकाके अतिरिक्त पार जानेका और कोई साधन नहीं। नदीके किनारे पासही एक पथिक-शाला दिखाई पडी। वहाँ एक वृद्ध स्त्री कई एक काँटे तथा चमच धोकर साफकर रही थी। इलाइजाने उससे पूछा कि नदीके उस पार जानेके लिए नौका मिल सकती है अथवा नहीं। वृद्धाने कहा—नौका पानेकी कोई सम्भावना नहीं। इससे इलाइजा नितान्त निराश हो गयी। वृद्धा उसकी वैसी दशा देखकर पूछने लगी—क्या उस पार किसी गाँवमें तुम्हारा कोई आत्मीय बीमार है?

इलाइजाने कहा—उसके एक बालककी अवस्था बहुत बुरी

आठवां परिच्छेद

पकड़नेवालोंकी नियुक्ति

सन्ध्याके कुछ पूर्व ही इलाइज़ाने ओहिओ नदीको पार कर लिया था। उस समय अन्धकार होता आरहा था। इस कारण हेलीने उसे न देख पाया। वह निराश होकर नदीके किनारेकी धर्म-शालामें ठहरनेके लिए लौट आया। उस निर्जन घरमें बैठकर वह अपने दुर्भाग्यको स्मरणकर मन ही मन कहने लगा—संसारमें विचार नहीं है। संसारमें न्याय-विचार रहनेपर क्या मुझे इतने रुपयोंका दण्ड होता! इसी समय वहां एक और मनुष्य आ उपस्थित हुआ। वह दीर्घकाय था। उसका मुख देखनेसे ज्ञान पड़ता था कि सत्य ही वह निष्ठुरताका मूर्तिमान अवतार है। वह साक्षात् नरकके द्वारका रक्षक था। इसके पहिरनेके वस्त्र तथा हाव-भाव उसके स्वभावके अनुकूलही थे। हेली इसे देखते ही हाथ फैला, संतोष प्रकटकर कहनेलगा—लकार आज मेरा बड़ा सौभाग्य है जो तुमसे भेंट होगयी!

इस व्यक्तिका नाम था टमलकार। पहिले टमलकार और हेली साझेमें व्यापार करते थे। लकारके साथ और एक नाटे आकारका पुरुष आया था। हेली उसे देखकर बोला—लकार तुम्हारे साथ और जो एक व्यक्तिको देख रहा हूँ, वे, समझता हूँ, तुम्हारे व्यापारमें साझीदार होंगे।

तब लकारने मार्क और हेलीका परस्पर परिचय कराया। परिचय हो जानेपर वे तीनों व्यक्ति व्यवस्थापक सभाके सदस्योंकी तरह टेबुलको घेरकर बैठे। पहिले हेली अपने वर्तमान दुर्भाग्यके विषयको बड़ी करुणा-पूर्ण भाषामें कहना आरम्भ किया। बारम्बार अपने अदृष्टको कोसता हुआ

कहनेलगा कि औरतोंकी जात बड़ी दुष्ट होती है। इनको न्याय-अन्यायका विचार बिल्कुल नहीं होता। मैंने इतना रुपया देकर बालकको खरीदा और वह दुष्ट एक सन्तानका स्नेह न त्याग सकी। उस बदमाशका कैसा अन्याय है कि बालकको लेकर भाग गयी।

लकारका साथी मार्क, हेलीकी बात सुनकर बड़ी गम्भीरतासे कहनेलगा कि वर्त्तमान समयमें कृषि, वाणिज्य, शिल्प, तथा विज्ञान आदिमें नये नये आविष्कार होते हैं। किन्तु सन्तान-स्नेह-शून्य स्त्रियोंकी एक जातिके उत्पादनकी नयी प्रणालीका आविष्कार हो जाता तो संसारका बड़ा उपकार होता। जितने तरहके नये नये आविष्कार दीख पड़ते हैं, उनमें इस प्रकारकी स्त्रियोंके उत्पादनकी प्रणालीका आविष्कार सर्वापेक्षा अधिक मंगलजनक माना जायगा, इसमें कुछ सन्देह नहीं।

हेलीने कहा—तुमने ठीक कहा है। इस प्रकारकी स्त्रियोंको उत्पन्न किये बिना वाणिज्य-व्यवसाय करना बड़ा कठिन हो जायगा। छोटे-छोटे बालक-बालिकाओंसे उनका क्या उपकार होता है, बोलो? किन्तु वे स्त्रियां बालक-बालिकाओंको नहीं छोड़ना चाहतीं। वे नहीं समझ सकतीं कि इन बालकोंसे दुःख मिलनेके अतिरिक्त और कोई लाभ नहीं है। विशेषतः क्रेताको बिना किसी बाधाके वे सब बालक न देकर इस अन्याय व्यवहारसे घोर पापका सञ्चय करती हैं।

हेलीकी बात समाप्त होने पर मार्क फिर कहनेलगा—भाई! गतवर्ष मैंने एक रोगी लड़केके साथ एक अच्छी दासी खरीदी। सोचा था कि रोगी लड़केको मांकी गोदसे छीन कर बेचडेनेमें उसकी माता कुछ आपत्ति न करेगी। किन्तु स्त्री-चरित्र कुछ समझ नहीं आता। रुग्ण बालक देखकर

उनका प्यार और अधिक हो जाता है। क्या कहूँ! उस रोगी बालकको बेंच देनेपर कुछ दिनमें उसकी माता भी मर गयी।

मार्ककी यह बात सुनकर हेलीने कहा—मेरी भी एक बार ऐसी ही दशा हुई थी। मैंने एकबार एक अन्धा लड़का तथा उसकी मांको खरीदा था। खरीदनेके समय मैं नहीं जानसका कि यह अन्धा है। अन्तमें जब मैंने जाना कि यह अन्धा है, तो उसे एक दूसरी जगह बेच दिया। किन्तु उसकी मां उसे गोदमें लेकर नदीमें कूदकर मर गयी।

टमलकार अबतक ब्राण्डीकी बोतलमें ही व्यस्त था। उसे बात-चीत करनेका समय ही न मिला। इस समय ब्राण्डीकी बोतल खाली हो जानेसे बोल उठा—भाइ, मेरी कार्य-प्रणाली बिल्कुल स्वतन्त्र है। स्त्री हो चाहे पुरुष, बालक हो चाहे युवती, मैंने पूर्व ही कह दिया है कि बिक्रीके समय रोना आरम्भ करनेपर मैं बेंतके आघातसे उसका प्राण लेलूँगा। युवतियोंको विशेष करके यह समझा दिया है कि तुम्हारी गोदकी सन्तानपर तुम्हारा कोई अधिकार नहीं है। मैंने रुपयेसे खरीदा है, मैं अपने इच्छानुसार कार्य करूँगा। इससे कोई रोनेका साहस नहीं करता। किन्तु दो एक दुष्ट हैं जो इस प्रकार सावधान कर देनेपर भी रोने लगते हैं। ऐसा होनेपर उसे हटानेके लिए इन वज्र मुट्ठियोंमें विलक्षण शक्ति है—यह कर टमलकारने उसी समय उसी टेबुलपर एक मुष्टि-प्रहार किया। टेबुल उसके लगते ही टुकड़ टुकड़े हो गया।

हेलीने कहा—लकार इस प्रकारसे मारना मैं कोई प्रशंसाका कार्य नहीं समझता। वाणिज्यके द्वारा जिससे अधिक लाभ उठा सकें ऐसा चेष्टा करना, हमलोगों का आव-

श्यक कर्त्तव्य है। हमलोगोंके सबके ही तो आत्मा है। इसलिए आत्माकी भलाईके लिए प्रहार करनेसे शान्त रहना उचित है। विशेषत मेरा ऐसा विचार है कि मार-पीट न करनेसे ही वाणिज्यमें अधिक लाभ हो सकता है।

हेलीकी यह बात सुनकर लकार बोला—तुम बेटा, हमारे सामने फिर 'आत्मा-आत्मा' न करना। तुम्हारी जैसी आत्मा है, वह मैं जानता हूँ। तेरे शरीरको टुकड़े-टुकड़े करके चलनीमें चालनेपर भी एक बूँद आत्मा उससे बाहर न निकलेगी।

हेलीने कहा—लकार इसमें चिढ़ क्यों उठे। अच्छी बात कहनेपर भी तुम चिढ़कर आग हो जाते हो। लकारने क्रोधसे कहा—तेरी धर्मकी बात मैं नहीं सुनना चाहता। तू मनमें सोचता है कि मैं बड़ा धार्मिक और सज्जन हूँ। तेरा धर्म और तेरी भलमसी तो एक विशेष जाल है। उस फँदेमें मुझे नहीं फँसा सकता। लोगोंको रुपया उधार देते समय बड़ी भलमंसी दिखाता है। अन्तमें रुपया लेनेके समय जिस तरह तू मनुष्यको गला दबाकर मारता है, वैसा कोई भी नहीं कर सकता।

इसी समय टमलकारका साथी मार्क बोला—भाई! वाद-विवाद, तर्क-वितर्क छोड़ो। कामकी बातें करो! भिन्न-भिन्न मनुष्योंके भिन्न-भिन्न मत होते हैं। हेली जो अत्यन्त चतुर आदमी है। उसीसे वह दो चार बातोंमें ही बहुत पा जाता है। उसने जो बन्दोवस्तकी बात कही है, उसे सब लोग करो। फिर हेलीको उसने सम्बोधन कर कहा—भाई! उस औरतको पकड़ लेनेपर क्या दोगे?

"वह स्त्री मेरी सम्पत्ति तो नहीं है! मैं केवल उस लड़के

को चाहता हूँ। उस लड़केको खरीद करही तो मैं बेवकूफ बना हूँ।"

लकारने कहा–तुम बेटा, सदासे ही बेवकूफ बनते आये हो।

मार्क—लकार! तुम इस समय थोड़ा चुप रहो। इस विवादकी क्या आवश्यकता? मैं इस विषयमें एक बन्दोवस्त करना चाहता हूँ।

हेली—तुम कितना चाहते हो? मैं तो कहता हूँ कि उस लड़केको बेचनेपर जो लाभ होगा, उसमें से दस प्रति शत तुम्हें दूँगा।

लकार—तुम यह सब चालाकी रहने दो। हम लोग खोज करते करते यदि लड़केको न पा सके, तो हम लोगोंका इतना परिश्रम व्यर्थ ही जायगा। हम लोगोंके परिश्रमके लिए पहिले ही ५०) रुपया देने होंगे।

मार्क—वह देंगे ही! मैं भी एक कानूनकी रोटी खाने वाला वकील हूँ। बयाना न देनेसे बन्दोवस्त नहीं हो सकता, यह मैं भली भाँति जानता हूँ।

अन्तमें बहुत बातचीत करनेके पश्चात् हेलीने उन लोगोंके हाथमें पचास रुपये दिये। मार्क तथा लकार आज कल भगुओंको पकड़नेका व्यवसाय करने लगे हैं। यह व्यवसाय उस समय वकालतके व्यवसायकी तरह उत्तम माना जाता था। इन दो व्यवसायोंके द्वारा केवल धन ही इकट्ठा न होता वरन् देशीय आईनकी गौरव-रक्षा तथा देशहितैषिता में दो सत्कार्य भी इन्हीं व्यवसायोंके अन्तर्भूत हो रहे थे। इस लिए इस प्रकारका व्यवसाय करनेमें उन लोगोंको लज्जा करनेका कोई कारण न था। वे लोग हेलीसे रुपये लेकर ओहियो नदी पार करनेका सुयोग देखने लगे।

नवाँ परिच्छेद

——:*:——

वक्ता और वक्तृता

साम और आन्टी ओहिओ नदीके किनारेसे हेलीका साथ छोड़कर घरकी ओर लौटे। साम मार्गमें निरन्तर हँस रहा था। उसने आन्टीसे कहा—आन्टी, तुम बालक हो; मेरे न रहनेपर क्या तुम्हें इतनी चालाकी सूझती? दो रास्ते की बात बनाकर दो घंटे तक हेलीको घुमाया। इस प्रकारसे दो घंटे तक बिना घुमाये इलाइजा अवश्य पकड़ ली जाती।

इसी प्रकारकी बातचीत करते करते रात्रिके दस या ग्यारह बजे वे शेल्बीके घर पहुँचे। उन लोगोंके घोड़ोंकी टापोंका शब्द सुनकर शेल्बी साहबकी मेम अत्यन्त व्यस्त होकर घरसे निकलीं। वे अत्यन्त उत्कंठित भावसे सामसे बार बार पूछने लगीं—हेलीसाहब और इलाइजा कहाँ हैं?

सामने कहा—हेली अत्यन्त कायर होकर धर्मशालामें ठहर गया।

"इलाइजाका क्या हुआ? उसका समाचार कहो!"

"परमेश्वरकी कृपासे इलाइजा ओहियो नदी पारकर केन्यान देशमें पहुँच गयी।"

"केन्यान प्रदेश पहुँच गयी!—यह क्या?" शेल्बीकी मेमने मनमें सोचा कि हो न हो इलाइजाकी मृत्यु हो गयी!

"मेमसाहब! परमेश्वर अपने जनकी रक्षा आपही करते हैं। इलाइजा ठीक मानों परमेश्वरके रथपर चढ़कर ओहिओ नदी पार कर गयी। इस तरह की आश्चर्यजनक घटना मैंने और कभी नहीं देखी।"

साम शेल्बीकी मेमके पास जब कभी कोई बात करता तब उसका हृदय धर्म भावसे विशेष उत्साहित हो जाता था। इसलिए इलाइजाका पलायन-वृत्तान्त वह नाना प्रकारकी धर्मशास्त्र मूलक बातोंके साथ वर्णन करने लगा। इसी समय शेल्बीने स्वयं बाहर आकर सामको घरमें जाकर मेमसे ये सब बातें करनेके लिए कहा। और मेमसे कहा—"एमिलि! तुम इतनी अधीर होकर शीतमें बाहर क्यों चली आयी? तुम्हें कुछ बीमारी हो जाय! घरके भीतर जाकर सब बातें क्यों नहीं सुनती? तुम तो इलाइजाके लिए बिल्कुल अस्थिर हो गयी हो!"

मेमने कहा—आर्थर! मैं स्त्री हूँ, मेरे भी संतानें हैं। सन्तानका स्नेह प्रसूतिकाके अतिरिक्त और कोई नहीं समझ सकता। इलाइजा इस समय किस दुर्दशा ग्रस्त अवस्थामें है एवं हमने उसके साथ कितनी निष्ठुरताका बर्ताव किया है, यह सन्तान-वत्सला माता तथा पतिप्राणा स्त्रीके अतिरिक्त क्या और कोई समझ सकता है? वस्तुतः इलाइजाके प्रति इस प्रकारका व्यवहार करके हमलोगोंने ईश्वरके निकट घोर पाप किया है!

"क्या पाप हुआ? नितान्त बाध्य होकर ही मैंने उसे बेचा है। यह भी पाप है!"

"आर्थर! मैं तुम्हारे साथ तर्क-वितर्क नहीं करना चाहती! मैं मन ही मन भली भाँति समझ सकती हूँ कि इलाइजाके प्रति हमने घोर अत्याचार किया है।"

तब शेल्बीने मेमके साथ और कोई तर्क न किया और सामसे आद्योपान्त इलाइजाके भागनेका विस्तृत वृत्तान्त मेमसे कहनेको कहा।

साम कहने लगा—मैंने अपनी आंखोंसे देखा है। इला-इजा ओहियो नदी पारकर दूसरे किनारे पहुँच गयी। बरफ के टुकड़े तैर रहे थे, उसी परसे दौड़कर चली गयी। ज्योंही एक बरफका टुकड़ा उसके भारसे डूबने लगा त्योंही वह आगेके दूसरे टुकड़े पर कूद गयी। इसी प्रकार बरफके ऊपरसे होते हुए बड़े वेगसे कूदते कूदते किनारे पर पहुँचते ही एक आदमीने उसका हाथ पकड़कर उसे ऊपर उठा लिया। किन्तु उसके पश्चात् बड़ा अन्धकार हो गया। मैं और कुछ न देख सका।

शेल्वीने कहा—यह बड़े आश्चर्यका कार्य है। तैरती हुई बरफके ऊपरसे होकर चली गयी? मनुष्य सहज ही तो इस प्रकारसे चला जा सकता है मुझे, ऐसा विश्वास नहीं होता!

साम—हुजूर, सहज ही क्या कोई इस प्रकारसे भाग सकता है। ईश्वरकी विशेष करुणाके बिना कोई इस प्रकार नहीं जा सकता। मैं संक्षेपमें आद्योपान्त सब वृत्तान्त कहता हूँ। आप सुनकर सहज ही देख सकेंगे कि इसमें ईश्वरकी विशेष कृपा थी। मैं, आन्डी तथा हेली साहब संध्यासे कुछ पूर्व ओहियो नदीके किनारे पहुँचे। मैं सबके आगे आगे चल रहा था। आन्डी और हेली साहब मेरे कुछ पीछे थे। मैंने ही पहिले समीपके होटलकी खिड़कीके पास इलाइजाको खड़ा देखा। मैंने झूठ मूठ ही अपने मस्तकपरकी टोपी फेंक दी तथा टोपी हवासे उड़ गयी—कहकर बड़े उच्च स्वरसे चिल्लाने लगा। उस चीत्कारसे मुर्दा भी जाग उठता। इसलिये इला-इजा उस चीत्कारको सुनकर पीछे मुँह फेरकर मुझे देखतेही पीछेके द्वारसे निकलकर भाग चली। उसी समय हेलीसाहब-ने उसे देख पाया। वह बाघकी भाँति उसपर टूट पड़ा। वह

उसके पीछे पीछे दौड़ने लगा। इलाइजा, दूसरा कोई उपाय न देखकर, नदीमें कूद पड़ी और उतराती हुई वरफपर पैर रखती दूसरे दूसरे किनारे पहुँच गयी।

शेल्बीकी मेम यह बात सुनकर बोल उठीं—हे परमेश्वर! तुम्हें सहस्रों धन्यवाद। तुम्हारी ही करुणासे इलाइजा जीती बची!

यह कहकर फिर साम्से पूछा—इलाइजाका लड़का तो जीता है?

सामने कहा—उसका लड़का भी जीवित है। किन्तु मेरे न होनेसे इलाइजा आज निश्चय पकड़ ली जाती। वस्तुतः सदुद्देश्यके लिए ईश्वर एक एक यत्न समय समयपर सुझाते गये। आज सवेरे घोड़ा लेकर गड़बड़ करके हली साहबके दो घंटे खराब किये। तत्पश्चात् उसको ढाई कोससे अधिक रास्तेसे घुमा लाया। ये सब कार्य ईश्वरकी विशेष करुणाका फल है।

शेल्बी साहब सामके मुखसे ईश्वरकी करुणाकी इस प्रकारकी व्याख्या सुनकर वे अत्यन्त क्रोधित होकर बोले—यदि तुम इस प्रकार ईश्वरकी विशेष कृपाका कार्य मेरे घर रहकर फिर करोगे तो अवश्य दण्ड पाओगे! किसी आदमीके साथ कारवार करके इस प्रकार कपटाचरण करना नितान्त अन्याय है। मैं तुम्हारे इस दुष्ट तथा प्रवञ्चना पूर्ण कार्यका समर्थन नहीं कर सकता।

साम अत्यन्त गम्भीरता पूर्वक कहने लगा—हुजूर, आप अथवा मेमसाहब ऐसा क्यों करेंगे। मैं आपका गुलाम हूँ। समय समय पर ऐसी दुष्टता हो ही जायगी।

सामके आजके कार्यमें मेमसाहबका भी हाथ था। इसलिए शीघ्र विदा करनेके लिए मनमें कहा—साम! तुम

स्वयं समझ सकते हो कि इस प्रकारकी दुष्टता अन्याय है। अतएव तुम्हारा दोष छुड़ाया जा सकता है। तुम दोनों ही अत्यन्त क्षुधार्त होकर आये हो। शीघ्र ही क्लोईके पास जाकर भोजन करो!

साम एक सदुवक्ता है। कभी किसी राजनैतिक सभामें अथवा वक्तृतामें जानेके समय शेल्बीसाहब सामको साथ ले जाते थे। सामने इसी प्रकारसे शेल्बीसाहबके साथ साथ रहकर, अनेकानेक सभाओंकी कार्यवाहियां देखी थीं एवं अनेक वक्तृतायें सुनी थीं। अनेक स्थानमें शेल्बीसाहबके सभागृहमें प्रवेश कर लेनेपर साम अपने बराबरके दासोंको लेकर एक दूसरी सभा करता था। उसमें वह व्याख्यान देता था। इसीलिये उसकी वक्तृता देनेकी शक्ति विशेष परिपक्व हो गयी थी। किन्तु दुःखका विषय यह है कि इलाइजाके भाग जानेके विषयमें वह अपने मन भर भाषण न कर सका। ईश्वरकी विशेष करुणाकी बात कहते ही शेल्बीने उसे धमका दिया, इससे वह भग्नोत्साह होगया। इस समय रन्धनशालामें जाते-जाते साम मन ही मन सोचने लगा कि इस गुरुतर विषयके सम्बन्धमें कुछ भाषण न कर सका, यह बड़े दुःखकी बात है। इसलिये रसोईं घरमें अन्यान्य दास-दासियोंके समीप इस विषयपर अवश्य वक्तृता देनी होगी।

बूढ़ी क्लोईके साथ भोजनके लिए बार बार सन्धि तथा विग्रह होने लगा। किन्तु आज साम विशेष क्षुधित हुआ है। इसलिए चाहे जैसे हो आज सन्धि स्थापित करनी ही होगी। यह सोचकर रसोईं घरमें आया एवं क्लोईको देखते ही उसके रंधन-नैपुण्यकी प्रशंसा करने लगा। सामकी प्रशंसा तथा स्तुति-वाक्योंसे बूढ़ी पाचिकाके कर्ण-कुहरमें सुधा-वर्षण होने लगा। इसलिए घरमें जितने प्रकारकी खाद्य सामग्री थी

वह सब लेकर फ्लोई सामके निकट उपस्थित हुई। इस संसारमें आत्मप्रशंसाको सभी चाहते हैं। आत्मप्रशंसा सुननेके अनिच्छुक इस लोकमें हैं कि नहीं, इसमें सन्देह है। जो समय-समयपर कहा करते हैं कि मैं खुशामद-वाक्य पसन्द नहीं करता, खुशामदी लोगोंको कभी आश्रय नही देता, वे भी खुशामद प्रिय हैं, यह अनायास ही प्रमाणित हो सकता है। एक बार उनलोगोंसे कहो कि वे खुशामद प्रिय नहीं हैं, इसलिए कोई उन्हें खुशामद द्वारा वशीभूत नहीं कर सकता, इस प्रकारके खुशामदी वाक्योंके प्रयोगसे उनका हृदय भी विचलित हो जायगा। वस्तुतः खुशामद वाक्य किसीको भी अप्रिय नहीं, किन्तु भिन्न-भिन्न लोगोंके हृदय भिन्न-भिन्न प्रकारके स्तुति, स्तव-वाक्योंसे विचलित होते हैं।

सामके रसोईं घरमें भोजन करने बैठनेपर सब दास-दासियाँ वहाँ आकर, इलाइजा तथा उसके पुत्रकी क्या दशा हुई, पूछने लगीं। घरको दास-दासियोंसे, भरा हुआ देखकर सामने अपनी सुदीर्घ वक्तृता आरम्भ की।

"तुम लोग देखो! स्वदेशी बन्धु-गण! तुम लोग देखो! तुम लोगोंकी रक्षा करनेके लिए मैं सब कामोंमें ही अग्रसर रह सकता हूँ। हमलोगोंमेंसे किसी एकके ऊपर यदि कोई अत्याचार करे तो यह समझ लेना चाहिए कि हम सब लोगोंपर अत्याचार हुआ। तुम स्पष्टतया अनुभव कर सकोगे कि इसके भीतर एक नीति रहती है। इसलिए प्राण देकर भी तुम लोगोंकी रक्षा करना मुझे उचित है"

सामके इतना कहते ही आन्टी बोल उठा—साम! सवेरे तुमने कहा था कि तुम इलाइजाको पकड़वा दोगे?

आन्टीकी बात सुनकर साम और भी गम्भीर भाव धारण कर बोला—आन्टी! तुम इन सब कठिन विषयोंको नहीं

समझ सकते। तुम्हारे ऐसे बालकके हृदयमें सद्भाव एवं सदु-द्दिच्छा रह सकती है, किन्तु इन सब बातोंका नैतिक तत्त्व तुम कैसे समझ सकते हो !

नैतिक शब्द सुनकर आन्टी चुप होगया। साम फिर कहने लगा—

मैं सदा विवेककी रक्षा कर कार्य करता हूं। पहिले मैंने समझा था कि शेल्बी साहबकी इच्छा है कि इलाइज़ा पकड़ी जावे; इसलिए मैंने निश्चय किया कि विवेकके अनुरोधसे उसीके अनुसार कार्य करूंगा। इसके पश्चात् जब देखा कि मेम साहबकी ऐसी इच्छा नहीं है, तब विवेक दूसरे मार्ग-से लेचलने लगा। विवेकको मेमकी ओर रहनेसे अधिक लाभ-की सम्भावना थी। अतएव अब तुम सहजमें ही समझ सकते हो कि नैतिक पथ, विवेकका पथ है, लाभका मार्ग ही हमलोगों को एकमात्र गम्य है। अब तो आन्टी, मुख्य बात समझ गये।

सामके श्रोतागण बड़े ध्यानसे उसकी बातें सुन रहे थे। इससे वह अब भी चुप न हो सका। एक मुर्गीकी टांग मुँह में रख कर बोला—

विवेक, यह कार्य साधारण नहीं है। मनमें सोचकर-मैंने पहिले एक मार्ग ग्रहण किया, तत्पश्चात् दूसरा मार्ग ग्रहण किया। इनमेंसे कौनसा गमनीय तथा नैतिक है, यह नहीं समझ पड़ता।

बूढ़ी क्लोई सामकी सुदीर्घ वक्तृता सुनते-सुनते कुछ अधीर हो गयी थी। उसने कहा—साम! इस समय तुम शय्या-गमन नीति अवलम्बन करो एवं अन्य लोगोंको सोनेका सुयोग दो!

क्लोईके ऐसा कहनेपर सामने अपनी वक्तृता समाप्त की और सबको आशीर्वाद देकर विदा किया।

दसवाँ परिच्छेद

व्यवस्थापक समाजके सदस्योंमें भी मनुष्यात्मा है

जिस दिन सायंकालको इलाइजाने ओहिओ नदी पार किया उसी दिन अपरान्ह ७॥ बजेके समय व्यवस्थापक समाजके मेम्बर वार्ड साहब अपनी सहधर्मिणीके साथ घरमें बैठकर नाना प्रकारकी बातचीत कर रहे थे। नीति विशारद पण्डित वार्ड साहब तथा उनकी मेममें जो बातें हो रही थीं, वे ही यहाँपर लिखी जाती हैं। मेमने कहा—जान! मुझे बिलकुल आशा नहीं थी कि आज तुम घर आ सकोगे।

"मैं घर न आता, किन्तु अब दक्षिण-देश जारहा हूँ, मनमें सोचा, आज रात्रि भर घरमें रहकर, कल प्रातःकाल चला जाऊँगा। सदा कार्यमें व्यस्त रहता हूँ मेरे [illegible] आधे हो गये। कैसा भयानक सिर दर्द होरहा है।"

वार्डसाहबकी धर्मपत्नी सिरकी पीड़ाकी बात सुनकर कपूरकी शीशी लेने चलीं। किन्तु साहबने उन्हें पकड़ लिया और कहा कि औषधिकी कोई आवश्यकता नहीं। एक प्याला चायसे ही काम चल जायगा। कार्यकी अधिकतासे मैं अत्यन्त व्यग्र होरहा हूँ। दिन दिन भर केवल आईनका खर्रा तैयार करना ही बड़ा विरक्ति-जनक कार्य है।

मेम—आजकल व्यवस्थापक समाजमें किन किन आईनोंके खर्रे तैयार होते हैं?

वार्ड—(अत्यन्त आश्चर्यकर मनही मन कहने लगे) स्त्रियाँ भी आईन कानूनकी खोज करनेमें व्यस्त रहती हैं (प्रकट)

किसी गुरुतर कानूनका खर्रा आजकल प्रस्तुत नहीं करना पड़ता।

"क्यों, मैंने सुना है कि व्यवस्थापक समाजका बनाया हुआ एक ऐसा आईन जारी होगा कि कोई भी भागे हुए दास-दासियोंको आश्रय न दे सकेगा। उनके अनाहार तथा शीतके मारे मरते रहनेपर भी कोई उनको खाना कपड़ा न दे सकेगा। क्या सचमुच ही यह कानून जारी हुआ है? मैं विश्वास नहीं कर सकती कि जिनके हृदयमें दया-धर्म है, वे इस प्रकारका कठोर, नीति-विरुद्ध, मनुष्यतासे परे कानून जारी कर सकते हैं। देखो, कैसी भयानक अवस्था है; एक दास या दासी दस दिनका मार्ग तयकर किसी स्थानसे भागी आरही है; उसके पास न तो एक दिनके खानेके लिए पासमें पैसा है और न शीतसे अपनी रक्षा करनेके लिए वस्त्र है। इस प्रकारके निराश्रय और अनाथ लोगोंको कोई भला आदमी एक संध्या खिला नहीं सकता, अपने घरमें एक बित्ता जगह नहीं दे सकता! यह बात सुनकर ही मेरा कलेजा काँप उठता है। यह तो नितान्त धर्म-विरुद्ध और नीति-निन्दित कानून है।

वार्डसाहबने हँसकर कहा—तुमतो आजकल बड़ी नीति-विशारद तथा पण्डित होगयी हो!

मेम—मैं आईन, कानून अथवा राजनीतिकी कोई विदुषी नहीं हूँ। किन्तु मैं स्पष्ट देखती हूँ कि इस प्रकारके कानूनको प्रचार होनेपर केवल निष्ठुर व्यवहार ही वर्तना होगा एवं आईन पालन करनेसे प्रत्येक स्त्री-पुरुषको वाध्य होकर हृदय स्थित दया धर्मका विसर्जन करना पड़ेगा। जान्! तुम्हीं वतलाओ न, क्या इस प्रकारका कानून धर्म-संगत अथवा न्याय-संगत है?

"न्याय-संगत है ही ।"

"मैं कदापि यह विश्वास नहीं कर सकती कि तुम इस प्रकारके आईनको न्याय-सङ्गत समझते हो। मुझे ऐसा जान पड़ता है कि तुमने स्वयं इस प्रकारके कानूनके सम्बन्धमें अपनी सम्मति नहीं दी है !

" मैंने भी इस कानूनके विषयमें अपनी सम्मति दी है।"

" यह बड़ी लज्जाकी बात है कि तुमने इस प्रकारके कानूनमें अपनी सम्मति दी है। यह अत्यन्त घृणित और जघन्य कानून है। मैं निश्चय कहती हूँ कि इस कानूनके अनुसार मैं कभी न चलूँगी। कोई भी सुयोग मिलते ही मैं इस घृणित कानूनके विधानका उल्लंघन करूंगी—कैसा आश्चर्य है, किसी निराश्रय दीन दरिद्रको काला दास होनेसे, एवं आजीवन गोरोंके अत्याचारसे पीड़ित-क्षुधित होकर द्वारपर आनेसे एक मुट्ठी अन्न भी नहीं दे सकती। शीतार्त हो मेरे द्वारपर आश्रयके लिये आनेपर उसे मैं घरमें रख नहीं सकती। इस प्रकारके दुरवस्थापन्न व्यक्तिको आश्रय देनेसे क्या कोई स्त्री कभी मुँह मोड़ सकती है ?"

"मेरी ! तुम मेरी बात सुनो। तुम्हारा हृदय जितना कोमल है, वह मैं भली-भाँति जानता हूँ। तुम्हारा हृदय दया और धर्मसे परिपूर्ण है। किन्तु इस प्रकारके दया धर्म भी कभी कभी अनिष्टके कारण हो जाते हैं। सर्वसाधारणकी हितकामनासे कभी कभी हमलोगोंको दया, माया, स्नेह, ममता, इन सबको त्याग देना पड़ता है। वर्तमान समयमें जैसा राजनीतिक आन्दोलन उपस्थित होरहा है उससे जन विशेषके प्रति दया दिखलानेमें विरक्ति रखना बहुत आवश्यक है। इसलिए यह कानून न्यायविरुद्ध नहीं कहा जा सकता।"

"ज्ञान ! मैं तुम्हारा राजनीतिक आन्दोलन कुछ नहीं समझती, किन्तु कौन विषय धर्म-सङ्गत है एवं कौन धर्म-विरुद्ध है, यह मैं सहजमें ही जान सकती हूँ। दरिद्रके प्रति दया-प्रकाश करना, भूखेको भोजन देना, प्यासेको पानी पिलाना, दुःखीका दुःख दूर करना, मानव-जीवनके प्रधान कर्त्तव्य हैं।"

"किन्तु इस प्रकारके कर्त्तव्य-प्रतिपालनके द्वारा यदि साधारण लोगोंका अहित हो तो क्या वह तुमको करना उचित है ?"

"मैं कभी स्वप्नमें भी नहीं सोचती कि इन कर्त्तव्योंका पालन करनेसे साधारण लोगोंका अमंगल हो सकता है !"

"मेरी ! तुम मनोयोग पूर्वक मेरी बात सुनो। मैं तुमको सहजमें ही समझाये देता हूँ कि इस प्रकार कर्त्तव्य-पालन द्वारा जनसाधारणका अहित हो सकता है।"

"तर्कमें तुम्हें कोई भी परास्त नहीं कर सकता, यह मैं अच्छी तरह जानती हूँ। तुम सम्पूर्ण रात्रिभर तर्क-वितर्क करते रह सकते हो। किन्तु मैं पूछती हूँ कि इसी समय यदि तुम्हारे द्वारपर एक निराश्रय क्षुधार्त दास आकर एक मुट्ठी अन्न माँगे तो क्या तुम उसे भग्गू कहकर अपने द्वारपर से दूर करदे सकते हो ? इस प्रकारके मनुष्यके प्रति निश्चय ही तुम्हारे हृदयमें दयाभाव का सञ्चार होगा।"

" इस प्रकारके व्यक्तिको द्वारसे दूरकर देना बड़ा कष्टप्रद कार्य है, किन्तु कर्त्तव्यके अनुरोधसे न करनेसे भी नहीं बन सकता।"

"ऐसे कठोर आचरणको तुम कर्त्तव्य बतलाते हो ! ऐसा आचरण कभी भी कर्त्तव्योंमें नहीं गिना जा सकता। दास-दासियोंपर लोग घोर अत्याचार करते हैं, उनके साथ घोर निष्ठुराचरण करते हैं, इसलिए वे सब भाग जाते हैं।

उनपर अत्याचार न करें तो वे कभी न भागें। अतएव जिनके पास दास-दासियां हैं, उनके अत्याचार न करनेसे ही हो सकता है।"

"मेरी ! तुम्हें एक युक्ति द्वारा इस आईनकी आवश्यकता समझा दे सकता हूं।"

मेम—मैं ऐसे निष्ठुराचरणके सम्बन्धमें तुम्हारी कोई भी युक्ति नहीं सुनना चाहती। मैं अच्छी तरहसे जानती हूं कि तुम्हारे सरीखे कानून-व्यवसायी लोग अनेक प्रकारके कुटिल तर्कों द्वारा सचका झूठ और झूठको सच प्रमाणित कर दे सकते हैं।

साहब मेमके साथ इस प्रकार बात-चीत कर ही रहे थे कि इसी समय काजो नामक एक दास वहां आ, बड़ा भय-भीत होकर कहने लगा—मेमसाहब, एकबार नीचे आकर देखिये तो कैसी भयानक अवस्था है।

मेम साहब नीचे रसोईघरमें जाते ही बड़े भयके साथ साहब-को बुलाने लगीं। साहबने उस स्थानपर जाकर देखा, कि एक दुबली पतली स्त्री एक बालकको हृदयसे लगाये हुये अचेत उनके द्वारपर पड़ी हुई है। उसके दोनों पैर क्षत-विक्षत हो गये हैं। उनसे रक्तकी धारा बराबर बह रही है। उसके वस्त्रादि छिन्न-विच्छिन्न हो गये हैं। वार्डसाहबने देखते ही पहिचान लिया कि यह भग्गू दासी है। किन्तु ऐसी सुन्दर दासी उन्होंने और कभी देखी न थी। उसकी सुन्दर मुखश्री देखते ही उनका तथा उनकी स्त्रीका हृदय करुण रससे परिपूर्ण हो गया। वे सब स्त्रीको चैतन्य कर-नेके लिए अनेक प्रकारके यत्न तथा औषधियोंका प्रयोग करने लगे। जिस समय वह अचेत थी, उस समय लड़के-को उसकी गोदसे लेकर काजो अपनी गोदमें लिए था। स्त्री

चैतन्य होते ही बालकको अपनी गोदमें न देखकर विक्षिप्तकी भाँति 'हेरी हेरी' कहकर चिल्ला उठी। बालक चीत्कार सुनते ही काजोकी गोदसे माताकी गोदमें चला गया। तब वह कुछ शान्त होकर बार्डसाहबकी मेमसे कहने लगी,—मेरी रक्षा करो, मुझे आश्रय दो; मेरी संतानको शत्रुके हाथसे बचाओ!

मेम—बेटी! तुम्हें कुछ डर नहीं। यहाँ कोई तुम्हारा अनिष्ट नहीं कर सकता। तुम निश्शंक होकर यहाँ ठहर सकती हो!

यह बात सुनकर विपन्ना रमणीने कहा—मंगलमय ईश्वर आपको सुखसे रखें! तत्पश्चात् बार्डसाहबकी मेमने उसके विश्रामके लिए रसोई घरके बगलकी कोठरीमें बिछौना बिछानेको कहा एवं दास-दासियोंको उसकी परिचर्या करनेकी आज्ञा दे, भोजन करनेके लिए घरमें चली गयीं। कुछ समयके बाद बार्डसाहबने अपनी स्त्रीसे कहा—यह स्त्री कहांसे आ रही है, मैं नहीं समझ सका। यह बड़ी सुन्दरी युवती है!

बार्डसाहबकी स्त्रीने स्वामीकी ऐसी बातें सुनकर कहा—थोड़ा ठहरिये! वह इस समय सो रही है। उसके उठनेपर उसका परिचय पूछा जायगा।

कुछ समयके बाद फिर बार्डसाहब बोले—प्रिये! इस स्त्रीके पहिरनेके कपड़े बिलकुल जीर्ण हो गये हैं, देखो तो तुम्हारा कोई गाउन वह पहिन सकती है कि नहीं। वह तुमसे कुछ लम्बी है।

बार्डसाहबकी स्त्री उस समय मन ही मन हँसने लगी। सोचा, स्वामीकी कानूनी-विद्या क्रमश: रद्दी होती जा रही

है। किन्तु प्रकटमें इस विषयपर कुछ भी न कहकर उन्होंने केवल इतना ही कहा—अच्छा दे दिया जायगा।

कुछ समयके बाद बार्डसाहब फिर बोल उठे—प्रिये! मेरा वह पुराना बनातका ओढ़ना इसको देदो! यह जिसप्रकार शीतार्त होकर आयी है, उससे इसको लेपकी आवश्यकता है।

इसी समय उनकी दीना नामकी दासी आकर बोली—मेम साहब वह स्त्री सोकर उठ गयी। वह आपसे कुछ कहना चाहती है। तब बार्डसाहब और उनकी सहधर्मिणीने उस स्त्रीके पास जाकर पूछा—हम लोगोंसे तुम्हें कुछ कहना है?

वह स्त्री और कुछ न कह सकी। केवल धीरे-धीरे दीर्घ निःश्वास छोड़कर अश्रुजल बहाने लगी। तब बार्ड साहबकी धर्मपत्नी उसको धीरज बँधाती हुई कहने लगी—बेटी! तुमको कोई डर नहीं है। हम लोग तुम्हारा कोई अनिष्ट न करेंगे। तुम सचमुच बताओ कि कहाँसे आती हो और क्या चाहती हो?

कुछ देरके पश्चात् रमणी बोली—मैं केण्टाकीसे आती हूँ। यह बात सुनते ही बार्डसाहबने जिरह करना आरम्भ किया—

"किस तारीखको केन्टाकीसे आयी हो?"

"इसी रात्रिमें आयी हूँ।"

"किस प्रकारसे इसी रात्रिमें आयी हो?"

"बरफके ऊपरसे दौड़कर आयी हूँ।"

सब आश्चर्य-चकित होकर एक साथ बोल उठे—बरफके ऊपरसे होकर कैसे आयी हो?

"सत्य ही सत्य, मैं बरफके ऊपरसे होकर आयी हूँ। एक मात्र परमेश्वर ही मेरे सहायक थे। मुझे पकड़नेके लिए पकड़नेवाले लोग मेरे पीछे आ रहे थे। इस समय नदी पार किये बिना रक्षा असम्भव थी।"

वार्डसाहवके दास काजोने कहा—वाप रे वाप! कैसा आश्चर्य है। वरफ गल गयी है—वह टुकड़े टुकड़े होकर पानीपर तैर रही है। उसी टुकड़ा टुकड़ा वरफके ऊपरसे होकर आयी हो!

आर्तस्वरसे रमणीने कहा—मैं जानती हूं कि वरफ गल गयी है। मैं जानती हूं कि इस प्रकार तैरती हुई वरफ परसे कोई चल नहीं सकता मुझे कभी यह आशा न थी कि मैं पार जा सकूंगी। मैं मृत्युका आलिङ्गन करनेके लिये ही तैयार हो गयी थी। किन्तु मनुष्य नहीं समझ सकता कि परमेश्वरमें कितनी करुणा है। मनुष्य नहीं जानता कि दुर्व्वलका एक मात्र वल ईश्वर है। ईश्वरकी करुणासे क्या नहीं हो सकता! मैं केवल उन्हींकी कृपासे नदी पार हुई हूं। यह कहकर रमणी आंखें उठाकर आकाशकी ओर देखकर मनमें सोचने लगी मानो ईश्वरको देख पावेगी।

वार्डसाहवने कहा—तुम क्या किसीकी क्रीत दासी थीं?

"हां! किन्तु मेरे मालिक वड़े दयालु थे!"

'तो मैं समझता हूं कि तुम्हारी मालकिन वहुत,कठोर वर्ताव करती थी?'

"नहीं, नहीं—वे माताकी भांति मुझसे स्नेह करती थीं!"

"तव तुमने ऐसे मालिकको छोड़कर ऐसे भयानक पथ-पर पैर क्यों रखा?"

"यह वात सुनकर वह स्त्री वार्डसाहवकी मेमके मुखकी ओर देखकर अश्रुपूर्ण नेत्रोंके साथ वोली—मेमसाहव! पुत्र-शोक कितना कष्टकर होता है, यह आप भलीभांति अवश्य जानती होंगी! क्या आपको कभी पुत्रशोक भोगना पड़ा है?

इस प्रश्नने वार्डसाहवकी मेमके हृदयको सहसा विदी-र्ण कर दिया। अव वह अपनी रुलाई न रोक सकीं। आज

के एक मास पूर्व उनके एक पुत्रसे उनका वियोग हुआ था। मेमके रोना आरम्भ करनेसे काजो और दीनाने उनको देख आँसू गिराना आरम्भ किया। वार्डसाहब स्वयं अति कष्टसे आँसू रोककर हृदयके उच्छसित शोकवेगको छिपानेकी चेष्टा करने लगे। वे व्यवस्थापक समाजके मेम्बर हैं, अश्रु-वारि बहानेसे लोग उन्हें दुर्बल चित्त समझने लगेंगे।

कुछ समयोपरान्त मेमने उस कृशाङ्गीसे पूछा—तुमने मुझसे ऐसा प्रश्न क्यों किया? आज प्रायः एक महीने हुए हमारा धन हेनरी हमें छोड़कर चला गया।

"तब आप मेरा दुःख समझ सकेंगी। क्रमशः मेरी दो संतानें मर गयीं, इस समय यही सन्तान-सर्वस्व ही हमारी जीवनाधार है। मैं क्षणभरके लिए भी इसे आँखकी ओट नहीं कर सकती। किन्तु इस दुधमुहें बच्चेको मालिकने बिक्री कर दिया। निष्ठुरदास-व्यवसायी इसे दक्षिण-प्रदेशमें ले जानेका उद्योग कर रहा है। यह दुधमुहाँ बच्चा माताको छोड़कर कभी नहीं रह सकता। मैं किस प्रकार इसे छोड़ दूँ। इसलिए इसे लेकर भाग आयी हूँ। किन्तु मेरे भाग आनेपर क्रेता मेरे मालिकके अन्यान्य दासोंको साथ लेकर मुझे पकड़नेके लिए मेरे पीछे पीछे दौड़ा। ओहियो नदीके उस पार मेरे पकड़नेका उद्योग करनेसे मैं प्राणोंके बचनेकी आशा छोड़, पानीमें कूद पड़ी। किन्तु किस प्रकार नदी पार हुई, यह सब कुछ स्मरण नहीं है। केवल इतना स्मरण है कि किनारे पहुँचते ही सिम नामक एक व्यक्तिने मेरा हाथ पकड़कर ऊपर उठा लिया एवं उसीके परामर्शसे मैं इस घरमें आयी हूँ।"

"तब तुमने यह क्यों कहा कि तुम्हारे मालिक, मालकिन बड़े दयालु सज्जन हैं। इस बालकको बेचकर उन लोगोंने

तुम्हारे साथ अत्यन्त कठोर व्यवहार किया है।"

"मैं कभी कृतघ्न न हूँगी! मैं आजन्म कहूँगी कि मेरे मालिक और उनकी पत्नी दयालु हैं। उन्होंने कभी मेरे साथ निष्ठुर व्यवहार नहीं किया। मालिक दास-व्यवसायी के ऋणी हो गये हैं। उसने दावा ठोककर मेरी सन्तानको विक्री करवा लिया था।"

"तुम्हारे स्वामी हैं?"

"मेरो स्वामी एक दूसरे आदमी के दास हैं। मेरे स्वामीका मालिक बड़ा निठुर है। उसके अत्याचारसे मेरे स्वामी बड़ा कष्ट पाते हैं। सुना है उनका मालिक उन्हें दक्षिण-प्रदेशमें बेंचेगा। जान पड़ता है कि स्वामीके साथ मेरी अब इस जीवनमें कभी भेंट न होगी!"

"तुम इस समय कहाँ जाना चाहती हो?"

"मैं केनाडा जाना चाहती हूं। केनाडा यहाँ से कितनी दूर है?"

"हाय! कैसी शोचनीय अवस्था है! यह कैसे केनाडा जायगी?" प्रकटमें कहा-बेटी! केनाडा बहुत दूर है। किन्तु मैं चेष्टा करके देखूँगी कि तुम्हारा कुछ उपकार कर सकूंगी कि नहीं! तुम आजकी रात यहीं ठहरो! जो होगा वह कल प्रातःकाल किया जायगा।"

वार्ड साहबकी सहधर्मिणीने अपनी दासी दीनाको इसके सोनेका बन्दोवस्त करदेनेको कहकर आप शयन-मंदिरमें चली गयीं। शयनागारमें प्रवेश करते ही उनके स्वामीने कहा-इस स्त्रीके सम्बन्धमें क्या कर्त्तव्य है? मैं तो बड़ी विपत्तिमें पड़ गया। इस स्त्रीकी खोजमें क्रेता कल यहाँ अवश्य आवेगा। हमारे घरसे इस प्रकार मग्नू दासीके निकलनेसे बड़ी लज्जाकी वात होगी। मैं व्यवस्थापक

समाजका सदस्य हूँ। कल मैंने यह कानून प्रस्तुत किया कि "जो लोग भग्गू दास दासियोंको आश्रय देंगे, उन्हें अपराधीका सहायक समझा जायगा और वे दण्डके भागी होंगे" और आज मैं स्वयं ही उस अपराधमें सहायता करता हूँ इसके सम्बन्धमें जो कुछ हो आज रात्रिको ही तय करना होगा।

मेमने कहा—आज रातमें और क्या हो सकता है? "जो कुछ करना होगा वह मैंने ठीक कर लिया है।" यह कहकर साहबने बूट पहिरना आरम्भ किया।

वार्ड साहबकी मेम जानतीं थीं कि उनका स्वामी अत्यन्त दयार्द्रचित्त हैं। इस लिए वे इस अनाथ दुःखिनी स्त्रीके लिए कोई न कोई सदुपाय कर देंगे, इसमें कुछ सन्देह नहीं। मन ही मन सोचकर वे चुप हो रहीं। वे साहबके आईनके पक्षपात पर मन्द मन्द हँसने लगीं। कुछ समय बाद साहब बूट पहिन खड़े होकर कहने लगे-प्रिये! इसके सम्बन्धमें मैं जैसा करना चाहता हूँ सो सुनो-इसको किसी निरापद स्थानमें रख आना ठीक और उचित होगा। यहाँसे कुछ दूर पर भानट्रंप नामक मेरा एक असामी है। पहिले उसके यहाँ असंख्य क्रीत दास-दासियां थीं। कालक्रमसे उसने यह जान पाया कि नर-नारियोंको क्रीत दास-दासी बनाकर रखना तथा उनके साथ दुर्व्यवहार करना घोर पाप कर्म है। उसने उसी समय अपने सब दास-दासियोंको एकदम मुक्त करदिया-एवं दास दासियोंके उद्धारार्थ नाना प्रकारके उपायोंका अवलम्बन किया। उन्होंने यहाँसे चार एक गाँव खरीदा है और उसीमें भग्गू दास-दासियोंके रहनेके लिए घर बनवाये हैं। वे स्वयं वहीं रहते हैं। उनके आश्रय-घरमें इसको रख आनेपर ही ये दोनो अभागी निष्ठुर

दास-व्यवसायीके हाससे 'छुटकारा पा सकती हैं! किन्तु मेरे स्वयं न ले जानेसे दूसरा कोई इसे नहीं पहुँचा दे सकता।'

"क्यों, हमारा काजो बहुत अच्छी तरह गाड़ी हाँक सकता है। वह क्या नहीं पहुँचा दे सकता?"

"वह बड़ा कठिन रास्ता है। दो जगह खालपार करना पड़ता है, मैं तो समझता हूं कि काजो वह रास्ता जानता भी नहीं। अवश्य ही मुझे जाना पड़ेगा। काजोसे कहदो कि १२ बजे गाड़ी तैयार करे। मैं स्वयं इस स्त्रीको साथ लेकर जाऊँगा। लौटनेके समय कलवान्स नगरसे होकर आऊँगा, जिससे लोग समझेंगे कि किसी कामसे वहाँ गया था।"

"नाथ! चिरकालसे ही परन्तु उसे आपका हृदय सन्तप्त रहता है तुम्हारे ज्ञान और विज्ञानसे अधिक भक्ति और श्रद्धा प्राप्त कर सकती हूँ। तुम समय समयपर आत्म-विस्मृत हो जानेसे अपने आपको नहीं पहिचान सकते। किन्तु मैं तुम्हारे हृदयको विशेष रूपसे जानती हूँ। तुम कितने ही आईन तैयार क्यों न करो, किन्तु अन्यान्य कानून व्यवसायी लोगों की भाँति बिलकुल मनुष्यात्मा हीन हो, निष्ठुराचरण नहीं करसकते। व्यवस्थापक-समाजके 'सदस्यमें भी जो मनुष्यात्मा हो सकती है, वह मैं भली भाँति जानती हूं!'

बाई साहब की आत्मा अपनी स्त्रीके मुखसे अपनी सहृदयताकी बात सुनकर प्रेमानन्दमें मग्न होने लगी। मनमें सोचा कि ऐसी पत्नीके द्वारा जिसका घर प्रकाशित नहीं हुआ, उसका घर सब प्रकाश रहते भी अन्धकारपूर्ण है। उसे मनुष्य जीवन धारण करना व्यर्थ है। यह सोचते सोचते द्वारपर आकर, गाड़ी तैयार हुई कि नहीं, यह देखने

लगे एवं फिर मेमके पास जाकर बोले-प्रिये ! हमारे हेनरी-के जो कई एक कपड़े हैं, वे तुम्हारी इच्छा हो तो इस अनाथ संतानको दे सकती हो। तब मेम साहिबा, उनके मृत पुत्रके जितने कपड़े तथा खिलौने थे, उन सबको एकत्र करने लगीं। रात्रिके १२ बजे बार्ड साहबने, इलाइजाको लेकर गाड़ीपर चढ़ते समय, वे सब वस्तुएँ उसके हाथमें दे दीं। इलाइजा उसी समय बार्ड साहब तथा उनकी मेमके प्रति अपने हृदयकी गम्भीर भक्ति तथा कृतज्ञता-प्रकाश करनेकी चेष्टा वारम्वार करने लगी। किन्तु बात करनेकी शक्ति न थी। उसके हृदयकी उस समयकी अवस्था वाक्यों द्वारा प्रकाशित नहीं की जा सकती। वह गाड़ीपर चढ़कर बारबार पीछे फिरकर बार्ड साहबकी मेमकी ओर देखने लगी। उसके नेत्र अश्रुजलसे परिपूर्ण हो गये।

आज बार्ड साहबके स्वभावमें कैसा घोर परिवर्तन दिखायी दे रहा है। कल उनकी वक्तृतासे व्यवस्थापक समाज-का घर प्रतिध्वनित हो रहा था। कल उन्होंने कई बार कहा था कि जन साधारणके हितके लिए प्रत्येक मनुष्यको स्त्री जाति-सुलभ सहृदयताको दूरकर भग्गू दास-दासियोंको पकड़वा देना होगा। कल उनके निकट यह स्त्रीजाति-सुलभ सहृदयता मानव-हृदयकी दुर्बलताके रूपमें उपस्थित हुई थी। किन्तु आज वे स्वयं उसी दुर्बलताका निवारण करने-में असमर्थ हो गये। केवल समाचार-पत्रों और रिपोर्टोंके 'भग्गू' शब्द पढ़कर यह नहीं समझ सकते थे कि भग्गूओं की कैसी दुरवस्था होती है। इस लिए कल भग्गू शब्द उनके हृदयमें दया और स्नेहका उद्रेक न कर सका था। भग्गूओं की कैसी बुरी दशा होती है, यह आज अपनी आँखोंसे देख लेनेपर उनका मस्तिष्क घूम गया। उसी स्त्री-जाति-सुलभ दुर्बल-

ताने आकर आज उनके हृदयपर अधिकारकर लिया। वस्तुतः व्यवस्थापक समाजके सदस्योंमें भी मनुष्यता है। किन्तु वे सदा संवाद-पत्रों तथा रिपोर्टोंमें ही देखकर देशकी दशा जानते हैं। अपने नेत्रोंसे लोगोंकी दुरवस्था कभी नहीं देखते। इस लिए उनका कार्य देखकर ज्ञान पड़ता है कि उनमें मनुष्यात्मा नहीं है।

वार्ड साहबने कल जिस कानूनकी घोषणा की थी आज उसका फल स्वयं उन्हींको भली भाँति भोगना पड़ा। रात्रिमें घोर अन्धकार है मूसलधार पानी बरस रहा है। मार्ग कीचड़मय हो रहा है घोड़ा उस मार्गमें अब और गाड़ी नहीं खींच सकता। व्यवस्थापक समाजके सदस्य महोदय अपने नौकर काजोके साथ गाड़ीसे उतरे। काजो सारी रात घोड़ेकी लगाम पकड़कर गाड़ी आगे खींचता रहा और वार्ड साहब गाड़ीके पीछेके पहिये ढकेलते रहे। इस प्रकारसे धीरे-धीरे बड़े कष्टके साथ, गाड़ी चलाकर उस आश्रय गृहके सामने पहुँचे। उस समय गृह-स्वामी सो रहे थे। उनको जगानेमें बड़ा कष्ट हुआ। बहुत सी गड़बड़ियोंके पश्चात् गृह-स्वामी गाड़ीके पास आकर वार्ड साहबसे मिल सका। गृहस्वामीका नाम था जॉन् मान् ट्रंप। वे पहिले केन्टाकीमें रहते थे। इनके यहां असंख्य क्रीत-दास-दासी थे। किन्तु अर्थगृध्नता तथा स्वार्थपरता उनके स्वभाविक सद्भावको एकदम विनष्ट न करसकी थीं। इन्होंने सहजमें ही समझ लिया कि देश प्रचलित दासत्व-प्रथा एवं दासोंके प्रति कठोर-व्यवहार दास और स्वामी दोनोंकी अन्तरात्माओं को कलुषितकर देता है। दोनोंको नर्ककी ओर ढकेल देता है। दासोंकी दुरवस्थाके विषयमें सोचते-सोचते इनका हृदय अत्यन्त पिघल गया। इन्होंने उसी क्षण अपने दास-दासियोंको

दासत्व-शृंखलासे मुक्तकर दिया। किस प्रकारसे दासोंका दुःख दूर कर सकते हैं, इसीको चेष्टा करने लगे। सम्प्रति इस निर्जन स्थानमे अनाथ दासोंको आश्रय देनेके लिये यहाँ निवास करते हैं।

वार्ड साहबके, इलाइजाकी दुरवस्थाका हाल कहते ही ये गाड़ीसे उसे उतारकर अपने घरकी एक अट्टालिकापर उसके रहनेका स्थान निश्चत कर दिया। उसे सांत्वना देते हुए कहने लगे-बेटी ! इस स्थानसे तुमको कोई नहीं ले जा सकता। मेरे बहुतसे आदमी रहते हैं। पकड़ने वाले यहाँ घुस भी नहीं सकते। तुम निर्भय होकर यहाँ निवास करो।

वार्ड साहबको भानद्र पने उस रात्रि वहीं रहनेको कहा किन्तु वे सहमत न हुए। उन्होंने यह पहिले ही निश्चित कर लिया था कि काल्विन्स होकर आवेंगे। इस-लिए कि लोग उनके इस कार्यके सम्बन्धमें कोई सन्देह न कर सकें। वे बहुत शीघ्र आकर गाड़ीपर चढ़े। गाड़ीपर चढ़नेके समय उन्होंने इलाइजाकी सहायताके लिए भानद्र प साहबके हाथमें दस रुपयेका एक नोट दिया।

ग्यारहवाँ परिच्छेद

परिवारसे विच्छिन्न लोग

अफ्रीकाके किनारेपर रहनेवाले जो हतभाग्य काले लोग, गोरे बनियोंकी अर्थ-लोलुपताके कारण अमेरिकासे लाकर, दासोंकी भाँति बेंचे जाते थे, हम भारतवासियोंके साथ उनके

स्वभाव और प्रकृतिके किसी-किसी विषयमें विलक्षण सादृश्य है। भारतीयोंकी भाँति इन हतभाग्य क्रीत-दासोंमें भी सन्तान वत्सलता, दाम्पत्य-प्रेम,पारिवारिक-स्नेह और कृतज्ञता, अत्यधिक परिमाणमें देखनेमें आती है। इस कारण परिवारसे अलगकर बेचनेके समय इनको जो भयानक कष्ट होता है, उसका अनुभव क्या वे पाषाण-हृदय, अर्थपिशाच, राक्षस गोरे बनिये कभी भी कर सकते हैं ?

शेल्बीके टामको हेलीके हाथ बेंच देनेपर हेली इलाइज़ाको खोजने चला गया था, इसलिए उसके लौटकर आनेतक अर्थात् दो तीन दिनतक टामको अपने घरमें, परिवारके साथ रहनेका सुयोग मिला। तत्पश्चात् जिस दिन हेलीके साथ उसके जानेकी बात थी, उस दिन वह बड़े सबेरे बिछौनेसे उठकर पहिले वह अपनी सन्तान तथा स्त्रीके मंगलके लिए ईश्वरके निकट प्रार्थना करने लगा। उपासनाके समाप्त होनेपर निद्रित सन्तानकी शय्याके पास जाकर वहाँ खड़े हो वह एक टक उनकी ओर देखता रहा। उसके दोनों नेत्रोंसे अविरल अश्रुधारा बहने लगी। कुछ कालके पश्चात् दीर्घ निश्वास छोड़कर वह कहने लगा—जान पड़ता है तुमलोगोंके साथ यही अन्तिम भेंट है। उसकी यह बात उसकी स्त्री क्लोईके कानमें पड़ी, वह अपनी रुलाईको और न सँभाल सकी। उसने रोते रोते स्वामीसे कहा—

तुम मुझे ईश्वरपर निर्भर रहकर शोक सहनेको कहते हो, किन्तु मैं किसी प्रकार ईश्वरपर निर्भर नहीं रह सकती। मेरे मनमें कितनी ही शंकाएँ होती हैं, न जाने वह तुम्हें कहाँ ले जायगा, समय-असमय कितना कष्ट देगा—मेम साहब जबतक दो एक वर्षमें रुपया इकट्ठाकर तुम्हें पुनः खरीदनेकी चेष्टा करेंगी तबतक न जाने कौनसी विपत्ति आ पड़े। दक्षिण

देशमें जो जाता है, उसको फिर वहाँसे लौटकर आते नहीं देखा जाता। दक्षिण-देशके चायके बगीचों तथा तम्बाकूके खेतोंमें बहुत अधिक परिश्रम करनेसे बहुतसे दासोंकी अकाल मृत्यु हो जाती है। बतलाओ, यह सब जान-बूझकर मैं भला किस प्रकार मनको स्थिर करके रह सकती हूँ ?

"मङ्गलमय परमेश्वर सर्वत्र ही वर्तमान है। वह मेरे साथ-साथ रहकर मेरी रक्षा करेगा !"

"परमेश्वरके साथ-साथ रहनेपर भी तो समय-समयपर भयानक विपत्तियाँ आ पड़ती हैं। इसीसे तो मैं परमेश्वरके ऊपर निर्भर रह कर अपने मनको स्थिर नहीं कर सकती हूँ !"

"हम सब मङ्गलमय परमात्माके सुखद शासनमें बसते हैं। उसकी इच्छाके विरुद्ध कुछ नहीं हो सकता। आज जो विपत्ति जान पड़ती है वह भी आगामी सम्पत्तिका एकमात्र मूल कारण है। देखो, मालिक मुझे बेचकर तुम्हारी और सन्तानकी रक्षा करते हैं, तुम लोग तो सुखसे रहोगी। जहाँ हम सब परस्पर एक दूसरेसे अलग होकर एक-एक आदमी भिन्न-भिन्न देशोंमें बेंचे जाते, वहाँ केवल मैं ही अलग किया जा रहा हूँ। यह क्या कम सौभाग्यकी बात है ? मालिकने जो केवल मुझे ही बेचा है, इससे मैं उनका बड़ा अनुगृहीत हूँ।"

"मैं तो इसमें मालिकका कोई अनुग्रह नहीं देखती। तुम सरीखे प्रभुभक्त दासको बेचना कभी भी उचित नहीं है। तुम्हारी स्वामि-भक्ति देखकर एक बार उन्होंने तुम्हारा दासत्व छुड़ाकर तुमको स्वाधीन कर देना स्वीकार किया था। किन्तु आज वह प्रतिज्ञा-भंगकर, ऋणसे छुटकारा पानेके लिए, अनायास ही तुम्हें बेच दिया। यह निष्ठुर गोरी जाति दूसरेका दुःख नहीं समझती। यह सदैव अपने सुख-साधनमें

व्यस्त रहती है। जो स्त्रीको स्वामी-हीन करता है, बच्चोंको पितृ-हीन करता है, उसका विचार परमेश्वर अवश्यही करेंगे।

"तुम मालिकके सम्बन्धमें ऐसी बात मुँहपर लाकर मुझे बड़ा कष्ट देती हो। देखो, तुमसे मेरी यह अन्तिम भेंट है। इस समय मेरे साथ ऐसी बातें न करो। और-और दासों-के मालिकोंके साथ हमारे मालिककी तुलना हो ही नहीं सकती। हमारे मालिक व्यर्थ किसी दासको कोई कष्ट नहीं देते। बेत नहीं लगाते। किसी दासकी विवाहिता स्त्रीके साथ कदापि उपपत्नीका सा व्यवहार नहीं करते। उसका धर्म नष्ट नहीं करते। इसलिए ऐसे मालिककी भलाईके लिए ईश्वरसे अवश्य ही प्रार्थना करनी होगी। इस केन्टाकी-में और सैकड़ो लोगोंके पास भी हजारों दास-दासियां हैं। उन दास-दासियोंकी यंत्रणाका ध्यान करते ही एकवार रोंगटे खड़े हो जाते हैं!

क्लोईने और कुछ न कहा, वह मन ही मन सोचने लगी कि उसके स्वामीका सुख-सूर्य अस्त हो गया। उसके भाग्यमें संध्याको भी उत्तम भोजन मिल जाना बदा होगा, अब इसकी भी सम्भावना नहीं। इसलिए क्लोई आज स्वामीके भोजनके लिए तरह तरहके खाद्य-पदार्थ अपने हाथसे बनाकर उसे खिलाने लगी। भोजनोपरान्त टाम अपनी सबसे छोटी दो वर्षकी कन्याको गोदमें लेकर बार-म्बार उसका मुख चूमने लगा। तब क्लोई उस बालिकाका हाथ पकड़कर कहने लगी कि नहीं जानती कब इसे माताकी गोद भी छोड़नी पड़े। दास-दासियोंकी सतान-प्राप्ति केवल विडम्बना है। क्लोईकी यह आक्षेप-उक्ति अभी समाप्त भी न हुई थी कि शेल्बीसाहबकी मेम वहाँ आ उपस्थित हुई। टाम और क्लोईको आँसू बहाते देखकर, वे भी अपने आँसू

रोक न सकीं। आखिरकार धैर्य धारणकर टामसे कहने लगीं—टाम, मैं सोचती थी कि तुम्हें साथमें ले जानेके लिए कुछ रुपये-पैसे दूँगी, किन्तु अन्तमें सोचा की उससे तुम्हारा कुछ उपकार न होगा। तुम्हारे पास रुपये-पैसे देखते ही अर्थलोलुप हेली उसे उसी क्षण अपने हाथमें कर लेगा। किन्तु मैं परमेश्वरको साक्षी देकर तुमसे प्रतिज्ञा करती हूँ कि रुपये एकत्र होते ही मैं तुम्हें उसी क्षण छुड़ाऊँगी। रुपये एकत्र होने तक ईश्वरको आत्मसमर्पणकर धैर्यावलम्बन करनेकी चेष्टा करो!

इसी समय हेली वहाँ आकर उपस्थित हुआ और टामसे बोला—चलो जी! अब देर करनेकी कोई आवश्यकता नहीं। टाम हेलीके पीछे जाकर उसकी गाड़ीपर चढ़ गया। क्लोई आदि शेल्बीके अन्यान्य दास-दासी-गण आकर उसी गाड़ीके निकट खड़े हो गये। हेलीने टामको गाड़ीपर चढ़ाकर लोहेकी जंजीरसे उसके दोनों हाथ-पैर बाँध दिये। यह देखकर अन्यान्य सब दास-दासियोंको अपार दुःख हुआ एवं वे सभी मन ही मन हेलीको शाप देने लगे। वे सब टामपर बड़ी श्रद्धा और भक्ति रखते थे। हृदयसे उसे प्यार करते थे। इस लिए टामको लोहेकी सिकड़ीसे बाँधते हुए देखकर धीरे धीरे दीर्घ निश्वास छोड़ने लगे। टामके दो बड़े लड़के पिता-को वैसी अवस्थामें देखकर बड़े जोरसे चिल्ला उठे। तब शेल्बीकी मेमने हेलीको पकड़कर कहा—महाशय! टाम भागने वाला आदमी नहीं है। इसे बाँधनेकी कोई आवश्यकता नहीं। इसके बन्धन खोल दो! उसके उत्तरमें हेलीने कहा—मेम साहब, अब अधिक कुछ मत कहिए। आपके घर दास खरीदकर मैंने पाँच सौ रुपये डुबा दिये। अब मैं सतर्क रहकर सब काम करूँगा।

यह कहकर हेलीके गाड़ी चलाना आरम्भ करनेपर टामने मेम साहिबासे कहा—मेरे मनमें बड़ा दुःख होरहा है कि मैं चलते समय आपके पुत्र जार्जसे न मिल सका। टामके बिकने की बातके प्रकट होनेके पूर्व ही जार्ज किसी आत्मीयके यहाँ जाकर कुछ दिनके लिए ठहर गये थे। टामकी बिक्रीके विषयमें वे तिलमात्र भी न जान सके थे। शेल्बी साहबने, टामको ले जानेके समय अनुपस्थित रहनेका पहिले ही निश्चयकर लिया था। इसीसे वे एक दिन पहले कहीं दूसरी जगह चले गये थे। हेली टामको साथ लेकर जाते जाते एक लुहारकी दूकानके समीप आ पहुँचा। उस दूकानमें घुसकर खलीतेसे दो कड़े निकालकर उन्हें टामके हाथमें पहिना देनेको उस लुहारसे कहा। लुहार टामको देखकर आश्चर्यसे चकित हो बोला—यह तो शेल्बी साहबका टाम है! इसे क्यों बेच दिया। ऐसे प्रभुभक्तदासको क्या कभी बेचना चाहिए। पश्चात् हेलीसे बोला—महाशय! आपके इन कड़ोंकी कोई आवश्यकता नहीं। टामको हथ-कड़ी न पहनानी होगी। मैं अच्छी तरह जानता हूं कि टाम बड़ा विश्वासपात्र व्यक्ति है। हेलीने कहा—विश्वासी लोग ही कभी कभी भाग जाते हैं। मैं तुम्हारी ये सब बातें सुनना नहीं चाहता। तुम मेरी हथ-कड़ियाँ ठीककर दो! लुहारने पूछा—टाम अपनी स्त्रीको छोड़े जा रहा है या नहीं? हेलीने कहा—इसे जहाँ बेचूंगा, क्या वहाँ कोई क्रीतदासी न मिलेगी? इन लोगोंको क्या स्त्रियोंका अभाव रहता है? दक्षिण देशमें एक न एक मिलही जायगी।

हेली जिस समय उस लुहारके साथ इस प्रकार बातें कर रहा था, उसी समय बड़े वेगसे घोड़ा दौड़ाता हुआ तेरह वर्षका एक बालक उस स्थानपर आ उपस्थित हुआ।

लड़का घोड़ेसे उतर पड़ा। हठात् उसने टामका गला दौड़ कर पकड़ लिया। टाम उसे गोदमें लेकर कहने लगा–मास्टर जार्ज! मैं बड़ा सुखी हुआ, क्योंकि जानेके समय तुमसे भेंट हो गयी। जार्ज टामके पैर लोहेकी सिकड़ीसे बँधे हुए देख-कर बड़ा क्रोधित हुआ और उसने कहा–पाजी हेली साहबका खोपड़ा मैं अभी तोड़ डालूँगा। टामने उसे ऐसा करने से रोककर कहा–यदि तुम इस समय हेलीसे झगड़ा करोगे तो वह मुझे और अधिक कष्ट देगा। अतएव तुम चुप रहो! यह सुनकर जार्ज सिर नीचा किये बैठा रहा। उसके नेत्रों-से अविरल अश्रुधारा बहने लगी। कुछ समयोपरान्त जार्ज कहने लगा–कैसी लज्जाका विषय है! कैसा कठोर व्यवहार है। पिताजीने इस विक्रीके विषयमें एक बार भी कुछ नहीं कहा। मेरा सहपाठी लिङ्कन यदि मुझसे न कहता तो मैं तुम्हारी विक्रीके विषयमें रत्तीभर भी न जान सकता। मेरी इच्छा होती है कि अपना घर-द्वार सब जला डालूँ। ऐसा कष्ट अब और सहा नहीं जाता। टामने कहा–जार्ज ऐसी बातें मत करो। अपने पिताके लिए ऐसी बातें करनी तुम्हें उचित नहीं। जार्ज टामके लिए एक स्वर्ण-मुद्रा ले आया था। टाम उसे लेनेमें असम्मति प्रकट कर बोला—जार्ज, यह मुद्रा लेकर मैं क्या करूँगा? यदि हेली को मालूम हो जायगा तो इसी समय वह छीन लेगा। जार्जने कहा—किस प्रकारसे तुम इस मुहरको हेलीके हाथसे बचा सकोगे, यह मैं क्लोई चाचीके साथ परामर्शकर निश्चित कर चुका हूँ। इस मुहरमें एक छेद है। इसमें एक सूत लगाकर अपने गलेमें बांध रखो, ऐसा करनेसे हेली इसे न देख सकेगा। तुम्हारे कपड़ेके नीचे रुपया रहेगा। यह कहकर जार्जने उस सोनेकी

मुद्राको टामके गलेमें बाँध दी। टाम जार्जको नाना प्रकारके स्नेह-पूर्ण उपदेश देने लगा। उसने कहा-बेटा जार्ज! तुम सदा मनोयोगके साथ अपनी माताके सदृश सदा चरण करते रहना। बेटा! परमेश्वर इस संसारमें सब प्रकारके वस्त्र, भोजन तथा सुख-शान्ति दो बारा दे सकते हैं, किन्तु "माता" कोई दो बार नहीं पा सकता।

इस प्रदेशमें तुम्हारी माताके समान दया-धर्म सद्गुणों-से अलङ्कृत अन्य स्त्री नहीं है। तुम सदा इस बातका प्रयत्न करते रहना कि जिससे तुम्हारे कार्यों अथवा वचनोंके द्वारा ऐसी स्नेहमयी जननीके हृदयको कभी किसी प्रकारका कष्ट न पहुँचे। यौवनावस्थामें मनुष्यका मन स्वभावतः पापकी ओर ही आकृष्ट होता है। किन्तु तो भी सत्संग मनुष्यको उसकी विपरीत दिशामें परिणत कर सकता है। तुम्हारी माताका सत्संग ही सबसे उत्तम सत्संग है। इसमें कुछ भी संदेह नहीं कि उनके सच्चरित्र तथा सदनुष्ठानके प्रभावसे तुम अतिशय पवित्र-स्वभाव एवं साधु-प्रकृति प्राप्त करनेमें समर्थ हो सकोगे। लड़कपनसे ही परमेश्वरमें भक्ति करनेका अभ्यास करो। ऐसा करनेसे ही जीवन-पथपर निर्विघ्नता पूर्वक आगे बढ़ सकोगे।

जार्ज टामका यह उपदेश सुनकर बोला-टाम चाचा! तुम सदा मुझे इसी प्रकारके सदुपदेश देते थे। तुम्हारे आजके उपदेशको मैं मन-वच-कर्मसे करूंगा। सदा सत्पथ पर स्थिर रहनेकी चेष्टा करूँगा। शीघ्र ही तुम्हें फिर खरीद लाऊँगा। उसके पश्चात् जब मैं बड़ा होऊँगा और स्वयं काम-काज करने लगूँगा तो तुम्हारे लिए एक बड़ा विस्तृत घर बनवा दूँगा। तुम वृद्धावस्थामें भले आदमी की भाँति

उसमें निवास कर सकोगे। उस समय तुमको दासत्वकष्ट न सहना पड़ेगा।

जाकी बात समाप्त नहीं हुई थ कि हेली हथकड़ी लेकर गाड़ीके समीप आ पहुँचा। उसे देखकर जार्जने कहा—हेली, जो तुमने टामके पैरोंमें बेड़ी और हाथमें हथकड़ी पहिना रखी है, यह बात मैं घर जाते ही अपनी माँ तथा अपने बाबासे कह दूँगा। हेलीने कहा—तुम्हारे कहनेके पहिले ही मैं कह आया हूं! जार्जने फिर कहा—हेली,क्या तुम यावज्जीवन यह घृणित व्यवसाय करके केवल नर-नारियोंको खरीदो और बेचोगे एवं पत्थरकी भाँति कठोर लोहेकी सिकड़ियोंमें इन्हें बाँधकर कष्ट दोगे? ऐसा व्यापार करनेमें तुम्हें लज्जा नहीं लगती। हेलीने कहा—जब तक इस देशके रहने वाले तुम लोगोंकी भाँति संभ्रान्त सज्जन लोग दास-दासियोंके खरीदनेमें शिथिल न होंगे,तब तक हम लोगोंका व्यवसाय बन्द न होगा। तुम लोग खरीद सकते हो और हमलोग बेच नहीं सकते? जो खरीदते हैं, वे समझते हैं कि इसमें कोई दोष नहीं। हम लोग बेचते हैं, इसलिए हम लोगोंको दोष होगा? जार्जने कहा—ईश्वर करे, मुझे कभी दासोंको खरीदना या बेचना न पड़े। यह कहकर वह चला गया। हेलीने भी टामको गाड़ीपर बैठाकर गाड़ी चलाना आरम्भ किया। जार्ज जिस ओरसे जा रहा था, टाम उसी ओर देखता था और मन ही मन कह रहा था—परमेश्वर इस बालकको दीर्घजीवी करे! केन्टाकी प्रदेशमें इसके समान महत् अन्तःकरणवाले बहुत ही कम लोग हैं। कुछ ही दूर जानेपर हेलीने टामके हाथ-का बन्धन खोल दिया। वह टामसे कहने लगा कि यदि भागनेकी चेष्टा न करोगे तो तुम सिकड़ीसे न बांधे जाओगे। टामने कहा—मैं कभी न भागूँगा।

बारहवाँ परिच्छेद



अत्याचारसे पीड़ितदास

दिन प्रायः समाप्त हो चुका है। आकाश मेघाच्छन्न है। धीरे-धीरे छोटी छोटी बूंदें पड़ रही हैं। पथिकगण संध्याका आगमन देखकर समीपकी पान्थशालामें आश्रय ग्रहण कर रहे हैं। यह पान्थशाला केन्टाकी प्रदेशके राजपथसे अति निकट है। यहाँ सदैव बहुत लोगोंका समागम होता रहता है। होटलके सामनेके घर आवश्यकतासे अधिक गन्दे हैं! भद्रलोगोंके साथके दास-दासियों तथा श्रमजीवी लोगोंसे ही ये सब घर भरे रहते हैं। पीछेकी ओरके घरमें मार्गकी थकावट दूर करनेके लिए दो सज्जन बैठे हैं। उनमें से एकका नाम है विलसन। विलसनने प्रौढ़ावस्था पारकर वृद्धावस्थाकी सीमापर पैर रखा है। इसलिए उनमें अब वह यौवन-सुलभ प्रगल्भता नहीं रही। शीतकी अधिकतासे कुछ अवसन्न हो गये हैं। दूसरा आदमी उतना शिक्षित तथा सज्जन नहीं है। वह भेंड़ें बेचकर अपनी जीविका उपार्जन करता था।

कुछ समयके बाद ही उस गड़ेरियेने विलसनके साथ इस प्रकार बातें करनी आरम्भकीं।

गड़ेरिया—आपने यह विज्ञापन देखा है?

विलसन—कैसा विज्ञापन?

गड़ेरिया—यह देखिये। यह कहकर उसने विलसनके

हाथमें एक कागजका टुकड़ा दिया। विलसन चश्मा लगा कर वह विज्ञापन पढ़ने लगे।

विज्ञापन

"मेरा जार्ज नामक एक क्रीत-दास कुछ दिन हुए भाग गया है। वह साढ़े तीन हाथ लम्बा है। उसका वर्ण श्वेत है। अंग्रेजीमें वह भलीभाँति बात चीत कर तथा समझ सकता है। उसके पीठ तथा गलेमें बेंतके चिह्न हैं। उसके बायें हाथमें लोहेकी सलाईसे 'एच' अक्षर दागा हुआ है। जो कोई आदमी इसे पकड़ देगा उसे चार सौ रुपये पुरस्कार-में दिये जायँगे। जीता न पकड़ सकनेपर उसे मारकर उसकी लाश भी जो ले आवेगा, उसे भी वही पुरस्कार प्रदान किया जायगा।"

विलसन वह विज्ञापन पढ़कर कहने लगे—मैं इस विज्ञा-पनमें लिखे हुए दासको भलीभाँति जानता हूँ। इस आदमीने पूरे ६ वर्ष तक मेरे अधीन रहकर काम किया है। इसकी तीक्ष्ण बुद्धि, इसकी साधुता तथा सत्प्रकृति देखकर मैं इससे असीम संतुष्ट रहता था। इस व्यक्तिने पाटके साफ करने-की एक अति उत्तम कल तैयारकी है। इसकी बनाई हुई कल इस समय प्रायः सर्वत्र ही व्यवहृत होरही है। किन्तु कल बनानेका अधिकार इसके मालिकने प्राप्तकर लिया है? यह बात सुनकर गड़ेरियेने कहा—महाशय! देखिये कैसा अन्याय है? आपलोगोंकी चाल-ढाल न जाने कैसी है! आपलोग क्रीतदासोंको जैसी यंत्रणा देते हैं, वैसा कष्ट तो मैं अपनी भेड़ोंको भी नहीं देता। मेरी स्त्री भेड़ोंके दूध पीते छौनोंको कभी नहीं बेचने देती। किन्तु आप ऐसे बड़े लोगोंकी

स्त्रियाँ खरीदे हुए दासके ऊपर रत्ती मात्र भी दया नहीं करतीं। आप कहते हैं कि विज्ञापनमें अंकित दास अत्यन्त बुद्धिमान मनुष्य है। उसने स्वत एक मशीन कल तक प्रस्तुत कर लिया है। परन्तु उसको उस प्रखर बुद्धिके द्वारा उसका कौनसा उपकार हुआ। उस कलके बनानेका अधिकार उसके मालिकको मिला। मालिकने उसके उस सद्गुणके लिए पुरस्कार स्वरूप उसका हाथ जलती हुई लोहेकी सलाईसे दाग दिया।

इस स्थानपर एक और तीसरा व्यक्ति भी उपस्थित था। वह कहने लगा—क्रीत-दासको दागेंगे नहीं तो क्या करेंगे! क्रीत-दासके मालिककी जैसी इच्छा हो वैसा व्यवहार वह कर सकता है। क्रीत-दासका मालिक जिस प्रकारसे चलावे, उसमें वह यदि किञ्चिन्मात्र असंतोष प्रकट न करे और उसी भावसे चले तो क्या उसका मालिक उसे कभी भी बेतसे पीटे? किन्तु गोरे क्रीत-दासोंको सहज ही ठीक नहीं किया जा सकता।

इस आदमीकी बात समाप्त भी न हुई थी कि एक गाड़ी आकर होटलके द्वारपर खड़ी हो गयी। उस गाड़ीपरसे एक बहुमूल्य वस्त्रोंसे सुसज्जित एक गोरे युवकने उतरकर होटलमें प्रवेश किया और जिस कमरेमें बैठकर विलसन आदि वार्तालाप कर रहे थे उसीके द्वारपर आ उपस्थित हुआ। उसने बगके द्वारपर वह विज्ञापन देखकर कहा—जिम! पाँच कोस पीछे कल एक होटलमें जिस व्यक्तिको मैंने देखा था ठीक वही व्यक्ति इस विज्ञापनमें लिखा हुआ क्रीत-दास होगा। जिमने कहा—वही होगा। आदमीको पकड़नेपर पुरस्कार मिलेगा। इसके आगे मैं इस विज्ञापनका विषय नहीं जानता था।

तत्पश्चात् इस नवागत व्यक्तिने होटलके मालिकको हेरिस बटलरके नामसे अपना परिचय कराया और उससे रात्रि भर ठहरनेके लिए एक एकान्त निर्जन कोठरीका प्रबन्ध कर देने को कहा। होटलके स्वामीके, निर्जन घरका प्रबन्ध करनेके लिए चले आनेपर विलसनसाहब इस नवागत व्यक्तिके मुखकी ओर बार-बार देखकर सोचने लगे कि यह तो कोई परिचित मनुष्य जान पड़ता है। मैंने इसे कहीं न कहीं पहिले अवश्य देखा है। नवागत व्यक्तिने, विलसनके मनका भाव समझ उनके पास जाकर कहा—महाशय,मुझे पहिचानते हैं ? मैं डक-लैंड ग्रामका रहने वाला बटलर हूँ विलसन कुछ ठीक न कर सके कि क्या उत्तर दें। अन्तमें भद्रताके अनुरोधसे कहा—पहिचानता हूँ। उसके उपरान्त बटलर उनका हाथ पकड़-कर उन्हें अपने निर्जन कमरेमें ले गया। वहाँ कमरेके किवाड़ बन्दकर वह विलसनके मुखकी ओर देखने लगा कुछ समयके बाद विलसनने उससे पूछा—जार्ज हो क्या ?

बटलर—हाँ।

विलसन—मैंने कभी ऐसा संदेह नहीं किया था कि तुम इस प्रकार भेस बदलकर आओगे।

बटलर—मैंने जो वेष धारण किया है, उससे यह विज्ञापन देखकर क्या कोई मुझपर संदेह कर सकता है ?

विलसन—जार्ज ! तुमने बड़ा भयानक मार्ग पकड़ा है। मैं तुम्हें इस मार्गका अवलम्ब करनेकी सलाह न दूँगा।

जार्ज—इस मार्गके अतिरिक्त और कोई मार्ग है भी तो नहीं !

विलसन—तुमने जो इस प्रकार भागनेका सङ्कल्प किया है, इससे मैं दुःखित हुआ।

बटलर—मैं तो आपके दुःखका कोई कारण नहीं देखता !

विलसन—क्यों! तुम जानते नहीं कि स्वदेश-प्रचलित कानूनके विरुद्ध चलनेके लिए तुम तैयार हुए हो?

जार्ज—मेरा! मेरा स्वदेश! क्या मेरा कहीं स्वदेश है! इस पृथ्वीपर क्या कोई ऐसा स्थान है जिसे मैं अपना देश कह सकता हूं? मेरा स्वदेश श्मशान-भूमि है। केवल मेरा समाधि-स्थान ही मेरा स्वदेश है। ईश्वर करे मैं शीघ्र ही उस देशमें जा सकूं!

विलसन-छि: छि:, जार्ज! ऐसी बातें मुँहपर लाना धर्मके तथा बाइबिलके विरुद्ध है। मैं मानता हूं कि तुम्हारा मालिक बड़ा अत्याचारी है, किन्तु तुम नहीं जानते हो कि बाइबिलको माननेसे दास-दासियोंको मालिकके अधिकारमें रहना होगा।

बटलर—विलसन! दासत्व-प्रथाका समर्थन करनेवाली बाइबिलको किसी धर्मशास्त्रके नामसे मत पुकारो। यह प्रथा यदि बाइबिलसे अनुमोदित है तो मैं ऐसी बाइबिलको पैरोंके तले रखकर सौ बार कुचलता हूं। उस बाइबिलके संसारसे लोप हो जानेपर ही संसारका कल्याण होगा। मैं सर्व शक्तिमान ईश्वरके निकट यह प्रश्न करता हूं कि अपनी स्वाधीनताकी रक्षाके लिए तथा अत्याचारसे अपनी रक्षा करनेके लिए भागनेकी चेष्टा करना क्या धर्मके विरुद्ध है? मैं निश्चय-रूपसे कह सकता हूं कि ईश्वरकी दृष्टिमें मेरा ऐसा करना कभी भी धर्मविरुद्ध न होगा।

विलसन—तुम्हारे ऊपर जैसा घोर अत्याचार हो रहा था, उससे तुम्हारे मनमें ऐसे भाव स्वभावतः उत्पन्न हो सकते हैं, किन्तु मैं तुम्हारे कार्यको धर्मशास्त्रानुसार कहना स्वीकार नहीं कर सकता। क्या तुम नहीं जानते कि खीष्टीय धर्म-प्रेरित महात्मा गण प्रत्येक मनुष्यको अपनी भली अथवा बुरी अवस्थामें ही संतुष्ट रहनेका उपदेश देते हैं। हम सब

लोगोंमेंसे प्रत्येकको अपनी-अपनी अवस्थामें ही संतुष्ट रहना होगा।

जार्ज-तुम्हारी भाँति स्वाधीन होकर जीवन व्यतीतकर सकनेपर मैं भी अपनी अवस्थामें ही संतुष्ट रह सकता हूँ। मनुष्यको, चाहे वह धनी हो, चाहे दरिद्र, मानव-प्रकृतिके स्वभाविक अधिकारसे च्युत न करनेपर, वह ईश्वरकी ओर देखकर संतुष्ट होकर रह सकता है। पर यदि मनुष्यको मानव-प्रकृति देकर उसे पशु-जीवन बितानेको कहे और मनुष्यके स्वाभाविक अधिकारसे उसे सर्वथा च्युत कर दे, तो स्रष्टाके प्रति उसको अवश्य ही क्रोध उत्पन्न होगा। तुम लोगोंमें लज्जा नहीं है, इसीलिए तुम बाइबिलके मंत्र उद्धृत कर क्रीत-दासोंको संतुष्ट चित्तसे रहनेके लिए कहते हो। यदि तुम्हारे पुत्र-कलत्र तुमसे अलग करके कोई उन्हें भिन्न-भिन्न देशोंमें बेच दे, तो क्या तुम संतुष्ट चित्तसे पल भर भी रहनेमें समर्थ होगे ?

विलसन छद्मवेषी बटलर नाम धारी जार्जकी ऐसी बातें सुनकर एकबार निस्तब्ध होकर बैठ गये। कुछ समयके पश्चात् कहने लगे—जार्ज! मैंने सदैव तुम्हारे साथ बन्धुकी भाँति सद्व्यवहार किया है। तुमको विपत्तिसे बचानेके लिए बारम्बार चेष्टा की है। किन्तु इस समय देखता हूँ कि तुम घोर विपत्ति-सागरमें कूद रहे हो। तुम यदि पकड़े जाओगे तो फिर क्या तुम्हारा निस्तार है ? तुम इसकी अपेक्षा अधिक भयानक दुरवस्थामें पड़ोगे। तुम्हारा मालिक तो सम्भवतः तुम्हें मार ही डालेगा। क्योंकि वह चाहे तो मार डाल सकता है।

जार्ज—विलसन, यह मैं भली-भाँति जानता हूँ, किन्तु पकड़े जानेपर मेरी मुक्तिका भी उपाय मेरे साथ है। यह

कह कर उसने जेवसे दो पिस्तौलें निकालीं और कहा—यदि पकड़ा गया, तो इस अस्त्राघातसे तुम्हारे इस केन्टाकी प्रदेश-की तीन हाथ भूमि प्राप्तकर दासताकी शृंखलासे शरीरको मुक्त कर दूँगा।

विलसन—जार्ज, तुम इस समय पागल हो गये हो! यह बड़ी भयानक बात है! तुम आत्म-हत्या करना चाहते हो! तुम अपने देशके कानूनके विरुद्ध चलनेको तैयार हुए हो।

जार्ज—फिर तुमने मेरा स्वदेश कहा? मेरा स्वदेश कहाँ है? यह तुम्हारा स्वदेश है। मुझ सरीखे क्रीत-दासीके गर्भसे उत्पन्न सन्तानका कहीं स्वदेश है? हम लोगोंका न तो देश है, न घर है। हम लोगोंका अपनी स्त्रियोंपर कुछ अधिकार नहीं, सन्तानके ऊपर कुछ अधिकार नहीं। यही क्यों, अपने शरीरपर तक कुछ अधिकार नहीं। मालिकके विना अपराध लाखों अत्याचार करने तथा व्यर्थ पीटनेपर भी अपनी रक्षा करनेके लिए देश-प्रचलित कोई कानून नहीं हैं, जो हैं वे सब हम लोगोंके प्राण-विनाशके लिए हैं। इन सब कानूनों-को हम लोगोंने तो बनाया नहीं है। इन सब कानूनके लिए हम लोगोंने कभी सम्मति तक दी नहीं। तब इन कानूनोंके विरुद्ध चलनेसे क्या कभी कोई धर्म-भ्रष्ट हो सकता है? विलसन, मैं एकदम अशिक्षित नहीं हूँ। चौथी जूलाई की वक्तृता मुझे भली-भाँति स्मरण है। तुम लोगोंके कानून-कर्त्ता लोग प्रति वर्ष एकवार कहते हैं कि प्रजाकी सम्मतिसे राजा अथवा शासन-कर्त्ताओंको राज्य करने तथा कानून बनानेकी क्षमता प्राप्त हुई है। किन्तु देश-प्रचलित कोई कानूनके प्रचलित करनेके पूर्व क्या उसके सम्बन्धमें हम लोगोंका मत लिया जाता है? कभी नहीं! तब फिर बतलाओ कि उस कानून-का पालन करनेके लिए हम लोग क्यों वाध्य होंगे?

विलसन, तुम हम लोगोंकी दुरवस्था जानते नहीं, इसीसे इस तरह कहते हो। जन्म लेनेके बादसे आज तक मुझे जितने कष्ट सहने पड़े, हैं उनकी गिनतीका अन्त नहीं है। तुम्हारे इसी केन्टाकी प्रदेशके एक संभ्रान्त अंग्रेजके वीर्यसे मेरा जन्म हुआ है। मेरी माता उस गोरेकी क्रीत दासी थीं। क्रमशः उनके सात सन्तानें हुईं। उनमेंसे मैं ही सबसे छोटा हूँ। मेरी छ वर्षकी अवस्थाके समय मेरे उस पाषाण-हृदय जन्मदाता गोरेकी मृत्यु हो गयी। उसके ऋणके लिए उसके घरके अन्य सामानोंके साथ हमलोग भी नीलाममें बिकने गये। एक-एक करके मेरे छ भाई-बहनोंको, भिन्न-भिन्न छ मनुष्योंने खरीद लिया। तत्पश्चात् मेरी माता मुझे अपनी छातीसे कसकर लिपटाकर रोती-रोती वर्त्तमान मालिकसे कहने लगीं,—महाराज, मेरे हृदयसे इस बालकको अलग न कीजिए। मुझे तथा इसे एक साथ ही खरीदिये। किन्तु उस नर-पिशाचने बार-बार मेरी माताको लातकी ठोकरोंसे मारा और उसके हृदयसे मुझे अलग कर ही लिया एवं उसी क्षण मुझे बाँधकर अपने घरकी ओर ले चला। मैं फिर एकबार भी माताकी ओर फिरकर देख न सका। दो तीनबार केवल उसके आर्तनादके शब्द मेरे कानोंमें पड़े। इसके कई दिन बाद मेरा मालिक मेरी बड़ी बहिनको, उस व्यक्तिसे जो उसे खरीद ले गया था, खरीद लाया। इससे मैं बड़ा प्रसन्न हुआ। मनमें सोचने लगा कि बड़ी बहिनके साथ एकत्र रहनेसे माताके वियोगका दुःख कुछ भूल जायगा। किन्तु मेरी वह आशा शीघ्र ही नष्ट हो गयी। मेरी बड़ी बहिन मेरी माताकी भाँति अत्यन्त सुन्दरी थीं। उसे धर्माधर्मका भली भाँति ज्ञान था। मेरा मालिक उन्हें उपपत्नी बनानेकी बहुत चेष्टा करने

लगा, पर वे किसी प्रकार भी धर्म छोड़नेपर सहमत न हुई। इससे क्रुद्धकर वह नीच मालिक प्रतिदिन उन्हें बेतोंसे पीटने लगा। उसकी मार देखकर मैं शोक और दुःखसे अस्थिर हो उठता था। अन्तमें जब मेरे मालिकने देखा कि मेरी वहिन प्राण निकल जानेपर भी धर्म न छोड़ेगी, तब उसने उन्हें बन्दी बनाकर दक्षिण-देशीय एक अंग्रेज-वणिकके हाथ बेच दिया। उसको बेचे हुए प्रायः आठ वर्ष हो गये, किन्तु वे कहाँ हैं, जीवित हैं अथवा मर गयीं; यह सब मैं कुछ नहीं जानता। इस जीवनमें अब फिर उनके साथ भेंट होगी, ऐसी कोई आशा नहीं। इसके पश्चात् मैं अकेला ही इस कठोर मालिकके घरमें निवास करने लगा। कभी-कभी भूखे रह कर भी समय बिताना पड़ता था। कभी-कभी खा पीकर जो जूठी हड्डियाँ बाहर फेंक देता था, भूखकी ज्वाला-निवारण करनेके लिए मैं उन्हींको कूटकर खाता था। किन्तु उस भोजनके कष्टको भी कष्ट न समझता था। शारीरिक किसी भी कष्टको मैं कुछ नहीं समझता था। दिन-रात माता, बहिन तथा भाईयोंके शोकमें डूबा रहता था। सोचता था, इस संसारमें ऐसा कोई नहीं, जो मुझे प्यार करे; मुझ-पर कुछ दया करे; मेरे साथ दो चार मिनट मधुर-भाषण करे। बाल्य कालमें मेरी माताने कहा था कि विपत्ति पड़नेपर ईश्वर को पुकारनेपर वे आकर सहायता करते हैं। माताकी यही बात स्मरण कर मैं कभी-कभी ईश्वरको पुकारा करता हूं। इससे कुछ आशाका संचार हो जानेसे जीवन-धारण करनेमें समर्थ हूं। इसके कुछ समयके पश्चात् मालिकने मुझे तुम्हारे कारखानेमें नियुक्त किया। तुम्हारे घर आने-पर ही पहले पहल इस जीवनमें दूसरेकी कृपा और प्रेमका अनुभव मुझे हुआ। आपनेही पहले पहल मेरे लिखने-पढ़ने

को सुविधा करदी थी। आपके यहाँ काम करनेके समय-में ही शेल्बीसाहबके घरकी दासी इलाइजाके साथ मैंने विवाह किया था। क्रीत-दासी होनेपर भी इलाइजाका हृदय धर्म-भावसे परिपूर्ण है। उसके उस अकृत्रिम तथा निश्छल-प्रेमने मुझे पुनः जीवित कर दिया। उसका साथ मिल जानेसे ही माता बहनोंके शोकको कुछ भुला देनेमें मैं समर्थ हुआ। पर इस देश-प्रचलित घृणित कानूनके नष्ट हुए विना क्रीत-दासोंको कभी भी सुख नहीं मिल सकता। मेरा वह निर्दयी मालिक मुझे कुछ सुखी देखकर क्रोधान्ध हो गया। उसने मुझे निकाल देनेके लिए दृढ़ संकल्प कर लिया। उसने तुम्हारे कारखानेसे मुझे हटा लिया और मिट्टी खोदनेके काममें लगाया। इलाइजाको छोड़कर अपने घर-की एक पुरानी दासी तथा अपनी उपपत्नी मिनाके साथ विवाह करनेको कहा। भला मैं किस प्रकार इलाइजाको छोड़कर मिनाके साथ विवाह करूँ! इस प्रकारका व्यवहार क्या धर्म संगत है? क्या बाइबिल इसका अनुमोदन करती है? धिक्कार है तुम्हारे ईसाई-धर्मको; सौवार धिक्कार है तुम्हारी बाइबिलको; और हजार बार धिक्कार है इस देश-प्रचलित कानूनको! इस घृणित कानूनका सहारा लेकर तुम लोग प्रतिदिन हजारों मनुष्यात्माओंकी हत्या करते हो। ऐसे घृणित कानूनको माननेके लिए पुनः तुम मुझसे कहते हो। यदि सचमुच किसी न्यायवान, मंगलमय ईश्वरका बनाया हुआ यह विश्व उत्पन्न हुआ है तो इस घृणित आईन-के विरुद्ध चलकर मैं उसीका प्रिय-कार्य साधनकर रहा हूँ। मैंने भागकर केनाडा जानेकी तैयारी की है। यदि कोई मुझे पकड़नेकी चेष्टा करेगा, तो मैं उसी क्षण उसका प्राणान्त कर दूँगा। किन्तु यदि परास्त होकर पकड़ा ही गया तो

तुरन्त ही आत्म-हत्याकर साढ़े तीन हाथ स्वतंत्र भूमिपर अधिकारकर निर्विघ्न हो अनन्त कालतकके लिए सुख-शय्या-पर शयन करूँगा। मैं निश्चय जानता हूँ कि स्वाधीनता-के लिए युद्ध करनेमें प्रवृत्त होनेपर उससे कोई पाप नहीं उत्पन्न होता। तुम लोगोंके पिता तथा पितामहोंने इस स्वाधीनताके लिए घोर युद्ध किया था। यदि उस युद्धमें उनको कोई पाप नहीं हुआ तो अपनी स्वाधीनताकी रक्षा करनेमें किसीको मार डालनेपर मुझे भी कोई पाप न लगेगा।

जार्जकी ऐसी बातें सुनकर विलसनका हृदय पिघल गया। वे सोचने लगे कि इस दासत्व-प्रथाके नष्ट होनेमें ही भलाई है। इसके पश्चात् जार्जको सम्बोधित कर बोले—जार्ज! ऐसी अवस्थामें मैं तुम्हें भाग जानेसे नहीं रोक सकता। किन्तु किसी के प्राण न लेना। अब अपनी स्त्री-के लिए क्या करोगे? तुम्हारी स्त्री इस समय कहाँ है?

जार्ज—मेरी स्त्री इस समय कहाँ है, सो मैं नहीं जानता। किन्तु सुना है कि उसके मालिकने उसके छोटे बच्चेको बेचनेका विचार किया था, इसलिए वह लड़केको लेकर भाग गयी है। कब उसके साथ भेंट होगी, अथवा इस जन्ममें अब उससे भेंट होगी कि नहीं, यह भी नहीं जानता।

विलसन—यह बड़े आश्चर्यका विषय है! ऐसा दयालु परिवार तुम्हारे बच्चेको बेचेगा!

जार्ज—दयालु परिवार भी ऋणी हो जानेसे अनेक समय धर्माधर्म छोड़कर सामाजिक मान बनाये रखनेके लिए माताकी गोदसे बालकको छीनकर बेच देते हैं। विशेषतः यह देश-प्रचलित घृणित कानून इस प्रकारकी निष्ठुरताको सदा सहायता देता है। इसलिए दयालु परिवार द्वारा हम लोगोंका कोई उपकार नहीं हो सकता।

विलसनने यह बात सुनकर जेबसे कई एक नोट निकाल कर जार्जसे कहा-तुम ये नोट लो! भागनेके समय तुम्हें रुपयोंकी बड़ी आवश्यकता होगी। जार्ज रुपये लेनेमें अस-म्मति प्रकट कर कहने लगा-विलसन, आपने समय-समयपर मेरा बड़ा उपकार किया है। मैं आपसे और रुपये नहीं लेना चाहता। इस प्रकारसे रुपये बाँटकर आप ऋणी हो जायँगे।

किन्तु विलसनने जार्जकी एक न सुनी। उन्होंने वे नोट जार्जके हाथमें दे ही दिये। तब तो विवश होकर जार्जने उन्हें ले लिया और विलसनसे कहा-अच्छा, तुम्हारे इन रुपयोंको यदि मैं समर्थ होनेपर लौटाऊँगा तो तुम्हें ले लेना पड़ेगा।

विलसन—तुम इस कपट-वेषमें कितने दिनोंतक रहोगे? तुम्हारे साथ यह काला आदमी कौन है?

जार्ज—यह व्यक्ति भी क्रीत-दास है। एक वर्ष हुआ यह व्यक्ति भागकर केनाडा गया था, किन्तु इसके भाग जाने-पर इसका मालिक क्रोधान्ध होकर इसकी वृद्धा माताको रात-दिन बेतसे पीटने लगा। माताके कष्टकी बात सुनकर उसे गुप्त रूपसे ले जानेके लिए यह फिर यहाँ आया है।

विलसन—उसने अपनी माताका उद्धार किया?

जार्ज-अभीतक इसे माताके उद्धार करनेका सुयोग नहीं मिला है। इस समय यह मुझे किसी निरापद स्थानमें रखने जा रहा है। मुझे वहाँ रखकर यह फिर अपनी माताका उद्धार करनेके लिए इस प्रदेशमें आवेगा और तब उसको अपने साथ ले जायगा।

विलसन—यह तो बड़ा साहसी आदमी है। किन्तु जार्ज! देखो तुम बड़ी सावधानीसे रहना, जिसमें तुम्हें कोई पकड़ न पावे।

जार्ज—मैं दासत्व-शृंखलासे छूट गया हूँ। भागनेमें सफल होनेपर भी स्वाधीन हूँगा एवं पकड़े जानेपर भी समाधिमें प्रवेशकर पूर्ण स्वाधीनताके साथ अभंग-निद्राका आलिङ्गन करूँगा। यदि आप कभी सुनिये कि मैं पकड़ा गया तो निश्चय समझ लीजियेगा कि मेरी मृत्यु हो गयी।

इस प्रकार वार्तालापके उपरान्त ज्योंही विलसन जार्जसे विदा होकर घरके बाहर निकले, त्योंही जार्जने फिर उन्हें बुलाकर कहा-विलसन! मेरी एक बात और सुनिये। मेरे पकड़े जानेपर मेरी मृत्यु अवश्य ही होगी एवं मेरा मालिक मरे कुत्तेकी भाँति मुझे पानीमें फेंकवा देगा। उस समय इस संसारमें मेरे लिए, मेरी उस अनाथा स्त्रीके अतिरिक्त और कोई भी, एक बूँद आँसू न बहावेगा मैं आपको अपनी एक फोटो देता हूँ। वह फोटो मेरी स्त्रीसे भेंट होनेपर आप उसे दे दीजियेगा तथा उससे कहियेगा कि जीता रहूँ चाहे मर जाऊँ-पर रहूँगा सदा तुम्हारा ही; साथ ही उसको संतानके साथ-केनाडा जानेके लिए भी कहियेगा। वह जिस प्रकार संतान-को दासत्व-शृंखलासे छुडा सके उससे वही चेष्टा करनेके-लिए कहियेगा। उसे यह अच्छी तरह समझा दीजियेगा कि मालिकके दयालु होनेपर भी दासोंकी कठिन यंत्रणा, उनके द्वारा दूर नहीं हो सकती। मालिकके ऋणके कारण दूसरे-के अधिकारमें चले जानेकी सम्भावना सदैव बनी रहती है।

विलसन—तुम्हारी स्त्रीसे भेंट होनेपर मैं तुम्हारी ये सब बातें अवश्य कह दूँगा। मैं तन, मन, और वचनसे ईश्वरके निकट यह नम्र प्रार्थना करता हूँ कि वे तुम्हें निर्विघ्न किसी निरापद स्थान तक पहुँचनेमें समर्थ बनावें। तुम सदा ईश्वरपर ही निर्भर रहना।

जार्ज—क्या संसारमें कोई ईश्वर है ? संसारमें सब नहीं प्रकारका अन्याय और अत्याचार देखकर मेरे मनमें ऐसे। ज्ञान पड़ता है कि संसामें कोई भी न्यायवान परमात्मा नहीं है। यदि कोई रक्षा करनेवाला परमात्मा है तो वह केवल तुम लोगोंका। मैं तो ईश्वरके अस्तित्वमें विश्वास नहीं कर सकता।

विलसन—जार्ज ! ऐसी बात मत कहो। ऐसे दुर्भावको कभी हृदयमें स्थान न देना। इस विशाल ब्रह्माण्डके सम्पूर्ण जीवोंका शासन वही परमात्मा करता है। वह सर्वत्र ही विद्यमान है। उसपर विश्वास करो। उसीपर निर्भर रहो अपनी अन्तरात्माको उसीके हाथ सौंपकर न्याय और सत्यके मार्गमें आगे बढ़ो। उसकी अपार करुणा तुम्हें अवश्य किसी निरापद स्थानमें पहुँचा देगी। इस संसारमें व्यक्ति विशेष अथवा जाति विशेषको जो दुःख और यंत्रणा पाते देखते हो तो वह सब उनका अपने-अपने कर्मोंका फल मात्र है। कभी-कभी तो मनुष्योंको अपने पिता अथवा पितामहके कर्मोंका फल भी भोगना पड़ता है। मंगल-धाम परमेश्वरके प्रति अविचल विश्वास उनके ऊपर आत्म-निर्भरता स्थापन तथा उनको आत्म-समर्पण किये बिना मनुष्य उस कर्म फलसे छुटकारा नहीं पा सकता।

जार्ज, विलसनकी ये सब बातें सुनकर बोला-मैं तुम्हारे इस उपदेशके अनुसार ही काम करनेकी चेष्टा करूँगा। यह कहकर दोनोंने परस्पर एक दूसरेसे विदाई ली।

तेरहवाँ परिच्छेद

——०——

नीलाममें दास-दासियोंकी बिक्री

हेली, टामको साथ लिए जाते-जाते एक गाँवके निकट पहुँचा। मार्गमें दोनोंमें कोई बातचीत न हुई। दोनों अपने-अपने विचारोंमें मग्न थे। इस संसारमें भिन्न-भिन्न मनुष्योंकी प्रकृतिमें कैसी आश्चर्य मयी विभिन्नता है। दोनों एक ही स्थानपर बैठे थे। एक ही प्रकारसे बाह्यजगत् उन दोनोंके दृष्टि-पथमें आने लगा; किन्तु उन लोगोंकी परस्पर-की मानसिक चिन्ताओं तथा उनके मनके भावोंने स्वतंत्र मार्गोंका अवलम्बन किया। हेली सोच रहा था कि टाम एक अच्छा लम्बा, बलिष्ठ पुरुष जान पड़ता है। अतएव उसे दक्षिण-प्रदेशमें बेच देनेपर अंततः मुझे दो-तीन सौ रुपये-का लाभ होगा। वह मन ही मन समझ रहा था कि दास व्यवसायी लोगोंमें उसके समान दयालु बहुत कम लोग हैं। क्योंकि कुछ दूर आनेपर ही उसने टामके हाथ खोल दिये थे, केवल पैर बाँध रखे थे। इसके पश्चात् संसारके आचार-व्यव-हारकी चिन्ताकर वह मन ही मन सोचने लगा कि टामकी भाँति अकृतज्ञ दास कदापि उसकी इस दया तथा सद्व्यव-हारका अनुभव न कर सकेगा और न स्मरण ही रख सकेगा।

टामकी चिन्ता और ही रूप की थी। वह सोच रहा था कि यह संसार मंगलमय परमात्माके मंगल-विधानोंके अनुसार ही शासित होता है। अतएव पूर्ण रूपसे उसी ईश्वर-पर भरोसा रखनेसे कोई अमंगल नहीं हो सकता। यह

संसारी जीव ईश्वरका उद्देश्य कभी पूर्ण रूपसे समझ नहीं सकता। इसीसे वह किसी-किसी घटनाको विपत्ति अथवा दुर्घटना कहता है। किन्तु वही मनुष्य हृदयके मोहान्धकार दूर होते ही इस जीवनकी प्रत्येक घटनाके अन्तस्तलमें उसी करुणामय जगदीश्वरका हाथ देखने लगता है। इस प्रकार सोच विचारकर वह अपने हृदयके उच्छ्वसित शोकके वेगको रोकनेकी चेष्टा करने लगा।

टाम और हेलीके विचारोंका प्रवाह अभी रुकने भी न पाया था कि वे सम्मुखस्थ गाँवके निकट आ पहुँचे। तब हेली अपने कोटके जेबसे एक गजट निकालकर उसमें छपे हुए इस विज्ञापनको बड़े ध्यानसे पढ़ने लगा।

"अदालतके आदेशानुसार आगामी २० वीं फरवरी मंगलवारको वाशिंगटन नगरकी दीवानी अदालतके सामने मृत ब्राम्सन् साहबका ऋण चुकानेके लिए निम्न लिखित दास-दासी नीलाम होंगे। जो सबसे अधिक डाक बोलेगा उसीके हाथ सौदा बेचा जायगा।"

नीलामी फर्द

संख्या	नाम	अवस्था।
१	हेगार (दासी)	६० वर्ष
२	जॉन (दास)	३० ,,
३	बेञ्जमिन ,,	२१ ,,
४	साल ,,	२५ ,,
५	अलवर्ट ,,	१५ ,,

दस्तखत

२० जनवरी १८५० ई० } सेमुअल मेरिस
टामस फिलट
शरीफ द्वय।"

यह विज्ञापन पढ़कर हेलीने टामसे कहा कि इस स्थानसे और भी कई एक दास खरीदना होगा। इसलिए कुछ समयके लिए तुम्हें वाशिंग्टन शहरके जेलमें रखकर मैं नीलाममें दास खरीदने जा रहा हूँ। यह कहकर हेली टामको जेलमें रखकर नीलाम-घरकी ओर चला।

समय प्रायः दोपहरका है। अदालत-घर क्रमशः लोगों से परिपूर्ण होने लगा। विचारालयसे थोड़ी ही दूरपर छंड़ोंसे घिरा हुआ माल-गोदाम की तरह एक खुला घर था। लोगोंके आने-जानेसे उस घरके भीतरका सम्पूर्ण स्थान धूलसे परिपूर्ण हो गया। इस घरके एक कोनेमें बैठकर कई काले दास लोग नाना प्रकारकी बातें कर रहे हैं। इन लोगोंके बीचमें बैठी हुई हेगार नाम्नी दासी, देखनेसे जान पड़ती है कि उसकी अवस्था अस्सी वर्षको पारकर चुकी है। पर इसकी प्रकृत अवस्था ६० वर्षसे अधिक की न होगी। अनुचित परिश्रम, शारीरिक कष्ट तथा नाना प्रकारकी यंत्रणायें पाने तथा अनेक दिन अनाहार रहनेसे ही वह इतनी दुर्बल हो गयी है। वात-व्याधि-ग्रस्त हो तथा रोगसे आक्रान्त होकर वह कुबड़ीकी भाँति चलती थी। इस हतभागिनीके पास चौदह वर्षका एक लड़का बैठा हुआ है। इसकी अन्य सतानोंको इससे पहिले ही इसके मालिकने भिन्न-भिन्न स्थानोंमें बेच दिया था। लगभग १० या १२ संतानोंमेंसे यही चौदह वर्षका एक लड़का आज तक बच रहा है। हेगार उस बालकका गला कसकर पकड़े बैठी है। लड़केके शरीरकी परीक्षा करनेके लिए, किसी खरीदारके, आते ही यह बुढ़िया चौंक उठती है और कहने लगती है, हम दोनों आदमियोंको एक साथ ही बेचना। यह कहकर वह बालकको

और भी कसकर पकड़ लेती हैं। इन लोगोंके पश्चात् दोनों ३० वर्षके एक और दासने कहा—हेगार मौसी, तुम्हें डरी समय शरीफ साहबने कहा है कि तुम्हें और अलवर्टको एक भीतर ही बेचनेकी चेष्टा करूँगा। गा।

इसी समय हेलीने वहाँ आकर नीलाम-घरमें प्रवेश किया। वह एक-एक करके प्रत्येक दासके शरीरकी परीक्षा करने लगा। प्रत्येकका मुख खोलकर उसके मुखके भीतर अँगुली डालकर दाँत हिला-हिलाकर देखा। प्रत्येकको खड़ा कराकर उनकी लम्बाई नापी। शरीरके अनेक स्थानोंपर अँगुली धँसा-धँसाकर उनकी परीक्षा की। अन्तमें वह हेगारके पास आकर उसके चौदह वर्षके लड़के अलवर्टको परीक्षा करनेके लिए हाथ पकड़कर उठाया। यह देखकर उसकी वृद्धा माता बोल उठी—महाशय, हम दोनोंको साथ ही बेचेंगे। मैं अब भी भली-भाँति काम करती हूँ। हेलीने हँसकर पूछा—तमाखूके अथवा चायके खेतमें काम कर सकती है? स्त्रीने कहा—खूब-खूब। हेली हँसते-हँसते चला गया। एक दूसरे खरीददारके निकट जाकर उसने कहा—मैं इस छोटे लड़केको ले लेना चाहता हूँ। उसका शरीर बहुत बलिष्ठ है। तब उस दूसरे खरीददारने कहा—सुनता हूँ कि इस बुढ़ीको और इस बालकको एक साथ ही बेचेंगे। यह सुनकर हेली बोला—इस बूढ़ीको एक पैसेमें देने-पर भी कोई न खरीदेगा। वात-रोगसे इसका शरीर सुन्न हो गया है। एक आँखकी कानी है। ऐसी मरी गायको लेकर कौन घास खिलावेगा? विना मूल्य देनेपर भी मैं इसे लेनेमें सहमत न हूँगा। इसके साथ बालकको बेचनेसे उसका भी दाम कम लगेगा। हेलीकी यह बात समाप्त होते ही नीलामका घंटा बजा। सेमुअल मेरिस और टाम्सफ्लिट

यह विछ
और भी ग्रभ्मा चढाये नीलाम-घरमें उपस्थित हुए। नीलाम के लिए लोंने नीलामकी बोली बोलना आरम्भ किया। वृद्धा दाम रने अलबर्टसे कहा—बेटा ! मुझे कसकर पकड़ लो। ऐसा करनेपर ही हम दोनोंको एक ही लाटपर बेचेंगे। बालकने आंखमें आंसू भरकर कहा—माँ ! तुम व्यर्थ ही यह सब करती हो, वे हम लोगोंको एक साथ न बेचेंगे। हेगारने कहा—अवश्य बेचेंगे, अवश्य बेचेंगे। तुम कसके पकड़कर बैठो ! कुछ समयके पश्चात् ही अन्यान्य कई लाटोंको बेचकर विक्रेताओंने उस लड़केका हाथ पकड़कर खड़ा किया। यह देखकर वृद्धा चिल्लाकर बोली—दोनोंको साथ ही नीलाम करो ! हम दोनों को इकट्ठा नीलाम करो। किन्तु नीलाम करनेवालोंने धक्का देकर बुढ़ियाको अलग हटा दिया। बालककी डाक आरम्भ हुई। अन्तमें हेलीने सबसे ऊँची डाक बोलकर लड़केको ले लिया। बालककी माता तब हेलीके पास जाकर बोली—महाशय ! मुझे भी आप ही खरीदिये। मुझे इसके साथ न खरीदोगे तो मैं निश्चय ही मर जाऊँगी। हेलीने कहा—'तुम' खरीदलेनेपर भी शीघ्र ही मर जाओगी। तुम्हारे अब अधिक दिन शेष नहीं रहे। तत्पश्चात् उस वृद्धा स्त्रीकी डाक आरम्भ हुई। अधिक मूल्यमें उसे एक आदमीने ख़रीद लिया। तब वृद्धा अत्यन्त आर्तनाद करती हुई रोते-रोते कहने लगी—मेरी एक संतानको भी मेरे साथ न रहने दिया। मरनेके पहिले मेरे मालिकने कहा था कि, तुम्हारी इस अवशिष्ट संतानको तुम्हारे गोदसे अलग न करूंगा। किन्तु आज उसे भी ले गया। उस विके हुए दासोंके बीचमेंसे एक वृद्धदासने कहा—अब रोनेसे क्या होगा, हेगार मौसी। परमेश्वरकी ओर देखकर शोक दूर करो। इसके सिवाय क्या हम लोगोंको और कोई

उपाय है। इसपर वह और भी अधिक रोने लगी। रोते रोते वह कहने लगी—कहाँ है परमेश्वर? कौन है? यदि एकबार मैं उसको पा जाती तो देखती। एक एक करके मेरी १३ संतानोंको इन लोगोंने इसी प्रकार मेरी गोदसे छीन लिया, परमेश्वर इसका कुछ विचार नहीं करता? हेलीके पाससे बालक कहने लगा—माँ, अब तुम मत रोओ। अपने खरीददारके साथ चली जाओ। ये कहते हैं कि तुम्हारा खरीददार भला आदमी है। पर क्या माताका मन इससे शान्ति पा सकता है? उसने दौड़कर बालकको फिर पकड़ लिया। वह पागलकी तरह चिल्लाकर कहने लगी-यह मेरी अन्तिम संतान है। मेरा सबसे छोटा लड़का है। इसे छोड़कर मैं कहीं न जाऊँगी। बड़े क्लेशके साथ उसके हाथसे बालकको छुड़ाकर हेलीने उसे अपने साथ लेकर प्रस्थान किया। वह वृद्धा स्त्री उस समय अचेत थी। इस नीलाममें हेलीने वह बालक और दो अन्य दासोंको खरीदा था। इनलोगोंको साथ लेकर फिर जेलके पास आया। वहाँसे टामको लेकर नदीकी ओर चला। इसके पश्चात् इन चारो दासोंको लेकर एक जहाजपर चढ़कर दक्षिण-देशकी ओर चला।

जहाजके ऊपरी हिस्सेमें दस बारह सजे सजाये कमरे थे। ये सब कमरे धनी यात्रियोंके हास-परिहास, आमोद-प्रमोदके शब्दसे प्रतिध्वनित हो रहेथे। किसी कमरेमें केवल हँसीका ही 'ही ही' शब्द सुन पडता था। जान पड़ता था कि कोई नवविवाहित दम्पति उसमें निवासकर रहे हैं। किसी कमरेमें संतान वत्सला माता अपनी संतानका मुख चुम्बन कर अपार आनन्दमें मग्न हो रही है। किसी कमरेमें शूर्पणखाकी भाँति अँग्रेज रमणी सहयात्री लोगोंको अत्यन्त सुसज्जित तथा उत्तम कमरेमें निवास करते देखकर गर्जन-तर्जन

यह विश्व ...स्थावर ...ोंसे अपने अदृष्टका कारण पूछनेमें प्रवृत्त हैं। और भी सूक्ष्मा ...णकी आलोचना करनेके बाद अन्तमें इस के लिए लोंने ...अदूरदर्शी स्वामीकी प्राप्तिको ही एकमात्र मूल कारण दाम रते ...वते करती हैं। किन्तु इस प्रकारके सुसज्जित कमरेको दसा ...ते ही मन केवल क्षणिक आनन्द अनुभवकर पलभर कते प्रसन्न रह सकता है। इस प्रकारकी पार्थिव चमक-दमक, ऐसा क्षणस्थायी कुशलतासे सजाया हुआ शिल्पसे मंडित दृश्य, मानव-हृदयमें किसी जीवित कविताका भाव उत्पन्न नहीं कर सकता। पाठक! एकबार जहाजके गोदाममें चलिये। लोहेकी सिकड़ियोंसे बँधे हुए संतान-संततिसे सदैवके लिए अलग किये हुए दासका मुख देखिये। माताकी गोदसे छीने हुए चतुर दश वर्षीय बालकका बारबार दीर्घ निश्वास सुनिए! इस गोदाममें आकर हेलीके चारों दास क्या कहते हैं, क्या करते हैं, तनिक उसे ध्यानपूर्वक देखिए। यहाँपर जीवित कविताके भाव उत्पन्न कर सकते हैं। उस जीवित कविताके रसमें आपका हृदय आप्लावित होने लगेगा।

हेलीके चारों क्रीत-दास इस अन्धकारपूर्ण कोठरीमें बैठे हुए अविराम आँसू बहा रहे हैं एवं एक दूसरेसे अपना दुःख कहकर धैर्य-धारण करनेकी चेष्टा कर रहे हैं। इनमेंसे तीस वर्षकी अवस्थाके एक क्रीतदासने सिकड़ीसे बँधे हुए दासके हाथपर हाथ रखकर कहने लगा—भाई! मेरी स्त्री इस बिक्रीके स्थानसे थोड़ी ही दूरपर निवास करती है। मेरी बिक्रीके सम्बन्धमें वह रत्तीभर भी नहीं जानती। मेरी बड़ी इच्छा होती है कि जन्मभरके लिए एक बार उसे देख आऊँ। इस जन्ममें अब फिर तो उसे देख पाऊँगा नहीं। यह कहकर वह व्यक्ति रोने लगा। आँसुओंसे उसका हृदय भींग गया। दास उसे सांत्वना देने लगा, किन्तु क्या

कहकर वह सान्त्वना दे यह न समझ सका। पश्चात् दोनों की आँखोंसे अविरल अश्रुकी धारा बहने लगी। इसी समय जहाजके केबिनसे एक बालक नीचे आया। गुदामके भीतर इन दासोंको देखते ही वह अपनी माताके पास दौड़ा गया। जाकर उसने अपनी मातासे कहा—माँ! इस जहाजके गोदाममें चार क्रीत दासोंको बाँध रखा है। वे सब वहाँ रो रहे हैं। बालककी माताने उसके मुखसे ऐसी बातें सुनकर अत्यन्त आक्षेप प्रकाश कर कहने लगी—यह घृणित दासत्व-प्रथा हमारे देशका कलंक है। हृदय रहते क्या मनुष्य इस प्रकारकी शोचनीय अवस्था देख सकता है! यह सुनकर पासके एक दूसरे केबिनसे दूसरी बिल्लीकी तरह आँखवाली एक अँगरेज रमणी बोल उठी—दासत्व-प्रथाको क्या आप अत्यन्त शोचनीय समझती हैं? दासत्व-प्रथामें उपकार-अपकार दोष-गुण दोनों ही दीख पड़ते हैं। इसमें केवल दोष ही है, गुण नहीं, अपकार ही है, उपकार नहीं: ऐसा नहीं कहा जा सकता। क्रीतदासोंको दासत्व शृंखलासे मुक्तकर देनेपर क्या वे इतने सुखसे रह सकेंगे? विशेष विचारकर देखनेपर सहज ही समझमें आ जाता है कि क्रीत दास समूह अपनी वर्तमान अवस्थामें भलीभाँति सुख-स्वच्छन्दा भोगकर रहे हैं। यदि इन लोगोंको स्वतंत्रता दे दी जाय तो ये अत्यन्त दुखी तथा दुरवस्थापन्न हो जायँगे।

इस समय रमणीकी ये बातें सुनकर उस बालककी माताने कहा—इस घृणित दासत्व-प्रथाके न रहनेसे माताकी गोदसे बालकको छीन लेनेकी आवश्यकता न पड़ेगी तथा स्त्रीको अपने स्वामीका साथ छोड़कर अनिच्छापूर्वक पर पुरुषको न ग्रहण करना पड़ेगा। इन सब भयानक नृशंस कार्योंका ध्यान आते ही सचमुच हृदय काँपने लगता है।

एकबार आप ही विचारकर देखें कि यदि कोई आपकी संता॰ नको आपकी गोदसे छीनकर अलग कर ले तो आपको कितना कष्ट होगा ! ठीक उसी प्रकार इन दासोंको भी कष्ट होता है। इनके भी वही हृदय है जो हमलोगोंके पास है। इनलोगोंमें भी वही संतान-प्रेम भरा हुआ है जो हमलोगोंके हृदयको ओत-प्रोत कर रहा है।

बालककी माताकी बात समाप्त होनेपर उस सभ्य रम॰ णीने हँसकर कहा—आपकी भाँति जो, इस प्रकारके हृदयके उच्छ्वास-द्वारा, चलता है, उसे किसी विषयके गुण-दोषका विवेचन करनेकी क्षमता नहीं रहती। हृदयोच्छ्वास विचार, शक्तिको निस्तेज कर देता है। मनुष्यको भले-बुरेके ज्ञानसे शून्य कर देता है। आपके हृदयमें जैसा प्रेम भरा है, क्या कालेदासके हृदयमें भी वैसा ही प्रेम संचारकर सकता है? केवल अपने हृदयकी ओर देखकर उनलोगोंके सुख-दुःख, हिताहितका निर्णय नहीं कर सकतीं। दासत्व-प्रथाके विष॰ यमें मैंने अनेक पुस्तकें पढ़ी हैं। अनेक विद्वानोंके साथ इस विषयमें बात-चीत की है। किन्तु इसमें कोई बहुत निष्ठु रता है, मैं तो ऐसा नहीं समझती। दासत्व-शृंखलासे दासोंको मुक्त कर देनेपर, वे इससे अधिक दुरवस्थामें फसेंगे मेरे वि॰ चारसे तो क्रीत-दास-दासी वर्तमान अवस्थामें अच्छे ही हैं।

यह सभ्य रमणी एक धर्मोपदेशककी स्त्री थी। इसके स्वामी सिरसे पैरतक एक काली पोशाक पहिने पास ही खड़े थे। दासत्व-प्रथाके सम्बन्धमें अपनी स्त्रीसे एक अन्य स्त्रीको बात-चीत करते सुनकर उन्होंने जेबमेंसे बाइबिल निकाली। वे इन लोगोंके पास आकर कहने लगे—आपतो व्यर्थका विवाद करती हैं। यदि आप विचार-पूर्वक, ध्यान॰

नसे बाइबिल पढ़ जायँ तो आपको दासत्व-प्रथाके विषयमें ऐसा विवाद करनेकी आवश्यकता ही न पड़ेगी। बाइबिलमें स्पष्ट लिखा है कि केन्यान प्रदेशके लोग दासोंके दास होकर रहेंगे। दासत्व-प्रथाके विरुद्ध बातें करना, बाइबिलके विरुद्ध आचरण करना है और ख्रीष्टीय धर्मको छोड़नेके बराबर है। धर्मके विरुद्ध भावको आप कभी अपने हृदयमें स्थान न दीजियेगा। मनोयोग पूर्वक बाइबिल पढ़ें, तब आप अनायास ही समझ सकेंगी कि दासत्व-प्रथा ईश्वर-निर्दिष्ट-विधान है।

पादरी साहबकी बात सुनकर एक दीर्घाकार पुरुष हँसते-हँसते उसके पास आकर बोला—महाशय! दासत्व-प्रथा क्या ईश्वर-निर्दिष्ट-विधान है? यदि ऐसा है तो हम सब लोगोंको एक दो दास खरीदना उचित है। फिर उस व्यक्तिने व्यवसायी हेलीको सम्बोधितकर कहा—भाई! सुनते हो न, पादरीसाहब क्या कह रहे हैं? वे कह रहे हैं कि दासत्व-प्रथा ईश्वर-निर्दिष्ट-विधान है। यदि पादरीसाहबकी बात ठीक है तो ईश्वर-निर्दिष्ट इस नये नियमका प्रचार करनेके लिए ही तुम ईश्वर द्वारा हमारे देशमें भेजे गये हो! इसमें रञ्च-मात्र भी संदेह नहीं है। प्रति दिन तुम सैकड़ों स्त्री-पुरुषोंको खरीदकर नाना देशोंमें बेचा करते हो। पिता-माताकी गोदसे पुत्रोंको छीन लेते हो, स्त्रीके संसर्गसे जन्मभरके लिए स्वामीको छुड़ा देते हो, भाई, तुम्हारे समान ईश्वरका भेजा हुआ महात्मा पुरुष आजतक मैंने देखा ही नहीं। हेलीने कहा—भाई, मैं बाइबिलका कोई नियम नहीं मानता। अपने जन्मसे लेकर आजतक मैंने कभी बाइबिल पढ़ी ही नहीं- यह सब तो पादरियोंका काम है। चार पैसा कमानेके लिए व्यवसाय करता हूँ। व्यवसायमें लाभ होनेसे यह व्यापार मैं

कभी नहीं छोड़ूँगा। फिर बाइबिलके विरुद्ध न होनेसे मेरा और भला ही है।

केन्टाकी प्रदेशके निकटस्थ धर्मशालामें बैठकर जिस गड़ेरियेके साथ विलसनकी बात-चीत हुई थी यह दीर्घाकार पुरुष वही गड़ेरिया है। यह आदमी भेड़ें बेचकर अपनी जीविका प्राप्त करता है, इसलिए पादरीसाहबकी भाँति इसकी जन्मसे ही विशेष प्रवृत्ति बाइबिलमें नहीं है। बाइबिल निकालकर पादरीसाहबके तर्क आरम्भ करनेपर इस व्यक्तिने हार मान ली और जहाजके एक अन्य युवा पुरुषके पास जाकर पूछा—महाशय! क्या बाइबिलमें दास रखनेका विधान है? पादरीसाहबने बाइबिल खोलकर कहा कि काबुल देशके लोग ईश्वरके कोपमें पड़ गये हैं। इसलिए वे दासोंके दास होंगे। युवकने कुछ हँसकर कहा—पादरीसाहबने काबुल नहीं केन्यान कहा है। तत्पश्चात् अत्यन्त घृणा प्रकट करता हुआ कहने लगा—उन सब पादरियोंके उपदेशोंकी बात छोड़ दो। देशके समृद्धशाली वणिकों एवं अन्यान्य धनी लोगोंको जिससे सुविधा हो वही पादरियोंकी एकमात्र बाइबिल है। धनीलोगोंके स्वार्थ-साधनोपयोगी मतामत ही इन सब पादरियोंके लिए, एकमात्र—ईश्वर वाक्य है। ये क्या बाइबिलके अनुसार सत्य सनातनके प्रचार करनेका साहस कभी करते हैं। प्रभु ईसाके समीप काले-गोरेमें कोई अन्तर नहीं। उन्होंनेतो स्पष्ट शब्दोंमें कहा था कि इस संसारमें रहने वाले सभी मनुष्य एक समान अधिकार रखते हैं। एक जातिके लोग दूसरी जातिके लोगोंसे सताये जायँ, ऐसा कोई भी मत बाइबिलमें नहीं है। वर्तमान समयमें एक मात्र स्वार्थ-परता ही देश-प्रचलित बाइबिल है। आज दिन नीलाम-घर, दासोंकी बिक्रीके स्थान, मद्यालय,

जुआखाना विचारालय तथा व्यवस्थापक समाज, डाकुओंके सम्मेलनके स्थान हो रहे हैं। भाई! परमेश्वरकी दृष्टिमें क्या काले और क्या गोरे दोनोंमें कोई भेद है। किन्तु काले वस्त्र-धारी धर्म-व्यवसायी पादरीसाहबने समझा दिया कि परमेश्वरने कालोंको गोरोंके दास होनेके लिए उत्पन्न किया है और व्यवस्थापक समाजके सभ्योंने भी वैसे ही मतोंका अनुकरणकर नये-नये कानूनोंका प्रचार करना आरम्भ किया। काले लोग गोरोंके दास होनेके लिए उत्पन्न किये गये हैं। इस व्यक्तिकी बात अभी समाप्त भी न हो पाई थी कि जहाज एक नगरके निकट आ पहुँचा। यात्रियोंमेंसे कोई-कोई किनारेपर उतरनेकी तैयारी करने लगे। इसी समय नदीके तीरसे एक काली स्त्री बड़े वेगसे दौड़ती हुई आई और जहाजके गोदाममें घुस गयी, एवं लोहेकी सिकड़ियोंसे बँधे हुए एक जान नामक क्रीतदासका गला पकड़कर बड़े वेगसे रोने लगी। पाठक गण सहज ही समझ सकते हैं कि यह काली स्त्री जानकी पत्नी है। इसकी बात पूर्वमें ही जानने टामसे कही थी। स्वामीके बेचे जानेकी बात सुनकर उसे देखनेको तीन कोससे दौड़ती हुई आकर इस नगरमें उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। इसकी आक्षेपोक्ति तथा विलाप, परितापका विस्तृत वर्णन करके उपन्यासका कलेवर न बढ़ाऊँगा। इस प्रकारका हृदयको विदीर्णकर डालनेवाला दृश्य इन क्रीत-दास-दासियोंके जीवन-क्षेत्रमें नित्य प्रति देखनेमें आता है। जहाज खुलनेकी तैयारी हो जानेपर युवती, स्वामीके जन्म भरसे लिए विदा होनेके समय रोते-रोते कहने लगी—जान! तुम्हें इस जीवनमें फिर न देख सकूँगी यह दुःख भी ईश्वरकी ओर देखकर सहन कर सकती हूँ; किन्तु अपने भविष्यके विषयमें सोचनेसे हृदय

काँप उठता है। तुम्हारे दूसरे स्थानमें चले जानेसे, दासी-की संतान बेचकर अधिक धन पैदा करनेके लिए मालिक, मुझे अवश्य दूसरे पुरुषको ग्रहण करनेको बाध्य करेगा। किन्तु मैं तुमसे निश्चय-पूर्वक कहती हूँ कि आत्म-हत्या करके मैं सम्पूर्ण दु खोंसे छूट जाऊँगी। दासताकी बेड़ियोंसे अपनेको मुक्त करूँगी, तो भी मालिककी मारके भयसे दूसरा पति ग्रहणकर उसे संतान बेचनेका सुयोग कदापि न दूँगी!

यह कहकर जानकी स्त्रीके चले जानेपर जहाज क्रमशः दक्षिणकी ओर चला। थोड़ी ही देरमें वह एक दूसरे शहर-के निकट आ पहुँचा। हेली इस शहरमें उतरकर कुछ समय-के पश्चात् और एक काली स्त्रीको साथ लेकर फिर उसी जहाजपर चढ़ा। उस स्त्रीकी गोदमें एक वर्षसे कुछ छोटा एक लड़का था। वह स्त्री प्रसन्न मुख हो बालकको गोदमें लेकर जहाजपर चढ़ी, किन्तु जहाज छोड़ देनेपर हेली फिर उस स्त्रीके पास आया। उसके दो-एक बातें कहते ही उस स्त्रीका मुख म्लान हो गया। वह कहने लगी-मैं तुम्हारी इस बातपर विश्वास नहीं करती। हेलीने कहा-यदि विश्वास नहीं करती तो यह कागज लो, इस जहाजमें अनेक लोग लिखना-पढ़ना जानते हैं। जिससे तुम्हारी इच्छा हो उससे यह कागज पढ़ाकर सुन लो। स्त्रीने कहा-मेरे मालिकने मेरे साथ ऐसी प्रतारणाकी है, मैं ऐसा विश्वास कभी नहीं कर सकती। मालिकने मुझसे कह दिया है कि लूमिल नगरकी जिस धर्मशालाको उन्होंने मेरे स्वामीको किरायेपर दिया है, वहीं मुझे पाचिकाका काम करना पड़ेगा। मुझे सन्तानके साथ तुम्हारे हाथ बेच दिया है, यह तो उन्होंने कभी कहा नहीं। हेलीने कहा-तुम यह सुनकर कि दक्षिण देशके बनियेके हाथ बेच दी गयी हो, बड़ा चीत्कार करोगी,

इसीसे तुम्हारे मालिकने ऐसा कहा है। तुम यह कागज लेकर जहाजके किसी दूसरे आदमीको दिखाओ, अभी सच-झूठका पता लग जायगा। यह कहकर हेलीने एक दूसरे आदमीको वह कागज उस स्त्रीके सामने पढ़ देनेको कहा। उस आदमीने पढ़कर कहा कि जान फर्डिक नामक एक साहबने, जो अपनी क्रीतदासी लूसी और उसकी सन्तानको हेलीके हाथ बेच दिया है, उसीका यह फवाला है। यह सुनकर वह स्त्री उसी समय बड़े तीव्र स्वरसे चिल्ला उठी। उसके चीत्कारसे जहाजके और लोग भी आकर उस स्थानपर इकट्ठे हो गये। तब वह स्त्री कहने लगी—मेरा मालिक मेरे पतिके पास भेजता है यही समझकर मैं इसके साथ आयी हूँ, किन्तु अब जान पाया है कि यह झूठी बात है। परमेश्वरने भाग्यमें जो लिखा है, वही सत्य करनेके लिए तैयार हूँगी। इसके उपरान्त उस स्त्रीने फिर एक बात भी न की। हेलीने सोचा कि उसके साथकी सारी गड़बड़ी दूर हो गयी।

इस स्त्रीकी गोदका बालक देखनेमें अत्यन्त हृष्ट-पुष्ट है। जहाजके एक व्यक्तिने हेलीसे कहा कि यदि तुम इस स्त्रीको दक्षिण-देशमें कपासके खेतके अधिकारियोंके हाथ बेचना चाहते हो तो वे बालक-सहित इस स्त्रीको कभी न खरीदेंगे। कपासके खेतके कुलियोंके साथ बालकोंके रहनेसे कार्यमें बाधा पड़नेकी बड़ी सम्भावना रहती है। इसलिए बालकको तुम्हें अन्यत्र कहीं बेचना पड़ेगा। यदि सस्ते भावमें इस बालकको मुझे दो तो मैं खरीदनेको तैयार हूँ। हेलीने कहा—खरीददार पाते ही मैं बालकको बेच दूँगा। इसपर उस आदमीने पूछा कि इसका क्या मूल्य चाहते हो?

हेली—बालक भली भाँति हृष्ट-पुष्ट है, इसका दाम भरपूर होगा।

सज्जन—किन्तु इसके खरीददारको तो कई वर्षतक इसे पालना-पोषना होगा !

हेली—इन सब लड़कोंके पालनेमें कितना व्यय होता है ? ये तो कुत्ते-बिल्लीके बच्चोंकी भाँति थोड़ी अवस्थामें ही चल-फिर तथा खा-पी सकते हैं।

सज्जन—मेरे एक क्रीतदासीका एक वर्षका एक लड़का जलमें डूबकर मर गया, इस बालकको खरीदनेपर इसे पालना होगा। मुझे इस प्रकारका सुयोग मिल गया है, इसीलिये खरीदना चाहता हूँ। तुम यदि दस रुपयेमें दो तो मैं इस बालकको खरीद सकता हूँ।

हेली—दस रुपयेमें तो कभी न दूँगा। छ: मास तक इसे मैं अपने पास रखकर १००) रुपयेमें बेच सकता हूँ। ५०) रुपयेसे एक कौड़ी कम न लूँगा।

सज्जन—३०) रु० में दोगे ?

हेली—अच्छा भाई ! इसके बीचोबीचमें तय करो ! पचास भी नहीं, तीस भी नहीं। तुम मुझे केवल पैंतालीस रुपये दो !

सज्जन—अच्छा, पैंतालिस रुपया दूँगा।

हेली—तुम उतरोगे कहाँ ?

सज्जन—मैं लूमिल नगरमें उतरूँगा।

हेली—तो अच्छा ही हुआ। सायंकाल जहाज लूमिल नगरमें पहुँचेगा। उस समय बालक भी सो जायगा। तुम्हारे ले जानेके समय चिल्लायेगा नहीं।

सायंकाल आ गया। जहाजने आकर लूमिल नगरमें लंगर डाला। "लूमिल नगर" "लूमिल नगर" कहकर जहाजके भीतरसे चीत्कार होने लगा। यात्रियोंमेंसे जिन्हें यहाँ उतरना था वे सब अस्त-व्यस्त होकर अपना-अपना सामान ठीक

करने लगे। लूसीका स्वामी इसी नगरमें काम करता है। वह अपने बच्चेको जहाजके गोदाममें सुलाकर जहाजके किनारेपर आकर खड़ी हो गयी। नदीके किनारे सैकड़ों मनुष्य आवागमन कर रहे हैं उन लोगोंमें उसका स्वामी भी हो सकता है। इसी आशासे सतृष्ण नेत्रोंसे एकाग्र चित्त हो वह किनारेकी ओर देख रही है। मनमें सोचती थी कि जल लेनेके लिए उसका स्वामी भी नदीके किनारे आ सकता है। पूरे एक घण्टेतक वह जहाजके किनारे खड़ी रही, किन्तु अपने स्वामीको न देख पाया। दिशाएँ क्रमशः घने अन्धकारसे आच्छन्न हो गयीं। इस समय अब कुछ दिखाई न पड़ता था। इसलिए निराश होकर उसने पुनः गोदाममें प्रवेश किया। किन्तु वहाँ जाकर उसने अपने बच्चेको न देखा। तब वह पागलकी भाँति जहाजमें इधर-उधर खोजने लगी। हेली उसकी ऐसी अवस्था देखकर धीरे-धीरे उसके पास आया और प्रसन्न मुखसे कहने लगा-लूसी, तुम कुछ चिन्ता न करो। तुम्हारे बच्चेको मैंने एक दयालु परिवार-के हाथ बेच दिया है। वह परिवार उसे स्नेहके साथ पाले-पोसेगा। लड़केको साथ रखनेसे दक्षिण-देशमें जानेपर तुम्हें बड़ी असुविधा होती। उसका पालन करनेके लिए एक क्षण भी अवकाश न मिलता। अब कोई चिन्ता न रही। जिसमें तुम्हारी भलाई होगी, मैं वही काम करूँगा।

मस्तकपर वज्र गिरनेसे मनुष्य जिस प्रकार संज्ञाहीन हो जाता है, उसी प्रकार हेलीकी बातें सुनकर वह स्त्री संज्ञाहीन होकर खड़ी रही। उसके मुँहसे एक शब्द न निकला, शरीर शक्तिहीन हो गया, बैठी हुई है कि खड़ी है; निद्रावस्थामें स्वप्न देख रही है कि जाग्रतावस्थामें है, इसका भी उसे ज्ञान न रहा। इस प्रकारकी शोचनीय दशा देखकर पाषाण-हृदय भी

पिघल जाता है। किन्तु दास-दासियोंकी इस प्रकार शोक-विह्वल-अवस्था बराबर देखते-देखते हेलीका हृदय पाषाण-से भी अधिक कठोर हो गया है। उसे यह आशंका थी कि जाननेपर वह स्त्री चिल्ला उठेगी और उसकी चीत्कारसे जहाजके अन्यान्य लोग भी व्यक्त-विरक्त हो उठेंगे किन्तु उसकी वह आशंका दूर हो गयी। इस प्रकारकी शोकाकुल अवस्थामें उसका कण्ठ तथा हृदय सूख गया था। उसके कण्ठसे शब्द ही न निकलता था। नेत्रोंसे आँसू न निकलते थे। हृदयके शूलसे छिद जानेपर अथवा वक्षस्थलके कठोर पत्थरसे कुचल जानेपर मनुष्य जिस प्रकार इधर-उधर हिल-डुल नहीं सकता, इस स्त्रीकी ठीक वही अवस्था हो रही है। वह चिल्लाई नहीं। उसके नेत्रोंसे एक बूँद भी अश्रुजल न गिरा। चेतना हीन पुतली की भाँति उसके हाथ जैसे थे वैसे ही रह गये। पलकोंने गिरना छोड़ दिया। उन नेत्रोंसे वह कुछ देख रही हो, सो बात भी नहीं थी।

हेली उसे इस प्रकार निस्तब्ध अवस्थामें देखकर मन ही मन प्रसन्न होने लगा। सोचने लगा कि यह स्त्री चिल्लापों मचाकर कोई विशेष गड़बड़ न करेगी। तब वह उस स्त्रीको सम्बोधितकर कहने लगा—लूसी, मैं समझता हूँ कि तुम्हारे मनमें कुछ कष्ट हो रहा है। किन्तु तुम अत्यन्त बुद्धिमती हो। इस सामान्य विषयको लेकर व्यर्थ शोक करनेसे क्या लाभ? तुम स्वयं समझ सकती हो कि ऐसा न करनेसे काम नहीं चलता। दक्षिण-देशमें कपासके खेतोंमें काम करनेके समय कोई अपनी सन्तान अपने साथ नहीं रख सकता। लूसीको कण्ठावरोध हो गया है। उसने अस्फुट स्वरमें कहा—महाशय मैं और कुछ नहीं सुनना

चाहती। हेली इसपर चुप न रह फिर कहने लगा—लूसी, तुम बड़ी बुद्धिमती हो। मैंने वही काम किया है जिससे तुम्हारा भला हो। तुमको दक्षिण-देशमें ले जाकर, शीघ्र ही एक पति खोज दूँगा। यह सुनते ही लूसी शेर-विद्धा बाघिनकी भाँति कर्कश स्वरसें बोल उठी—आप इस समय मेरे सामने एक बात भी मुहँसे न निकालें। मैं आपकी कोई बात सुनना नहीं चाहती। हेलीने इससे समझ लिया कि उसके ये प्रबोध-वाक्य विशेष कार्यकारी न होंगे। इसलिए वह अपने केबिनमें चला गया गया एवं लूसी सिरसे पैरतक वस्त्र ओढ़कर वहीं लेट रही।

टाम उस स्त्रीकी ऐसी दुर्गति और दुरवस्था देखकर, पर-दुःखमें अपना दुःख भूल गया। शोकाकुल हृदयसे उसके लिए बार-बार दीर्घ निश्वास छोड़ने लगा। टामका हृदय स्वभावतः इस प्रकार पिघल जा सकता है। टाम खीष्टीय धर्मोपदेशकों तथा पादरियोंकी भाँति स्वार्थ परताकी बाइ-बिलसे तो धर्म-शिक्षा ग्रहण न की थी। टाम नीति- विशा-रद पण्डितोंकी राजनीतिके गूढ़तत्त्वसे पूर्णतया अनभिज्ञ था। वह अमेरिका-वासी अंग्रेज-कुल-शार्दूलोंके नैतिक व्यवहारका मर्म जाननेमें सर्वथा असमर्थ था। शोक-विह्वल जननीके दुखसे उसका हृदय विदीर्ण होने लगा। वह सोचने लगाकि उसे किस प्रकारसे सांत्वना दें। बहुत सोच-विचा-रके उपरांत वह उस स्त्रीके सिरहाने बैठकर कहने लगा—माँ, तुम ईश्वरको आत्म-समर्पणकर हृदयकी पीड़ा कम कर-नेकी चेष्टा करो। इस संसारकी दुःख-यंत्रणा बहुत दिनके पश्चात् समाप्त होगी। किन्तु वह स्त्री शोकसे अधीर हो गयी थी। उसका हृदय स्तम्भित हो गया था। टामके सान्त्वना-वाक्य उसके कर्ण-कुहरमें प्रविष्ट न हुए। टामकी

सहानुभूति उसके हृदयको स्पर्श तक न कर सकी।

देखते-देखते घोर तमसावृत अर्धरात्रि आ गयी। सम्पूर्ण संसारने शान्त-भाव धारण किया। संसारके सम्पूर्ण जीव-जन्तुओंने निद्रादेवीके वशीभूत हो अपने-अपने हृदयके सुख-दुखोंको उस अनन्त तिमिर-सागरमें डुबा दिया। किन्तु संतान-शोक-विह्वला जननीकी हृदयाग्नि न बुझी। पुत्रशोकसे जली हुई लूसीकी आंखोंमें नींद कहां! पर-दुःख-दुःखित टामके हृदयमें शान्ति नहीं है। जहाजके अन्यान्य सभी यात्री निद्रादेवीकी गोदका सुखानुभव कर रहे हैं; किन्तु लूसी बार-बार कह उठती है, "हे परमेश्वर! इस यातनासे मेरा उद्धार करो· अपने अभय-गोदमें स्थान दो!" लूसीके ये शब्द टामके अतिरिक्त और कोई न सुन सका। क्योंकि जहाजमें उस समय और कोई जागृत न था। इसके कुछ देरके पश्चात् जहाजसे जलमें किसी वस्तुके गिरनेका सा शब्द टामको सुन पड़ा।

रात्रि बीत गयी। क्रीतदास लोगोंकी कैसी अवस्था रही, यह देखनेके लिए हेली गोदाममें आया। किन्तु लूसी-को न देख पाया। हेलीने एक हजार रुपया देकर लूसीको खरीदा था। इसलिए विक्षिप्तकी भांति जहाजके इस ओरसे उस ओर तक-चारो ओर वह लूसीको खोजने लगा। उसे कहीं न पाकर वह टामके पास आ बार-बार कहने लगा—टाम तुम निश्चय लूसीका हाल जानते हो। टामने कहा—महाशय! मैं और कुछ तो जानता नहीं· हाँ थोड़ी रात्रि रहते ही नदीमें कूद पड़नेपर जैसा शब्द होता है वैसा ही शब्द मैंने सुना था। यह बात सुनकर हेली समझ गया कि लूसीने, पानीमें कूदकर, आत्म-हत्या कर ली। किन्तु उसके लिए हेलीके हृदयमें रत्तीभर भी शोकका संचार न हुआ

दास-दासियोंको इस प्रकार आत्म-हत्या करते वह अनेक बार देख चुका था। इसलिए इस समय उसके हृदयमें किसी परिवर्त्तनने स्थान न कर पाया। वह मन ही मन यह सोचने लगा कि इस यात्राके व्यापारमें हानिके सिवाय एक कौड़ीका भी लाभ न होगा। शेल्बीके साथ लेन-देन-कर पांचसौ रुपये दण्डमें दिये और इस समय फिर एक हजार रुपयेकी चपत बैठी।

पाठक! आप सोचते होंगे कि हेली बड़ा निर्दयी है। किन्तु हेली अशिक्षित है एवं आजतक सामाजिक जगतकी उसी अतलस्पर्शी, अन्धकारमय गुफामें निवास करता है। भद्र समाजमें उसको स्थान नहीं मिलता। वह दास-व्यवसायी है। किन्तु उसे दास व्यवसायी बनाया किसने? क्या वह इस दासत्व प्रथाका निर्माता है। जो सुशिक्षित हैं, जो लोग सज्जनोंके नामसे पुकारे जाते हैं। जिनका सम्मान है, जिनकी प्रतिष्ठा है, जिन्होंने देशका शासन-भार अपने ऊपर ले लिया है, जिन्होंने देश-प्रचलित-व्यवस्था बनाया है, तथा जो विचारासनपर बैठकर उन्हीं व्यवस्थाओं-का व्यवहार करते हैं, उन्होंने हेलीको दास-व्यवसायी बनाया है। उन्होंने ही आज लूसीके बालकको उसकी गोदसे छीनकर उस निरपराधिनी रमणीका प्राणान्त कराया है। देशीय शासकगण! विचारकगण! तुम लोग दस्युओंका दमन करते हो, चोरोंको कारावास कराते हो। नर-हत्या करनेवालेको प्राणदण्ड देते हो, किन्तु तुम जो स्वयं प्रति दिन नर-हत्या करते हो, सब लोगोंकी सम्पत्ति अपहरण करते हो, उसका क्या कभी भूलकर भी तुमने स्मरण किया है? परमन्यायी पिता परमेश्वरके न्यायदण्डसे कोई भी नहीं बच सकता। लूसी पुत्रशोकसे प्राण-त्यागकर उस अमृतमय-

के अमृत-धाममें चली गयी। वह इस समय दीनबन्धु परमेश्वरकी गोदमें बैठी हुई है। किन्तु ज्ञान विज्ञानके अभिमानी शासन कर्ता, विचारक लोग! तुम संसारी विषय सुखमेंमग्न होकर एकबार भी अन्त समयकी चिन्ता नहीं करते। यह न सोचा कि लूसीकी हत्याके लिए तुम लोगोंमेंसे प्रत्येकको उस राजाधिराजके विचारालयमें एकबार अवश्य उपस्थित होना पड़ेगा!

चौदहवाँ परिच्छेद

दासत्व-प्रथा विरोधी सम्प्रदाय

सन् १८६५ ई० में अमेरिका दासत्व-प्रथासे हीन हो गया। जो लोग इस प्रथाके विरोधी थे, उन लोगोंको, इससे पहिले, समय-समयपर नाना प्रकारकी सामाजिक यन्त्रणायें तथा लोगोंकी भर्त्सनायें सहन करनी पड़ती थीं। जो लोग इस घृणित प्रथाका समर्थन, धर्ममन्दिर तथा प्रकाश्य रूपसे अन्य सभास्थलोंमें करते थे, वे ही देश-हितैषियोंमें गिने जाते थे। वर्तमान समयमें दासत्व प्रथाके अत्याचार सुनकर सहृदय लोगोंके रोंगटे खड़े हो जाते हैं किन्तु अमेरिकाके जोया, येष्टर आदि सुशिक्षित, ज्ञानी लोग भी प्राण-पनसे इस प्रथाका समर्थन करते थे। वास्तवमें स्वार्थपरताको विसर्जन किये बिना मनुष्य सच्ची देश-हितैषिता ग्रहण करनेमें सर्वथा असमर्थ है। स्वार्थपरता सुशिक्षित लोगोंको भी अज्ञानान्धकारसे

आच्छादित कर देती है। सच्चे देश-हितैषी लोग जीवितावस्थामें कभी भी देशा-हितैषीके नामसे प्रसिद्ध नहीं हो सकते। उन लोगोंको जीवन भर समाजके अभ्यस्त पापों तथा कुसंस्कारोंके साथ लड़ते रहना पड़ता है। इसलिए वे समाजके प्रिय नहीं हो सकते। किन्तु सैकड़ों ख्यातिलालुप स्वार्थपरायण मनुष्य अतिनीच उद्देश्योंसे जाति अथवा सम्प्रदायके प्रचलित पापों तथा कुसंस्कारोंका पक्ष समर्थन कर देश-हितैषी कहलाकर समाजमें सम्मान प्राप्त करते हैं।

महात्मा ईसा मानवोंके सच्चे हितैषी थे, किन्तु उन्हें क्रूसपर प्राण विसर्जन करना पड़ा। लूथर सच्चे धर्म संस्कारक थे। इसलिए उन्हें समाजकी नाना प्रकारकी यंत्रणायें सहनी पड़ीं। इस प्रकार सच्चे देश-हितैषी और समाज संस्कारक लोगोंको उनके पार्थिव जीवनमें कष्ट और दरिद्रता ही एकमात्र पुरस्कार मिलता है। और जो लोग अन्यान्य व्यवसायोंकी भाँति देश-हितैषिताको भी एक व्यापारके रूपमें ग्रहण करते हैं वे ही इस व्यवसायके द्वारा भी धन, मान, प्रभुत्व आदि सब प्रकारके इष्ट लाभ करनेमें सफल होते हैं।

पर-दुःख-कातर, पार्थिव-पद-प्रभुत्व हीन, दरिद्रावस्थामें समाजमें रहकर जिस परिवारने भग्गू दासी इलाइजाको आश्रय दिया है, उसको क्या कोई देश-हितैषी, किंवा परोपकारी मानेगा? भला किस प्रकार संसारके लोग उनको परोपकारी मानेंगे? वे लोग देश-हितैषिताका वस्त्र ओढ़ अपने अपने मस्तकोंपर देश-हितैषिताका पट्टा लगाकर तो दौड़ते नहीं। दूसरोंका दुःख देखकर उनका हृदय पिघल जाता है। किन्तु परमेश्वरके अतिरिक्त और कोई उनके हृदयका यह भाव नहीं देख पाता। वे दुःख-दारिद्र्यसे सताये हुए नर-

नारियोंके नेत्रोंका जल अपने हाथसे पोंछ देते है। आर्त जनोंके अश्रु-जलके साथ उन लोगोंके आँसू प्रतिदिन मिलते रहते हैं। परोपकार-परोपकार कहकर वे कभी कहीं चिल्लाते नहीं फिरते। इसलिए संसारके लोग उन्हें पहिचानते ही नहीं। मनुष्योंमें उनकी गणना ही नहीं करते।

इलाइजा ऐसी पर-दुख-कातरा राचेल नाम्नी वृद्धा कोयेकार स्त्रीकी बगलमें बैठकर बात-चीत कर रही थी। वृद्धा राचेल, साइमन हालिडे नामक एक कोयेकार संप्रदायके धार्मिक ईसाईकी पत्नी है। अत्याचारके सताये हुए, निराश्रय, अनाथोंको आश्रय देनेके लिए इस कोयेकार सम्प्रदायके कोई-कोई लोग तो प्राणतक विसर्जन करनेके लिए प्रस्तुत थे। वृद्धा राचेल कह रही हैं—बेटी, इलाइजा क्या तुमने केनाडा जाना ही निश्चय किया है? यहां जितने दिनोंतक तुम्हारी इच्छा हो रह सकती हो।

इलाइजा—हाँ! मैं केनाडा ही जाऊंगी। यहाँ अधिक दिनतक रहनेमें भय है कि कुछ दिन पीछे कहीं मेरे बच्चेको कोई मेरी गोदसे छीन न ले। सोनेपर मैं स्वप्नमें देखती हूं कि कोई मेरे बच्चेको चुराये लिये जाता है।

राचेल—बेटी! तुम्हें कोई डर नहीं है। इस स्थानसे कोई भी तुम्हारे बच्चेको निकालकर नहीं ले जा सकता। हमारे चार-पाँच परिवारके लोग इकट्ठे होकर यहाँ रहते हैं। अत्याचारसे सताये हुए लोगोंको आश्रय देना हम लोगोंके जीवनका एकमात्र उद्देश्य है। यहांपर जो कई पुरुष हैं वे प्राण देकर भी तुम्हारे बच्चेको बचायेंगे।

वृद्धा राचेल इलाइजाके साथ इसी प्रकार बात-चीत कर रही थीं। इसी समय 'रुथ' नाम्नी एक युवती वहां आयी। इलाइजाके पुत्रको गोदमें लेकर वह उसके हाथमें नाना प्रकार-

की खानेकी वस्तुएँ देने लगी एवं सहोदरकी भाँति इलाइजा-के साथ बातचीत करने लगी।

रूथ-प्रिय बहिन इलाइजा! आपको सन्तानके साथ निर्विघ्न यहाँतक पहुँची हुई देखकर मुझे बड़ा आनन्द हुआ।

इलइजा इस समय भी दुखके भारसे दबी हुई दिन बिता रही थी। इसलिए वह वाक्यके द्वारा रूथके प्रति कृतज्ञता प्रकट करनेमें असमर्थ रही। किन्तु इन सब कोयेकार रमणियोंके प्रति कृतज्ञता उसके हृदयमें बड़े वेगसे दौड़ने लगी।

इलाइजाको चुप देखकर वृद्धा राचेलने रूथको सम्बोधित कर कहा—बेटी, अपने बच्चेको साथ नहीं ले आयी?

रूथ—ले आयी थी। पर ज्योंही घरमें घुसने लगी कि तुम्हारी मेरी उसे गोदमें ले बच्चोंके घरमें ले गयी।

राचेल—मेरी, छोटे बच्चोंको बहुत प्यार करती है।

इसी समय घरका द्वार खुला एवं रूथके छोटे बच्चेको गोदमें लिये हुए दीर्घ नयना, प्रसन्न-वदना मेरीने घरमें प्रवेश किया।

तब वृद्धा राचेलने, मेरीकी गोदसे बच्चेको अपनी गोदमें ले लिया। वे कहने लगीं—रूथ बड़ा सुन्दर लड़का हुआ है।

रूथने लज्जाके साथ कहा—माँ! उसे सब लोग ऐसा ही कहते हैं।

राचेलने—रूथ! आबिगेइल पीटर्स कैसे हैं।

रूथ—वे अब बहुत कुछ अच्छे हो गये हैं। प्रातः मैं उनके घर जाकर उनका घर साफ कर आयी हूँ। एवं मिसेज लियाहिलने अपराह्नसे वहाँ जाकर उनके पथ्य तथा लड़कोंके भोजनका प्रबंध कर दिया है। सन्ध्याको मुझे फिर एकबार वहाँ जाना होगा।

राचेल—मैं भी सोचती हूँ कि कल उनके घर जाकर उसे झाड़-बुहारकर साफ कर दूँ। मेरीने उनके छोटे बच्चेके लिए एक जोड़ी मोजा तैयार कर रखा है।

रूथ—माँ! मेरे ह्वानास्टान उड भी बहुत रोगग्रस्त होगये हैं। जान कल सारी रात्रि वहीं थे। मुझे एकबार उनके घर भी जाना होगा।

राचेल—तुम्हारे जानको यदि आज भी रात्रि भर जागना हो तो वे हमारे घरसे भोजन करके जा सकते हैं।

रूथ—जानको आज तुम्हारे ही यहां भोजन करनेको कह दूँगी।

रूथ और वृद्धा राचेलसे इसी प्रकारकी बातें हो रही थीं कि इसी समय वृद्धा राचेलके स्वामी साइमन हेलिड वहाँ आये। साइमन हेलिड लम्बे आकारके तथा देखनेमें वे बलवान जान पड़ते थे। किन्तु उनके मुखपर दया-माया स्पष्ट रूपसे दृष्टिगोचर हो रही थी। साइमनने रूथको बुला कर कहा—रूथ तुम कैसी हो? जान तो अच्छे हैं न?

रूथ—हम सब अच्छी तरह हैं।

राचेलने अपने स्वामीको देखते ही पूछा—कोई नया समाचार पाया है?

साइमन—पीटर स्टिविन्सने कहा है कि वे और तीन भग्गू दासोंको साथ लेकर आज ही यहाँ पहुँचेंगे।

राचेलने, स्वामीके मुखसे यह शुभ सम्वाद सुनकर इलाइज़ाकी ओर देखकर, हँसते हुए पूछा—यह बात सच है न?

साइमनने अपनी स्त्रीके अन्तिम प्रश्नका कुछ उत्तर न देकर उनसे पूछा—इलाइज़ाके स्वामीका क्या नाम है,जार्ज हेरिस?

उनका प्रश्न सुनकर इलाइज़ाने कहा—हाँ।

इलाइजाने मनमें सोचा, जान पड़ता भाग गये हैं इसलिये उनके पकड़नेके निकला है। राचेलने इलाइजाकी यह अव स्वामीको दूसरे स्थानमें ले जाकर पूछा—यह

साइमन—आज रातको ही उसका यहाँ आ जायगा। मेरे आदमियोंकी सहाय स्वामी, एक और दास तथा उसकी माता भी होकर यहाँ आश्रय लेने आ रहा है। मैंने सूचना लोगोंको निर्विघ्न ले आनेके लिए गाड़ीके साथ भेज दिया है।

मत हो । रू केन्टा-
तुत रहता हूँ। ठता-
ी मेरे जीवनको
तुम्हारे लज्जित
उपकारके लिए
रके प्रसादसे
साधन कर
को मेरे दो
वाले और
गारहे है।
य यह

राचेलने पूछा कि यह सवाद इलाइलाको सुना नहीं? यह बात सुनकर उसे अपार आनन्द हुआ होगा सही,

साइमन इलाइजाको यह बात सुनानेकी आज्ञा देकर अपने कमरेमें चले गये। राचेलने उसी क्षण इलाइजाको पुकार कर कहा कहा—बेटी! एक बात सुनो।

इलाइजा उनकी बात सुनकर उसने सोचा, न जाने कौनसी विपत्ति आपड़ी। किन्तु राचेल उसको आश्वासन देकर बोली—बेटी! यह शुभ संवाद है। तुम्हें कुछ डर । तुम्हारे स्वामी भागनेमें कृतकार्य हुए हैं। आज रातको यहाँ आ जायँगे।

इलाइजाके मनमें उस समय किन भावोंका उदय हुआ, वह बिना इलाइजाकी अवस्थाको प्राप्त हुए कोई नहीं समझ सकता। एकाएक यह शुभ संवाद सुनकर इलाइजाके हृदयमें आनन्दका वेग रुक न सका। देखते ही देखते वह मूर्छित हो गयी। रूथ और राचेल दोनों उसकी शैयाके पास बैठकर उसकी शुश्रूषा करने लगीं।

राचेल—मैं भी सोचती हूँ

झाड़-बुहारकर साफ कर । इलाइजाने चैतन्य हो आँखें खोलकर
लिए एक जोड़ी मोजा तैया स्वामी उसके विस्तरकी बगलमें बैठा है
रूथ—माँ ! मेरे हाना इलाइजाका मस्तक रखे हुए है । देखते-
हैं। जान कल सारी य सूर्योदय हुआ । राचेल सबके भोजनका
भी जाना होगा। थी। मध्यानमें सबलोग एक साथ भोजन
राचेल—तुम्हारे जने आजतक कभी सभ्य जनोंके साथ भोजन
हो तो वे हमारे घर था। घरमें पले हुए कुत्ते और बिलारकी भाँति
रूथ—जानको करना पड़ता था। दास-व्यवसायीके पास जार्ज,
कह दूंगी। का एक विशेष प्रकारका पशु था। किन्तु पर-दुःख-
रूथ और साइमन हेलिडके निकट वह प्रकृत मनुष्य है । हेलिड
कि इसी के अकृत्रिम स्नेह और सहृदयताने जार्जके हृदयमें आज
वहाँ आये। श्वरके अस्तित्वका पूरा-दृढ़ विश्वास उत्पन्न करा दिया
वे बलवान रके अविचार और अन्यायके व्यवहारको देखकर जार्ज
स्पष्ट रूप श्वरकी करुणाके प्रति विश्वास धारण नहीं कर सकता था,
कर कह किन्तु आज ईश्वरके प्रति हेलिड साहबका दृढ़ विश्वास एवं
उनका सदाचरण देखकर उसकी नास्तिकता दूर हो गयी।
इतने दिनपर आज जार्ज ईश्वरको आत्म-समर्पण करनेमें
समर्थ हुआ।

साइमन हेलिडके द्वादशवर्षीय कनिष्ठ बालकने पितासे
पूछा—बाबा ! जब पुलिस तुमको पकड़ लेगी तब हम क्या
करेंगे ? साइमनने कहा—यदि पकड़ जानेपर मैं दण्डित
हुआ तो तुम तथा तुम्हारी माता एक साथ कृषिकार्य करके
जीविका उपार्जन न कर सकोगे क्या ? ईश्वर सबका रक्षक
है। वही तुम लोगोंकी भी रक्षा करेगा।

जार्जने उनकी बातें सुनकर अत्यन्त व्यग्र होकर पूछा—
महाशय क्या ! मेरे उद्धार करनेके कारण आपपर किसी विपत्तिके
आनेकी आशंका है ?

साइमन-उसके लिए तुम चिन्तित मत हो । रू केन्टा-लिए प्राण विसर्जन करनेको मैं सदैव प्रस्तुत रहता हूँ । छता-वान्‌के अत्याचारसे दुर्बलोंकी रक्षा करना ही मेरे जीवनको एक मात्र उद्देश्य है । मेरे विपत्तिमें पड़नेसे तुम्हारे लज्जित होनेका कोई कारण नहीं । मैं केवल तुम्हारे उपकारके लिए नों कुछ करता नहीं । जिस मंगलमय परमेश्वरके प्रसादसे यह दैनिक अन्न प्राप्त होता है, उसीका प्रिय कार्य साधन कर रहा हूँ । तुम इसपर विश्वास करो । आज रातको मेरे दो आदमी तुम्हें पासके अड्डेमें रख आवेंगे । पकड़नेवाले और पुलिसवाले तुम्हें पकड़नेके लिए क्रमशः निकट आते जारहे है । जार्जने शंकित होकर कहा—महाशय, तब तो इसी समय यह स्थान छोड़ देना उचित है ।

साइमन हेलिड उसे आस्वासन देकर बोले-कुछ डर नही, मंगलमय परमेश्वरकी कृपासे मेरे आदमी तुम्हें निरापद स्थानमें रख आवेंगे । दिनमें इस स्थानपर कोई आशंका नही है ।

पन्द्रहवाँ परिच्छेद

इवाञ्जेलिन

दास-व्यवसायी हेली साहब जल-मार्गसे जिस जहाजपर चढ़कर दक्षिण-प्रदेश जा रहे थे क्रमशः वह जहाज मिसी-सिपी नदीमें आ पहुँचा।

आख्यायिकाको वही मिसीसिपी आज अपने प्रकृत गौरव और समृद्धिसे कल्पनाको भी पराजित कर चुकी है । क्या

राचेल—मैं और कोई नदी ऐसे किसी देशके इतने धन-जनको झाड़-चुहार पर चढ़ाकर वह रही है? अस्ताचलगामी सूर्यकी लिए एक किरणें नदीके वक्षस्थलपर क्रीडा कर रही हैं। चंचल वेत-राजि, उन्नत साइप्रेस तरुगण तथा शैवालमाला उसके उप-कण्ठमें लहरा रही है। उन स्वर्णमयी आभावाली किरणोंके गिरनेसे जल उज्वल हो गया है। इसी समय बहुत भारसे लदा हुआ जहाज बड़े वेगसे आगे बढ़ा जा रहा है।

भिन्न-भिन्न कपासके खेतोंसे ढेरकी ढेर रुई इस जहाज़पर बोझी गयी है। इसलिए दूरसे वह झिलमिलाते हुए एक प्रकाण्ड स्तूपकी नाईं दिखाई पड़ता था। जहाजके डेकपर अनेक मनुष्य एकत्रित हैं। सर्वोच्च डेकके एक कोनेमें एक रुईके गट्टेपर टाम बैठा हुआ है।

कुछ शेल्बी साहबकी बातोंसे, कुछ टामका शान्त स्वभाव देखकर उसके ऊपर हेलीको विश्वास हो गया है। पहले हेली उसे सदा अपनी आंखोंके सामने रखता था, सिकड़ी खोलकर उसे घूमने न देता था। किन्तु हेलीने जब देखा कि टाम अपनी वर्त्तमान अवस्थासे कोई असन्तोष प्रकट नहीं करता तब उसने उसे बन्धनसे निर्मुक्तकर दिया। अब टाम-को इच्छानुसार जाने-आनेका अधिकार प्राप्त हो गया है। अन्यान्य दासोंको यह सौभाग्य रत्ती भर भी नहीं मिलता। टामको जब कुछ काम न रहता तब वह सबसे ऊँचे डेकपर जाकर रुईके एक गट्ठेपर बैठकर एकाग्र मनसे बाइबिलका पाठ करता था। इस समय भी वह बाइबिल पढ़ रहा था।

नदीके दोनों किनारोंपर असंख्य खेत दिखलाई पड़ते थे। इन सब खेतोंमें सैकड़ों झोपड़ियोंके चुने हुए दासोंके घर इनके थोड़ी ही दूरपर खेतके मालिकका प्रमोद-वाटिकाओंसे घिरा हुआ एक उच्च प्रासाद है। यह हृदयस्पर्शी दृश्य देखते

देखते टामके मनमें भूतकालकी स्मृति उमड़ पड़ी। केन्टाकीके पूर्व स्वामीके घरसे लगे खेत तथा उसीके समीप लता-वृक्षोंसे घिरी हुई वह कुटी स्मरण हो आयी। साथके रहनेवाले साथियोंके चिरपरिचित मुखमण्डल फिर उसके नेत्रोंके सामने नाचने लगे। यह उसकी स्त्री दिनके समाप्त होनेपर अस्तव्यस्त होकर उसके खानेके लिए भोजन बना रही है। उसके लड़के खेलते-खेलते एकबार हँस पड़ते हैं, सबसे छोटा लड़का उसकी गोदमें बैठकर नानाप्रकारकी सुमधुर अस्फुट बातें करता है, उनके स्वर उसके कानमें आकर अमृत-वर्षा कर जाते थे—सहसा चौंककर उसने देखा, खेत-समूह तथा साइप्रेसके वृक्ष-वृन्द क्रमशः बड़े वेगसे पीछेकी ओर चले जाते हैं जहाजके यंत्रोंकी ध्वनि उसके कानमें प्रवेश करने लगी। तब उसे अपनी वर्त्तमान अवस्थाका ध्यान हुआ। अब उसने समझा कि पहिलेका वह सुख अब जन्म भरके लिए लुप्त हो गया। हाथकी बाइबिलपर आँसुओंकी बूँदें गिरने लगी। आँसुओंसे भरे हुए नेत्रोंके साथ टाम अँगुली चलाकर उसी बाइबिलमें सान्त्वनाके वाक्य खोजने लगा। टामने अधिक अवस्थामें पढ़ना सीखा है। इसलिए शीघ्र पढ़नेका उसे अभ्यास नहीं है। एक-एक शब्दका अलग अलग उच्चारण कर—सुनिए—वह पढ़ रहा है—

"तुम—अपने—हृदयमें—अशान्ति—मत—आने—दो। पिता—के घर—में—अनेक—घर—हैं। मैं—वहाँ—तुम्हारे—लिए—शान्ति—निकेतन—तैयार करने—जाता—हूँ—"

इस संसारमें तुम्हारा जीवन चाहे किसी भी अवस्थामें क्यों न बीते, परम पिता परमेश्वरकी अमृत-गोद तुम्हारे लिए सदा फैली हुई है। ये शान्ति तथा आशा-प्रद वाक्य बाइबिलमें पढ़कर टाम धैर्य-धारण करनेमें समर्थ हुआ। टामका

हृदय दृढ़ विश्वाससे परिपूर्ण था। कुटिल दर्शनशास्त्रकी विपाक्त उक्तियां जटिल विज्ञानका तर्क-वितर्क उसके स्वभाव सिद्ध विश्वासकी जड़में कुठारा घात नहीं कर सकता। बाइ-बिलकी बात झूठी हो सकती है, यह भाव स्वप्नमें भी उसके हृदयमें स्थान नहीं पा सकता। इसीसे सैकड़ों निराशाओंके मध्यमें भी उसे आशा है। सैकड़ों यंत्रणाओंके मध्यमें भी उसे सुख है। इस समय भी ग्रन्थ उसके सामने खुला रहता है। उसके प्रत्येक पंक्तिमें पूर्वकालकी सुख-स्मृति गुँथी रहती है। भविष्य-कालके जीवनकी आशा, प्रत्याशा भी उसीसे बँधी रहती है।

इन जहाजके यात्रियोंमें नवअर्लिन्स निवासी समृद्धि शाली एक सज्जन भी थे। वे इस समय वारमन्ट प्रदेशसे होकर अपने घर लौट रहे थे। उनके साथ पांच छ वर्षकी एक बालिका तथा एक आत्मीय रमणी थी। टाम इस बालिकाको बीच-बीचमें इधर-उधर आती-जाती देखता था। बालिका एक स्थानपर कुछ देरतक न ठहरती थी, इसलिये बहुत देरतक कोई उसे देख न पाता था किन्तु उसके मुखको जिसने एकवार भी देख लिया है वह कभी भूल नहीं सकता।

बालिकाके शरीरमें सुकुमार सौंदर्य पूर्ण मात्रामें सुशोभित हो रहा है। किन्तु सौंदर्यको छोड़कर अथवा उससे भी अधिक एक अनुपम माधुर्य इस बालिकाकी मूर्तिको आवेष्टित किये हुए है। जिससे सहसा उसे देखनेसे यह ज्ञात नहीं होता कि वह मनुष्य बालिका है। वह काव्योंमें पढ़ी हुई तथा कल्पना जगतमें देखी हुई एक देवबाला ज्ञात पड़ती है। उसके मुखपर एक अपूर्व स्वप्नमय एकाग्रताका भाव था। जिसे देखकर सौंदर्योपासक भावुकका हृदय मुग्ध हो जाता था। जो नितान्त नीरस थे, बिलकुल भावहीन थे

उनके नेत्र भी आकर्षित हो जाते थे। वे न समझ सकते थे कि ऐसा आकर्षण क्यों है, इसलिए उनके मनपर भी उस मुखकी छाया पड़ती थी। किन्तु बालिकाके मुखपर विशेष गाम्भीर्य अथवा विषादके चिन्ह दिखाई पड़ते हों, ऐसी बात न थी। वरन् वह देखनेमें क्रीड़ाप्रिय और चंचल ही कही जा सकती थी। वह एक स्थानमें अधिक देरतक न ठहरती। अपने मन ही मन गाती हुई, अपने ही सुख-स्वप्नमें मग्न होती हुई, शरदऋतुके आकाशकी नीरदमालाकी नाईं वह बालिका इच्छानुसार इधर-उधर विचरण कर रही है। पिता तथा आत्मीया रमणी सदा उसके साथ रहनेमें व्यस्त हो रहे हैं। बालिका क्षण भरमें दिखाई पड़ती है और फिर अदृश्य हो जाती है, किन्तु वे उसे कभी डाटते नहीं। वह सदा उज्ज्वल-वस्त्र पहन रहती है तथा अनेक स्थानोंमें घूमते रहनेपर भी मलिनता तथा किसी प्रकारका धब्बा उस स्वच्छ और श्वेत वस्त्रको स्पर्शतक न कर सकता था।

जहाजके यंत्र-चालक तथा अन्य नाविक लोग अपने-अपने कार्यमें लगे हुए थे। बालिका एक-एक बार एक-एक आदमीके पास आकर खड़ी होती थी। स्वभावसे ही विस्फारित नेत्रोंसे उनको देखती थी, तथा उनलोगोंको कभी कोई दुःख होता है कि नहीं, किसीको किसी विपत्तिकी आशंका है कि नहीं, शंकित और दयार्द्रचित्तसे वह यही सोचती थी। एक-एक बार वह बालिका-मूर्ति प्रत्येक मनुष्यके हृदयसे हो कर चली जाती थी और कोमलताके लेशसे भी शून्य, रूखे ओठोंको भी स्नेहमय हँसीसे प्रस्फुटित कर देती थी। जिस दुर्गम स्थानमें उसका पैर फिसलता था वहीं न जाने कितने कठोर हाथ उसे पकड़नेके लिए फैल जाते थे। बड़े यत्नसे लोग बालिकाके पथको साफ और सुगम बना देते थे।

टामका हृदय स्वभावसे ही कोमल और स्नेहमय है। कोम-लता देखकर मुग्ध होना इस हृदयवान निग्रोजातिका एक प्रधान गुण है। टामने प्रथम दर्शनके समय बड़े आग्रहसे इस बालिकाको देखा था। उसने इस सुकुमारीको एक प्रकारसे देवी ही समझ लिया था।

बालिका कभी कभी हेलीके सिकड़ियोंसे बँधे हुए दासों-के चारो ओर घूमती थी, कभी धीरे-धीरे उनके सम्मुख आकर अत्यन्त विषन्नचित्तसे उनलोगोंके मुखकी ओर देखती खड़ी रहती; उनलोगोंकी सिकड़ी लेकर हिलाती, डुलाती, और अन्तमें दुःखके साथ गम्भीर दीर्घ स्वास छोड़कर दूसरी जगह चली जाती। टाम दो एक बार देखकर ही इस अंग्रेजकी बालिकासे बात-चीत करनेका साहस न कर सका। किन्तु ज्योंही बालिका निकट आती त्योंही वह उसके प्रत्येक कार्यको बड़े ध्यानसे देखने लगता था।

बालक-बालिकाओंका चित्त आकर्षित करनेमें टाम बड़ा चतुर था। नानाप्रकारकी बँशी, गुड़िया, और खिलौने बनाने-में वह बड़ा निपुण था। जब वह शेल्वी साहबके घरमें रहता था तब छोटे-छोटे बच्चोंके खेलनेके लिए वह ये सब खे-लनेके साधन अपने जेबमें रखता था। उनमें से कितने ही अभी तक उसके जेबमें पड़े थे।

एक दिन बालिका उसके पास आकर खड़ी हुई। सुअव-सर देखकर टामने बात-चीत आरम्भ करनेके लिये अपने को-टके जेबसे नाना भाँतिकी छोटी-छोटी कई वस्तुएँ बाहर निका-लने लगा। बालिका बड़ी लज्जावती थी। पहले उसने कोई बात न की किन्तु उसके मनमें बड़ा प्रेम तथा कौतूहल उत्पन्न हुआ। टाम जिस समय बड़ी शीघ्रतासे खिलौने तैयार कर रहा था उस समय बालिका उससे कुछ दूर बैठकर एकाग्र

मनसे उसके बनानेकी कुशलता देखने लगी। बनाना समाप्त होनेपर टाम उन्हें उस बालिकाको देने लगा। बालिका सलज्ज भावसे टामके हाथसे वे सब खिलौने लेने लगी। अन्तमें बालिकाकी लज्जा छूट गयी। तब दोनों आदमियोंमें परिचित-की भाँति बात-चीत होने लगी।

टाम—तुम्हारा नाम क्या है? बालिकाने कहा मेरा नाम है; इवाञ्जेलिन सेन्टक्लेयर। किन्तु बाबा तथा घरके और दूसरे लोग मुझे इवा कहकर पुकारते हैं। तुम्हारा नाम क्या है?

टाम—मेरा नाम टाम है, किन्तु केन्टाकीके छोटे-छोटे बच्चे मुझे टाम काका कहकर पुकारते हैं।

बालिका—मैं भी तुम्हें टामकाका कहकर पुकारूँगी। टाम काका, मैं तुम्हें बहुत चाहती हूँ। टामकाका तुम कहाँ जाओगे?

टाम—मुझे कहाँ जाना होगा मैं कुछ भी नहीं जानता।

बालिका—(आश्चर्यके साथ) यह क्यों? कहाँ जाओगे सो जानते नहीं?

टाम—दास-व्यवसायी जिसके हाथ बेचेगा मैं उसीके घर जाऊंगा। किसके पास मुझे बेचेगा यह इस समय कैसे कह सकता हूँ?

बालिका—मेरे बाबा तुम्हें खरीद सकते हैं। बाबाके खरीद लेनेपर तुम सुखसे रह सकोगे। मैं अभी जाकर बाबासे तुम्हें खरीदनेके लिए कहती हूँ।

टाम—अच्छा तुम अपने बाबासे कहना।

इवाञ्जेलिनके साथ टामकी इस प्रकारकी बात-चीत समाप्त होनेपर जहाज काठ लादनेके लिए रुका। टाम कुलियोंकी सहायता करनेके लिए किनारेपर उतर ही रहा था कि इतनेमें इवाञ्जेलिन अपने पिताके साथ बात-चीत करती-करती जहा-

उसे पानीमें गिर पड़ी। उसके पिता उसी समय नदीमें कूदने को तैयार हुए, किन्तु पीछेसे एक आदमीने उन्हें पकड़ लिया। क्योंकि टामने इसके पहिले ही पानीमें कूदकर इवाको पकड़ लिया था। इवा धारामें कुछ दूरतक बह गयी थी। टाम तैरना बहुत अच्छा जानता था। वह इवाको लेकर सहजमें ही तैरता हुआ आकर जहाजपर चढ़ गया। इवा अचेत हो गयी थी। उसके पिता उसे अपनी कोठरीमें ले गये एवं उसे सचेत करनेके लिए नानाप्रकारकी औषधियां करने लगे। जहाजके भिन्न-भिन्न कोठोंसे रमणीदल आकर सेन्टक्लेयरके कोठेमें घुसकर अपने-अपने हृदयस्थित चिकित्सा-वृत्ति दिखाने-के लिए, कुछ समयतक इवाके चैतन्यता लाभ करनेमें विघ्न डालती रहीं। वस्तुतः संसारमें बहुतसे रोगी लोग रोग-शय्यापर इन परोपकारी लोगोंकी परोपकारिताका फल, भोग कर ही मृत्युका आलिंगन करनेमें समर्थ होते हैं।

इधर इवाने शीघ्र ही चैतन्यता प्राप्त की। किन्तु उसका शरीर कई दिनतक अत्यन्त दुर्बल था।

क्रमशः जहाज नवअर्लिन्स आ पहुँचा। यात्री लोग अपना अपना सामान बांधने लगे। टामने नीचेके गोदामसे देखा कि सेन्टक्लेयर इवाञ्जेलिनका हाथ पकड़े हुए हेलीके पास खड़े होकर बात-चीत कर रहे हैं एवं हेलीकी बातें सुन-सुनकर समय-समयपर हँसते भी जाते हैं।

कुछ समयके पश्चात् सेन्टक्लेयर बोले—भाई, समझ गया कि तुम्हारा गुलाम बड़ा धार्मिक है। हमारे देशका सम्पूर्ण खीष्टधर्म इस मोरक्कोके काले चमड़ेसे ढका हुआ है। अब यह बताओ कि इस मोरक्को चमड़ेसे बंधे हुए खीष्टधर्म का क्या मूल्य लोगे। मुझे यह ठीक-ठीक बताओ कि इसके कितने रुपये लोगे?

हेली—महाशय मैं आपकी दिल्लगी नहीं करता । तेरह सौ रुपयेमें मुझे बड़ा लाभ होगा, ऐसा मत सोचिएगा—तो—

सेन्टक्लेयर—तब जान गया । मेरे ऊपर कृपा करके तेरह सौपर देनेको राजी हुए ?

हेली—ये बालिका इस दासको बेचनेका बड़ा आग्रह करती हैं—इसीसे तेरह सौमें देना स्वीकार किया है।

सेन्टक्लेयर—(हंसते-हँसते) हाँ,समझा। आप इस बालिकापर कृपा कर रहे हैं। किन्तु एकबार ठीक बतलाइये कितने रुपयोंमें आप टामको बेचेंगे ?

हेली—महाशय ! आप एक बार माल देख लीजिए। इसके शरीरमें कितनी शक्ति है। कैसी चौड़ी छाती है; मस्तक कैसा प्रशस्त है। देखते ही वह गणितज्ञकी भाँति जान पड़ता है। इस प्रकारके काफिर दासका बहुत बड़ा दाम है। अपने पहलेके मालिकके घर सारा कार्य भली भांति सुचारु रूपसे यही करता था। बड़े कामका आदमी है। यह देखिये इसके पहिलेके मालिकका प्रशंसापत्र देखिये। यह बड़ा धार्मिक है। इसे केन्टाकी प्रदेशके सब क्रीतदास पादरी कहकर पूजते हैं।

सेन्टक्लेयर—(हँसते-हँसते) तो बहुत अच्छा है। इस व्यक्तिको मैं अपने पारिवारिक पादरी कार्यमें नियुक्त करूँगा। पर हमारे घरमें धर्मालोचना कुछ कम है इसीसे मैं सोच रहा हूँ कि पादरीकी कुछ आवश्यकता नहीं है।

हेली—महाशय ! आप तो प्रत्येक बातमें ही ठट्ठा करते हैं। मैं अब आपसे और क्या कहूँ ।

सेन्टक्लेयर—मैं दिल्लगी करता हूँ,यह आपने कैसे जाना ? तुम्हींने तो यह कहा कि यह व्यक्ति पादरीका काम कर

सकता है। हाँ, देखें तो इसने किसी विश्वविद्यालय अथवा किसी लार्ड विशपका सार्टिफिकेट पाया है क्या ?

इसी समय इवाञ्जेलिनने अपने पिताके कानमें धीरे-धीरे कहा बाबा उसे खरीदो, इतने रुपये तो तुम सहजमें ही दे सकते हो। इस आदमीको खरीदनेकी मेरी बड़ी इच्छा है। तब सेन्टक्लेयरने अपनी कन्याका चिबुक पकड़कर हँसते हुए कहा-क्यों इसे खरीदना चाहती है, बच्ची ! इसे घोड़ा बना कर खेलेगी ?

इवा—बाबा इसे मैं सुखसे रखूँगी। इसका दुःख छुड़ानेके लिए मैं इसे खरीदना चाहती हूँ।

सेन्ट क्लेयर—वाह ! यह तो नयी बात सुनी। इसे सुखी करनेके लिए तुम इसे खरीदना चाहती हो ?

इसी समय हेलीने शेल्बीके हाथका लिखा हुआ टामकी सच्चरित्रताका प्रशंसापत्र सेन्टक्लेयरके हाथमें दिया। सेन्ट-क्लेयरने लिपि देखकर कहा—भले आदमीकी हस्तलिपि है। प्रशंसापत्र पढ़कर हँसते-हँसते कहा—वाह ! यह व्यक्ति बड़ा धर्मात्मा है। बाबा इस धर्मकी यंत्रणासे देश अवसन्न हो जायगा। मुझे ज्ञान पड़ता है, देश छोड़कर भागना पड़ेगा। खीष्टीय धर्मावलम्बी श्वेताङ्ग पादरियोंकी धर्म व्यवस्थासे तो अत्यन्त व्यस्त हो गया हूं। और अब यह कालादास भी धार्मिक होने चला। 'हमारे देशमें धार्मिक पादरी, व्यव-स्थापक समाजके धार्मिक सभ्य, धार्मिक शासनकर्ता, धार्मिक वकील, धार्मिक विचारक जग दिनपर दिन धर्मानुष्ठान करके देशके लोगोंको ठग रहे हैं। कितनी प्रवञ्चनाएं हैं। कैसी-कैसी नयी-नयी प्रतारणाओंका सूत्रपात हो रहा है।' किन्तु, काफिरोंके धर्मात्मा होनेसे कार्य क्षेत्रकी कमी हो जायगी। इस समय ये श्वेताङ्ग लोग जो इन काफिर दासोंके प्रति धर्मा-

चरण करते हैं, इसीसे कार्य क्षेत्रकी न्यूनता नहीं ज्ञान पड़ती। किन्तु इन दासोंके भी धार्मिक हो जानेसे देशमें ऐसे लोग न रह जायँगे, जिनपर धर्मका प्रयोग किया जा सके। इस समय तुम इस धर्मके लिए कितना मूल्य चाहते हो? वर्त्तमान समयमें धर्मका मूल्य अधिक हो गया है,यह तो किसी एक्स-चेञ्ज गज़टमें नहीं देखा। बतलाओ, इस धर्मके लिए क्या देना होगा?

हेली—आपकी इच्छा दास खरीदनेकी नहीं है। केवल दिल्लगी करते हैं। अवश्य ही कोई-कोई धर्मका बहाना करते हैं, ठगपना करते हैं, यह सत्य है, किन्तु सच्चे धर्मात्मा भी हैं। जो सच्चे धर्मात्मा हैं वे किसी प्रकार प्रवंचना और प्रतारणा नहीं करते। यह प्रशंसापत्र देखते क्यों नहीं? टाम-के पहलेके मालिकने टामके सम्बन्धमें क्या लिखा है, देखिये।

सेन्ट क्लेयर—अच्छा, तुम यदि मुझे निश्चय पूर्वक बतला सको कि धार्मिक लोगोंको क्रय कर लेनेसे मैं परलोकमें उनके धर्मोंका मालिक हो जाऊँगा तो मैं तुम्हें कुछ और अधिक रुपये दे सकता हूँ।

हेली—महाशय! भला परलोकमें क्या किसी एकका धर्म कभी किसी दूसरेको मिलता है? इस पृथ्वीपर यह व्यक्ति अपना दास है, इसलिए अपनी सम्पत्ति हो जायगी, ऐसा तो मुझे नहीं जान पड़ता। इस विषयमें आप पादरियोंसे पूछियेगा।

सेन्टक्लेयर—तब देखो, यदि इसका धर्म मेरी सम्पत्ति न होगी तो इसके धर्मके लिए अधिक मूल्य देनेमें हानिके अति-रिक्त कुछ लाभ नहीं है।

यह कहकर सेन्टक्लेयर हँसते-हँसते हेलीके हाथमें कई एक नोट देकर बोले—'तुम रुपये गिनलो।' हेलीने नोट गिन

कर हँसते हुए विक्रीका कबाला लिख दिया। सेन्टक्लेयरने इवाको साथ ले टामके पास आकर कुछ मुसकुराते हुए उसके कंधेपर हाथ रखकर कहा—मैं तुम्हारा नया मालिक हूँ। तुम्हारा नया मालिक कैसा जान पड़ता है।

पीछे घूमकर सेन्टक्लेयरके मुखकी ओर देखते ही टामकी आँखोंसे आनन्दाश्रु निकल पड़े! वास्तवमें सेन्टक्लेयरके उस चिरहास्य-विराजित मुखको देखकर सभीका चित्त आनन्द रसमें बहने लगता था। कुछ समयके पश्चात् टामने सेन्टक्लेयर-की बातके प्रत्युत्तरमें कहा—महाशय परमेश्वरके निकट आपकी भलाईके लिए प्रार्थना करता हूँ। वह आपको सुखसे रखे।

सेन्टक्लेयरने फिर टामको सम्बोधन करा कहा—तुम्हारा नाम टाम है? तुम गाड़ी हाँक सकते हो?

टामने कहा—अपने पूर्व मालिक शेल्बी साहबके घर मैं बराबर गाड़ी हाँकता था।

यह बात सुनकर सेन्टक्लेयर—अच्छा तुम्हें गाड़ी हाँकनेका काम दूँगा। किन्तु सावधान! आवश्यकता न होने-से सप्ताहमें एक बारसे अधिक शराब न पीना। रोज़ शराब पीकर गाड़ी हाँकनेसे किसी समय गाड़ीसे गिरकर मर जाओगे।

टामको यह सुनकर तो बड़ा आश्चर्यमय हो गया, फिर अत्यन्तकातर स्वरसे कहा—महाशय मैं मद्य कभी नहीं पीता

सेन्टक्लेयरने टामकी यह कातरोक्ति सुनकर कहा—मैंने सुना है कि तुम शराब नहीं पीते। तुम्हारे दुःखी होने-की कोई बात नहीं है। ऐसा करना तो अच्छा ही है। मैं तुम्हारी बातका विश्वास करता हूँ। किन्तु तुम कभी अपने

मनमें कपट न करना। तुम्हारी बात-चीतसे जान पड़ता है कि तुम ठीक तरहसे सब कार्य कर सकोगे।

टाम—महाशय! सब कामोंको श्रेणीबद्ध करनेकी प्राणपणसे चेष्टा करूँगा। इसी समय इवाञ्जेलिनने टामका हाथ पकड़ कर कहा—टाम काका, तुम्हें कुछ डर नहीं। तुम मेरे घरमें सुखसे रह सकोगे। बाबा किसीको कभी कष्ट नहीं देते। बाबाके पास कोई बात कहनेके लिए आनेपर, केवल हँसते हैं। सेन्टक्लेयरने इवा की ठुड्ढी पकड़कर कहा—बाबाकी आशंका करनेसे बाबा तुम्हारे कृतज्ञ हुए।

सोलहवाँ परिच्छेद



टामके नये स्वामी

टामके जीवनका इतिहास इस समयसे और भी कई जीवनोंके साथ सम्बद्ध होकर चला, इसलिए यहांपर उनका कुछ परिचय देना आवश्यक है।

अगष्टिन सेन्टक्लेयर लुसियानके एक क्षेत्राधिकारीकी संतान हैं। उनके पूर्व पुरुषगण केनाडाके निवासी थे। अगष्टिनके पिता महा शिता, तथा पितृव्य अपना पैतृक घर छोड़कर एक आदमी वारमेन्टमें कृषिकर्म करने लगे। दूसरे लुसियानेमें आकर क्षेत्रस्वामी होकर असंख्य काले दास-दासी एकत्र करने लगे।

अगष्टिनकी माता हिउग्नो सम्प्रदायकी एक फरासीसी उपनिवेशीय वंशोत्पन्ना थीं। अगष्टिनका शरीर और स्वास्थ्य

उनकी माताके शरीरकी भाँति ही दुर्बल था। वारमेन्टका जल-वायु अति स्वास्थ्यकर है, ऐसा समझकर अगष्टिन बाल्यकालमें ही अपने चाचाके घर भेज दिये गये।

बाल्यकालसे ही अगष्टिन सेन्टक्लेयरकी कोमलता, स्नेह शीलता और हृदकी उच्चता स्पष्ट दिखाई पड़ती थी। चरित्रका यह गंभीर माधुर्य अवस्थाके साथ ही साथ वृद्धि पाने लगा। उनकी मेधावी शक्ति भी बड़ी प्रखर थी। उनका चित्त सहज ही महत्त्व तथा प्रशस्तताका पक्षपाती था। क्षुद्रता, नीचता, उनके हृदयमें स्थान ही न पाती थी। इन गुणोंके साथ ही साथ गृह-कार्यसे उनका विराग भी उत्पन्न हुआ। उनके पिताने गृह-कार्यकी ओर उनका ऐसा विराग देखकर उनके बड़े भाई अलफ्रेडके हाथमें ही सम्पूर्ण गृहका कार्य भार सौंप दिया।

अगष्टिनका विश्वविद्यालयमें पढ़नेका समय समाप्त हो गया। बहुत लोगोंके जीवनमें एकबार जो घटना घटती है, वही घटना उनके जीवनमें भी घटी। उनका कवि-जीवन नव अनुरागसे उच्छ्वसित हो उठा। जीवन-सरोवरमें नवीन नलिनी खिल उठी। विस्तार छोड़कर अब संक्षेपमें कहे देता हूँ। सेन्ट-क्लेयर एक बुद्धिमती, रूप-गुण-विभूषिता रमणीके विशुद्ध प्रणयके अधिकारी हुए, दोनोंका शुभ परिचय स्वीकृत हो गया। युवक अपने घर आकर विवाहका आयोजन करने लगा। इसी बीचमें एक दिन अपनी प्रणयिनीके अभिभावक-का एक पत्र पाया। उसमें यह लिखा था—

"यह पत्र पानेके पूर्व ही तुम्हारी मनोनीत कुमारी दूसरे-की पत्नी हो जायगी!"

इस पत्रके साथ ही साथ उनके सारे प्रणय-पत्र भी उनको लौटा दिये गये थे।

सेन्टक्लेयर यह पत्र पाकर दुःख और अभिमानसे विक्षिप्त प्राय हो गये। हृदयकी घोर यंत्रणाके वेगसे अधीर होकर उन्होंने निश्चय किया कि अतीत कालकी स्मृतिको हृदयसे समूल उखाड़ डालूंगा। दुर्दम अभिमानके कारण वे इस अन्यथाचरणका कारणतक न पूछ सके। पूर्वोक्तपत्र प्राप्तिके दो सप्ताहके बीचमें ही उन्होंने उस नगरकी किसी धनशाली बनियेकी रूपवती कन्याके साथ विवाह सम्बन्ध स्थिर कर लिया। यह संसार क्रय-विक्रयका स्थान है। विशुद्ध प्रेम तथा अकपट-प्रणय इस संसारमें विरला ही है। इसलिए अगस्टिनको भी संसारकी प्रचलित इसी क्रय-विक्रयकी प्रथाका अगत्या अवलम्बन करना पड़ा। अत्यन्त थोड़े समयमें ही विवाह-कार्य सम्पन्न हो गया। सेन्टक्लेयरने जिसे सहधर्मिणीके पदपर वरण किया था, उसके पास था धन और सौन्दर्य।

विवाहोपरान्त नवदम्पति अपने बन्धु-वर्ग-सहित आमोद-प्रमोदमें समय बिताते थे। विवाहके पश्चात् एक मासके भीतर ही एक दिन एक पत्र सेन्टक्लेयरके नाम आया। पत्रके सरनामेमें वही चिरपरिचित अक्षर थे। पत्र देखकर सेन्टक्लेयरका मुख पीला पड़ गया। काँपते हुए हाथोंसे उन्होंने पत्र लिया। उस समय घर कुटुम्बी लोगोंसे परिपूर्ण था। सेन्टक्लेयर एक आदमीके साथ नाना प्रकारका हास-परिहास कर रहे थे। इसलिए किसी प्रकार अपनी बात समाप्त कर, देखते न देखते वहाँसे अदृश्य हो गये।

निर्जन घरमें जाकर सेन्टक्लेयरने पत्र खोला। हाय, आज इस पत्रके पढ़नेसे ही क्या लाभ!

यह पत्र सेन्टक्लेयरकी पूर्व प्रणयिनीके पाससे आया है। इस पत्रके पढ़नेसे उसके विवाहकी बातका रहस्य खुला।

पहले जिस अभिभावककी बात कही गयी है, उसी नृशंस, नीचाशयने अपनी रक्षार्थीना उस कुमारीको अपने पुत्रके साथ ब्याह देनेकी अनेक प्रकारकी चेष्टायेंकीं, किन्तु कन्याकी सम्मति न होनेसे उसके प्रति यथेष्ट अत्याचार करना आरम्भ किया। उससे भी अब कृतकार्य न हुआ, तब धूर्ततासे सेन्ट क्लेयरके साथका विवाह सम्बन्ध तोड़वा दिया। इधर सेन्ट क्लेयरका पत्रादि न पानेसे वह कुमारी दिन प्रतिदिन चिन्तासे व्याकुल होने लगी। पत्रके पश्चात् पत्र लिखा पर उत्तर न पाया। सोचते-सोचते भी कोई कारण स्थिर न कर सकी। क्रमशः मनमें नाना प्रकारकी आशंकायें उत्पन्न होने लगीं। दिन-दिन वह कृश होने लगी। अन्तमें एक दिन उस दुष्ट अभिभावककी शठताका पता लग गया। यह उस प्रवञ्चककी, उन दोनोंका परस्पर अनुराग नष्ट करनेकी चेष्टा थी।

पत्र पढ़नेपर सेन्टक्लेयर इन बातोंसे अवगत हुए। पत्रका अन्तिम भाग आशावाक्य तथा प्रेमोक्तिसे परिपूर्ण था। रमणीने लिखा था—मैं जीवनपर्यन्त तुम्हारी ही हूँ। अभागा युवक उसे पढ़कर मृत्यु-यंत्रणासे भी अधिक दुःख अनुभव करने लगा। किन्तु अब अधिक विलम्ब न कर उसने उसी समय उत्तर दिया—

"तुम्हारा पत्र पाया—किन्तु समयपर नहीं मिला। इस समय पाना न पाना दोनों समान ही है। मैंने जो सुना उस पर विश्वास कर लिया। मैं उन्मत्त-प्राय हो गया हूँ। मेरा विवाह हो गया है—इसलिए सब पूर्ण हो गया। अब तुम ये सब बातें भूल जाओ—अब मुझे कुछ नहीं करना है।

इस प्रकार सेन्टक्लेयरका सुख-स्वप्न टूट गया। कवि-हृदय सूख गया। मनः कल्पित सुख-शान्ति-पूर्ण संसारको कल्पनासे विधकर अब सेन्टक्लेयर को प्रकृत संसारके पथका

पथिक होना पड़ा। उस कल्पनाके रँगमें रँगे संसारसे इस प्रकृति-संसारमें कितना अन्तर है, जिसने इस संसारमें प्रवेश नहीं किया, वह नहीं जान सकता।

उपन्यासमें प्रणय, नैराश्य और मृत्युके मानों समान-सूत्र-में गुँथा हुआ है। ज्योंही कोई प्रणयसे हताश होता है, त्योंही मृत्यु आकर उसके भग्न-हृदयके दारुण दुःखानलको सदाके लिए ठंढा कर देती है।

किन्तु उपन्यासकी भाँति प्रकृतजीवनमें मृत्यु उतनी सुलभ वस्तु नहीं है। कितने ही लोगोंका प्रणय-विच्छेद तो होता है, किन्तु उनमेंसे कितने प्रणयी अपने प्राण देते हैं! कितनेही दुःख, कितनी ही यंत्रणायें आकर जीवनको चारो ओरसे घेर लेती हैं, जीवनकी सारी आशायें शून्यमें मिल जाती हैं, घोर-तर नैराश्य हृदयको ग्रस लेता है तो भी तो मनुष्य मरता नहीं! वह पूर्व समयानुसार ही भोजन करता है, समयपर सोता है, उठता है, घूमता-फिरता है। जो चिरकालसे करता चला आता है, वह सभी करता रहता है। अगष्टिनको भी वही करना पड़ा। उनकी पत्नी यदि उपयुक्त होती तो उनके अन्धकार-पूर्ण जीवनमें एक बार फिर उज्ज्वल प्रकाश प्रका-शित भी हो सकता था। किन्तु मेरी सेन्टक्लेयरकी अदूरदर्शी दृष्टि पतिके हृदयतक प्रवेश भी न कर सकती थी। पतिके हृदयमें कौनसी व्यथा उठ रही है, रत्ती भर भी वह नहीं जान सकी। मैंने पहलेही कह दिया है कि विपुल सम्पत्ति और लावण्यमयी आकृतिके अतिरिक्त मेरीमें और कोई भी गुण न था। किन्तु इन दो वस्तुओंमे से एक भी हृदयके दुःखकी औषधिका काम नहीं दे सकती, क्षत हृदयको पूर्ण करना उन दोनोंमें से कोई नहीं जानतीं।

उस दिनका पत्र पानेके उपरान्त सेन्टक्लेयर अकेले घरमें

पड़े हुए हैं। बहुत देरके बाद आकर पत्नीने पूछा—तुम्हें क्या हो गया है?

सेन्टक्लेयरने कहा—मेरा सिर दर्द कर रहा है। बुद्धिमती पत्नीने यही ठीक समझा एवं फिर कोई दूसरा प्रश्न न कर औषधिकी व्यवस्था कर दी। इसके पश्चात् प्रायः सेन्टक्लेयर के सिरमें इसी प्रकार पीड़ा हुआ करती थी। यह देखते-देखते एक दिन मेरीने कहा—तुम्हारा शरीर रोगी है, यह मैंने पहिले नहीं जाना था। मैं देखती हूं कि प्रायः तुम्हारे सिरमें पीड़ा हुआ करती है। मेरे दुर्भाग्यके कारण ही हम लोगोंका विवाह हुआ था। प्रत्येक समय मुझे अकेले ही लोगोंके घर घूमने जाना पड़ता है, तुम्हारा साथ नहीं होता यह तो ठीक नहीं जान पड़ता।

सेन्टक्लेयर अपनी पत्नीकी मोटी बुद्धि देखकर मन ही मन असंतुष्ट हुए। विवाहित जीवनके प्रथम कुछ दिन बीत जानेपर जब एक दूसरेके प्रति परस्परका बाहरी सौजन्य और सादर व्यवहार धीरे-धीरे शिथिल हो गये, तब सेन्टक्लेयरने देखा कि रूप और गुण सदा एक साथ नहीं रहते एवं समझ गये कि ऐश्वर्यके अंकमें पाली हुई, बाल्यकालसे सुखसे सेवित इस रूपवतीको लेकर पारिवारिक जीवनमें सुखकी कुछ सम्भावना नहीं है। प्यार नामका जो एक पदार्थ है, वह मेरीके हृदयमें अत्यन्त थोड़े परिमाणमें है। जो कुछ है, वह भी केवल अपने ऊपर। मेरी अपने पिताकी एक मात्र सन्तान है। पिताके घरमें वह दास-दासी तथा कुटुम्बियोंके ऊपर जन्मसे एकाधिपत्य करती आयी है। उसकी जिस समय जो अभिलाषा हुई, उसकी पूर्ति उसी समय कर दी गयी। सुलभ हो अथवा दुर्लभ हो, उसने जिस समय जो चाहा पिताने उसी क्षण उतना ही रुपया देकर उसके मनको सन्तुष्ट किया।

दास-दासियोंके ऊपर उसके प्रभुत्व और उत्पीड़नकी तो कोई बात ही नहीं थी। वे सब, सदा इसीकी चिन्तामें रहते थे कि किस उपायसे अपने स्वामीकी कन्याको सन्तुष्ट करें। तिलमात्र अपराध होनेपर मेरी उनलोगोंको घोर दण्ड देती थी। इस प्रकारकी स्थितिमें रहकर बड़ी होनेपर मेरीका हृदय केवल आत्म-गौरव और स्वार्थपरताका पूर्ण आधार बन गया। अपने सुखसे भिन्न वह और कुछ न जानती थी। अपनी बातके अतिरिक्त किसी दूसरेकी बात उसके हृदयमें पलभरके लिए भी स्थान न पाती थी। उसपरसे वह अत्यन्त रूपवती है, यह बात भी वह विशेष रूपसे जानती थी।

यदि वह इतनी रूप-लावण्यवती न होती तो लुसियाना प्रदेशके, इतने युवक क्यों उसके पाणि-ग्रहणके लिए व्याकुल रहते? वास्तवमें सच्च बात यह थी कि जो उससे विवाह करता, वह उसके पिताकी अतुल सम्पत्तिका उत्तराधिकारी होता—अनेक युवक मनमें यही सोचकर उसके पैरों तले अपना सिर देना चाहते थे।

मेरी सेन्टक्लेयर अपने मनमें सोचती थी कि उसके स्वामीका यह बड़ा सौभाग्य है जो उसने उस जैसी स्त्री-रत्नको पाया है। मेरी स्वामीके प्रति जो व्यवहार करती थी, उससे भी उसके हृदयका यह भाव भली-भाँति लक्षित हो जाता था। कभी-कभी स्पष्ट शब्दोंमें स्वामीसे कह भी देती थी। किन्तु ऐसी स्त्रीको लेकर सेन्टक्लेयरको गृह-कार्य चलाना बड़ा कठिन हो गया। एक ओर तो उन्होंने अपनी पहली प्रणयिनीके प्रति जो आचरण किया था, उसीकी आत्मग्लानिसे उनका हृदय, मन, परिपूर्ण हो रहा था। दूसरे अपनी पत्नीका यह घोर अन्याय सहन करना पड़ता था। वे मन ही मन दोनों यंत्रणायें भोग रहे थे। प्रश्नांतरमें वे एक

बड़े भारी गुरु महाशयके हाथमें पड़ गये। वे गुरु महाशय अपनी स्त्रीकी यंत्रणासे छुटकारा पानेके लिए प्रायः कार्यका बहाना करके घरसे भाग जाया करते थे। इस प्रकारकी स्वार्थ-परायणा स्त्री अपने स्वामीके हृदयके सम्पूर्ण प्रेमको सोख जानेकी इच्छा करती हैं। जो स्वामीको प्यार करना नहीं जानतीं, वे और अधिक परिणाममें स्वामीका प्रेम चाहती हैं।

विवाहके एक वर्षके पश्चात् मेरी और सेन्टक्लेयरको एक कन्या उत्पन्न हुई। इस कन्याका मुखकमल देखते ही दयार्द्र चित्त सेन्टक्लेयरके हृदयमें गम्भीर सन्तान वात्सल्य संचरित हुआ। कन्या दिनपर दिन बढ़ने लगी। किन्तु सेन्टक्लेयर जो इस कन्याको प्राणोंसे भी अधिक प्यार करते थे वह भी उनकी स्त्री मेरीको असह्य हो गया। मेरी मनमें सोचती थी कि सेन्टक्लेयरके हृदयमें एकतो प्रेम है ही नहीं, दूसरे जो दो-एक तोला है, वह भी इस कन्याके भाग्यमें पड़ा। इसलिए अब वह अपने स्वामीके प्रेमसे एक दम वञ्चित हो गयी। मनमें ऐसा विचारकर मेरी अपनी कन्याका भी यथोचित प्रतिपालन न करती थी। कन्याके उत्पन्न हो जानेके पश्चात् प्रायः उनके सिरमें पीड़ा हुआ करती थी। वह सदैव शय्यापर ही रहती थी। कन्याके प्रतिपालनका भार दास-दासियोंपर ही पड़ा। बीच-बीचमें केवल सेन्ट-क्लेयर उसकी खोज-खबर ले लेते थे। बालिका जब चार-पांच बरसकी हुई तब उसके प्रत्येक कार्यसे दया-माया, स्नेह-ममताविशेष रूपसे दिखाई पड़ने लगी। सेन्टक्लेयर कन्याकी ऐसी कोमल प्रकृति और सहृदयताको देखकर अपनी माताके अनुसार ही उसका भी नाम करण किया। सेन्ट-क्लेयरकी माता अत्यन्त सहृदया थीं। दूसरेका दुःख देख-कर सदैव उनका हृदय पिघल जाता था।

अगष्टिन उनकी अपार श्रद्धा और भक्ति करते थे। उनकी माताका नाम इवाञ्जेलिन था। इसलिए उस कन्याका नाम भी इवाञ्जेलिन हुआ।

इधर दिन प्रतिदिन मेरीको नाना प्रकारके मनःकल्पित रोग होने लगे। फिर आलस्यके बन्धनसे उसका शरीर सहज ही अवसन्न हो जाता। किन्तु उसके मनमें यह आते ही कोई दूसरा रोग हो जाता था। प्रति दिन एक नया रोग उत्पन्न होता था। उन सब रोगोंकी यथोचित औषधि तथा उसके इच्छानुसार सेवा-शुश्रूषा न होनेसे वह सदा अपने स्वामी-पर विरक्ति दिखलाती थी। कभी-कभी आत्माभिमानसे बहुत देरतक अश्रुजल विसर्जन करती थी। कभी अपने अदृष्टको कोसती थी। वह सोचती कि उसकी तरह रूप-वती, पुण्यमयी, बुद्धिमती स्त्रीकी जो इस प्रकार दुर्दशा हुई, वह केवल विधिकी विडम्बना है। किसी-किसी मनःक-ल्पित रोगसे पीड़ित होनेपर वह चार-चार दिन तक खटिये-पर पड़ी रहती। इसलिए सेन्टक्लेयरके सब गृह-कार्य दास-दासियोंके हाथ जा पड़े। उसकी कन्याका शरीर भी कुछ दुर्बल था। तब सेन्टक्लेयरने, गृह-कार्योंको सुश्रृंख-लित करनेके लिए, वारमेन्ट प्रदेशसे अपनी चचेरी बहिन मिस अफिलियाको ले आकर उसीके हाथमें इवाञ्जेलिनका पालन-पोषण और सारे गृहकार्य-भार समर्पण करनेका संक-ल्प किया। उन्होंने बिना किसी विलम्बके इवाञ्जेलिनको साथ लेकर मिस अफिलियाको ले आनेके लिए वारमेन्ट प्रदेशको प्रस्थान किया। जहाजमें सेन्टक्लेयरके साथकी पूर्व कथिता रमणी ही मिस अफिलिया है। यह अगष्टिन सेन्टक्लेयरकी चचेरी भगिनी है। इसे साथ लेकर जहाज-पर सवार हो अगष्टिन स्वदेशको लौट रहा था। जहाज

क्रमशः आकर नवआलिंस पहुँचा। किन्तु इनलोगोंके जहा-जसे उतरनेके पूर्व मिस अफिलियाके विषयमें दो-एक बातें कह देनी आवश्यक जान पड़ती हैं। मिस अफिलिया कैसी स्त्री है—देखेनेमें अत्यन्त सुन्दरी है कि काली कलूटी है, यह जाननेके लिए पाठकगण, विशेषतः पाठिकायें, विशेष कौतूहलाक्रान्त होंगी। किन्तु किसी स्त्रीके रूपकी व्याख्या करनेकी शक्ति मुझमें बिलकुल नहीं है। जिस किसी युव-तीका-हृदय स्नेह, ममता, दया और धर्म आदि सद्भावों तथा सद्गुणोंसे समालंकृत है, उसे मैं अपनी कन्याकी भाँति प्यार करता हूँ। उसके दोनों नेत्र छोटे हैं कि बड़े, नासि-का बडी है कि चपटी, ये सब बातें मेरे मनमें कभी प्रवेश नहीं करतीं। इसलिए पाठकोंके उस कौतूहलको छुड़ानेमें मैं सर्वथा असमर्थ हूँ।

मिस अफिलियाके बारेमें मैं केवल इतना ही कह देना चाहता हूँ कि उसकी अवस्था पैंतालिस वर्षकी है। गृह-कार्यमें भली-भाँति दक्ष हैं। उनके सम्पूर्ण कार्य, उनकी सहि-ष्णुता और क्षिप्रहस्तताका परिचय देते थे। उनके सब कार्योंसे, आचरणोंमें सुश्रृंखलता, उत्तम प्रणाली, एवं सुन्दर परिपाटीका परिचय मिलता था। कार्य-सम्पादन करनेके लिए कोई एक सुनियम निर्धारित कर लेनेपर वे प्रणान्त तक भी उसको भंग न करती थीं। असावधानताको वे घोर पाप समझती थीं। किसीके कार्यमें भी किसी प्रकारकी गड़बड़ी देखकर "कैसी असावधानता है" कहकर वे अपने हृदयकी विरक्ति और घृणा प्रकाश करती थीं। वे अपार कर्त्तव्य-परायण थीं। जिसे कर्त्तव्य समझतीं उसके सम्पादन करनेके लिए प्राण-पणसे यत्न करती थीं। विवेककी आज्ञा-का वे कभी उल्लंघन नहीं करती थीं। उन्हें यदि विवेककी

क्रीतदासी कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी। वास्तवमें अंग्रेज रमणियोंमें अनेक विवेक-वशवर्त्तिनी होती हैं, किन्तु उनका यह विवेक-यन्त्र अंकुशकी नाईं उन्हें चलाता है। मनुष्य-समाजमें दो प्रकारका कार्य-कलाप देखा जाता है। कोई-कोई तो इसे कर्त्तव्य समझ कर ही विवेकका आदेश मानते हैं। विवेककी आज्ञाका पालन करनेमें उनके हृदयमें किसी प्रकारके आनन्दका स्रोत नहीं बहता। विवेकका प्रतिपालन करनेमें उनका हृदय विमलानन्दसे आन्दोलित नहीं हो उठता। और कोई-कोई मनुष्य हृदयके आवेगसे परिचालित होकर विवेकादेश-पालनके लिए उन्मत्त हो पड़ते हैं।

पूर्वोक्त विवेक पत्थरसे गढ़ा होता है। लोहेसे भी अधिक कठिन होता है। जो लोग पहिले कहे हुए विवेकके अनुसार कार्य करते हैं, संसारमें वे कर्त्तव्य-परायण कहे जाते हैं। किन्तु यह अन्तिम प्रकारका विवेक मनुष्यको कर्त्तव्य-प्रमत्त कर देता है। इस प्रकारकी अवस्थामें विवेक और आवेग इन दोनोंमें किसी प्रकारका भेद नहीं रह जाता। जानस्टुअर्ट मिल कर्त्तव्य-परायण मनुष्य थे, किन्तु उन्हें कर्त्तव्य-प्रमत्त किंवा कर्त्तव्य-प्रेमी नहीं कहा जा सकता। प्रभु ईसा और चैतन्यदेव सत्य-सत्य ही कर्त्तव्य-मत्त थे। कर्त्तव्य-परायण लोग यन्त्रकी भाँति कर्त्तव्यके अनुरोधको प्रतिपालन करते हैं। किन्तु कर्त्तव्य-मत्त लोग हृदयस्थित उच्छ्वसित वेगसे परिचालित होकर कर्त्तव्य-साधन करते हैं।

मिस अफिलिया कर्त्तव्य-परायण थीं। मैं उन्हें कर्त्तव्य-प्रमत्त नहीं समझता। कर्त्तव्य-पालनमें वे किसी भाँति शिथिल न होती थीं। पहाड़ भी उनके कर्त्तव्य-पथको नहीं रोक सकता था। समुद्र अथवा अग्नि कर्त्तव्यके पालन करनेमें उन्हें भय दिखाकर डिगा न सकते थे। मनुष्यके हृदयकी

अपरिहार्य दुर्बलताके साथ वे जन्म भर संग्राम कर रही थीं। किन्तु समय-समयपर उस द्वन्द्-युद्धमें परास्त हो जानेसे अपनी दुर्बल प्रकृतिका स्मरणकर वे दुखी होती थी। इसलिए इसपर बँधा उनका हृदयस्थित धर्म, विश्वास प्रसन्न करने वाली ज्योतिका प्रकाश न कर कभी-कभी उनका हृदय विमर्षके अन्धकारसे परिपूर्ण कर देता था। किन्तु आश्चर्य-का विषय यह है कि इस प्रकारकी धीर और गम्भीर प्रकृति, ऐसी विवेकानुवर्तिनी मिस अफिलिया, चंचलमति, लघुमति हास्यावतार अगष्टिनको प्यार करती थीं। इन दोनोंकी पर-स्परकी प्रकृतिमें तिलमात्र भी समानता न थी। एकका स्वभाव दूसरेके स्वभावसे बिलकुल विरुद्ध है। किन्तु मिस अफिलिया लड़कपनमें अगष्टिनको धर्मोपदेश देतीथीं। क-निष्ठ भ्रात—भाँति उसका पालन करती थीं। और अगष्टिन लघुस्वभाव तथा चंचलमति होनेपर भी बड़े स्नेही थे। इसलिए मिस अफिलिया बाल्य-कालसे उनको प्यार करती थीं एवं उसी कारणसे अगष्टिनके प्रस्तावसे सहमत हो गयीं। अगष्टिनके गृह-कार्य तथा इवान्जेलिनके पालन-पोषणका भार ग्रहण करनेके लिए अगष्टिनके साथ नवअलिंसकी यात्रा की।

जहाजके नवअलिन्स पहुँचते ही मिस अफिलिया अत्यन्त व्यस्तताके साथ सामान ठीक करने लगीं। इवासे बार-बार पूछने लगीं—तुम्हारी गुड़ई कहाँ है, कैंची कहाँ है, सुई कहाँ है? अपने खिलौने सब एक-एक करके गिनलो। कैसी असावधानता है, अभी तक सब गिना नहीं?

इवा—बुआ, अब तो हम लोग घर जायँगे। ये सब लेकर क्या करेंगे!

अफिलिया—अच्छा, तुम्हें कुछ न करना होगा। मैं अच्छी तरहसे इन सबको रख दूँगी। एक तुम्हारा बाक्स

और एक खिलौना, दो; कैंची, तीन; फीता, चार। यही सब हैं। बेटी! तुम अपने पिताके साथ अकेले आती तो क्या करती? निश्चय तुम इन सबको फेंक देती।

इवा—सो तो मैंने कई बार फेंक दिया। फिर बाबाने मुझे इसे खरीद दिया।

अफिलिया—वाह! कैसी सुन्दर कार्य-प्रणाली है। एक बार चीजें फेंक दोगी और फिर खरीदोगी।

इवा—बुआ, यह बड़ी सीधी प्रणाली है।

अफिलिया—भयानक अनवधानता है। इसी प्रकार अनवधानता-अनवधानता करते-करते सब वस्तुएँ सन्दूकके भीतर रखने लगीं। सन्दूकको भरा हुआ देखकर इवा बोली—बुआ! इस ट्रङ्कमें और चीजें न रखोगी? अब क्या करोगी? यह बात सुनकर अफिलियाने कहा-धरूँगी नहीं। अब धरूँगी-धरूँगी ही। यह कहकर ट्रङ्कमें रखे हुए कपड़ोंको बलपूर्वक दबा दिया। उसकी भावभंगीसे ट्रङ्क मानो डर गया। अफिलियाने सब चीजें इसमें रखकर सहास्य मुखसे कहा—ट्रङ्कमें और भी अधिक चीजें रख सकती हूँ। तुम इस ट्रङ्कपर खड़ी रहो, मैं ताला बन्द करूँगी। इस प्रकार अफिलिया ट्रङ्कके साथ संग्राममें जय प्राप्तकर इवासे कहने लगीं-तुम्हारे बाबा कहाँ हैं? तुम्हारे बाबा कहाँ हैं? उनको बुला लाओ। हम लोगोंका सब सामान तैयार है।

इवा—बाबा इसी नीचेके कमरेमें खड़े एक आदमीसे बातकर रहे हैं और संतरा खा रहे हैं।

अफिलिया—तुम दौड़ी जाकर उनको बुला लाओ। हम लोग घाटके पास पहुँच गये।

इवा—बाबा कभी शीघ्रता नहीं करते। बुआ, तुम

इधर आओ। देखो, यहां हम लोगोंका घर दिखाई पड़ रहा है।

अफिलिया—हां, अच्छी तरह दिखता है। तुम बाबाको बुला लाओ। देखो, जहाज ठहरा। अब भी वे विलम्ब कर रहे हैं!

जहाज घाटपर रुक गया। इस समय जहाजके भीतर सैकड़ों कुली आकर मिस अफिलियासे कहने लगे-मेम साहब, आप अपना सामान मुझे दीजियेगा। दूसरे कुलीने कहा—मेम साहब, यह ट्रङ्क मैं ले चलूंगा। तीसरेने कहा-मेम साहब, यह सन्दूक मुझे दीजियेगा। मिस अफिलिया अपना सब सामान अपने आगे रखकर, खजानेके सिपाहीकी भांति खड़ी होकर पहरा देने लगीं। कुली लोग उनके मुखका भाव और तीव्र दृष्टि देखकर भय और त्रासके मारे उनके पाससे भागने लगे। इधर अगष्टिनको देर करते देखकर मिस अफिलिया अपार मानसिक कष्ट पाने लगीं। प्रायः पंद्रह मिनटके बाद अगष्टिन बिना किसी प्रकारकी व्यस्तता प्रकट करते हुए अन्यमनस्ककी भांति अफिलियाके पास आ उपस्थित हुए एवं अफिलियाको सम्बोधित कर बोले—बहिन, तुम तैयार हो?

अफिलिया—मैं एक घन्टेसे तैयार बैठी हूं। मैं तुम्हारे लिए बड़ी व्याकुल हो रही थी।

अगष्टिन—व्यस्त होनेकी कौनसी बात है! हम लोगोंकी गाड़ी तीरे खड़ी है। आदमियोंकी गड़बड़ी समाप्त होनेके पश्चात् भले आदमियोंकी भांति धीरे-धीरे चलेंगे।

यह कहकर अगष्टिनने पासके एक कुलीसे कहा-अरे, हम लोगोंका यह सब सामान उस गाड़ीपर रखदे। यह सुनकर मिस अफिलियाने कहा-मैं उसके साथ-साथ जाकर देखूंगी

कि एक-एक चीज गाड़ीमें सावधानीसे रखता है कि नहीं। तुम यहीं खड़े रहो, मैं उसके साथ जाती हूँ।

अगष्टिन—तुम्हे उसके साथ जानेकी कोई आवश्यकता नहीं। तुम हमारे साथ चलना।

अफिलिया—किन्तु यह सन्दूक और यह बेग मैं कुलीके हाथ न दूँगी। ये दोनों मैं अपने साथ लेकर गाड़ीपर चढ़ूँगी।

अगष्टिन—बहिन, तुम अपना वह उत्तरी प्रदेशका आचार व्यवहार छोड़ दो। हमारे देशकी रीति-नीति सीखो। बाक्स और सन्दूक हाथमे लेकर चलनेसे लोग तुम्हें दासी समझेंगे। कुछ डर की बात नहीं है। तुम इस आदमी-को जानेदो। यह सावधानीसे सब सामान रखदेगा। इसी समय इवाने कहा—टाम कहाँ है?

अगष्टिन—टाम नीचे है। बूढ़े टामको लेकर तुम्हारी माता-को दे दूँगा। कहूँगा कि गाड़ी चलानेके लिए टामका खरीद लाया हूँ। अब उस मतवाले कोचवानको गाड़ी न चलाने दूँगा।

इवा—बाबा! टाम निश्चय ही अच्छा कोचवान होगा। वह कभी शराब नहीं पीता।

ये सब बातें करनेके पश्चात् मिस अफिलिया तथा इवा-को लेकर अगष्टिन जहाजसे उतरकर तीर आ गाड़ीपर चढ़े। मिस अफ़िलिया गाडीपर चढ़नेके पहिले, सब वस्तुएँ चढ़ाई गयी हैं कि नहीं, एक-एक करके प्रत्येक चीजें देखने लगीं। अल्पकालमें ही गाडी आकर एक सुसज्जित घरके द्वारपर खड़ी हुई। गाड़ीके बाहरका द्वार लाँघकर भीतर घुसते ही इवा गाडीसे उतरनेके लिए व्याकुल होने लगी। वह अफिलियासे बार-बार कहने लगी—बुआ! देखो, हमारा घर कैसा सुन्दर है। तुम्हारे घरमें तो ऐसा बगीचा नहीं है। अफिलियाने कुछ हँसकर कहा—घर तो सुन्दर है किन्तु

किसी गोरे धर्मावलम्बीका घर नहीं जान पड़ता, अफ्रिका-नके घरकी भाँति जान पड़ता है। सेन्टक्लेयर अफ्रिकानकी भाँति परिचित होनेपर मन ही मन अधिक आनन्दका अनुभव करते थे। वे क्रिस्तानके नामसे अपना परिचय देनेसे घृणा करते थे। इसलिए वे अफिलियाकी बात सुनकर हंसने लगे। टाम पहिले ही गाड़ीसे उतर पड़ा था एवं इस प्रकार-के सुसज्जित घरकी शोभा देख बड़े आश्चर्यसे चारों ओर देखने लगा। सेन्टक्लेयरके अफिलियाका हाथ पकड़कर उतार लेनेपर, घरके बहुतसे काले दास-दासी घरके द्वारपर आकर खड़े हो गये। सेन्टक्लेयर दास-दासियोंपर कभी अत्याचार न करते थे। उनके घरमें इन काले दास-दासियों-को भोजनका कष्ट कभी न मिलता था। इसलिए ऐसे दयालु मालिकके यहां आनेसे टाम बड़े सुखसे रहने लगा एवं उसकी वह प्रशान्त मूर्ति, उस चिर-हास्य विकसित मुख को देखनेके लिए उत्सुक रहने लगा। इन दासोंमें एक बड़ा दीर्घकार पुरुष विशेष भड़कीले वस्त्रोंसे सुसज्जित होकर सबसे आगे द्वारपर आ खड़ा हुआ। अपने पीछे बहुतसे दास-दासियोंको इकट्ठे खड़े देखकर वह गम्भीरताके साथ कहने लगा-हे काले चमड़े वाले भाइओ! और बहिनो! तुम लोगोंके कार्योंके लिए समय-समयपर मुझे बहुत लज्जित होना पड़ता है। हटकर खड़े हो। विलायती लोगोंकी भाँति खड़े होनेकी शिक्षा तुम लोगोंने आज तक न प्राप्तकी। तुम लोग क्या मालिकके घरमें प्रवेश करनेका मार्ग रोकोगे, यह वक्तृता सुनकर दूसरे दास लोग बहुत लज्जित होकर एक किनारे हटकर खड़े हो गये। सेन्टक्लेयरने द्वारमें प्रवेश करते ही आड्लफ नामक इस प्रधान क्रीत-दासका हाथ मलते हुए पूछा-आड्लफ अच्छे तो हो? आड्लफने, सेन्ट

क्लेयरसे इस प्रकार परितृप्त किये जानेपर, मालिकके आगमनके उपलक्षमें जो वक्तृता कंठस्थकर रखी थी, वही देना आरम्भ किया। सेन्टक्लेयर आडल्फकी वक्तृता सुनकर हँसते-हँसते कहने लगे—अच्छी वक्तृता तैयारकी है। यह कह, उसी क्षण घरमें प्रवेश किया।

इवा घरमें घुसते ही अपनी माताके शयन-गृहमें चली गयी। माताको शय्यापर पड़ी हुई देखकर दौड़ती हुई गयी और जाकर माताके गलेसे लिपटकर उसका मुख बारम्बार चूमने लगी। किन्तु उसकी माता अपने मनःकल्पित रोग-ग्रस्त होनेके कारण अपनी कन्याको गोदमें ले न सकी। इवाके उसका गला पकड़कर बार-बार चुम्बन करनेपर उसने कुछ विरक्ति दिखलाकर कहा—जा, जा, हो गया, हो गया, अभी ठहर! नहीं तो मेरी सिर-पीड़ा और बढ़ जायगी। सेन्ट-क्लेयरने अपनी स्त्रीके शयन-गृहमें प्रवेशकर उसका आलिङ्गन किया, उसका मुख चूमा तथा मिस अफिलियाको दिखाकर कहा—प्रिये! यह देखो, तुम्हारे अस्वस्थताका संदेश सुनकर अफिलिया बहन यहाँ आ गयी हैं। किन्तु उनकी स्त्री शय्यापरसे उठ न सकी। केवल अधखुली आँखें अत्यन्त कष्टसे खोलकर मिस अफिलियाकी ओर एक बार ताका तथा अत्यन्त कष्टसे अर्धस्फुट वाक्यसे उनकी अभ्यर्थना की। दासियोंके आकर शयन-गृहके द्वारपर खड़ी होनेपर इवाने दौड़कर, गिया मामी नाम्नी एक वृद्धा दासीका गला, ओरसे पकड़ लिया और उसका मुख चूमने लगी। इस वृद्धाने इवाको अपनी गोदमें अच्छी तरह ले तथा छातीसे लगाकर उसका मुख चूमा। उसके दोनों नेत्रोंसे अविरल अश्रुधारा बहने लगी। वह सतृष्ण नेत्रोंसे इवाकी ओर देखती रही। वह जिस प्रकारसे इवाको अपने हृदयसे लगाये थी,

उससे स्पष्ट ज्ञात होता था कि यह बूढ़ा ही इसकी जननी होगी। कुछ समयोपरान्त इवा मामीकी गोदसे उतर पड़ी और उसने एक-एक करके प्रत्येक दासियोंका मुख चुम्बन किया। मिस अफिलिया इवाको दासियोंका मुख-चूमते देख, बड़ी चकित हुई। तब उन्होंने सेन्टक्लेयरको सम्बोधितकर कहा-अगस्टिन, क्या तुम्हारे दक्षिण-प्रदेशमें दासियोंके प्रति ऐसाही व्यवहार होता है? हम लोग तो दासत्व-प्रथा-विरोधी होनेपर भी नौकरोंके साथ इतनी घनिष्ठता नहीं करते। अपने वेतन-भोगी नौकरोंको हम लोग कभी अपनी बराबरीका नहीं समझतीं। दास-दासियोंपर दया करनी उचित है। किन्तु इस प्रकारसे नहीं। इन काले दासियोंका मुख-चुम्बन करनेमें तो घृणा होती है। सेन्टक्लेयर अफिलिया बहनकी यह खीष्ट-धर्मकी सुदीर्घ वक्तृता सुनकर मन ही मन हँसने लगे। प्रकट रूपमें उन्होंने और कुछ नहीं कहा। इसके पश्चात् वे अपने शयन-गृहसे बाहर आये। वहां वे मामी, जिमी, पाली, सूकी आदि प्रत्येक दासीका हाथ पकड़कर उनको संतुष्ट करने लगे। किसी-किसी दासीकी गोदके बालक तथा बालिकाकी, ठुड्डी पकडकर स्नेह करने लगे। दासियोंके चले जानेपर इवा एक झोरी संतरा लेकर उन दासियोंके छोटे-छोटे बालकों को तथा छोटी-छोटी बालिकाओंको एक-एक नीबू दिया। जो वस्तु सौगात स्वरूप जिसके लिए लायी थी, वह उसे दे दी।

तत्पश्चात् सेन्टक्लेयरने बरामदेमें आकर अडाल्फसे कहा-अडाल्फ, इस नये आदमीका, जिसे तुम सामने देख रहे हो, नाम टाम है। तुम सबसे बड़ा रंग गाँठते हो। किन्तु सावधान! इस आदमीपर कभी अत्याचार न करना। इसका मूल्य तुम्हारे ऐसे दो कलूटोंसे भी अधिक है। अडाल्फने कहा-हजूर, आप केवल हँसी करते हैं। सेन्टक्लेयरने

अडाल्फके वस्त्रोंकी ओर देखकर कहा—वाह वाह ! अडाल्फ !! तुम यह मेरा जामा पहिने हो ? अडाल्फ कुछ लज्जित होकर बोला—इस जामेमें तो बहुतसे ब्रांडीके दाग लग गये हैं। इससे बड़ी दुर्गन्धि निकल रही है। मैंने मनमें सोचा कि अब आप इस जामेको न पहिनेंगे। इसे आप अवश्य फेंक देंगे। इसलिए मैंने रखलिया। सेन्टक्लेयर अडाल्फकी युक्ति सुनकर हँसने लगे। फिर वे टामको साथ लेकर अपनी स्त्रीके पास चले। स्त्रीके शयन-गृहमें जाकर उन्होंने कहा—प्रिये ! भला तुम सोचो तो सही कि मैं तुम्हारे सुख तथा तुम्हारी स्वच्छन्दताको बढ़ानेकी ओर कब ध्यान नहीं देता ? यह देखो, तुम्हारे लिए एक अच्छा कोचवान ले आया हूँ। यह आदमी कभी शराब नहीं पीता। बड़ी चतुरताके साथ गाड़ी चलाना जानता है। इस कोचवानके गाड़ी हाँकनेपर पालकी गाड़ीमें चढ़नेमें तुम्हें कोई कष्ट न होगा। मानों तुम्हें समाधि-क्षेत्रकी ओर ले जा रहा हो, यह ठीक इसी प्रकार चतुरतासे गाड़ी हाँकेगा। सेन्टक्लेयरकी स्त्री मेरीने फिर एक बार आँखें खोलकर एक बार टामकी ओर देखा एवं बड़े क्षीन स्वरसे कहा—हमारे घरमें कुछ दिन रहनेपर यह शराब पीना सीख लेगा।

सेन्टक्लेयर—यह कभी शराब न पियेगा। यह सच्ची बात है।

मेरी—न पीना तो अच्छा ही है। पर मैं इस बातपर विश्वास नहीं करती।

सेंटक्लेयरने अडाल्फसे कहा—अडाल्फ ! टामको लेकर तुम रसोईघरमें जाओ। देखो तुमसे मैंने जो-जो कहा है, उसे भूलना मत ! टामके ऊपर बहुत रोब मत गाँठना।

अंडालरुके चले जानेपर सेन्टक्लेयरने अपनी स्त्रीसे कहा—प्रिये ! एक बार उठ जाओ।

मेरी—तुम्हारे और बहुत आदरकी कोई आवश्यकता नहीं। पन्द्रह दिनसे भी अधिक हुआ, तुम्हारे चले जानेपर मेरी खोज-खबर कौन लेता था ?

सेन्टक्लेयर—मैंने इन पंद्रह दिनोंके बीचमें क्या तुम्हें पत्र नहीं लिखा ?

मेरी—वही पोष्टकार्डकी दो पंक्तियाँ ! जैसे किसी नोकरानीके पास दो अक्षरकी चिट्ठी भेजी जातीहै। इतने दीर्घ समयके बीचमें केवल वही एक पोस्टकार्ड आया है।

सेन्टक्लेयर—डाक बन्द हो जायगी, इस आशंकासे मैंने चटपट कार्ड भेजा था। उस बीती हुई बातको लेकर झगड़ा करनेसे क्या लाभ होगा ? तुम यह फोटोग्राफ देखो, मैं इवाका हाथ पकडकर खड़ा हूं। कैसा ठीक फोटो है ! है न ?

मेरी—इस प्रकार हाथ पकड़कर क्यों खड़े हुए ? लड़कीको क्या इस प्रकार खड़ा होना चाहिए ?

सेन्टक्लेयर—अच्छा, जिस भावमें खड़ा हूं, वह बुरा ही सही ! फोटो ठीक उतरी है कि नहीं ?

मेरी—मेरी सम्मति लेकर तुम क्या करोगे ? मेरी कोई सम्मति तुम्हें अच्छी नहीं लगती। यह कहकर मेरीने फोटोग्राफकी पुस्तकको बन्दकर बिछौनेको एक बगलमें रख दिया।

सेन्टक्लेयरने मन ही मन कहा-पापिनी, किसी प्रकार मेरा मन प्रसन्न नहीं होता। दूर हो पापिन ! (प्रकट) अच्छा, बतलाओ न, फोटो अच्छी उतरी है। कि नहीं !

मेरी—सेन्टक्लेयर, तुम बारम्बार मुझे तंग मत करो। तुममें कुछ भी विचार-शक्ति नहीं है। तुम मेरा कष्ट कुछ

भी नहीं समझ सकते। मैं इन तीन दिनोंमें बड़ी दुर्बली हो गयी हूँ। कोई गड़बड़ी मुझे अच्छी नहीं लगती। तुम्हारे घर आ जानेसे घर मानों बाजारकी सट्टी हो गया है। मेरे प्राण निकलते हैं—सिरके दर्दके मारे प्राण निकले जा रहे हैं।

मिस अफिलियाने अभी तक सेन्टक्लेयरकी स्त्रीसे एक बात भी न की थी। सिरकी पीड़ाकी बात सुनकर उसने बात करनेका उपयुक्त समय समझा। इसलिए उसने कहा—क्या आपके सिरमें सदा ऐसी ही पीड़ा हुआ करती है? प्रातःकाल उठकर चिरायताका अर्क पीनेसे इसकी कुछ शान्ति हो सकती है। इब्राहीम मेरीसाहबकी स्त्री इन सब रोगोंकी अच्छी-अच्छी औषधियाँ जानती हैं। उन्हींसे सुना था कि चिरायताका अर्क इस रोगकी उत्तम औषधि है। यह सुनकर सेन्टक्लेयरने कहा—अच्छा, कल ही चिरायताका अर्क ला दूँगा। अफिलिया बहिन अब इस समय तुम अपने निर्दिष्ट कोठेपर जाकर कपड़े बदलो। मामीको बुलाकर कहा—'अफिलिया बहिनको उनका कोठा दिखा दो। देखो, बहिनको किसी प्रकारका कष्ट न होने पावे। सदा उनकी सेवा करती रहना।



सत्रहवाँ परिच्छेद



टामके नये मालिककी पत्नी

मिस अफिलियाके आनेके कई दिन बाद एक दिन भोजनके समय सेन्टक्लेयरने अपनी स्त्रीको पुकारकर कहा—मेरी!

तुम्हारे सुखके दिन आ गये। अब तुम्हें घरका कार्य न करना पड़ेगा। अब उसमें व्यस्त न होना होगा। अफि-लिया बहिन बड़ी चतुर हैं। वे सब गृह-कार्य सुचारु रूपसे कर लेंगी। तुम इस समय सहजमें ही विश्राम कर सकती हो। अतएव गृह-कार्यका भार इनके हाथ सौंप दो। ता-लियां इन्हें देदो।

मेरी—तुम्हारी बहिन आई हैं, इससे मुझे बड़ा आनन्द हुआ। किन्तु वे बहुत थोड़े समयमें समझ जायँगी कि तुम्हारे घरका कार्य करना कितना कष्टप्रद है। इस घरमें हमीं लोग नौकरोंकी दास-दासी हैं।

सेन्टक्लेयर—हाँ, मेरी बहिन क्रमशः घरकी बातें जान जायँगी।

मेरी—तुम समझते हो, इन खरीदे हुए दासोंसे हमलोगों-को सुविधा होती है, पर वास्तवमें इन लोगोंके घरसे चले जानेपर ही सुविधा है।

इसीपर इवाञ्जेलिन कुछ समय तक बड़े आश्चर्यके साथ अपनी माताकी ओर देखती रही, फिर बोली—मा! दास-दासियोंसे सुविधा न होनेपर उन्हें छोड़ ही देना अच्छा है। इनलोगोंको रखे क्यों हो—

मेरी—किसलिए ये दास-दासी हैं, यह मैं नहीं कह सक-ती। ये सब केवल एक आफत हैं। इनलोगोंके रहनेसे ही मैं अस्वस्थ हो गयी हूँ।

सेन्टक्लेयर—मेरी, भला बताओ! इस वृद्धा दासी मामीके घरमें न रहनेसे तुम्हें कितना कष्ट होता? मामीके न रहनेपर क्या तुम्हारा एक दिन भी चल सकता है?

मेरी—अवश्य, इन दास-दासियोंमें मामी सबसे अच्छी है, इसमें सन्देह नहीं। किन्तु मामी बड़ी स्वार्थी है। बड़ी

ही खुदगर्ज़ है! यह स्वार्थ-परता इसका जातीय-दोष व पैतृक-दोष है।

सेन्टक्लेयर—(मनका भाव छिपाकर, अति गम्भीर भावसे) स्वार्थ-परता भयानक पाप है!

मेरी—किन्तु मैं तो देखती हूँ कि मामीमें अत्यन्त स्वार्थ-परता भरी-है। मामी यह भली-भाँति जानती है कि मेरी शय्याके पास खड़े होकर रात्रिभर मेरा शरीर न सुहरानेसे तथा मुझपर पंखा न झलनेसे, मैं सो नहीं सकती। परन्तु इस पर भी किसी-किसी रात्रिको मामी सो जाती है। चार-पाँच रात जागनेके बाद जब वह एक रात्रिमें सो जाती है, तो उसको जगाना बड़ा कठिन हो जाता है। उस दिन उसे पुकारते-पुकारते मेरा गला बैठ जाता है। बार-बार पुकारनेपर भी वह नहीं उठती। कल रात्रिमें उसे जगानेमें मुझे बड़ा कष्ट उठाना पड़ा।

इवा—मा! गत रात्रिके पहिले मामी तुम्हारी शय्याके पास लगातार चार-पाँच रात्रि तक क्या नहीं बैठी रही?

मेरी—तूने यह किससे सुना है? हाँ, हाँ, मामीने तुम्हारे पास नालिश की होगी।

इवा—नहीं, नहीं, मा! मामीने मेरे पास कोई नालिश नहीं की। आप जो रात्रिमें अधिक अस्वस्थ हो गयी थीं, यही उसने कहा था।

सेन्टक्लेयर—मामी लगातार चार-पाँच रात्रि नहीं जाग सकती। दो-एक दिन जिना या रोजाके तुम्हारे पास रहनेसे क्या न बनेगा!

मेरी—सेन्टक्लेयर! मैं बहुत दिनोंसे जानती हूँ कि तुम्हारी भाँति नासमझ संसारमें बहुत कम हैं। यदि ऐसा न होता तो क्या इस प्रकारके बन्दोबस्तकी बात कहते? जानते

नहीं कि अपरिचित हाथके छू जानेसे मेरी नींद टूट जाती है! मामी यदि मुझपर कुछ प्यार करके जागे तो अच्छी तरह जाग सकती है। कितने ही दास-दासियोंकी स्वामी-भक्ति की कथायें सुनी हैं। किन्तु विधाताकी कैसी गति है! हमारे भाग्यमें एक भी प्रभु-भक्त दास-दासी नहीं बदी हैं।

मिस अफ़िलिया बड़ी गम्भीरताके साथ सेन्टक्लेयर तथा उनकी पत्नीका कथोपकथन सुन रही थीं। अबतक कुछ भी न बोली थीं। इसी समय सेन्टक्लेयरकी स्त्री मिस अफ़िलियाकी ओर देखकर कहने लगी—मैं मानती हूं कि मामीमें कुछ सद्भाव है। मामी मेरा सदैव सम्मान करती है। पर वह बड़ी स्वार्थी है। वह केवल अपने स्वामीकी ही बात लेकर व्यग्र रहती है। मामी मुझे लड़कपनसे ही पाल-पोष रही है। इसीसे विवाहोपरान्त यहां आनेके समयमें इसे अपने साथ लेती आई हूं। मामीका स्वामी हमारे पिताके कारखानेमें लोहारका कार्य करता है। बावा उसे छोड़ नहीं सकते। इसीलिए मामीको स्वामीका परित्याग कर यहाँ आना पड़ा। मैंने उसी समय मामीसे कहा कि अब उसे स्वामीसे फिर मिलने की सुविधा न होगी। इससे इस स्वामीको छोड़ दे, और यहाँ किसी नये स्वामीको ग्रहण कर ले। किन्तु वह किसी प्रकार भी नया स्वामी ग्रहण करना नहीं चाहती। मैंने बड़ी गलतीकी कि मामीको बाध्य करके उसका विवाह किसी दूसरेके साथ नहीं करा दिया। इसीसे इसका दिमाग़ बढ़ गया है। दास-दासी चाहे भले हों या बुरे, इन लोगोंको सदा दबाये ही रहना चाहिये।

यह सुनकर आफ़िलियाने पूछा-मामीके कितनी संतान हैं?

मेरी—हाँ, हाँ, भूतकी तरह काले-काले दो लड़के हैं।

अफिलिया—मुझे जान पड़ता है कि उन दोनों लड़कोंको छोड़ आनेसे ही, वह सदा दुखी रहती है।

मेरी-किन्तु वैसे दो काले भूतोंको अपने साथ ले आनेमें क्या विशेषता थी? उन दोनों लड़कोंको साथ ले आनेसे मामी उनको ही लेकर दिन-रात व्यस्त रहती। मामीका सारा समय उन्हीं लड़कोंके पीछे ही व्यतीत होता। मामी कैसी स्वार्थ-परायण है, यह तुम नहीं जानतीं। मैंने कितना ही कहा, फिर भी उसने यहाँ कोई नया स्वामी ग्रहण न किया। यह जानकर मेरा शरीर अत्यन्त अस्वस्थ हो गया है। उसके मेरे पास न रहनेसे काम नहीं चल सकता। किन्तु मामीको यदि आज दोनों लड़कोंको देखनेके लिए एक सप्ताहकी छुट्टी दे दूँ तो वह तुरन्त चली जायगी, और मेरा शरीर जो इतना अस्वस्थ है, वह इस विषयमें कुछ भी ध्यान न देगी। मैं निश्चय जानती हूँ कि क्रीतदास-दासियोंकी ज़ाति अत्यन्त स्वार्थ-परायण होती है।

सेन्टक्लेयर—(बड़े कष्टसे हँसी रोककर तथा मनोगत भाव छिपाकर) कैसी भयानक स्वार्थ-परता है। इस विषयमें विचार करनेसे हृदय सूख जाता है।

मिस अफिलिया सेन्टक्लेयरकी ओर एक टक देख रही थीं। उनकी भाव-भङ्गी देखकर बिना किसी प्रयासके ही उन्होंने जान लिया कि बड़े कष्टसे सेन्टक्लेयर अपने मनोगत भावोंको रोककर बातें कर रहे हैं।

सेन्टक्लेयरकी बात समाप्त होते ही उनकी स्त्री फिर कहने लगीं—देखो, मामीको मैं बराबर प्यार करती हूँ। मैंने उसे अच्छे-अच्छे कपड़े दिये हैं। इतने समय भरमें मैंने उसे केवल दो-तीन बार ही वेत्राघात किये हैं। सदा उसका तिरस्कार नहीं करती। अपनी खायी हुई जूठी उत्तम-उत्तम

वस्तुएँ उसे खानेको देती हूं। किन्तु सेन्टक्लेयरकी बात और क्या कहूँ। ये अपने दास-दासियाँ वाले नौकरके घरमें बैठकर ठीक जिस प्रकार हम लोग भोजन कर रहे हैं, उसी प्रकार भोजन करते हैं। हम लोगोंको इस प्रकार आनन्द मिलता है, यह समझ कर ही सब दास खराब हो गये हैं। किन्तु सेन्टक्लेयर किसी प्रकार मेरी बात नहीं सुनते। सेन्टक्लेयरसे यह बात कहते-कहते मेरा प्राणान्त हो रहा है।

सेन्टक्लेयर—(मनोगत भावोंको छिपाते हुए) मेरा भी प्राणान्त हो गया।

कोमल हृदया इवाञ्जेलिन ये सब बातें बड़े ध्यान पूर्वक सुन रही थी। उसके दोनों नेत्रोंसे छलछलकर जल गिरने लगा। कुछ देरके पश्चात् अपने आसनसे उठकर वह माताके पास गई और उसका गला पकड़कर बैठी।

माताने चौंककर पूछा—क्या चाहती हो ?

इवा—मा ! एक रात्रिभर मैं तुम्हारी शैयाके निकट खड़ी होकर मैं तुम्हें पंखा झलूंगी। तुम्हारा शरीर सुहराऊंगी। केवल एक ही रात्रि भर। मेरे रहनेसे तुम्हारी निद्रा भंग न होगी। मैं कई बार रात्रि-रात्रि भर जाग चुकी हूं। एक रात्रि तुम मामीको सोने दो। मैं एक रात्रि भर तुम्हारी शैयाके पास बैठी रहूंगी।

मेरी—यह भी एक अद्भुत लड़की है। ऐसी लड़की ता मैंने कहीं भी नहीं देखी।

इवा—मा ! मैं तुम्हारे पास बैठी रहूंगी। मामीको बड़ा दुख हुआ है। मैंने सुना है कि उसने लगातार दस बारह दिनसे सोने नहीं पाया। वह अपना माथा नहीं उठा सकती। खड़ी नहीं हो सकती।

मेरी—मामीकी ये सब चालाकी मैं जानती हूँ। मामी ठीक अन्यान्य दास-दासियोंकी भाँति हो गयी है। उसकी ये सब चालाकियाँ मैं तोड़ दूँगी। (फिर मिस अफिलिया को सम्बोधन कर कहा)—इन नौकर-नौकरानियोंको किसी प्रकार छुटकारा नहीं देना चाहिए। इन लोगोंको जरासा भी कष्ट होनेपर वे कोई कार्य नहीं कर सकते। किन्तु शारीरिक अवस्थताके कारण मैं प्रति दिन जो इतना कष्ट सहती हूँ वह तो किसीके सामने प्रकट नहीं करती। इस प्रकार चुपचाप कष्ट सहन करना मैं अपना कर्त्तव्य समझती हूँ।

मिस अफिलिया सेन्टक्लेयरकी स्त्रीकी ये बातें सुनकर हत-बुद्धि हो गईं। वे निश्चय न कर सकीं कि वे अपनी भौजाईको सान्त्वना देनेके लिए इस सम्बन्धमें किस प्रकारकी बातें करें। उसकी भ्रातृ-वधूने जिस प्रकार अपने अदृष्टको धिक्कारते हुए अपनी दुरवस्थाकी जैसी व्याख्या की है, वैसी दुरवस्था-के सम्बन्धमें कोई सहानुभूति प्रकाशक वाक्य उन्हें न मिला, इसलिए वे स्तम्भित हो गयीं। सेन्टक्लेयर उनको उस अव-स्थामें पड़ी हुई देखकर अब अपनी हँसी और न रोक सके। किन्तु मेरी अपने स्वामीको इसप्रकार हँसते हुए देखकर अत्यन्त क्रोधित हुई एवं घोर अत्याचार-निपीड़ित मनुष्यकी भाँति कहने लगी—अपनी शारीरिक अवस्थाकी बात कहने पर ही सेन्टक्लेयर हँस रहे हैं। मेरा कष्ट सेन्टक्लेयर कभी न समझेंगे। सेन्टक्लेयर सोचते हैं, मेरी यह शारीरिक अस्वस्थता कुछ है ही नहीं। किन्तु मेरा यह कष्ट उस विधाताके सिवा और कौन जान सकता है!

इस प्रकार मेरीके अपनी शोचनीय अस्वस्थता प्रकट कर लेनेपर सेन्टक्लेयर शीघ्रतासे जेबसे घड़ी निकालकर, क्या समय है, यह देखने लगे। इसके बाद घड़ी फिर जेबमें

रख 'मेरा आज निमंत्रण है" कहकर घरसे बाहर आये। इवा भी अपने पिताके पीछे-पीछे बाहर चली आई। सेन्टक्लेयर के बाहर चले आनेपर उनकी स्त्री फिर अफिलियाको सम्बोधनकर कहने लगी—देखा, सेन्टक्लेयरकी रहन-सहन? सेन्टक्लेयर एक बार भी नहीं सोचते कि मैं कैसा भयानक कष्ट,—कैसी दुस्सह यंत्रणा सह रही हूं। इस जन्ममें सेन्टक्लेयर मेरे दुखसे दुखी होंगे, मैं ऐसी आशा नहीं करती। इन कई वर्षोंसे शारीरिक अस्वस्थतासे मैं जो इतने कष्ट पा रही हूं, उन्हें क्या सेन्टक्लेयर कभी देखते हैं अथवा देखनेकी इच्छा भी करते हैं। किन्तु यदि मैं अन्यान्य स्त्रियोंकी भाँति अपना कष्ट कह-कह कर उन्हें विरक्त करती, तब वे समझ पाते कि गृहस्थीकी झंझट कैसी कठिन होती है। मैंने तो एक बार भी अपने कष्टकी कोई बात नहीं कही। जितने भी कष्ट होते हैं, वे सब मैं चुपचाप सहन करती हूं। अपने कष्ट और दुख प्राणान्त होने तक भी व्यक्त न करूंगी। इस प्रकारसे, मैं जितने अधिक कष्ट सहती हूं, सेन्टक्लेयर समझते हैं कि उनकी अपेक्षा अधिक कष्ट होनेपर भी मैं सहन कर सकूंगी।

इस बातके उत्तरमें क्या कहना होगा, यह भी मिस अफिलिया निश्चित न कर सकीं। इसलिए चुप ही रह गईं। सोचा कुछ बोलनेसे न जाने पीछे क्या उपद्रव खड़ा हो।

किन्तु मेरीने अपनी आँखोंका जल पोंछकर फिर अपनी गृहस्थीकी कथा आरम्भ की। घरकी जिन्स-पत्र चीज-वस्तु, कपड़ा-लत्ता, खाने-पीनेका सामान आदि कैसे रखना होगा, यह सब उसने अफिलियाको समझा दिया। उपसंहार में यह कहकर अपना वक्तव्य समाप्त किया कि मेरे सिरकी रुग्णताका समय आ जानेपर मैं कुछ न कह सकूंगी। अत-

एव उस समय किसी कार्यके विषयमें मुझसे न पूछकर आप स्वयं अपने मनसे ही कर लीजियेगा। इन सब वस्तुओंके विषयमें अभी ही मैंने सब बतला दिया। किन्तु इवाके सम्बन्धमें—इवाका सदैव ध्यान रखना उचित है।

मिस अफिलिया—इवा बड़ी अच्छी लड़की जान पड़तीहै।

मेरी—इवा एक बड़ी अद्भुत लड़की है। इवाने मेरी प्रकृतिका एक अंश भी नहीं पाया है। (यह कहकर उसने दीर्घ निश्वास त्याग किया)

अफिलिया मन ही मन कहने लगीं कि इवाने तुम्हारी प्रकृतिका कुछ भी अंश नहीं पाया, यह अच्छा ही हुआ।

मेरी—इवा सदा नौकरानियोंके साथ रहती है। छोटे लड़के या लड़कियाँ दासियोंके पास रहें तो कोई हानि नहीं। मैं भी लड़कपनमें अपने माता-पिताके नौकरोंके पास रहती थी। उनके लड़कोंके साथ मैं भी खेलती थी। मेरी उससे कोई हानि न हुई। किन्तु इवा दास-दासियोंकी संतानको अपने बहिन भाईकी भाँति समझती है। यही बड़ा दोष है। इसका यह दोष दूर करना तो दूर रहा, सेन्टक्लेयर और भी कार्य तथा वाक्यसे इवाको इस विषयमें उत्साह प्रदान करते हैं। असल बात कौन जाने, सेन्टक्लेयर दास-दासियों तथा वेतनभोगी नौकरोंका आदर करते हैं, किन्तु अपनी स्त्रीको एक दासीकी भाँति फेंक रखा है। स्त्रीको क्या कष्ट है, भूलकर भी वह नहीं देखते। नौकरोंके लिए कैसे नियम होने चाहिए सो मैं भलीभाँति जानती हूँ। गुलामके साथ गुलाम की भाँत तथा दासोके साथ दासीकी भाँति व्यवहार करना होता है। इन लोगोंको सदैव शासनमें न रखनेसे क्या चल सकता है? मैं बाल्यकालसे ही ये सब बातें समझ रही हूँ। इवा जब बड़ी होगी, उसे जब घर-गृहस्थी सँभा-

लनी पड़ेगी, तब वह इस तरहके व्यवहारसे कैसे काम चला-वेगी, यह मेरी समझमें नहीं आ रहा है। मैं भी दास-दासियोंके प्रति दया करती थी और अब भी करती हूँ। किन्तु उन दासोंको यह समझा देना होगा, कि वे क्रीत दास हैं, और जिस प्रकारसे रखा जायगा, उन्हें उसी प्रकार रहना होगा। इवा मेरे इस उपदेश-मंत्रको ग्रहण करनेमें एक दम असमर्थ है। वह नहीं समझती कि दास-दासियोंसे हमारा पद उच्च है। वह यह भी नहीं समझती कि दास-दासियोंकी संतानको भ्राता-भगिनीके समान मानना बड़ा अन्याय है। सुना तो, इवाने इस समय क्या कहा! मामीको एक दिन सोनेका अवसर देगी और स्वयं मेरे सिरहाने बैठकर रात्रि भर हवा करेगी। इवाके ऊपर सदैव ध्यान न रखनेसे वह सदा ऐसा ही अन्याय करनेको तैयार हो जाया करेगी।

बहुत देरतक वार्तालाप करनेपर मिस अफिलियाको कुछ-कुछ साहस होने लगा। इसलिए अपनी मामीकी बातके प्रत्युत्तरमें उन्होंने कहा—देखिये, इन दास-दासियोंमें भी मनुष्यात्मा है, जान पड़ता है, आप इस बातपर विश्वास करती हैं। तब इन लोगोंके थक जानेपर इन्हें विश्राम करने का समय देना उचित है।

मेरी—अवश्य! आप क्या समझती हैं कि मैं इन्हें विश्राम करनेका अवकाश नहीं देती। मैं सदैव इन्हें सोनेका समय देती हूँ। किन्तु मामीको निद्राकी मूर्त्ति ही कहना चाहिए। वह काम करते-करते सो जाती है। वह सिलाई करती-करती ऊँघने लगती है। रात्रिमें हवा करनेके समय भी सो जाती है। दास-दासियोंका ऐसा आचरण क्या कभी सह्य हो सकता है। अफिलिया बहिन! क्या कहूँ। मैं अपने दुःखको कभी दुःख नहीं

समझती । मेरा ऐसा स्वभाव ही नहीं है कि अपने कष्टका हाल, अथवा अपनी शारीरिक अस्वस्थताका दुख किसीसे कहूँ। मेरी ऐसी प्रकृति ही नहीं। मेरा शरीर भी इतना दुर्बल है कि ये सब बातें लेकर मैं झगड़ा-विवाद नहीं कर सकती। किन्तु तुम्हारे भाई मेरे कष्टको कुछ नहीं समझते। इसीसे मुझे और अधिक कष्ट होता है। इसीलिए मुझे इतना भोगना पड़ता है। मैं विश्वास करती हूँ कि तुम्हारे भाईका मन अच्छा है। किन्तु पुरुषजाति सदासे ही स्वार्थपरायण तथा अविचारी है। मेरा तो ऐसा ही विश्वास है।

मिस अफिलियाने इतनी देरके पश्चात समझ पाया कि उनकी मामी मेरी कैसी स्त्री है। इसलिए विदेशी राजदूतकी भाँति प्रत्येक बात कहनेके पूर्व उसका परिणाम सोचने लगीं और उन्होंने मनमें यह स्थिर कर लिया कि जब तक बिना कुछ बोले रह सकूँगी, तब तक चुप रहूँगी। किन्तु यदि अन्तमें कुछ बोलना ही पड़ेगा तो दो-एक शब्दोंसे ही काम चलाऊँगी। यही सोचकर वे चुपचाप रहीं एवं पासमें रखा हुआ काँटा और उनको लेकर कुछ बिनना आरम्भ किया।

मेरी मिस अफिलियाके मनोगत भावोंको समझनेमें बिलकुल असमर्थ थी, स्वार्थ-परायण मनुष्य किसी विषयके सम्बन्धमें दूसरे का मनोगत भाव नहीं समझ सकता। इसलिए मेरी क्रमागत गृह-सम्बन्धी गूढ़ तत्वोंको ही मिस अफिलियाके निकट प्रकट करने लगी। वह कहने लगी—देखो अफिलिया बहिन, विवाह हो जाने के पश्चात मैं अपनी सब सम्पत्ति अपने साथ यहाँ ले आई हूँ और साथही क्रीत-दास-दासियोंको भी अपने साथ-साथ लेती आई। इसलिए अपनी दास-दासियोंके सम्बन्धमें मैं नियमानुसार यथेच्छ व्यवहार करनेकी क्षमता रखती हूँ। सेन्टक्लेयर अपने सम्पत्ति तथा

अपनी दास-दासियोंके साथ अपनी इच्छानुसार व्यवहार कर सकते हैं, किन्तु मेरे कार्यमें हस्तक्षेप करनेका उन्हें कोई अधिकार नहीं है। इन दास-दासियोंके साथ उनके व्यवहार की एक भयानक प्रणाली देखती हूँ। उन सबको कभी दण्ड-गृह नहीं भेजते। दण्ड-गृहमें बेत लगे बिना क्या ये कभी दुरुस्त हो सकते हैं? सेन्टक्लेयर कहते हैं कि तुम्हारे और मेरे सिवा और कोई इनको न मार सकेगा। मैं तो इतनी दुर्बल हो गयी हूँ, क्या मैं इन्हें सदैव मार सकती हूँ? और सेन्टक्लेयर स्वयं तो अपराध करनेपर भी इनको नहीं पीटते। वे तो कभी इनपर हाथ उठायेंगे नहीं और मेरी यह दशा है! भला तुम्हीं कहो, यह कैसी बुरी अवस्था है?

अफिलिया—मैं तुम्हारी दास-दासियोंके विषयमें कुछ भी नहीं जानती। हमारे उत्तर-प्रदेशमें दासत्व-प्रथा नहीं है। परमेश्वर को धन्यवाद है कि हम लोगोंको इस विषयमें कुछ जानने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती।

मेरी—बहिन! कुछ दिन यहाँ रहो, सब जान जाओगी, यथेष्ट जान जाओगी। तुम्हें ज्ञात हो जायगा कि ये अभागे दास-दासी कितने दुःखदायक हैं—यह कहते-कहते मेरीके दुर्बल शरीरमें उसी क्षण बलका सञ्चार हुआ एवं वह उस समय बड़ी तेजस्विनी जान पड़ने लगी। वह फिर कहने लगी—देखोगी, कि इन सब दास-दासियों को लेकर गृहस्थी चलाना कितना कठिन कार्य है। किन्तु सेन्टक्लेयरसे इस विषयमें कुछ कहना बिल्कुल व्यर्थ है। वे कहते हैं कि इन लोगोंको तुम्हींने ऐसा दुष्ट तथा शठ बना डाला है। तुम्हीं ने इन्हें ऐसी कुशिक्षा दी है। तुम्हींने इन लोगोंको खराब कर डाला है। तुम भी यदि इन्हींकी भाँति दासी होतीं, तो ऐसी दुष्टा होतीं। किन्तु इन सब बातोंका मतलब मैं नहीं

समझ सकती। मैंने किस प्रकार दास-दासियोंको नीच घना डाला ? मैंने कैसे इन लोगोंको खराबकर डाला ?

अफिलिया—तुम इस बातपर विश्वास करो कि ये दास-दासियाँ तथा हमलोग एक ही रक्त-मांस द्वारा तथा एक ही परमेश्वर द्वारा उत्पन्न किये गये हैं।

मेरी—इसपर मैं विश्वास नहीं करती। ये सब काले तो नीच जातिके हैं।

अफिलिया—इन लोगोंमें मनुष्यात्मा तो है ?

मेरी—इसपर मैं विश्वास करती हूँ। इन लोगोंमें आत्मा है ! किन्तु ये कभी गोरोंके बराबर नहीं हो सकते। काले क्या कभी गोरोंके समान हो सकते हैं ? असम्भव, असम्भव ! मुझे स्मरण है कि सेन्टक्लेयरने एक बार कहा था कि मुझसे वियोग होनेपर जिस प्रकार तुम्हें दुःख होता है, मामी भी ठीक वैसा ही दुःख, अपने स्वामीसे बिछुड़ जानेके कारण, पा रही है। किन्तु उसी दिनसे सेन्टक्लेयरके प्रति मेरा प्रेम घटने लगा। कौन बुद्धिमान आदमी मामीके साथ मेरी तुलना करेगा ? मैं जिस प्रकार अपने स्वामीको प्यार करती हूँ, मामी उस प्रकार अपने स्वामीको प्यार नहीं कर सकती। मामीके साथ मेरी तुलना कदापि नहीं हो सकती। किन्तु सेन्टक्लेयरकी तरह अविवेकी लोग क्या यह समझ सकते हैं कि जैसे मैं इवाको चाहती हूँ, वैसे ही मामी भी अपने काले भूतोंकी तरह दोनों लड़कोंको चाहती है। जान पड़ता है, यही सोचकर, उन्होंने एक दिन मुझसे कहा कि मामीको एक सप्ताहकी छुट्टी देदो ताकि वह अपने दोनों लड़कोंसे मिल-भेंट आवे। यह बात सुनकर मैं अपने क्रोधको न रोक सकी। ऐसी अवस्था होनेपर भी मैं मामीको छुट्टी दूँगी ? देखो, मैं मामीके प्रति कभी क्रोध प्रकट नहीं करती। किन्तु सेन्टक्लेयरकी बात-

नीत अथवा आचरण जब एकदम असह्य हो उठता है, तब मैं अपना क्रोध और नहीं रोक सकती। मैंने मनमें निश्चय कर लिया था कि सब यातनायें, सब प्रकारके कष्ट, चुपचाप सहन करूंगी, कभी कोई बात न कहूँगी, कभी क्रोध न करूंगी। किन्तु सेन्टक्लेयरकी उस दिनकी बात मुझसे सहन न हो सकी। उस समय मैं क्रोधान्ध हो गयी। उस समय मुँहमें जो आया मैंने वही कह डाला। उसके पश्चात् सेन्टक्लेयर तीन दिनतक मुझसे कुछ नहीं बोले। मैंने भी उनसे कोई बात-चीत नहीं की। किन्तु उस समयसे फिर उन्होंने मामीको छुट्टी देनेके लिए नहीं कहा।

ये बातें सुनकर मिस अफिलियाने पहले कुछ कहनेकी इच्छा की। किन्तु फिर हठात् न जाने क्या सोचकर कुछ न कहा। वे शीघ्रतासे उठकर एक दूसरे कमरेमें जाने लगीं। जिस भावसे वे उठीं, उसे देखकर तो कोई भी आदमी उनके मनोगत भावोंको अनायास ही समझ ले सकता था परन्तु मेरीको इतनी समझ न थी कि वह मिस अफिलियाके मनोगत भावोंको समझ सके। अफिलियाके जानेके समय उसने कहा—अब तो समझ गयी होंगी कि गृहस्थीका काम कितना दुःखदायी होता है! इस घरमें दास-दासियोंपर शासन नहीं है। जिस घरमें दास-दासियाँ इस प्रकार सुख-स्वच्छन्दतासे विचरती हैं, वह गृह श्मशानके तुल्य है। इस दुर्बलावस्थामें भी मैंने अपनी शय्याकी बगलमें चाबुक रख छोड़ा है। किन्तु इतनी दुर्बल हो गयी हूँ कि पाँच-छ चाबुक मारनेपर ही थक जाती हूँ। अन्यान्य लोगोंकी भाँति सेन्टक्लेयरके इन्हें दण्ड-गृहमें भेजनेपर ही मेरा कष्ट दूर होगा!

अफिलिया—दण्ड-गृह क्या?

मेरी—दास-दासियोंको ठीक रखनेके लिये दण्ड-गृह

है। यहाँ म्युनिसिपैलिटीके नियुक्त किये हुए आदमी दास-दासियोंको बेत लगाते हैं। वे हरएक दास-दासीको बेत लगानेके लिए चार पैसा टैक्स लेते हैं। चालीस-पचास बेत तो लोग अपने घरपर ही लगा लेते हैं। किन्तु सौ-दो सौ के लिए दण्ड-गृहमें भेजनेसे ही अच्छा होता है।

अफिलिया—तुमने कहा है कि सेन्टक्लेयर दास-दासियोंको बेत नहीं लगाते तो क्या उनको दण्ड-गृह भेजते हैं?

मेरी—पुरुषका शासन अन्य प्रकारका है। दास-दासी भी जितना पुरुषोंसे डरती हैं, उतना स्त्रियोंसे नहीं। सेन्ट-क्लेयरके एक बार असंतोष प्रकट करनेपर दास-दासी सब बहुत डर जाती हैं। वस्तुतः सेन्टक्लेयर चाहनेसे सहजमें ही इनपर शासन कर सकते हैं। किन्तु वे बड़े आलसी हैं कुछ नहीं करेंगे। मेरे बेत लगानेपर भी ये दुरुस्त नहीं होते। किन्तु सेन्टक्लेयरके रञ्चमात्र भी विरक्ति प्रकट करने-पर ये भय और त्राससे कांपने लगते हैं। आलस्य छोड़ देनेपर सेन्टक्लेयर अनायास ही इन्हें ठीक रख सकते हैं।

इसी समय सेन्टक्लेयरने घरमें प्रवेश किया वे कह उठे हाँ वही पुराना गीत। वही आलस्यकी पुरानी कहानी आरम्भ हुई है। इन आलसी दास-दासियोंको इस आलसीपनके लिए घोर अन्धकारसे पूर्ण नरकमें जाना होगा। विशेषतः इन लोगोंकी सुस्ती छुड़ानेके लिए हम स्वामी-स्त्री सदा सदृष्टान्त-स्वरूप इनके सामने रहते हैं, फिर भी इनकी सुस्ती नहीं छूटती। बड़े आश्चर्यका विषय है। मेरी दिन-रात खटियेपर पड़ी रहती है, मैं सदा ब्राण्डीकी बोतल तथा इन लोगों-को लेकर व्यस्त रहता हूँ। भोजन करनेका भी अवकाश नहीं छोड़ता। हम लोगोंके समान ऐसा अच्छा आदर्श देख-

कर भी इन दास-दासियोंके चरित्रका संशोधन न हो, यह कितने आक्षेप और आश्चर्यका विषय है !

मेरी-सेन्टक्लेयर! तुम इस समय चुप रहो, यह सब अच्छा नहीं है। ये सब बातें नहीं सुनना चाहती।

सेन्टक्लेयर—मैंने अच्छी बात नहीं की ? मैं सदा जैसी बातें करता हूं, वैसी ही कर रहा हूं। तुम सुस्तीको महापाप समझती हो, मैं भी तुम्हारा ही समर्थन करता हूं।

मेरी—तुम्हारी यह सब दिल्लगी मैं जानती हूं।

सेन्टक्लेयर-तुम इसे दिल्लगी समझती हो ?

मेरी—तुम सदा मुझे सताना चाहते हो। बिना मुझे सताये तुम्हारी तृप्ति नहीं होती।

सेन्टक्लेयर—मेरी! अब इस समय इन सब बातोंकी कुछ आवश्यकता नहीं। तुम मेरे पास आओ। मैं कुछ समयके लिए तुमसे संधि स्थापित करता हूं। मैं अडाल्फ-के साथ झगड़ा करके बड़ा विरक्त हुआ हूं।

मेरी-अडाल्फने क्या किया है ? यह गुलाम बड़ा ढीठ हो गया है। मैं चाहती हूं कि एक बार उसे मेरे अधीनकर दो। मैं उसका ऊंचा मस्तक झुका दूंगी।

सेन्टक्लेयर—अडाल्फका अब जामा और रुमाल न होने से काम नहीं चल सकता। वह मेरे कपड़ोंके सन्दूकसे मेरे छ-सात जामे लेकर पहिरता है। मैंने उसे एक बार समझा दिया है कि मैं उसका मालिक हूं और वह मेरा नौकर है !

मेरी-किस प्रकार समझा दिया ?

सेन्टक्लेयर—मैंने उससे कहा कि तुम्हें अच्छे-अच्छे कपड़े पहिरनेका शौक है तो मैं तुम्हें इसी समय एक दर्जन रुमाल तथा कई एक जामे अलग किये देता हूं एवं सावधान कर देता

हूँ कि भविष्यमें ऐसा कभी मत करना। मेरे पहिरनेके कोई कपड़े अपने व्यवहारमें मत लाना।

मेरी–सेन्टक्लेयर! सेन्टक्लेयर! तुम क्या चाकरोंपर शासन करना कभी न सीखोगे? तुम इन सबोंको एक दम नष्ट ही कर डालोगे?

सेन्टक्लेयर–इसमें तो मैं कुछ दोष नहीं देखता। मैं उसे किसी प्रकारकी अच्छी शिक्षा नहीं देता। धीरे-धीरे वह चोरी करना सीख गया है। मेरे शासन करनेपर भी वह चोरी करेगा। इसलिए उसे कई जामे अलगकर देनेसे चोरी करनेकी कोई आवश्यकता न होगी।

इसी समय मिस अफिलियाने सेन्टक्लेयरको सम्बोधन करके कहा–तब तुमने पहिलेसे ही अपने दास-दासीयोंको सद्शिक्षा क्यों नहीं दी?

सेन्टक्लेयर–बहिन! उन सब बातोंकी कोई आवश्यकता नहीं। सुस्ती ही सारी बुराईका जड़ है। मेरी सुस्तीके कारण ही यह सब हुआ है।

अफिलियाने सारे दिन बैठकर मेरीकी बातें सुनी थीं। बड़े कष्टसे अपने मनोगत भावोंको छिपा रखा था। इस समय अवसर पाकर उन्होंने अपने हृदय-कपाट खोल दिये। वे कहने लगीं—भाई! इस प्रकार क्रीत-दास-दासी रखनेसे तुम्हारे देशके लोगोंके हाथमें एक बड़ा कर्त्तव्य आ गया है। ऐसा कर्त्तव्य, ऐसा दायित्व, मैं सम्पूर्ण पृथ्वीका अधिकार प्राप्त होनेपर भी, ग्रहण करनेमें सहमत नहीं हो सकती। इन दास-दासियोंको शिक्षा न देने, पवित्र खीष्ट्रीय धर्ममें दीक्षित न करनेसे, इनलोगोंकी आध्यात्मिक तथा नैतिक उन्नतिका साधन न करने तथा इनके साथ मनुष्यताका व्यवहार न

करनेसे, निश्चय ही परमेश्वरके विचारमें दण्डित होना पड़ेगा। प्रभु यीशु खीष्टके निकट तुम लोग अपराधी हो रहे हो!

सेन्टक्लेयर—बहिन! इन सब बातोंकी आवश्यकता नहीं। यीशु खीष्टका पवित्र नाम लेकर गड़बड़ी करनेसे क्या होगा? तुम इधर आओ। एक गाना गाओ। मैं पियानो बजाता हूँ। यह कहकर वे पियानोके पास आ बैठे।

दो-एक गाने गाये जानेपर सेन्टक्लेयरने कहा—बहिन, तुमने अच्छा उपदेश दिया है। इस प्रकारका उपदेश देनेसे जान पड़ता है, तुम कुछ परिमाणमें कर्त्तव्य-साधन करती हो। किन्तु मुझे उपदेश देनेसे क्या होगा? कोई भी उपदेश मेरे हृदयको स्पर्श नहीं कर सकता। उनसब बातोंको सुनकर उनकी स्त्री मेरी बोली—इसका तो मैं कोई प्रयोजन नहीं देखती। दास-दासियोंके साथ हमलोग जैसा दुर्व्यवहार करते हैं, इस देशमें दूसरा और कोई नहीं करता। मैंने भी दास-दासियोंको बहुतसे उपदेश दिये हैं। धर्मकी बातें बतलायी हैं। किन्तु किसीसे भी इनका आचरण ठीक नहीं होता। ये यदि चाहें तो प्रत्येक सप्ताह गिरजाघर जा सकते हैं। किन्तु ये पादरीसाहबके उपदेशका एक अक्षर भी नहीं समझ सकते। मेरे कोई-कोई दास प्रत्येक रविवारको गिरजाघर भी गये हैं। किन्तु मैंने तो पहिले ही कह दिया है कि यह नितान्त नीच जाति है और चिरकालतक ऐसी ही रहेगी। इनलोगोंकी उन्नतिकी सम्भावना कभी नहीं है। अफिलिया बहिन! मैंने इन सब विषयोंकी परीक्षा कर ली है। आपने तो अभी परीक्षा करके देखा नहीं!

मिस अफिलियाने मेरीकी बातका कोई उत्तर नहीं दिया। सेन्टक्लेयर हँसकर गाने लगे। मेरी सेन्टक्लेयरको हँसते देखकर क्रोधित हो बोली—सेन्टक्लेयर! तुम शान्त रहो।

तुम जानते नहीं कि मेरे सिरमें बड़ी पीड़ा हो रही है। इस प्रकार हँस देनेसे क्या मैं घरमें रह सकूँगी ?

सेन्टक्लेयर—अब फिर न हँसूँगा। बतलाओ, तुम्हारी सुख-शान्तिके लिये और क्या-क्या करना होगा ? कहो, और और क्या करूँ ?

मेरी—सेन्टक्लेयर ! मैं चाहती हूँ कि तुम मेरे दुःखमें तनिक दुखी हो, मेरा कष्ट तुम कभी नहीं समझ सके। इस जन्ममें मुझपर तुम्हारा प्रेम कभी न होगा।

सेन्टक्लेयर—अरे, मेरा अपवाद करने वाली प्राण-प्रिये ! मैं तुम्हें प्यार नही करता ?

मेरी—मुझसे ऐसी बातें न करो—ये सब बातें सुननेसे मुझे बड़ा कष्ट होता है।

सेन्टक्लेयर—तो मुझे सिखा दो कि तुम्हारे साथ किस प्रकार बात-चीत करना होगा। मैं उसी प्रकार बात-चीत किया करूँगा। इस वार तुम्हें सुखी करनेके लिए मैं दृढ़ प्रतिज्ञ हुआ हूँ।

इसी समय बाहरके बरामदेमें हँसीका शब्द सुनकर सेन्टक्लेयर बाहर गये। इसी सुमिष्ट हँसीने सेन्टक्लेयरको जीवित कर रखा है। यही सुमिष्ट हँसी उनके हृदयमें शान्ति-सुधा वर्षण करती है। सेन्टक्लेयर बरामदेमें गये। अफिलिया भी उनके पीछे-पीछे चलीं। दोनोंने देखा कि इवा टामकी गोदमें बैठी है। टामके गलेमें फूलोंकी एक माला पहिनाकर इवा 'ही-ही' कर हँस रही है, और कह रही है—टामकाका इस समय तुम्हें कैसा दिखायी पड़ता है ? टाम बच्चोंको बहुत चाहता है। वह अत्यन्त स्नेह-पूर्ण दृष्टिसे इवाके मुखकी ओर ताकता हुआ धीरे-धीरे हँस रहा है। अफिलियाने इवाको टामके गलेमें माला पहिनाते देख-

कर कहा—सेन्टक्लेयर! इवाको दासोंके साथ इस प्रकार मिलने देना अच्छा नहीं।

सेन्टक्लेयर—क्यों, इसमें दोष क्या है? तुमलोग तो कुत्तोंको लेकर खेलाती हो तथा उनका मुँह चूमती हो। इन दास-दासियोंको क्या कुत्तोंसे भी घृणित समझती हो?

अफिलिया—तुमने जो कहा, वह ठीक है। किन्तु देशाचारके साथ ये संस्कार बद्धमूल हो गये हैं। ख्रीष्टीय धर्म भी इन संस्कारोंकोदूर नहीं कर सकता।

सेन्टक्लेयर—तुम्हारे उत्तर-प्रदेशमें दासत्व-प्रथा न रहनेपर भी तुम लोग दास-दासियोंको नीच जाति कहकर उनसे घृणा करते हो। तुम लोग भी दास-दासियोंको घृणित कीट-पतङ्ग समझते हो। उनकी उन्नतिके लिये पादरी नियुक्त करते हो। किन्तु उनका स्पर्श करनेमें अपार घृणा करते हो दास-दासियोंका सब प्रकारसे स्पर्श बचानेके लिए ऊँचे स्थानपर खड़े होकर खींचियों ख्रीष्टीयधर्म उनलोगोंके लिए नीचे छितरा देते हो। जिस प्रकार कुत्ते अथवा बिल्लीको कोई एक टेबिलपर भोजन नहीं करने देता किन्तु उसके नीचे खाद्य-पदार्थ छोड़ देता है, उसी प्रकार तुमलोग भी इनको अपर्याप्त आध्यात्मिक आहार प्रदान करते हो। इन लोगोंको समुन्नत बनाते हो। अफ्रिका-प्रदेशमें इनलोगोंकी उन्नतिके लिए पादरी भेजते हो। तुम लोग शीघ्र ही संसारका उद्धार करोगे, इसमें कुछ संदेह नहीं

आफिलिया—सेन्टक्लेयर! मैं स्वीकार करती हूँ कि हमारे देशमें दासत्व-प्रथा न रहनेपर भी हमलोग नौकरोंके प्रति उपयुक्त व्यवहार नहीं करते। पर इसका कारण केवल बद्धमूल कुसंस्कार है।

सेन्टक्लेयर-मैं तुम लोगोंके उस संस्कारके सम्बन्ध, कुछ कहना नहीं चाहता। किन्तु हमारे देशमे इन सब दासे दासियोंको समय-समयपर सन्तान-सन्ततिसे अलग होकर रहना पड़ता है। इसलिए इन लोगोंमेंसे अनेक छोटे-छोटे बच्चोंको गोदमें लेनेमें विशेष आनन्द-प्राप्त करते हैं। इसीलिए मैं इन लोगोंको इवाको गोद लेनेसे नहीं रोकता।

अफिलिया-तुम्हारी इवाके हृदयमें दीन लोगोंके प्रति बड़ी दया है। टाम इवाका बड़ा प्रिय-पात्र है। इवा ध्यान-पूर्वक टामका गाना सुनती है। सदा टामके पास रहना पसंद करती है। और टाम इवाको बहुत चाहता है। इवा सचमुच ही देव-कन्या है। उसे देखकर सबका हृदय आनन्द-रसमें आप्लावित हो जाता है। दासत्व-प्रथा-प्रचलित, कष्टकर, कंटक पूर्ण-भूमिके सदृश इस दक्षिण-प्रदेशमें, इवा प्रस्फुटित गुलाबकी भाँति सौन्दर्य-विस्तार कर रही है। सेन्टक्लेयर! दास-दासियोंके साथ व्यवहारके सम्बन्धमें तुमने जो कुछ कहा, वह सुनकर मुझे ऐसा जान पड़ता है कि तुम वास्तवमें एक धर्म-प्रचारक हो।

सेन्टक्लेयर-मैं धर्म-प्रचारक हूँ। पर तुम्हारे इस देशका धर्म-प्रचारक तो कदापि नहीं हूँ। विशेषतः मैं धर्मकी बात केवल मुखसे कहता हूँ। मैं कोई भी धर्मोपदेशका पालन नहीं करता।

अफिलिया-धर्मोपदेशका पालन न करके केवल मुखसे कहनेसे क्या होता है?

सेन्टक्लेर-पालन करना बड़ा कठिन है। मुखसे बड़ी आसानीसे कहा जा सकता है। बहिन! मैं श्रम-विभागकी प्रणाली ग्रहण करूँगा। उपदेशके पालनका भार तुम्हारे ऊपर है। मुखसे कहनेका भार मैंने ग्रहण किया।

कर इस प्रकार सेन्टक्लेयरके घरमें टाम सुख पूर्वक समय बिताने लगा। टामको किसी प्रकारका कष्ट न रहा। इवा टामको बहुत चाहती थी। इसलिए वह सदा इवाके साथ-साथ रहता था। सेन्टक्लेयर दास-दासियोंको सदा उत्तम वस्त्र पहिने देखना पसंद करते थे। उन्होंने टामको भद्र पुरुषों-के योग्य वस्त्र पहिननेको दिये। टाम जब कभी वे कपड़े पहिन इवाको साथ लेकर घूमने जाता था तो अपरिचित लोग उसे देखकर कार्थेजका लार्ड विशप समझते थे। टाम-को कोई कार्य न करना पड़ता था। केवल कभी-कभी अस्त-बलमें जाकर घोड़ोंका निरीक्षण भर करना पड़ता था। इस प्रकार टाम सेन्टक्लेयरके घर रहने लगा।

अठारहवाँ परिच्छेद

गिरजाघर

रविवार आया। सेन्टक्लेयरकी स्त्री मेरी गिरजाघर चलीं। मेरी इधर दिन-रात मन-कल्पित रोगके कारण खटिये-पर पड़ी रहनेपर भी प्रति रविवारको गिरजाघर जाया करती थीं। इससे भजनालयके पादरीसाहब उनपर विशेष संतुष्ट रहते थे। पादरीसाहब सदा कहते थे कि मिसेज़ सेन्टक्लेयर धर्म-जीवनका एक ज्वलंत आदर्श हैं। शारीरिक अस्वस्थता, आंधी, पानी किसीसे भी उनका नियमित गिरजाघर आना, नहीं रुक सकता। उनकी प्रबलधर्म-तृष्णा रविवारके दिन बिजलीकी भाँति इस दुर्बल शरीरमें यथेष्ट बल प्रदान कर देती

है। आज मेरी मुकामणिसे जड़े, जरीके काम किये हुए, रविवार वाले वस्त्र पहनकर भजनालय जानेका उद्योग करने लगी। भजनालय जानेके पूर्व उसके वस्त्रादि लाकर देनेमें जिस दासीको जहां कुछ विलम्ब होता था, उसकी पीठपर उसी क्षण बेत पड़ता था। प्रबल धर्म-तृष्णा उस समय बिजलीकी भाँति उसका हाथ चलाती थी। बाहर गाड़ी तैयार है, अफिलिया भी इवाको साथ लेकर मेरीके दो तल्लेमें उतरी आरही हैं। सीढ़ीपर मामीको देखकर इवा इससे कुछ बात-चीत करने लगी। मेरी और अफिलिया गाड़ीपर चढ़ी। इवाको विलम्ब करते देखकर मेरी बार बार उसे पुकारने लगी। पाठको! इवा मामीसे क्या कहती हैं, यह सुननेका कौतूहल आप लोगोंको हो सकता है। अच्छा तो सुनिए—

इवा—मामी! तुम दिन-रात बड़ा कष्ट सहन कर रही हो। तुम्हारा कष्ट देखकर मुझे बहुत दुःख होता है। तुम क्षण भर भी सोने नहीं पाती।

मामी—बेटी! मुझे कष्ट होता है तो होने दो, तुम उसके लिए मत रोओ। इस समय पीड़ाके मारे उठानेकी शक्ति नहीं, किन्तु तुमको दुखित देखकर मेरे मनको बड़ा कष्ट होता है।

इवा—मामी! आज तुम्हें जो गिरजाघर जानेकी छुट्टी मिली है, इससे मैं संतुष्ट हुई। मामी, तुम मेरी नासदानी लेलो। मैंने माको देखा है कि सिरमें पीड़ा होनेपर, वे इस नास-दानीको नाकके पास रखती हैं, उससे उनके मस्तककी पीड़ा दूर हो जाती है।

मामी—मैं भला तुम्हारी यह सोनेकी नासदानी लूंगी? ऐसी सुन्दर नासदानी और कहीं नहीं देखी। बेटी! तुम्हारा भला हो! ऐसी नासदानी क्या मुझे सजती है?

इवा—लोगी क्यों नहीं? तुम्हें अवश्य लेना पड़ेगा। मुझे इस नासदानीकी कोई आवश्यकता नहीं। इससे तुम्हारे सिरकी पीड़ा छूट जायगी। तुम्हें अवश्य लेनी पड़ेगी।

यह कहकर इवाने मामीको नासदानी दी और चट-पट सीढ़ीसे उतर गयी।

मामीने मन ही मन कहा—हा परमेश्वर! मेरे प्रति बेटी-का कैसा प्यार है! सम्पूर्ण दास-दासियोंके प्रति कैसी दया है। ईश्वरने बेटीको केवल दया-माया देकर ही उत्पन्न किया है।

इवाके गाड़ीपर चढ़ जानेपर उसकी माताने अत्यन्त क्रुद्ध होकर पूछा—इतनी देर कहाँ लगायी?

इवा—मा! मैं मामीको अपनी सोनेकी नासदानी देनेके लिए खड़ी थी। मामीको वह नासदानी दे आयी हूँ।

मेरीने कुछ अधिक क्रोधित होकर कहा क्या वह सोनेकी नासदानी मामीको दे आयी है? तुम्हें भले-बुरेका ज्ञान कब होगा? इवा जाओ, अभी जाकर वह नासदानी उससे लौटा लाओ। जाओ, जाओ अभी जाओ।

इवा माताकी यह बात सुनकर बड़ी दुखी हुई। मन ही मन अपार कष्ट-बोध करने लगी। धीरे-धीरे गाड़ीसे उतरी। किन्तु सेण्टक्लेयर उस समय वहीं उपस्थित थे, उन्होंने अपनी स्त्रीसे कहा—मेरी! इवाको अपने इच्छानुसार कार्य करने दो। जिसे वह अच्छा समझेगी वही करेगी।

मेरी—सेन्टक्लेयर, ऐसा करनेसे इवाकी क्या दशा होगी, मैं तो समझ ही नहीं पाती हूँ। इस संसारमें कैसे रहना होता है, उसने कुछ भी नहीं सीखा।

सेन्टक्लेयर—मैं अच्छी तरहसे जानता हूँ कि इस संसार-के व्यवहारोंको न सीखनेपर भी स्वर्ग-राज्यमें किस प्रकार

व्यवहार करना चाहिए, यह इवा हम दोनोंसे कहीं अधिक अच्छी तरहसे जानती है। स्वर्ग-राज्यमें कैसे चलना होगा इसे यह वह भली भाँति जानती है। इस संसारका व्यवहार नहीं ही सिखेगी तो क्या हानि!

तब इवाने अपने पिताके कानमें धीरे-धीरे कहा—बाबा! माको ऐसा मत कहो। इससे बहुत दुखी होंगी। मिस अफिलियाने सेन्टक्लेयरको गाड़ीके पास देखकर कहा—अग-ष्टिन! तुम गिरजाघर नहीं जाओगे?

सेन्टक्लेयर—मैं गिरजाघर जाऊँगा! इस जन्ममें तो नहीं।

मैरी—मेरी तो बड़ी इच्छा है कि अगष्टिन भी हमलोगोंकी भाँति बराबर गिरजाघर जाया करें। किन्तु क्या कहूँ! अग-ष्टिनके हृदयमें तो धर्म-भाव बिलकुल है ही नहीं। इनका हृदय धर्म-भावसे एक दम शून्य है। यह बड़ी घृणाका विषय है! धर्म-शून्य मानव-जीवन कैसा घृणित जीवन है।

सेन्टक्लेयर—मेरी, मैं जानता हूँ कि तुम क्यों गिरजाघर जाती हो! लोग तुमलोगोंको धार्मिक कहें, तुम लोगोंकी प्रशंसा करें, इसीलिए गिरजाघर जाती हो। मैं यदि कभी किसी गिरजाघरमें जाऊँगा भी, तो मामी जिस गिरजाघरमें जाती है, उसीमें जाऊँगा। अन्ततः उस गिरजामें जानेपर कोई सो नहीं सकता। उस गिरजाके पादरीकी चिल्लाहटसे प्रायः सभी जागे रहते हैं। किन्तु तुम्हारे गिरजाघरमें जानेपर तो सहज ही नींद आ जाती है।

मेरी—क्या! मामी गिरजाघरमें जाती है! वह तो मेथ-डिष्ट लोगोंका गिरजा है! वहाँ तो भयानक चीत्कार होता है।

सेन्टक्लेयर—किन्तु तुमलोगोंके इस निस्तब्ध मरुभूमिके समान गिरजासे तो वह गिरजा ही अच्छा है। पश्चात्

इवाको सम्बोधितकर कहा—बेटी! तुम भी गिरजाघर जा-ओगी? तुम घरमें रहो। हम दोनों आदमी खेलेंगे।

इवा—बाबा मैं गिरजाघर जाऊँगी।

सेन्टक्लेयर—गिरजाघरमें बैठी रहनेसे तुम्हारा जी नहीं ऊबता इवा?

इवा-बाबा! मुझे कुछ घबराहट तो अवश्य होती है, एवं कभी-कभी नींद भी लगती है। किन्तु मैं जागती रहनेकी चेष्टा करती हूँ।

सेन्ट०—तो फिर क्यों गिरजाघर जा रही हो?

इवा—बाबा! बुआने कहा है कि ईश्वरसे प्रार्थना करना अत्यन्त उचित है। ईश्वर हम लोगोंको बहुत चाहते हैं। ईश्वर ही हम लोगोंको सब कुछ देते हैं। गिरजामें जाकर जब मैं ईश्वरके विषयमें विचार करती हूँ, उस समय जी नहीं ऊबता। उस समय बड़ा आनन्द ज्ञात होता है। केवल पादरी साहबकी वक्तृताके समय नींद आने लगती है।

सेन्टक्लेयरने कन्याकी बातें सुन तथा उसका सरल विश्वास देखकर, विशेष आनन्द-अनुभव किया। वे कन्याका मुख चूम कर बोले-अच्छा, बेटी! तुम गिरजाघर जाओ! मेरे लिए भी ईश्वरके निकट प्रार्थना करना।

इवा—बाबा! यह तो मैं बराबर ही करती हूँ। मैं बरा-बर ईश्वरके निकट प्रार्थना करती हूँ—बाबाको अच्छी तरह रखो, बाबाको सुखसे रखो!

यह कहकर इवाके गाड़ीपर चढते ही गाड़ी गिरजाघरकी ओर चली। सेन्टक्लेयर सीढ़ीपर ही खड़े रहे। उनके दोनों नेत्रोंसे आनन्दाश्रु बहने लगे। मनही मन कहा—इवाञ्जे-लिन! तुम्हारा इवाञ्जेलिन नाम सार्थक हुआ। तुम वास्तव-में मेरे हृदयमें एक इवाञ्जेल (स्वर्गीय दूत) स्वरूप होरही हो!

गाड़ीमें बैठकर मेरी फिर इवाको डाँटने लगी। वह बार-बार कहने लगी—इवा! दास-दासियोंपर दया करनी चाहिए, इससे क्या उनलोगोंको भाई-बहिनके समान समझना चाहिए? दास-दासियोंके साथ अपनी श्रेणीके लोगोंकी भाँति व्यवहार करना बड़ा अन्याय है। इसी मामीको यदि रोग हो जाय तो क्या तुम उसे अपने बिछौनेपर सुलाओगी?

इवा—ऐसा करनेसे तो और भी अच्छा होगा। मामी-को अपने बिछौनेपर सुलानेसे तो अनायास ही समय समय-पर उठकर उसे जल एवं औषधि दे सकूंगी। मैंने अनेक बार मनमें सोचा था कि मेरा बिछौना यदि मामीका बिछौना हो तो बहुत अच्छा है। मेरे बिछौनेपर सोनेसे मामीको सहज-में ही नींद आ जायगी।

इवाकी यह बात सुनकर मेरी एक दम हतबुद्धि हो गयी! उसने बार-बार अपना कपार ठोंककर कहा—मेरा भाग्य फूटा! इस लड़कीको कुछ भी समझ नहीं है। मैंने क्या कहा और उसने क्या समझा। मैंने किस भावसे बात कही है, सो भी वह नहीं समझ सकी! अफिलिया बहिन! भला तुम्हीं बत-लाओ! इस लड़कीके लिए क्या उपाय करूँ?

अफिलियाने मनोगत भाव छिपाकर कहा—इवाके लिए कोई सदुपाय तो मैं भी देखती नहीं।

इवा कुछ देरतक उदास बैठी रही। किन्तु बालक-बालिकाओंका चित्त एक अवस्थामें बहुत देरतक नहीं ठह-रता। गाड़ीके चलनेके समय मार्गकी दोनों ओर नये-नये दृश्य देखते-देखते उसका चित्त बदल गया। उसका वह रूखा हुआ सुन्दर मुख-कमल, फिर प्रफुल्लित होगया।

मेरी, इवा तथा अफिलियाके उपासनालयसे लौट आनेपर भोजनकी घण्टी बजी। सेन्टक्लेयर मेरी तथा अफिलियाको

लेकर भोजन करने बैठे। भजनालयमें आज किस विषयपर उपदेश दिया गया, यह उन्होंने पूछा।

मेरी—पादरी साहबका आजका उपदेश बड़ा हृदय-ग्राही था! मेरे मतसे ठीक मिलता-जुलना ही यह उपदेश था! सेन्टक्लेयर तुम तो गये नहीं। यदि जाते तो तुम्हारा बड़ा उपकार होता। तुम्हारे इस अविश्वासी हृदयमें भी विश्वास-का सञ्चार होजाता।

सेन्टक्लेयर—तो मैं समझता हूं कि आजका उपदेश किसी गुरुतर विषयपर हुआ था?

मेरी—सामाजिक प्रथाके सम्बन्धमें मेरा जैसा मत है, अखण्डनीय युक्ति-द्वारा पादरी साहबने ठीक उसी प्रकारके मतको प्रमाणित किया था—ईश्वर उपयुक्त समयमें सबको परिपक्व करते हैं। बाइबिलके इस वचनकी व्याख्या उन्हों-ने की थी। इस वचनकी व्याख्या करनेके समय उन्होंने स्पष्ट-रूपसे यह कहा कि ईश्वरने किसी-किसीको दरिद्र बनाया है और किसी-किसीको धनी इसलिए धनी और दरिद्र-मध्य-स्थित विभिन्नता, ईश्वरीय नियम है। संसारमें कोई-कोई प्रभु होकर प्रभुत्व करेंगे और कोई-कोई उनके दास होकर उनकी सेवा-शुश्रूषा करेंगे। पादरी साहबने यह भली-भाँति समझा दिया कि जो लोग यह चिल्लाहट मचाते हैं कि क्रीत-दास-जातियोंकी अवस्था अच्छी नहीं है तथा जो दासत्वप्र-था-विरोधी हैं, वे ईश्वरीय शासन-प्रणाली समझ नहीं सकते। विधि-विधानके अनुसार मानव-समाजमें अधिकारकी विभि-न्नता बहुत दिनोंतक रहेगी। काले लोगको मलिन मुख हो गोरोंकी सेवा-शुश्रूषा न करनेसे पाप सञ्चित होते हैं, यह भी उन्होंने सुयुक्ति-द्वारा भलीभाँति प्रसिद्ध कर दिया। ईश्वर, जिस समय जो उचित होता है, उस समय वही करते हैं।

दासत्व-प्रथा इस समय उपयोगी है, इसलिए इसके सम्बन्धमें पादरी साहबके मस्तिष्कमें बहुत सी अकाट्य युक्तियाँ ईश्वरने उत्पन्न कर दी हैं। जिससे वे इसका समर्थन भलीभाँति कर सकें। सेन्टक्लेयर! मैंने मनही मन सोचा कि यदि आजका उपदेश तुम सुनते तो तुम्हारे मनके अनेक कुसंस्कार दूर होजाते और तुम विशेष शान्ति-लाभ कर सकते।

सेन्टक्लेयर—मुझे उपदेश सुननेकी आवश्यकता नहीं। जितनी देर गिरजामें बैठकर उपदेश सुनूँगा, उसकी अपेक्षा उतनी ही देरतक घरमें बैठकर चुरुट पीनेसे मेरे मनको पूर्ण शान्ति मिलती है। तुम्हारे गिरजामें बैठकर तो कोई चुरुट भी नहीं पीने पाता—भयानक कष्ट है।

मिस अफिलिया—क्यों अगष्टिन पादरी साहबने बाइबिलके उपदेशकी जिस प्रकारकी व्याख्या की है, क्या तुम्हारा भी वैसा ही मत है? दासत्वप्रथा बाइबिलसे अनुमोदित है, क्या तुम भी इसपर विश्वास करते हो?

सेन्टक्लेयर—भला मैं विश्वास करूँगा? मैं इस प्रदेशके धर्मोंकी कोई भी धारा धारण नहीं करता। धर्मकी चतुःसीमा (गिरजाघर) के भीतर कभी नहीं जाता। इस दासत्व-प्रथाके सम्बन्धमें यदि मेरा मत सुनना चाहती हो, तो मैं तुमसे स्पष्ट कहता हूँ—हमलोगोंको लाभ होता है, इसलिए ही हम दासत्व-प्रथाका समर्थन करते हैं। दासके न रहनेसे हम लोगोंका कार-बार नहीं चल सकता, अर्थ-सञ्चय नहीं हो सकता। अनायास ही कुछ और अधिक धन एकत्रित हो जाय, यह सोचकर ही हमलोग दासत्व-प्रथाको उठा देनेकी इच्छा कभी नहीं करते।

मेरी—अगष्टिन! तुम्हारे हृदयमें रञ्चमात्र भी धर्म-भाव नहीं है। तुम्हारी बातें सुनकर हृदय काँपने लगता है। छिः,

छि:! इस प्रकार धर्म-भावसे शून्य हृदय तो और कहीं नहीं देखा!

अगष्टिन—मेरी ये सब बातें सुनकर तो हृदय कांप जाता है सही, किन्तु जो असल बात है, वही मैंने कही है। ये धार्मिक पादरी साहब कहते हैं कि दासत्व-प्रथा ईश्वर-निर्दिष्ट-विधान है। वे कहते हैं, ईश्वरके इच्छानुसार ही यह दासत्व प्रथा प्रच-लित हुई है। संसारमें इसकी आवश्यकता थी, इसलिए इसकी उत्पत्ति हुई। किन्तु मैं जिस दिन अधिक रात्रितक जागकर ताश खेलता हूं, उस दिन और अधिक ब्रांडी पीनी पड़ती है। इसलिए क्या कुछ अधिक ब्रांडी पीना ईश्वर-निर्दिष्ट विधान नहीं है? अधिक रात्रितक जागने रहनेपर ब्रांडी-की आवश्यकता होती ही। फिर पादरी साहबने कहा है कि सब विषयके लिए ही उपयुक्त समय है। उपयुक्त समयमें सब विषय ही परिपक्व हो जाते हैं। मुझे ज्ञान पड़ता है कि, सायंकाल ही ब्रांडी पीनेका उपयुक्त समय है। सन्ध्या और ब्रांडी दोनों ही ईश्वरकी बनाई हुई हैं। दोनोंमें जब मेल है, तब मैं आशा करता हूं कि पादरी साहब शीघ्रही इसकी मीमांसा करेंगे।

अफिलिया—अगष्टिन, मैं तुम्हारी यह सब धर्म व्याख्या नहीं सुनना चाहती। मैं यह पूछती हूं कि अपने देशमें प्रचलित इस दासत्व-प्रथाको क्या तुम अच्छी समझते हो? बाइबिल-अनुमोदित समझते हो?

अग०—दासत्व-प्रथा भली है या बुरी, मैं कुछ न कहूंगा। मेरे अपने मनकी बात कहने पर तुम लोग स्तम्भित हो जाओ-गी। मैं कैसा आदमी हूं यह सुनोगी? मैं दूसरेके मत और विश्वासमें दोषान्वेषण करता हूं, किन्तु अपना मत किसीसे प्रकट नहीं करता!

मेरी—अगष्टिन सदैव इसी प्रकारकी बातें करते हैं। सच बात तो यह है कि इनके मनमें किसी प्रकारका धर्म-भाव नहीं है। हृदयमें धर्म-भावके रहनेपर क्या मनुष्य ऐसी बातें जिह्वा-पर ला सकता है?

अगष्टिन—धर्म-भाव! तुम क्या गिरजामें वास्तवमें धर्मकी बातें सुनती हो? समाज-प्रचलित स्वार्थपरता एवं मनुष्यके अभ्यस्त पापोंके साथ बाइबिलका औचित्य स्थापित करनेकी चेष्टा ही हमारे देशमें प्रचलित खीष्टीयधर्म है। देश-प्रचलित कोई अत्याचार तथा अन्याय-व्यवहार बाइबिलकी-कथाके द्वारा समर्थित होनेसे ही धर्मका अङ्ग हो गया है। तुम मनुष्यके अभ्यस्त पापको धर्मके नामसे परिचित करानेकी चेष्टा करती हो; इसलिए धर्मको अवनत बनाती हो। किन्तु मैं बड़ी कठिनतासे प्राप्त होनेवाले धर्मको अभ्यस्त पापसे अधिक मानता हूँ और इसका प्रतिपादन करता हूँ। मेरा धर्म, स्वर्गीय-भाव है। तुम लोगोंका धर्म है मनुष्यका स्वार्थ-परतासे मिला हुआ व्यवहार।

अफिलिया—तो दासत्व-प्रथा बाइबिलसे अनुमोदित है, इस पर तुम्हारा विश्वास नहीं है?

अगष्टिन—जिस स्नेहमयी जननी की प्रतिमूर्त्ति निरन्तर मेरे हृदयमें विराजती है, बाइबिल उनकी बड़ी प्रिय पुस्तक थी। बाइबिलके प्रति उनका विश्वास प्राणान्त तक था। बाइबिलके द्वारा ही उनका जीवन सुसंगठित हुआ था। इसलिए जब वे इस दासत्व-प्रथाको घृणा की दृष्टिसे देखती थीं, तब मैं कभी यह विश्वास नहीं कर सकता कि यह बाइबिल द्वारा अनुमोदित है। सोचनेपर सहज ही देखोगी कि क्या यूरप, क्या अफ्रिका, सभी देशोंकी सामाजिक-कार्यावलीमें नाना-प्रकारके नीति-विरुद्ध आचरण पाये जाते हैं। किन्तु जो इन

नीति-विरुद्ध व्यवहारोंका, बाइबिल-द्वारा अनुमोदित कहकर, प्रतिपादन करनेकी चेष्टा करते हैं, जो इन सब समाज-प्रचलित कुप्रथाओंको धर्मसंगत समझते हैं, वे वास्तवमें अपनी हृदयस्थित गाढ़ी स्वार्थपरताके कारण घोर मोहान्धकारमें गिर पड़े हैं। दासत्व-प्रथा न रहनेसे हमलोग सरलता-पूर्वक धन-सञ्चय न कर सकेंगे। हम सुख, स्वच्छन्दता न भोग सकेंगे। इसलिए आत्मसुखके कारण दासत्व-प्रथा आवश्यक बतलाते हैं। किन्तु इस प्रकार प्रकृत अवस्थाको अस्वीकार कर जो दासत्व-प्रथाको बाइबिलसे अनुमोदित कहकर चीत्कार करते हैं, वे मेरी विवेक-बुद्धिमें सत्यका अपवाद करते हैं।

मेरी—अगष्टिन! तुम नास्तिक हो गये हो क्या?

अगष्टिन—यदि कपासकी रफ्तनी बन्द हो जाय एवं हमारे देश के कपासका मूल्य यदि एकबार कम हो जाय तो हम लोगोंको दासत्व-प्रथाकी आवश्यकता न रहेगी। तब बाइबिलका उपदेश पलट जायगा। इस समय दासत्व-प्रथा ईश्वरादिष्ट-विधान हो, किन्तु कपासका बाजार मन्दा होनेपर "दास-दासियोंको एकदम अफ्रिका भेज देना" ईश्वर-वाक्य ही एकमात्र सिद्धान्त होजायगा। कपासके मूल्य-परिवर्तनके साथ ही साथ बाइबिलका परिवर्तन हो जायगा, इसमें सन्देह नहीं।

मेरी—मैं दासत्व-प्रथाको धर्म विरुद्ध नहीं समझती। मैं ईश्वर को धन्यवाद देती हूं कि तुम्हारी तरह इस प्रकार की नास्तिकता मेरे हृदय में स्थान नहीं पा सकती।

इसी समय इवा वहां आ उपस्थित हुई। सेन्टक्लेयरने पूछा—बेटी! बतलाओ कि तुम्हें, जैसे तुम्हारी बुआके घरमें दास-दासियां नहीं हैं, वैसा ही दास-दासियोंसे शून्य घर अच्छा लगता

है, या जैसे हमारे घरमें असंख्य दास-दासियाँ है, ऐसा दास-दासियोंसे पूर्ण घर ?

इवा—बाबा ! हमारा घर ही अच्छा है।

अगष्टिन—हमारा घर क्यों अच्छा है ?

इवा—हमारे घरमें बहुतसे आदमी हैं। वे मुझे प्यार करते हैं, मैं इनको प्यार करती हूँ। इसीसे मेरा ही घर अच्छा है।

मेरी—इवाको केवल प्यार चाहिए। इस प्यारकी कथाएं मैंने बहुत सी सुनी हैं। ऐसी निर्बोध लड़की मैंने दूसरी नहीं देखी ! दास-दासियोंके साथ प्यार !

इवा—बाबा ! मैंने जो प्यार करनेकी बात कही है, यह क्या बुरी बात है ?

अगष्टिन—इस स्वार्थी संसारके लोग इसे बुरा कहते हैं। इस संसारमें प्रेमका कोई आदर नहीं। अच्छा, अब यह बतलाओ कि इतनी देर तक तुम कहाँ थी ?

इवा—बाबा ! मैं टामके घरमें बैठकर उसका गाना सुन रही थी।

अगष्टिन—टामका गाना सुनती थी ?

इवा—वह बहुत अच्छा गाता है।

अगष्टिन—टामका गाना अपेराके (opera) गानासे भी अधिक मधुर लगता है।

इवा—हाँ बाबा ! बड़ा मधुर गाना है। मुझे वह अपना गाना सीखावेगा।

अगष्टिनने हँसाते हुए पूछा—टाम तुम्हें गाना सिखावेगा ! गाना सीखनेके लिए तो तुमने अच्छा शिक्षक पाया है।

इवा—हाँ बाबा, बड़ा अच्छा गाता है। हाँ, मैं टामके निकट

बाइबिल भी पढ़ती हूँ। एवं टाम मुझे उसका अर्थ बतलाता है।

मेरीने हँसते हुए पूछा—टाम बाइबिलकी शिक्षा देगा! कैसा हास्यास्पद कार्य है!

अगष्टिन—मैंने भली भाँति जान लिया है कि टाम धर्म-शिक्षा देनेके उपयुक्त है। धर्मके लिए उसकी विशेष आकुलता देखी जाती है। उसका हृदय धर्म-भावसे परिपूर्ण है। कल प्रात काल घोड़ेकी आवश्यकता से मैंने धीरे-धीरे टामके घरमें प्रवेश किया। वहाँ जाकर देखा, टाम आँखें मूँदकर ईश्वरकी आराधना कर रहा है। टाम क्या कहकर प्रार्थना करता है, यह सुननेके लिये मेरा कौतूहल बढ़ा। किन्तु वैसी सरल प्रार्थना मैंने कभी नहीं सुनी। अत्यन्त आकुलताके साथ उसने ईश्वरसे मेरे मंगलके लिए प्रार्थना की। उस समय मुख-का भाव देखनेसे वह वास्तवमें एक महात्मा जान पड़ता था। मैंने बहुतसे पादरियोंको प्रार्थना करते सुना है, किन्तु ऐसी सजीव विश्वासपूर्ण प्रार्थना कभी नहीं सुनी।

मेरी—जान पड़ता है,तुम्हारा टाम धूर्त्तता करता है। मैंने उसकी धूर्तताके विषयमें पहिले भी दो-एक वार सुना है। जब पहले उसने यह आहट पाया कि तुमने उसके घरमें प्रवेश किया है.तब तुम्हें भुलावा देनेके लिये उसने ऐसी प्रार्थना की।

अगष्टिन-मेरे मनस्तुष्टिके लिए उसने कोई बात नहीं कही। उसने अकपट-भावसे ईश्वरके सम्मुख अपने हृदयके भाव प्रकट किये। हम लोगोंके जो नाना प्रकारके घृणित पाप वि-द्यमान हैं, वे सारे पाप जिससे दूर हो जायँ, उसके लिए उसने ईश्वरसे प्रार्थना की, इसलिये उसका ऐसा आचरण किसी प्रकार से धूर्तता नहीं कहा जा सकता।

अफिलिया-अगष्टिन! टामकी प्रार्थना जिससे पूर्ण होगी, उस विषयमें तुम मनोयोग प्रदान करना?

अगष्टिन-बहिन, मेरे सम्बन्धमें तुम्हारा तथा टामका एक ही मत है। अच्छा, मैं अपने चरित्रका संशोधन करने की चेष्टा करूँगा।

उन्नीसवाँ परिच्छेद

दासत्व-शृंखला-भंजन की चेष्टा

मैं अब कुछ कालके लिए टामसे विदाई लेता हूँ और इलाइजा, जार्ज, तथा उसकी माताके भागनेकी चेष्टाके सम्बन्धमें संक्षिप्त विवरण देता हूँ। जिस प्रकार ये लोग दासत्व-शृंखलासे छूटे, उसे जाननेके लिए पाठक तथा पाठिकाओंको स्वभावतः कुतूहल उत्पन्न हो सकता है।

जार्ज, कोयेकार सम्प्रदाय साइमन हेलिड साहबके घर पहुँचा। वह अपनी प्राणप्रिया इलाइजाको वहाँ पाकर जिस अपार आनन्दका अनुभव करने लगा, वह शब्दोंके द्वारा प्रकाशित नहीं किया जा सकता, पर अब इन लोगोंकी विपदाशंका दूर न हुई थी। विपन्नावस्थाका मिलन-सम्भूत आनन्द हास-परिहास द्वारा प्रकाशित नहीं किया जा सकता। इलाइजा और जार्ज दिनभरके दुःखके मारसे पिसे हुए इस सम्मिलन-सम्भूत आनन्दका उपभोग करने लगे। ऐसे दुःखके समयका सुख, विपत्तिके समयका मिलन, अर्थात् हर्ष-विषादका संयोग मानव-हृदयमें धर्म तथा ईश्वर-निर्भरताका भाव उत्पन्न करता है। दीर्घकालके विषम-वियोगके पश्चात् दम्पतिके परस्पर सम्मिलनमें केवल हाँसीके 'ही-ही' शब्द-द्वारा तथा

रसिकता परिपूर्ण भाव-भङ्गी-द्वारा आनन्द प्रकाशित होता है। उसमें कोई कविता नहीं होती, वह कवितासे शून्य क्षणस्थायी आनन्द है। उसके द्वारा केवल मनुष्यके मनकी साम्यावस्था नष्ट हो जाती है। उस समय सुखके उल्लासमें मनुष्य उस सर्व-सुखदाता परमेश्वरको भूल जाता है। किन्तु विपन्न दम्पति घोर विपत्तिके समयमें परस्पर सहानुभूति तथा हृदयके भाव जिस भाषाके द्वारा व्यक्त करते हैं, वह भाषा ही जीती जागती कविता है, वही एकमात्र हृदयकी भाषा है।

समय प्रायः सायंकालका है। जार्ज अपने लड़के हेरीको गोदमें लेकर इलाइजाके पास बैठा है। उन दोनोंके नेत्रोंसे अविरल अश्रुधारा बह रही है। इलाइजाकी बातके उत्तरमें जार्जने कहा—इलाइजा! तुमने जो कुछ कहा, बात सब सत्य है, किन्तु यह पापी मन जानकर भी नहीं जानता। तुम्हारा हृदय स्वर्गीय भावोंसे परिपूर्ण हो, इससे तुम प्रत्येक घटनामें मङ्गलमय परमेश्वरका हाथ देखती हो। किन्तु मैं पूर्णरूपसे उस मङ्गलस्वरूप पुरुषके ऊपर निर्भर नहीं हो सकता। तुम्हारा हृदय स्वर्ग है, मेरा हृदय नरक है। तुम्हारी प्रभु-पत्नीके सदाचारण और सद्व्यवहार तथा दया और भेंटसे तुम्हारा हृदय पिघलचुका है, इसलिए उसमें ईश्वरकी छाया मुद्रित हो गयी है, पर मेरे उस दुरात्मा मलिकके अत्याचारसे मेरा यह पाषाण-हृदय और भी कठोर हो गया है। यह हृदय सहज ही नहीं पिघल सकता। इस हृदयमें ईश्वरकी छाया नहीं पड़ सकती। हृदयके पिघल कर स्वच्छ हो जाने पर उसमें ईश्वरीय भाव प्रतिबिम्बित हो सकते है। यह सचमुच ही लोहेका बना हुआ हृदय है। अग्निके संस्पर्शसे जैसे स्वर्ण गल जाता है, वैसे केवल प्रेमाग्नि द्वारा ही मनुष्यका हृदय पिघल सकता है। मैं तुमसे निश्चय-पूर्वक कहता हूँ

कि इस दासत्व-शृंखलासे छुटकारा पाजाने पर मैं तुम्हारे इस सदुपदेशके प्रतिपालनमें समर्थ हूँगा। तुम्हारा अकृत्रिम प्रणय, निस्वार्थ प्रेम निश्चय ही मुझे पुनर्जीवित करेगा। उसी समय मैं ईसाका सद्दृष्टान्त पालन कर सकूँगा। उस समय ही मुझे केवल इस बाइबिलकी बात अच्छी लगेगी। मंगल-भवन परमेश्वर जानते हैं कि मैंने सदैव अपने हृदयमें पवित्र-भावोंको पोषण करनेकी चेष्टा की है। जब घोर अत्याचारोंसे पीड़ित हुआ, उस समय भी केवल उसीका पवित्र नाम स्मरण करके जीवन-धारण किया है। किन्तु संसारका अविचार-पूर्ण अत्याचार देखकर ईश्वरके ऊपर किसी प्रकार विश्वास नहीं रख सका। मेरा ऐसा अविश्वासका भाव देख कर तुम अब आंसू मत बहाओ। मैं निश्चय ही तुम्हारा उपदेश पालन करूंगा। जिसमें तुम सुखी होगी, वही करूँगा।

इलाइजा—जार्ज! तुम मनकी सब आशंकायें दूर करो। विपद्-भञ्जन परमेश्वर हम लोगोंका इस विपत्तिसे अवश्य उद्धार करेंगे। उनके आशीर्वादसे एक बार केनाडा पहुँच जाने पर मेरे सारे कष्ट नष्ट हो जायँगे। हमारे भरण-पोषणके लिए पलभर भी कुछ चिन्ता न करना। मैं सब कामों में तुम्हारी सहायता कर सकूँगी। मैं कपड़े धो सकती हूँ। सब प्रकारकी सिलाई कर सकती हूँ। हम दोनों एक दूसरेकी सहायता करते हुए अनायासही अपना जीवन-निर्वाह कर सकेंगे।

जार्ज—भरण-पोषणके लिये भी मैं कोई चिन्ता नहीं करता। इस शिशु सन्तान तथा तुमको लेकर जिस स्थानमें स्वतंत्रता-पूर्वक रह सकूँगा, वही स्थान स्वर्ग होगा। मैं और कोई सुख-सम्भोग नहीं चाहता। ईश्वरसे मैं केवल

यही प्रार्थना करता हूँ कि अब मुझे तुमसे अलग न होना पड़े। हम दोनोंके हृदयसे इस बालकको कोई विछिन्न न कर सके। देखो, ये नरपिशाचके समान गोरे लोग एक बार भी यह नहीं सोचते कि संतानको माता-पिताकी गोदसे अलगकर अन्य देशोंमें बेच देनेसे, स्त्रीको स्वामीसे अलग कर देनेसे, इन हतभाग्य दासोंके चित्तको कैसा अधिक कष्ट होता होगा। अपनी स्त्री तथा सन्तानको मैं अपनी कह सकूं, ऐसी अवस्था प्राप्त होनेके अतिरिक्त और मेरी कोई प्रार्थना ईश्वरसे नहीं है। गत पच्चीस वर्षों तक कठिन परिश्रमके द्वारा मैंने जो अर्थ-सञ्चय किया था, वह सब उसी दुरात्मा मालिकको देदिया। मेरे पास उसमें का एक पैसा भी नहीं है। घर-द्वार नहीं है, किन्तु उसके लिए मैं रत्तीभर चिन्ता नहीं करता, उसके लिये ज़रा भी दुख नहीं होता। उस दुरात्मा मालिकने मुझे जिस मूल्यमें खरीदा था, उसका सहस्र गुना अधिक मूल्य मैंने उपार्जनकर उसको दे दिया। अपने दृढ़-शरीरके दासत्व-शृंखलासे मुक्त होनेपर मैं शारीरिक परिश्रम-द्वारा अनायास ही तुम्हारे मालिकको तुम्हारा और अपनी इस सन्तानका जो मूल्य होगा, उसे चुका सकूंगा। इलाईज़ा! स्वाधीनता बड़ा अमूल्य धन है। किन्तु चिरकालसे पराधीन जाति, "स्वाधीनता क्याहै," नहीं समझ सकती। जिसने कभी मिठाई नहीं खायी, उसे मिठाईके सम्बन्धमें नाना प्रकारसे समझा देनेसे क्या वह उसका स्वाद जान सकता है? वैसे ही चिरकालसे पराधीन हम लोग, स्वाधीनता कैसा अमूल्य रत्न है, नहीं समझ सकते। इस भागने की अवस्थामें तुमसे जो स्वाधीनतासे बातें कर रहा हूँ, इससे भी मेरा हृदयसे आनन्द लहरा रहा है। इस समयकी स्वाधीनताने पुनर्जीवित कर दिया है।

ईश्वर करे, संसारमें कोई पराधीन न रहे। संसारमें किसी जातिको दासत्व-शृंखलामें न बँधना पड़े।

जार्ज और इलाइजा जिस कोठेपर बैठकर ऐसी बात-चीत कर रहे थे, उसके नीचे कुछ गड़बड़ी होनेसे वे चौंक पड़े। घरके द्वारपर धम्-धम् शब्द होने लगा। तब इलाइजाके शीघ्रतापूर्वक द्वारखोलते ही साइमनहेलिड साहब तथा और एक व्यक्तिने घरमें प्रवेश किया। साइमन हेलिडसाहबके साथके इस व्यक्तिका नाम फिनियास है। यह इस दासत्व-प्रथा विरोधी कोयेकार सम्प्रदायके दलमें मिल गया है। यह देखनेमें अत्यन्त दीर्घाकर पुरुष है। मुखकी भाव-भङ्गीसे अत्यन्त कार्य-दक्ष, सुचतुर एवं संग्राम-प्रिय जान पड़ता है। साइमन हेलिडकी भांति इसके मुख-मण्डलपर कोई प्रशान्त-भाव नहीं दिखायी पड़ता था। साइमन हेलिडने घरमें प्रवेशकर जार्जको सम्बोधनकर कहा—जार्ज बड़ी विपत्ति उपस्थित हुई है। तुम लोगोंको पकड़नेके लिए पकड़नेवाले लोग नियुक्त हुए हैं। उनकी कुछ बातें फिनियासने सुनी हैं। इस विषयमें तुमलोगोंको विशेष सावधान रहना होगा। अतएव फिनियासने जो कुछ सुनाहै, वह उसीके मुखसे सुनो। साईमन हेलिडकी बात समाप्त होने पर फिनियास कहने लगा—कल रात्रिमें मैं बहुत दूर एक धर्मशालामें ठहरा हुआ था। जिस कमरेमें मैं सोनेवाला था। उसीके बगलवाले कमरेमें बैठकर कुछ लोग सुरापान कर रहे थे एवं नाना प्रकारकी बातें कर रहे थे। उन लोगोंकी बातें सुन कर मैंने स्पष्ट समझ लिया कि वे तुमलोगोंको पकड़नेकी चेष्टा कर रहें हैं। तुमलोग जो इस दासत्व-प्रथा-विरोधी कोयेकार सम्प्रदायके गांवमें निवास करते हो, यह उन लोगोंने जान लिया है। उन लोगोंमेंसे एकने कहा कि

इस विषयमें कोई संदेह नहीं कि भग्गू दास-दासियोंने उन कोयेकार लोगोंके गांवमें आश्रय लिया है। अतएव शीघ्र ही उनलोगोंको पकड़कर उस युवकको केन्टाकी प्रदेशमें उसके मालिकके हाथ सौंपना होगा। उसका मालिक इस बार अवश्य उसका प्राण-वध करेगा। ऐसा उपयुक्त-दण्ड देनेसे फिर कोई दास-दासी भागनेकी चेष्टा न करेगी। उस पुरुषके लड़केको जिस दास-व्यवसायीने खरीदा है, उसे देनेसे निश्चित पुरस्कार पावेंगे। एवं उसकी स्त्रीको दक्षिण-प्रदेशमें बेचनेसे सहजमें ही १६ या १७ सौ रुपये प्राप्त हो जायँगे। वह स्त्री बड़ी सुन्दर है। और जिम तथा उसकी माताको उनके पूर्व मालिकोंके पास पहुँचा देनेपर वे अवश्य ही यथोचित पुरस्कार देंगे। इस व्यक्तिकी बातोंके आभाससे मैंने समझ लिया कि दो पुलिसके सिपाही भी उनलोगोंके साथ हैं, एवं तुमलोगोंको पकड़नेके लिए वारन्ट भी निकल चुके हैं। इन लोगोंमें और एक नाटा आदमी है। वह व्यक्ति निश्चय ही वकील होगा। अदालतका काम-काज भलीभाँति जानता है। उसने स्थिर किया है कि अदालतमें जाकर मैं यह दावा करूँगा कि इलाइजा मेरी ही खरीदी हुई दासी है। पश्चात् जब इस दावाके अनुसार अदालत इलाइजाको उसे दे देगी, तो वह इसे दक्षिण-प्रदेशमें बेच देगा। पुलिसके सिपाहियोंके सिवा और भी कई आदमी उसके साथ थे। मैं एक कान खुला रखकर सोया था। इसीसे सारी बातें सुनलीं। उनलोगोंकी ऐसी बात-चीत सुनकर बड़ी शीघ्रतासे यहां चला आया हूँ। अतएव अब एक मुहूर्तभर भी विलम्ब न करके भागनेकी चेष्टा करो।

फिनियासकी बातें सुनकर इन भग्गू दास-दासियोंमें किस प्रकार भयका संचार हुआ, वे किस प्रकार निराशा-

सागरमें निमग्न हुए, उनका हृदय किस प्रकार चञ्चल हो उठा, यह वाक्यों द्वारा प्रकट नहीं किया जा सकता। क्वोये-कार सम्प्रदायकी सहृदय रमणी-गण यह कथा सुनकर हत-बुद्धि हो गईं। किसीके मुखसे कोई शब्द न निकला। सब एक दूसरेका मुख देखने लगीं। कोई भी अन्य उपाय न बता सकीं। इलाइजा भय तथा त्राससे काँपती हुई जार्जके कन्धेपर भार देकर खड़ी हो गयी और स्वामीके मुखकी ओर देखकर बड़े कातर स्वरमें बोली—जार्ज! अब क्या किया जायगा? एक बार उन्हीं मंगलमय परमेश्वरका स्मरण करो। वे ही निराश्रयके एकमात्र आश्रय हैं।

प्रकृतिकी विभिन्नताके अनुसार विपदाशंका भिन्न-भिन्न मनुष्योंके मनमें भिन्न-भिन्न रूपका परिवर्त्तन उपस्थित करती है। जो भीरु, स्वार्थी, एवं नीचाशय हैं, वे विपत्तिकी आशंका उपस्थित होनेपर निस्तेज बंगालियोंकी भाँति, आसामके कुलियोंकी भाँति, हताश हो जाते हैं। विपत्तिसे बचकर भागनेकी चेष्टा करते हैं। इसके विपरीत जिनमें मनुष्यत्व है, तेज है, जो दूसरोंका तथा अपने आत्मीय जनोंका कष्ट दूर करनेमें अपने प्राण भी विसर्जन कर दे सकते हैं, विपत्तिकी आशंका उन्हें और भी अधिक निर्भीक बना देती है। उस समय उनके साहस और शौर्यकी वृद्धि सहस्रगुनी अधिक हो जाती है। वे उस समय निर्भय होकर एकमात्र साहसको ही अपनी जीवन-यात्राका सम्बल बना लेते हैं, और उसीका अवलम्बन करते हैं। जार्ज भीरु किंवा स्वार्थ परायण नहीं है। आसामके कुलियोंकी भाँति एकदम तेज-हीन नहीं हैं। इसलिए आने वाली विपत्तिकी आशंका उसे भीत तथा हताश न बना सकी। उसके नेत्र लाल हो गये। वह कड़ी दृष्टिसे इधर-उधर देखने लगा। जेबसे पिस्तौल

तथा रिवाल्वर निकालकर उसने इलाइजासे कहा—कुछ डर नहीं है। तुम निश्चिन्त होकर यहीं बैठी रहो। सब पकड़ने वालोंको इसी क्षण यमालय भेज दूंगा। जब तक ये सबल भुजदण्ड टुकड़े-टुकड़े न हो जायँगे, जब तक इस देहमें प्राण रहेंगे, तब तक कोई भी शैतान पुरुष तुम्हारा एक बाल भी न छू सकेगा। यह कह कर आवेगमें उसके बाहर आते ही साइमन हेलिडसाहबने उसे पकड़नेकी चेष्टा की। तब जार्जने हेलिडसाहबको सम्बोधन कर कहा—महाशय! आपने पिताके तुल्य मुझे तथा मेरी स्त्रीको अपने घरमें आश्रय दिया है। आपके घरमें आकर पकड़नेवालोंसे यदि कोई विवाद हो जायगा, तो देश-प्रचलित घृणित कानूनके अनुसार आपको भी दण्डित होना पड़ेगा। आपका कोई अनिष्ट न हो, इसलिए मैं किसी दूसरे स्थानमें जाकर पकड़नेवालोंसे मिलूंगा। जिम तथा मैं, दोनों यमकी भांति संग्राम करके इन पाखण्डी गोरोंको इसी क्षण यमलोक भेज देंगे। स्वार्थ-परायण, अर्थलोलुप, न्याय-अन्यायके ज्ञानसे शून्य, पशुके समान आचरण करनेवाले, इन गोरोंके रक्त-स्रोतसे देशको बहा दूंगा। मेरे स्त्री-पुत्रको मेरे सामनेसे ले जायँगे, भला ऐसा घोर अत्याचार क्या कोई मनुष्य कभी सह सकता है?"

जार्जकी बातें सुनकर साइमन हेलिड साहब कहने लगे-बेटा! यह मार्ग मत पकड़ना। मेरे बताये हुए अन्य उपायका अवलम्बन करनेमें ही भलाई है।

जार्ज—पिता! जिसमें आपको इस दुर्घटनामें किसी प्रकारसे फँसना न पड़े,इसी कारण मैं इस मार्गका अवलम्बन करने पर उद्यत हुआ हूँ।

यह बात सुनकर फिनियासने कहा—भाई जार्ज! तुमतो रास्ता पहिचान न पाओगे। तुम्हारी गाड़ी कौन चलावेगा? मैं वह मार्ग जानता हूं, मुझे अपने साथ न ले चलोगे?

जार्ज—फिनियास! आपको भी इस दुर्घटनामें पड़नेकी सलाह मैं नहीं दे सकता। इससे आप विपत्तिमें फँस जायँगे।

फिनियासने मुसकराते हुए कहा—इस संसारमें क्या कहीं विपत्ति है? भाई, विपत्ति किसे कहते हैं, यह मैं नहीं जानता। जब विपत्ति आ जायगी, तब मुझे बुलाकर दिखा देना कि यह विपत्ति आ गयी। कोई कहता है मृत्यु ही विपत्ति है, कोई कहता है कारागारमें बन्द रहना ही विपत्ति है। किन्तु मैं इन दोनों अवस्थाओंमें कुछ भी विपत्ति नहीं देखता।

साइमन—जार्ज! तुम मेरी सलाहके अनुसार कार्य करो? इस प्रकार घबड़ानेकी कोई आवश्यकता नहीं। युवक लोग शीघ्रही उत्तेजित हो जाते हैं।

जार्ज—मैं पकड़नेवालोंपर पहले आक्रमण न करूँगा। मैं उन लोगोंसे केवल यही पूछुँगा कि वे स्त्री-पुत्र सहित मुझे निर्विवाद यह देश छोड़कर जाने देंगे या नहीं? किन्तु चले जानेमें बाधा देनेपर मैं इसी अस्त्राघातसे उनके प्राण ले लूँगा। इन लोगोंका प्राण-विनाश कर देनेपर मेरे हृदयसे माता तथा बहिनके वियोगका दुःख दूर हो जायगा। माता और भगिनीका स्मरण होते जार्जको नेत्रोंसे अविरल अश्रु-धारा बहने लगी। और गला रूँध गया। वह अस्फुट-स्वरमें कहने लगा—पिता साइमन! उनके दुखकी कहानी स्मरण होते ही हृदय विदीर्ण हुआ जाता है। मेरी एक बहिन थी। उसे मेरे उस दुरात्मा मालिकने दक्षिण-प्रदेशमें बेच दिया था। और मेरे स्त्री-पुत्रको भी मेरे हृदयसे अलग कर दक्षिण देशमें बेचना चाहता था। ऐसा आचरण क्या

कभी सह्य हो सकता है। परमेश्वरने जबतक मुझे ये सबल भुजाएँ दे रखी हैं, तबतक स्त्री पुत्रकी रक्षाके उपयोगमें यदि न आयीं, तो ये व्यर्थ हैं। मैं निश्चयपूर्वक कहता हूँ कि जीवन रहते, इस शरीरमें प्राण रहते, मेरे स्त्री-पुत्रको कोई मुझसे अलग नहीं कर सकता। पिता साइमन! क्या मेरे वर्तमान व्यवहारको आप दूषित समझते हैं?

साइमन—नहीं, नहीं, जार्ज! मैं कभी तुम्हारे इस आचरण-को दूषित नहीं समझता। नर-पिशाचके समान स्वार्थी गोरों के अतिरिक्त भूमण्डलमें और कोई भी ऐसा नहीं, जो तुम्हारे इस आचरणको दूषित समझता हो। दुर्बलमानवात्मा ऐसे अत्याचारसे पीड़ित होनेपर, ऐसी दुर्दशा-ग्रस्त होनेपर क्या कभी सहिष्णुताका अवलम्बन कर सकती है? केवल अपने ऊपर अत्याचार होनेपर तो मनुष्य ईसाके क्रौसको अपने कष्टोंको देख सहनकर सकता है। किन्तु स्वजनोंपर, अपने पड़ोसियोंपर ऐसे अत्याचार होते देखकर जान पड़ता है वे शान्ति मूर्त्ति महात्मा ईसा भी अस्त्र-धारण कर लेते हैं। इस अत्याचार! और पापपूर्ण संसारको धिक्कार है! किन्तु सहस्र वार धिक्कार है उन पाखण्डियोंको जिनकी स्वार्थ-परता और अर्थलोलुपतासे यह संसार पापपूर्ण हो रहा है।

फिनियास अबतक चुप था। साइमनसाहबकी बात समाप्त होते ही वह जहाजके मस्तूलकी भाँति अपने सुदीर्घ हाथोंको उठाकर कह उठा—भाई जार्ज! मेरी ये दोनों भुजा-एँ कुछ सबल जान पड़ती हैं। तुम्हारे साथ किसीसे झगड़ा होनेपर ज्ञात होता है कि ये रुक न सकेंगी।

साइमन—फिनियास! जार्ज जैसे निष्ठुर अत्याचारोंसे पीड़ित हुआ है, उससे स्वभावतः उसके मनमें बदला चुकाने-का ऐसा भाव उत्पन्न हो सकता है, पर तुम तो शान्त ही

रहो। अत्याचारसे संतायी हुई भ्राता-भगिनियोंके लिए प्राण देनेको सदा प्रस्तुत रहना उचित है। और अत्याचारको रोकनेके लिए भी अवस्था उपस्थित करना ठीक है, किन्तु हमारे सम्प्रदायके धर्म-शिक्षकोंने इस विषयमें इनकी अपेक्षा और भी अच्छा मार्ग ग्रहण किया है। उन्होंने कहा है कि किसी भी अवस्थामें मनुष्यको क्रोधान्ध होकर कार्य-क्षेत्रमें प्रवेश करना उचित नहीं है। ऐसी अवस्थामें मनुष्यको भले-बुरेका ज्ञान नहीं रहता। अत्याचारको रोकनेके लिए कभी शत्रुके वश होकर कार्य न करो! क्रोधके वशीभूत होकर मनुष्य अनेक स्थानोंपर हिताहितका ज्ञान भूल जाता है। इसलिए सब अवस्थामें ईश्वरपर भरोसा रखते हुए कार्य करना होगा। इस समय शान्त-चित्तसे यह विचार करो कि क्या उपाय ग्रहण करना चाहिए!

साइमन साहबका यह उपदेश सुनकर फिनियासका मन बहुत न बदला। किन्तु उससे वह अपनी प्रचण्ड-प्रकृतिको वशीभूत करनेकी चेष्टा करने लगा। पहले ही लिखा जा चुका है कि फिनियास एक भयकर व्यक्ति है। वह बड़ा संग्राम-प्रिय है। युद्ध-क्षेत्रमें प्रवेश करनेपर वह कालान्तक यमकी भाँति लड़ा करता है। विपत्ति किसे कहते हैं, यह स्वप्नमें भी न जानता था। वास्तवमें वह केवल शरीरके बल वालोंकी भाँति लड़ता हो, ऐसी बात न थी। युद्ध-क्षेत्रमें मानसिक बलकी ही विशेष आवश्यकता है। जो मृत्युसे डरता है, वह कदापि युद्ध-क्षेत्रके योग्य नहीं! वह कभी देव-दुर्लभ वीर नामसे नहीं पुकारा जा सकता। फिनियास मृत्युसे जरा भी न डरता था। किन्तु वर्तमान समयमें उसकी पूर्वकी उस भीम-प्रकृतिने कुछ सौम्यरूप धारण किया है। प्रेमाग्निके संसर्गसे लौह-हृदय भी पिघल जाता है।

कोयेकार सम्प्रदायकी किसी एक सुशिक्षिता, सच्चरित्रा युव-तीके प्रेम-पाशमें बंध जानेसे उसका हृदय और मन कुछ शान्त हुआ है। किन्तु इधर फिर उसकी पर-सेवा-वृत्ति विशेष प्रबल हो उठी है। अब भी वह परोपकारके लिए प्राण-देनेको प्रस्तुत है। किन्तु पहले जिस प्रकार वह हिताहित ज्ञान-शून्य होकर सब प्रकारके विवादोंमें भिड़ पड़ता था। अब इस समय उसका वैसा स्वभाव न था। अपनी प्रण-यिनीका शान्त मुख-कमल स्मृति-पथपर सामने आते ही वह अपनीदुर्दम्य-प्रकृतिको वशीभूत करनेकी चेष्टा करता था। अब वह सदुपदेशके सामने अपना मस्तक झुकाता है। फिनियासको युद्धके लिए तैयार होते देख सादमन साहबकी स्त्रीने मुसकुराकर कहा—फिनियासको क्या कोई उसके इच्छित कार्यसे रोक सकता है? किन्तु इस समय उसका हृदय अति पवित्र स्थानपर पहुँच चुका है। इसलिए उसका दुर्दम्यमन इस क्षण वन्दी हो रहा है।

जार्ज—पिता साइमन! यदि आप पकड़नेवालोंसे मिलने-से रोकते हैं तो इसी समय यहांसे भाग जानेके सिवा और कोई दूसरा उपाय नहीं है। शीघ्र ही यहांसे न भागनेसे फिर रक्षा नहीं हो सकती।

फिनियास—जार्ज, तुमने अच्छा ही कहा है! इसी क्षण यह स्थान छोड़ देनेसे वे तुम लोगोंको नहीं पकड़ सकते। मैं दो घंटे रात रहते ही वहांसे चल कर दौड़ा आ रहा हूं। वे आज प्रातःकाल तुमलोगोंकी खोजमें निकले हैं। इसलिए यहांसे इसी समय चल देनेसे वे हम लोगोंसे चार कोस पीछे रह जायँगे। मैं शीघ्रही माइकेलक्रसको बुला लाता हूं। उसको अपने लोगोंके पीछे-पीछे घोड़ेपर चलनेके लिए कहूंगा। वह पीछे रहकर उनलोगोंकी गति-विधि लक्ष्य

करता रहेगा। हमलोग आगे गाडीपर बढ़ चलेंगे। यह कहकर वह माइकेलक्रूसको बुलाने चला गया। तब साइमन साहबने कहा—जार्ज ! फिनियास एक बड़ा विलक्षण चतुर एवं कार्य-दक्ष व्यक्ति है। तुम इसके परामर्शके अनुसार चलना। उसके शरीरमें प्राण रहते तुम लोगोंको किसी विपत्तिकी आशंका नहीं है !

जार्ज—पिता साइमन ! मेरे मनमें बड़ी आशंका हो रही है कि हमारे लिए कहीं आपको विपत्तिमें ग्रस्त होना न पड़े !

साइमन—हमारी विपत्तिके लिए तुम पलभरके लिए भी चिन्ता न करना। हमने कर्त्तव्यके अनुरोधसे, धर्मकी आज्ञासे, विवेकके आदेशानुसार, ऐसा व्रत धारण किया है। हम लोगोंको, इस देश-प्रचलित घृणित आईनके अनुसार पशु-आचारी गोरे विचारक लोगोंके विचार-द्वारा दण्डित होनेपर भी किसी प्रकारकी, लज्जा नहीं लगती। इसके पश्चात् साइमन साहब अपनी स्त्री से कहने लगे—प्रिये ! तुम शीघ्रही इनलोगोंके भोजनका प्रबंध कर दो। जिसमे हमारे घरसे इनलोगोंको भूखे ही न जाना पड़े। वृद्धा राचेल अपनी संतानको लेकर शीघ्रता-पूर्वक उनलोगोंके भोजनका प्रबन्ध करने लगीं। इधर गाड़ी तैयार होने लगी। कमरेसे सबके चले जानेपर जार्ज इलाइजाके गलेमें हाथ डालकर सजल नेत्र हो कहने लगा—इलाइजा ! जिसके अनेक बन्धु-बान्धव हैं, बाग हैं, घर हैं, धन-सम्पत्ति है, वे लोग तो अपने स्त्री-पुत्रसे वियोग होनेपर, इतना कष्ट नहीं भोगते। क्योंकि उनलोगोंको प्रेम करनेकी अनेक सामग्रियाँ हैं। मन बहलावके अनेक साधन हैं, किन्तु तुम्हारे अथवा इस संतानके अतिरिक्त इस संसारमें क्या मेरे और कुछ है ! तुमसे विवाह होनेके पूर्व मेरी उन चिरदुःखिनी माता और बहिनके सिवा

और कोई मुझे चाहने वाला इस संसारमें न था। किन्तु क्या उनलोगोंका अब फिर कभी इस जीवनमें देख पाऊंगा। जिस दिन मेरी बड़ी बहिन एमिलिको दक्षिण प्रदेशीय वणिक क्रय कर लेगया, उस दिनके कष्टका ध्यान आनेसे आज भी मन चञ्चल हो जाता है। मैं किसी प्रकार धीरज नहीं धर सकता। मैं उस दुरात्मा मालिकके खुले बरामदेमें भूमिपर पड़ा सोया करता था। दिनमें जो वस्त्रलज्जा निवारण करनेके लिए पहिनता था, रात्रिमें भी वे ही मेरे एक मात्र बिछौने थे। जानेके समय मेरी बड़ी बहिनने रोते-रोते आ, मेरा हाथ पकड़कर मुझे जगाया। मैं चौंककर उठ बैठा! तब वे अत्यन्त कातर-स्वरमें कहने लगीं—जार्ज! तुम्हीं मेरे सबसे छोटे भाई हो। इसी लड़कपनमें तुम्हें कुटुम्बियोंसे हीन होकर अकेले ही इस निर्दय-मालिकके घर रहना पड़ा। इस संसारमें तुम्हारा और कोई बन्धु-बान्धव न रहा। मैं जो इतने दिनों तक तुम्हारे पास रही, सो आज मुझे भी जन्मभरके लिए तुम्हें छोड़कर दूसरे स्थानमें जाना पड़ा! मुझे मालिकने दक्षिण-प्रदेशके एक बनियेके हाथ बेच दिया है। नहीं जानती कि इस जीवनमें हमलोगोंको कितने कष्ट सहने पड़ेंगे! इस जीवनमें फिर कभी 'तुम्हें देख पाऊंगी, इसकी कोई सम्भावना नहीं। यह कहकर एमिलि मेरा गला कसकर पकड़के मुझसे लिपट गयी। मैं भी उसके गले लगकर रोने लगा। इलाइजा, अठारह वर्ष हुए जब एमिलिके इन स्नेह-पूर्ण वाक्योंने मेरे कानमें प्रवेश किया था। उस समयसे मैंने फिर कभी वैसे स्नेह-पूर्ण वाक्य नहीं सुन पाये। इतने पर मालिकके निष्ठुर व्यवहारसे मेरा मन तथा हृदय सूखने लगा। मैं अधमरेके समान रहने लगा। किन्तु तुम्हारे मिलनेपर मैं पुनः जीवित हो गया!

तुम्हारे निष्कपट प्रेमने, तुम्हारे पवित्र सहवासने मेरे मृत शरीरमें पुनः जीवन डाल दिया है। पापी इस समय फिर तुमको मुझसे छुड़ाना चाहते हैं। तुम्हें बल-पूर्वक मेरे सामनेसे ले जाना चाहते हैं। किन्तु प्राण रहते क्या मैं तुम्हें ले जाने दूँगा! इन गोरोंके अत्याचारोंसे यदि स्त्री-को न बचा सका, संतानकी रक्षा न कर सका, तो जीवित रहना केवल विडम्बना है। तब इस जीनेसे लाभ क्या? किसलिए मैं यह जीवन धारण कर रहा हूं? ऐसे अत्याचार-पीड़ित जीवनमें क्या सुख है? अथवा कोई शान्ति है? प्राण-प्रिय इलाइजा! जन्मभरके लिए विदा दो। मैं इन दुराचारी गोरोंके मस्तक चूर-चूर करके, इनके सिरोंको छेदकर हृदयसे मातृ-विच्छेद तथा भ्राता-भगिनी-विच्छेदका दुःख दूर करूँ। अब नहीं सहा जाता। दुःख पर दुःख, यन्त्रणा पर यन्त्रणा! यह जीवन अत्यन्त कष्टकर हो गया है।

इलाइजाने, जार्जकी बातें सुनकर उसे कोई उत्तर न दे, जैसे कोई स्वप्नमें बातें करता है; अपने आप कह उठी—कहाँ हो अनाथ-शरण, दीनबन्धु! इस गरीबिनी पर दया करो। जगदीश! इस चिरदुखी संतानका दुःख दूर करो! पिता आशीर्वाद दो, जिसमें हम सब निर्विघ्न यह देश छोड़कर जासकें!

जार्ज—परमेश्वर क्या अत्याचारका पक्ष समर्थन करते हैं? वे एक बार भी नहीं देखते कि कैसे घोर अत्याचारसे मैं पीड़ित हो रहा हूँ। ये अत्याचारी गोरे अँगरेज सदैव कहते हैं कि उनका यह निष्ठुराचरण बाइबिलके द्वारा अनुमोदित तथा न्याय-सङ्गत है। ईश्वरने उन लोगोंकी दासता करनेके लिए हम लोगोंकी सृष्टि की है। सचमुच ही क्या ईश्वरने उनकी दासता करनेके लिए हमारी सृष्टि की है? ये स्वार्थी धर्माधर्म-ज्ञान-शून्य गोरे गिरजाघरमें जाकर धर्मोपासना

करते हैं। अपनेको खीष्ट धर्मावलम्बी बतलाते हैं। किन्तु जो सब निरीह-प्रकृति दास-दासियाँ सत्य-सत्य ईसाके उत्तम दृष्टान्तका अनुसरण करते हैं, काले होनेपर भी अपने हृदयमें धर्मका भाव रखते हैं, सदा पवित्र भावोंका पोषण करते हैं, उनको वे गोरे बेतोंसे पीटते हैं। उन लोगोंको ये स्त्री-पुत्रसे अलग करके भिन्न-भिन्न स्थानोंमें बेचते हैं। उनके करुण-क्रन्दनसे आकाश गूँज रहा है। उनकी अविरल अश्रु-धाराओंसे देश आप्लावित हो रहा है, तो भी ईश्वर इसका कुछ भी विचार नहीं करते। इन निराश्रय दास-दासियोंको सन्ध्यासमय भी एक मुट्ठी अन्न नहीं मिलता। किन्तु अत्याचारी नाना प्रकारकी धन-सम्पत्ति और ऐश्वर्यका भोग करते हैं, इन्द्र-भवनकीसी अट्टालिकाओंमें निवास करते हैं, यह क्या ईश्वर देखकर भी नहीं देखते। हा! परमेश्वर, हा विधाता! क्या तुम इस संसारसे भागकर चले गये हो? तुम हो, यह निश्चय-पूर्वक जान लेनेपर एक बार तुम्हें देख लेनेपर, तुम्हारे ही द्वारपर आकर यह दुखी प्राण त्याग देता। तुम्हारे द्वारपर इन स्त्री-पुत्रको मारकर अत्याचारके कठोर आक्रमणसे इनकी रक्षा करता। रन्धन-शालामें बैठे हुए साइमन साहबने जब जार्जका ऐसा आर्तनाद सुना तो वे उसके पास चले आये। कहने लगे-बेटा जार्ज! धैर्य धारण करो! मेरी बात सुनो। ईश्वर परम न्यायवान है। संसारके मोहान्धकारमें पड़ जानेसे हम यह नहीं समझ पाते कि क्या भला है और क्या बुरा। संसारमें जो ऐश्वर्यशाली लोग, धनके गर्वसे गर्वित होकर, मदान्ध होकर, दूसरोंपर अन्याय करते हैं, तथा अपना प्रभुत्व स्थापित करनेके लिए अनेक प्रकारके अवैध उपायोंका उपयोग करते हैं, वे निरे मूर्ख हैं। वे इस संसारमें रत्तीभर भी सत्य-सुखका अनुभव नहीं कर

पाते। उनकी अन्तरात्मा जिस प्रकार अशान्तिमें मग्न रहती है, उनके हृदयकी प्रकृत अवस्था जैसी शोचनीय होती है, उसे तुम यदि एक बार भी देख पाते तो फिर इस प्रकारकी धन-सम्पत्तिके लिए कभी लालायित न होते। बेटा! हृदयका मोहान्धकार दूर हो जानेपर अनायास ही समझ लोगे कि विपत्ति, दुःख और दरिद्रता समय-समयपर मनुष्यको पवित्र सुख और शान्तिका भोग करनेके योग्य बनाती है। ऐश्वर्यके मदमें गर्वित होकर मनुष्य सदा परमेश्वरको भूल जाता है। वह परम दुर्लभ मानव-जीवनका महत्व नष्टकर डालता है। किन्तु विपत्ति अनेक स्थानोंपर मनुष्यके नेत्र, ईश्वरकी ओर फेर देती है। वत्स, जिसके हृदयमें ईश्वर सदैव निवास करते हैं, वे वृक्षोंके नीचे रहनेमें भी अपार सुख और शान्ति पाते हैं। जो ऐश्वर्य और प्रभुत्व ईश्वरकी ओरसे मनुष्यको हटाता है, वही ऐश्वर्य, वही प्रभुत्व, विषके समान मनुष्यकी जीवन-ग्रन्थिको छिन्न-भिन्न करके, अन्तमें उसको निःसीम दुःख-सागरमें डुबा देता है।

भक्ति और विश्वासकी कैसी चमत्कारिणी शक्ति है! साइमन हेलिड साहबने निज हृदयके प्रगाढ़ विश्वासके साथ जार्जको जो ऐसा उपदेश दिया, उससे उसका हृदय धीरे-धीरे शान्त होने लगा। ऐसा उपदेश जार्ज अन्य श्रीष्ट पादरियोंके मुखसे अनेक बार सुन चुका है। परन्तु उससे उसका मन रत्तीभर भी नहीं बदला। वह उपदेश उसके हृदयको कभी स्पर्श तक न करसका। वास्तवमें यदि उपदेशकके चित्तमें भक्ति, विश्वास अथवा आकुलता न रहे; उपदेशकके प्रत्येक शब्दोंके साथ-साथ हृदयमें रहने वाला दृढ़ विश्वास, यदि प्रकट न हो तो वह उपदेश कभी कार्यकारी नहीं होता! साइमन हेलिड साहब इन असहाय दास दासियोंके उपकारके लिए

सदा जेल जानेको तैयार रहते हैं, अपना जीवन देकर इन लोगोंका उद्धार करनेमें वे एक पल भरके लिए भी कुण्ठित नहीं होते। इसलिए ऐसा त्याग, ऐसा निःस्वार्थ प्रेम, जिसके जीवनका एक मात्र व्रत है उसका उपदेश अवश्य हृदय-ग्राही होगा। इसमें कोई सन्देह नहीं। ऐसे लोगोंके उपदेशसे तो पाषाण-हृदय भी पिघल जाता है।

इसके पश्चात् राचेल इलाइजाका हाथ पकड़कर, उसे भोजनालयमें ले गयीं। सब लोग खाने बैठे। इसी समय रूथने आकर इलाइजाके हाथमें कई जोड़े मोजे और कुछ खाद्य-पदार्थ दिये। इस सहृदया रमणीके साथ जो यहाँ आकर इलाइजासे परिचय हुआ, यह बात इससे पहले लिखी जा चुकी है। रूथ ये सब वस्तुएँ इलाइजाके हाथमें देकर कहने लगी-बहिन! तुम्हारे बच्चेके पैरमें मोजा न देखकर-जब यह सुना कि आज ही तुम यहाँसे चली जाओगी तो चटपट मैंने हेरीके लिए कई एक मालपूए तैयार कर लायी हूँ। कई दिन हुए मैंने वे मोजे तैयार कर रखे थे। रास्तेमें समय-समयपर कुछ खानेको न देनेसे इसे बड़ा कष्ट होगा! यह कहकर रूथने हेरीको अपनी गोदमें लेकर उसका मुख चुम्बन किया। उसके जेबमें कई एक मालपूए रख दिये। इलाइजा सजल नेत्रोंसे रूथको धन्यवाद देकर कहने लगी-बहिन! तुम्हारी दया और तुम्हारे स्नेहके लिए मैं तुम्हारी चिरऋणी रहूँगी। इससे अधिक इलाइजा और कुछ न कह सकी। कृतज्ञताके उमड़े हुए वेगने उसका गला रूँध दिया। राचेलने रूथको वहीं एकत्र बैठकर भोजन करनेको कहा। पर रूथने बड़ी व्यस्तताके साथ कहा—नहीं मा! मैं इस समय अधिक देरतक नहीं ठहर सकती, क्योंकि अपने बच्चेको जानकी गोदमें दे आयी हूँ और चूल्हेपर भात चढ़ा

आयी हूँ। मेरे विलम्ब करनेपर, जानकी असावधानीसे भात नष्ट हो जायगा। और लड़केके रोनेपर जान उसे चीनी खिला-खिलाकर चुप कराते-कराते, घरकी सारी चीनी नष्ट कर डालेगा! रूथ यह कहकर उसी क्षण इलाइजा तथा उसके स्वामीसे विदाई लेकर चली गयी।

भोजन कर लेनेपर सब लोग गाड़ीपर बैठे। इलाइजा एवं जिमकी वृद्धा माता गाड़ीके बीचमें बैठीं। और जिम तथा जार्ज सामने बैठे फिनियास गाड़ीके पीछे खड़ा रहा। जार्जने गाड़ीपर चढ़ते ही धीरे-धीरे जिमसे पूछा—भाई! तुमने बन्दूक तो ठीक करली है न? पकड़ने वालोंसे सामना हो जानेपर, बन्दूककी आवश्यकता होगी। जिमने कहा—सब ठीक है। प्राण रहते क्या अपनी वृद्धा माताको लेजाने दूँगा?

गाड़ी चलानेकी तैयारी करनेपर साइमन हेलिडने कहा-इस समय विदा हुआ। दयामय परमेश्वरके आशीर्वादसे तुम लोगोंके निर्विघ्न पहुँच जानेपर ही मैं परम सुखी हूँगा। ईश्वर तुम लोगोंको निरापद रखें। तब गाड़ीमेंसे इलाइजा, जिमकी माता, जिम तथा जार्ज एक साथ ही बोल उठे-पिता साइमन! परमेश्वर आपको सुखी रखें! आपका मङ्गल हो!

घड़-घड करती हुई गाड़ी चली। गाड़ीपर बैठ जानेपर किसीके साथ किसीको बात-चीत करनेकी कोई सुविधा न थी। गाड़ी शब्दके कारण कोई किसीकी बात न सुन पाता था। विशेषतः वे लोग शान्तिके साथ भागे जा रहे थे। हैरी, इलाइजाकी गोदमें बड़े शीघ्र ही सो गया। इलाइजा और जिमकी माताकी आँखोंमें निद्रा न थी। भय और त्राससे वे दोनों उत्कण्ठित चित्तसे समय बिताने लगीं। थोड़ी रात रहते उन लोगोंने देखा कि वे लोग पाँच-सातकोस चले आये हैं। अब चिन्ता कुछ कम हुई! इलाइजाका

अब कुछ नींद मालूम होने लगी। फिनियास सारी रात खड़ा रहा। रास्तेकी थकावट दूर करनेके लिए वह रात भर लड़ाईके गाने गाता रहा।

अन्तमें रात्रिके समाप्त होनेके तीन घन्टे पूर्व. पीछेसे आते हुए घोड़ेके टापोंके शब्द जार्जको सुन पड़े। उसने उसी समय फिनियासको उससे सचेत किया। उसने कहा—जान पड़ता है, माइकलक्रूस घोड़ेपर चढ़े वेगसे आ रहा है। फिर कुछ देर रुककर कहा—ठीक है, ठीक है! वही है! मैंने शब्द-से ही समझ लिया कि ये उसीके घोड़ेके पैरोंके ही शब्द हैं। गाड़ी रोकनी होगी। देखें क्या समाचार ले आ रहा है! रात उँजेली थी। गाड़ी रुकी। चन्द्रमाके प्रकाशमें दिखायी पड़ा कि एक आदमी घोड़ेपर चढ़कर पहाड़ीके ऊपरसे दौड़ा चला आ रहा है। एक पहाड़ीसे दूसरी पहाड़ीपर चढ़नेके समय, वह बीच-बीचमें अदृश्य हो जाता है, फिर पहाड़ीके ऊँचे स्थानपर चढ़नेपर ही वह दिखायी पड़ता था। उस अश्वारोहीके पासकी पहाड़ीपर चढ़ते ही फिनियासने कहा-कुछ दूर नहीं, वही आ रहा है! दस-बारह मिनटमें उत्कंठा-के साथ उससे पूछा—कहो, क्या समाचार है? क्रूसने कहा भाई, बड़ी विपत्ति है। प्रायः दस-बारह आदमी पक्के शराबी-की भाँति घोड़ोंपर चढ़े चले आ रहे हैं। बाघकी भाँति दाँत पीसकर कह रहे हैं कि आज अवश्य ही उनको पकड़ेंगे। क्रूस-की बातसमाप्त भी न हो पायी थी कि फिर घोड़ोंकी टापोंके शब्द सुनायी पड़ने लगे। तब फिनियास उछलकर गाड़ीसे कूद पड़ा और घोड़ोंके मुँहकी रास पकड़कर बल पूर्वक गाड़ी खींचते-खींचते रास्ता छुड़ाकर एक पहाड़ीकी जड़के पास ले गया। पकड़ने वाले स्पष्ट रूपसे आगे बढ़ते हुए दिखायी पड़ने लगे। इलाइजाने चिल्लाकर अपने पुत्रको खूब कस-

Chinj...dal

कर अपने हृदयसे लिपटा लिया। जिमकी वृद्धा माता "परमेश्वर रक्षा करो! ईश्वर बचाओ" यह कहकर बड़े जोरसे चीत्कार करने लगीं। जार्ज एवं जिम रिवाल्वर और पिस्तौल हाथमें लेकर नीचे खड़े हुए। फिनियास इलाइजाके पुत्रको कंधे पर चढ़ाकर, इलाइजा और जिमकी माताका हाथ पकड़कर पहाड़ीपर चढ़ने लगा। इस पहाड़ीके सम्पूर्ण स्थानोंसे फिनियास भली-भाँति परिचित था। इसके शिखरपर चढ़ना बड़ा कठिन है। उसपर एक साथ ही कई आदमी नहीं चढ़ सकते। एक-एक करके चढ़ना पड़ता है। इसीलिए उसने चतुराई करके पहिले ही इस पहाड़ीके निकट आकर पहाड़पर चढ़ा देनेके पश्चात् फिनियासने जार्ज और जिमको उनके पास आनेके लिए कहा, एवं स्वयं फिर नीचे जाकर क्रूससे कहा—भाई क्रूस! तुम शीघ्रतासे गाड़ी लेकर जाओ और पासकी कोयेकार-बस्तीसे आमारिया और उसके पुत्रोंको साथ लेते आओ! यह कह और उसे भेजकर वह फिर पहाड़ीपर चढ़ा। वहाँ पहुँचकर वह जार्ज तथा जिमसे बोला—किसलिए इस पहाड़ीपर ले आया, यह तो तुम समझ गये न? यहाँपर एक रिवाल्वर हाथमें लेकर खड़ा होकर केवल एक आदमी अपने सैकड़ों शत्रुओंपर विजय प्राप्तकर सकता है। इस पहाड़ीपर कई आदमी एक साथ नहीं चढ़सकते। जो कोई इसपर चढ़नेकी चेष्टा करेगा, तुरंत उसपर गोली छोड़दूँगा!

जार्ज—आपकी चतुराई मैं अच्छी तरह समझता हूँ! किन्तु अब आप बैठें। आपको अब इस झगड़ेमें पड़नेकी कोई आवश्यकता नही है। क्या जानें, कदाचित् आपको भी न इसके कारण देश-प्रचलित अनर्थक कानूनके अनुसार कहीं दण्ड भोगना पड़े! इस समय जो कोई विपत्ति आवेगी,

उसका सामना मैं अकेले ही कर लूँगा। फिनियासने हँसते-हँसते कहा—अच्छा, तुम अकेले ही युद्ध करो! यहाँ खड़े होकर गोली चलानेके लिए अधिक आदमियोंकी आवश्यकता नहीं। इधर देखो, पकड़नेवाले आपसमें क्या परामर्श कर रहे हैं। मैं पहले इनसे पूछूँगा कि ये यहाँ किस॰ लिए आये हैं, और क्या चाहते हैं! यदि ये कहेंगे कि तुम लोगोंको पकड़ने आये हैं तो केवल इतना कहूँगा कि जो कोई हमलोगोंको पकड़नेकी चेष्टा करेगा, वही मारा जायगा। इस॰ पर यदि वे लौट जायँगे तो झगड़ेकी कोई आवश्यकता नहीं!

पकड़नेवालोंमें पाठकोंके पूर्व परिचित टमलकार और मार्क ये दोनों सबसे आगे खड़े थे। उनके पीछे दो पुलिसके सिपाही। इनके अतिरिक्त और कई एक शराबी थे। उनमेंसे एक शराबीने कहा—साले, अच्छी जगह पहुँच गये हैं!

टमलकार—इसी रास्तेसे चढ़े हैं। हम लोग भी इधर सेही चढ़ेंगे। आज, अब साले नहीं भाग सकते! कूदकर भागनेमें तो उनकी हड्डी-पसलीका पता न लगेगा। और दूसरा कोई मार्ग है ही नहीं!

मार्क-लकार बड़ी सावधानीसे आगे बढ़ो! पहाड़ीके ऊपरसे बन्दूक चलानेपर ये एक बार ही हमलोगोंके प्राण ले सकते हैं!

लकार—बचा, केवल अपने प्राणोंका ही सोच करते हो! तुम्हारे प्राण क्या बड़े मूल्यवान् हैं? तुम मेरे पीछे-पीछे आओ न। डर क्या है? काले निग्रो लोग—ये गुलाम लोग और गोली! काले गुलाम क्या कभी गोली चला सकते हैं, या युद्ध कर सकते हैं? एक घुड़कीमें तो ये रोते-रोते नीचे आवेंगे!

मार्क—नहीं, मैं अपने प्राणोंकी चिन्ता न करूँगा! दो-चार रुपयोंके लिए अपने प्राण गँवाऊँगा! प्राण रहनेपर ही सब है। तुम काले निग्रो समझकर इतना साहस मत करना! यह गुलामोंकी जाति वन्दूक पा जानेपर यमकी भाँति युद्ध करती है। एक काला गुलाम तीन गोरोंके सिर फोड़ दे सकता है!

इसी समय जार्जने पीछेसे सामने आकर पकड़नेवालोंको पुकारकर अत्यन्त धीरे और गम्भीर स्वरसे पूछा—महाशय! आप लोग कौन हैं? किस लिए यहाँ आये हैं? हम लोगोंसे आपका क्या प्रयोजन है?

लकार—हम लोग कई भग्गू दास-दासियोंको पकडनेके लिए आये हैं। जार्ज हेरिस, इलाइजा हेरिस तथा उसका पुत्र और जिम सेल्डन तथा उसकी माता। इन्हीं लोगोंको हम लोग पकड़ेंगे। हमारे साथ गिरफ्तारीके परवानेको लिये हुए पुलिस भी आयी है। अब समझ न गये कि हमलोग किस लिए आये हैं? तुम्हीं न जार्ज हेरिस, हो, केन्टाकी प्रदेशके हेरिससाहबके खरीदे हुए गुलाम हो।

जार्ज—हाँ, मेरा ही नाम जार्ज हेरिस है! केन्टाकी प्रदेशका एक हेरिस नामका व्यक्ति मुझे अपना क्रीतदास कहकर, अपनी सम्पत्ति समझकर, दावा करता है। किन्तु मैं किसीकी सम्पत्ति नहीं हूँ! मैं स्वाधीन हूँ! परमेश्वरके राज्यमें स्वाधीनताके साथ विचरण करता हूँ। मेरे स्त्री-पुत्रपर किसीका कुछ अधिकार नहीं। जिम सेल्डन तथा उसकी माता यहीं हैं। उनके ऊपर भी किसीका कोई अधिकार नहीं। हमलोगोंको अपनी रक्षाके लिए ईश्वरने ये बलिष्ठ भुजाएँ दी हैं! तुम लोग यदि अपनी मृत्युको चाहते हो तो हमलोगोंके पास आ सकते हो। हमलोगोंको पकड़-

नेके लिए इस पहाड़ीपर चढ़नेका उद्योग करनेसे, निश्चय ही मैं प्राण ले लूंगा!

जार्जकी ऐसी बातें सुनकर पकड़नेवालोंमेंसे मार्क बोला—तुम लोग शीघ्र ही नीचे उतर आओ। इधर देखो, ये पुलिसके सिपाही है। हमलोगोंने कानूनका आश्रय लिया है। कानूनके अनुसार हमलोगोंको तुमलोगोंके पकड़नेका अधिकार है। कानूनके सामने ऐसी बातें नहीं ठहरतीं। अतएव, कुछ चोंचपड़ न कर धीरेसे शीघ्र हमलोगोंके पास चले आओ!

जार्ज—तुमलोगोंने जिस कानूनका आश्रय लिया है, उसे मैं भली-भाँति जानता हूँ। आईन केवल तुम्हीं लोगोंका पक्ष समर्थन करता है, यह भी मैं बहुत दिनोंसे जानता हूं। तुम्हारी यह इच्छा है कि मेरी स्त्रीको बल-पूर्वक लेजाकर नव अर्लिन्समें बेचोगे। मेरे पुत्रको लेजाकर भेड़के बच्चेके समान बाड़ेमें रखोगे। जिम तथा उसकी माताको उनके उस निष्ठुर मालिकके हाथ सौंपोगे और वह निष्ठुर मालिक पैरकी ठोकरसे इस वृद्धाका मस्तक चूर-चूर कर देगा तथा उसके साथ ही उसके पुत्र जिमको मार डालेगा। यही तो तुमलोगोंका मतलब है! अच्छा, तो मेरी बात सुनो—तुम लोग अपनेको क्रिश्चान कहते हो इसलिए तुमलोगोंका व्यवहार पिशाचके समान है। धिक्कार है, तुम्हारे देश-प्रचलित आईनको। ऐसे जघन्य और पक्षपात-पूर्ण कानूनको मैं सहस्र बार पैरों तले कुचलता हूँ! तुम्हारे देशके कानूनको मैं नहीं मानता। तुम्हारे इस देशको मैं नरक समझता हूँ। इसीसे तुम्हारा देश छोड़कर जा रहा हूँ। तुम्हारे देशमें जो कानून बनाते हैं, उन्हें धिक्कार है! तुम्हारे देशके जो विचारक उस जघन्य आईनके अनुसार विचार करते हैं, उन्हें सहस्र बार धिक्कार है। धनके लोभसे तुमलोग सब प्रकारकी

धोखेबाजी और शठताके कार्य और निष्ठुर व्यवहारोंसे अपने हाथ कलङ्कित करते हो। तुमलोग निराधार, दीन, गरीबोंका रक्त चूसनेके लिए नानाप्रकारकी चतुराइयाँ करके नित्य-प्रति नये-नये कानून प्रचलित करते हो! तुमलोगोंके इन कानूनोंका उद्देश्य न्याय-संगत विचार है, अथवा दुर्बल और असहायोंकी सम्पत्तिका अपहरण? तुम समझते हो कि मैं ऐसे कानूनोंको मानूंगा? कदापि नहीं! मैं पूर्ण स्वाधीनताके साथ इस स्थानपर खड़ा हूं। जिस परमेश्वरने मुझे उत्पन्न किया है, जिसने मेरी भुजाओंमें बल दिया है, जो सदा मेरा सहायक है, उसीका पवित्र नाम स्मरण करता हुआ, अपनी स्वतंत्रताकी रक्षाके लिए प्राण-पणसे चेष्टाकरूँगा। 'जीऊँगा तो स्वाधीन, नहीं तो मृत्यु' यही मेरा जप-मन्त्र है। मनुष्य शरीर पाकर जो अपनी स्वतंत्रताके लिए मर नहीं मिटता, उसके जीनेको धिक्कार है! तुमलोग आजीवन हमलोगोंको काले कहकर घृणा करते रहे हो, हमलोगोंके प्रतिघोर निष्ठुराचरण करते रहे हो, आज देखूँगा कि तुम गोरोंमें कितना बल, कितनी शक्ति है!

जिस समय ये बातें जार्जके मुखसे निकलने लगीं, उस समय उसका मुख बड़ा भयङ्कर हो गया। उसके दोनों नेत्र, अग्निके समान लाल लाल हो गये, मानो उसके नेत्रोंसे अग्नि-वर्षा हो रही थी, ओंठ फड़क रहे थे। जिस समय वह दाहिना हाथ उठाकर बातें करता था, उस समय जान पड़ता था कि वह इस देश-प्रचलित अत्याचार और अन्यायपूर्ण व्यवहारके सम्बन्धमें परमेश्वरसे निवेदन कर रहा है—न्याय का पक्ष समर्थन कर रहा है!

यदि कोई अंगरेज युवक इँग्लैंडसे अमेरिका भागते समय ऐसा वीरत्व दिखलाता तो इतिहासके सुन्दर पत्रोंमें स्वर्णा-

अरोंसे उसका नाम लिखा जाता। किन्तु जार्ज अफ्रिका-वासिनी क्रीता-दासीके गर्भसे उत्पन्न-संतान है, उसकी वीरता गोरे इतिहास-लेखक, लौह-लेखनीसे कज्जलाक्षरोंमें भी लिखना स्वीकार नहीं करेंगे?

जार्जकी ऐसी बातें सुन तथा उसके मुखकी भाव-भङ्गी देखकर पकड़ने वाले डर गये। वस्तुतः सत्साहस और दृढ़ प्रतिज्ञता कभी-कभी बड़े-बड़े बलवानोंको भी भयभीत कर दे सकती है। वे सभी हत-बुद्धि हो गये! तब मार्क निर्भीकताके साथ आगे बढ़ा। उसने जार्जको लक्ष्यकर गोली चलायी एवं मन ही मन सोचने लगा कि इसको मार डालनेपर भी नियमित पुरस्कार पाऊँगा। इसका मृत-शरीर इसके मालिकको देनेपर, वह विज्ञापनमें लिखा हुआ पुरस्कार देगा। किन्तु बन्दूककी गोली जार्जके शरीरमें लगी नहीं। वह केवल उसके बायें कानके ऊपरी भागको छेदती हुई चली गयी। यह देखकर इलाइज़ा बड़े जोरसे चिल्ला उठी! जार्जने उससे कहा-इलाइज़ा कुछ डर नहीं कुछ भय नहीं फिनियासने आगे बढ़कर जार्जसे कहा-इस समय 'इलाइज़ा को सान्त्वना देनेका अवसर नहीं है। देखते नहीं हो कि ये सब बड़े कठोर प्रकृतिके मनुष्य हैं। शीघ्र ही मार्ग बन्द करो!

जार्ज—जिम, तुम्हारी बन्दूक तो भरी है न? पहिले जो व्यक्ति चढ़नेकी चेष्टा करेगा, उसपर मैं गोली चलाऊँगा और दूसरे व्यक्तिपर तुम। एक आदमीपर दो बार गोली न चलाओ!

जिम—तुम्हारी गोली यदि पहिले व्यक्तिको न लगी, तो?

जार्ज—उसके लिए तुम चिन्ता मत करो! मैं जिसे लक्ष्य बनाऊँगा, उसका फिर निस्तार नहीं है। किन्तु जिसमें इनका प्राण न निकल जाय, उस बातका ध्यान रखना होगा!

यह सुनकर, फिनियास मन ही मन सोचने लगा कि जार्जके हृदयमें एक विशेष महत्तभाव है।

मार्कने जार्जको लक्ष्य करके जो गोली चलायी थी वह उसको नहीं लगी। यह देखकर वे लोग विचारने लगे कि कौनसा उपाय किया जाय। तब लकार "मैं क्या इन काले निग्रो गुलामोंसे डरता हूँ" कहकर पहाड़ीपर चढ़ने लगा। और लोग उसके पीछे-पीछे चले। किन्तु कुछ दूर चढ़नेपर जार्जने टमलकारको लक्ष्यकर बन्दूक छोड़ी। बन्दूककी गोली लकारके हाथमें लगी। किन्तु इस प्रकार घायल होते पर भी वह लौटा नहीं। क्रमशः आगे बढ़ने लगा। तब फिनियासके आगे बढ़कर धक्का देते ही वह पहाड़ीके नीचे आ पड़ा। इतने ऊँचेसे गिरनेके कारण वह बेहोश हो गया। उसके शरीरमें स्थान-स्थानपर घाव हो गये। तब मार्कने दोनों सिपाहियोंको बुलाकर कहा—भाई! तुम लोग टमलकारको लेकर यहाँ ठहरो, मैं शीघ्र ही घोड़ेपर चढ़कर और कई सिपाहियोंको बुलाये लाता हूँ। यह कहकर मार्क किसी प्रत्युत्तरकी प्रतीक्षा न कर बड़े वेगसे चला गया। पुलिसके दोनों सिपाहियोंमें से एकने लकारके पास आकर पूछा—हम लोगोंके साथ चल सकोगे?

लकार—भाई, चल सकूँगा अथवा नहीं, कह नहीं सकता। मुझे एकबार पकड़कर उठाओ तो देखूँ। यह कोयेकार शाला न होता तो मैं इनलोगोंको अनायास ही पकड़ लेता।

इसके पश्चात् दोनों सिपाहियोंने लकारको पकड़कर घोड़ेपर बैठाया। किन्तु घोड़ेके चलनेके पहिले ही लकार फिर नीचे गिर पड़ा। तब पुलिसके सिपाही सोचने लगे कि हम लोगोंने पहिले जो स्वीकार किया है, उसे पूरा न कर लेंगे

तो फिर पूरा कर लेना असम्भव है। इसीको लेकर सारी रात दुःख भोगना पड़ेगा। कैसी आफत है, यह सोचकर पुलिसके सिपाही टमलकारको वहीं छोड़कर चले गये। वह उस समय मृतवत् भूमिपर पड़ा रहा।

पकड़नेवालोंमें से टमलकारके अतिरिक्त और सब लोगों के चले जानेपर जार्ज, जिम, इलाइजा आदि सब लोग पहाड़ी से नीचे उतरे। इधर माइकेल क्रूश स्टिफेन, अमारिया तथा और दो कोयेकारोंको लेकर गाड़ी सहित वहां आ पहुंचा। इलाइजा पहाड़से नीचे आते ही कहने लगी—देखो तो यह आदमी एकदम मर गया क्या? ईश्वर करे इसकी मृत्यु न हुई हो।

फिनियासने मुसकुराकर कहा—बुरे कर्मोंका यही उचित फल है। किन्तु इसके साथी इसे छोड़कर चले गये।

इलाइजा—यह तो मृत्यु-यंत्रणासे छटपटा रहा है। इस की यंत्रणा दूर करनेके लिए जैसे हो, कुछ उपाय करो।

जार्ज—अवश्य, इसके प्राण बचाने के लिए कुछ उपाय करना होगा। शत्रुके प्रति दया करनी यह अवश्य ही खीष्टीय-धर्मके अनुकूल है। इसमें कोई संदेह नहीं।

फिनियास—इसे हम लोग ले जाकर किसी कोयेकार-परिवारमें रख देंगे। पश्चात् उपयुक्त सेवा-सुश्रूषा द्वारा स्वस्थ और सबल हो जानेपर इसके घर भेज देंगे। इसे ऐसी दुरवस्थामें छोड़कर चले जानेसे मेरी एमिली निश्चय ही मेरे ऊपर बड़ी असंतुष्ट होगी। देखूं इसकी अवस्था कैसी है।

फिनियासके निज-हृदयमें दया उत्पन्न न होनेपर भी, जिसमें भावी पत्नी रुष्ट न हो, इस लिए टमलकारके प्रति विशेष दया प्रकट करनी पड़ी। वह लकारके पास जाकर उसके सब अङ्ग-प्रत्यङ्गोंकी परीक्षा करने लगा। पहिले

फिनियास एक प्रसिद्ध शिकारी था। घावोंको किस प्रकार बांधना होता है, वह भली प्रकार जानता था। अपने जेबसे रूमाल निकालकर वह लकारके आहत-स्थानको बांधने लगा। कुछ सुख पहुँचनेसे लकार बोल उठा—मार्क है क्या? फिनियासने हँसकर कहा—मार्क तुम्हें छोड़कर भाग गया, सिपाही भी भाग गये। मैं अब तक तुम्हारा शत्रु था, पर अब तुम्हारे बचानेकी चेष्टा करूँगा।

लकार—मुझे जान पड़ता है कि मैं अब बचूँगा नहीं। शाले मुझे यहीं फेंक कर भाग गये हैं। माताकी बात आज सत्य हुई। माने मुझसे बार-बार कहा था कि ये सब लोग विपत्तिके समय तुम्हें छोड़कर भाग जायँगे। जिमकी माता ने, यह बात सुनकर कहा—सुना! इसके माँ है? उसे कितना कष्ट होगा! परमेश्वर, तुम इसकी रक्षा करो। फिनियासने लकारके घावको अपनी रूमालसे बाँध दिया। तब लकार ने पूछा—तुम्हींने न मुझे धक्का मारकर नीचे गिरा दिया था। फिनियासने कहा—उस समय धक्का न देता तो तुम हम सबके प्राण ले लेते। अब तुम्हें धक्का न दूँगा। इस समय तुम्हारा जिससे भला होगा, वही करूँगा। तुम्हें किसी कोयेकारके घरमें रख दूँगा। वे तुम्हारी उचित सेवा सुश्रूषा करेंगे। लकार शारीरिक कष्टसे फिर अचेत हो गया। तब सब लोगोंने उसे पकड़कर उठाया और गाड़ीपर लिटा दिया एवं एक-एक करके वे सब भी गाडी पर बैठे। गाड़ी क्रमशः आगे बढ़ी। जिमकी माता लकारका सिर अपनी गोदमें रखकर बैठी। जार्जने फिनियाससे पूछा—आप क्या अनुमान करते हैं, यह आदमी बच जायगा?

फिनियासने कहा—कुछ डर नहीं। अधिक रक्त निकलने से अचेत हो गया है। शीघ्रही अच्छा हो जायगा। जार्ज-

ईश्वरको धन्यवाद है कि मेरे हाथसे ऐसी नर-हत्या नहीं हुई। मेरे हाथ नर हत्याके कलंकसे कलङ्कित न हुए, किन्तु इसके सम्बन्धमें क्या करेंगे? फिनियास--हमारे कोयेकार सम्प्रदायके लोगोंमें वृद्धा ग्रान्ड्यम स्टिफेन बड़ी सहृदय रमणी हैं। उनके पास ले जानेसे वे इसकी बड़े मनोयोगसे सेवा-शुश्रूषा करेंगी। इसके एक घन्टेके बाद गाड़ी एक स्वच्छ घरके सामने आ पहुँची। लकारको पकड़कर लोगोंने घर की-सबसे उत्तम शैयापर सुलाया। वहाँ उसकी सेवा-शुश्रूषामें किसी प्रकारकी त्रुटि नहीं हुई।

इलाइजा और जार्ज आदि भग्न दास-दासियोंको यहीं छोड़कर अब मैं अगले परिच्छेदमें टामका कुछ संवाद सुनाता हूं।

वीसवाँ परिच्छेद

सच्ची स्वामी-भक्ति

सच्चरित्रता, साधुता तथा सदाचरण, सर्वत्र ही सम्मानित हैं। जिसका हृदय साधुभाव तथा धर्म भावसे पूर्ण है, इस संसारमें उसे किसी अवस्थामें कोई कष्ट नहीं, कोई विपत्ति नहीं अथवा कोई भय नहीं है। सभी उससे प्रेम करते हैं, उसकी भक्ति करते हैं तथा उसे श्रद्धाकी दृष्टिसे देखते हैं। वस्तुतः सद्भावके संस्पर्शसे कठोर पाषाण-हृदय भी पिघल जाता है। दया, स्नेह, सहृदयता, त्याग-स्वीकार एवं निःस्वार्थ-प्रेमसे संसार सर्वदासे पराजित होता आया है।

इसलिए सरसतासे पूर्ण टामके हृदयने क्रमशः सेन्टक्लेयर को प्रसन्नकर लिया। टाम जो सेन्टक्लेयरकी भक्ति और श्रद्धा आकर्षित करने लगा इसमें कोई आश्चर्य नहीं।

मैं पहिले ही बतला चुका हूँ कि सेन्टक्लेयरके गृहकार्य मे कोई सुशृंखला न थी। वे आय-व्ययका कोई हिसाब न रखते थे। उनकी सहधर्मिणी तो प्राय शैय्यापर ही पड़ी रहती थीं। अडालफ नामक उनका प्रधान दास बड़ा शराबी था। वह अपने इच्छानुसार मालिकका बड़ा अप-व्यय करता था। किन्तु टामके आ जानेसे सेन्टक्लेयर कभी-कभी उसे भी किसी-किसी कार्यमें नियुक्त करते थे। वे सारे कार्य वह इस विश्वस्त रीतिसे सम्पादन करता कि सेन्टक्लेयरने उस की साधुता और प्रभुभक्ति देखकर आय-व्ययका सारा भार उसीपर छोड़ दिया। टामके हाथ रुपये देते समय वे गिनते भी न थे। वह इच्छा करनेपर सहज ही बहुतसे रुपये मार सकता था, किन्तु धोखेबाजी अथवा झूठेपनसे टाम पूर्णतः घृणा करता था।

टाम सेन्टक्लेयरको अपना स्वामी समझकर उनका सम्मान करता था। किन्तु सम्मानके भावने दूसरा ही रूप धारण किया। टाम वृद्ध था और सेन्टक्लेयर तरुण युवक। टाम गम्भीर प्रकृतिका आदमी था; सेन्टक्लेयर चंचल प्रकृतिके थे। इसलिए टामके हृदयमें सेन्टक्लेयरके प्रति पितृवत्सलता उत्पन्न हुई। टामने देखा कि सेन्टक्लेयरका हृदय अत्यन्त दया-पूर्ण है। किन्तु वे बाइबिल नहीं पढ़ते। प्रातःकाल व सायं कालमें भूलकर भी कभी ईश्वरका नाम नहीं लेते। कभी गिरजा घरमें जाकर ईश्वरोपासना नहीं करते। सदा आमोद-प्रमोदमें ही रत रहते हैं, वे सदा नाट्यशालामें जाते है। कभी सम-वयस्क युवकोंके साथ एकान्तमें

सुरापान करते हैं और हिताहित ज्ञानसे एकदम शून्य हो जाते हैं। उनकी यह दशा देखकर टाम मन ही मन बड़ा कष्ट अनुभव करता था। ऐसा दयालु स्वामी, ऐसा सहृदय और सरल प्रकृति युवक ईश्वरसे विमुख हो रहा है, उपासना-शून्य जीवन-व्यतीत करता है। यह देखकर टामको अपार दुख होता था। प्रति दिन टाम अपने घरमें बैठकर यह प्रार्थना करता कि हे दयामय! तू इस सहृदय युवकका हृदय परिवर्त्तित करदे। इसे धर्मके लिए, अपनी भक्ति-सुधाके लिए पिपासु बना।

एक दिन सेन्टक्लेयर अपरिमित सुरापानकर ज्ञान-शून्य हो अधिक रात्रिको मतवालापन करते-करते घर आये। टाम और अडाल्फने उनको पकड़कर गाड़ीसे उतारा और लेजा-कर पँलगपर लिटा दिया। अडाल्फ सेन्टक्लेयरकी ऐसी दशा देखकर हँसने लगा। किन्तु टाम स्तब्ध हो गया। उसके मुखसे शब्द न निकला, केवल दोनों नेत्रोंसे आंसू बहने लगे। अडाल्फ फिर टामकी भाव-भङ्गी देखकर हँसने लगा। उस रात्रिमें फिर टामको निद्रा नहीं आयी। वह समस्त रात्रि अपने स्वामीके मंगलके लिए प्रार्थना करता रहा। प्रातः काल सोकर-उठनेपर, सेन्टक्लेयरने टामको किसी कार्यसे कहीं भेजनेके लिए बुला भेजा। टाम सजल नेत्रों-सहित अपने स्वामीके पास जा खड़ा हुआ। उन्होंने टामके हाथ में कई रुपये देकर किसी विशेष कार्यके लिए भेजा। टाम खड़ा रहा। सेन्टक्लेयरने सोचा रुपये देनेमें कदाचित् भूल हुई है। यह सोचकर टामसे पूछा—टाम सब ठीक है कि नहीं? टामने कुछ उत्तर न दिया। सेन्टक्लेयरने फिर पूछा—टाम, रुपये देनेमें क्या भूल हुई है? टामने उत्तर दिया—मुझे कहनेमें भय लगता है।

सेन्टक्लेयर—टाम क्या हुआ है? तुम्हारे मुखकी अवस्था देखनेसे जान पड़ता है कि कोई घोर विपत्ति आ पड़ी है। कहो न, क्या हुआ है।

टाम—प्रभु! मेरे मनमें बड़ा कष्ट होता है। मैं आशा करता हूँ कि प्रभु सबके साथ समान सद्व्यवहार करेंगे।

सेन्टक्लेयर—क्या मैंने किसीके साथ असद्व्यवहार किया है? मुख्य बात क्या है, कहो न। जान पड़ता है कि तुम मुझसे कोई बात कहना चाहते हो, उसीकी यह भूमिका है।

टाम—प्रभु हम लोगोंके प्रति आप सदैव सद्व्यवहार करते हैं। हम लोगोंके प्रति कभी कोई अन्याय-आचरण नहीं हुआ है। पर एक आदमीके साथ आप भला व्यवहार नहीं करते।

सेन्टक्लेयर—तो किसके प्रति असद् व्यवहार हुआ है? मैं तुम्हारी बात नहीं समझ सका। सब खोलकर क्यों नहीं कहते?

टाम—कल रात्रिकी घटनासे मुझे बड़ा कष्ट हुआ! आप सबके प्रति दया करते हैं किन्तु अपने ऊपर बड़े निर्दयी हैं।

सेन्टक्लेयर यह बात सुनकर पहिले कुछ हँसे फिर बोले—बस, तुम्हारी यही बात थी। किन्तु टाम मुख नीचा किये अत्यन्त विनम्र भावसे खड़ा था। उसके नेत्रोंसे अविरल अश्रुधारा बहने लगी। तब वह घुटने टेककर अपने प्रभुके पैरोंके पास बैठ गया और रोते-रोते कहने लगा—प्रभु! यह बात कहनेके लिए मैं समय खोज रहा था। आप मुझपर बड़ी दया करते हैं। आपका दुःख मेरा दुःख है, आपका सुख मेरा सुख है। किन्तु आपके इस भावसे जीवन

बितानेसे परलोकमें आपकी क्या अवस्था होगी, यह स्मरण आते ही मेरा हृदय टूट जाता है।

टामका क्रन्दन सुनकर सेन्टक्लेयरका कोमल हृदय पिघल गया। उन्होंने हाथ पकड़कर टामको उठाया और कहा—टाम, तुम उठो। तुम नितान्त निर्बोध हो, इसीसे मेरे लिए रो रहे हो। मेरी तरहके लोगोंके लिए किसीको रोना न पड़ेगा। किन्तु टाम उठा नहीं। वह फिर कहने लगा—प्रभो, गुलामकी एक बात मानिये।

कोमल हृदय सेन्टक्लेयर टामको उस अवस्थामें देखकर कह उठे—टाम मैं प्रतिज्ञा करके कहता हूँ कि फिर इस प्रकार इतना सुरापान न करूँगा। अब फिर कभी कुसंग न करूँगा। मैं ऐसे व्यवहारोंसे पहिलेसे ही घृणा करता था। मैं अपने चरित्रसे घृणा करता हूँ। अपने जीवनको पापी जीवन समझता हूँ। तुम निश्चिन्त रहो, अब मैं कोई कुकर्म न करूँगा। यह कहकर सेन्टक्लेयरने टामको पकड़कर उठाया। टामने सेन्टक्लेयरकी प्रतिज्ञा सुनकर बड़ी शान्ति प्राप्त की एवं आँखोंका जल पोंछता-हुआ चला गया। टामके चले जानेपर सेन्टक्लेयर अकेले बैठकर मन ही मन सोचने लगे कि अब कभी प्रतिज्ञा भंग न करूँगा। वस्तुतः उस समयसे फिर सेन्टक्लेयरने कभी मद्य नहीं पिया। उनका मन स्वभावतः इन्द्रियासक्त, या कुप्रवृत्तिके वशमें न था। बाल्यावस्थासे ही वह सच्चरित्र माने जाते थे। किन्तु संसारके प्रति उनको विराग उत्पन्न हो गया था, संसारके कार्यकलापमें वे किसी विषयमें ध्यान न देते थे। संसारी कामोंमें वे अपना मन न लगा सकते थे। उनके जीवनका कोई लक्ष्य नहीं था। यह लक्ष्य-हीन जीवन घटनाके स्रोत से परिचालित होने लगा। इसलिए समय बितानेके लिए

जब जैसा साथ मिल जाता, उसीमें मिल जाते एवं आमोद-प्रमोद करते थे! दिनपर दिन मासपर मास इसी भाँति विना कष्ट बीतने लगे।

इक्कीसवाँ परिच्छेद

गृह-कार्यकी अध्यक्षता

सेन्टक्लेयरके आय-व्ययका भार टामके हाथ आ जानेपर विशेष सुश्रृंखलित हो गया। किन्तु गृह-कार्यमें सुनियम स्थापित करनेके लिए मिस अफिलिया नानाप्रकारकी चेष्टायें करने लगीं। सेन्टक्लेयरके यहाँ बहुत सी दास-दासियाँ थीं! किन्तु जिस घरकी कार्य-प्रणालीके सम्बन्धमें कोई नियम नहीं, उस घरमें असंख्य दास-दासियोंके होनेपर भी कोई सुविधा नहीं होती। प्रत्येक घर एक-एक विद्यालय है। गृहिणी ही एकमात्र इस विद्यालयकी शिक्षक है। भिन्न-भिन्न स्थानीय गवर्नमेन्ट-स्कूल-कालेजोंके अशिक्षित और अदूरदर्शी शिक्षक लोग जैसे, किसप्रकार बालकके मनका संगठन करना चाहिए, किसप्रकार उन लोगोंको एक नवीन विषय समझा देनेपर वे समझ जायँगे, इत्यादि बातें जाननेमें असमर्थ हो केवल बेतके मारसे ही शिक्षा देते हैं, अनेकानेक गृहिणी-शिक्षिकाओंकी कार्य-प्रणाली भी ठीक वैसी ही है। दास-दासियोंको कैसे चलाना चाहिए, यह वे बिलकुल नहीं जानतीं। सदैव उनके ऊपर रुष्ट रहती हैं, सदैव त्यक्त-विरक्त

ही मुहँ-फुलाकर बैठी रहती हैं। उसमें लाभ केवल यह होता है कि जिस घरमें गृहिणी सदा-सर्वदा मुहँ फुलाये बैठी रहती हैं तथा समयपर आँसू भी बहाने लगती हैं, वह घर उसके स्वामीके लिए श्मशानके समान हो जाता है। गृहिणी-का वह अभिमानके बोझसे दबा हुआ मुख उसके स्वामीका हृदय प्रफुल्लित नहीं कर सकता। इसलिए कोई अपने मि-त्रोंको लेकर सुरा-पान द्वारा ही अपना-अपना हृदय प्रफु-ल्लित करते हैं; कोई दूसरे कुकर्ममें रत हो जाते हैं। वे गं-णिकाओंके साथमें दिन व्यतीतकर संसारकी क्लान्ति दूर कर-नेकी चेष्टा करते हैं।

अमेरिकाके दासत्व-प्रथा-प्रचलित प्रदेशोंमें भली गृहिणी एक दम दुष्प्राप्य थीं,यह भी नहीं कहा जा सकता। शेल्बीसाह-बकी स्त्री ही एक उत्तम गृहिणी थीं। इनकी दास-दासियोंको उनके चरित्रके प्रभावसे, तथा उनकी संतान-वत्सलता देख-कर विशेष सत्शिक्षा प्राप्त हुई है। इलाइजा और टामका चरित्र ही इस बातका प्रमाण है। किन्तु सेन्टक्लेयरकी पत्नी मेरी, ऐसी गृहिणी नहीं है, यह पहिले ही लिखा जाचुका है। वे एक दुरन्त शिक्षक महाशय हैं। बेतको मार ही उनकी एक मात्र शिक्षा-प्रणाली थी। इसलिए उनकी दास-दासियाँ, दुखदायी ही विशेष होगीं यह सहज ही समझा जा सकता है। मिस अफिलिया एक सुचतुर गृहिणी हैं, यह पूर्वमें ही बतला दिया गया है। वे सेन्टक्लेयरके घरकी रक्षाका भार ग्रहण करके दास-दासियोंके कार्योंमें सुश्रृं-खला स्थापित करनेका यत्न करने लगीं। किन्तु सेन्टक्लेयर की दास-दासियाँ उनकी ऐसी सुनियम स्थापनकी चेष्टा और शासन-प्रणालीके विरुद्ध आचरण करने लगे। सेन्ट-क्लेयरके घरमें इन दास-दासियोंके कार्योंकी कमी कोई देख

भाल तो करता था नहीं। इसलिए वे स्वेच्छानुसार मालिककी वस्तुएँ नष्ट करते थे। कभी-कभी वर्त्तन साफ करनेके लिए तौलिया खोजनेमें समय नष्ट होगा, यह समझकर मालिकके किसी साफ वस्त्रसे ही वर्त्तन साफ कर दिये जाते थे। अफिलियाके इस प्रकारके बुरे आचरणको रोकनेके लिए उद्यत होनेपर, दास-दासियोंने मनमें सोचा कि अब, मिस अफिलियाके शासनमें, हमलोगोंकी चिर-प्रचलित, पुरुषानुक्रमसे आनेवाली स्वतंत्रताका अधिकार, नष्ट करनेका उपक्रम हो रहा है।

मिस अफिलया किसी प्रकार भी इन उद्धत दास-दासियोंके कार्यक्रममें कोई शृंखला स्थापित न कर सकीं। अन्तमें निराश होकर एक दिन सेन्टक्लेयरसे कहने लगीं-अगष्टिन! मैं तो किसी प्रकारसे भी कोई कार्य-प्रणाली स्थिर नहीं कर पाती। तुम्हारे घरमें किसी प्रकारकी कार्य-प्रणाली स्थापित करना बड़ा कठिन कार्य है। ऐसी अनियमित कार्य-प्रणाली, ऐसी अनवधानता, इस प्रकार वस्तुओंका दुरुपयोग तो मैंने और कहीं नहीं देखा। अगष्टिनने कहा—बहिन! तुम जो कह रही हो, यह सब सत्य है। किन्तु इसका कोई दूसरा उपाय नहीं है। देखो, जब हमलोग अपनी सुविधाके लिए कितने ही मनुष्योंको पशुकी नाई अपने घरमें रखते हैं, तो इनके भले-बुरे कार्योंके फलाफलको सहन करना ही पड़ेगा। जो लोग घोर निष्ठुरताके साथ इनलोगोंको बेतोंसे पीटते हैं, उन्हीं लोगोंसे ये ठीक रहते हैं, किन्तु जो वैसे कठोर व्यवहारसे कुण्ठित रहते हैं, उसपर उलटे ये ही लोग अत्याचार करने लगते हैं। मेरी ये सब दास-दासियाँ जानती हैं कि मैं बेत नहीं लगाऊँगा, इसलिए वे अपने इच्छानुसार सब काम

करती हैं। मैंने भी यह सोच लिया है कि उनकी जो इच्छा हो करें, मैं कुछ न बोलूँगा।

अफिलिया–उसी प्रकारसे सब सामान नष्ट होने दोगे?

अगष्टिन—बहिन! तुम 'उत्तर-प्रदेशीय लोग' समयका सदुपयोग करना जानती हो। मैं सदाका आलसी हूँ। मुझे भोजनके समय दो रोटियां मिल जानी ही बहुत है। इन सब नियमोंको अच्छे ढगसे करनेकी चेष्टा करनेसे तुम केवल त्यक्त-विरक्त होगी। जाने दो, उन लोगोंको यथेच्छ कार्य करने दो।

अफिलिया—क्या तुम अपनी हानि तथा अपना अपरिमित अर्थ-व्यय नहीं देखते?

अगष्टिन—तुम जितनी सावधान हो सको, रहो। हाँ, छोटे-मोटे खर्चोंकी जाँच-पड़ताल मत करना। उससे कुछ विशेष लाभ न होगा।

अफिलिया—मुझे बहुत कष्ट होता है। मैं देखती हूँ कि ये सब बिलकुल सच्चे नहीं हैं। क्या तुम इन लोगोंको पूर्ण विश्वासपात्र समझते हो?

मिस अफिलियाने बड़े गम्भीर भावसे यह प्रश्न किया था। उनके मुखका भाव देखकर सेन्टक्लेयर ठठाकर हँस पड़े। वे कहने लगे—बहिन! ये तो सच्चे हो ही नहीं सकते। ठीक साधूकी भाँति कहती हो? सो नहीं हो सकते। कैसे होंगे, और होंगे ही क्यों?

अफिलिया—क्या तुम इनलोगोंको भली शिक्षा नहीं दे सकते?

अगष्टिन—मैं भली शिक्षा दूँगा? मैं किस प्रकार भली शिक्षा दूँगा, समझती हो? मेरीमें इसके लिए यथेष्ट शक्ति है। इन दास-दासियोंकी शिक्षाका भार उसके हाथमें पड़नेपर वह

सारा घर उनके रक्तसे रंग दे सकती है, पर इनको झुठाई और धूर्तता नहीं छुड़ा सकती।

अफिलिया—तो क्या इन दासोंमें कोई भी पूर्ण विश्वास पात्र, सच्चा नहीं होता।

अगष्टिन—कदाचित् दो-एक होते हैं। ऐसे सत्यवादीको विधाता इतना सरल-चित्त और विश्वस्त-स्वभावका बनाता है, कि सैकड़ों प्रतिकूल शक्तियाँ भी उसे उसके स्वभावसे विमुख नहीं कर सकतीं। किन्तु साधारणतः समझनेकी शक्ति आते ही जब दास-सन्तानें देखतीं हैं कि धूर्तता और असत्यताके अतिरिक्त हमारे निर्वाहका अन्य कोई मार्ग ही नहीं, तब वे निस्संकोच इनका आश्रय ग्रहण करते हैं। प्रत्येक कार्यमें इसी उपायकी सहायता लेते-लेते यह अत्यन्त अभ्यस्त हो जाते हैं, इस दोषके लिए दास-दासियोंको दण्ड देना उचित नहीं है। इनलोगोंको जैसी अवस्थामें रखा जाता है, उसमें मनुष्य साधुता, सच्चरित्रता तथा विश्वासपात्रताकी शिक्षा नहीं पा सकता। टामके दृष्टान्तको मैं उस घृणित नीति-जगतका एक अलौकिक व्यापार समझता हूँ।

अफिलिया—परलोकमें इन दास-दासियोंकी आत्माकी क्या दशा होगी?

अगष्टिन—परलोकमें क्या होगा, क्या न होगा, यह सब न तो मैं जानता हूँ और न सोचता ही हूँ। मैं इनलोगोंकी वर्त्तमान अवस्थाके विषयमें बात-चीत करता हूँ। असल बात तो यह है कि हमलोग अपने लाभके लिए इस काली जातिको इस समय नरक-यन्त्रणाका भोग करा रहे हैं। परलोकमें क्या होगा, कौन विचारे!

अफिलिया—कैसी भयानक अवस्था है! ऐसा व्यवहार करनेमें क्या तुम्हें लज्जा नहीं आती?

अगष्टिन-कुछ विशेष लज्जा तो नहीं लगती "चार जने मिल कीजे काज, हारे जीते नाहीं लाज।" संसारके सब लोग तो कार्य करते हैं, उसमें कुछ विशेष लज्जाकी बात नहीं रहती। सभी देशोंमें उच्चश्रेणीके लोगोंके सुखके लिये निम्न श्रेणीके लोगोंको अपना तन-मन लगाना पड़ता है। अतएव सारे सभ्य-संसारका जन-समाज इस देशकी प्रचलित दासत्व-प्रथाको देखकर साधु-सुलभ घृणा और विस्मय प्रकट करते हैं क्यों! अन्यत्र जो हो रहा है, यहां उसीका प्रकारान्तर मात्र हो रहा है। सभी देशोंमें नीच श्रेणीके लोग पशुओंकी भांति रखे जाते हैं। किन्तु इस परिश्रमका भोग कौन करता है? नीचश्रेणीके लोग? नहीं उन लोगोंको तो दिनान्तमें एक मुट्ठी अन्न भी नहीं मिलता। समाजमें सज्जन-नाम धारी जो सैकड़ों आलसी, अत्याचारी हैं वे ही बिना परिश्रम किये इस नीच श्रेणीलोगोंके परिश्रमसे राज-प्रासादोंमें निवास करते हैं तथा नाना प्रकारके उत्तम-उत्तम भोग्य पदार्थोंका सम्भोग करते हैं।

इन लोगोंकी ऐसी बातें हो ही रही थीं कि भोजनकी घन्टी बजी। तब वे लोग भोजन करने चले गये। इसलिए इस सम्बन्धकी और कोई दूसरी बात-चीत न हुई।

अपराह्नमें मिस अफिलिया भोजनालयमें जाकर दास-दासियोंके कार्योंको जांचकर रही थीं। इसी समय दासियोंके छोटे-छोटे बच्चे चिल्ला उठे, 'यह देखो, रोती घिघियाती आ रही है।' बालक-बालिकाओंकी चिल्लाहट सुनकर मिस अफिलियाने उस ओर मुहँ फेरकर देखा कि एक दीर्घाकार काली स्त्री एक टोकरीमें रोटी और बिस्कुट लेकर रसोई घरमें प्रवेश कर रही है। उसे देखकर सेन्टक्लेयरकी भोजन बनानेवाली दीनाने पूछा-कहो प्रू तुम आगई।

प्रूके मुखकी बनावट बड़ी विकट है। इसका स्वर फूटा है। वह सिरसे टोकरी उतारकर भूमिपर बैठ गयी। दोनों घुटनोंपर हाथोंका भार देकर वह बोली—हा! परमेश्वर यदि मर जाती तो अच्छा होता।

अफिलिया—तुम मरना क्यों चाहती हो?

उस स्त्रीने सिर नीचा किये ही कर्कश स्वरमें उत्तर दिया—मर जानेपर इस यन्त्रणासे छुटकारा पा जाऊँगी।

उसकी बात सुनकर वस्त्रोंसे ढकी एक वर्णसंकर दासी अपने झूमक हिलाती हुई बोली—तब शराब क्यों पीती हो प्रू? इसीसे अन्तमें मार खानी पड़ती है।

प्रू बड़ी—बड़ी आँखसे उसकी ओर देखती रही। कुछ समयके पश्चात् उसने कहा—तेरी भी एक दिन मेरी समान दशा हो सकती है। 'यदि ऐसा हुआ, तब तो मैं बड़ी प्रसन्न हूँगी, खूब खुश हूँगी। तब मैं देखूँगी कि मनको दुख भूल जानेके लिए तुम शराब पीती हो कि नहीं।'

टीना—आओ प्रू, तुम्हारी रोटी-बिस्कुट देखें, मिस अफिलिया खरीदेंगी।

मिस अफिलियाके दो दर्जन रोटी और बिस्कुट ले लेनेपर, दीनाने कहा—इसे नकद पैसा न देना होगा। इसके मालिकके पाससे हम लोगोंने टिकट खरीद लिया है। बिस्कुट ले लेने पर वह टिकट लौटा देना पड़ेगा।

यह बात सुनकर अफिलिया प्रूकी ओर देखने लगीं। तब उसने पहिलेकी तरह उसी विकृत कण्ठसे कहा—मेरा मालिक टिकट गिनकर रुपयेका हिसाब करता है। रोटीके बदले यदि टिकट ठीक नहीं होता, तो मारते-मारते अधमरी कर डालता है।

पूर्वोक्त वर्ण-संकर दासी जेनने कहा—अच्छा करता है; तुम उसके रोटीका पैसा देकर शराब पिओगी क्यों? इसके पश्चात् मिस अफिलियाकी ओर देखकर उसने कहा—मालकिन, यह सदा ऐसा ही करती है।

प्रू—हाँ, करती हूँ और फिर करूँगी। न करूँगी तो बचूँगी नहीं। शराब पीती हूँ, शराब पीकर मनको शान्त करती हूँ। जानती नहीं कि शराब न पीनेसे यह मनकी अग्नि नहीं बुझ सकती?

अफिलिया—तुम बड़ा बुरा काम करती हो, बड़ी मूर्खताका काम करती हो। मालिकका पैसा चुराकर उससे अपना ही अनिष्ट करती हो। अपनेको निरा पशु बना रक्खा है।

प्रू—मालकिन जो कह रही हैं वह सत्य है। किन्तु शराब पीना छोड़ूँगी नहीं—कभी नहीं छोड़ूँगी। परमेश्वर, यदि मैं मर जाती—यदि मेरी मृत्यु हो जाती—हा, परमेश्वर! यदि मैं मर सकती तो इस यन्त्रणासे छूट जाती। यह कहते-कहते रोटीकी टोकरी सिरपर रखकर वह धीरे-धीरे घरसे बाहर निकली। जाते समय उसने एकबार वर्ण-संकर दासी जेनको ओर देखा। जेन उस समय कानका झूमक लेकर हिला रही थी। बूढ़ीने उससे कहा—तू मनमें सोचती है कि तू बड़ी सुन्दरी है। तभी इतना इतराती है और दूसरोंको एकदम तुच्छ समझती है। अच्छा देखा जायगा। एक समय आवेगा जब तू भी मेरी ही भाँति दुःखमें जले मरेगी। तू भी बूढ़ी होगी। कभी बेंतोंसे पीटी जायगी। परमेश्वर करे, तेरी भी मेरी ही तरह दशा हो। तब देखूँगी, तू शराब पीती है या नहीं। पीकर शान्ति पाती है कि नहीं। शान्ति पावेगी—अच्छा होगा—उपयुक्त पावेगी। यह कहते-कहते तथा ईर्ष्याका एक विकट गर्जन कर बुढिया चली गयी।

बुढ़ियाके चली जानेपर अडाल्फने कहा—इस बूढ़े पशुको देखकर घृणा होती है। यदि मैं इस दुष्टाका मालिक होता तो अभी यह जितना पिटती है, उससे भी अधिक पीटता। मारते-मारते पीठ तोड़ डालता।

दीना—और अधिक क्या मारते! उसकी पीठमें कोई ऐसा स्थान ही नहीं, जहाँ बेतका घाव न हो।

जेन—ऐसे नीच लोगोंको भद्र लोगोंके घर आने देना उचित नहीं। क्या कहते हो मिस्टर सेन्टक्लेयर?

अडाल्फने अपने मालिकके केवल वस्त्रादि पर ही अधिकार कर लिया हो, ऐसी बात न थी। उसने अपने मालिकका नाम भी अपना लिया था। घरकी अन्यान्य दास-दासियाँ उसे मिस्टर सेन्टक्लेयर कहकर पुकारती थीं। जेन नाम्नी यह दासी सेन्टक्लेयरके ससुरालसे आयी थी। इसलिए उसे भी सब लोग मिस बेनियरके नामसे पुकारती थीं।

'बेनियर,' सेन्टक्लेयरके श्वशुर-कुलकी उपाधि थी। इसीसे मेरीका दूसरा नाम बेनियर था।

जेनके प्रश्नके उत्तरमें अडाल्फने कहा—मिस बेनियर, तुमने सत्य ही कहा है। इस स्त्रीको भद्र लोगोंके घर आने देना उचित नहीं।

जिस समय रसोई घरमें प्रूके साथ बात-चीत हो रही थी उस समय टाम भी वहीं खड़ा था। बिस्कुटकी टोकरी उठाकर जाते समय टाम भी उस बुढ़ियाके पीछे-पीछे चला। बुढ़िया बार-बार अस्पष्ट आर्त-नाद करती थी। कुछ दूर जाकर एक घरके दरवाज़ेपर टोकरी उतारकर वह जीर्ण ओढ़नेसे अपना शरीर ढकने लगी। पर उससे उसकी पीठ भी ढक न सकी यह देखकर टामके हृदयमें दयाका संचार हुआ। वह उसी क्षण उस बुढ़ियाके सामने जाकर कहने लगा—मैं

तुम्हारी टोकरी तुम्हारे साथ-साथ ढोकर ले चलूँगा। तुम अपनी टोकरी मुझे दो।

प्रू—तुम क्यों लोगे ? मैं किसीकी सहायता नहीं चाहती।

टाम—तुम्हें देखनेसे ज्ञात होता है कि तुम्हें कोई पीड़ा सता रही है अथवा मनमें कोई व्यथा है या कोई और दूसरी ऐसी ही बात है।

प्रू—मुझे कुछ दुख नहीं है।

टाम—मैं तुम्हारा शराब पीना छुड़ाना चाहता हूं। तुम जानती नहीं कि शराब शरीर और आत्मा दोनोंको नष्ट कर डालती है।

प्रू—मैं जानती हूं कि मैं नरकमें जाऊंगी। यह तुम्हारे बतलानेकी कोई आवश्यकता नहीं। मैं कुत्सित हूं, मैं पापिनी हूं। मैं सीधे नरकमें ही गिरूंगी। ईश्वर यदि मुझे इतने दिन वहीं रखता तो अच्छा था।

इसी तरह पागलकी भांति प्रूने ये सब बातें कहीं। जिस प्रकार उसने अत्यन्त आग्रहके साथ मृत्युका आह्वान किया, उससे टामको बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने सोचा कि इसका कोई बड़ा कारण अवश्य है। टामका दयालु हृदय पिघल गया। उसके नेत्रोंसे दो एक बून्द आँसू गिर पड़े। मन ही मन ईश्वरका स्मरण कर बोला—जगदीश इसपर दया करो। किन्तु प्रकाशमें प्रूसे कहा—क्यों बेटी ! तुमने यीशु ख्रीष्टका नाम सुना है ?

प्रू—यीशु ख्रीष्ट कौन ?

टाम—वे हमलोगोंको मुक्ति देनेवाले प्रभु हैं।

प्रू—कुछ-कुछ ध्यानमें आता है कि उनका नाम सुना है। परलोकका विचार तथा नरक भोगकी बात भी सुनूंगी।

टाम—यीशु दुःखी और पापियोंको प्यार करते थे। हम लोगोंके लिए उन्होंने प्राण तक दे दिये।

प्रू—यह सब कथा मैं नहीं जानती। मेरे स्वामीके मर जानेके बाद अब ऐसा कोई नहीं है जो मुझे प्यार करे।

टाम—तुम पहिले कहाँ थी?

टामके इस प्रश्नपर प्रू अपनी आत्म-कहानी सुनाने लगी। कहते-कहते बीच-बीचमें शोक और दुखसे उसका कण्ठ रुँध जाता था। पहिलेकी बातोंका स्मरण आ जानेसे कभी-कभी वह ज्ञान-शून्य हो जाती थी। बड़े कष्टसे उसने अपनी आत्म कहानी यों कही—

"पहिले मैं केन्टाकी प्रदेशमें थी। वहाँ एक अँगरेजने, यह सोचकर कि मुझसे सन्तान पैदाकर, उन्हें बाजारमें बेचूँगा और रुपये पैदा करूँगा, मुझे खरीदा। उस पापिष्ठसे मेरे कई सन्तानें हुईं। वह दुरात्मा उनको ले किसीको आठ वर्षकी किसीको ९ वर्षकी अवस्थामें बेचने लगा। एक-एक करके उसने मेरी गोद बिलकुल सूनी कर दी। बिक्रीके समय जब बच्चे मेरे गलेसे लिपटकर रोते और क्रेता जब उनको बल-पूर्वक मेरी गोदसे छीन ले जाते थे, तब मेरी छाती फटने लगती थी। उस समय मैं मृत्युकी कामना करती थी। किन्तु निष्ठुर यम मुझे दिखाई न पड़ता था। यह पापी प्राण बाहर न निकलता था। जान पड़ता है, चिरकाल मानसिक-दुखाग्निमें जलनेके लिए ही विधाताने मेरी सृष्टि की है।

इसी प्रकार मेरी आठ-नौ सन्तानें भिन्न-भिन्न देशोंमें बिकीं। उन सबके पश्चात् मेरी गोदमें केवल एक छ मासका बच्चा था। मेरे और अधिक संतान होनेकी सम्भावना न देखकर उसने मुझे एक दास-व्यवसायीके हाथ बेच दिया। उस दास-व्यवसायीने मुझे इस देशमें लाकर मेरे वर्तमान

मालिकके हाथ बेच दिया जब मैं पहिले इस मालिकके घर आयी थी उस समय मेरा बच्चा बड़ा हृष्ट-पुष्ट था। वह कभी रोना-चिल्लाता न था। मैं जहां बैठा देती थी वह वहीं बैठा रहता था। किन्तु इस मालिकके घर आनेके कुछ दिन बाद ही माल किनको संक्रामक-ज्वर हो गया। मैं दिन-रात उसकी सेवा-शुश्रूषा किया करती थी। उसके आत्मीय लोग तक उसके बिस्तरके पास न जाते। उसकी बीमारी अच्छी हो जानेपर वही ज्वर मुझे हो गया। दस, बारह दिनके बाद मैं भी अच्छी हो गयी। किन्तु मेरे स्तनोंका दूध बिल्कुल सूख गया। दूध न पानेसे मेरा लड़का दुर्बल होने लगा। कुछ ही दिनोंमें उसके शरीरमें केवल हड्डी रह गयी। तब वह दिन-रात रोने लगा। मैंने मालकिनसे उसके लिए थोड़ा सा दूध खरीद देनेको कहा। किन्तु उसने इसके लिए एक पैसा भी स्वीकार न किया। उल्टे क्रोधित होकर कहने लगी—दासीके लड़केको मुझे दूध खरीदना होगा? मैंने फिर कुछ नहीं कहा। रात्रिमें उसकी सेवाके लिए मुझे उसके शयन-घरमें रहना पड़ता था। किन्तु लड़का रोयेगा, कहकर मुझे बच्चेको साथ लेकर न सोने देती। लड़केको नीचे कोठरीमें सुलाकर मैं उसके घरमें सोती थी। मेरा बच्चा सारी रात नीचे पड़े-पड़े रोता रहता था उसका वह रोना सुनकर मेरी छाती फटने लगती थी। परमेश्वर जानते हैं कि मैं कैसी यंत्रणा भोग रही हूँ—कहते-कहते वृद्धा मूर्छित हो गयी। कुछ देर बाद चैतन्य होनेपर वह पागलकी भाँति चिल्ला उठी “इस समय भी मेरे कानोंमें उसके रोनेके शब्द गूँज रहे हैं। यह सुनो—सुनो मेरा बच्चा बिलखकर रो रहा है—रो रहा है। सुनो! सुनो—” वह फिर मूर्छित हो गयी। थोड़ी देरके बाद स्वस्थ होकर उसने फिर कहना आरम्भ

किया—केवल तीन-चार रात्रि तक ही बच्चेका रोना मैंने सुन पाया। एक दिन प्रातःकाल उसके बिस्तरके पास जाकर देखा कि वह रोते-रोते मर गया है। उस समयसे जहाँ कहीं भी जाती हूँ; वहीं वह रोना सुनायी पडता है। मैं पागल हो रही हूँ। उठते-बैठते, खाते-पीते, सोते-जागते कानोंमें वही रोनेके शब्द गूँजते रहते हैं। हृदय जलने लगा। अन्तमें निश्चय किया कि सारा दुख और शोक दूरकर दूँगी।-यही सोचकर मैंने शराब पीना आरम्भ किया। जब शराब पीकर अचेत हो जाती हूँ तब वह रोना नहीं सुनायी पड़ता। मैं भला शराब न पिऊँगी? अवश्य पिऊँगी। शराब पीनेसे यदि नरकमें जाना पड़ेगा तो जाऊँगी किन्तु उसे छोड़ूँगी नहीं। मालिकने एक दिन मुझसे कहा कि तुझे नरकमें जलकर मरना होगा। मैंने कहा—मैं यहीं नरकमें जल रही हूँ।

इस स्त्रीकी आत्म-कथा सुनकर टाम धीरे-धीरे दीर्घ निःस्वास छोड़ने लगा—कुछ देर बाद उसने कहा—बहिन, क्या तुमने कभी सुना नहीं कि इस संसारकी दुःख-यन्त्रणायें सभी छूट जायँगी? यीशु खीष्टकी कृपासे तुम फिर अपनी मरी हुई सन्तानोंसे मिलोगी और सुख-शान्ति प्राप्त कर सकोगी। क्या तुम नहीं जानती कि "स्वर्ग-राज्यका द्वार तुम्हारे लिए खुला हुआ है!"

"मैं स्वर्ग जाऊँगी?—स्वर्ग जहाँ ये गोरे जाते हैं? वहाँ यदि फिर उन्होंने मुझे पकड़ लिया तब क्या होगा?—मैं नरकमें जाकर दण्ड भी पाऊँ तो भी वह उस स्वर्गसे अच्छा है। जहाँ मेरे मालिक और मालकिनी जायँगी उस स्थानमें मैं न जाऊँगी। नरक ही अच्छा है।" यह कह प्रू पागलकी भाँति टोकरी सिरपर रखकर लँगड़ाती-लँगड़ाती यहाँसे चली गयी।

राम, कुछ देर बाद दुःखके बोझसे दबा हुआ धीरे-धीरे घरकी ओर आया। इवाने रामको देखते ही कहा—राम-काका तुम कहाँ थे? मैं तुम्हें खोजती थी! बाबाने मुझे गाड़ीपर चढ़कर घूमने जानेको कहा है। रामकाका, मैं तुम्हें इतना उदास क्यों देखती हूँ? रामकाका, क्या हुआ है?

राम—मुझे कुछ अच्छा नहीं लगता। मनमें बड़ा कष्ट होता है। तुम थोडी देर खड़ी रहो, मैं गाड़ी ले आता हूँ।

इवा—रामकाका तुम्हें अच्छा क्यों नहीं लगता? कहीं न क्या हुआ है! मैंने देखा है कि तुम बुढ़िया प्रूके साथ कुछ बात-चीत कर रहे थे।

इवाके बार-बार बड़े आग्रहके साथ पूछनेपर रामने प्रूको वृत्तान्त उससे थोडेमें ही बड़ी सीधी भाषामें कह दिया। उसकी कथा सुननेके समय इवाने भी कोई विस्मय प्रकट न किया। ओर न रोई ही। किन्तु उसके दोनों कपोल पीले और नेत्र निष्प्रभ हो गये। बालिकाने दोनों हाथोंसे हृदय थामकर एक गम्भीर दीर्घ निस्स्वास छोड़ी।

बहुत देरके बाद इवाने कहा—रामकाका तुम गाड़ी लेने न जाओ। मैं घूमने नहीं जाऊंगी।

राम—क्यों मिस इवा, क्यों न जाओगी?

इवाने अत्यन्त मृदु तथा कातर स्वरमें उत्तर दिया—ये बातें मेरे हृदयमें लगती हैं। यह सब कथा सुननेसे मेरे हृदयमें बड़ी चोट लगी है। मैं घूमने नहीं जाऊँगी। यह कहती हुई इवा धीरे-धीरे घरमें चली गयी।

आज तीक्ष्ण-शर इवाके कोमल मर्मस्थलमें घुसा (जो) इवाके मृत्यु-शरके रूपमें परिणत हो गया। दूसरेके दुःखसे इवाका कोमल हृदय नितान्त व्यथित हो जाता था। इस अत्याचार, शोक-ताप-पूर्ण मृत्युलोकमें इवा सरीखी देवबाला-

के वास योग्य भूमि नहीं। वाटिकामें,रहनेवाली कुसुमलतिका-को क्या कोई कन्टक-वनमें रखकर नष्ट करता है। पृथ्वीकी प्रतिकूल मिट्टीमें जो फूल नहीं खिल पाता, परम करुणा-मयं ईश्वरने उसे स्वर्गोद्यानमें प्रफुल्लित कर रखा है।

बाईसवाँ परिच्छेद

संसार-व्यापी दासत्व-प्रथा

एक दिन दोपहरके बाद मिस अफिलिया रसोई घरमें जाकर प्रत्येक दास-दासीको कार्यमें नियुक्त कर रहीं थीं। कुछ त्रुटि होनेपर वे मृदु मधुर शब्दोंमे उस त्रुटि करनेवाले की भूलको दूर करनेकी चेष्टा करती थीं। इसी समय प्रूके बदले एक दूसरी स्त्री रोटियोंकी टोकरी सिरपर रखे हुए आयी। दीनाने उसे देखते ही पूछा—हाँ, आज तू रोटी ले आयी है? तेरी प्रू कहाँ है? उसको क्या हुआ?

इस स्त्रीने दीनाका प्रश्न सुन कुछ इधर-उधर देख कर उत्तर दिया—अब प्रू न आवेगी।

दीना—क्यों? क्या वह मर गयी?

स्त्री—यह तो मुझे ठीक ज्ञात नहीं। फिर अफिलिया-की ओर देखकर कहा—नीचेके गोदाममें तो है।

मिस अफिलियाके रोटी ले लेनेके बाद दीना उस स्त्रीके पीछे-पीछे दरवाजे तक गयी। वहाँ उसने धीरेसे उससे पुछा—क्यों री,बतलान प्रू को क्या हुआ?

उस स्त्रीकी भाव-भङ्गी देखकर यह जान पड़ता था कि वह प्रूका हाल बतलाना चाहती है पर भयके मारे न बतलाती थी। अन्तमें उसने धीरे-धीरे कहा-अच्छा, तुम किसीको बतलाना मत। प्रूने एक दिन फिर शराब पी ली। उस दिन मालिकने उसे नीचेकी गुदाममें बन्द कर दिया किन्तु मैंने सुना है कि वह वहीं मर गयी, उसके शरीरपर मक्खियाँ भिन-भिना रही हैं।

दीनाने यह बात सुनकर बड़े विस्मयसे अपना हाथ ऊपर को उठाया। उसी समय उसने कुछ पीछे घूमकर देखा तो इवाको अपने पास खड़ी पाया। उसके मुखकी ओर देखा तो उसके नेत्र स्थिर थे, उसका मुख सूखा हुआ था; उसके गाल और ओंठ रक्तशून्य होकर श्वेत हो गये हैं। दीनाने डरकर कहा—भागोरे बाबा! कैसा सर्वनाश है। मिस इवा मूर्छित हो गयीं! हम लोगोंको न जाने क्या होगया जो इन को ये सब बातें सुनने दी। मालिक इसकी सूचना पावेंगे तो बहुत बिगड़ेंगे।

तब इवाञ्जेलिनने स्थिर-कण्ठसे कहा-दीना मुझे मूर्च्छा न आयेगी तुम डरो मत। मुझे ये सब बातें क्यों न सुननी चाहिएँ? क्या प्रू जितना कष्ट भोगती है। सुननेमें मुझे उस से अधिक कष्ट होगा?

दीन—तुम सरीखी दयालु कोमल लड़कियोंको ये सब बातें न सुननी चाहिएँ। लोगोंको थोड़ा भी कष्ट पाते देख कर तुम्हारे नेत्रोंसे आँसू बहने लगते हैं।

इवा एक दीर्घ निश्श्वास छोड़कर दुखित मनसे धीरे-धीरे दो मञ्जिले घरमें चली गयी।

इवाके चले जानेपर मिस अफिलियाने अत्यन्त कौतूहलसे आक्रान्त होकर दीनासे प्रू का वृत्तान्त पूछा। दीनाने जो सुना

था उसमें कुछ और निमक-मिर्च लगाकर सब बातें मिस अफिलियाको सुनादीं। टामने भी उसके पहिले दिन जो कुछ सुना था वह सब मिस अफिलियाको सुना दिया। मिस अफिलिया इन लोगोंकी बातें सुनकर घृणाके साथ कह उठीं- कैसा बीभत्सकाण्ड है। कैसा जघन्यव्यापार है। इस देशके लोग मनुष्य हैं अथवा पशु। ये लोग भी अपनेको प्रभु ईसा-मशीहकी सन्तान कहकर अपना परिचय देते हैं। यह कहते-कहते वे उसी कमरेमें चली गयीं जिसमें बैठकर सेन्टक्लेयर अख़बार पढ़ रहे थे।

अफिलियाकी बात सुनते ही सेन्टक्लेयर हाथका संवाद पत्र बगलमें रखकर बोले-क्यों बहिन आज कौन अधर्म-काण्ड उपस्थित हुआ है?

अफिलिया--तुम हँसते हो? मैंने ऐसे कठोर व्यवहारकी बात और कभी नहीं सुनी। उस प्रू दासीको उसके मालिक-ने मार डाला है। बेत मारते-मारते अधमरी करके अन्तमें कोठरीमें बन्दकर भूखों मार डाला।

सेन्टक्लेयर-प्रू की ऐसे ही मृत्यु होगी, मैं यह जानता था।

अफिलिया--तुम जानते थे? जानते रहकर भी तुमने उसके प्रतिकारकी कोई चेष्टा न की? क्या तुम्हारे देशमें दस-पाँच भी भले आदमी नहीं हैं जो इस निष्ठुरताका निवारण करें।

सेन्टक्लेयर—जो दास-दासियोंको मार डालता है, वह अपनी ही सम्पत्ति नष्ट करता है। इसलिए उस विषयमें दूसरा कोई कुछ नहीं बोल सकता। अपनी लाभ-हानि सभी समझते हैं। दास-दासियोंका प्राण-वधकर कोई अपनी हानि नहीं चाहता। फिर प्रू पैसे चुराती थी। इससे मार डाला।

अफिलिया—अगष्टिन! यह जो अति भयानक और जघन्य व्यवहार है इसका प्रतिफल तुम लोगोंको अवश्य भोगना पड़ेगा। परमेश्वर निश्चय ही तुम लोगोंको इसका फल देंगे।

सेन्टक्लेयर—वहिन! मैं स्वयं तो ऐसा नहीं करता। पर ऐसे आचरणका निवारणमैं नहीं कर सकता—यदि कर सकता तो अवतक कभी कर चुका होता। हमारे देशके नीच प्रकृति-व्यक्ति यदि ऐसा आचरण करते हैं तो उसके लिए मैं क्या करूँ? आइनके अनुसार प्रत्येक व्यक्तिका अपने दास-दासियोंपर पूर्ण अधिकार है। मार डालनेपर भी मालिक दण्ड नहीं पा सकते। देश-प्रचलित आइनके अनुसार जब उनकी इतनी क्षमता है, तब भला मैं क्या कर सकता हूं? ऐसी अवस्थामें यह सब देखते हुए भी नहीं देखता, सुनते हुए भी नहीं सुनता सब प्रकारसे उदासीन रहना ही अच्छा है

अफिलिया—यह तो बड़ी विचित्र बात है कि देखते हुए भी आंख मूंदलें सुनते हुए भी कान बन्द करलें? किस प्रकार ऐसे आचरणोंकी उपेक्षा की जाय?

सेन्टक्लेयर—वहिन! क्या तुम इन दास-दासियोंकी अवस्था देखती नहीं हो? ये अशिक्षित, आलसी, हिताहित ज्ञान-शून्य, चिरपराधीन, एक जातिके लोग, बड़े स्वार्थी अर्थगृद्ध, अत्याचारी, प्रवंचक अन्य जातिके लोगोंके हाथ पड़ गये हैं। जब इन स्वार्थी, लोगोंके हाथमें ऐसा अपरिमित प्रभुत्व अर्पित है तब ऐसे भयंकर निष्ठुराचरण अवश्य ही होंगे। ऐसे समाजमें यदि कोई दयालु तथा सज्जन हो तो भी वह क्याकर सकता है? मैं सारे देसके लोगोंकी दास-दासियों-को खरीदकर उनका दुःख दूर कर ही नहीं सकता। फिर क्या करूँ?

ये बातें करते-करते सेन्टक्लेयरकी चिरहास्यमय सुखकान्तिने कुछ देरके लिए उदासीका भाव धारण कर लिया। उनके नेत्रोंमें जल भर आया। किन्तु तुरन्त ही मानकाभाव छिपाकर हँसते हुए कहा—बहिन, तुम यमकी माताकी भाँति मुख लटकाकर वहाँ क्यों खड़ी हो? यहाँ आओ, तुमने आज क्या देखा है। उस संसारमें भिन्न-भिन्न स्थानोंमें भिन्न-भिन्न प्रकारसे कितनी ही निष्ठुरता, कितना ही अत्याचार, कितनी ही कृतघ्नता तथा कितने ही पापाचार होते रहते हैं। यदि प्रतिदिन उनपर विचार किया जाय, तो फिर इस संसारमें कुछ भी अच्छा न लगेगा।

मिस अफिलिया, यह बात सुनकर मलिन मुख हो, बैठ कर सिलाई करने लगीं। उनका हाथ तो चलने लगा, किन्तु उनके हृदयकी आग न बुझी। इसलिए कुछ समयके बाद वे बोल उठीं—अगष्टिन मैं तुम्हारी तरह इन सब विषयोंकी सहज ही उपेक्षा नहीं कर सकती। क्या तुम इस निन्दनीय दासत्व-प्रथाका समर्थन करते हो?

सेन्टक्लेयर—क्यों बहिन! फिर वही बात?

अफिलिया—मैं कहती हूँ कि तुम इस जघन्य प्रथाका समर्थन करके अपनेको घृणास्पद बना रहे हो।

सेन्टक्लेयर—क्या! मैं इस प्रथाका समर्थन करता हूँ! कौन कहता है कि मैं इस प्रथाका समर्थन करता हूँ?

अफिलिया—तुम अवश्य ही इसका समर्थन करते हो। नहीं तो इतने दास क्यों रखते?

सेन्टक्लेयर—बहिन! क्या तुम समझती हो कि किसी कामको अन्याय समझकर इस संसारमें कोई नहीं करता? क्या तुमने अपने जीवनभरमें कभी कोई ऐसा कार्य नहीं किया जिसे तुम अन्याय समझती थीं?

अफिलिया—यदि मैंने कभी भी कोई अन्याय कार्य किया हो तो उसके लिए पश्चाताप करती हूँ।

सेन्टक्लेयरने एक संतरा छीलते-छीलते कहा-मैं भी पश्चात्ताप करता हूँ। जीवन भरके लिए पश्चाताप करता हूँ।

अफिलिया-पश्चात्ताप करके फिर वही कार्य क्यों करते हो?

सेन्टक्लेयर—तुम क्या एक बार पश्चात्ताप करके फिर वही काम नहीं करतीं?

अफिलिया—जब अत्यन्त लोभके वशमें हो जाती हूँ, केवल तभी वैसा करती हूँ।

सेन्टक्लेयर—समझ लो मैं भी अत्यन्त लालची हो गया हूँ।

अफिलिया—किन्तु मैं बार-बार उस बुराईको छोड़नेकी चेष्टा करती हूँ।

सेन्टक्लेयर—मैं भी इन गत दस वर्षोंसे चेष्टा कर रहा हूँ किन्तु अभीतक सब बुराइयोंको नहीं छोड़ सका। बहिन, क्या तुम अपने सब दोष छोड़ चुकीं?

इस बार मिस अफिलियाने हाथकी सिलाई बन्द करके कहा—अगस्टिन! मुझमें अनेक दोष हैं। उनके लिए तुम मेरी भर्त्सना कर सकते हो। तुम जो कुछ कहते हो। वह ठीक है। अपनी दुर्बलता जितनी मैं स्वयं देख सकती हूँ उतनी और दूसरा कोई नहीं जान सकता। किन्तु मैं तुमसे यह कहती हूँ कि मैं अपना दाहिना हाथ काटकर फेंक दे सकती हूँ किन्तु किसी दोषकी उपेक्षा नहीं कर सकती। जिसे मैं बुरा समझती हूँ बराबर वही कार्य कदापि नहीं करती रह सकती।

सेन्टक्लेयर—बहिन! मेरी बातसे तुम अप्रसन्न हो गयीं? तुम जानती नहीं हो कि मैं दुष्ट लड़का था? मैं तुम्हें केवल व्यग्र बना देता हूँ। तुम्हें खिझाना ही मुझे पसंद है। तुम्हारा स्वभाव कितना पवित्र है यह, क्या मैं जानता नहीं? बहिन,

तुम कैसी सहृदय हो यह क्या मैं भूल गया हूँ। पर तुम कुछ अधिक प्यार करती हो—इतनी अच्छी हो कि इसके लिए मुझे कभी-कभी कष्ट होता है।

अफिलिया—अगस्टिन! क्या ये सब गम्भीर विषय लेकर हँसीमें उड़ाने चाहिएँ।

सेन्टक्लेयर—किन्तु वहिन! ऐसी भीषण ग्रीष्म-ऋतुमें तो मैं गम्भीर नहीं हो सकता। एक तो गरमी है, दूसरे मच्छड़ सता रहे हैं। ऐसी अवस्थामें तो मनुष्य किसी गम्भीर आलोचनामें प्रवृत्त नहीं हो सकता। अब मैं समझ रहा हूँ कि तुम्हारे देशके लोग क्यों इतने धार्मिक होते हैं। इतने दिनपर आज यह नया आविष्कार हुआ है। हमारे देशकी भाँति उस देशमें इतनी गरमी नहीं है। इतने मच्छड़ नहीं हैं।

अफिलिया—अगस्टिन! तुम तो आधे पागल हो।

सेन्टक्लेयर—ऐसी बात है? तो ऐसा ही सही अच्छा अब मैं गम्भीर होता हूँ, तुम ज़रा वह संतरेकी डालियां तो मुझे दे दो। दो—चार संतरे खाकर देखूं मैं गम्भीर हो सकता हूँ या नहीं। इस समाजमें यदि किसीको तीस-चालीस दास-दासियां रखनी पड़ें तो उसे लोगोंके मत मतान्तरोंपर ध्यान रखना अत्यन्त आवश्यक हो जाता है।

अफिलिया—तुम तो अभी तक गम्भीर नहीं हुए।

सेन्टक्लेयर—यह हो रहा हूँ, देखो न।

यह बात कहनेके पश्चात् सचमुच ही सेन्टक्लेयरकी मुखश्रीने गम्भीर भाव धारण किया। वे कहने लगे—

वहिन! इस दासत्व-प्रथाको आश्रय देना नितान्त अन्याय है, इस विषयमें तो कोई मत भेद हो ही नहीं सकता। हमारे स्वदेशी अर्थ लोलुप गोरे क्षेत्र-स्वामी लोग स्वार्थके अनुरोधसे इस प्रथाको न्यायानुकूल कह सकते हैं, उनके प्रसादके लोभी

पादरी और धर्म याजक उनकी प्रसन्नताके लिए इसे ईश्वर-निर्दिष्ट-विधान कह सकते हैं; व्यवहार-कुशल, नीति-विशारद पण्डित लोग अपना स्वार्थ साधनके लिए अपूर्व चतुराईसे वाक्यजालों-द्वारा इस दासत्व-प्रथाका समर्थन कर सकते हैं, इसके समर्थनके उद्देश्यसे वे भाषा, नीति और धर्मशास्त्रोंका अनेक प्रकारके अर्थका प्रयोग करते हैं, इससे उनकी बुद्धिकी कुशलता देखकर चाहे अवाक् हो जाना पड़े, तथा इस प्रथाके समर्थनके सम्बन्धमें चाहे और भी कितनी ही युक्तियाँ दिखायीं जायँ किन्तु इन युक्तियोंमें वक्ता अथवा श्रोता, किसीका रत्तीभर भी विश्वास इन युक्तियोंमें नहीं है। यह घृणित दासत्व-प्रथा निरी नारकी प्रथा है एवं नरकसे ही उत्पन्न हुई है।

अगष्टिनने अत्यन्त उत्तेजित होकर ये बातें कहीं। मिस अफिलिया उनकी बात सुनते-सुनते अपने हाथका शिल्पकर्म छोड़कर विस्मित भावसे उनके मुखकी ओर एक टक देखती रह गयीं। अगष्टिन उनको विस्मित देखकर फिर कहने लगे—तुम मेरी बातें सुनकर आश्चर्य करती हो। मैं इस विषयमें एक बात भी मुँहसे नहीं निकालता। पर आज जब कहने लगा हूँ तब हृदयके कपाट खोलकर सभी बातें कह दूँगा।

"सब लोगोंसे घृणित ठहराई हुई यह दासत्व-प्रथा है—यह कैसी प्रथा है, इसका मूल कारण क्या है; इत्यादि। ऊपरका परदा हटाकर यदि धीरे-धीरे आदिसे अन्त तक इसकी परीक्षा करके देखा जाय तो क्या मिलता है? और क्या, पाओगे? देखोगे—हम भी मनुष्य हैं, ये जो दास बनाये जाते हैं। यह भी मनुष्य हैं। किन्तु वे मूर्ख और अबल हैं, हम बुद्धिमान, सबल हैं। हम लोग बलपूर्वक अथवा बुद्धिके कौशलसे उनको सर्वस्व हरण कर लेते हैं और उसमेंसे अपने इच्छानुसार उन्हें

लौटाते हैं। जो-जो कार्य हम लोगोंको कष्टकर, घृणाकरने योग्य तथा अप्रिय होते हैं, उन्हें हम इन कुप्सियोंसे ही कराते हैं। हमलोग परिश्रम करना पसंद नहीं करते अतएव कुप्सी हमारे लिये परिश्रम करेंगे। हमारे सुयत्न-रक्षित शरीरको धूप सह्य नहीं है, इसलिए वे लोग घाममें जलकर हमारा कार्य करेंगे, हमारी चरण-पादुकामें कीचड़का एक धब्बा न लगे, इसके लिए उस कीचड़ भरे हुए मार्गमें वे अपने हृदय बिछा देंगे। हम उनकी छातीपर पैर रखते हुए निर्विघ्न चले जायँगे। इस जीवनमें तो कुप्सी अपनी इच्छाको तिलाञ्जलि देकर हमारी इच्छाके अनुसार चलेगा ही मरनेपर भी वह किस स्थानमें जायगा, इसका निर्णय करना भी हमीं लोगोंके हाथमें है। उसके नरक जानेमें यदि हमारा कोई स्वार्थ सिद्ध होता तो उसे अवश्य ही नरक जाना पड़ेगा। हमारे देशके कानूनका धर्म इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं है। तुम दासत्व-प्रथाको अपव्यवहार कहकर व्यर्थ गड़बड़ी करती हो। इसमें अप्रथा अथवा अपव्यवहार क्या कुछ हो सकता है। इस घृणित प्रथाका प्रचलित करना ही मनुष्य शक्तिका घोर दुर्व्यवहार है। इस दुष्कर्म भारसे देश जो आज भी रसातलको नहीं जाता तो उसका कारण यह है कि इस दासत्व-प्रथाने दास-स्वामियोंको जो असीम शक्ति प्रदान कर रखी है, कहीं-कहींपर उसका कुछ सदुपयोग भी हो रहा है। हमारे हृदयमें भी दया नामकी एक वस्तु है। हमारे मनमें भी कुछ लज्जा है। हम लोग निरे वन-पशु ही नहीं हैं। हम भी स्त्री-गर्भसे जन्मे हैं हममें भी मनुष्यात्मा है। इसीसे हम मेंसे अनेक लोग, देश-प्रचलित, आइनलब्ध क्षमताका सर्वांशमें उपयोग नहीं करते, या करनेका साहस नहीं करते—अधिक क्या कहूँ, वे इतनी पाशविक शक्तिका प्रयोग करनेसे घृणा करते हैं। इस देशके

नृशंसतम दास-स्वामी कितना ही अत्याचार, कितनी ही क्रूरता क्यों न करें पर वे अपनी अपरिमित क्षमताके भीतर ही रहते हैं इसमें रत्ती भर भी सन्देह नहीं।'

बातें करते-करते सेन्टक्लेयर मनके आवेगसे कुरसी परसे उठकर शीघ्रता-पूर्वक घरमें इधर-उधर टहलने लगे। भाव-की उत्तेजनासे उनका प्रसन्न मुख लाल हो गया था। उनके बड़े-बड़े नीले नेत्रोंसे अग्निवर्षा होने लगी। मिस अफि-लियाने आजके पहिले कभी उनका ऐसा रूप न देखा था। अतएव विस्मय-पूर्वक चुपचाप एक टक उनकी ओर देखती रहीं। सेन्टक्लेयर सहसा उनके पास आकर कहने लगे—इस विषयमें कुछ कहना अथवा सोचना व्यर्थ है। किन्तु तुमसे कहता हूँ कि एक दिन था जब सोचता था—यह देश पृथ्वीमें धँसकर यदि इस भीषण अविचार-समूहको चिरा-न्धकारमें छिपा रख सके तो सारा देश भूगर्भमें चला जाय। मैं भी इसके साथ ही साथ प्रसन्न चित्त हो इस पृथ्वीसे विलुप्त हो जाऊँ।

नावपर चढ़कर घूमनेके समय जब मैं देखता कि सैकड़ों नीचाशय, निष्ठुर, पशुप्रकृति गोरे निन्द्यकर्मोंसे प्राप्त धन-द्वा-रा असंख्य स्त्री-पुरुषों एवं बालक-बालिकाओंको खरीदकर उनके साथ यथेच्छ व्यवहार करते हैं। समय-समयपर उनके ऊपर कठोरसे कठोर व्यवहार करते हैं, तब मेरा हृदय फटने लगता था। मैं उस समय मन ही मन इस देशको—समग्र मानव जातिको अभिशाप देता था।

आफिलिया—अगष्टिन यथेष्ट कह चुके। मैंने अपने उत्तर-प्रदेशमें भी दासत्व-प्रथाके विरुद्ध ऐसे ज्वलन्त घृणा पूर्ण-वाक्य किसीके मुखसे नहीं सुने।

अफिलियाकी यह बात सुनकर सेन्टक्लेयरके मुखका भाव बदला। वे चिरअभ्यस्त व्यंगके साथ बोले—तुम्हारे उत्तर-प्रदेशमें—तुम्हारे उत्तर-प्रदेशके लोग सुनता हूं, बड़े ठण्डे हैं। किसी विषयमें वे इतने उत्तेजित नहीं होते। वे सब बातोंका हिसाब लगाकर चलते हैं। वे हृदयके आवेगसे उत्तेजित होकर अन्यायके विरुद्ध आकाश-पाताल प्रति ध्वनि कर देनेवाला चीत्कार नहीं कर सकते। तुम्हारे उत्तर-प्रदेशमें भी क्या निम्न श्रेणीके लोगोंके साथ सच्ची सहानुभूति है?

पाठक, ज़रा विचारकर देखिये तो सहज ही मालूम हो जायगा कि यह दासत्व-प्रथा संसार भरमें व्याप्त हो रही है। पृथ्वीपर कोई ऐसा स्थान नहीं, कोई ऐसी जाति नहीं, जिसमें किसी न किसी रूपमें यह घृणित प्रथा प्रचलित न हो। इस बड़े मनुष्य समाजकी कार्यावली जगत-वासी प्रत्येक स्त्री-पुरुषके विचारोंको अलग-अलग करके देखा जाय तो, "दूसरेपर अधिकार प्राप्त करूंगा, दूसरेको अपने अधीन, बनाऊंगा," यही एक मात्र भाव सार्वभौमिक पाया जायगा। इसलिए दुर्बलके प्रति बलवानका अत्याचार, मूर्खों पर ज्ञानियोंका प्रभुत्व सर्वत्र ही दिखायी पड़ेगा।

इंग्लैंडके उत्पन्न महाजन लोग निम्नश्रेणीके लोगोंका खून चूस लेते है। उनका सर्वस्व हड़प लेते हैं। उनके इस अत्याचारसे ये बेचारे दीन दास लोग बड़ी कठिनतासे कष्ट झेलते हुए अपना जीवन निर्वाह करते हैं। हमारे भारतवर्षमें स्वार्थी जमीन्दार लोग निरीह प्रजाका यथा सर्वस्व लूट लेते हैं, सब प्रकारके अधिकारोंसे उन्हें वञ्चित कर देते हैं। उन बेचारोंकी भलाईके लिए यदि कोई कुछ कहे तो सैकडों देश-हितैषी उसपर तलवार लेकर टूट पड़ेंगे।

अफिलिया उत्तर-प्रदेशकी बात सुनकर बोलीं—यहांपर एक प्रश्न उपस्थित होता है। तब अगस्टिन और भी उत्तेजित भावसे कहने लगे—तुम जो प्रश्न करोगी वह मैं जानता हूं। यही न तुम्हारा प्रश्न है कि मैं जब दासत्व-प्रथाका अनुमोदन नहीं करता तब स्वयं अपने घरमें क्यों इतने दास-दासी रखे हुए हूं?

बहिन! तुम्हें स्मरण नहीं है, तुमने बाल्यावस्थामें बाइबिल पढ़ाते समय सिखाया था कि हमारे पापोंने पुरुष-परम्परासे हमारा आश्रय लिया है। मैं तुम्हारे प्रश्नके उत्तरमें तुम्हारी इसी शिक्षाको रखता हूं। अर्थात् मैं भी वंशानुक्रमसे ही इन दास-दासियोंका स्वामी हुआ हूं। ये सब दास-दासियां हमारे पिताके, केवल पिताके ही नहीं मेरी माताके भी हैं। तुम तो जानती ही हो, हमारे पिता न्यूइंग्लेंडसे आकर यहां बसे थे। मेरे पिताकी प्रकृति ठीक तुम्हारे पिताकी तरह थी। वे पूर्ण रूपसे प्राचीन रोमनोंकी भांति न्यायी, तेजस्वी, प्रभावशाली तथा दृढ़ प्रतिज्ञ थे। तुम्हारे पिता न्यूइंग्लेंडमें बसकर गिरि-प्रस्तरोंसे पूर्ण भूमिपर अपना शासन स्थापित कर, उस भूमिसे जीवन-निर्वाहका उपाय उत्पन्न करने लगे। मेरे पिता लुसियाना आकर असंख्य नर-नारियोंपर प्रभुत्व जमाकर उनके परिश्रमसे अपनी जीविकोपार्जन करने लगे। मेरी माता-कहते-कहते सेन्ट-क्लेयर वहांसे उठ गये। और घरकी दूसरी ओरकी दीवारपर लटकते हुए एक चित्रके सम्मुख आ खड़े हुए। गम्भीर भक्तिके साथ निर्निमेष दृष्टिसे वे उस चित्रकी ओर देखकर कहने लगे—ये देवता थीं। मैं क्या कह रहा हूं—समझमें नहीं आता! मेरी माताने मनुष्यका जन्म लिया था सही, पर मैंने जहांतक देखा है एवं विचारा है उनके हृदयमें मनु-

प्योंकी दुर्बलता और भ्रम रञ्चमात्रको न था। क्या अपने क्या पराये, क्या दास-दासी जिसने उन्हें देखा है, जिसके साथ उनका व्यवहार रहा है वे सभी उन्हें मेरी ही तरह देव-प्रकृतिवाली कहना स्वीकार करते हैं। बहिन, ये माता ही घोर नास्तिकताके हाथोंसे मेरी रक्षा कर रही हैं। मेरी माता धर्म शास्त्रकी एक प्रतिमूर्ति ही थी। मैं इस शास्त्रमें तो अविश्वास नहीं कर सकता-कहते-कहते सेन्टक्लेयरका हृदय एकबार उमड़ पड़ा। वे हाथ जोड़कर, नितान्त विस्मित व्यक्तिकी भाँति माताके चित्रकी ओर देखकर मुस्कराने लगे-माँ! माँ!! ओ माँ!!! सहसा उच्छ्वसित हृदयावेग को रोककर वहाँसे लौट और अफिलियाके पास एक आसनपर बैठकर फिर कहने लगे।

मैं तथा मेरे भ्राता दोनों यमज थे। लोग कहते हैं कि यमज भाइयोंमें बड़ी समानता होती है। किन्तु हम दोनों भाइयोंमें पूर्ण विभिन्नता थी। मेरे भाईका शरीर रोमनोंकी भाँति दृढ़ गठित था, नेत्र काले, और तेज-पूर्ण थे, सिरके बाल घने और काले थे तथा वर्ण गौर था। मेरे नेत्र नीले, बाल श्वेत हैं। अलफ्रेड दुनियादार और काम काजी था, मैं भावुक और दुनियासे उदासीन हूं। अलफ्रेड बन्धु-बान्धव तथा समश्रेणीके साथ विशेष सुजनता दिखाता था, किन्तु नीची श्रेणीके लोगोंके साथके व्यवहारसे उसका गर्व और प्रभुत्व-प्रेम प्रकट होता था। जो उसकी इच्छाके विरुद्ध कार्य करता था, उसपर वह रत्ती भर भी दया न करता था। हम दोनों सत्यवादी थे। पर उसकी सत्यप्रियता साहस और अहङ्कारसे उत्पन्न हुई थी। मेरी सत्यनिष्ठा भावुकतासे प्रकट हुई थी। जो कुछ भी हो हम दोनोंमें प्रेम था। अलफ्रेड पिताको प्यारा था, मैं माताका दुलारा था।

मैं निरा भावुक ही था। सब बातोंमें मेरे सूक्ष्म अनुभाविनी शक्ति थी। मैं सहजमें ही मर्माहत हो जाता था। मेरे इस भावसे पिताजीको अथवा अलफ्रेडको बिन्दुमात्र भी सहानुभूति न थी, किन्तु माताजी मेरे हृदयको जानती थीं एवं वे सर्वदा मेरे साथ सहानुभूति प्रकाश करती थीं। इस लिए अलफ्रेडसे झगड़ा होनेपर जब पिताजी कुछ उदासीनता दिखलाते तब मैं माताजीके कमरेमें दौड़ा जाता और उनकी बगलमें जाकर बैठता था। माताकी उस समयकी दृष्टि-उन आयत स्नेह-पूर्ण नेत्रोंकी सुगंभीर दृष्टि, वे दोनों पाण्डु वर्ण गाल, इस समय भी स्मरण हो आते हैं। वे सदा सफेद वस्त्र पहिनती थीं। मैं जभी बाइबिलके "रेमोलेसन्" नामक अंशमें उज्ज्वल वस्त्र-धारी देवताओंका वर्णन पढ़ता हूँ तभी मुझे माताका ध्यान आ जाता है। माता अनेक विषयोंमें पारंगत थीं। संगीत-विद्यामें उनकी असाधारण प्रतिभा थी। माँ जिस समय आर्गन बाजेकी मधुर, गम्भीर वाद्य-ध्वनि करतीं और उसीके साथ अपनी कोकिल-वाणी मिला कर गाती थीं, उस समय मैं उनकी गोदमें अपना सिर रखकर आँसू बहाता था। उस समय मैं कितने ही प्रकारके स्वप्न देखता था, और मनमें कितनी ही प्रकारकी भावनाओंका अनुभव करता था; किन्तु उन्हें शब्दोंके द्वारा प्रकाशित न कर सकता था। वह इस समय भी नहीं प्रकट कर सकता।

उस समय दासत्व-प्रथाको लेकर कोई इतना तर्क-वितर्क न करता था। दासत्व-प्रथामें कोई दोष है, इसका स्वप्नमें भी कभी किसीको ध्यान न होता था।

मेरे पिताका हृदय-सदैव आत्याभिमानसे भरा रहता था। मुझे जान पड़ता है कि इस संसारमें जन्म लेनेसे पूर्व पिताजी आध्यात्म-जगतकी किसी उच्चश्रेणीके व्यक्ति थे एवं वहींसे

अपनी कुल-मर्यादा और अहंकार साथ लेते आये थे। नहीं तो धनीके घरमें अथवा उच्चकुलमें उत्पन्न हुए बिना भी उनका ऐसा जात्याभिमान पूर्व जन्मके संस्कारके अतिरिक्त और कहा ही क्या जा सकता है? मेरे भाईकी प्रकृति पिताजीके प्रकृतिकी प्रतिकृति स्वरूप होकर गठित हुई थी।

जातिकुलाभिमानी लोगोंके हृदयमें सार्वभौमिक-प्रेम स्थान नहीं पा सकता। उनकी सहानुभूति समाजमें एक निश्चित सीमाका उल्लँघन नहीं कर सकती। इँग्लैंडमें यह सीमा-रेखा एक स्थानपर है तो ब्रह्मदेशमें वह दूसरे और अमेरिकामें तीसरे। किन्तु किसी भी देशके लोग इस सीमा-रेखाका उल्लँघन नहीं करते जो इस सीमाके भीतर हैं, उनकी सहानुभूतिके पात्र उनके सीमाबद्ध, समान श्रेणीवाले ही हैं। उन लोगोंमे बराबरवालोंके पक्षमें जो, अत्याचार, यंत्रणा, अविचार है, दूसरी श्रेणीवालोंके लिए वह कुछ भी नहीं। हमारे पिताजीका सीमा निर्देशक 'वर्ण' था। गोरे उनकी बराबरीके लोग थे। इनलोगोंके साथ उनका व्यवहार सौम्य, न्यायानुकूल और आदर्श था। किन्तु इन असहाय दासोंको वे मनुष्य न समझते थे। वे उन्हें मनुष्य और पशुओंके मध्यकी एक श्रेणीके लोग समझ थे। मैं समझता हूँ, यदि कोई उनसे पूछता कि इन गुलामोंमें मनुष्यात्मा है कि नहीं, तो उसके उत्तरमें वे बड़ा सन्देह प्रकट करते। मेरे पिता आध्यात्मिक आलोचनाकी कोई धारणा न मानते थे। उनमें कुछ विशेष धर्म-भाव न था। वे समझते थे कि एक कोई ईश्वर भी है। किन्तु वे उस ईश्वरको केवल उच्च-श्रेणीके लोगोंमेंसे एक रक्षक और अधिनेता मानते थे।

मेरे पिताके कपासके खेतमें पाँच सौ क्रीतदास काम करते

थे। इन लोगोंका काम-काज देखनेके लिए स्टाव नामका तुम्हारे वारमन्ट देशका एक नर-पिशाच नियुक्त था। दासों‑को स्टाव दिन-रात भयानक यंत्रणा देता था। मेरी माता और मैं उस पिशाचको बिल्कुल अच्छा न लगता था। किन्तु पिता उसपर विश्वास करते तथा उसे प्यार करते थे। इस लिए दासोंपर उसके अत्याचारकी सीम-परिसीमा न थी।

मैं उस समय छोटा था। किन्तु उसी समयसे इन साधारण लोगोंके प्रति मेरे हृदयमें प्रबल प्रेमका संचार होता था। मैं सदा घरमें रहनेवाले तथा खेतमें काम करनेवाले दासोंके घर आया-जाया करता था। इसलिए वे भी मुझे प्यार करते थे। वे मुझे अपने दुःख और अत्याचारोंकी सब कथाएँ सुनाते थे। मैं जो कुछ उनसे सुनता वह सब जाकर माताको सुनता। तब हम, माता-पुत्र दोनों एकत्र होकर, किस प्रकार इनका दुःख दूर किया जाय, इसका विचार करते थे। हम लोगोंकी चेष्टासे इन दासोंपर होने‑वाले अत्याचार अनेक अंशोंमें घटने लगे। जिस समय मैं दासोंकी यंत्रणा कुछ कम करनेमें सफल होता था, उस समय मेरी प्रसन्नताकी सीमा न रहती थी। इधर खेतके काममें बड़ा व्याघात होने लगा। स्टाव मेरे पिताके पास आकर कहने लगा—महाशय मुझे जवाब दीजिये। मैं दासोंसे काम नहीं कराने पाता। मेरी माताके प्रति मेरे पिताका बड़ा अनुराग और बड़ी श्रद्धा थी किन्तु पिता जिस कार्यको आव‑श्यक समझते थे उसे करनेसे किसी भाँति भी विचलित होने वाले व्यक्ति न थे। इसलिए सम्मान सूचक पर स्पष्ट शब्दोंमें उन्होंने मेरी मातासे कहा—घरके सम्पूर्ण दास-दासियोंपर तुम्हारा पूरा अधिकार है, किन्तु खेतके दासोंके प्रति तुम कोई कार्यवाही मत करो। स्वयं ईसाकी माता

मेरीसे भी, उनके कार्योंमें विघ्न डालनेपर, वे स्पष्टाक्षरोंमें यही बात कहते।

इतनेपर भी मातादेवी कभी-कभी आंसू भरी आँखोंके साथ पितासे स्टावके अत्याचारोंका वृत्तान्त कहती थीं। पिता अविचलित चित्तसे उनकी कातर बातें सुनते एवं माताकी बात समाप्त होनेपर कहते कि मैं स्टावको छुड़ा नहीं सकता, क्योंकि वह बड़ा कार्य्य-चतुर व्यक्ति है। उसके छुड़ा देनेपर फिर कोई दूसरा वैसा आदमी न मिलेगा। स्टाव कुछ वैसा निष्ठुर भी नहीं है। हाँ, कभी-कभी दो-एक निष्ठुरताका काम कर बैठता है। इससे उसको कुछ दोष नहीं दिया जा सकता। शासन न रहने से कार्यमें बड़ी गड़बड़ी उपस्थित हो जायगी। सब स्थानोंकी शासन प्रणालियोंमें थोड़ी-बहुत निष्ठुरताका दोष पाया जाता ही है। आदर्श शासन-प्रणाली कहीं की भी नहीं है। मेरी माताकी भाँति जिसकी प्रकृति कोमल और महत् है, वे चारोओर अत्याचार, अविचार और दुःख-यन्त्रणा देखकर, यदि इसका प्रतिकार न कर सकें तो जिस प्रकार मर्मान्तिक पीड़ाके साथ जीवन व्यतीत करते हैं, वह केवल उस घट-घट व्यापीके अतिरिक्त और कोई न तो जान सकता है और न समझ सकता है। जिसे वे अन्याय समझते हैं दूसरे उसे न्याय समझते हैं, जिसे वे घोर कठोरता समझते हैं, दूसरे लोग उसे कठोरता नहीं मानते। इसलिये निरुपाय होकर जीवनभर उनलोगोंको चुपचाप-अकेले ही मनका दुःख सहन करना पड़ता है। इस पाप संतापसे कलुषित संसारमें उनका जीवन अभिन्न दुखका आधार स्वरूप हो जाता है। मेरी माताने जब देखा कि वे किसी प्रकार इन दुखित दासोंका दुःख दूर नहीं कर सकतीं, तब वे निरास हो गयीं, पितासे इस सम्बन्धमें फिर कुछ न कहतीं। किन्तु

अपनी युवा अवस्थामें हमलोग निष्ठुर न हों, इसलिए वे हम दोनों भाइयोंको अपनी ही तरह सब सिखानेमें प्रवृत्त हुईं। शिक्षाके सम्बन्धमें, चाहे जो कुछ भी हो, मुझे तो ऐसा जान पड़ता है कि मनुष्यको जन्मसे जैसी प्रकृति होती है वह सरलतासे बदली नहीं जा सकती। लड़कपनसे ही अल्फ्रेड प्रभुत्व-प्रिय तथा जात्याभिमानी था। माताके उपदेशों तथा उनके अनुरोधोंका कुछ भी प्रभाव उसपर न पड़ता था। वे सब व्यर्थ होते थे। संसकारवश होनेसे ही मानो अल्फ्रेड की युक्ति और तर्क अन्यायका समर्थन करते थे। किन्तु माताके सम्पूर्ण उपदेशवाक्य मेरे हृदयमें अपनी जड़ जमाने लगे। उनका दृढ़ विश्वास तथा उनकी प्रगाढ़ भक्ति उनके प्रत्येक उपदेशके साथ-साथ मेरे हृदयमें प्रवेश करती थी। वे सदैव मुझसे कहतीं—मनुष्य चाहे उच्चपदाधिकारी हो चाहे दीन-दरिद्र हो, उससे मनुष्यात्माका महत्त्व कम अथवा नष्ट नहीं होता। एकवार आकाशके तारे दिखाकर मुझसे कहने लगीं—बेटा अगष्टिन! यह जो लाखों, करोड़ों तारे दिखायी पड़ते हैं, ये सब नक्षत्र-मण्डल एक दिन नष्ट हो जा सकते हैं, इस सारे संसारका नाश हो जा सकता है, सूर्य अपनी कक्षा से हट जा सकता है, किन्तु एक दीन, दरिद्रकी आत्मा कदापि नष्ट नहीं हो सकती। दुःखी-सुखी, धनी-दरिद्र, मूर्ख-ज्ञानी सभी अमरत्व प्राप्तकर, मंगलमय परमेश्वरकी अमृत-गोदमें चिर सुख-शान्ति उपभोग करेंगे। प्रत्येक दीन-दरिद्रके लिए उनकी अमृत-सुखदायिनी गोद सदा फैली हुई है।

माताके सोनेके कमरेमें अनेक चित्र थे। उन्होंने यीशु-क्रीष्ट जिसमें अन्धेको नेत्र प्रदान कर रहे थे, वही चित्र दिखा-कर कहतीं "बेटा अगष्टिन! देखा परमधर्मात्मा यीशु क्रीष्टकी कंगालोंके प्रति कितनी कृपा है। वे अपने हाथोंसे चिरदुःखी

अन्धेकी सेवा-शुश्रूषा कर रहे हैं।" यदि अधिक समय तक मैं ऐसी सहृदया स्नेहमयी माताके सहवासमें जीवन बिता सकता, यदि युवावस्थाके आरम्भ तक उनका उपदेश सुन सकता तो निश्चय ही पवित्र-जीवन प्राप्त करता, उत्तम प्रकृति प्राप्त करता। उतरती अवस्थामें, धर्मके लिए, इन दास-दासियोंके उद्धारके निमित्त अनायास ही प्राण समर्पण करनेमें समर्थ होता। देव-दुर्लभ जीवन प्राप्तकर देश-सुधारकोंका व्रत ग्रहण करता। किन्तु तेरह वर्षकी अवस्थामें ही मुझे उत्तर-प्रदेश जाना पड़ा। स्नेहमयी जननीका साथ छोड़ना पड़ा। इसलिए अपनी आशाके अनुकूल जीवन प्राप्त न कर सका।

यह बात कहते-कहते सेन्टक्लेयरका मुख फिर उदास हो गया। दोनों नेत्र आँसुओंसे भर गये। वे उमड़ते हुए हृदयके आवेगको रोककर फिर कहने लगे—इस संसारकी कार्यावलीमें क्या कोई सच्चा धर्मभाव, न्यायानुकूल आचरण तथा निःस्वार्थ प्रेम दिखायी पड़ता है? मानव समाजके पारस्परिक व्यवहारमें क्या कोई निश्चित,स्थिर धर्मभाव दिखायी पड़ता है! लड़कपनमें मैंने भूगोलमें पढ़ा था कि भिन्न-भिन्न देशोंका जल-वायु भिन्न-भिन्न प्रकारका है, इसलिए भिन्न-भिन्न प्रकारके जल-वायुके कारण भिन्न-भिन्न देशोंमे भिन्न-भिन्न प्रकारके उद्भिज होते हैं। मनुष्य-समाजके मतामत और आचरणकी दशा भी ठीक उसी प्रकार की है। देश-प्रचलित आचार-व्यवहार एवं सामाजिक अवस्थाके अनुसार ही प्रत्येक देशके निवासियोंका चरित्र गठित होता है। हमारे देशमें दासत्व-प्रथा प्रचलित है। इसलिए हमारे देशके लोग उसके निष्ठुराचरणमें कोई दोष नहीं देख पाते। किन्तु इंग्लैण्डके लोगोंका हृदय, इस प्रथाके कठोर व्यवहारोंकी कथा सुनकर

विदीर्ण होने लगता है। इस संसारमें क्या शिक्षित, क्या अशिक्षित, अधिकांश लोग ऐसे हैं, जिनका कोई अपना स्वतंत्र मत ही नहीं, वे घटना-स्रोतमें बहते रहते हैं। देश-प्रचलित अवस्था उन्हें जिस ओर ले जाती है, विना फलका विचार किये ही वे उसी ओर चले जाते हैं। उनमें किसी विषयके सम्बन्धमें स्वाधीन-भावसे भले-बुरेका विचार करनेकी क्षमता नहीं रहती। तुम्हारे पिता उत्तर-प्रदेशीय दासत्व-प्रथा-विरोधी सम्प्रदायके साथ निवास करते हैं, इसलिए वे भी दासत्व-प्रथा विरोधी हो गये हैं। और मेरे पिता इस देशमें रहनेके कारण दासत्व-प्रथाको सहारा देने लगे। किन्तु इस प्रकार देश-भेदके कारण पार्थक्यके अतिरिक्त आपसमें और कोई विभिन्नता न थी। वे दोनों सब प्रकारसे समान-प्रकृति-के मनुष्य थे। दोनोंमें आत्याभिमान था। दोनोंमें शासन करने की इच्छा थी। यह स्पष्टरूपसे दिखायी पड़ता था।

अफिलियाको इस बातका प्रतिवाद करनेके लिए उद्यत होते देख सेन्टक्लेयर उसे रोक कर बोले—बहिन, तुम जो कुछ कहोगी वह मैं समझ गया। मैं मुक्त-कण्ठसे स्वीकार करता हूँ कि तुम्हारे पिताका कार्य-कलाप मेरे पिताके कार्य-कलाप-से स्वतंत्र था। किन्तु दोनों समान प्रकृतिके थे इसमें कोई संदेह नहीं। संसारमें दो प्रकारके मनुष्य हैं, एक वे जो व्यर्थ अभिमानसे फूलकर, व्यर्थ गर्वसे गर्वित होकर, अन्य लोगोंसे बातें तक नहीं करते, दूसरेको मनुष्य ही नहीं सम-झते। दूसरे वे हैं जो अपनेमें वैसा आत्माभिमान रहते हुए भी यह सिद्ध करनेके लिए कि हममें कुछ भी आत्माभि-मान नहीं है, सब लोगोंसे वार्तालाप, मेल-जोल करते हैं। "आत्माभिमान बड़ा दोष है" सर्वत्र चिल्लाते फिरते हैं। छोटे-बड़े सबको आदरके साथ ग्रहण करते हैं तथा सबके सामने

आत्माभिमानियोंकी निन्दा करते रहते हैं। वे भी ठीक वैसे ही आत्माभिमानी थे। पूर्वोक्त श्रेणीके लोग स्पष्टरूपसे दूसरों-से घृणा प्रकट कर अपने हृदयके आत्माभिमानको तृप्त करने-का सुअवसर न पाकर अन्य उपायोंका आश्रय लेते हैं। इन दोनों श्रेणीके लोगोंमें जो अन्तर है, ठीक वही अन्तर तुम्हारे और मेरे पिताके आत्माभिमानमें था। मेरे पिता पहिली श्रेणीके आत्माभिमानी थे और तुम्हारे दूसरीके। तुम्हारे पिता जात्यभिमानके प्रति घृणा दिखलाकर अपने हृदयके महत् भावका परिचय देते थे और मेरे पिता हजारों मनुष्योंके सिर पैरोंसे ठुकराकर अपना श्रेष्ठत्व स्थापित करते थे। यदि ये दोनों लुसियाना प्रदेशके ज़मींदार होते तो इन लोगोंके कार्यों में किञ्चित्मात्र विभिन्नता न रहती।

अफिलिया—अगष्टिन ! पितृ-निन्दा बड़ा अनुचित कार्य्य है। तुम बड़े कृतघ्न हो।

अगष्टिन—मैं अपने पिता और चाचाकी निन्दा नहीं करता। किन्तु मैं किसीपर अनुचित भक्ति भी नहीं करता। विशेषतः मुझे तुमको अपनी आत्म-कहानी सुनानी पड़ी, इससे ये बातें भी कहनी पड़ीं। अतएव इस समय मैं दास-त्व-प्रथाके सम्बन्धमें कैसा आचरण करता आ रहा हूँ, वही कहता हूँ—पिताकी मृत्यु हो जानेपर मैं तथा अलफ्रेड पिता की छोड़ी हुई सारी सम्पत्तिके मालिक हुआ। जब वे जीवित थे तभी उन्होंने यह समझ लिया था कि मुझमें क्षेत्राधिकारी-का कार्य चलानेकी सामर्थ्य बिलकुल नहीं है। इसलिए अलफ्रेडको ही खेतोंका भार सौंप दिया। किन्तु अलफ्रेड-के समान दयावान मनुष्य भी पृथ्वीपर बहुत थोड़े हैं। बरा-बरों वालोंके साथ, आत्मीय जनोंके साथ वह कभी अन्याय न करता। वरन स्वयं कुछ त्याग करके उनलोगोंका उपकार

करनेकी चेष्टा करता था। इसलिए उसने मुझे खेतका आधा हिस्सा लेने को कहा—उसके अनुरोधसे मैं कुछ दिनोंतक उसके साथ खेतोंके कार्यमें प्रवृत्त हुआ। किन्तु मैं उसके काम-काजमें किसी प्रकार भी सहायता न कर सका। वह प्रसन्नतापूर्वक मेरी सारी त्रुटियाँ दूर करता। एक दिन भी उसने मेरे साथ कोई अन्यायाचरण नहीं किया। अन्तमें क्रमश मुझे खेतके कामसे घोर घृणा उत्पन्न होने लगी। लगभग सात सौ कुली हमारे खेतोंमें काम करते थे। इनमें किसीके प्रति किञ्चित् सद्व्यवहार करना किसीपर कुछ दया करना, बिल्कुल असम्भव था। वह सबको पहिचानता था। विशेषतः रात-दिन इन लोगोंको पशुकी भाँति रखता, सर्वदा बेतोंसे पीटता, इन लोगोंका काम देखनेके लिए एक नृशंस-प्रकृति-विशिष्ट मनुष्यको रख कर, इनकी यंत्रणा बढानी, मुझे असह्य हो उठा। दिन-दिन उस स्नेहमयी जननीके उपदेश स्मरण आने लगे। वे अनेकबार मुझसे कह गयी थीं—"काले दासोंने भी हम लोगोंकी ही भाँति अन्तरात्मा पायी है। हम लोगोंकी ही भाँति रक्त मांससे बने हैं। हम लोगोंकी ही भाँति सुख-दुखका अनुभव करनेमें पूर्ण समर्थ हैं।" माताकी ये सब बातें स्मरण आते ही इन क्रीत-दास-दासियोंका दुख देखकर मेरा हृदय पिघलने लगता था। इस पाप और अत्याचारसे पूर्ण संसारको छोड़कर शीघ्र ही जिसमें जाकर जननीसे मिल सकूँ, वैसी ही प्रार्थना मैं ईश्वरसे करता था। ऐसी मानसिक अवस्था होनेपर क्या कोई किसी कार्यमें मन लगा सकता है। धीरे-धीरे यह समझने लगा कि इन क्रीत-दासोंको हमलोग ही नष्ट करते हैं। ईश्वरने इन्हें मनुष्यात्मा दी है, किन्तु हम लोगोंने इन्हें पशु बना रखा है। वास्तवमें ऐसी पराधीन

अवस्थामें मनुष्य क्या मनुष्यत्व प्राप्त कर सकता है? स्वाधीन इच्छाका संचालन करनेमें रुकावट होते ही मनुष्य मनुष्यत्व-से हीन हो जाता है। ऐसी ही चिन्ता करते-करते खेतोंका काम छोड़ देनेका दृढ़ संकल्प कर लिया।

अफिलिया—अगष्टिन! मैं सदा यही समझती थी कि तुम इस दासत्व-प्रथाको बाइबिलसे अनुमोदित समझते हो और उसे विधिका विधान मानते हो, किन्तु आज मेरा यह भ्रम, तुम्हारी ये वक्तृतायें सुनकर, दूर हो गया।

अगष्टिन—मैं अब तक भी इतना मनुष्यत्व-विहीन नहीं हुआ। मेरी आत्मा इतनी नहीं गिर गयी कि दासत्व-प्रथाको बाइबिलसे अनुमोदित समझने लगे। अलफ्रेड भी जो दास-दासियोंपर कठोर शासन करता था, यहाँ तक कि खुले हाथों उनका प्राण तक ले लेनेमें जिसे कोई कष्ट न होता था तथा जो इन दास-दासियोंको तिल भर भी मनुष्यका अधिकार देना स्वीकार न करता था, वह भी इस घृणित दासत्व-प्रथाको बाइबिल-समर्थित नहीं मानता था। इसके सम्बन्धमें उसका मत यह था कि संसारमे यदि एक श्रेणीके लोग आत्म-गौरव-विहीन होकर पशुकी भाँति न रहें, तो मानव-समाज उन्नत न हो सकेगा, संसारकी सभ्यता क्रमशः परिवर्द्धित न होगी। वह कहता कि मनुष्य-समाजकी उन्नति होनेपर उसे और अधिक उन्नतिकी सीढ़ीपर चढ़ानेके लिए बलवान् और बुद्धिमान् लोग निर्बल और बुद्धिहीन लोगोंपर बहुत दिनोंतक शासन करेंगे। बलवान और बुद्धिमान् लोगोंके शासनाधीन रहकर इन दुर्बल मूर्खोंको पशु-जीवन विताना पड़ेगा। अपने इस मतका समर्थन करनेके लिए अलफ्रेड कहता था कि दासत्व-प्रथा विश्व-व्यापी है। अमेरिकाके क्षेत्राधिकारी लोग क्रीत-दासोंके साथ जैसा व्यवहार करते

हैं, इंग्लैंडके कुलीन तथा महाजन लोग दूसरे रूपसे अपने देशी श्रम-जीवियोंके साथ ठीक वैसा ही व्यवहार करते हैं। किन्तु वह इंग्लैंडके कुलीन और धनी लोगोंका आचरण भी दोष-पूर्ण नहीं समझता था। वह कहता कि मानव-समाजको संगठन-प्रणालीकी सूक्ष्म आलोचना करने पर सहजमें ही यह ज्ञात हो जायगा कि एक श्रेणीके लोगोंके दूसरी श्रेणीके लोगोंकी दासता न करनेसे किसी प्रकार भी समाजकी उन्नति तथा सभ्यताका उत्कर्ष-साधन सम्भव नहीं हो सकता। उसके मतानुसार संसारकी सभ्यताकी उन्नतिके लिए दुर्बल, मूर्खोंको बहुत दिनोंतक बली, बुद्धिमानोंके अधीन रहना होगा। आजीवन उन्हें पशुकी भांति कार्य करने पड़ेंगे, एवं अपना-अपना आत्म-विसर्जन करके अपेक्षाकृत बलवान्, बुद्धिमानोंकी सुख स्वच्छन्दताकी वृद्धि करनी होगी। किन्तु अलफ्रेडकी यह युक्ति मैं न्याय-संगत नहीं मानता। केवल स्वार्थी लोग ही ऐसी युक्तिके सहारे अपने विवेकको धैर्य देनेकी चेष्टा करते हैं।

अफिलिया सेन्टक्लेयरकी ये बातें सुनकर कहने लगी—अगाष्टिन! इंग्लैंडके श्रमजीवी लोगोंकी अवस्थाके साथ तुम्हारे देशके क्रीत-दासोंकी अवस्थाकी तुलना नहीं हो सकती। इंग्लैंडके श्रमजीवियोंको कोई बेत नहीं मार सकता। उनकी संतानको माता-पिताकी गोदसे छीन कर कोई जहां-तहां नहीं बेच सकता। देश-प्रचलित कानूनके अनुसार उन्हें मनुष्योचित अधिकार प्राप्त हैं; किन्तु तुमलोगोंने अपने दासोंको मनुष्योचित अधिकारसे वञ्चित कर रखा है। इन लोगोंका वधकर डालनेपर भी तुम लोगोंको कानूनसे कोई दण्ड नहीं मिलेगा।

अगष्टिन—बहिन! यहां हम लोग बेतोंकी मारसे दासोंके

प्राण लेते हैं, वहाँ इंग्लैंडके महाजन और कुलीन लोग श्रमजीवियोंका सारा द्रव्य छीनकर विना भोजनके उन्हें मार डालते हैं यहाँ हमलोग दासोंकी संतानको उनके माता-पिताकी गोदसे अलगकर स्थान-स्थानमें बेच देते हैं, वहाँ इंग्लेण्डमें श्रमजीवियोंकी संतान धनकी कमीसे विना भोजनके मर जाती है। तब इंग्लैण्ड और अन्यान्य देशोंमें इन दुर्बलोंका प्राण-नाश करनेके कारण क्या किसीको दण्डित होना पड़ता है ? हमारे देशमें गोरोंके अनायास ही काले दासोंका प्राण लेनेपर भी कानूनन कोई दण्ड नहीं मिलता।

अफिलिया—भाई! मैं तुम्हारी यह युक्ति स्वीकार नहीं करती। पृथ्वीमें अन्यान्य देशोंमें निम्नश्रेणीके लोगोंपर अत्याचार होता है इसलिए क्या तुम्हारे देशकी दासत्व-प्रथाका समर्थन किया जा सकता है।

अगष्टिन—मैंने इस दासत्व-प्रथाका समर्थन करनेके अभिप्रायसे क्या इस विश्व-व्यापी अत्याचारका समर्थन नहीं किया है। अलफ्रेड जिस युक्तिके सहारे इस प्रथाका समर्थन करता था, मैंने वही बतलायी है। हमारे देशकी प्रथा बड़ी घृणित है, क्या इसमें कुछ संदेह है। अन्यान्य देशोंके निम्न श्रेणीके लोगोंके ऊपर जो अत्याचार होते हैं, उनकी अपेक्षा सहस्र गुणा अधिक कठोर अत्याचार, घोर उत्पीड़न हमारे देशीय क्रीत-दासोंको सहन करना पड़ता है। हमारे देशके गोरे इन काली दासियोंके गर्भसे बच्चे पैदाकर गायके बछड़ेके समान उस सन्तानको बेच देते हैं। ये गोरे इन निरीह कालोंके साथ ठीक पशुओंका सा व्यवहार करते हैं। ऐसा लोम-हर्षण व्यवहार तो और कहीं नहीं दिखायी पड़ता। अन्यान्य देशोंमें नानाप्रकारकी चतुराइयोंके साथ बलवान् एवं धनी लोग दीनों और निर्बलोंपर अत्याचार करते हैं। इस

देशमें किसी चतुराईकी आवश्यकता नहीं। इच्छा होते ही इन दुर्बलके प्राण ले सकते हैं।

अफिलिया—अगस्टिन ! तुम्हारी आजकी ये वक्तायें सुनकर मैंने यथेष्ट ज्ञान प्राप्त किया। मैंने दासत्व-प्रथाके विषयमें कभी इतना नहीं सोचा था।

अगष्टिन—मैंने इंग्लैण्डमें स्थान-स्थानपर भ्रमण करके वहाँ निम्न-श्रेणीके लोगोंकी अवस्थाकी विशेष परीक्षाकी है। उनकी दुर्दशा देखकर हृदय विदीर्ण होने लगता है। अल्फ्रेड बड़े अहंकारके साथ सदा यही कहता कि मेरे दास लोग इंग्लैण्डके श्रमजीवियोंकी अपेक्षा अधिक सुखी हैं। वस्तुतः अल्फ्रेड अपने दास-दासियोंको भोजन-वस्त्रका कष्ट कभी न देता था। अल्फ्रेड निरा पाषाण-हृदय व्यक्ति न था। दास-दासियोंको,उसे विवश न करनेपर, वह कभी न मारता। किन्तु किञ्चित् मात्र भी इन लोगोंसे दुखी होनेपर वह उनके प्राण तक ले लेनेमें कुछ कष्टका अनुभव न करता। जब हम दोनों भाई एक साथ खेतोंमें काम करते थे, तब मैं बार-बार अल्फ्रेडसे यह अनुरोध करता था कि इन दास-दासियोंको शिक्षा देनेके लिए एक पादरी नियुक्त करो। पर अल्फ्रेड मनमें यह सोचता था कि मेरे कुत्ते अथवा घोड़ेके लिए शिक्षक नियुक्त करनेसे जो फल होगा वही फल इन लोगोंके लिए भी होगा। किन्तु तो भी मेरी प्रसन्नताके लिए उसने इन दासोंकी शिक्षाके लिए एक पादरी नियुक्त किया। प्रत्येक रविवारको आकर वह इन लोगोंको शिक्षा देने लगा। किन्तु इन दास-दासियोंकी अन्तरात्मा एक दम जड़ हो गयी है। बहुत दिनोंकी गुलामीके कारण ये एक दम पशु-प्रकृति हो गये हैं। सदुपदेश और उच्चशिक्षाके द्वारा भी इनके जड़वत् हृदयमें जीवन-शक्तिका संचार नहीं होता।

इन दास-दासियोंकी शिक्षाके सम्बन्धमें अगष्टिन फिर अफिलियाको सम्बोधित कर कहने लगे—बहिन! मुझे तुम समय-समय पर इनलोगोंको शिक्षा देनेको कहती हो, किन्तु जब तक इन्हें दासतासे मुक्त न कर दिया जाय, तब तक इन्हें किसी प्रकारकी भी शिक्षा देना व्यर्थ होगा। इन लोगोंमें धर्मका भाव कुछ सतेज जान पड़ता है किन्तु ऐसे धर्मभावमें न तो किसी प्रकारकी वीरताका, न निर्भीकताका कोई भाव है। वह केवल चिरकालको धर्म-भाव है।

अफिलिया—तुमने क्षेत्राधिकारीका कार्य छोड़ देनेका जो संकल्पकर लिया था वह तो बतलाया, किन्तु यह नहीं बताया कि तुमने वह कार्य छोड़ कब दिया।

अगष्टिन—मैंने अलफ्रेडके साथ प्रायः दो वर्षों तक कार्य किया। किन्तु मैंने अनायास ही समझ लिया कि यह काम मेरे लिए बड़ा दुष्कर है एवं अलफ्रेड भी समझने लगा कि मुझसे यह कार्य किसी प्रकार न हो सकेगा। मुझे सन्तुष्ट करनेके लिए वह कुलियोंको नाना प्रकारकी सुविधाएँ कर देने लगा। किन्तु किसी प्रकारसे भी मेरा मन न जमा। असल बात तो यह थी कि मैं जिस प्रकारका व्यवहार कुली लोगोंके साथ करनेको कहता था, वैसा व्यवहार करनेसे खेतके काममें क्षति होनेकी सम्भावना थी। कुलियोंके साथ पशुओंका सा व्यवहार करने की मेरी नितान्त इच्छा न थी। मानवात्माको पशु बनाकर अर्थ-सञ्चय करनेकी नीति मेरी समझमें अत्यन्त घृणास्पद बात जान पड़ने लगी। मैं स्वयं आलसी हूँ, इसलिए आलसी कुलियोंके प्रति भी मेरे हृदयमें दयाका संचार होना स्वाभाविक बात थी। सुस्तीके लिए इनको बेत लगाने देनेकी मेरी कभी इच्छा न होती। ऐसी अवस्थामें मैंने सोचकर देखा कि मेरे-द्वारा अलफ्रेडके कार्यमें

बड़ा नुकसान होगा। इसलिए मैंने जमीन्दारीका कार्य एकदम छोड़ दिया। अलफ्रेड सम्पूर्ण खेतका स्वामी हुआ और मैं पिताके घर तथा नकद सम्पत्तिका।

अफिलिया—तो जमीन्दारीका कार्य छोड़ देनेपर पैतृक दास-दासियोंको दासताकी जंजीरोंसे क्यों नहीं छुड़ा दिया?

अगष्टिन—उस समय मेरा मन इतना उन्नत न था। मैंने सोचा कि इनलोगोंके साथ पशुवत् व्यवहार करके धन न बटोरनेमें ही सब समाप्त हो गया। घरमें रखकर इनलोगोंका भरण पोषण करनेमें कोई दोष न होगा। विशेषतः इन लोगोंमें से बहुतसे मेरे बड़े पुराने दास हैं। उनको मैं बहुत चाहता हूं। वे भी मुझे चाहते हैं। तुम जो इन सब नये आदमियोंको देखती हो ये सब उन्हींकी सन्तान हैं। ये सब किसी प्रकारभी मेरा घर छोड़कर अन्यत्र जाना ही नहीं चाहते। मेरे ही घरमें इन्होंने जन्म लिया और मेरे ही घरमें बढ़े। इसलिए अब उनको मेरी बड़ी ममता हो गयी है। यौवनके प्रारम्भमें मैं कभी-कभी सोचता था कि इस संसार-रूपी कार्य-क्षेत्रमें आश्रयहीन तिनकेकी भाँति जीवन-घटना-स्रोतमें बहता न फिरूंगा। जीवनका कोई लक्ष्य स्थापित करूंगा। देश-संस्कारक होकर जन्म-भूमिसे दासत्व-प्रथा-रूपी इस कलंकको दूर करूंगा। किन्तु अब जान पड़ता है कि संसारमें प्रवेश करनेके पूर्व सभी ऐसी आशायें करते हैं। बादमें प्रतिकूल अवस्था प्राप्त होनेसे युवावस्थाकी सारी आशायें छोड़ देते हैं। संसारके और लोग जैसे अपना जीवन बिताते हैं वैसे ही वे भी रहते हैं।

अफिलिया—तुमने अपने जीवनका यह महत् उद्देश्य क्यों छोड़ दिया? जीवनका उद्देश्य साधनेके लिए अब भी यत्न कर सकते हो।

अगष्टिनने दीर्घ निस्वास छोड़कर कहा—यौवनके प्रारम्भमें ही वह आशालता कट गयी। आशानुरूप जीवन न पा सका। इसीसे सब विषयोंमें भग्नोत्साह हो गया। इस समय केवल संसारके घटना-श्रोतोंमें बह रहा हूँ। पूर्णरूपसे अवस्थाका दास हो गया हूँ। संसारकी वर्तमान अवस्था, वर्तमान घटना जिस ओर बहा ले जाती है उसी ओर बहा चला जाता हूँ। अल्फ्रेड बल्कि मुझसे कहीं अच्छा है। अर्थ-सम्पत्ति-सञ्चयकी चेष्टा ही मानव-जीवनका एकमात्र उद्देश्य है-वह यही समझता है तथा अपने विश्वासके अनुसार वही करता भी है। मैं व्यर्थ ही जीवन-धारणकर रहा हूँ। इस जीवनका कोई उद्देश्य नहीं।

अफिलिया—इस प्रकार लक्ष्य-शून्य जीवन बितानेसे क्या तुम सन्तुष्ट-चित्तसे जीवन बिता सकोगे ?

अगष्टिन—बहिन ! क्या मैं सन्तुष्ट-चित्त हो कालयापन कर रहा हूँ ? इस पाप-जीवनसे मैं स्वयं घृणा करता हूँ। अपने निजके व्यवहार तथा आचरणका मैं स्वयं अनुमोदन नहीं करता। ईश्वर करे मैं शीघ्र ही परलोकमें अपनी उन स्नेहमयी मातासे मिल सकूँ। इस दासत्व-प्रथाके सम्बन्धमें मैं कभी कोई बात नहीं कहता। आज तुमने बड़े आग्रहके साथ मुझसे बार-बार मेरा मत पूछा, इसी से मैंने अपने मनकी बात तुमसे कही। इस देशमें अनेक लोग ऐसे हैं, जो मेरी तरह इस दासत्व-प्रथासे हार्दिक-घृणा करते हैं। इस दासत्व-प्रथाके कारण सारा देश नाशकी ओर अगे बढ़ रहा है। नाना प्रकारके पाप और व्यभिचार हमारे समाजमें घुसते जा रहे हैं। नैतिक वायु दूषित होकर अनेक प्रकारके रोग पैदा कर रही है। इस घृणित-प्रथाके द्वारा केवल दासोंका ही अनिष्ट नहीं हो रहा है वरन् जो लोग अपने घरोंमें दास-

दासियाँ रखे हैं, और उनपर प्रभुत्व कर रहे हैं उनका ही आशातीत अनिष्ट हो रहा है। मानसिक रोग भी शारीरिक रोगकी भाँति संक्रामक है। इन दास-दासियोंकी अवनत अवस्था हम भद्रलोगोंके समाजको संक्रामक रोगकी भाँति दूषित कर रही है। जिस देशमें अथवा जिस जातिके लोगों में किसी एक श्रेणीके लोग नितान्त अवनत अवस्थामें रहते हैं, उस देश अथवा उस जातिके लोगोंकी अन्तरात्मा भी उन अवनत अवस्थावाले लोगोंके स्पर्शसे क्रमशः कलुषित होने लगती है। समाजमें एक श्रेणीके लोगोंकी अवनतावस्था दूसरी श्रेणीके लोगोंको भी अवनतिकी ही ओर खींचती है। किन्तु इन दासोंकी अवनत अवस्था हमारे देशके भद्र श्रेणीके लोगोंके जीवनको जिस परिमाणमें कलुपित कर रही है, अन्यान्य देशोंके निम्न श्रेणीके लोगोंकी अवनत दशा उस देशके भद्रलोगोंकी अंतरात्माको उतना कलुपित नहीं करती। हमारे देशमें इन दासोंको अपने घर रखना पड़ता है। अतएव हमलोगोंको दिन-रात इन्हींके साथ समय बिताना पड़ता है। ये सदा हमलोगोंके घरमें ही रहते हैं, इनलोगोंके निकृष्ट दृष्टांत, इनलोगोंके प्रति मालिकोंका कठोर अत्याचार और अन्याय दिन-रात हमारी सन्तान तथा सन्तति देखती रहती है। अतएव ऐसे निकृष्ट दृष्टान्तका अनिवार्य फल सदा उनके जीवनको स्पर्श करता रहता है, उनके चरित्रमें गठित होता रहता है तथा उनके मनको कलुपित बना देता है। मेरी इवाञ्जेलिन यदि जन्मसे ही देव-प्रकृतिके समान स्वभाव न पाती तो निश्चय ही इन सब दास-दासियोंके संसर्गसे पशु-प्रकृतिकी हो जाती, मानवात्मासे हीन हो जाती। उसका नैतिक जीवन जड़से ही नष्ट हो जाता! संक्रामक रोगसे पीड़ित मनुष्यको घरमें रखनेसे जैसा अनिष्ट हो सकता है, वैसे ही मनुष्यतन-

धारी पशु-समान इन क्रीत-दास-दासियोंको अपने घरमें रखकर मैं अपना अनिष्ट कर रहा हूँ। हमारे देशके राजकर्मचारी लोग इन्हें उत्तम-शिक्षा देनेकी अनिच्छा प्रकट करते हैं। वे कहते हैं कि शिक्षित होते ही इनकी आँखें खुल जायँगी, और शीघ्र ही ये स्वाधीनता प्राप्त करने और उसकी रक्षा करनेके लिए विद्रोही हो जायँगे। शिक्षित होनेपर ये विद्रोही होंगे, अपनी स्वाधीनताकी रक्षा करनेका यत्न करेंगे, इसमें कुछ सन्देह नहीं। किन्तु इन लोगोंको दासताकी बेड़ीसे छुड़ाकर उत्तम शिक्षा न प्रदान करनेसे इन लोगोंके द्वारा जो आशातीत घोर अनिष्ट हो रहा है उस सम्बन्धमें उनका कुछ ध्यान ही नहीं। वस्तुतः व्यवस्था-विदुगण तथा आइन-व्यवसायी लोगोंके कार्य-कलाप-द्वारा मनुष्य-समाजका जो अनिष्ट हो रहा है ऐसा अनिष्ट और किसी श्रेणीके लोगोंसे नहीं होता।

अफिलिया—इस घृणित दासताका चरम फल और क्या होगा? संसारमें क्या सदैव ही इसी प्रकार एक श्रेणी के लोग दूसरी श्रेणीके लोगोंपर प्रभुत्व करेंगे?

अगष्टिन—यह बड़ा कठिन प्रश्न है। इसकी मीमांसा सहज नहीं है। किन्तु इन अत्याचार-निपीड़ित नीचलोगोंकी, दृष्टि क्रमशः स्वाधीनता पर पड़ती जा रही है, दिन पर दिन उनके नेत्र खुलते जा रहे हैं इसमें कुछ संदेह नहीं। शीघ्र ही सामाजिक विप्लव उपस्थित होनेके स्पष्ट लक्षण दिखायी पड़ रहे हैं। पृथ्वीके प्रायः सब देशोंके निम्न श्रेणीके लोगोंमें नव-जीवनका सञ्चार देख रहा हूँ। मेरी माता कभी-कभी कहती थी कि संसारमें सर्वत्र ही एक दिन स्वर्ग-राज्य उपस्थित होगा। तब प्रभु यीशु राज-वस्त्र धारणकर इस संसार में राज्य करेंगे। तब इस संसारमें दुख, कष्ट, यन्त्रणा कुछ

भी न रह जायगी। उस पृथ्वीपर अखंड शान्तिका राज्य स्थापित होगा। वे मुझे जो प्रार्थना करनेको कहती थीं उस प्रार्थनामें भी ऐसे वाक्य थे—हे पिता! तुम्हारा स्वर्ग-राज्य आवे।

कभी-कभी इन दुर्बल क्रीत-दासोंकी दीर्घ, ठंडी निःश्वास, इनका आर्त्तनाद तथा उत्तेजित-भाव देखकर मनमें ऐसा जान पड़ता है कि वह स्वर्ग-राज्य शीघ्र ही इस अत्याचार-पूर्ण पृथ्वीपर आवेगा। गत फ्रांसकी राज्यक्रान्तिकी विशेष आलोचना करनेपर अनायास ही यह पाया जाता है कि अति शीघ्र ही संसारमें साम्यवादिताका अधिकार व्याप्त हो जायगा।

अफिलिया अपने हाथका काम छोड़कर कहने लगीं—अगष्टिन! तुम जैसे सहृदय व्यक्ति हो उससे मुझे विश्वास होता है कि तुम अभी ही स्वर्ग-राज्यमें निवास करते हो।

अगष्टिन—बहिन! मेरी बातें सुननेसे जान पड़ेगा कि मैं स्वर्ग-राज्यमें निवासकर रहा हूँ; किन्तु मेरा कार्य देखकर तुम समझोगी कि मैं घोर नरकमें पड़ा हूँ।

अफिलिया—तुम्हारी ये सब बातें सुनकर मैंने बहुतसे उत्तम शिक्षायें पायीं किन्तु तुमसे एक बात पूछनेकी इच्छा होती है। अल्फ्रेडने कहा है कि इस मानव-समाजमें ए श्रेणीके लोगोंके, पशुओंके समान परिश्रम करके, मनुष्यत्व विहीन न होनेसे दूसरी श्रेणीके लोग उन्नत नहीं हो सकते इसलिए मनुष्य-समाजकी उन्नतिके लिए, जगतकी सभ्य की वृद्धिके लिए, समाजके अधिकांश लोगोंको पशुवत् जी व्यतीत करना पड़ेगा। तुमने यह कहा है, इस प्रकार युक्ति देखनेमें संगत जान पड़ने पर भी प्रकृतिके प.

भ्रमात्मक है। इस मतमें कैसा भ्रम रह गया है उसे समझा कर कहो तो?

अगष्टिन—इस मतका भ्रम दिखलानेके लिए बहुतसी बातें कहनी पड़ेंगी। किन्तु मैं थोड़ेमें ही तुम्हें बतलाता हूँ। वर्तमान समयके दार्शनिकोंमें अनेक लोग, न्यायान्यायका विचार कराते जानेपर कहते हैं कि जिससे अधिक लोगोंको, अधिक समय तक सुख मिले वही एकमात्र न्याय-संगत है। इसी मतके सहारेसे व्यवस्था-विद् पंडित लोग नाना प्रकारके नये-नये विधान बनाते हैं। किन्तु यदि इन लोगोंका यह मत सत्य माना जाय तो यह विश्व-ब्रह्मांड किसी मङ्गलमय परमेश्वर-द्वारा उत्पन्न किया गया है, ऐसा नहीं कहा जा सकता। जिसके द्वारा बहुत लोगोंको सुख होता है वही न्याय-संगत है; ऐसी बात न कहकर जो कुछ न्याय-संगत है, उसी के द्वारा सारे संसारको सुख-शान्ति प्राप्त होगी, यदि ऐसा कहा जाय तो वही प्राकृतिक बात होगी। जिसके द्वारा बहुत लोगोंको सुख-शान्ति हो वही न्याय-संगत है ऐसा कहनेसे जान पड़ता है कि इसमें कोई ऐसी कार्य-प्रणाली नहीं है कि जिसका अवलम्बन करनेसे सारे संसारको सुख-शान्ति प्राप्त हो सके। किन्तु परमेश्वर कल्याण-भवन हैं। उन्होंने सभीको सुख-भोगनेमें समर्थ बनाया है। इसलिए उनका यह अभिप्राय कदापि नहीं हो सकता कि बहु संख्यक लोगोंके सुखके लिए कुछ लोगोंको कष्ट सहना पड़े तथा अपनी हानि करके, उन्हें लाभ कराना पड़े। ईसाकी बात क्या तुम्हें स्मरण नहीं है? उन्होंने कहा था कि "निकृष्टसे निकृष्ट आत्माको भी परमेश्वर नष्ट न होने देगा।" अतएव ईश्वर एक श्रेणीके लोगोंको सुखी करनेके लिए, दूसरी श्रेणी के लोगोंको नष्ट कर रहे हैं, यह बात कदापि संभव नहीं हो

सकती। मनुष्य स्वार्थ-साधनके लिए ऐसे भ्रमात्मक मत का पोषण करता है। वर्तमान सभ्यतामें दोष-गुण दोनों हैं। जिस मार्गका अवलम्बन करनेसे समस्त मानव-समाजमें समानताका अधिकार स्थापित हो सकता है, समस्त मनुष्यों को सुख-शान्ति प्राप्त हो सकती है, वही एकमात्र नैतिक मार्ग है। उस मार्गका अवलम्बन किये विना सभ्यताकी सच्ची उन्नति न होगी। अलफ्रेड जिसे सभ्यताकी उन्नति कहते हैं मैं उसे विलासकी उन्नति, पापकी उन्नति तथा प्रतारणाकी वृद्धि समझता हूँ। क्या तुम देखते नहीं हो कि वर्तमान सभ्यताकी उन्नतिके साथ ही साथ अनेक प्रकारके नये-नये पापों, नयी-नयी धूर्तताओं तथा विलास-प्रियताकी भी उन्नति हो रही है। वाणिज्य-वृद्धिके साथ-साथ नये-नये ठगहारीसे भरे हुए उपाय अवलम्बित हो रहे हैं। धर्माधिकरणमें न्यायानुकूल विचार नहीं रहा। कानून-व्यवसायी लोग अपने वाग-जालमें फँसाकर सत्यको झूठ और झूठको सत्य प्रमाणित कर रहे हैं। व्यवस्थापक लोग अनेक प्रकार के कानून बनाकर सत्य-न्यायकी जड़में कुठारा घात कर रहे हैं। आइन-व्यवसायियों तथा व्यवस्थापक सभाके सभ्यों-द्वारा देशका जितना अनिष्ट हो रहा है उतना अनिष्ट तो समाजमें रहनेवाले चोर और डाकुओंके द्वारा भी नहीं होता। मानव-प्रकृति प्रकृति-निर्दिष्ट स्वाभाविक नियमोंका अनुसरण करती है। इसलिए कोई नियम बनाकर उनका चरित्र उत्तम तथा उन्नत नहीं बनाया जा सकता। जो लोग नये-नये नियम बनाकर समाजका मंगल-साधन करनेकी इच्छा करते हैं, उनसे बढ़कर समाजका अनिष्ट करनेवाला दूसरा कोई नहीं है।

अगष्टिनकी यह बात समाप्त होते ही भोजनकी घंटी बजी। सब लोग भोजन करने गये।

भोजनके समय मेरी सेन्टक्लेयरने प्रूकी मृत्युकी घटना का उल्लेखकर कहा—अफिलिया बहिन! मैं समझती हूँ कि तुम हम लोगोंको निरे पशु ही समझती हो?

अफिलिया—मैं तुम्हारे देशके सभी लोगोंको पशु नहीं समझती। किन्तु प्रूके प्रति जैसे व्यवहारकी बात सुनी है उसे तो निश्चय ही पशुवत् व्यवहार समझती हूँ।

मेरी—बहिन! तुम जानती नहीं हो। इस गुलाम-जाति में कुछ ऐसे दुष्ट हैं जो किसी भी तरहसे वशमें नहीं किये जा सकते। ऐसे नीचोंका मर जाना ही अच्छा है। मुझे तो ऐसे लोगोंपर रत्ती भर भी दया नहीं आती। ये यदि सुधरनेकी चेष्टा करें, अच्छा व्यवहार करें, मालिक जिस रीतिसे चलनेको कहता है वैसे चलें तो फिर मारसे मर जाने का अवसर ही न आवे।

इवा—माँ तुम जानतीं नहीं। प्रू शोक और कष्टसे बड़ा दुख पा रही थी। वही मानसिक दुख भुलानेके लिए शराब पीती थी।

मेरी—तुम वह सब मनका दुख रहने दो। दास-दासी और मानसिक दुख! ये सब बातें मुझे अच्छी नहीं लगतीं। अपनी शारीरिक अस्वस्थतासे मैं कितना दुख भोग रही हूँ। प्रूको कौन सा कष्ट था। मैं प्रति दिन उससे सहस्र गुना अधिक कष्ट पाती हूँ। मैं तो शराब नहीं पीती। असल बात यह है कि यह जाति ही बड़ी खराब है। इन लोगोंमें किसी-किसीको तो सैकड़ों बेत लगानेपर भी अच्छे रास्तेपर नहीं ले आया जा सकता। मेरे पिताके एक गुलाम था, वह बड़ा सुस्त था। काम करनेके भयसे भागकर वह दलदलों में जाकर पड़ा रहता, चोरी करता तथा और भी कई कुकर्म करता था। इस आदमीने कई बार बेत भी खाये किन्तु

किसी तरह उसका स्वभाव न सुधरा। अन्तमें एक दिन बेतों की मारसे वह चलनेमें असमर्थ हो गया। फिर भी घुटनोंके बल चलकर दलदलमें जा पहुँचा और वहीं मर गया। मेरे पिता तो दास-दासियोंपर सदा दया करते हैं, तो भी ऐसी घटना हो ही गयी।

सेन्टक्लेयर—मैंने एक बार एक बड़े बदमाश आदमीको अपने वशमें किया था। कितने ही मालिक, कितने ही खेतों के परिदर्शक उसे वशमें करनेसे हार मान चुके थे। मैंने बड़ी सरलतासे उसे वशमें किया।

मेरी—तुमने भी क्या इस जन्ममें बदमाश दासको वशीभूत किया था? जो भी हो, तुमने भी एक बार ऐसा कार्य किया है, यह सुनकर मैं बड़ी प्रसन्न हुई। भला बतलाओ तो यह कब किया था?

सेन्टक्लेयर—मैंने जिस व्यक्तिको वशमें किया था, वह बड़ा बलवान था। देखनेमें वह एक दैत्य ही ज्ञान पड़ता था। वह मनुष्य अत्यन्त स्वाधीनता-प्रिय और तेजस्वी था। किसीके सामने सिर न झुकाता वह आफ्रिकाके ठीक एक सिंहकी भाँति था। इसे लोग सीपियो कहकर पुकारते थे। क्रमशः जिन कई आदमियोंने इसे खरीदा था उनमेंसे किसीने भी इसे अपने वशमें न कर पाया था। अनेकानेक खेतोंके परिदर्शक लोग उसके पैरोंकी ठोकर खा चुके हैं। अन्तमें अलफ्रेडने इसे खरीदा। अलफ्रेडको विश्वास था कि वह उसे ठीक कर लेंगे। किन्तु एक दिन सीपियो उनके खेतके परिदर्शकको घायलकर भूमिमें पटककर जंगलमें चला गया। उसी समय मैं अलफ्रेडसे मिलने गया था। मेरे खेतका अंश छोड़ देनेपर यह घटना उपस्थित हुई। इस घटनासे अलफ्रेड अत्यन्त कुपित हुए। मैंने उनसे कहा

कि तुम्हारे ही दोषसे ऐसा हुआ है। मैं इसे सहज ही वशमें कर सकता हूँ। इस विषयमें मैंने अलफ्रेडके साथ बाजी लगायी। निश्चय हुआ कि उसको पकड़कर अपने वशमें कर लेनेके उपलक्षमें अलफ्रेड उसे मेरे हाथ सौंप देंगे। इसे पकड़नेके लिए छ-सात आदमी शिकारी कुत्ते साथ लेकर चले। हिरनका शिकार करनेके लिए मनुष्य जिस प्रकार उत्तेजित हो उठता है, मनुष्यका शिकार प्रचलित होनेपर भी उसी प्रकारसे उत्तेजनाका भाव उत्पन्न हो जाता है। मैं स्वयं भी इस विषयमें कुछ उत्तेजित हो गया था। किन्तु मेरा उद्देश्य यह था कि पकड़ लेनेपर शिकारियोंके हाथसे इसकी रक्षाकर इसे अपने वशमें करूँगा। इस प्रकार मैं भी कुत्ते तथा बन्दूक लेकर उसे पकड़नेकी चेष्टा करने लगा। किन्तु क्या कहूँ, उस व्यक्तिने असाधारण वीरत्व प्रकाशित करते हुए, खाली हाथ छ-सात सशस्त्र व्यक्तियोंके साथ युद्ध किया तथा केवल घूँसोंसे ही तीन शिकारी कुत्तोंको मार गिराया। अन्तमें मेरे साथीने उसपर बन्दूक छोड़ी। बन्दूककी गोली लगनेपर वह मेरे पैरके पास गिर पड़ा। उसके शरीरसे अविरल रक्त-प्रवाह बहने लगा। ऐसी अवस्थामें वह मेरी ओर आँख खोलकर देखने लगा। उन नेत्रोंमें वीरताकी ज्योति तथा निराशाका अन्धकार दोनों ही दिखायी पड़ रहे थे। मैंने अलफ्रेडके आदमियोंको उसका प्राण लेनेका निषेध किया। तथा उसके पश्चात् उसे अलफ्रेडसे खरीदकर घर ले आया। किन्तु पन्द्रह दिन बीतते न बीतते वह मनुष्य मेरे इतना वशीभूत हो गया कि मेरे लिए प्राण देनेमें भी कुण्ठित न होता।

मेरी—तुमने ऐसा क्या किया जिससे वह सहज ही तुम्हारे इतना वशीभूत हो गया?

सेन्टक्लेयर—मुझे अधिक कुछ नहीं करना पड़ा। मैं उसे अपने साथ लेआकर अपने कमरेमें ले गया। वहाँ उसे एक अच्छे विस्तरेपर सुला दिया। उसके शरीरके जिन स्थानोंमें घाव लगे थे उन्हें अच्छी तरहसे बाँध दिया एवं उसके अच्छे होने तक मैं स्वयं उसकी सेवा-शुश्रूषा करने लगा। जब वह अच्छा हो गया तब मैंने उसके हाथ दासत्व-मुक्ति-पत्र देकर कहा कि जहाँ तुम्हारी इच्छा हो, जा सकते हो।

अफिलिया—मुक्ति पाकर क्या वह चला गया?

सेन्टक्लेयर—नहीं, वह गया नहीं। उसने उसी समय कागज फाड़कर फेंक दिया और मुझे छोड़कर जानेसे अस्वीकार किया। वैसा साहसी और विश्वस्त दास मैंने और नहीं देखा। उसकी सत्य-प्रियता और चरित्रकी दृढ़ता किसी प्रकार भी विचलित नहीं होती थी। कुछ दिन पश्चात् उस व्यक्तिने खीष्ट-धर्म स्वीकार किया। उसके प्रत्येक कार्यसे बाल-सुलभ नम्रता प्रकट होती थी।

एक बार हमारे देशमें भयानक अतिसार प्रारम्भ हुआ। मैं भी कुछ ही दिनोंमें इस रोगसे पीड़ित हुआ। मेरे बचने-की आशा न देख आत्मीय-जन तथा दास-दासी सभी मुझे छोड़कर भाग गये, किन्तु सीपियो निर्भयतासे मेरी सेवा-शुश्रूषा करने लगा। उसीके यत्न और शुश्रूषासे मैं पुनर्जीवित हुआ। किन्तु दुर्भाग्य-वश मेरे आरोग्य लाभ करनेके कुछ दिन बाद ही सीपियोको भी अतिसार हुआ। किसी प्रकार भी मैं उसे बचा न सका। उसकी मृत्युसे मुझे जितना दुख हुआ उतना दुख मुझे और कभी न हुआ।

सेन्टक्लेयर जिस समय यह कहानी कह रहे थे, उसी समय इवा धीरे-धीरे आकर उनके पास खड़ी हो गयी थी। वह बड़ी उत्सुकतासे, आँखें फाड़कर, एकटक पिताके मुखकी

ओर देख रही थी। सेन्टक्लेयरकी बात समाप्त होते ही वह दोनों हाथोंसे अपने पिताका गला पकड़कर उससे लिपट गयी और रोने लगी। उसका सारा शरीर कॉंपने लगा। उसे इस प्रकार रोते देखकर सेन्टक्लेयरने कहा—इवा, मेरी लक्ष्मी, तुम्हें क्या हुआ? तथा उसी समय अफिलियाकी ओर देखकर कहा—इवाके सामने ये बातें करना अच्छा नहीं इवा बहुत डरती है।

तब इवा कुछ आत्म-संयमकर बोली—नहीं बाबा मुझे भय नहीं लगता, किन्तु ये बातें मेरे हृदयमें धंसी जाती हैं।

सेन्टक्लेयर—तुम क्या कहती हो इवा!

"क्या कहती हूँ, यह मैं आपको समझा नहीं सकती बाबा! मैं बहुत सी बातें सोचती हूँ। इसके पश्चात् कदाचित् तुम्हें समझा सकूँगी।"

"बेटी जितना चाहो तुम सोचो, किन्तु रोकर अपने पिताको कष्ट मत दो। यह देखो तुम्हारे लिए कैसा सुन्दर सेब लाया हूँ।"

इवा पिताके हाथसे सेब लेकर कुछ हँसी, किन्तु इस समय तक भी उसके ओंठ कॉंपते थे। सेन्टक्लेयर उसका हाथ पकड़कर उसे बरामदेमें ले गये और वहाँ अनेक प्रकार की चीजें दिखाकर उसे भुलवाने लगे। कुछ देरके बाद दोनोंके हँसनेकी ध्वनि सुनायी पड़ी।

बड़े लोगोंकी बातें करते-करते हम गरीब टामको भूले जाते हैं। किन्तु पाठक यदि आप हमारे साथ इस अस्तबल की एक कोठरीमें प्रवेश करें तो टामका कुछ पता पावेंगे। टामकी यह छोटी कोठरी अत्यन्त स्वच्छ है। उसमें एक बिस्तरा है, एक लौह-कुर्सी एवं एक छोटासा टेबुल है। उस पर एक बाइबिल और एक संगीतकी पुस्तक रखी हुई है।

कुछ नहीं कहा। दूसरे समय, संध्याकी सैरकर आकर उन्होंने टामकी चिट्ठी लिखदी। चिट्ठी उसी समय डाकमें छोड़ दी गयी।

इधर अफिलिया गृह-कार्यमें व्यस्त रहीं। दासी डीना से लेकर दासोंके छोटे बच्चे तक कहते थे कि मिस अफिलिया बड़ी विचित्र स्त्री हैं। अर्थात् उनके मनकी नहीं हैं।

उच्च श्रेणीके दास-दासी याने अडाल्फ, जेन तथा जोरा कहतीं कि मिस अफिलिया भद्र-महिला नहीं हैं। क्योंकि बड़े आदमियोंकी चाल-ढाल उनमें कुछ भी नहीं है। मिस अफिलिया सेन्टक्लेयरकी गोत्रजा हैं यह सोचकर उन्हें बड़ा आश्चर्य होता था। मेरी कहती कि अफिलिया-जीजी जिस प्रकार दिन-रात काममें लगी रहती हैं, उसे देखकर लोगोंको थकावट मालूम होने लगती है।

तेईसवाँ परिच्छेद

टप्सी

एक दिन प्रातःकाल मिस अफिलिया गृह-कार्योंका निरीक्षणकर रही थीं कि इसी समय सेन्टक्लेयरने सीढ़ीके नीचेसे उनको पुकारकर कहा-बहिन! एक बार नीचे आओ। तुम्हें एक नयी वस्तु दिखाऊँगा।

अफिलियाने नीचे आकर पूछा--कौन वस्तु दिखाते हो?

"यह देखो तुम्हारे लिए एक नयी वस्तु खरीदी है।" यह कहकर सेन्टक्लेयरने एक आठ वर्षकी निग्रो बालिकाको पकड़कर उठाया। बालिका अत्यन्त काली थी। वह सेन्टक्लेयरके घरमें घुसकर अनेक प्रकारकी वस्तुओंको देखकर चकित हो चञ्चल नेत्रोंसे चारों ओर देखने लगी। अत्याचारसे सतायी हुई नीचाशयता और दुष्ट-बुद्धि जिस प्रकार बाहरी गम्भीर-भावके आवरणसे ढकी रहती है, ठीक उसी प्रकार बाहरी गम्भीर-भाव तथा विनय उसके मुख-मण्डलपर मुद्रित था। वह बड़ा फटा-पुराना कपड़ा पहिने थी। शरीर दुबला-पतला था। मिस अफिलियाने उसे देखकर सेन्टक्लेयर-से कहा—इसे तुम किस लिए खरीदकर ले आये हो?

"तुम इसे सद्‌शिक्षा देकर सच्चरित्र-बनाओगी इसलिए ही इसे ले आया हूं। इसका नाम टप्सी है। यह नाचना-गाना बहुत अच्छा जानती है।" यह कह सेन्टक्लेयरने मिस अफिलियाको दिखाकर टप्सीसे कहा—टप्सी! यह तेरी नयी मालकिन हैं। मैं तुम्हें इन्हींके हाथ अर्पण करता हूं। देख, इनके साथ अच्छा व्यवहार करना। टप्सीने दुष्ट बुद्धिसे आच्छादित गम्भीर-भाव धारणकर कहा—जो आज्ञा। सेन्टक्लेयरने फिर कहा—तुम्हें सच्चरित्र बनना होगा। टप्सीने कहा—जो आज्ञा।

मिस अफिलियाने ये सब बातें सुनकर कहा—अगस्टिन, तुम्हारा यह घर दास-दासी एवं उनके बालक-बालिकाओंसे भरा हुआ है। एक कमरेसे दूसरे कमरेमें जानेके समय दो-एकके मस्तकपर पैर रखकर जाना पड़ता है। सवेरे सोकर उठते ही देखती हूं कि दो-एक दरवाजेके पास पड़े हैं। दो-एक टेबुलके नीचेसे सिर निकाल रहे हैं। कोई सीढ़ीपर

पड़ा हुआ है। इतने दास-दासियोंसे तथा बालक-बालिकाओंसे घर भरा हुआ रहने पर भी इसे क्यों ले आए?

अगाष्टिन—बहिन! तुम इसे सद्‌शिक्षा देकर सच्चरित्र बनाओगी, इसीलिए ले आया हूं। प्रति दिन तुम मुझे उत्तम शिक्षा देनेको कहती हो, इसीसे एक नवीन बालिका ले आकर तुम्हें सद्‌शिक्षा देनेका सुयोग कर दिया।

अफिलिया—मैं इसे नहीं चाहती। इस समय मेरे पास इतना काम है कि अन्य किसी विषयपर मैं विचार नहीं कर सकती।

अगाष्टिन—बहिन! मैं समझता हूं, तुम्हारा पूर्ण खीष्ट-धर्म केवल यही है कि तुमलोग धर्म-प्रचारके लिए एक-सभा नियत करती हो। पश्चात् वह सभा दो-एक बेचारे गरीबोंको (जो कि अर्थाभावसे लिख-पढ़ नहीं सकते) पादरी बनाकर विदेश भेजती है। इन सब पादरी बेचारोंको दूर देशमें रहकर चिल्लाते-चिल्लाते वहीं मर जाना पड़ता है। तुम स्वयं दो-एक आदमियोंको सद्‌शिक्षा प्रदानकर खीष्ट-धर्ममें दीक्षित करो, तब मैं समझूंगा कि तुममें सच्चा धर्म-भाव है। पर तुम ऐसा न करोगी। तुम लोग परिश्रम करनेमें सदा कुण्ठित रहती हो।

अफिलिया—मैंने उस विचारसे कुछ नहीं कहा था। इसे सद्‌शिक्षा दे सकने पर अवश्य ही मैं एक धर्म-प्रचारकका कर्त्तव्य पालन करूंगी। किन्तु तुम्हारे घरपर तो इतने असंख्य दास-दासियोंकी सन्तानें रही हीं, सद्‌शिक्षा देनेके लिए इस नयी बालिकाको ले आनेका क्या प्रयोजन था।

अगाष्टिन—बहिन! यह तो तुमसे एक हँसी की थी। तुम इसे भली शिक्षा दोगी, केवल यही सोचकर मैं इसे नहीं खरीद लाया। मेरा पड़ोसी एक साहब है। वे स्त्री-पुरुष

दोनों बड़े शराबी हैं। उन्हींके घर यह बालिका थी। दिन-रात वे इसे बेतसे पीटते थे और यह चिल्लाती थी। कहीं आते-जाते समय मैं बराबर इसका चिल्लाना सुनता था। इसीसे इसको खरीद लाया। बालिकाको देखनेसे ज्ञात होता है कि इसमें कुछ बुद्धि है? देखो, तुम इसे सदुपदेश देकर मनुष्य बना सकती हो कि नहीं। मैं इसे एक दम तुम्हारी ही सम्पत्ति बना दूँगा। तुम अपने उत्तर-देशका खीष्टधर्म इसे सिखाओ। मुझमें तो शिक्षा देनेकी शक्ति ही नहीं। तुम चेष्टा करनेपर कदाचित् कुछ कर सको।

अफिलिया—अच्छा, मैं अपनी शक्तिके अनुसार चेष्टा करूँगी। कोई पकी हुई सड़ी वस्तु लेनेके लिए जिस प्रकार अनिच्छापूर्वक लोग आगे बढ़ते हैं, उसीप्रकार मिस अफिलियाने उस लड़कीके पास जाकर कहा—इसका शरीर कितना मैला है, इसका आधा शरीर तो एकदम खुला है। इसे नीचे ले जाकर स्नान करा तथा कपड़ा पहिनाकर तब ऊपर ले आना पड़ेगा। मिस अफिलियाके उस बालिकाको रसोई घरके पास ले आनेपर दीनाने कहा—यह मेरी समझमें नहीं आता कि मिस्टर सेन्टक्लेयरने क्यों इस बालिकाको खरीदा है। मैं इसे अपने पास न रहने दूँगी। जेन तथा रोजाने बड़ी विरक्ति दिखलाते हुए कहा—अपने पास कभी आने तक न दूँगी। और एक निग्रो खरीदने की क्या आवश्यकता थी, कुछ समझमें नहीं आता। रोजा अँग्रेजके वीर्य से एक निग्रो दासीके गर्भसे उत्पन्न हुई थी। उसका वर्ण काला न था। किन्तु दीना काली थी। इसलिए रोजाके "निग्रो" कहकर इस बालिकाको पुकारनेपर उसने क्षिप्त हो कर कहा—तुम गोरी हो क्या? तुम न तो काली ही हो और न

पूर्ण-गोरी हो ? मैं चाहे काली ही रहूँ, पर आधी काली आधी गोरी नहीं होना चाहती ।

मिस अफिलियाने देखा कि कोई उस बालिकाका शरीर साफ़ कर देना नहीं चाहता । इसलिए अगत्या खीष्ट-धर्मके अनुरोधसे बाध्य होकर उन्होंने स्वयं ही उसका शरीर धोना आरम्भ किया । अत्यन्त अनिच्छासे जेनने उनके इसकार्यमें कुछ सहायता दी ।

चिर अत्याचारसे तथा लापरवाही और अनादरसे पाली निग्रो सन्तानका शरीर पहिले-पहिल यत्न सहित धोकर स्वच्छ बनानेकी चेष्टा कोई करता है, उस समय उस संतानके शरीरके नाना स्थानोंसे किस प्रकार मैल निकलती है, उसका उल्लेख यदि इस स्थानपर किया जाय तो सभ्यता और सुरुचिकी सीमाका अवश्य ही उल्लंघन करना पड़ेगा । वस्तुतः इस संसारमें अनेक नर-नारियोंको ऐसी ही मलिनतामें निवास करना पड़ता है । मृत्यु-पर्यन्त उनका शरीर ऐसी मलिनतासे पूर्ण रहता है कि दूसरे लोग उसे सुनकर भी घृणा प्रकट करेंगे ।

पाठक-पाठिकाओंको इसपर आश्चर्य होता होगा कि मिस अफिलियाने उच्च-कुलोत्पन्ना होकर भला कैसे, ऐसी मलिनतासे पूर्ण शरीरको अपने हाथसे साफ़ किया । मैंने पहिले ही कह दिया है कि मिस अफिलिया कर्त्तव्य-परायण हैं । विवेककी आज्ञा वे कभी भंग नहीं करती । इसलिए इच्छा न रहने पर भी कर्त्तव्य तथा विवेकके अनुरोधसे वे अनायास ही अपने मान, अभिमान तथा अपनी घृणा-इत्यादि सभीका विसर्ज्जन कर सकती हैं । विशेषतः इस लड़कीके कंधों तथा पीठपर बेंतोंके सैकड़ों घाव देखकर उनका हृदय और भी पिघल गया था ।

जेन नामकी दासी इसे धोते-धोते कहने लगी—इधर देखिये न इसके पीठपर कितने वेतोंके चिह्न हैं। इसे लेकर केवल यंत्रणा भोगनी होगी, निग्रो-बालकोंसे इसीलिए घृणा करती हूं। समझमें नहीं आता कि मालिक इसे क्यों ले आये हैं।

मिस अफिलियाने बालिकाका शरीर साफ कर नया वस्त्र पहिननेको दिया। बालिकाके नये वेशमें सुसज्जित होने पर मिस अफिलिया बोल उठी कि अब यह देखनेसे कुछ-कुछ खृष्टधर्मावलम्बिनी जान पड़ती है। फिर उसकी शिक्षा-प्रणाली मन ही मन निर्धारितकर उससे पूछने लगी-टप्सी तेरी अवस्था कै वर्षकी है?

टप्सी—मैं नहीं जानती।

अफिलिया—तू कै वर्ष की है, नहीं जानती? किसीने तुझे तेरी अवस्था नहीं बतलायी। तेरी माता कहाँ है।

टप्सी—मेरी माता कभी थी ही नहीं।

अफिलिया—मा थी ही नहीं! यह कैसी बात है? तू कहाँ पैदा हुई थी।

टप्सी—मैं कभी पैदा हुई ही नहीं।

अफिलिया—तू मेरी बातोंका ऐसा उत्तर क्यों देती है। मैं क्या तेरे साथ खिलवाड़ करती हूं? बतला, तू कहाँ जन्मी थी और तेरे माता-पिता कौन हैं?

टप्सी—मेरा कभी भी जन्म नहीं हुआ। मेरे पिता अथवा माता कोई था ही नहीं। एक दास-व्यवसायीने कई और काले लड़कोंके साथ मुझे पाला है। बूढ़ी सू मौसी हम लोगोंको पालती थी।

इसी समय जेन, 'ही, ही,' कर हँसते-हँसते कहने लगी-अफिलिया मालकिन, आप जानती नहीं, बकरीके बच्चोंकी

भाँति दास-व्यवसायी लोग एक साथ कई बच्चोंको खरीद लेते हैं, फिर कुछ दिन उनका पालन-पोषण करते हैं। कुछ बड़े होनेपर बाज़ार में बेच देते हैं। इसे कदाचित् दो-तीन वर्षकी अवस्थामें खरीदा था, इसीसे यह माँ-बापके विषयमें कुछ नहीं जानती।

अफिलिया—तू अपने पूर्व मालिकके यहाँ कै वर्ष रही?

टप्सी—नहीं जानती।

अफिलिया—एक वर्ष या दो वर्ष?

टप्सी—यह नहीं जानती।

जेन—यह तो गिनती भी नहीं जानती। वर्ष किसे कहते हैं, यह नहीं समझती। इसीसे अपने आप कुछ नहीं बतला सकती।

अफिलिया—तूने ईश्वरका नाम कभी सुना है?

टप्सी यह सुनकर चकित हो गयी और पूर्वकी भाँति दाँत बाहर निकालकर हँसने लगी।

अफिलिया—तू जानती है कि तुझे किसने बनाया है?

टप्सी—किसीने नहीं बनाया। मुझे जान पड़ता है कि मैं अपने आप ही इतनी बड़ी हो गयी।

अफिलिया—तू सीना-पिरोना जानती है? तू अपने पूर्व मालिकके यहाँ क्या करती थी।

टप्सी—पानी ले आती थी, बर्त्तन माँजती थी; छूरी-काँटा साफ करती थी।

अफिलिया—तेरे मालिक-मालकिन भले आदमी थे।

टप्सी—(अफिलियाकी ओर एक टक देखकर) जान पड़ता है, अच्छे थे।

इसी प्रकार वार्तालाप हो ही रहा था कि सेन्टक्लेयरने अफिलियाको पीछेसे पुकारकर कहा—बहिन! इसे शिक्षा

देनेमें विशेष सुभीता होगा, इसके मनमें कोई पूर्व-संस्कार नहीं है। इसका मन बिलकुल सादे कागजकी भाँति स्वच्छ है। तुम्हें कोई जड़ीभूत संस्कार दूर न करना पड़ेगा।

मिस अफिलियाकी शिक्षा-प्रणाली, उनकी कार्य-प्रणालीकी भाँति एक निर्दिष्ट-नियम-बद्ध थी। प्रायः एक सौ वर्ष बीते होंगे जब कि न्यू इँग्लैंडमें ऐसी ही शिक्षा-प्रणाली प्रचलित थी। यह शिक्षा-प्रणाली पाँच नियमोंसे सम्बद्ध है। (१) छात्रको जो सिखाया जाय, उसे उसपर ध्यान देना भी सिखाया जाय। (२) प्रश्नोत्तरोंके द्वारा यह सिखाना कि ईश्वरने इस जगतको उत्पन्न किया है, और वही उसका पालन करता है। (३) पुस्तक-पाठ। (४) सीना-पिरोना सिखाना। (५) असत्य-भाषणपर बेत लगाना। मिस अफिलियाने यह स्थिर कर लिया है कि टप्सीको इन्हीं पाँचों नियमोंके अनुसार शिक्षा प्रदान करूँगी। सेन्टक्लेयरके घर भरमें सब लोग टप्सीको मिस अफिलियाकी लड़की कहकर पुकारने लगे। अत्याचार-निपीड़ित जातिमें परस्पर सहानुभूति नहीं रहती, इसीलिए सेन्टक्लेयरके घरमें रहने वाले दास-दासियोंमें से कोई टप्सीको स्नेह-पूर्ण नेत्रोंसे भूलकर भी नहीं देखता, कोई उसकी देख-भाल नहीं करता। वे तो इसे एक नयी आफत समझते हैं। इससे मिस अफिलिया उसे अपने निजके सोनेके कमरेमें रखती है। टप्सीको लेकर मिस अफिलिया प्रति-दिन कितनी यंत्रणायें भोगती हैं, एवं उसके सम्बन्धमें उन्होंने कितनी सहिष्णुता धारण की है; कितना त्याग स्वीकार किया है, उसे सुनकर पाठक-गण विशेषतः पाठिका गण समझ सकेंगे कि एक शिक्षिता अंगरेज-रमणी कितनी कर्त्तव्य-परायणा होती है।

प्रथम दिन मिस अफिलिया टप्सीको, "बिछौना कैसे

माफ़ किया जाता है" इस विषय-सम्बन्धी गूढ़-तत्त्व समझाने लगीं।

अफिलिया—टप्सी, सुन्दर बिछौना कैसे बिछाया जाता है, आज तुझे यही सिखाऊँगी। मैं जैसा बिछौना बिछानेको कहूँ, वैसाही बिछाना।

टप्सी—(बड़े उत्साहसे) जो आज्ञा।

जिस समय अफिलिया टप्सीको इस प्रकार बिछौना बिछानेकी शिक्षा दे रही थीं, उसी समय टप्सीने उनका फीता और दस्ताना चुराकर अपने जामेके घेरेमें रख लिया। इसके पश्चात् अफिलियाने टप्सीसे कहा कि मैंने तुझे बिछौना बिछाना सिखा दिया, अब तू बिछा, देखूँ। टप्सी उसी समय बड़ी चतुराईके साथ उसे ठीक करने लगी। यह देखकर अफिलियाको अपार आनन्द हुआ, किन्तु दुर्भाग्यसे टप्सीके जामेकी बाँहमें से हठात् फीता निकल पड़ा। उसे देखकर अफिलिया बोल उठीं—अरी, तू बड़ी दुष्ट है, तूने चोरी करना सीखा है। यह कहकर उन्होंने फीता खींचकर बाहर निकाल लिया। किन्तु टप्सी इससे कुछ भी अप्रतिभ न हुई। वह विलक्षण गम्भीर-भाव धारण कर अम्लान मुख हो खड़ी रही। एवं कुछ समयके उपरान्त इस प्रकार कहने लगी मानो कुछ हुआ ही नहीं—"मेम साहबका फीता मेरी बाँहमें कैसे आ गया।"

अफिलिया—टप्सी, तू झूठ बोलती है। तूने अवश्य फीता चुराया है।

टप्सी—जी, पहिले मैंने कभी भी ऐसा फीता नहीं देखा था। यह मैं निश्चय-पूर्वक कह सकती हूँ।

अफिलिया—टप्सी, तू जानती नहीं कि झूठ बोलना बड़ा पाप है।

टप्सी—मेम साहब, मैं कभी झूठ नहीं बोलती। मैं सत्य ही कहती हूँ।

अफिलिया—टप्सी, तू झूठ बोलती है। मैं तुझे बेत लगाऊँगी।

टप्सी—दिन भर बेत मारते रहनेपर भी मैं और कुछ नहीं कह सकती। मैंने यह फीता और कभी नहीं देखा। आपने इसे बिछौनेपर रख दिया था, इसीसे यह मेरी बाँहमें घुस गया।

टप्सीके बार-बार ऐसी झूठी बात कहनेसे अफिलियाने अत्यन्त क्रुद्ध हो उसे पकड़कर कहा—मेरे सामने फिर कभी ऐसी झूठी बात मत कहना। बालिकाका हाथ पकड़तेही उसके जामेकी दूसरी बाँहसे दस्ताना बाहर निकल आया। दस्तानोंके बाहर निकलते ही अफिलियाने कहा—अब भी कहेगी कि चोरी नहीं की। यह लो, मेरे दस्ताने भी चुरा लिये थे। तब टप्सीने दस्तानोंका चुराना स्वीकार किया। किन्तु फीतेकी चोरी फिर भी स्वीकार न की। इसपर मिस अफिलियाने कहा—टप्सी! तुम सब स्वीकार करो। यदि ऐसा करोगी तो इस बार बेत नहीं लगाऊँगी। इसपर टप्सीने दस्ताना और फीता दोनोंका चुराना स्वीकार किया, और विशेष अनुताप प्रकट करने लगी। मिस अफिलियाने कहा—मुझे जान पड़ता है कि तूने उधरकी और-और चीजें भी चुरायी होंगी। कल मैंने तुझे घरमें इधर-उधर आने जाने दिया था। बोलो और कुछ चुराया है? सत्य बात कहने पर मैं बेत नहीं लगाऊँगी।

टप्सी—मेमसाहब! मैंने इवाके गलेका हार चुराया है।

अफि०—ओह दुष्ट! और क्या चुराया है?

टप्सी—मैंने रोजाके कानोंकी बालियां चुरायी हैं।

अफि०—तो जा जो कुछ लिया है, वह सब मेरे पास लेआ।

टप्सी—वह ले कैसे आऊँ! सब जला डाला है।

अफि०—जला डाला है? यह क्यों? ये सब झूठी बातें हैं। जा, सब ले आ। नहीं तो फिर तुझे बेत लगाऊँगी।

तब टप्सीने रोते-रोते कहा—अब सब जला डाला है, कैसे ले आऊँगी?

अफि०—वह सब जला क्यों डाला?

टप्सी—मैं बड़ी दुष्ट हूँ, इसीसे ऐसा किया है।

इसी समय इवाने अकस्मात् उस घरमें प्रवेश किया। उसका हार उसके गलेमें पड़ा था। मिस अफिलियाने पूछा—इवा! तुमने हार कहां पाया?

इवा—यह क्या, यह हार तो बराबर मेरे गलेमें ही था।

अफि०—कल तुम्हारा हार तुम्हारे गलेमें ही था?

इवा—हाँ बुआ। सारी रात मेरे गलेमें था। मैं सोने जानेके समय इसे उतारना भूल गयी थी।

यह बात सुनकर मिस अफिलिया अवाक् हो गयी। विशेषतः उसी समय रोजाके अपने बालियाँ पहिने हुये, उस घरमें प्रवेश करनेपर वह अत्यन्त चकित हुई एवं निराशा प्रकट करती हुई कहने लगी—इस लड़कीको लेकर मैं क्या करूँ? तब फिर उन्होंने टप्सीको बुलाकर पूछा—टप्सी! तूने जो चीजें नहीं चुरायी, उन्हें चुराया है, क्यों कहा?

टप्सी—आपने मुझे जो स्वीकार करनेको कहा, वही मैंने स्वीकार किया है।

अफि०—किन्तु तुम जो अपराध नही करती, उसे तो स्व कार करनेको कहा नहीं ! ऐसा करना भी झूठ बोलना है।

टप्सीने (बड़ा सरल-भाव धारण कर) कहा—"ऐसी बात है ?"

तब रोजाने, तीव्र दृष्टिसे उसकी ओर देख कर, कहा—यह क्या सच्ची बात कहना जानती है ? यदि मैं इसकी मालकिन होतीतो मारे बेतोंके इसका चमड़ा खींच लेती।

यह बात सुनकर इवाने गम्भीरतासे कहा—रोजा फिर तुम ऐसा मत कहना। ऐसी बातें मुझे पसंद नहीं।

रोजाने कहा—मिस इवा तुम बड़ी दयालु हो। निग्रो लोगोंके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिये; यह तुम नहीं जानती। ये लोग केवल बेत लगानेसे ही ठीक हो सकते हैं।

इवाने क्रोधसे आँखें लालकर कहा-रोजा तुम चुप रहो। फिर कभी ऐसी बात मुहँपर मत लाना।

तब रोजा सिटपिटा गयी। और "मिस इवाने अपने पिताकी प्रकृति पायी है" कहती हुई बाहर चली गयी।

इवा, टप्सीके सामने जा खड़ी हुई। इन दोनो बालिकाओंके आमने-सामने खड़ी होने पर, उन दोनोंकी भाव-भङ्गी तथा मुख-श्री देखनेसे, मानव-जीवनकी चिरपराधीनता और चिर-स्वाधीनता सुस्पष्ट रूपसे दिखाई पड़ने लगी। पाठक गण ! एक बार अपने ज्ञान-चक्षु खोलिये ! देखिये, चिर स्वाधीनताके साथ ऐश्वर्यकी गोदमें पली हुई इवाञ्जलिन, हृदयके आवेगसे उल्लसित होकर, सरलतासे स्नेहके साथ टप्सीको उपदेश दे रही है। और टप्सी, सूखे हृदयके साथ काल्पनिक विनयसे सिर नीचा किये, सरस-चित्तसे उसकी बातें सुन रही है। इवा कह रही है—टप्सी तुम फिर

कभी चोरी मत करना, बुआ बड़े यत्नसे तुम्हारा पालन-पोषण करेगी, मेरी जितनी वस्तुएं हैं, वे सब मैं तुम्हें दूंगी, किन्तु तुम फिर कभी चोरी मत करना। इसके पहिले और किसीने कभी टप्सीसे ऐसे स्नेह-पूर्ण वाक्योंद्वारा भाषण न किया था। इस जीवनमें ऐसी स्नेहमयी भाषाने और कभी टप्सीके कर्ण-कुहरोंमें प्रवेश न किया था। इस प्रकार स्नेह पूर्ण बातें सुनकर ही उसका हृदय पिघलने लगा, उसके नेत्रोंसे दो चार बूंद आँसु टपक पड़े, किन्तु क्षणभरमें ही हृदयस्थित कठोर-भाव फिर गायब हो गया। इवाकी बातें हँसीमें उड़ा दीं। वह सोचने लगी—क्या इवा सचमुचही अपनी सब चीजें मुझे देगी! कदापि नहीं।

पाठक! टप्सीके मनमें स्वभावतः यह बात उत्पन्न हो सकती है। इस जीवनमें टप्सीने दूसरेकी दया तथा प्यार का अनुभव कभी नहीं किया। उसे दूसरेसे वेत्राघात और तिरस्कारके अतिरिक्त और कुछ प्राप्त न हुआ। इवाकी स्नेहपूर्ण सरल भाषाका क्या वह सहसा विश्वास कर सकती है? वह सोचने लगी कदाचित् इवा यह हँसी कर रही है।

मिस अफिलिया दिन-प्रतिदिन सोचने लगी कि किस प्रकार टप्सीको शिक्षा प्रदान करें। किसी प्रकारकी शिक्षाका कोईभी फल दिखलायी न पड़ा। टप्सीकी अत्यन्त दुर्नीति, उसका दुर्व्यवहार किसी प्रकार भी न हटा। एक दिन मिस अफिलिया सेन्टक्लेयरसे कहने लगीं कि टप्सीको किस प्रकार शिक्षा दूं, कुछ समझमें नहीं आता। मुझे ज्ञान पड़ता है इसे वेत लगाने पड़ेंगे सेन्टक्लेयरने कहा—जो चाहे करो, मैंने टप्सीके ऊपर तुम्हें पूरा अधिकार दे दिया है।

अफिलिया—हाँ, विना दण्ड दिये क्या कोई अपने सन्तान को शिक्षा दे सकता है?

सेन्टक्लेयर—तो फिर वेत्राघात ही करो। जो तुम्हें अच्छा लगे वही करो। मैंने देखा है कि इसका पहिलेका मालिक लोहेकी सलायी लाल करके, उससे इसे पीटता था। चिमटा गरम करके इसके शरीरपर दागता था। ऐसा दण्ड भोग कर भी इसका स्वभाव कुछ उन्नत नहीं हुआ। अतएव इसे वेत लगानेके लिए कुछ अधिक बलवालेकी आवश्यकता होगी। दो-एक वेत लगा देनेसे कुछ न होगा।

अफिलिया—तो फिर इसे लेकर मैं क्या करूँ ?

सेन्टक्लेयर—इस प्रश्नका उत्तर देना बड़ा कठिन है। इसके सम्बन्धमें तुम्हीं कोई उपाय खोज निकालो। जिन लोगोंको सदा वेत लगाये जाते हैं, और वेतोंकी मार खानेपर भी जो नहीं सुधरते, उनलोगोंको कैसे समुन्नत करना चाहिए, यह तो मैं नहीं जानता।

अफिलिया—इसके सम्बन्धमें मैं कोई भी उपाय नहीं कर सकती।

सेन्टक्लेयर—क्यों, तुम तो बार-बार मेरा तिरस्कार करती हो कि मैं उन क्रीत दास-दासियोंको शिक्षा नहीं देता। इनलोगोंकी आत्मा एकदम नष्ट हो रही है, कहकर मुझे बुरा बनाती हो। पर अब तुम एक छोटी सी आत्माका भी उद्धार नहीं कर सकती। वेत्राघात-प्रयोग "लेडनम्" प्रयोगकी भाँति हो उठेगा। प्रति दिन मात्रा बढ़ानी पड़ेगी। अन्ततः कहाँ तक इसकी वृद्धि करनी होगी, इसकी कोई सीमा नहीं। प्रूकी मृत्यु क्यों हुई ? प्रत्येक दिन उसके मालिकको वेत्राघातकी संख्या बढ़ानी पड़ती थी। इसी प्रकार वृद्धि करते-करते एक दिन वेतोंसे पीटकर उसका प्राणान्त ही कर दिया। इसीलिए मैं अपने घरके दास-दा-

स्त्रियोंको बेत नहीं मारता। मेरे घरके दास बुरे हैं अवश्य, पर बेतोंसे पीटनेसे उनका भला कभी न होगा और न वे सुधरेंगे ही। लाभ एक यही होगा कि मेरी प्रकृति पशु-प्रकृति हो जायगी।

अफिलिया—तुम्हारे देशकी इस दासत्व-प्रथाने इनकी यह गति की है।

सेन्टक्लेयर—यह तो मैंने पहिले ही कह दिया है। दासत्व-प्रथाका कुफल इन्हीं लोगोंके जीवनमें फला, अब और किया ही क्या जा सकता है?

अफिलिया—अब कैसे भला होगा, यह तो मैं कह नहीं सकती; किन्तु जब इनका चरित्र-संशोधन करना मैं अपना कर्त्तव्य समझती हूँ, तब टप्सीके सुधारनेके लिए अपने प्राण-पनसे मैं प्रयत्न करूँगी।

इस समयसे मिस अफिलिया टप्सीको शिक्षा देनेके लिए नानाप्रकारके उपायोंका अवलम्बन करने लगीं। दिन-रात परिश्रम करने लगीं। इस विषयमें वे किसी कष्टको कष्ट नहीं समझती थीं। टप्सीने शीघ्र ही पुस्तक पढ़ना सीख लिया। पर उसकी दुष्टतामें किसी प्रकारकी कमी न हुई। सिलायी सिखाते समय वह कभी तो सुई तोड़ डालती, कभी तागेकी गोली नष्ट कर डालती, कभी बन्दरोंकी तरह पेड़पर चढ़कर बैठती थी। यह सब देखकर मिस अफिलिया सोचने लगीं, कि कहीं ऐसा न हो कि इसके कुकार्योंके दृष्टान्तके प्रभावसे इवा का कुछ अनिष्ट हो जाय। यह सोचकर उन्होंने एक दिन सेन्टक्लेयरसे कहा—टप्सीको घरमें रखनेसे इवाका अनिष्ट हो सकता है, किन्तु सेन्टक्लेयरने हँसकर यह बात उड़ा दी। उन्होंने कहा—इवाका चरित्र किसी भी कुदृष्टान्तसे

दूषित नहीं हो सकता। जिस प्रकार कमलके पत्तेपर पानी नहीं ठहरता उसी प्रकार इवाके हृदयमें कोई अदृष्टान्त एक मिनट भी नहीं ठहर सकता। घरकी दास-दासियाँ पहिले टप्सी से घृणा करती थीं। वह उनके पास तक जा भी न सकती थी। पर अब सब उससे डरने लगे। टप्सी बड़ी धूर्त है। जो कोई उससे झगड़ा करता, उसे बड़ा कष्ट सहना पड़ता। टप्सी यदि पा जाती तो उसके कपड़े फाड़ डालती, नहीं उनपर स्याही डाल देती। या कोई वस्तु ही चुरा लेती थी। सब लोग यह जानते थे कि यह टप्सीका ही कार्य है, पर कोई उसे पकड़ न पाता, क्योंकि उसके पक्षमें कोई प्रत्यक्ष-प्रमाण नहीं था। मिस अफिलिया ठहरीं अँगरेज-कन्या वे बिना प्रत्यक्ष-प्रमाणके कभी किसीको दण्ड न देतीं। एक दिन मिस अफिलिया भूलसे अपने कपड़ोंके सन्दूककी ताली घरमें ही छोड़कर वाहर चली गयीं। टप्सीने सन्दूकमेंसे उनका दुशाला निकालकर अपने सिरपर बाँध लिया और दर्पणके सामने बैठकर अपना मुहँ देखने लगी। अफिलियाने कमरेमें प्रवेश करते ही टप्सीकी यह अवस्था देख अत्यन्त क्रुद्ध होकर कहा—टप्सी क्या करती है?

टप्सी—मैं कुछ नहीं जानती, मैं बड़ी धूर्त हूँ।

अफिलिया—तुझे मैं कैसे ठीक करूँ। मेरी तो कुछ समझ में नहीं आता।

टप्सी—मेरे पहिलेके मालिक मुझे बेंतोंसे पीटते थे, आप भी पीटिये।

अफिलिया—टप्सी मैं क्यों तुझे बेत मारूँगी। तुम यदि चाहो तो अच्छी हो सकती हो। यह सब दुष्टता क्यों नहीं छोड़ देती?

टप्सी—मुझे बार-बार बेत लगाइये। बेत ही मेरे लिए उचित दवा होगी।

मिस अफिलिया कभी-कभी टप्सीको बेत लगातीं। बेत लगानेके समय तो वह बड़ा चीत्कार करती, किन्तु छोड़ते ही दौड़कर और लड़कोंके पास जा हँसती हुई कहने लगती—मिस अफिलियाके बेतोंका तो घाव ही पीठपर नहीं लगता। मेरा पहिलेका मालिक तो मारते-मारते मेरी पीठ फोड़ डालता था। वह मालिक बेत मारना जानता था। मिस अफिलिया प्रत्येक रविवारको उसे शिक्षा देती थीं। टप्सीकी स्मरण-शक्ति बड़ी प्रखर थी। उसने अनायास ही वह सब कंठस्थ कर लिया। सेन्टक्लेयरने एक दिन मिस अफिलियासे पूछा—बहिन! ऐसी धर्म-शिक्षाके द्वारा क्या लाभ होगा?

अफिलिया—इसके द्वारा लड़कोंका मन धार्मिक हो जाता है

सेन्टक्लेयर—ये क्या धर्मको समझ सकते हैं? केवल कथाएँ सुनानेसे क्या लाभ होगा?

अफिलिया—इस समय न कथा समझेगी, किन्तु बड़ी होने पर जब ठीक-ठीक समझेगी तब उपकार होगा।

सेन्टक्लेयर—बहिन! लड़कपनमें तुमने मुझे भी ऐसी ही शिक्षाएँ दी थीं। अब मैं बड़ा हो गया, किन्तु उनसे तो अबतक मेरा कुछ भी उपकार न हुआ।

अफिलिया—तुमने लड़कपनमें विशेष ध्यान देकर वे शिक्षाएँ सुनी हैं इसीसे तुम इस समय अच्छे बने हो।

सेन्टक्लेयर—अच्छा तो तुम अपने इच्छानुसार कार्य करो।

अफिलियाके सामने खड़ी होकर टप्सी अपना कंठस्थ धर्म-पाठ पढ़ने लगी—हमारे प्रथम पिता-माता, आदम और हौआ पूर्ण स्वाधीनताके साथ उच्च प्रदेशमें विचरण करते

लगे। पश्चात् ईश्वरकी आज्ञाका उल्लंघन करनेपर वे इस देशमें पतित हुए। यह कहकर टप्सी कौतूहल-पूर्ण दृष्टिसे देखने लगी।

अफिलिया—क्या है टप्सी! क्या चाहती हो?

टप्सी—मेम साहब! वे क्या केन्टाकी प्रदेशमें थे?

अफिलिया—केन्टाकीमें थे? यह क्या?

टप्सी—यही कि हमारे प्रथम माता-पिता क्या केन्टाकी प्रदेशमें गिरे थे। मेरा पहिलेका मालिक कहता था कि मुझे केन्टाकी-प्रदेशसे खरीद लाया था।

सेन्टक्लेयर 'ही-ही' करके हँस पड़े। वे कहने लगे—बहिन! इन लोगोंको यदि केवल यह पढ़ा दोगी और अर्थ न समझाओगी तो ये इसी प्रकार अपने-अपने मनका अर्थ गढ़ लेंगे।

अफिलियाने विरक्ति प्रकटकर कहा—अगष्टिन तुम चुप रहो। तुम्हारे इस प्रकार हँसनेसे मैं पढ़ा न सकूँगी।

"अच्छा, अब मैं फिर हँसकर तुम लोगोंको अप्रसन्न न करूँगा" यह कहकर अगष्टिन संवाद-पत्र पढ़ने लगे। किन्तु मिस अफिलियाकी धर्म-शिक्षा-प्रणाली ऐसी कौतुकमयी थी कि अगष्टिन बीच-बीचमें हँस ही पड़ते थे। उनका यह कार्य देखकर मिस अफिलिया बहुत ही उदास हो गयीं।

इस प्रकार टप्सी, अफिलियाकी अधीनतामें धर्म तथा लिखने-पढ़नेकी शिक्षा पाने लगी। पर उसके चरित्रमें किसी प्रकारका संशोधन न हुआ। अन्यान्य दास-दासियाँ सभी उसपर अप्रसन्न थीं। कभी किसीके मारनेके लिए आनेपर वह भागकर सेन्टक्लेयरकी कुर्सीके नीचे आ छिपती। दयार्द्र चित्त सेन्टक्लेयर किसीको भी उसे मारने न देते थे।

चौबीसवाँ परिच्छेद



शेल्वी-गृह

टामके, शेल्वीके घरसे दूसरे स्थानमें चले जानेपर, उसके स्त्री-पुत्र आदि कैसे दुख और कष्टसे अपना समय बिता रहे थे, यह जाननेके लिए पाठकोंको बहुत उत्कण्ठा हो सकती है। अतएव पाठकोंकी वह उत्कण्ठा शान्त करनेके लिए मैं यहाँ पर संक्षेपमें शेल्वी साहबकी वर्त्तमान पारिवारिक अवस्थाका उल्लेख करता हूँ।

ग्रीष्मकाल है। शेल्वी साहब दोपहरके समय गरमीकी अधिकतामें काम आनेवाले कमरेके सब द्वार खोलकर बैठे चुरुट पी रहे हैं। उनकी मेम पास ही बैठकर सिलायी कर रही हैं। पर मेम साहब जिस प्रकार उत्सुक-नेत्रोंसे शेल्वी साहबकी ओर देख रही हैं, उससे जान पड़ता है कि वे स्वामीके पास कोई मनोगत भाव प्रकट करनेका सुयोग देख रही हैं। कुछ समयोपरान्त मेमने कहा—तुमने सुना है कि क्लोईने टामका एक पत्र पाया है ?

शेल्वी—हाँ, क्लोईने टामका पत्र पाया है इससे जान पड़ता है कि टामको दो-एक बन्धु-बान्धव मिल गये हैं। टाम कैसा है।

मेम—मुझे तो ऐसा ज्ञात होता है कि किसी दयालु परिवारने टामको खरीद लिया है। वह टामको बड़ा प्यार करता है। सुना है कि वहाँ टामको कोई अधिक परिश्रम नहीं करना पड़ता।

शेल्बी—बड़े आनन्दकी बात है। जान पड़ता है टाम अब फिर इस देशमें न आवेगा, दक्षिण-देशमें ही रह जायगा।

मेम—दक्षिण-देशमें रहेगा? उसने पत्रमें पूछा है कि मेरे फिर खरीद लेनेके लिए रुपया इकट्ठा किया है कि नहीं?

शेल्बी—रुपया इकट्ठा होगा, ऐसी सम्भावना नहीं है। एक बार ऋणी हो जानेपर फिर उसका परिशोध करना बड़ा कठिन हो जाता है। दूसरेसे उधार लेकर एकका ऋण चुकाता हूं तो तीसरेसे लेकर दूसरेका चुकाता हूँ। बड़ी गड़बड़ीमें पड़ गया हूँ।

मेम—हमारे खेतका कुछ अंश बेच देनेपर क्या इस ऋण का परिशोध नहीं हो सकता? मैं समझती हूं कि इस प्रकार ऋण चुकानेमें कुछ सुविधा हो सकती है।

शेल्बी—एमिली! यह बड़ी लज्जाकी बात होगी। हमारे देशमें तुम सरीखी सहृदय स्त्रियाँ बहुत कम हैं। तुम संसारी व्यवहार कुछ नहीं समझतीं। स्त्रियाँ क्या कभी संसारी व्यवहार समझती हैं?

मेम—अच्छा मैं समझूँ चाहे न समझूँ, यह बताओ कि तुम्हारा ऋण कितना है? मैं एक बार चेष्टा कर देखूँ कि इसका कोई सदुपाय हो सकता है कि नहीं।

शेल्बी—मुझे दुखी मत करो, एमिली। तुम यह सब काम-काजकी बातें नहीं समझ सकतीं।

मेमने स्वामीकी यह बात सुनकर फिर कुछ न कहा। एक दीर्घ निस्स्वास छोड़कर वह चुप हो गयी। वास्तवमें यदि शेल्बी साहब अपनी स्त्रीकी परामर्शके अनुसार कार्य करते तो सहजमें ही ऋणसे मुक्त हो जाते। उनकी स्त्री अत्यन्त मित-व्ययी और बुद्धिमती थीं। स्त्रीके हाथमें सम्पूर्ण कार्य-भार सौंप देनेपर उनकी यह दुर्दशा न होती, किन्तु वे सदा यही

समझते रहे कि स्त्रियाँ लोक-व्यवहारकी बातें बिलकुल समझ ही नहीं सकतीं।

मेम मन ही मन सोचने लगीं कि मैं टामको पुनः क्रय कर लेनेकी प्रतिज्ञा कर चुकी हूँ। अब कैसे उस प्रतिज्ञासे भ्रष्ट होऊँगी। मनुष्यात्मा रहते हुए क्या कोई किसी अनाथ निराश्रयके साथ प्रतिज्ञा कर, उसे भंग करता है? ऐसा सोचते-सोचते फिर स्वामीसे बोलीं—आर्थर! अनाथा दुःखिनी क्लोई स्वामीके शोकसे बड़ा दुख पा रही है। उसका दुख देखकर मेरा हृदय पिघल जाता है। भला बतलाओ तो किसी प्रकार रुपये इकट्ठे किये जा सकते हैं कि नहीं।

शेल्बी—तुम्हारा यह कष्ट देखकर मुझे दुख होता है, किन्तु हमलोगोंका ऐसा अंगीकार करना ही अन्याय हुआ है। तुम क्लोईसे कह दो कि टाम दक्षिण-देशमें इन दो वर्षोंके बीचमें एक नयी स्त्री ग्रहणकर लेगा। यहाँ क्लोई भी एक नया स्वामी ग्रहण करले।

मेमने क्रुद्ध होकर कहा-मिस्टर शेल्बी ऐसी बात फिर मुहँ पर न लाना। मैंने स्वयं इन दासियोंको शिक्षा दी है कि सतीत्व धर्म ही स्त्रीका परम धर्म है। मैंने बारम्बार इन लोगोंको बतलाया है कि पवित्र विवाह-बन्धन किसी प्रकार भी नहीं टूटता। अब किस मुहँसे क्लोईको दूसरा पति ग्रहण करनेके लिए कहूँगी? मैं ऐसी सलाह कभी नहीं दे सकती।

शेल्बी—प्रिये, तुमने इन लोगोंकी अवस्थाके प्रतिकूल-नीतिकी शिक्षा दी है। जिसकी जैसी अवस्था है उसे उसी रूपमें रहना होगा। ये कैसे उच्च नैतिक-जीवन बिता सकते हैं?

मेमने क्रोधसे मुँह लालकर कहा-मैंने धर्म-शास्त्रकी शिक्षा

दी है। मैंने बाइबिलकी नीति-शिक्षा दी है। धर्म्मके सामने, ईश्वरकी दृष्टिमें दुखी-सुखी, धनी-दरिद्र सब समान हैं।

शेल्वी—एमिली! तुम्हारे धर्म्मके मतामत पर मैं तर्क नहीं करना चाहता। मैं केवल यही कहता हूं कि इन सरीखे दुरवस्थापन्न क्रीत-दास-दासियोंके लिए ऐसा नैतिक-जीवन नितान्त अनुपयोगी है।

मेम—इन लोगोंकी ऐसी दुर्दशा देखकर ही मैं इस दासत्व-प्रथासे घृणा करती हूं। मैं तुमसे निश्चय-पूर्वक कहती हूं कि ऐसे दुर्दशाग्रस्त, ऐसे निराश्रयके साथ प्रतिज्ञा करके उसे भंग करूं, ऐसा कभी नहीं हो सकता। मैं बालक-बालिकाओंको संगीतकी शिक्षा देनेका कार्य करके रुपये एकत्र करूंगी। और उन्हींसे टामका पुनरुद्धारकर अपनी प्रतिज्ञाका पालन करूंगी।

शेल्वी—ऐसी नीच वृत्तिका अवलम्बन करके समाजमें मुझे नीचा बनाना चाहती हो? मैं उस विचारसे कभी सहमत नहीं हो सकता।

मेम—नीचा! प्रतिज्ञा-भ्रष्ट होनेसे मुझे उसकी अपेक्षा सौगुना नीचे न गिरना पड़ेगा?

शेल्वी—तुम अपने ये सब स्वर्गीय-नैतिक भाव रहने दो।

शेल्वी तथा उनकी स्त्रीमें जिस समय ये बातें हो रही थीं उसी समय क्लोईने वहां जाकर मेम साहबसे कहा—मेम साहब! एक बार जरा इधर तो आइये। मेमने बाहर जाकर पूछा-क्लोई क्या चाहती हो? क्लोई हंस आदि पक्षियोंको पद्म कहती थी। उसने मेमसे कहा—देखिये ये पद्म कैसे ज्ञात होते हैं? इनमेंसे एकको काटकर आपके लिए झोल बना दूं तो कैसा होगा? मेमने कहा—तुम्हारी जो इच्छा हो बनाओ, कोई एक चीज होनेसे मेरा काम चल जायगा।

फ्लोई जब कभी अपने स्वार्थ-साधनकी बात कहनेके लिए मेमके पास आती तो इसी प्रकार पहिले किसी सुखाद्य की बातचीत चलाकर उस बातकी भूमिका बाँधती। इस-लिए आज भी मनोगत भाव प्रकट करनेके पूर्व वह भूमिका बाँधने लगी। अन्तमें हँसते-हँसते कहा—मेम साहब, रुपये इकट्ठा करनेके लिए आप अध्यापिकाका कार्य क्यों करेंगी। इससे साहबका अपमान होगा। कितने ही लोग अपने दास-दासियोंको किरायेपर देकर अर्थ-संचय करते हैं। इतने दास-दासियोंको घर रखकर केवल भोजन देनेसे क्या लाभ?

मेम—तो फ्लोई, तुम किसे भाड़ेपर देनेको कहती हो?

फ्लोई—मैं किसी दूसरेको भाड़ेपर देनेको नहीं कहूँगी। साम कहता है कि लूविल नगरमें एक मिठाईवाला, मिठाई बनानेके लिए एक अच्छे आदमीको खोज रहा है। मेरे वहाँ जानेपर वह मुझे चार रुपये प्रति सप्ताह देगा। हमारे घरका काम श्याली अच्छी तरह चला लेगी। श्याली सब प्रकारका भोजन बनाना मुझसे सीख चुकी है।

मेम—तुम अपने लड़के-बच्चोंको छोड़कर वहाँ जाओगी?

फ्लोई—लड़के दो तो बड़े हो गये हैं और बच्चीको श्याली पालेगी।

मेम—लूविल नगर बहुत दूर है।

फ्लोई—क्या लूविल नगरके पास ही कहीं मेरा बूढा भी है।

मेम—नहीं फ्लोई। लुविल नगरसे टाम बहुत दूरपर है। प्रायः दो-तीन सौ कोस दूर पर है। किन्तु वहाँ जानेकी इच्छा होनेपर तुम सहज ही जा सकती हो। मुझे को आपत्ति नहीं। तुम उस मिठाईवालेके यहाँ जो वेतन पाना वह सब उस बूढ़ेको छुड़ानेके लिए एकत्र करना। उसमेंसे एक पैसा भी मैं खर्च न करने दूँगी।

क्लोई—मेम साहब आपके गुणोंकी बात और क्या कहूँ? मैंने भी यही सोचा है कि ये सब रुपये अमानत रखूँगी। एक-एक सप्ताहपर चार-चार रुपये मिलेंगे। वर्ष भरमें, मेम साहब, कितने सप्ताह होते हैं?

मेम—एक वर्षमें बावन सप्ताह होते हैं।

क्लोई—तो वर्ष भरमें मेरे पास कितने रुपये हो जायँगे?

मेम—२०८) रुपये।

क्लोई—तो कितने वर्षों तक काम करनेपर बूढ़ेका मूल्य दे सकूंगी।

मेम—चार-पाँच वर्षोंमें। किन्तु पाँच वर्ष तक काम न करना पड़ेगा। मैं भी कुछ रुपये दूँगी।

क्लोई—मेरे हाथ-पैर ठीक रहते, रुपयेके लिए आप गाना क्यों सिखायेंगी?

मेम—तुम कब जाना चाहती हो?

क्लोई—कल साम उधर जायगा, मैं भी उसीके साथ चली जानेका विचार करती हूँ। आप यदि अनुमति-पत्र लिख दें तो मैं जा सकती हूँ।

मेमने कहा—मैं अभी ही अनुमति-पत्र लिख दूँगी। यह कहकर वे ऊपर चली गयीं। पश्चात् स्वामी की सलाह लेकर अपने हाथसे अनुमति-पत्र लिखकर क्लोईको दे दिया। क्लोई अत्यन्त आनन्दित होकर अपना सब सामान बाँधने लगी। वहाँ शेल्वीके पुत्रको देखकर उसे सम्बोधन करके बोली—मास्टर जार्ज! मैं लूविल नगर चली। वहाँ पर प्रति सप्ताह चार रुपये वेतन पाऊँगी। वे सब रुपये तुम्हारी माता मेरे बूढ़े को फिर खरीद लेनेके लिए अमानत करके रखेंगी।

जार्जने पूछा—कब जाओगी।

क्लोईने उत्तर दिया—कल सामके साथ जाऊँगी। तुम इसी समय वृद्धेके पास एक पत्र लिखो। उसमें ये सब बातें खोलके लिख दो।

जार्ज—मैं पत्र लिखने जा रहा हूँ। मैंने जो अभी नया घोड़ा खरीदा है उसका वृत्तान्त भी लिखूँगा।

क्लोई—वह क्यों लिखोगे ? तुम जाओ, मैं तुम्हारे लिए कुछ खानेको ले आती हूँ। अब न जाने कितने दिनोंके पश्चात् फिर तुम्हें खानेकी चीजें देनेका अवसर मिले ?

पचीसवाँ परिच्छेद

पुष्पकी कुम्हलाहट

दिनपर दिन, मासपर मास, वर्षपर वर्ष समाप्त होने लगे। देखते-देखते क्रमशः दो वर्ष व्यतीत हुए। इन वर्षोंको टामने बराबर सेन्टक्लेयरके घरपर ही विताया। कुछ दिनोंके पश्चात् टामके पत्रके उत्तरमें जार्जका पत्र आ पहुँचा। यह पत्र पाकर टामको अपार आनन्द प्राप्त हुआ। क्लोई जो उसके उद्धारार्थ रुपये एकत्र करनेके लिए लूविल नगर गयी थी, वह भी इसमें लिखा है। उसके दोनों पुत्र, मोज और पिट जो निरापद निवास करते हैं, क्रमशः बढ़ रहे हैं। उसकी कन्याके पालनका भार जो श्यालीके हाथ अर्पण किया गया है यह सब उसमें लिखा हुआ था। यह पत्र पानेपर जब कभी टाम-के हाथमें कुछ काम न रहता तभी वह पत्र लेकर उसे

सतृष्ण नेत्रोंसे पढ़नेकी चेष्टा करता था। इस पत्रके चारों ओर काठका चौखटा लगाकर टामके घरके द्वारपर टाँग देना अच्छा होगा या नहीं, इसके विषयमें औचित्य-अनौचित्यपर टाम और इवा दोनों बहुत देरतक पर्यालोचना करते रहे। किन्तु अनेक चिन्ता और गवेषणाके पश्चात् दोनोंने देखा कि ऐसा करनेपर पत्रके दोनों पृष्ठों को न देखा जा सकेगा। इसलिए काठका चौखटा उस पत्रमें नहीं लगवाया गया।

इवा और टामका सौहार्द्र दिन प्रति दिन बढ़ने लगा। टाम इवाको बहुत प्यार करता था। उसके मनोरंजनके लिए बाजारमें जो उत्तम वस्तु पाता वही खरीद लाकर उसे देता था। कभी एक फूलका गुच्छा अथवा कभी एक संतरा ले आकर इवाको देता था। इवा जब टामके पास बैठकर बाइबिल पढ़ती, धर्मालाप करती उस समय टाम उसे मनुष्य नहीं समझता था। देवबाला समझकर वह मनही मन उसकी अर्चना करता था।

ग्रीष्म-ऋतु आ गयी। गर्मीकी अधिकताके कारण सेन्ट-क्लेयर अपना शहरका घर छोड़कर शहरसे कुछ दूरपर एक झीलके किनारेवाले उद्यान-भवनमें जाकर निवास करने लगे। इस स्थानमें रहनेके समय टाम और इवा दोनों दोपहरमें सदा झीलके किनारे बैठकर बाइबिल पढ़ते थे।

एक दिन इवा, बाइबिल पढ़ते-पढ़ते, "स्वर्ग-राज्य अति निकट है" यह वाक्य पढ़कर हठात् बोल उठी, "टाम काका, मैं शीघ्र ही स्वर्ग जाऊँगी। वह देखो, मैं स्वर्ग देख रही हूँ।"

टाम—कहाँ है स्वर्ग ?

इवाने आकाशकी ओर अँगुली दिखाकर कहा—वही स्वर्ग है। मैं शीघ्रही वहाँ जाऊँगी।

यह बात सुनकर टामका मन चौंक पड़ा। इवाका शरीर जो दिन-दिन दुबला होता जाता था, उसे देखकर टामका हृदय सदा चिन्तित रहता था। विशेषतः मिस अफिलिया जो सदा कहती थीं कि ऐसी खाँसी किसी प्रकार अथवा किसी औषधिसे अच्छी नहीं होती, यह बात भी उसके हृदयमें जाग्रत हो उठी। टाम, इवाको देववाला समझता था। उसके मुखसे कभी कोई व्यर्थकी बात न निकलती थी। अतएव आजकी बात सुनकर टामके हृदयमें जो भाव उत्पन्न हुआ होगा वह पाठकगण स्वयं समझ ले सकते हैं।

इवाकी भाँति बालक-बालिका क्या और कभी किसी घर में जनमते ही नहीं? जनमते हैं सही, किन्तु उनके नाम समाधि-प्रस्तरपर ही खुदे हुए पाये जाते हैं। उनकी मधुर-हँसी, उनके स्वर्गीय-सुधा-वर्षी नेत्र, उनके बाल-साधारण-असुलभ वाक्य और आचरण गुप्त धनकी भाँति केवल स्नेहमय आत्मीय-स्वजनोंकी स्मृति-मन्दिरमें छिपे रहते हैं। कितने ही घरोंमें यह बात सुनी जाती है कि जो बालक उस घरसे चला गया है, उसके स्वभाव और मधुर सुन्दरताकी तुलनामें वर्तमान बालकोंका रूप-गुण कुछ भी नहीं है। जान पड़ता है कि मनुष्योंके पापी-हृदयको स्वर्गकी ओर फेरनेके लिए विधाता देवदूतोंका एक विशेष प्रकारका दल रखे हैं। वे कुछ समय के लिए मानव-शिशुके रूपमें मृत्यु-लोकमें आते हैं और स्वदेश को लौटते समय चारों ओरके विषयगामी-हृदयोंको, जिससे साथ लेकर स्वर्गकी ओर उड़ सकें, दुर्भेद्य स्नेह-पाशमें बांध लेते हैं। जिस बालकके नेत्रोंमें वह गम्भीर आध्यात्मिक-ज्योति देखो, जिस बालकको, अन्य साधारण बालकोंकी अपेक्षा अधिक मधुर विज्ञतापूर्ण बातें करते पाओ; उसके अधिक दिन तक इस लोकमें रहनेकी आशा मत करो।

क्योंकि उसके भालपर विधाताके हाथके लिखे अक्षर हैं, उसके नेत्रोंमें उनकी दी हुई अमृतकी किरणें हैं।

इसीसे तो इवा स्नेहका धन है। गृहका एक मात्र उज्ज्वल तारा है। वह भी घरको अन्धकार पूर्ण करके चली जा रही हो। परन्तु जो उसे प्राणोंसे भी अधिक प्यार करते हैं वे यह बात नहीं जानते।

झीलके किनारे आकर, अफिलियाके, सहसा इवाको पुकारते ही टामके साथ उसकी जो बातचीत हो रही थी, वह भंग हो गयी। वे दोनों उठकर घरकी ओर चले। अफिलियाने इवासे कहा—बेटी बड़ी सर्दी पड़ रही है, तुम अब घरमें आकर बैठो।

बालक-बालिकाओंका पालन-पोषण करनेमें मिस अफिलिया बड़ी पार-दर्शिनी थीं। उनके शरीरमें कौन रोग हुआ है, यह वे सहजमें ही जान लेती थीं। इवाको थोडी-थोड़ी खाँसी आते देखकर उनके मनमें बड़ी शंका उत्पन्न हुई। ऐसे रोगसे उन्होंने अनेक बालकों तथा बालिकाओंका जीवन नष्ट होते देखा है। इसलिए वे कभी-कभी इस विषयमें सेन्टक्लेयरसे कहतीं। पर सेन्टक्लेयर इसपर कुछ ध्यान ही न देते। कभी-कभी तो वे इसपर असन्तुष्ट भी हो जाते और कहते बहिन तुम्हारा यह पुरखापन अच्छा नहीं लगता। ज़रा सा कुछ होते ही तुम्हें विपत्तिकी आशंका हो जाती है। इवा अब बड़ी हो रही है इसीसे इतनी दुबली है। सेन्टक्लेयरके ऐसे रुष्ट-वाक्य सुनकर ही अफिलिया चुप नहीं रह गयीं। उन्होंने फिर भी कहा सेन्टक्लेयर, क्या तुम इवाकी खाँसी नहीं देखते? इस रोगसे मैंने जेन, एलेन, तथा स्यन्डर तीन बालकोंको मरते देखा है। सेन्टक्लेयरने क्रुद्ध होकर कहा—तुम यह सब भूतोंकी कथा

रहने दो। रात्रिमें उसे बाहर अधिक मत जाने दो; बस इसीसे उसका शरीर अच्छा रहेगा।

सेन्टक्लेयर, इवाको कोई रोग हो गया है, ऐसा न विचारते हुए भी, जब कभी उसको धर्म-सम्बन्धी कोई गम्भीर विषयकी बातें करते सुनते, जब कभी उसे दूसरेके दुःखसे अत्यन्त कातर होते देखते तब उनके मनमें अनेक प्रकारकी शंकाएँ उत्पन्न होती थीं। वे मन ही मन सोचते कि ऐसी अल्प वयस्का बालिकाको अपने खेलमें व्यस्त रहना चाहिए पर इसका हृदय तो अभी ही दूसरोंका दुख देखकर विदीर्ण होने लगता है, कैसा आश्चर्यमय व्यापार है। जिस समय इवा संसार-प्रचलित अत्याचार और उत्पीड़नकी बात सोचकर, कातर कण्ठसे दुःख प्रकट करती और आंसू बहाती उसी समय सेन्टक्लेयर उसे अपनी छातीसे लिपटा लेते। ज्ञात होता है, वे सोचते थे कि अब कभी उसे हृदयसे अलग न करूँगा, स्नेहसे हृदयमें लिपटाये रहकर ही उसे इस संसारमें रख सकूँगा।

ओह! सेन्टक्लेयर तुम बिलकुल निर्बोध हो! ऐसा पाप और अत्याचारसे पूर्ण संसार-जहाँ द्वेष, हिंसा और स्वार्थपरता आदि सदा विराजती हैं; जहाँपर मनुष्य मनुष्यके प्रति हिंस्र जन्तुकी भाँति व्यवहार करते हैं; जिस स्थानमें निःस्वार्थ प्रेम और अकृत्रिम प्रणय कहीं देखनेको भी नहीं मिलता, इवाकी भाँति कोमल हृदया, पर-दुःख-कातरा देव-बालाके लिए नरक है। वह कदापि उसके निवास-योग्य नहीं है। तुम क्या बलपूर्वक अपने हृदयसे लिपटाये रहनेसे उसे रख सकोगे? कदापि नहीं। उसके लिए तो मंगल-भवन परमपिताकी अमृत-गोद सदा प्रसारित रहती है। वह अक्षय-गोद ही

उसका एकमात्र स्थान है। तुम कदापि उसे इस मृत्युलोक-में न रख सकोगे, कदापि नहीं।

एक दिन इवाने अपनी मातासे कहा-माँ, इन दास-दासियोंको पुस्तक पढ़ना क्यों नहीं सिखातीं?

मेरी—दास-दासियोंको और कौन लिखना-पढ़ना सिखता है?

इवा—लोग इन्हें क्यों नहीं सिखाते?

मेरी—इन्हें लिखना-पढ़ना सिखानेसे क्या लाभ होगा? लिखना-पढ़ना सीखकर क्या ये अधिक कार्य कर सकेंगे?

इवा—लिख-पढ़ सकनेसे ये बाइबिल तथा अन्यान्य पुस्तकें पढ़ सकेंगे। ज्ञात होता है कि बाइबिल तथा अन्यान्य धर्म-पुस्तकें सभी लोगोंको पढ़नेकी शिक्षा देनी उचित है।

मेरी—इवा, तुम एक अद्‌भुत लड़की हो!

इवा—मैंने टप्सीको बाइबिल पढ़ना सिखाया है।

मेरी—टप्सी बाइबिल पढ़कर कौन बड़ी सच्चरित्र हो गयी? टप्सीके समान दुष्ट बालिका दूसरी इस घरमें नहीं है।

इवा—मामी बाइबिल पढ़ना बहुत पसंद करती है। मैं उसके पास बाइबिल पढ़ती हूँ। किन्तु जब मैं उसके पास न पढ़ सकूँगी तो वह क्या कर सकेगी।

इवा जिस समय अपनी माताके साथ ये बातें कर रही थी, उस समय उसकी माता संदूक खोलकर अपने गहने उसमें सजाकर रख रही थी। इवाकी बात समाप्त होनेपर मेरीने कहा-इवा ये सब बातें रहने दे। तुझे चिरकाल तो नौकरोंके पास बैठकर बाइबिल पढ़ना न होगा। जब बड़ी होगी तब वेष-विन्यास करके सदा भद्र-समाजमें जाना-आना पड़ेगा। उस समय बाइबिल पढ़नेका समय न

पाओगी। मैं भी लड़कपनमें दास दासियोंके पास बाइबिल पढ़ती थी। यह जो हीरा-जड़ित टीक देखती हो न बड़ी होनेपर मैं यह तुम्हींको दूँगी। मैं पहिले जिस दिन यह टीक पहिनकर निमंत्रणमें गयी थी, उस दिन सब लोग चकित होकर मेरी ओर देखने लगते थे। कितने ही युवक मेरे साथ बातें करनेका सुयोग देखने लगे।

इवाने टीक उठाली और अपनी मातासे पूछा—माँ! क्या इस टीकका दाम बहुत है?

मेरी—इस टीकका दाम! मेरे पिताने इस टीकको फ्रांस देशसे मँगाया था। इसके मूल्यकी तुलनामें एक गृहस्थ आदमी की सम्पूर्ण सम्पत्ति भी नहीं ठहर सकती।

इवा—इस टीकके द्वारा मेरी जो कुछ करनेकी इच्छा है यदि वह करने दो तो मैं इसे लूँगी।

मेरी—तुम इस टीकके द्वारा क्या करना चाहती हो!

इवा—यह टीक बेचकर, इसके मूल्यसे जिस देशमें दासत्व-प्रथा नहीं है उसी देशमें मैं भूमि क्रय करूँगी। तत्पश्चात् वहाँ सब दास-दासियोंको ले जाकर रक्खूँगी। इनकी शिक्षाके लिए बोर्डिंग और स्कूल स्थापित करूँगी।

मेरीने हँसकर कहा—बोर्डिंग और स्कूल स्थापित करोगी। पियानो बजाना सिखाओगी?

इवा—इन लोगोंको मैं बाइबिल पढ़ना सिखाऊँगी। आत्मीय लोगोंको पत्र लिखना तथा उनके पत्र पढ़ना सिखाऊँगी। माँ, ये जो अपने आत्मीय लोगोंके पास पत्र नहीं लिख सकते तथा उनके पत्र पानेपर जो पढ़ नहीं सकते, इससे इनके मनमें बड़ा कष्ट होता है। टाम, मामी आदि सभी लोग इससे बड़ा कष्ट पाते हैं।

मेरी—अब चुप रहो तुम्हारी यह सब बातें मैं नहीं सुनना चाहती। मेरे सिरमें बड़ी पीड़ा हो रही है।

मेरी—जिस प्रकारकी बातें सुनना पसंद नहीं करती, उस प्रकारकी बातें किसीके आरम्भ करते ही उसके सिरमें पीड़ा होने लगती है। इसलिए उसके सामने वैसी बातें कोई नहीं कर सकता था। इवा भी चुप हो गया।

छब्बीसवाँ परिच्छेद

हेनरिक

जिस समय अगष्टिन सेन्टक्लेयर झीलके किनारेवाले उद्यान-घरमें सपरिवार निवास करते थे, उसी समय उनके ज्येष्ठ भ्राता अल्फ्रेड सेन्टक्लेयर अपने पुत्र हेनरीको साथ लेकर उनसे मिलने आये। दोनों यमज भाइयोंमें किसी प्रकारकी समानता नहीं है। उनकी अंग-गठन तथा उनके सब मानसिक भावोंमें विशेष प्रकारसे विभिन्नता ज्ञात होती थी। किन्तु आश्चर्यका विषय तो यह है कि इस प्रकार की विभिन्नता रहने पर भी उन दोनोंमें एक दूसरेके प्रति अगाढ़ प्रेम था। दोनों भाई एक दूसरेका हाथ पकड़े हुए वाटिकामें भ्रमण कर रहे हैं। परस्पर एक दूसरेके मतामत के सम्बन्धमें उपहास कर रहे हैं; किन्तु उनका हार्दिक-प्रेम किसी भी बातसे कभी कम नहीं होता। अलफ्रेडका पुत्र हेनरी देखनेमें बड़ा तेजस्वी जान पड़ता है। कोमल हृदया इवाञ्जेलिनको देखते ही उसके प्रति उसको हृदयमें अगाढ़ प्रेम उत्पन्न हुआ।

अपराह्नमें टामने इवाके लिए छोटासा घोड़ा लाकर बरामदेके सामने खड़ा किया। इधर डडो नामक एक ग्यारह वर्षीय बालक भी हेनरिकके लिए एक घोड़ा लेकर वहाँ आया। हेनरिकने घोड़ेपर चढ़नेके समय लाल-लाल आँखें करके डडोकी ओर देखकर कहा—हरामजादा, गधा, तू सवेरेसे ही घोड़ेके शरीरकी धूल झाड़कर नहीं रखता? घोड़ेके शरीरमें इतनी धूल क्यों लगी है? इस प्रकार तिरस्कृत होकर डडोने अत्यन्त विनीत भावसे कहा—हुजूर सवेरे धूल झाड़ दिया था, इस समय फिर लग गयी। यह बात सुनते ही हेनरिकने क्रुद्ध होकर डडोको, शाला, पाजी फिर मेरे सामने बात बनाता है।" इतनी हिम्मत! मेरे सामने खड़ा होकर बातें करता है। कहकर चाबुक उठा दस-बारह चाबुक उसके मुँहपर जड़ दिये। बालक चिल्लाकर कहने लगा—हुजूर मरा जाता हूँ प्राण जा रहे हैं, किन्तु हेनरिक उसे अविराम चाबुक लगाने लगा। जब लड़का मृतप्राय होकर गिर पड़ा तब उसने उसे छोड़ा और कहने लगा—और मेरे सामने बातें बनावेगा? जा अभी घोड़ा फिर साफ करके ले आ।

टाम वहीं पर खड़ा था। उसने हेनरिकसे कहा—हुजूर आपका घोड़ा सवेरे साफ किया था। उसके पीछे घोड़ा मिट्टीमें लोट पड़ा था, इसीसे उसके शरीरमें धूल लग गयी थी। यही बात डडो आपसे कहना चाहता था।

हेनरिकने टामसे कहा—तू चुप रह। तुझसे तो मैं कुछ पूछता नहीं। यह कहकर हेनरिक इवाके पास जाकर बोला—प्रिय भगिनी मुझे क्षमा करो। मेरे लिए तुम्हें भी विलम्ब हो रहा है। उस बदज़ातने घोड़ा साफ नहीं किया था, इसीसे इतना विलम्ब हुआ आओ, घोड़ा ले आने तक यहीं बैठें। यह क्या! तुम इतनी उदास क्यों हो गयीं?

इवा—तुमने जो डडोके प्रति ऐसा निष्ठुर व्यवहार किया है उसीसे। तुम इतने निष्ठुर हो; इतने दुष्ट हो!

हेनरिक—मैं निष्ठुर हूँ! मैं दुष्ट हूँ! यह क्यों? इवा, प्यारी इवा! यह तुम क्या कहती हो?

इवा—तुम मुझे प्यारी कहकर मत पुकारो, तुम ऐसा निष्ठुराचरण करते हो।

हेनरिक—इवा तुम डडोको जानती नहीं। ऐसी शास्ति दिये बिना डडोको ठीक नहीं किया जा सकता। वह शोला झूठी बातें करता है। इन लोगोंको दुरुस्त रखनेके लिए ही ऐसा करना पड़ता है। बावा इसी प्रकार इन निग्रो गुलामोंको ठीक करते हैं।

इवा—क्यों, टामकाका कहता है कि उसने घोड़ा साफ किया था। उसके पश्चात् घोड़ेके लोट जानेसे धूल लग गयी थी। टामकाका तो कभी झूठ नहीं बोलता।

हेनरिक—तुम्हारा टाम इन निग्रो दासोंमें कोई एक असाधारण व्यक्ति होगा, पर डडो तो सदैवही झूठी बात कहता है।

इवा—तुम्हारे इस तरह मारनेके कारण तो वह डरसे झूठी बातें करना सीखेगा ही।

हेनरिक—इवा, तुम जो डडोपर इतनी कृपा दिखाती हो, तो क्या तुम उसे मुझसे भी अधिक चाहती हो?

इवा—देखो, तुमने बिना किसी अपराधके ही उसे इतना पीटा है, इससे मुझे बड़ा दुख हुआ।

हेनरिक—अच्छा, अब तुम्हारे सामने इसे कभी न मारूँगा। मैं नहीं जानता था कि काले दासोंको मारते देखकर भी तुम्हें दुख होता है।

डडो शीघ्र ही घोड़ा ले आया। हेनरिकने उसे इवाका घोड़ा पकड़नेको कहा एवं स्वयं उसने इवाको उसके घोड़ेपर

सवार करा दिया। हेनरिक समान श्रेणीके लोगोंके साथ बड़ी भद्रता और अत्यन्त शिष्टताका व्यवहार करता था। इसने घोड़ेपर सवार होते समय देखा कि लड़का उस समय भी शारीरिक कष्टसे रो रहा है। उसकी आँखोंसे आंसू गिर रहे हैं। तब उसने बालककी ओर घूमकर उसे स्नेह-के वाक्यों-द्वारा सान्त्वना दी, किन्तु हेनरिकको किसी प्रकार-का धन्यवाद भी न दिया।

जिस समय हेनरिक डडोको मार रहा था, उस समय अगष्टिन और उनके बड़े भाई वाटिकामें भ्रमण कर रहे थे। उन दोनोंने वाटिकासे डडोको ऐसी मार खाते देखा। उसे देखकर अगष्टिनका मुहँ लाल हो उठा। उन्होंने अलफ्रेडको सम्बोधनकर तीव्र व्यंग-स्वरमें कहा—भैया! मैं समझता हूं कि तुम अपने लडकेको हमारे देशकी साधारण तन्त्र-प्रणालीके सम्बन्धकी शिक्षा देते हो। यह कदाचित् साधारण तन्त्र-प्रणालीकी पहिली शिक्षा है कि सम्पूर्ण मानव-मण्डलीके अधिकार बराबर हैं।

अलफ्रेड—भाई, हेनरिक क्रोध आनेपर जंगली पशुकी भांति हो जाता है। मैं किसी भी उपायसे इसका यह स्व-भाव नहीं छुड़ा सका। क्या मैं, क्या मेरी स्त्री, अब कोई भी इस सम्बन्धमें इससे कुछ नहीं कहता। पर यह लड़का डडो भी बड़ा बन्दर है। हजारों बेत लगानेपर भी कोई इसे रास्तेपर नहीं ले आ सकता।

अगष्टिन—हमारे देशके प्रचलित साधारणतन्त्र-प्रणालीके विषयकी जो प्रश्नोत्तर पुस्तक प्रकाशित हुई है, उसके पहिले ही प्रश्नोत्तरमें लिखा है—धनी-दरिद्र सभीके अधिकार समान हैं।

अलफ्रेड—इन सब बातोंकी कोई आवश्यकता नहीं। फ्रांस देशमें इसी प्रकार एक बार ऐसा ही आन्दोलन उठा था।

जन-विशेपका समान अधिकार शिक्षित और उच्च श्रेणीके लोगोंमें संस्थापित किया जा सकता है, इन नीचोंमें नहीं। भला इन नीचोंको क्या कभी वैसा समानाधिकार दिया जा सकता है ?

अगष्टिन—किन्तु आँखें खुल जानेपर निम्नश्रेणीके लोग भी अपने समानाधिकार प्राप्त करनेका प्रयत्न करते हैं। फ्रांसके विप्लवका मूल कारण क्या है ? इन निम्न-श्रेणीके लोगोंको यदि सदैव अज्ञानान्धकारमें रख सको, तभी तुम लोगोंका यह प्रभुत्व सुरक्षित रह सकता है।

अलफ्रेड—(जोरसे भूमि पर पैर पटककर) अवश्य, अवश्य, इन नीचोंको गिरी दशामें रखेंगे।

जितनी जोरसे अलफ्रेडने पदाघात किया, उससे जान पड़ा मानो वे उन निम्नश्रेणीके लोगोंके मस्तकपर ही पदाघात कर रहे हैं।

अगष्टिन—भाई ! ये अत्याचारके सताये हुए निम्नश्रेणीके लोग जिस समय उत्तेजित होंगे, उस समय सारे देशको जलाकर राख कर डालेंगे। उच्चकुलोत्पन्न संभ्रान्त लोगोंका प्रभुत्व जड़से नष्ट हो जायगा। क्या तुम्हें स्मरण नहीं है, सेन्टडोमिङ्गो द्वीपमें कैसा भयानक-काण्ड उपस्थित हुआ था ?

अलफ्रेड—हटाओ उधर अपने सेन्टडोमिङ्गो द्वीप को। इन्हें शिक्षा न देनेसे ही सब ठीक हो जायगा। वर्त्तमान समयमें जो "साधारणकी शिक्षा" "मजदूरोंको शिक्षा" आदि अनेक प्रकारके चीत्कार चारो ओर सुनायी पड़ रहे हैं उस-पर कुछ ध्यान न देनेसे ही विप्लवकी कोई सम्भावना न रह जायगी।

अगष्टिन—अब "गई सुबीति बहार"। भैया, अब वे दिन नहीं रहे। शिक्षाकी धारा अब किसी प्रकार भी रोकी नहीं जा सकती। तुम लोगको अब यही उचित है कि इस शिक्षा-द्वारा जिस प्रकार उनको उच्चनैतिक-जीवन प्राप्त हो सके, उसी विषयपर दत्तचित्त हो जाओ।

अलफ्रे ड—रहने दो अपना नैतिक-जीवन। ये नीच सदा इसी गिरी अवस्थामें रहेंगे।

अगष्टिन—इसी अवस्थामें रहेंगे सही, परन्तु उत्तम-शिक्षा न पानेसे समय-समयपर उत्तेजित होकर उच्च श्रेणीके लोगोंके रक्तसे देश बहा देंगे। सोलहवें लुईकी हत्या हो जानेके पश्चात् फ्रांसकी क्या दुर्दशा हुई—क्या स्मरण नहीं है? अलफ्रे ड, मैं दूरदर्शिनी-दृष्टिसे देखता हूं कि शीघ्र ही ये नीच लोग उमड़ेंगे और सारे संसारको अराजकतासे परिपूर्ण कर देंगे। और तब इन उच्चश्रेणीके अभिजातकोंको अपने रक्त-द्वारा निज-कृत अत्याचार और उत्पीड़नका प्रायश्चित करना पड़ेगा।

अलफ्रे ड—(हँसते-हँसते) भाई! तुम तो अब एक बड़े वक्ता हो गये हो। अच्छा तुम एक काम करो,—स्थान-स्थानपर इस विषयकी वक्तृता देना आरम्भ करो। लोग तुम्हें एक पैगम्बर अथवा नबी समझकर आदर-पूर्वक ग्रहण करेंगे। किन्तु मुझे ऐसा ज्ञान पड़ता है कि तुम्हारे इस मनोकल्पित स्वर्ग-राज्यके आनेके पूर्व ही मैं मर जाऊंगा। मुझे यह सब न देखना पड़ेगा।

अगष्टिन—फ्रान्स देशके व्यापारी तथा उच्चवंशीय लोग इन निम्न श्रेणीके लोगोंसे घृणा करते थे। किन्तु परिणाममें इन्हीं नीच लोगोंने उनके ऊपर अधिकार जमा लिया। अभी उस दिन हेइटो द्वीपमें कैसा भयानक काण्ड हुआ था, उसे एक बार विचारकर देखते नहीं?

अलफ्रेड—तुम हेस्टी द्वीप-निवासियोंकी बात कहते हो ! हेइटीद्वीप-वासी क्या अँगरेज हैं ? यदि वे अँगरेज होते तो क्या उनकी ऐसी दुर्दशा होती ? संसारके सब स्थानोंमें अँगरेज लोग शासन करेंगे। अँगरेज लोग सबपर अपना अधिकार स्थापित करेंगे। सदैव अपने प्रभुत्वका उपयोग करेंगे। हम लोगोंके (अँगरेजोंके) साथ क्या किसी जाति की तुलना हो सकती है ?

अगस्टिन—भाई ! अंगरेज-अँगरेज करके बहुत मत उछलो। एक बार इन कालोंकी आँखें खुलते ही तुम लोगोंको अपने इन घोर अत्याचारोंका प्रायश्चित करना पड़ेगा। तब निरुपाय होकर तुम लोगोंको मुहँ छिपाकर भागना पड़ेगा। इस देशमें पैरकी क्या बात, सिर रखनेका भी स्थान न मिलेगा।

अलफ्रेड—तुम्हारी ये सब बातें पागलका प्रलाप जान पड़ती हैं।

अगस्टिन—पागलका प्रलाप ! भाई, बाइबिलके वाक्य क्या तुम्हें स्मरण नहीं हैं ?—"मनुष्य स्वप्नमें भी विपत्तिके विषयमें कुछ विचार नहीं करता; अन्तमें अकस्मात् जलकी बाढ़ आकर उसे बहा ले जाती है और वह मृत्युका ग्रास बन जाता है।" मैं तुमसे अनुरोध करता हूँ कि बाइबिलके ये वाक्य सदैव स्मरण रखना।

अलफ्रेड-(हँसते-हँसते) अगस्टिन, तुम एक पैगम्बरकी पोशाक लेकर स्थान-स्थानपर वकतायें देते फिरो। हमारे लिए तुम्हें कोई चिन्ता न करनी होगी। हमलोगोंमें यथेष्ट बल है। हमलोग अनायास ही रक्षा कर लेंगे। ये नीच जातिके लोग सदैव अवनतावस्थामें रहेंगे। इन लोगोंको हम सदा अपने पैरोंके नीचे रखेंगे। हमारे पास गोला बारूद भी यथेष्ट हैं।

अगष्टिन—हां, तुम्हारा लड़का हेनरिक जिस प्रकार शिक्षित हो रहा है उससे वह सहजमें ही बारूदके खजानेमें आग लगा सकेगा।

अलफ्रेड—मैं यह स्वीकार करता हूं कि हमारे देशकी प्रचलित शिक्षा-प्रणाली कुछ निन्दनीय है। हमारी सन्तान आदि लड़कपनसे ही इन काले दासोंपर प्रभुत्व करना सीख जाते हैं। दूसरेको भी कुछ अधिकार प्राप्त हैं यह समझनेका उनको सुयोग ही नहीं मिलता। मैंने सोचा है कि हेनरिकको शिक्षाके लिए उत्तर-प्रदेशमें भेजूंगा। किन्तु हमारे देशमें भी किसी-किसी विषयकी अच्छी शिक्षा होती है। बालक लड़कपनसे ही विलक्षण साहसी और तेजस्वी हो उठते हैं। चापलूसी आदि जो अनेक प्रकारके दोष इन क्रीत दासोंके जीवनमें दिखायी पड़ते हैं हमारे अनेक बालक-बालिकाओंके जीवनको स्पर्श तक नहीं कर पाते। हृदयमें वर्त्तमान रहने वाला प्रभुत्वका भाव, इन सब दोषोंको दूर कर देता है ?

अगष्टिन—(व्यंगोक्तिके भावसे) इस प्रकारसे प्रभुत्व करनेकी इच्छा क्या खीष्ट-धर्म-संगत है ?

अलफ्रेड—खीष्ट-धर्म-संगत है कि नहीं, इस विषयमें मैं कुछ नहीं कहना चाहता। किन्तु हमारे देशकी सामाजिक अवस्था लोगोंको तेजस्वी और साहसी बना देती है, इसमें कोई संदेह नहीं।

अगष्टिन—यह हो सकता है।

अलफ्रेड—ये सब विषय लेकर तर्क करनेसे क्या लाभ ? तुम्हारे साथ कमसे कम पांच सौ बार इस विषयमें तर्क-वितर्क हो चुका है। चलो, चलें अब हमलोग शतरंज खेलें।

दोनों भाई एकत्र बैठकर शतरंज खेलने लगे। खेलते समय अलफ्रेडने कहा—अगष्टिन, मैं तुम्हारा मतावलम्बी

होनेपर केवल मुह से तर्क न करता, वरन अपने विश्वासका चार करनेके लिए कोई उपाय ग्रहण करता।

अगष्टिन—यह तुम अवश्य कर सकते थे, क्योंकि तुम कर्मशील व्यक्ति हो। किन्तु मैं—

अलफ्रेड—(व्यंग करके) तुम अपने दास-दासियोंकी दशा समुन्नत क्यों नहीं करते।

अगष्टिन—यह क्या कभी सम्भव है ? हिमालय पर्वत इन लोगोंके मस्तकपर स्थापित कर दिया जाय और तो भी ये सीधे खड़े रह सकें, पर हमारे समाजमें प्रचलित कुशिक्षा, कु-दृष्टान्त, असदाचरण और अत्याचारके मध्यमें रह कर ये कभी भले नहीं हो सकते। समाज-प्रचलित पाप और कुशिक्षाके द्वारा नैतिक वायु दूषित हो गयी है। इसलिए जब तक नैतिक वायु शुद्ध न होगी, तब तक एक व्यक्तिके सुधारनेसे ये लोग सत्पथ पर नहीं चल सकते कितनी ही पराजित-जातियोंमें उच्च शिक्षा प्रचलित हो रही है। किन्तु उस उच्च शिक्षाके द्वारा क्या कोई पराजित जाति कभी उन्नत हो सकती है ?

अलफ्रेड—तो तुम देश-सुधारका व्रत ग्रहण करो।

इसके पश्चात् दोनों खेलनेमें एक दम तल्लीन हो गये। कुछ समयके उपरान्त हेनरिक तथा इवा दोनों घोड़ेपर सवार हुए घर लौटे। द्रुतवेगसे आनेके कारण इवा कुछ क्लान्त हो गयी थी। किन्तु उसके इस क्लान्ति-मण्डित मुख-मण्डलसे अति अपरूप सौन्दर्य झलकता था। प्रत्येक ऋतु-परिवर्त्तन-के समय प्रकृति जैसे नये-नये पल्लवोंसे सुसज्जित होकर, मानव-हृदयमें नवीन भावोंका उद्रेक करती है; उसी प्रकार राग, द्वेष, हिंसासे शून्य धर्म्म-भाव और पवित्रतासे परिपूर्ण निर्मल चरित्रा रमणी-मुख-कमलसे भी अनेक अवस्थामें अनेक प्रका-

रके सौन्दर्य-भाव विकसित होते हैं। इवाके इस समयके क्लान्ति-चिह्न-मण्डित मुख-कमलसे शान्ति और प्रेमका भाव प्रकट हो रहा है। मलफ़ेड उसे देखकर विमोहित होकर बोला—अहा! रूपकी कैसी अनुपम माधुरी है। अगष्टिनने निरास-भावसे कहा—इवा सब सुलक्षणोंसे युक्त है किन्तु परमेश्वरके मनमें क्या है, कौन जाने! यह कहते-कहते दो-एक कदम आगे बढ़कर इवाको गोदमें लेकर घोड़ेपरसे उतारा एवं कुछ अधिक क्लान्त देखकर घरके भीतर एक कोचपर बैठाया। क्लान्तिके कारण इवाको बड़ी तेजीके साथ सांस लेते देखकर कहा-तुम इतनी शीघ्रतासे घोड़ा क्यों चलाती हो। तुम जानती नहीं कि इससे शरीर अस्वस्थ हो जाता है।

इसी समय हेनरिक आकर इवाके पास बैठा और उसे स्वस्थ करनेकी चेष्टा करने लगा। तब अगष्टिन फिर अपने भाईके साथ खेलने लगे।

इवाकी घोड़ेकी सवारीकी थकावट दूर होनेपर हेनरिक कहने लगा—बहिन! मुझे बहुत दुःख हो रहा है कि मैं शीघ्र ही यहांसे प्रस्थान करूंगा। फिर कब तुम्हें देखूंगा। इसका कुछ ठीक नहीं। मैं तुम्हारे यहां रहकर, तुम्हारे सामने फिर कभी डडोको नहीं मारता। मैं डडोके प्रति अधिक निष्ठुर व्यवहार नहीं करता। उसे अच्छे कपड़े देता हूं, अच्छा खाना देता हूं। वह मेरे घरमें विशेष सुखसे रहता है।

इवा—केवल खाना भली-भांति पा जानेसे ही लोग सुखी होजाते हैं? तुम्हें यदि कोई प्यार न करे तो क्या तुम केवल खाना खाकर सुखी रह सकोगे?

हेनरिक—तब कैसे सुखी रह सकता हूं?

इवा—अच्छा तब देखो, तुम डडोको उसके माता-पितसे

अलग करके ले आये हो, इसलिए अब उसे प्यार करनेवाला कोई नहीं है। ऐसी अवस्थामें रहकर क्या मनुष्य उत्तम हो सकता है ?

हेनरिक—इस विषयमें मैं क्या कर सकता हूँ ? उसके मा-बाप आदि सबको तो मैं खरीद नहीं सकता। और मैं स्वयं उसे प्यार नहीं कर सकता।

इवा—तुम क्यों उसे प्यार नहीं कर सकते ?

हेनरिक—(ही-ही करके हँसते-हँसते) तुम मुझे डडोको प्यार करनेको कहती हो ? उसके प्रति कुछ दया कर सकता हूँ। क्या तुम अपने दास-दासियोंको प्यार करती हो ?

इवा—हाँ, मैं अपने दासोंको प्यार करती हूँ।

हेनरिक—यह क्यों इवा ?

इवा—बाइबिलमें क्या लिखा है ? क्या बाइबिल हम लोगोंको सब जीवोंको प्यार करनेकी आज्ञा नहीं देती ?

हेनरिक—बाइबिलमें तो कितने ही उपदेश हैं ? उन्हें क्या कोई मानता हैं, या माननेकी चेष्टा करता है ?

इवाने फिर कुछ न कहा। स्थिर नेत्रकर व गम्भीर भाव धारणकर कुछ देर तक चुप रही, पश्चात् कातर-स्वरसे कहने लगी-प्रिय हेनरिक, मेरी एक बात मानो। तुम डडोको मारना मत; उसके प्रति कठोर व्यवहार न करना; उसे थोड़ा प्यार करनेकी चेष्टा करना; उसके ऊपर सदा दया करना। इवाकी इस बातके उत्तरमें हेनरिकने कहा-प्यारी बहिन ! तुम्हारे सब अनुरोधोंको मैं स्वीकार करता हूँ। तुम सरीखी शान्त और कोमल-प्रकृतिकी बालिका मैंने और कहीं नहीं देखी। भविष्यमें मैं अब डडोको कभी न मारूँगा।

इसके पश्चात् भोजनकी घन्टी बजी, तब सब लोग भोजन करने चले गये।

सत्ताईसवाँ परिच्छेद

मृत्युके पूर्व-लक्षण

अगष्टिनके ज्येष्ठ भ्राता अलफ्रेड अपने पुत्रके साथ अपने घर लौट गए। उनके यहाँ निवास करनेके समय अगष्टिन-के सभी घर वाले आमोद-प्रमोदमें मग्न रहते थे; इसलिए इवाञ्जेलिनकी शारीरिक अस्वस्थताके विषयमें किसीको कुछ ध्यान नहीं था। किन्तु अब इवाञ्जेलिनका शरीर इतना दुर्बल हो गया कि बिस्तर परसे उठने तककी शक्ति न रह गयी। इतने दिनोंतक अगटिनने अफिलियाकी बातपर कुछ ध्यान ही नहीं दिया। अब उन्होंने शीघ्र ही एक चिकित्सक नियुक्त किया। उनके हृदयमें भी अनेक शंकाएँ उत्पन्न होने लगीं। उनकी सहधर्मिणी मेरी, भूलकर भी कभी अपनी लड़कीके स्वास्थ्यके सम्बन्धमें कुछ खोज-खबर न लेती। जीवन भरमें उसने अपने पड़ोसकी अन्यान्य स्त्रियोंके मुखसे दो-तीन प्रकारके नये रोगोंकी कथायें सुनी हैं। इस समय उन सब रोगोंके लक्षण उसने अपने शरीरमें देख पाया। इस लिए अपने उन मन कल्पित रोगोंको लेकर ही वह व्यग्र हो रही है। वह दिन-रात केवल यही सोचती रहती कि किस प्रकार इन दुर्विसह नये-नये रोगोंसे आरोग्य लाभ होगा। कन्याके विषयमें कुछ जाँच-पड़ताल करनेका उसे कुछ भी अवकाश न था। विशेषतः वह जानती थी कि रोग, इस संसारमें केवल उसीको सता सकते हैं; अन्य किसीके शरीरमें रोग कभी प्रवेश ही नहीं कर सकता।

दूसरे किसीको कोई रोग हुआ है, इस बातपर वह कभी विश्वास भी न करती। दूसरेके रोगको वह सुस्तीके कारण काम न करनेका बहाना मात्र समझती थी। उसके स्वतः-के मन कल्पित रोग ही प्रकृत रोग हैं।

मिस अफिलिया इवाको प्राणसे भी अधिक प्यार करती थीं। उन्होंने पहिले जब देखा कि इवाकी अस्वस्थताकी बातपर अगष्टिन विश्वास ही नहीं करता; इस विषयकी बातचीत करनेपर वह उसे दिल्लगीमें उड़ा देता है, उसकी बातपर रत्ती भर भी कान नहीं देता, तब विवश होकर यह बात उन्होंने बारम्बार मेरीसे कही थी। सोचा था कि मेरी अन्ततः सन्तान-वत्सलताके कारण मेरी बात सुनकर अवश्य ही इवाकी चिकित्साका कोई प्रबन्ध कर देगी; किन्तु उनकी वह आशा भी निष्फल हुई। जितनी बार मिस अफिलिया इवाकी अस्वस्थताकी बात मेरीसे कहतीं, उतनी ही बार वह उत्तर देती कि इवाको क्या हुआ है; वह दौड़ती है, चलती-फिरती है, खेलती-कूदती है; अस्वस्थ होनेपर क्या इस प्रकार खेल-कूद अथवा दौड़-धूप कर सकती है? अफिलिया पूछतीं—क्या तुम उसकी खाँसी नहीं देखती? उत्तरमें मेरी कहती—ऐसी खाँसी लड़कपनमें मुझे हुई थी। अफिलिया कहती—देखती नहीं हो, इवा कितनी दुर्बल हो गयी है? मेरी कहती, मैं प्रायः पाँच छः वर्ष तक ऐसी ही दुर्बल रही। अफिलिया फिर कहती- पर रातमें इवाका शरीर गरम हो आता है और उसे ज्वर हो आता है। उत्तर-में मेरी कहती-ओह! वैसा ज्वर मुझे लगातार दस वर्षों तक था। उससे कुछ होता नहीं। मुझे जिस प्रकारका ज्वर था वैसा ज्वर इवाको हो जानेपर तुम मुझे अस्थिर बना डालतीं।

मिस अफिलियाने देखा कि मेरीने भी इवाकी चिकित्सा का कोई सदुपाय न किया, तब वे विवश होकर चुप हो गयीं। अब इवाको बिस्तरपरसे भी उठनेकी शक्ति न रही, वह अत्यन्त दुर्बल हो गयी। तब सेन्टक्लेयरने उसके लिए चिकित्सक नियुक्त कर दिया है; इसलिए अब मेरीका सन्तान-वात्सल्य भी उद्दीप्त हो उठा है। अब मेरी कहने लगी-सेन्टक्लेयर, जिस प्रकार सम्पूर्ण विषयोंसे उदासीन रहते हैं, उससे मैंने पहिले ही समझ लिया था कि मुझे सन्तान-शोक सहना पड़ेगा। मैं अपनी अस्वस्थताके कारण अनेक कष्ट भोग रही हूँ, उन कष्टोंके ऊपर एक यह महाकष्ट, सन्तान-शोक भी सहना पड़ेगा, इससे बढ़कर और दुर्भाग्य की बात क्या हो सकती है। सात न पाँच, मेरे एक ही तो लड़की है, उसकी भी यह दशा हुई। ये सब बातें कहते-कहते वह दासियोंको डाँटने लगी। इवाके पालनमें कुछ कमीकी है-कहकर मामीको अत्यन्त तिरस्कृत किया करती। गर्वके मारे सेन्टक्लेयरके सामने मुहँ फुलाकर रोने लगी।

सेन्टक्लेयर उसे सान्त्वना देनेके लिए बोले—मेरी, तुम इतनी निराश मत हो। इवा अवश्य आरोग्य हो जायगी।

मेरीने कहा—सेन्टक्लेयर! मातृ-स्नेह कैसा होता है, यह तुम नहीं समझ सकते। माताका हृदय संतानके लिए कितना चिंतित रहता है, यह क्या तुम समझ सकते हो?

सेन्टक्लेयर—किन्तु तुम इतनी उतावली मत हो। इतना घबड़ानेकी कोई बात नहीं।

मेरी—भला ऐसी दशा देखकर मैं स्थिर रह सकती हूँ? तुम जिस प्रकार सब विषयोंमें हृदयपर पत्थर बाँधे हुए हो मेरा हृदय तो वैसा पत्थरका नहीं। सन्तानके नामसे

केवल यही एक लड़की है। इसे भी अस्वस्थ देखकर भला मैं कैसे शान्त रह सकती हूँ।

सेन्टक्लेयर—तुम शान्त हो। गरमीकी अधिकताके संयोगसे इसका यह रूप हो गया है। उससे कोई डर नहीं

मेरी—मेरे ये दग्ध प्राण समझकर भी नहीं समझते। तुम लोगोंकी भाँति स्थिर रह सकती, तब तो अच्छा ही होता।

दो-तीन सप्ताहमें इवाने कुछ आरोग्य लाभ किया। फिर वह चलने लगी। कभी-कभी पहिलेकी भाँति उद्यानमें टामके साथ जाकर बैठती। उसके पिताको अपार आनन्द प्राप्त हुआ। किन्तु मिस अफिलिया और चिकित्सक दोनों-ने यह समझ लिया कि यह आरोग्य-लाभ कुछ भी नहीं है। इवा स्वयं भी अपने मनमें यह समझने लगी थी कि यह पाप और अत्याचार-पूर्ण संसार उसे शीघ्र ही परित्याग करना पड़ेगा।

मानव-हृदयमें कौन यह मृत्यु-सम्वाद ले आता है? मुमूर्षु व्यक्तिके कानमें कौन कहता है कि उसके इस संसारमें रहनेके दिन समाप्त हो गये? किसने इवासे यह कह दिया कि शीघ्र ही उसे यह संसार परित्याग करना पड़ेगा? यदि कहो, कि मानव-हृदय-स्थित वह अनन्त, सुखाकांक्षिणी, ईश्वरकी सहवास-प्रयासिनी, अमृतकी अधि-कारिणी अविनासिनी आत्मा, मृत्युके आनेसे पूर्व ही जान जाती है, तो फिर यह बताओ कि संसारमें सभी लोग क्यों नहीं समझ पाते? इसके प्रत्युत्तरमें केवल यही कहा जा सकता है कि विषय-विमोहित, संसारमें आसक्त जीवोंके कान विषयोंके कोलाहलसे बहिरे हो जाते हैं। उनके नेत्र मोहान्धकारके कारण कुछ भी नहीं देख पाते। उस पाप-पूर्ण संसारमें रहनेकी प्रबल इच्छा मृत्युकी चिन्ताको उनके हृदय-

में प्रवेश नहीं करने देती। इसी लिए वे सब विषयासक्त लोग मृत्युके आगमनके पूर्व कभी जान नही पाते। मृत्युके आगमनकी पद्-ध्वनि वे कभी नहीं सुन पाते। किन्तु पर दुःख-दुःखिता, पवित्र-हृदया इवाञ्जेलिनके कान बालिका होनेपर भी, संसारके कोलाहलसे बहिरे नहीं हुए। आत्म-सुखकी इच्छाने उसके हृदयमें स्थान नहीं पाया। यह संसार उसे दुख-दायक स्थान जान पड़ता है। अतएव मंगलमय, परमेश्वर उसका दुख दूर करनेके लिये जो उसका अमृत-धाममें आह्वान करते हैं, उसे वह सुस्पष्ट रूपसे सुन रही है। यह संसार छोड़ना पड़ेगा, यह सोचकर वह किञ्चिन्मात्र भी दुखी न हुई। स्नेहमय पिताको छोड़ना पड़ेगा तथा उसकी मृत्युसे पिता शोकसे विह्वल हो जायँगे, केवल यही भावना समय-समयपर उसके हृदयको व्यथित करदेती है।

एक दिन टामके पास बाइबिल पढ़ते-पढ़ते इवा अकस्मात् कह उठी—टामकाका अब मैं अच्छी तरह समझती हूँ कि यीशु ख्रीष्टने क्यों सब लोगोंके मंगलके लिये प्राण-विसर्जन किया था।

टाम—तुमने कैसे जाना?

इवा—उनके जो भाव थे, मेरे हृदयमें भी वही भाव उदित हो रहे हैं।

टाम—वे कौनसे भाव हैं मिस इवा? मैं तो तुम्हारे बात का तात्पर्य नहीं समझ पाता।

इवा—टामकाका, मैं तुम्हें भली-भाँति समझाकर न कह सकूँगी, किन्तु मैंने जब तुम्हें तथा अन्यान्य सिकड़ीसे बँधे हुए दास-दासियोंको जहाजपर देखा था, तब मेरे मनमें बड़ा दुःख हुआ था। तुम लोगोंमेंसे उस समय कोई तो अपने

सन्तान-सन्ततिसे बिछुड़ जानेके कारण, अपनी सन्तानके लिए रोता था, कोई-कोई अपनी स्त्रीके लिए रो रहा था, कोई अपने स्वामीके शोकसे रो रहा था और वह एक लड़का माँ, माँ, चिल्लाकर रो रहा था। इसके पश्चात् उस दिन तुमसे प्रूकी कथा सुनकर मुझे बड़ा दुख हुआ था। टामकाका इन सब विषयोंपर विचार करनेपर मन अस्थिर हो उठता है। मेरे मनमें बड़ा कष्ट होता है। इसी लिए मैं सदैव यह सोचती हूँ कि यदि मेरे मर जानेसे भी इन दासोंका उद्धार हो जाय तो मेरा मर जानाही अच्छा है। यीशु खीष्ट बड़े दयालु थे। उन्होंने इस संसारके लोगोंका दुख और कष्ट देखकर अपने प्राण-विसर्जन करके उनके दुख निवारणकी चेष्टा की। टामकाका मैं निश्चय-पूर्वक कहती हूँ कि यदि इन लोगोंका कष्ट मेरे मरनेपर दूर हो जाय तो मैं मरनेको प्रस्तुत हूँ।

टाम बड़े विस्मयके साथ बालिकाके मुखकी ओर देखता रह गया। किन्तु इवा उस समय पिताको पुकारनेका शब्द सुनकर बरामदेमें चली गयी। टामकी आँखोंसे आंसू बहने लगे। वह आँखें पोंछते-पोंछते मामीके पास जाकर बोला—मामी! मिस इवाको अब और इस संसारमें न रख सकोगी। इनके ललाटपर विधाताका यही लेख है।

मामी—यह मैंने पहिले ही बतला दिया था। ऐसी दयालु लड़की क्या कभी बचती हैं। बेटी हम सब लोगोंको अनाथ करके चली जायगी।

इवा अपने पिताके पास आयी। उसके पिताने उसे कसकर अपने हृदयसे लिपटा लिया और कहा—अब तो तुम्हें कोई कष्ट नहीं है? इवाने कहा—बाबा, मैं बहुत दिनोंसे तुमसे एक बात कहनेका विचार कर रही हूँ। अब मैं अपने शरीरके

दुर्बल होनेके समय भी कहना चाहती थी । यह बात सुन-कर सेन्टक्लेयरका हृदय कांप उठा। इवा अपने पिताकी गोदमें बैठकर कहने लगी—बाबा, मुझे शीघ्र ही तुम्हें छोड़ना पड़ेगा। मुझे जन्मभरके लिए विदाई दो। कहते-कहते इवाने एक दीर्घ निःश्वास छोड़ी। सेन्टक्लेयरके हृदय-में मानों वाण बिंधा, किन्तु मर्मागत भावको प्रकट न कर वे कहने लगे—बेटी! तुम ये सब दुःश्चिन्ताएँ छोड़ दो यह देखो, तुम्हारे लिए मैं कैसे अच्छे चित्र लाया हूँ।

इवाने चित्रोंको लेकर एक ओर रख दिया। कातर स्वरसे वह कहने लगी—बाबा, अब तुम क्यों झूठी आशाके द्वारा ठगा रहे हो? मैं निश्चय जानती हूँ कि मेरा शरीर अब अच्छा न होगा। थोड़े ही दिनोंमें मुझे यह संसार छोड़कर चली जाना पड़ेगा। बाबा, यह संसार छोड़कर चली जानेमें मेरी कुछ भी अनिच्छा नहीं है। केवल तुम्हारे और बन्धु-बान्धवोंके लिए कष्ट होता है। मैं कितने ही दिनोंसे यह संसार त्याग देनेकी इच्छा कर रही हूँ।

सेन्टक्लेयर इवाको हृदयसे लगाकर कहने लगे—तुम्हारे मनमें क्यों इतना दुख है? सुख-शान्तिके लिए जो आवश्यक है, मेरे घरमें तो वह सभी कुछ है। तुम जब जो चाहती हो, मैं उसी समय वह तुम्हें देता हूँ।

इवा—बाबा! यह सब सुख छोड़कर, मेरी इच्छा स्वर्ग जाने की है। केवल तुम्हारे लिए मेरे प्राण घबड़ाते हैं। सोचती हूँ तुम्हें छोड़कर कैसे जाऊँ? तुम्हें छोड़नेमें बड़ा कष्ट होता है।

सेन्टक्लेयर—इवा संसारमें क्या अत्याचार है? किसने तुम्हें इतना दुखी किया है?

इवा—बाबा! प्रति दिन कितने अत्याचार होते हैं, देखते

नहीं हो ! मुझे अपने दास-दासियोंके लिए वड़ा कष्ट होता है। ये सब मुझे बहुत प्यार करते हैं। मेरी इच्छा है कि वे स्वाधीन हों। इन लोगोंको दासत्व-प्रथासे मुक्त कर देना भी अच्छा है।

सेन्टक्लेयर—इवा ! हमारे दासोंको क्या कष्ट है ?

इवा—बाबा ! अभी इन लोगोंको कष्ट नहीं है। पर विचार कर देखो कि तुम्हारी मृत्यु हो जानेपर इनकी क्या दशा होगी। सब मालिक तो तुम्हारी तरह नहीं हैं। अल्फ्रेड चाचा तो तुम्हारी तरह नहीं हैं। माँ तुम्हारी तरह नहीं हैं। इसके पश्चात् देखो प्रूका मालिक कैसा था। दूसरे-दूसरे मालिक लोग दास-दासियोंके साथ भयानक निष्ठुराचरण करते हैं। यह कहते-कहते इवा रो उठी।

सेन्टक्लेयर—बेटी, दूसरेका दुख देखकर तुम सहजमें ही मर्माहत हो पड़ती हो। तुम्हारा मन थोड़ेमें ही पिघल जाता है। तुम्हें ये सब बातें सुनने देता हूँ, यह बड़ी भूल करता हूँ।

इवा—बाबा ! तुम्हारे मुँहसे यह बात सुनकर मुझे और भी दुःख होता है। संसारमें कितने लोग, कितना ही कष्ट सहन कर रहे हैं, कितना दुःख पा रहे हैं, उसके लिए तुम्हें कष्ट नहीं होता। किन्तु उन लोगोंके कष्टकी कथा सुन मुझे जो कुछ दुःख होता है, इससे तुम्हें कष्ट होता है। तुम मेरे दुःखसे दुखित होते हो, किन्तु उन लोगोंके दुःखके विषयमें एक बार भी विचार नहीं करते। बाबा ! इसमें स्वार्थपरता भरी है। उन हतभाग्योंकी कथा मैं क्यों न सुनूँ ? मुझे तो उचित है कि इन लोगोंके कष्टकी बात सुनकर, उसे दूर करनेकी चेष्टा करूँ। इन लोगोंकी दुख-कहानी सुनकर मेरे हृदयमें शूल लग जाता है। बाबा, यह दासत्व-प्रथा उठाकर इन लोगोंका उद्धार करनेका क्या कोई उपाय नहीं है ?

सेन्टक्लेयर—यह बड़ा कठिन कार्य है। दासत्व-प्रथा अत्यन्त निन्दनीय है, इसमें कोई सन्देह नहीं। अनेक लोग ऐसा समझते हैं, और मैं स्वयं भी इसे निन्दनीय समझता हूं। पर इस प्रथाको उठा देना मैं बड़ा कठिन देखता हूं। इसका कोई उपाय ही नहीं सूझता।

इवा—बाबा तुमतो बड़े दयालु हो। सभीपर दया करते हो। सभीको प्यार करते हो। तुम सबके घर-घर जाकर प्रत्येकसे इस दासत्व-प्रथाको उठा देनेकी बात कह नहीं सकते? मेरे मर जानेपर तुम निश्चय ही मेरे शोकसे शोकित होकर इस दासत्व-प्रथाको उठा देनेके लिए सबसे कहोगे।

इवाकी यह बात सुनकर सेन्टक्लेयरके नेत्र स्थिर हो गये। बल-पूर्वक इवाको हृदयसे लगाकर गद्गद कंठसे कहने लगे—कैसे सर्वनाशकी बात कहती हो! तुम मरोगी? इस संसारमें तुम्हारे सिवाय मेरा और क्या है? मैं किसके लिए यह पापी जीवन धारण करता हूं? तुम्हें छोड़कर मैं एक मिनट भी जीवन धारण न कर सकूंगा। बेटी, फिर ऐसी बात न कहना।

इवा—बाबा, इस दुखिनी प्रूके एक छोटे बच्चेके अतिरिक्त और कोई इस संसारमें था? वह तो उस सन्तानके प्रेममें पागल हो गयी थी। सन्तानके मर जानेपर भी वह उसका रोना सुनती थी। बाबा, तुम मुझे जिस प्रकार प्यार करते हो, प्रू भी अपनी सन्तानको ऐसे ही प्यार करती थी।

यह कहते-कहते इवाकी आँखोंसे आँसुओंकी धारा बहने लगी। उसका गला रुंध गया। उसने अस्फुट स्वरसे रोते-रोते फिर कहा—बाबा, इनके उद्धारकी चेष्टा करो। हमारी मामी अपने बच्चोंसे न मिल सकनेके कारण सदा रोती

रहती हैं। टाम अपनी सन्तानके लिए सदा दीर्घ निस्वास फेंकता है; बाबा, यह सब मुझसे सहा नहीं जाता।

इवाको इस प्रकार रोते देखकर सेन्टक्लेयर अत्यन्त दुखित होकर कहने लगे—बेटी! तुम रो-रो कर और शरीर क्षीण मत करो। इस प्रकार मृत्युकी आकांक्षा मत करो। मैं निश्चय कहता हूँ कि तुम्हारी बात पालन करनेकी यथा-साध्य चेष्टा करूँगा।

सेन्टक्लेयरकी बात सुनकर इवाने उसी क्षण कहा—बाबा, तुम मेरे सामने प्रतिज्ञा करो कि टामको दासत्व-शृंखलासे मुक्त कर दोगे। इस समय मेरा............जिस समय मेरी मृत्यु हो, उसी समय मुक्त कर देना।

सेन्टक्लेयर—बेटी! तुम शान्त हो। तुम जो चाहोगी, वही करूँगा।

इवाने अपना विकसित मुख-कमल अपने पिताके मुखपर रखकर उनका गला जोरसे दबाकर पकड़ लिया और कहने लगी—बाबा! तुम्हारा मेरा एक साथ जाना ही अच्छा था। मेरी बड़ी इच्छा है कि हमलोग इकट्ठे ही जायँ।

सेन्टक्लेयर—बेटी! कहाँ जाओगी?

इवा—उसी अमृत धाममें, उसी स्वर्ग-राज्यमें। बाबा उस स्थानमें रोग, शोक, दुःख, यंत्रणा कुछ भी नहीं है। वहाँ कोई किसीके प्रति अत्याचार नहीं करता। सभी सबको प्यार करते हैं।

इवा उस स्वर्ग-राज्यकी बात ऐसे सरल विश्वासके साथ कह रही थी, कि उसे सुनकर यही जान पड़ता था। मानो वह वहाँ अनेक बार हो आयी हो, उस स्थानसे वह चिरपरिचित हो। उसने फिर पूछा—बाबा, तुम वहाँ न जाओगे?

सेन्टक्लेयर इवाको तब अपने हृदयसे लगाकर चुपचाप रह गये। इवाने दृढ़ताके साथ फिर कहा—बाबा ! तुम निश्चय ही मेरे साथ जाओगे !

सेन्टक्लेयर—तुम्हारे चले जानेपर मैं अवश्य ही जाऊँगा। तुमको छोड़कर मैं यहाँ न रहूँगा। मैं कदापि तुम्हें न भूलूँगा।

इन सब बातोंके पश्चात् सेन्टक्लेयर उस स्नेहमयी मूर्तिको अपने हृदयसे लगाये चुपचाप बैठे रहे। देखते-देखते सायं-काल आगया। अन्धकारने क्रमश घनीभूत होकर इवाकी प्रशान्त मूर्ति तथा विशाल नेत्रोंको समावृत्त कर लिया। इस-लिए इवाकी स्नेहमयी मूर्ति उसके पिताके नेत्रोंसे ओझल हो गयी। किन्तु उसका मधुर स्वर देववाणीकी भाँति उसके पिताके कर्ण-कुहरोंमें प्रवेश करने लगा। उनका गत-जीवन उस समय उनके स्मृति-पथपर आरूढ़ हुआ। उनकी माता-की प्रार्थना उन्हें स्मरण हो आयी। उनके बाल्य-जीवनकी आशाएँ तथा संसारके हित साधनकी अभिलाषा, सन्सारमें प्रवेश करनेपर किस प्रकार समूल नष्ट हो गयी, किस प्रकार नास्तिकता हृदयमें स्थान पाने लगी, यह सब बातें क्रमशः उनके हृदयमें उदय होने लगीं। वे अनेक विषयोंपर विचार करने लगे, किन्तु मुखसे शब्द न निकले।

अन्तमें जब अन्धकारने सम्पूर्ण दिशाओंको आच्छादित कर लिया, तब इवाको गोदमें उठाकर अपने शयन-गृहमें ले गये, एवं दास-दासियोंको विदा करके, स्वयं इवाको गोदमें लेकर सो रहे। जिसमें इवाको नींद आजाय, इसलिए लोरी गाने लगे।

अट्ठाइसवाँ परिच्छेद

—•—

"प्रेमवह्नि संस्पर्शसे पिघलत कठिन पषाण।"

रविवारके दिन अपराह्नमें सेन्टक्लेयर वरामदेमें एक कोचपर सोये हुए चुरुट पी रहे थे। वरामदेके सामनेवाले कोठेपर उनकी स्त्री मेरी एक सोफेपर वैठी हुई थी। मेरीके हाथमें एक अत्यन्त सुन्दर जिल्द वँधी हुई प्रार्थना-पुस्तक थी। आज रविवार है, इसलिए धर्म-पुस्तक अन्ततः हाथमें रखनी होगी। पुस्तक खुली हुई सामने रखी है। मेरी समय-समयपर दो-एक वार पुस्तककी ओर दृष्टिपात करती है। मिस अफिलिया इवाको साथ लेकर किसी मेथोडिस गिरजेमें गयी है। इसलिए घरमें अगष्टिन और उनकी स्त्रीके अतिरिक्त और कोई नहीं था। कुछ समयके पश्चात् मेरी वोली—अगष्टिन मुझे जान पड़ता है कि मुझे हृत्पिड रोग हो जायगा। हमारे उन पुराने डाक्टर पोसी साहेवको वुलाना पड़ेगा।

सेन्टक्लेयर—डा० पोसीको वुलानेका तो कोई प्रयोजन नहीं दिखाता। जो डाक्टर इवाकी चिकित्सा करता है, वह तो एक अच्छा आदमी जान पड़ता है।

मेरी—ऐसे भयानक रोगमें मैं नये डाक्टरके भरोसे नहीं रह सकती। मै समझती हूँ कि मेरा हृत्पिड रोग कुछ अधिक हो गया है। शरीरमें सदैव पीड़ा होती रहती है, कुछ अच्छा नहीं लगता।

सेन्टक्लेयर—तुम्हें हृत्पिड-रोग हुआ है, ऐसा मुझे तो नहीं जान पड़ता।

मेरी—तुम्हें यह कुछ भी न समझ पड़ेगा, यह मैं जानती हूं। इवाके सिरमें थोड़ीसी पीड़ा होनेसे ही तुम सशंक हो जाते हो। किन्तु मुझे कोई संकटापन्न रोग हो जानेपर भी तुम कभी बुलाकर नहीं पूछते।

सेन्टक्लेयर-तुम श्रद्धा-पूर्वक हृत्पिड-रोगकी आकांक्षा करो, मैं उसमें बाधा न दूंगा। तुम्हें यदि हृत्पिड-रोग यड़े श्रद्धाकी वस्तु समझ पड़ता है, तो हो न, उससे मेरी हानि ही क्या है!

मेरी—तुम विश्वास करो या न करो, किन्तु मैं सत्य कहती हूं, कि इधर जो इवाको लेकर कई दिन तक अस्त-व्यस्त थी, इसीसे मेरा हृत्पिड-रोग बढ़ गया।

सेन्टक्लेयरने प्रकाश्यमें और कुछ न कहा। वह मुँह फेर कर बैठ गये और चुरुट पीने लगे। उन्होंने मनमें कहा—इवा-को लेकर तुम इतनी व्यस्त थी कि एक बार भी उसकी खोज न ली।

इसके कुछ समयोपरांत मिस अफिलिया इवाको साथ लेकर घर लौट आयी। मिस अफिलिया गाड़ीसे उतरकर अपने कमरेमें चली गयी। इवा अपने पिताके पास जाकर उनकी गोदमें बैठ गयी और गिरजामें जो विशेष उपदेश हुआ था, वही कहने लगी। इतनेमें ही मिस अफिलियाके कोठेपर से गर्जन-तर्जनका शब्द सुनायी पड़ने लगा। सेन्टक्लेयर कह उठे—न जाने टप्सीने क्या दुष्टता की है। देखो, बहिन बहुत बिगड़ रही हैं। इतनेमें ही मिस अफिलिया टप्सीको गला पकड़ क्रोधमें भरी हुई, सेन्टक्लेयरके पास ले आईं।

सेन्टक्लेयरने पूछा—बात क्या है?

अफिलियाने उत्तर दिया—बात यही है कि मैं इस आ-

फलको लेकर अपना शरीर अब जलाना नहीं चाहती। मेरे धैर्यका अन्त हो गया। यह रक्त-मांसका शरीर और कितना सहे? मैंने इसके हाथमें संगीतकी एक पुस्तक देकर, इससे उसे पढ़नेको कहा था। मेरे चली जानेपर यह पुस्तक फेंक कर इधर-उधर खेलने न लगे, इसलिए ताला बन्द कर दिया था। किन्तु कैसी दुष्ट लड़की है। मेरे चली जानेपर डेस्कसे मेरी ताली निकालकर सन्दूक खोल लिया। और मेरे रेशमी कपड़े काट-कूटकर अपनी गुड़ियोंके लिए जामा सी डाला। मैंने ऐसा भयानक काण्ड इस जीवनमें कभी नहीं देखा। यह बात सुनकर मेरी बोल उठी--बहिन! मैं तो पहिलेसे ही कहती आ रही हूँ कि बिना कठोर शासनके ये सब नहीं सुधर सकते। उसी समय सेन्टक्लेयरके प्रति तिरस्कार सूचक कटाक्ष-पात कर फिर कहने लगी—यदि मेरी अपनी इच्छा चलने पाती तो मैं अभी ही इसे दण्ड-गृहमें भेज देती। बेत खाते-खाते यह खड़ी न हो सकती, तो भी बेत मारनेकी आज्ञा देती।

सेन्टक्लेयर—यदि तुम्हारे इच्छानुसार कार्य होने पाता, तो मुझे कुछ भी संदेह नहीं है कि तुम वैसा ही करती। स्त्रियोंका शासन बड़ा ही मृदुल है, बड़ा ही मधुर है। मैं अपने देशमें ऐसी दस स्त्रियाँ भी नहीं देखता जो, यदि वे अपने मत और अपनी प्रणालीके अनुसार बिना किसी बाधाके कार्य करने पावें तो, दो-चार घोड़े और दो-चार गुलामोंको मारते-मारते अधमरा न कर डालें। पुरुषोंकी तो बात ही न्यारी है, उन्हें क्या कहूँ—

मेरी—सेन्टक्लेयर! तुम्हारे अनिर्दिष्ट प्रणालीके अनुसार नौकरोंको शिक्षा देनेसे कोई फल न होगा। अफिलिया

बहिनकी बुद्धि विलक्षण है। इन्होंने इतने दिनपर समझ पाया है, कि मैं जो कुछ कहती हूँ, वह ठीक है या नहीं।

अन्यान्य गृहिणियोंकी भाँति मिस अफिलियाको भी कभी-कभी क्रोध आ जाता था। विशेषकर टप्सी उन्हें जैसी यंत्रणा दे रही थी, उससे मनुष्य-मात्रको क्रोध आ सकता है। किन्तु मेरी जब उनकी बुद्धिमानीकी प्रशंसा करने लगी, तब वे लज्जाका अनुभव करने लगीं, इसलिए उनकी क्रोधाग्नि क्रमशः शान्त होने लगी। उन्होंने कहा—छिः! इसे दण्ड-गृहमें भेजनेकी प्रवृत्ति मेरी कदापि न होगी, किन्तु अगष्टिन! मैं इसे लेकर क्या करूँ, कुछ समझमें नहीं आता। मैं इसे कितना ही पढ़ाती हूँ, कितना ही उपदेश देती हूँ, यहाँ तक कि इसे पढ़ाते-पढ़ाते मेरे प्राणान्तकी पारी आ गयी, कितने ही दण्ड भी दिये, पर फिर भी यह जैसी दुष्ट थी वैसी ही दुष्ट रह गयी।

सेन्टक्लेयरने बालिकाको सामने बुलाकर कहा—क्या है, टप्सी-बन्दर! इधर आओ। टप्सी उनके सामने आकर अपनी काली-काली आँखोंसे टुकुर-टुकुर देखने लगी। उसके मुखपर धूर्तताके साथ भय भी था। सेन्टक्लेयरने उससे कहा—टप्सी, तू दुष्टता क्यों करती है?

टप्सी—जान पड़ता है, मेरा मन बड़ा बुरा है। मिस अफिलिया तो यही कहती हैं।

सेन्टक्लेयर—तू देखती नहीं, मिस अफिलिया तुम्हारे लिए कितना उद्योग करती हैं। वे कहती हैं कि उन्होंने यथा-साध्य सब करके देख लिया।

टप्सी—जो आज्ञा। यही तो! पहिलेकी मालकिन भी तो यही कहती थीं। वे मुझे इस समयकी अपेक्षा बहुत अधिक मारती थीं। मेरे बालको उखाड़ लेतीं, किवाड़ों पर मेरा सिर ठुकरा देतीं। किन्तु इन सबसे भी कुछ लाभ

न हुआ। यदि मेरे सब बाल खींचकर उखाड़ डालें, तो भी जान पड़ता है कि मेरा कुछ सुधार न होगा। बाबा! मैं बड़ी दुष्ट हूँ! मैं काली निग्रो ही हूँ।

अफिलिया—अब इसे सुधार सकनेकी आशा छोड़ देती हूँ। मैं अब और यह यंत्रणा नहीं सह सकती।

सेन्टक्लेयर—अच्छा, मैं केवल एक बात पूछना चाहता हूँ।

अफिलिया—कौन सी बात?

सेन्टक्लेयर—यही कि धर्मशास्त्रके द्वारा गृहस्थित अपने अधिकारमें रहनेवाली एक अज्ञान बालिकाका उद्धार नहीं कर सकतीं, तो फिर उसीकी भाँति सैकड़ों हजारों अज्ञान लोगोंके उद्धारके लिए दो-एक गरीब पादरियोंको भेज देनेसे क्या लाभ! यह बालिका क्या अज्ञानी अन्यधर्मवालोंका एक दिव्य उदाहरण नहीं है?

मिस अफिलियाने इस बातका तुरंत ही कुछ उत्तर न दिया। इवा इतनी देरतक चुपचाप खड़ी होकर, इनलोगोंकी बात चीत सुन रही थी। उसने इस बातके पश्चात् हाथके संकेतके द्वारा टप्सीको अपना अनुगमन करनेके लिए कहकर, पासके एक छोटे निर्जन कमरेमें प्रवेश किया।

इवा तथा टप्सीके अदृश्य हो जानेपर, सेन्टक्लेयरने कहा—इवा क्या कर रही है, एक बार देखना चाहिए। यह कहकर चुपचाप उस कमरेके द्वारपर गये और धीरे-धीरे परदा हटाकर किवाड़के शीशेसे भीतर देखने लगे। देखते ही अँगुलीके इशारेसे मिस अफिलियाको वहाँ आनेके लिए कहा। मिस अफिलिया और सेन्टक्लेयरने द्वारपरसे देखा कि इवाने टप्सीको अपने सामने बिठा रखा है। टप्सीके मुखपर, उसका स्वाभाविक, चिन्ताशून्य, अन्य-मनस्क, अक्षुब्धताका

भाव है। किन्तु इवाका मुख स्नेह तथा आग्रहसे उद्भासित हो रहा है। उसके दोनों बड़े-बड़े नेत्र जल-पूर्ण हैं।

इवा कह रही थी, टप्सी कैसे तुम्हारा स्वभाव ऐसा ख़राब हो गया? तुम भली बननेकी चेष्टा क्यों नहीं करती। टप्सी, क्या तुम किसीको प्यार करती हो?

टप्सी—प्यार करनेकी बात तो, मैं कुछ जानती ही नहीं। मिश्रीको प्यार करती हूँ, और भी मीठी चीजोंको प्यार करती हूँ। यही तो!

इवा—तुम अपने माँ-बापको भी प्यार करती हो?

टप्सी—आप तो जानती हैं कि मेरे माँ-बाप थे ही नहीं। मैंने तो एक दिन आपसे कहा था।

इवा—हाँ, हाँ, तुमने कहा था, ठीक है। तुम्हारे क्या भाई है, या बहिन अथवा मौसी कोई है?

टप्सी—कोई नहीं। कभी कोई न तो माँ-बाप थे और न कभी कोई दूसरा ही था।

इवा—किन्तु टप्सी, यदि तुम अच्छी लड़की बनो तो ठीक है।

टप्सी—किसी प्रकार भी मैं निग्रोके सिवा और कुछ हो ही नहीं सकती। यदि मेरा यह काला चमड़ा उतरकर सफेद हो जाय, तो मैं कुछ सुधरनेका प्रयत्न करूँ।

इवा—काली होनेपर भी टप्सी, लोग तुम्हें प्यार कर सकते हैं। तुम यदि सुधर जाओ, तो मिस अफिलिया तुम्हें बहुत चाहने लगें।

मिस अफिलिया उसे चाहेंगी, यह बात सुनकर टप्सी हँस पड़ी। उसकी हँसीका यह अर्थ था कि "तुम्हारी यह बात विश्वासके योग्य नहीं है।"

इवा—टप्सी तू हँसी क्यों? तू क्या समझती है कि भली हो जानेपर भी मिस अफिलिया तुझे नहीं चाहेंगी?

टप्सी—नहीं, मैं निग्रो हूँ, मुझे देखनेमें भी उन्हें घृणा लगती है। मुझसे छू जानेसे वे वैसे ही चौंकती हैं, जैसे एक आदमी शरीरपर मेंढकके गिरनेसे चौंकता है। कोई भी हम निग्रोलोगोंको प्यार नहीं कर सकता; और निग्रो लोग भी कभी कुछ कर नहीं सकते। इसके लिए मुझे कुछ दुःख भी नहीं होता।

टप्सीने यह कह कर हँसना आरम्भ किया। इवाका हृदय उछल पड़ा। अपने शीर्ण छोटे हाथ, टप्सीके कँधेपर रखकर स्नेह-भरे शब्दोंमें कहने लगी—

टप्सी, दुःखिनी टप्सी, मैं तुझे प्यार करती हूँ। तुम्हारे माँ-बाप नहीं हैं, बन्धु-बान्धव नहीं हैं, इसीसे मैं तुम्हें प्यार करती हूँ। तू दुःख और अत्याचारको सहन करती है, अतएव मैं तुझे प्यार करती हूँ। तू किसी प्रकार भी अच्छी हो जाय, यही मैं चाहती हूँ। तू देखती है कि मेरा शरीर बड़ा अस्वस्थ है। टप्सी, अब मैं और अधिक दिन न बचूँगी। तुम्हारे स्वभावका दोष देखकर मुझे बड़ा कष्ट होता है। केवल मेरे अनुरोधसे तू अच्छी होनेकी चेष्टा कर, मैं अब बहुत थोड़े ही दिनों तुम लोगोंके पास रहूँगी।

कृष्णाङ्ग बालिकाके नेत्र आँसूसे भर गये। एक-एक करके आँसूओंकी बड़ी-बड़ी बूँदें दूसरी बालिकाके तुषार-शुभ्र छोटे-छोटे हाथोंपर आकर गिरने लगीं। इसी समय विश्वासकी एक किरण-रेखाके स्वर्गीय प्रेमालापकी एक कणिकाने उसी अज्ञानान्ध, अविश्वास-पूर्ण आत्माके बीचमें प्रवेश किया। टप्सी दोनों घुटनोंके बीचमें अपना सिर रखकर रो रही है। और वह लावण्यमयी बालिका स्नेह-पूर्ण नेत्रोंसे एकटक उसकी ओर देख रही है—कोई एक ज्योतिर्मयी दैवीमूर्ति आकर

एक पापात्माको पाप-पंकसे उठा लेनेकी चेष्टा कर रही, है यही मानो उसका एक सजीव चित्र है।

इवा कहने लगी-दुखिनी टप्सी! क्या तू जानती नहीं कि ईश्वर हम सबको प्यार करते हैं? मेरी ही तरह वे भी तुझे प्यार करते हैं। हम लोगोंसे भी अधिक वे तुझे प्यार करते हैं, क्योंकि वे हम लोगोंसे भी अधिक अच्छे हैं। भले होनेसे वे तुम्हारी सहायता करेंगे। इसके पश्चात् तुम स्वर्ग जा सकोगी। स्वर्गमें चिरकाल तक ईश्वरकी दूती बनकर रहोगी। तुम्हारे कृष्ण-चर्मके कारण कुछ आये-जायेगा नहीं। ये सब बातें एक बार विचार कर देखो तो टप्सी, टामकाका जिन सब ज्योतिर्मय आत्माओंके विषयमें गान गाया करता है, तू भी उन्हीं आत्माओंकी भाँति हो सकती हो।

मिस इवा! ओ मिस इवा! मैं चेष्टा करूँगी—मैं चेष्टा करके देखूँगी। मैंने पहिले ये सब बातें कभी सोची भी नहीं थीं। यह कहकर टप्सी फिर रोने लगी।

इसी समय सेन्टक्लेयर परदा छोड़कर मिस अफिलिया-से कहने लगे कि, यह दृश्य देखकर मुझे माताका स्मरण हो आया। माताने जो कुछ कहा था, वह सब सत्य निकला। मैं यदि अन्धोंको नेत्र प्रदान करना चाहता हूँ, तो खीष्टने जो कुछ किया था। वही करना पड़ेगा, अन्धोंको निकट बुलाकर उनके शरीरपर अपना हाथ लगाना पड़ेगा।

मिस अफिलियाने कहा-निग्रो लोगोंसे हमें कितनी घृणा है! सचमुच ही हमें इस बालिकाको अपना शरीर नहीं छूने दे सकतीं। किन्तु वह हमारे मनका भाव समझ सकती है कि नहीं, यह नहीं जानती।

सेन्टक्लेयर—यह तो एक बालक भी अच्छी प्रकारसे समझ

सकता है। इन लोगोंसे यह भाव छिपाया नहीं जा सकता। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि यदि तुम किसी बालकसे मन ही मन घृणा करो, तो फिर, उसके उपकारके लिए चाहे तुम कितना भी प्रयत्न और हित-साधन क्यों न करो, वह तुमसे प्रेम नहीं कर सकता। जबतक तुम्हारे मनमें उसके प्रति स्नेह-भाव न उत्पन्न होगा। तबतक उसके हृदयमें तुम्हारे प्रति कृतज्ञताका थोड़ा सा भाव पैदा न होगा। यह बड़े आश्चर्यकी बात है, किन्तु साथ ही साथ सत्य भी है।

अफिलिया—मैं इसे कैसे दूर करूँ, यह मैं नही जानती। निग्रो हम लोगोंको पसन्द नही करते, विशेषतः यह बालिका।

सेन्टक्लेयर—इवाने तो दूर कर दिया।

अफिलिया—इवा स्नेहमयी है! इवाने तो खीष्टका ही अनुकरण किया है। मैं यदि इवाकी तरह हो सकती! इवासे भी मैं कुछ शिक्षा ले सकती!

सेन्टक्लेयर—ऐसा होनेपर भी, क्षुद्र शिशुके पास वृद्धका शिष्यत्व कुछ नयी बात नहीं है।

उन्तीसवाँ परिच्छेद

मृत्यु

संसारमें प्रकृत वीर कौन है? जिसने अपने बाहुबलसे अनेक राज्योंको विजय किया है, सहस्रों नर-नारियोंपर अपना आधिपत्य जमाया है, वह क्या प्रकृत वीर है? जिसके

भयसे दुर्बल मनुष्य सदा डरते रहते हैं, जिसकी निष्ठुरताकी याद आनेसे हृदय काँप उठता है, वह क्या प्रकृत वीर है ? नहीं, कदापि नहीं। मृत्यु जिसे डरा नहीं सकती, जो सदा हँसते-हँसते मरनेके लिए तैयार रहता है, संसारकी भलाईके लिए अपने प्राण तक देनेमें भी नहीं हिचकता जो प्रेम-राज्यका विस्तारकर अदम्य हृदयोंको भी वशमें कर लेता है, वही प्रकृत वीर है।

यह जो शूद्र बालिका रोग-शय्यापर पड़ी हुई है, कठिन पीड़ा सहती रहनेपर भी जो दूसरेके दुःखको देखकर आँसू बहाती है, दूसरेके दुःखके सोचमें जो अपना दुःख भूल जाती है, इसमें क्या सच्चे वीरके लक्षण लक्षित नहीं हैं ?

पाठक ! आइए, इवाञ्जेलिनके शयन-गृहमें चलें। देखें इवाञ्जेलिन क्या कर रही है, उसकी चिन्तामें क्या है ?

आज इवा बहुत अधिक निर्बल हो गयी है। बरामदे तक चलकर जानेकी शक्ति भी उसमें नहीं।

सन्ध्या होती जा रही है। वह अपनी छोटी बाइबिलको कभी खोलती है, कभी बन्द करती है और कभी थोड़ा पढ़ती भी है। इसी समय अपनी माताकी बोली सुनकर इवाने पुस्तक एक दम बन्द कर दी और सुना कि उसकी माता कर्कश-स्वरमें कह रही है—क्यों री फिर तू दुष्टता करती है ? फूल क्यों नोच-नाच डाला ?

इसके बाद ही थप्पड़ मारनेका शब्द सुन पड़ा। इसके पश्चात् एक और शब्द सुनायी पड़ा। वह टप्सीका था। टप्सीने कहा—जी, ये मैंने मिस इवाके लिए.................

"हाँ ! मिस इवाके लिए तूने ये फूल तोड़े हैं ? दोष छिपानेका अच्छा बहाना निकाला ! तू समझती है कि मिस इवा तुझसे फूल लेना चाहती हैं ? जा पाजी, यहाँसे चली जा !"

उठनेकी शक्ति न रहने पर भी क्षण भरमें इवा शय्यापरसे उठकर बरामदेमें आयी और सजल नेत्रोंके साथ मातासे बोली—माँ! उसे मारकर भगाओ मत। ये फूल लेनेकी मेरी इच्छा है। फूल मुझे दो।

माता—क्यों इवा! तुम्हारे घरमें तो बहुतसे फूल थे न?

इवा—मैं और चाहती हूँ। टप्सी सब फूल यहाँ ले आओ।

टप्सी अभी तक क्रोध और अभिमानसे खड़ी थी। इवाकी बात सुनकर धीरे-धीरे जाकर उसने संकोचसे इवाके हाथमें फूल दे दिये। पहिलेका वह निःसंकोच तथा निर्भीक भाव अब उसके मुखपर न था।

इवाने फूलोंको हाथमें लेकर कहा—बड़ा सुन्दर गुच्छा बाँधा है!

टप्सीने वास्तवमें बड़े यत्नसे फूल चुनकर तथा पत्ते साजकर गुच्छा बनाया था। इवाकी बात सुनकर उसका मुख प्रफुल्लित हो गया।

इवाने कहा—टप्सी, तू बड़ी सुन्दरतासे फूल सजाना जानती है। मेरे पास एक फूलदान है, उसमें फूल नहीं हैं। तू इस फूलदानमें प्रति दिन फूल सजा दिया कर।

मेरीने कहा—कैसा आश्चर्य है! भला वह क्या फूल सजावेगी।

इवाने पूछा—मा! टप्सीके फूल सजा देनेमें तुम्हारी क्या हानि है? तुम टप्सीको सजाने दो।

मेरीने कहा—तुम्हारी जो इच्छा है, वही होगा। तत्पश्चात् टप्सीसे कहा, तुझे मिस इवा जो कुछ कहें, उसे मन लगाकर किया कर।

टप्सीने विनीत भावसे कुछ सिर झुकाकर आज्ञा ग्रहण की। जाते समय इवाने देखा कि उसके कलूटे गालोंपर आँसू बह रहे हैं।

तब इवाने कहा—माँ ! समझती हूँ कि टप्सी मेरे लिए कुछ करना चाहती है।

मेरी—वह सब कुछ नहीं है। वह केवल दुष्टता करना चाहती है ? वह जानती है कि फूल तोड़नेका निषेध है, इसीसे वह फूल तोड़ती है; किन्तु उसका फूल तोड़ना यदि तुम्हें अच्छा लगता हैं तो तोड़े।

इवा—माँ, मुझे जान पड़ता है कि टप्सी पहिलेकी अपेक्षा अब कुछ सुधर गयी है। भली लड़की होनेके लिए वह बड़ा प्रयत्न करती है।

मेरीने हँसते-हँसते कहा—टप्सीके भली होनेमें अभी बहुत देर है। चेष्टा करनेपर यदि भला बना जा सकता है तो अभी उसे और भी बहुत दिनों तक चेष्टा करनी पड़ेगी।

इवा—किन्तु माँ तुम तो जानती ही हो कि टप्सीकी अवस्था, अच्छी होनेके पक्षमें, कैसी प्रतिकूल थी।

मेरी—हमारे घर आनेपर तो उसकी अवस्था यथेष्ट अनुकूल हो गयी है। यहाँ कितने ही सदुपदेश दिये गये हैं, कितनी ही धर्म-शिक्षायें दी गयी हैं। मनुष्य जितना कर सकता है, जिससे उसका भला हो सकता है, वह सब उसके लिए किया जा चुका है, तो भी वह पहिलेकी ही भाँति दुष्ट-स्वभावकी रह गयी। वह सदा ऐसी ही रहेगी। वह किसीसे किसी प्रकार न सुधरेगी।

इवा—माँ, मैं बड़े स्नेह और यत्नके साथ पालीगई हूँ। मेरे माता-पिता, बन्धु-बान्धव, सभी मुझे प्यार करते हैं। इसलिए मुझे उत्तम बननेका सुयोग था। किन्तु बाल्यावस्थासे ही टप्सीको कोई लाड़-प्यार करनेवाला नहीं था। तब फिर भला वह कैसे उत्तम हो सकती है !

मेरी—(कर्कश स्वरमें) यही बात होगी। रहने दो, इन सबकी आवश्यकता नहीं। ओह ! आज बड़ी गरमी है।

इवा—तुम क्या इसपर विश्वास नहीं करतीं कि टप्सी भी भली हो सकती है ? स्वर्गीय-प्रकृति प्राप्त कर सकती है ?

मेरी—(ठठाकर) टप्सी स्वर्गीय-प्रकृति प्राप्त करेगी ! कैसी अद्भुत बात मैंने तुम्हारे मुहँसे सुनी है। टप्सी सुधर जायगी, इसपर तुम्हारे सिवा और कोई विश्वास न करेगा।

इवा—मा ! टप्सीको परमेश्वरने नहीं बनाया क्या ? मैं जिस प्रकार ईश्वरकी सन्तान हूँ, क्या टप्सी भी वैसी ही उसकी सन्तान नहीं है ?

मेरी—यह हो सकता है कि टप्सी ईश्वरकी सन्तान है। अच्छा, अब इन सब बातोंकी आवश्यकता नहीं। मेरी नासदानी कहाँ है ? सिरमें बड़ी पीड़ा हो रही है।

माताके मुखसे ऐसी बात सुनकर पर-दुःख-कातरा, कोमल-हृदया इवाञ्जेलिन अपने आप कहने लगी—हा ! परमेश्वर, कैसे दुःखकी बात है !

तब मेरीने कहा—दुःखकी बात क्या है ?

इवा—मा ! देखती नहीं हो, ये सब निग्रो दास-दासीगण सत्शिक्षा प्राप्त होनेपर, स्नेह-पूर्ण व्यवहार करनेपर, अन्यान्य लोगोंकी भाँति स्वर्गीय प्रकृति प्राप्त कर सकते हैं। किन्तु ये सवंश नरककी ओर गमन कर रहे हैं; अधःपातके गड्ढेकी ओर बढ़े चले जा रहे हैं; देशमें ऐसे लोग नहीं है कि इनकी सहायता करें।

मेरी—ये नरकमें जा रहे हैं तो हम क्या करें ! इन सब व्यर्थकी चिन्ताओंसे त्यक्त-विरक्त होनेकी कोई आवश्यकता नहीं। हमलोग स्वयं जो सुखी है, उसके लिए हमें परमेश्वर-

का कृतज्ञ होना चाहिए। हम सुखमें हैं, यह समझकर ही हम संतुष्ट चित्तसे रह सकेंगे।

इवा—हम लोग स्वतः धन-सम्पत्तिसे पूर्ण है, केवल इसीसे मैं सन्तुष्ट नहीं हो सकती। इन सब दीन-दुखी दास-दासियोंका दुख देखकर मुझे बड़ा कष्ट होता है।

मेरी—यह तुम्हारा एक अद्भुत कष्ट है। यह तो कष्ट नहीं है, रोग विशेष है। इस रोगकी कोई औषधि नहीं है। हमारे खीष्ट धर्मकी सम्मतिमें तो अपने पास, सुख, सम्पत्ति, ऐश्वर्य रहनेपर ही ईश्वरके प्रति कृतज्ञ होना चाहिए। संतुष्ट चित्तसे निवास करना चाहिए।

पाठक, जान पड़ता है कि मेरीने एंग्लो-इण्डियन संहिता-से खीष्ट-धर्मकी शिक्षा पायी है। इसलिए बाइबिलकी दश आज्ञायें (Ten Commandments) उसमें से उसने खारिज कर दिये हैं।

इवा माताकी बात सुनकर मन-ही-मन न जाने क्या सोचने लगी। कुछ समयके उपरान्त बोली—मा, मैं अपने सिरके कुछ बाल काटना चाहती हूँ।

मेरीने पूछा—बाल काटकर क्या होगे ?

इवाने उत्तर दिया-मैं अपने हाथसे अपने बाल अपने इन दास-दासियोंको दे जाना चाहती हूं। तुम बुआको बुलाकर बाल काट देनेके लिए कह दो न।

मेरीने अफिलियाको बुलाया। अफिलियाके घरमें आने-पर इवाने अपने बालोंको हिलाते हुए कहा—बुआ, मेड़के बाल काट दो।

इसी समय सेन्टक्लेयर इवाके लिए कुछ फल लेकर अकस्मात् घरमें आये। उन्होंने पूछा-यह क्या हो रहा है!

इवाने कहा—बाबा, मेरे बाल बहुत बढ़ गये हैं। ग्रीष्मऋतु-में बड़ी गरमी लगती है। उनमेंसे अपने कुछ बाल छँटवाकर मैं सब लोगोंको बाँटकर जाना चाहती हूँ। इसीसे बुआसे कुछ बाल काट देनेके लिए कहती हूँ।

मिस अफिलियाके कैंची लेकर बाल काटने जाते समय, सेन्टक्लेयरने कहा—बहिन! सावधान! नीचेके बाल काट दो, ऊपरके बाल काटकर उनकी शोभा नष्ट न करना। इवाके घुँघराले बालोंका मुझे बड़ा गर्व है।

इवाने दुखित स्वरसे पूछा—यह क्या, बाबा!

सेन्टक्लेयर—हाँ! मैं तुम्हें लेकर तुम्हारे बड़े चाचाके घर हेनरिकको देखने जाऊँगा। उस समय तुम्हारे बाल सुन्दर रहने चाहिएँ।

इवा—वहाँ मुझे न जाना पड़ेगा। मैं उसकी अपेक्षा अधिक उत्कृष्ट प्रदेशमें जाऊँगी। बाबा, तुम मेरी बात-पर-विश्वास करो। तुम क्या देखते नहीं हो कि मैं दिन-पर-दिन अधिक दुर्बल होती जाती हूँ?

सेन्टक्लेयर—तुम जबरदस्ती मुझे इन सब भयानक बातोंपर क्यों विश्वास कराना चाहती हो? ऐसी कठोर बातें कहके क्यों मेरे हृदयको बींधती हो?

इवा—बाबा, जो कुछ कहती हूँ, वह सत्य है। तुम यदि अबसे इस बातपर विश्वास कर लो तो, फिर मैं जिस प्रकार इसका अनुभव करती हूँ, तुम भी वैसा ही समझने लगोगे।

सेन्टक्लेयर चुप हो गये। व्यथित-हृदय हो, कटे हुए बड़े-बड़े घुँघराले बालोंकी ओर वे एकटक देखते रह गये। इवा बालोंका एक-एक गुच्छा लेकर उत्सुक नेत्रोंसे देखने लगी। धीरे-धीरे उन्हें अपनी उँगलीमें लपेटने लगी एवं

बीच-बीचमें एक बार शंकित चित्तसे पिताके मुखकी ओर देखने लगी ।

मेरी कह उठी—मुझे जिसकी आशंका थी, वही हुआ। जिस चिन्तासे दिन-पर-दिन मेरा शरीर क्षीण होता जाता है, मेरी आयु नष्ट होती जा रही है, वही हुआ। सेन्टक्लेयर, तुम कुछ दिनमें देखोगे कि मेरी आशंका ही ठीक है।

सेन्टक्लेयरने रूखे तथा तीव्र स्वरमें कहा—मैं जिस दिन देखूंगा कि तुम्हारी आशंका ठीक है, उस दिन तुम्हें विशेष शान्ति मिलेगी, इसमें संदेह नहीं।

मेरी सेन्टक्लेयरके रुष्ट-वाक्य सुनकर दुःखसे रुमालसे मुहँ ढाँककर पड़ रही।

इवाकी उज्ज्वल, नीली आँखें एकबार माताकी ओर तथा फिर पिताकी ओर देखने लगीं। वह दृष्टि शान्त-दृष्टि है, जीवन-मुक्त आत्माकी गूढ़दर्शिनी दृष्टि है।

आज इवाने अपने माता-पिताकी प्रकृतिकी विभिन्नता-का परिचय पाया तथा कुछ अनुभव करनेमें समर्थ हुई। उसने कुछ समयोपरान्त उँगलीके संकेतसे पिताको अपने पास बुलाया। सेन्टक्लेयर उसके पास आकर बैठे। इवाने कहा—बाबा दिन-पर-दिन मेरा बल घटा जाता है, मैं समझती हूँ कि शीघ्र ही मुझे यह संसार छोड़ना पड़ेगा। मुझे तुमसे कई बातें कहनी हैं और दो-एक काम भी करने हैं। किन्तु तुम मुझे अपनी मृत्युके सम्बन्धकी कोई बात करने देना नहीं चाहते। बाबा, ये सब बातें कहे विना मैं न रह सकूँगी। मुझे कहनेकी आज्ञा दो।

सेन्टक्लेयर एक हाथसे इवाका हाथ पकड़कर, दूसरे हाथसे आँसू पोंछते-पोंछते बोले—कहो, बेटी कहो! तुम्हें जो कुछ कहना हो, कहो! अब मैं तुम्हें न रोकूँगा।

तब इवाने कहा—बाबा, तो फिर मेरे घरकी सब दास-दासियोंको मेरे पास आनेको कहो, मैं सबको देखना चाहती हूँ। मैं उनसे कुछ बातें कहना चाहती हूँ।

मिस अफिलियाने दास-दासियोंको बुला भेजा। थोड़ी ही देरमें सब दास-दासियाँ उसी घरमें एकत्रित हुईं।

इवाकी दुर्बल देह बिछौनेपर पड़ी हुई है, खुली हुई केशराशि मुखके चारो ओर लहरा रही है। उसके दोनों गाल कुछ-कुछ लाल हो गये हैं, इससे उसके दुर्बल शरीरका शुभ्रवर्ण और भी शुभ्र हो गया है। नेत्रोंसे आत्म-प्रकाशकी उज्ज्वल ज्योति विस्फुटित हो रही है। ज्यों-ज्यों दास-दासी घरमें प्रवेश करते हैं, त्यों-त्यों बालिका एकाग्र चित्तसे प्रत्येकका मुख देखती है।

दास-दासियोंके हृदयमें सहसा उथल-पुथल मच गयी। आध्यात्मिक ज्योति-पूर्ण उस मुख, बगलमें रखे हुए बड़े-बड़े कटे बालोंके ढेर, सेन्टक्लेयरका दुर्विसह शोक-संतप्त-मुख तथा मेरीके क्रन्दनने एक साथ ही उनके कोमल हृदय-को स्पर्श किया। वे सभी गम्भीर दुःखसे भरी हुई दीर्घ निश्वास छोड़ने लगे। पर कुछ देर तक घर बिलकुल शान्त ही रहा।

इवा धीरे-धीरे मस्तक उठाकर बड़ी देरतक आग्रहके साथ उन लोगोंकी ओर देखती रही। सभीके मुखोंपर विषाद और भयके चिह्न थे। दासियाँ अञ्चलसे मुख ढाँक-कर रोने लगीं। तब इवाने कहा—बन्धु गण! मैं तुम सब लोगोंको प्यार करती हूँ, इसीलिए बुलाया है। मैं तुम सब लोगोंको हृदयसे चाहती हूँ। तुम लोगोंसे मुझे कई बातें कहनी हैं। तुमलोग उन्हें स्मरण रखना, यही मेरा अनुरोध

है। मैं तुम लोगोंको छोड़कर जा रही हूँ। कुछ दिनोंके बाद तुमलोग मुझे न देख पाओगे।

इतनी बातके सुनते ही, रोनेकी ध्वनि तथा दीर्घ निश्वासों से घर परिपूर्ण हो गया। उस ध्वनिमें बालिकाका क्षीण स्वर सुन पड़नेकी सम्भावना न रही। इसलिए उसे कुछ देरतक चुप रहना पड़ा। कुछ समयोपरान्त इवा फिर स्थिर कण्ठसे कहने लगी। वह स्वर सुनकर फिर सब शान्त हो गये। इवा कहने लगी—"तुम लोग यदि मुझे चाहते हो, तो मेरी बातोंके कहनेमें कोई बाधा न डालना। मैं तुम लोगोंसे जो कहना चाहती हूँ, वह सुनो। तुम लोगोंमेंसे बहुत लोग केवल इसी संसारकी चिन्तामें मग्न हो रहे हैं। मैं चाहती हूँ कि तुमलोग कुछ परलोककी चिन्ता करो। इस संसारके अतिरिक्त एक सुन्दरतर संसार और है। वहाँ साधु-महात्मा लोग निवास करते हैं। मैं वहीं जा रही हूँ। तुमलोगोंको भी वहाँ जानेका अधिकार है। किन्तु वहाँ जानेके लिए सच्चरित्र होना पड़ेगा, साधु-जीवन प्राप्त करना पड़ेगा। आलसी और उन्मत्त बनकर नितान्त चिन्ता-शून्य हो कर जीवन बितानेसे काम न चलेगा, इच्छा करनेपर तुमलोग सभी सच्चरित्र बन सकते हो, साधु-जीवन प्राप्त कर सकते हो। सत्कार्य, सदनुष्ठानमें ईश्वर तुम लोगोंके सहायक होंगे। तुमलोग सदा प्रार्थना करना, धर्म-ग्रन्थका पाठ करना।"

इतना कहते-कहते बालिका रुक गयी। करुण-दृष्टिसे उनकी ओर देखकर दुखार्द्र कण्ठसे फिर कहने लगी—

"हाय! तुमलोग पढ़ना नहीं जानते। तुम्हारे लिए कितने दुःखकी बात है!" यह कहकर ओढ़नेमें मुहँ छिपा वह रोने लगी। जिन लोगोंसे इवा यह सब कह रही थी, वे भी चारों

ओरसे रो पड़े। उन लोगोंका अब रुद्ध क्रन्दन सुनकर इवाने अपनेको सँभाला। अश्रुपूर्ण मुखपरसे वस्त्र हटाकर उज्ज्वल मीठी हँसी हँसकर बोली—शान्त हो; मैं तुम लोगोंके लिए सदा प्रार्थना करती थी। मैं जानती हूँ, तुमलोग पढ़ना-लिखना नहीं जानते, तो भी साधु-जीवन प्राप्त करनेमें ईश्वर तुम्हारी सहायता करेंगे। यथा-साध्य अपनी उन्नतिकी चेष्टा करो। प्रति दिन प्रार्थना करना। ईश्वरके निकट उनकी सहायताकी प्रार्थना करना। जब सुविधा हो धर्म-ग्रन्थ पढ़वाकर सुनना। ऐसा करनेसे कुछ समयके पश्चात् मैं तुम लोगोंको स्वर्ग-राज्यमें देख पाऊँगी।"

इवाकी बात समाप्त होते ही टाम, मामी और दो और पुराने दासोंने धीरे-धीरे कहा—पिताकी इच्छा पूर्ण हो। इनमें जो बहुत ही छोटे और चिन्ताहीन थे, उन लोगोंके हृदयोंमें भी उसी-क्षण गम्भीर भावने आन्दोलन मचा दिया।

इवाने फिर कहा—मैं समझती हूँ तुमलोग मुझे चाहते हो।

इसपर चारो ओरसे शब्द आने लगे—तुम्हें चाहेंगे नहीं! प्राण-धन, ईश्वर तुम्हारा कल्याण करे।

बालिकाने कहा—हाँ, मैं जानती हूँ कि तुम सभी मुझे चाहते हो। तुम लोगोंमें से किसी एकने भी कभी मुझे कोई दुर्वाक्य नहीं कहा। मैं स्मरण-चिह्नस्वरूप तुम लोगोंको अपने सिरका एक-एक गुच्छा बाल देती हूँ। जब ये बाल देखोगे, तभी यह स्मरण करोगे कि मैं तुम लोगोंको कितना प्यार करती थी। स्मरण करना कि मैं स्वर्गमें हूँ, और वहाँ तुम लोगोंको देखनेके लिए बड़ी उत्सुक हूँ।

जिस समय रोआसा मुहँ किये हुए सब दास-दासी उस बालिकाको चारो ओरसे घेरकर, एक-एक करके प्यारका अन्तिम चिह्न उस हाथका चुम्बन करने लगे, उस समय-

के दृश्यका वर्णन भाषामें नहीं किया जा सकता। कोई आँखोंमें आँसू भरे हुए भूमिपर बैठा जा रहा था, कोई गद्गद कण्ठ से मंगलमय परमेश्वरके निकट उस बालिकाके मंगलकी प्रार्थना कर रहा था; कोई उसके वस्त्रादिकोंका चुम्बन कर रहा था। कुछ वृद्ध और वृद्धा लोग आशीर्वादसे मिली हुई सैकड़ों वाक्यावलियों-द्वारा उससे संभाषण कर रहे थे।

रुग्ण बालिकाके पक्षमें उत्तेजनाको अहितकर जानकर, बाल बाँट देनेपर मिस अफिलियाने एक-एक करके सब दासोंको धीरे-धीरे घरसे बाहर कर दिया। केवल टाम और मामी वहाँ बैठी रह गयीं। इवा एक गुच्छा बाल टामके हाथमें देकर बोली—टामकाका, तुम्हारे लिए मैं एक गुच्छा सुन्दर बाल रखे हूँ। टामकाका, तुम्हें मैं 'स्वर्गमें' देख पाऊँगी, यह सोचकर मुझे अपार आनन्द होता है। तुम्हें मैं अवश्य ही स्वर्गमें देख पाऊँगी। इसके पश्चात् वृद्धा धात्रीके गलेसे लिपटकर कहने लगी—मामी तुम बड़ी भली हो, बड़ी दयालु हो, तुम्हें मैं बहुत चाहती हूँ। मामी मैं जानती हूँ, तुम भी स्वर्ग पाओगी।

मामीने ऊँचे स्वरसे रोते-रोते कहा—बेटी, तुम्हें न देख कर मैं कैसे बचूँगी? प्राण-धन! मैं तुम्हें अपनी छातीसे लगाकर अपनी संतानोंका दुःख भूल गयी थी। तुम सब अन्धकार करके चलीं।

मामीके इस प्रकार रोना आरम्भ करनेपर मिस अफिलिया टामको तथा उसको धीरे-धीरे खींचकर उस कमरेसे बाहर ले आयीं। उन्होंने समझा था कि अब सब लोगोंने घर छोड़ दिया, किन्तु जब पीछे फिरकर देखा तो टप्सी घरके भीतर खड़ी मिली। मिस अफिलियाने पूछा—तू कहांसे आ रही है? टप्सीने आखोंके आंसू पोछते-पोछते उत्तर दिया—मैं

यहीं थी। मैंने सदैव अन्याय कर्म किये हैं। मिस इवा, मुझे एक गुच्छा बाल दोगी कि नहीं ?"

इवाने कहा—दूँगी, यह क्या टप्सी ! लो, यह लो ! जब ये बाल देखना, तभी यह स्मरण करना कि मैं तुम्हें प्यार करती थी। तुम एक भली लड़की बनो, यही मेरी आन्तरिक इच्छा है।

टप्सी निष्कपट चित्तसे कातर स्वरसे बोली—मिस इवा, मैं भली होनेके लिए तो कितनी ही चेष्टा करती हूँ, किन्तु भली होना भी बड़ा कष्टकर है। मेरे मनमें ऐसा आता है कि भली होनेका मुझे अभ्यास नहीं है।

इवाने कहा—ईश्वर तुम्हारी अवस्था जानते हैं, वह तुझे प्यार करते हैं, वे भली होनेमें तुम्हारी सहायता करेंगे।

टप्सी रोती-रोती धीरे-धीरे घरसे बाहर चली गयी। जानेके समय बड़े यत्नसे बालोंका गुच्छा उसने अपने हृदयके भीतर छिपा लिया।

सबके चले जानेपर मिस अफिलियाने द्वार बन्दकर दिया। इवाकी पूर्वोक्त कथा-वार्ताके समय इनकी आखोंसे अविरल अश्रु-धारा बह रही थी, किन्तु इन बुद्धिमती रमणीने अपने शोकके आवेगको रोककर रोगीका कैसे भला होगा, केवल यही विचार करती थीं। चारो ओर गड़बड़ी रहनेसे बीमारी बढ़ जाती है, इसी भयसे वे चुपचाप थीं। सेन्टक्लेयर भी तभीसे एक हाथसे आँखें ढाँके हुए कन्याके पार्श्वमें निश्चल भावसे बैठे हुए हैं। सबके चले जानेपर भी वे उसी प्रकार चुपचाप बैठे रहे। कुछ देर पश्चात् इवाने अपने पिताके हाथपर अपना हाथ रखकर धीरे-धीरे पुकारा—बाबा !

सेन्टक्लेयर सहसा चौंक पड़े। उनका सारा शरीर कण्टकित हो गया, किन्तु उन्होंने कोई बात न की।

इवाने फिर पुकारा—बाबा !—ओ बाबा !

सेन्टक्लेयरने तीव्र यंत्रणासे निपीड़ित कण्ठसे कहा—अब नहीं सहा जाता। विधाता मुझपर बड़ा ही निर्दय है।

अफिलियाने कहा—अगष्टिन, ईश्वर अपनी वस्तु लेकर जैसा अच्छा समझेंगे, वैसाही करेंगे। उनकी निजकी वस्तु-पर क्या उनका अधिकार नहीं है ?

"यह तो है ही—पर केवल यही कहकर मनुष्यसे यह कष्ट सहा नहीं जाता।" अति शुष्क कठिन स्वरसे, यह कहकर सेन्टक्लेयरने अपना मुहँ फेर लिया।

इवा उठकर पिताके हृदयसे लगकर रोती हुई बोली—बाबा ! तुम्हारी बातें सुनकर मेरा हृदय फटा जाता है। तुम ऐसे भावोंको हृदयमें स्थान मत दो।

इवाको रोआसी देखकर, सभीको बड़ा भय हुआ। उसके पिताका चिन्ताश्रोत दूसरी ओर बह चला।

सेन्टक्लेयर—मेरी प्राणधन ! चुप रहो, मैं भ्रान्त हो गया था, मैंने अनुचित किया। तुम जैसा सोचनेको कहोगी, मैं वैसा ही सोचूँगा। तुम जो कहोगी मैं वही करूंगा। तुम मेरे लिए न तो दुःख करना और न रोना। मैं ईश्वरको आत्म-समर्पण करूंगा। ईश्वरपर दोषारोपण करके अन्याय किया है। फिर ऐसी बात मुहँपर न लाऊंगा।

इवा अत्यन्त क्लान्त होकर पिताकी गोदमें सो रही। सेन्टक्लेयर स्नेहपूर्ण वचनोंसे उसे सान्त्वना देने लगे। मेरी इस घरसे उठकर अपने कमरेमें चली गयी। वहां उसे मूर्च्छा आने लगी।

कुछ देर बाद सेन्टक्लेयर विषादमय हँसी हँसकर बोले—इवा, तुमने मुझे तो एक गुच्छा भी बाल नहीं दिया ?

इवाने हँसकर कहा—बाबा, यह सब तुम्हारे ही हैं। बुआ

जितने गुच्छे चाहें, तुम उन्हें दे देना। मैंने इन दुखी दास-दासियोंको स्वयं दे दिया है, क्योंकि मेरे मर जानेपर इन्हें कोई न देता। मैंने सोचा कि ये बाल देखकर मुझे याद करेंगे। बाबा, क्या तुम क्रिश्चियन नहीं हो ?

सेन्टक्लेयर—यह बात क्यों पूछती हो ?

इवा—मैं नहीं जानती। तुम इतने अच्छे होकर भी क्रिश्चियन न नहीं हो, इस बातपर मैं विश्वास नहीं कर सकती।

सेन्टक्लेयर—क्रिश्चियन किसे कहते हैं, इवा !

इवा—जो सबसे अधिक ईश्वरको ही प्यार करे।

सेन्टक्लेयर—क्या तुम करती हो इवा ?

इवा—करूँगी क्यों नहीं।

सेन्टक्लेयर—तुमने तो उसे कभी देखा नहीं।

इवा—नहीं देखा तो इससे क्या ! मैं उसपर विश्वास तो करती हूँ, बहुत थोड़े दिनोंमें ही मैं उसे देख पाऊँगी।

यह कहते-कहते इवाका मुख आनन्दसे उज्ज्वल हो उठा। सेन्टक्लेयरने और कोई बात नहीं की। ये भाव उन्होंने अपनी मातामें देखे थे। पर उनके हृदयमें कोई ऐसा भाव नहीं था।

इसकी बाद रोग दिन-दिन बढता गया। अब इवाके जीनेकी कोई आशा न रही। मिस अफिलिया दिन-रात उसकी शय्याके पास बैठी सेवा-शुश्रूषा करने लगीं। इस विपत्तिके समय उनका असाधारण धैर्य, शुश्रूषा, तत्परता और बुद्धिमता देखकर कोई भी उनकी मन-ही-मन प्रशंसा किये बिना नहीं रह सका। ठीक समयपर औषधि आदि देने, रोगीके घरमें सफाई रखनेमें वे बड़ी तत्पर थीं। धन्य है शिक्षिता अंग्रेज रमणी ! किसी कार्यमें इनकी रत्तीभर भी त्रुटि दिखाई नहीं पड़ती थी। जो पहिले मिस अफिलियाको नहीं चाहते थे, वे अब कहने लगे कि अफिलियाके न रहनेपर इवाकी सेवा-शुश्रूषा एक दिन भी न

होती। टाम प्रायः इवाके कमरेमें रहता था। समय-समयपर इवाको गोदमें लेकर बरामदेमें आकर टहलता था। कभी प्रभात-कालीन वायुका सेवन करानेके लिए वाटिकामें ले जाता, कभी पहिलेकी भाँति वृक्षके नीचे वाले आसनपर बैठकर इवाको गाना सुनाता। इवाके पिता भी उसे ऐसे ही घुमाते थे, पर उनका शरीर विशेष सबल न था। उनके थकते ही इवा कहती—बाबा, मुझे टामकी गोदमें दे दो। टाम मुझे गोदमें लेकर टहलना बहुत चाहता है। मेरे लिए कुछ कर सकने पर उसे बड़ा आनन्द होता है।

इवाकी सेवा-शुश्रूषा करनेके लिए केवल टाम ही इच्छा प्रकाश करता हो, ऐसी बात न थी। घरमें रहनेवाली सभी दास-दासियोंको इवाकी सेवा-शुश्रूषा करनेका सुअवसर पानेपर विशेष आनन्द मिलता था। मामीने इवाको जन्मसे पाला-पोसा था, इसलिए बाल्यावस्थाकी उसकी सेवा करनेके लिए उसका मन व्याकुल रहता था। किन्तु इवाके पास जानेके लिए वह एक क्षण भरका भी अवकाश न पाती थी। मेरी दिन-रात उसे अपनी शुश्रूषामें नियुक्त रखती। मेरी कहती कि कन्याकी पीड़ासे उसका मन बड़ा अस्थिर हो गया है। सहज कामोंमें भी उसकी यंत्रणाके कारण कोई चैन नहीं लेने पाता था। रातमें मेरी बीसों बार जगा-जगाकर मामीको तंग करती। कभी पैर दबवाती, कभी सिरपर जल डलवाती, कभी रूमाल ढुंढ़वाती, कभी इवाके यहाँ यह देखनेको भेजती कि कैसी गड़बड़ी है, कभी कहती रोशनी आ-रही है परदा गिरा दो, कभी कहती अंधकार हो आया परदा उठा दो, इत्यादि। दिनमें भी मामीको, इवाका घर छोड़कर इधर-उधर घरमें चारों ओर दौड़ाती रहती, इसलिए मामी कभी-कभी छिपकर इवाको जाकर क्षण भरके लिए देख आती

एक दिन मेरीने कहा—इस समय मैं अपने शरीरके सम्बन्धमें विशेष सावधान रहना अपना कर्त्तव्य समझती हूँ। एक तो मेरा शरीर यों ही दुर्बल है, दूसरे इवाकी सेवा शुश्रूषाका सारा भार मेरे ही ऊपर है।

सेन्टक्लेयर—यह क्या मेरी! मैं तो समझता हूँ कि बहिनने तुम्हें उस भारसे छुट्टी दे रखी है।

मेरी—सेन्टक्लेयर तुम पुरुष हो—पुरुषकी भाँति बातें करते हो। सन्तानकी पीड़ा माताको कितनी होती है, यह क्या तुम समझ सकते हो? माताके प्रेमको क्या कोई कभी दूर कर सकता है? हाय! मेरे मनकी अवस्था कोई नहीं समझता। सेन्टक्लेयर मैं तुम्हारी भाँति निश्चिन्त होकर नहीं बैठ सकती।

सेन्टक्लेयर मेरीकी यह बात सुन कर कुछ हँसे। सेन्टक्लेयर इस दुःखके समय भी हँस सकते थे, यह देख कर पाठक उन्हें निर्दय न समझ लें। उस समय जो उन्हें हँसी आयी, उसका एक कारण था। ऐसी उज्ज्वल शान्तिकी हिलोरोंमें उस क्षुद्र आत्माकी परलोक-यात्रा आरम्भ हुई थी, ऐसी शीतल-मन्द-सुगन्ध समीरके झोंके खाती हुई वह क्षुद्र जीवन-नौका स्वर्ग तीरकी ओर अग्रसर हो रही थी, कि बालिकाकी आसन्न मृत्युकी ओर किसीका ध्यान न था। बालिकाको कोई विशेष शारीरिक यंत्रणा न थी। धीरे-धीरे अज्ञात रूपसे उसकी दुर्बलता दिन प्रति दिन बढ़ती जाती थी, शान्ति और पवित्रताकी एक मधुर लहर बालिकाके चारो ओर फैली हुई थी। उसके मुखपर वह सात्विक ज्योति, हृदयकी वह गम्भीर स्नेह-राशि, आत्माका वह जीवित विश्वास, मनकी वह स्थिर प्रफुल्लता देखकर, किसीके हृदयमें अशान्ति न रहने पाती थी। सेन्टक्लेयरके हृदयमें एक अद्भुत एवं नवीन शान्ति

उत्पन्न हुई है। यह शान्ति ईश्वरपर निर्भरताके भावसे उत्पन्न नहीं है, तो फिर क्या आशा है ? असम्भव। यह भूत भविष्य-विहीन केवल वर्तमान समयकी एक शान्ति मय अवस्था है ! यह शान्ति सेन्टक्लेयरके हृदयको इतनी सुन्दर एवं इतनी मधुर जान पड़ती है कि उनको भविष्यके सोचनेकी इच्छा ही नहीं होती।

आसन्न मृत्युके सम्बन्धमें इवाके हृदयने जिन पूर्वाभासों-को देखा था, विश्वासी सेवक टामके सिवा और कोई न जानता था। पिताका हृदय दुखनेके डरसे इवा अपनी दशा प्रकट न करती थी, पर टामके निकट कहनेमें वह न सकुचाती थी। मृत्युके कुछ पूर्व, जब शरीरसे आत्माका बन्धन ढीला हो जाता है तब, हृदयको स्वतः ही मृत्युकी सूचना मिल जाती है। इवाने जब जाना कि अब मेरी मृत्यु अत्यन्त निकट है, तब उसने यह बात टामसे प्रकट करदी। टाम उस दिनसे अपनी कोठरीमें सोने न जाता। अब वह सारी रात बरामदेमें पड़ा रहता था ताकि पुकारतेही वह इवाके पास पहुँच जाय।

मिस अफिलियाने उसे बरामदेमें पड़े देखकर कहा—टाम, तुम कुत्तेकी भाँति इधर-उधर क्यों पड़े रहते हो ? मैं इतने दिनों तक तुमको शान्त स्वभावका मनुष्य समझती थी। सोचती थी कि तुम सभ्यकी भाँति अपनी कोठरीमें सोते होगे।

टाम—हाँ मैं अपने घरमें ही सोता था, पर इस समय—

अफिलिया—इस समय क्या ?

टाम—जरा धीरे-धीरे बातें कीजिए, नहीं तो सेन्टक्लेयर सुन लेंगे। मिस फिला, 'वर' कब आता है, यह देखनेके लिए एक आदमीको सजग रहना होगा।

अफिलिया--यह क्या, टाम !

टाम—जी, बाइबिलमें लिखा है। "आधी रात्रिके समय घोर कोलाहल सुनायी पड़ने लगा। यह देखो 'वर' आया'। मैं प्रत्येक रात्रिमें उसीकी राह देखता हूँ। मिस फिली, मैं किसी प्रकार भी यहाँसे दूर जाकर नहीं सो सकता।

अफिलिया—टाम, तुम क्यों ऐसा सोचते हो ?

टाम—मिस इवाने मुझे बहुतसी बातें बतलायी है। परमेश्वर आत्माके निकट अपना दूत भेजते हैं। यह पवित्र बालिका जिस समय स्वर्गमें प्रवेश करेगी, उस समय स्वर्गका द्वार खुलेगा, हम सब लोग स्वर्गकी समुज्ज्वल प्रभा देखकर कृतार्थ होंगे। उस समय मैं निकट ही रहना चाहता हूँ।

अफि०--टाम, मिस इवाने क्या तुमसे बतलाया है कि अन्यान्य दिनोंकी अपेक्षा उसका रोग आज और बढ़ गया है?

टाम—नहीं, किन्तु आज प्रातःकाल वे मुझसे कहती थीं कि मैं परलोकके अत्यन्य निकट पहुँच गयी हूँ। मिस फिली, बालिकाके पास समाचार आया है, देवदूत लोग बालिको यह संदेशा सुना गये हैं। इवाके कानमें तुरही बज रही है--"यह तुरन्तही उषाको जगावेगी।"

रातको ग्यारह या बारह बजे मिस अफिलिया बाहरका दरवाजा बन्द करने आयी थीं, उसी समय उन्होंने टामको वहाँ पड़े सोते देखा था और पूर्वोक्त बातचीत की थी।

मिस अफिलिया थोड़ीही विपत्तिसे घबड़ा जानेवाली न थीं, सहजंही उनका मन चंचल न होता था, किन्तु टामकी गम्भीर विश्वासपूर्ण बातें सुनकर वे बड़ी विस्मित हुईं। उस दिन संध्या बेला, इवा अन्य दिनोंकी अपेक्षा कुछ अधिक स्वस्थ और प्रसन्न जान पड़ती थी। इवा बिछौनेसे उठकर

बैठ गयी थी, और वह निश्चय कर रही थी कि अपने गहने तथा अन्यान्य चाहकी चीजोंमें से किसे कौनसी देगी। बहुत दिनोंके पश्चात् आज उसके शरीरमें कुछ शक्ति दिखायी पड़ी थी। उस दिन सायंकाल जब सेन्टक्लेयर इवाके शयन-गृहमें आये, तो उन्होंने उसे और दिनोंसे अधिक सबल देख कर कहा—आज इवा कुछ स्वस्थ दिखायी पड़ती है। बीमार पड़ने-के बादसे आज ही इतनी स्वस्थ दिखायी पड़ी है। पश्चात् अपने शयनागारमें जाते समय मिस अफिलियाको पुकारकर कहा—बहिन! जान पड़ता है ईश्वरेच्छासे इवा शीघ्र ही आरोग्य लाभ करेगी। आज इवा बड़ी स्वस्थ है। यह कहकर सेन्टक्लेयर बहुत प्रसन्नतासे अपने शयनागारमें जाकर सुखकी नींद सोये।

देखते-देखते घोर अन्धकारपूर्ण मध्य रात्रि, आ उपस्थित हुई। घरके सभी लोग निद्रादेवीकी गोदमें शान्ति-पूर्वक शयन कर रहे थे। किन्तु मिस अफिलियाके नेत्रोंमें नींद न थी। वे अति एकाग्रतासे इवाके मुखकी ओर देख रही थीं। किस समय उसका कौनसा भाव हो जाता है, यही वह देख रही थीं। चन्द्रमाके अस्त होते ही चारो ओर अन्धकार छा गया। इधर सेन्टक्लेयरके घरका चन्द्रमा, उनका हृदय-धन, उनकी जीवन-सर्वस्व, इवाञ्जेलिनके, इस संसारके परित्यागका समय उपस्थित हुआ। स्वर्गका द्वार खुला। मृत्युने घरमें आकर, उसे स्वर्ग राज्यमें ले जानेके लिए, गोद में उठा लिया।

मिस अफिलिया इवाकी अवस्थामें परिवर्तन होते देखते ही घरका द्वार खोलकर बाहर आयीं। टाम बाहर बैठा ही था। पल भरके लिए भी उसे नींद न। आयी अफिलिया ने उसे देखते ही कहा—टाम शीघ्र डाक्टरको बुला लाओ।

एक मिनटकी भी देर मत करना। टाम उसी क्षण डाक्टरको बुलाने चला गया। मिस अफिलिया आकर सेन्टक्लेयरके शयन-गृहके द्वारके किवाड़ोंपर आघात करने लगीं। सेन्ट-क्लेयरके जागनेपर बड़े त्रासके साथ उनसे कहा—अगष्टिन, शीघ्र बाहर आओ। मिस अफिलियाके इस प्रकार त्रस्त होकर पुकारते ही वे समझ गये कि मेरे सर्वनाशका समय आ गया। उनकी हृदय सर्वस्व, उनकी जीवन-धन, उनके स्नेहकी मूर्ति इवान्जेलिन उन्हें छोड़नेपर उद्यत है। वे उसी क्षण इवान्जेलिनके शयन-प्रकोष्ठमें आये।

बालिकाके मुखपर कोई कष्ट-चिह्न न दिखायी पड़ा। इस समय भी वही पूर्वकी एकाग्रता तथा स्नेहका भाव उसके मुखपर अंकित था, तो फिर सेन्टक्लेयरने कैसे जाना कि उस की इवान्जेलिन जन्म भरके लिए उसे छोड़कर जाने-को तैयार है। उसका शरीर बिलकुल सुन्न हो गया है। हाथ-पैर ठंढे हो गये है। केवल मुख आध्यात्मिक ज्योतिके कारण किंचिन्मात्र भी विकृत नहीं हुआ था। टामने अति अल्प समयमें ही डाक्टरको साथ लेकर घरमें प्रवेश किया। डाक्टरने दबे स्वरमें मिस अफिलियासे पूछा—यह अवस्था कबसे है? अफिलियाने उत्तर दिया—दो प्रहर रात्रिसे अव-स्थामें परिवर्त्तन होना आरम्भ हुआ है।

डाक्टरके घरमें आनेसे तथा लोगोंकी गड़बड़ी सुनकर मेरी जाग उठी। वह उसी क्षण इवाके शयन-गृहमें आकर चिल्लाकर पूछने लगी—अगष्टिन क्या हुआ? अफिलिया बहिन, क्या हुआ?

सेन्टक्लेयरने रूँधे हुए कण्ठसे कहा—चुप रहो, होगा क्या? इवा जा रही है। मामीने सेन्टक्लेयरकी यह बात सुनकर रोते-रोते सब दास-दासियोंको जगा दिया। घरके

सब लोग जाग गये। सब आकर बरामदेमें खड़े हो गये। घरमें केवल पद-संचालनका शब्द सुनायी पड़ने लगा। सेन्टक्लेयर स्तब्ध होकर, उस निद्रिता बालिकाके मुखकी ओर एकटक देखते रहे। ज्ञान पड़ता था कि घरमें होने वाला कोई शब्द उनके कर्ण-कुहुरोंमें प्रवेश ही नहीं कर रहा है। कुछ समयोपरान्त वे बोल उठे-बेटी, यदि एकबार और जाग जाती! और एकबार उस मुखकी कोमल वाणी सुन लेता! यह कहकर इवाके कानके पास मुहँ लेजाकर उन्होंने पुकारा—इवा, प्राणाधार इवा, मेरी हृदय-धन! पुकार सुनकर वे दोनों अमृत-वर्षी नेत्र खुले। उन हृदयको प्रफुल्लित करनेवाले ओठोंपर हँसीकी एक रेखा दिखायी पड़ी। इवाञ्जेलिन सिर उठाकर बात करनेकी चेष्टा करने लगी। किन्तु शरीर बिल्कुल अशक्त हो गया है।

उसके पिताने फिर कहा—इवा, प्राणोंकी प्यारी इवा, मुझे पहिचानती नहीं। बालिकाने अस्फुट स्वरमें कहा-"बाबा!" एवं बड़े कष्टसे अपने दोनों छोटे हाथ उठाकर पिताके गलेमें डाल दिये। परन्तु देखते-देखते वे दोनों हाथ झूल गये।

अब उसके मुखका भाव विकृत हो गया। यही अन्तिम समय है। आत्मा देह छोड़कर गमनोद्यत है। इवाके मुख-पर उस समय भयंकर यंत्रणाके चिह्न देखकर सेन्टक्लेयर अधीर हो उठे। उसे बड़े कष्टसे साँस लेते देखकर वह चिल्ला उठे—ओह! टाम! मैं इसे सहन नहीं कर सकता। इवाका कोई कष्ट मुझसे सहा नहीं जाता। ओह, मेरे प्राण निकले! तुम प्रार्थना करो, जिससे यह कष्ट शीघ्र ही दूर हो।

टामके नेत्रोंसे अविरल अश्रुधारा बहने लगी। वह अपने स्वामीकी ऐसी अवस्था देखकर, ऊपरको दृष्टिकर ईश्वरसे प्रार्थना करने लगा। विश्वास और भक्तिमें कैसी चमत्का-

रिणी शक्ति है !' रामकी प्रार्थना सुन ली गयी। पलभरमें इवाकी वह यंत्रणा दूर हो गयी। तब राम कहने लगा—धन्य ईश्वर ! धन्य मंगलमय पिता ! सब यंत्रणायें दूर हुईं। बालिका-के वे दोनों दीर्घनेत्र स्वर्गकी ओर देख रहे थे। वह विशाल स्थिर-दृष्टि स्पष्टरूपसे कह रही थी—संसारकी सारी यंत्रणायें दूर हो गयीं।

सेन्टक्लेयरने धीरे-धीरे पुकारा—इवा ! बालिकाने नहीं सुना।

सेन्टक्लेयरने फिर पुकारा—इवा ! क्या देखती हो ? वह मुख-कमल फिर हँसीसे अनुरंजित हुआ। बालिकाने अस्फुट स्वरमें कहा—आहा ! प्रेम—आनन्द—शान्ति ! उसीक्षण देह जीवन-शून्य होगया। आत्माने मृत्युका अतिक्रमणकर अमरत्व प्राप्त किया। निर्मल प्रकृति देवबाला इवाञ्जेलिनने इस पाप और अत्याचारसे पूर्ण संसारको छोड़कर अमृतमयकी अमृत-मयी गोदमें आश्रय लिया।

तीसवाँ परिच्छेद

मृत्युके पश्चात्

इवाञ्जेलिनकी निर्मल आत्मा मंगलमयके मंगलधाममें चली गयी; जीवन-शून्य अनित्य देह संसारी घरमें पड़ी रह गयी। उसके शयन-घरके सारे चित्र और सारी पत्थरकी मूर्तियाँ, श्वेत वस्त्रोंसे ढकवा दी गयीं। धीरे-धीरे घरमें गम्भीर निस्तब्धता छा गयी। कभी-कभी बहुत पद-संचरणकी मन्द ध्वनि सुनायी पड़ जाती थी। बन्द झरोखेसे क्षीण प्रकाशकी एक रेखा आकर उसकी गम्भीरताको और भी बढ़ा रही है।

घरमेंका विछौना भी श्वेत वस्त्रसे ढका हुआ है। इस विछौनेपर निद्रित वालिकाकी क्षुद्र देह पड़ी हुई है। किन्तु बालिकाकी इस निद्राका अवसान नहीं।

बालिकाकी देह-लतिका पूर्वकी ही भाँति श्वेत वस्त्रसे ढकी है। उपाकी किरणें यवनिकाको भेदकर मृत्युकी छायासे आवृत्त तुषारके समान ठंडी देहपर कुछ उज्ज्वलता बिखेर रही है, सघन पत्र-राशि अत्यन्त मृदुल भावसे गण्डस्थल स्पर्श कर रही है, मस्तक एक ओर झुका हुआ है, मानों सचमुच ही बालिका सो रही है—केवल समग्र आनन-व्यापिनी वह स्वर्गीय शोभा, आनन्द और शान्तिकी अपूर्व सम्मिलन श्री, देख कर ज्ञात होता है कि यह निद्रा क्षणिक निद्रा नहीं है—यह निद्रा आत्माका अनन्त, पवित्र विश्राम है।

इवा ! जो लोग तुम्हारी तरह होते हैं उनकी मृत्यु नहीं होती। उन पर न मृत्युकी छाया पड़ती है, न अन्धकार की। जिस प्रकार उषाके स्वर्गालोकमें शुक्र तारा अन्तर्निहित हो जाता है, ठीक उसी प्रकार तुम भी इन संसारी-नेत्रोंके सामने-से केवल अदृश्य हो गयी हो। तुमने विना युद्धके जय-लाभ किया, विना किसी विरोधके राज-मुकुट धारण किया।

सेन्टक्लेयर शय्याके पास खड़े होकर एक दृष्टिसे वालिकाकी ओर देख रहे हैं, मानो कुछ सोच रहे हैं। वे क्या सोच रहे हैं, यह कौन कह सकता है ? 'मृत्यु हो गयी' ये शब्द जिस समय उस बालिकाके घरमें, एक मुखसे दूसरे मुखतक ध्वनित हुए, उसी क्षणसे सेन्टक्लेयरके सामने सारा संसार कुहरेसे ढक गया, घने अन्धकारमें समाछन्न हो गया है। उनके चारो ओर जो लोग बातें कर रहे हैं, उनका शब्दमात्र उनके कानोंमें पड़ता है। वह बातें किस विषयकी है, यह उनकी समझमें नहीं आता। किसीके कुछ पूछनेपर वे कुछ अन्य-

मनस्कतासे उत्तर देते थे। जब उनसे पूछा गया कि इवाकी देह कब और कहाँ जायगी, तब उन्होंने विरक्तिके साथ उत्तर दिया—मैं नहीं जानता, अभी जहाँ है वहाँ है।

अडाल्फ और रोजा दोनों मृत बालिकाका घर और शय्या नाना विधिके पुष्पोंके द्वारा सजा रहे हैं। इनके नेत्रोंसे बराबर आसुओंकी धारा बह रही है। नीच-प्रकृति होनेपर भी इनका हृदय कोमल है।

घरमें इस समय भी पूर्व दिनके फूल स्थान-स्थानपर सजे हुए हैं। पत्तोंपर शुभ्र कोमल सुगन्धित फूल लगे हुए बहुत शोभा पा रहे हैं। इवाके शुभ्र कपड़ेसे (Table Cloth) ढके हुए टेबुलपरके उसके यत्न-रक्षित पुष्पाधारोंमें केवल एक गुलाबकी कली रह गयी है। अडाल्फ और रोज़ा अपनी जाति-गत आश्चर्य शोभानुभावुकतासे घर सजा रहे हैं। सेन्ट-क्लेयर चिन्तित मनसे खड़े हुए हैं। इसी समय रोज़ा एक डलिया फूल लेकर इवाके घरमें फिर आयी, सामने सेन्ट-क्लेयरको देखकर वह सम्मानके लिए कुछ पीछे हट गयी, पर सेन्टक्लेयरने उसे देखा नहीं। यह देखकर उसने इस मृत-देहके चारों ओर बड़ी सुन्दरतासे फूलोंको सजा दिया, एवं एक सुन्दर फूल इवाके कोमल हाथमें देकर चली गयी। सेन्टक्लेयर स्वप्नाभिभूतकी भाँति देखता रहा।

इतनेमें टप्सी आँचलमें एक फूल छिपाये हुए घरमें आयी। रोते-रोते उसकी आँखें फूल गयी थीं। रोजाने इसे देखते ही विरक्तिके साथ धीरे-धीरे कहा—चली जा, चली जा, तेरी यहाँ क्या आवश्यकता है?

टप्सीने आँचलसे एक अधखिली हुई गुलाबकी कली लेकर कातर स्वरमें कहा—मैं यह फूल दूँगी। देखो कैसा सुन्दर फूल है! मैं यह फूल यहाँ देकर चली जाऊँगी। मुझे जाने दो।

रोज़ाने दृढ़तासे कहा—तू नहीं आने पावेगी। चली जा।

सहसा सेन्टक्लेयर भूमिपर पैर पटककर बोले—उसे यहाँ रहने दो, वह यहाँ क्यों नहीं आने पावेगी।

रोज़ा पीछे हट गयी। टप्सी धीरे-धीरे शय्याके पास आकर वह फूल मृतकके पैरके नीचे रखकर, भूमिमें लोट गयी और बड़े जोरसे रोने और विलाप करने लगी।

मिस अफिलिया द्रुतवेगसे घरमें आकर उसे बैठाकर सान्त्वना देनेकी अनेक चेष्टायें करने लगीं, पर किसी प्रकारसे भी उसका रोना न रुका। टप्सी रोते-रोते कहने लगी—मिस इवा चली गयी! मिस इवा चली गयी! मैं क्यों न मर गयी! मैं भी तुम्हारे साथ आना चाहती हूँ। मैं भी आना चाहती हूँ—

बालिकाका मर्मभेदी क्रन्दन-रव सुनकर सेन्टक्लेयरका श्वेत पथराया हुआ मुख सहसा लाल हो गया। इवाकी मृत्युके पश्चात् यही पहिली बार उनकी आँखोंसे आँसू गिरे।

मिस अफिलियाने स्नेहमय मृदु-स्वरसे कहा—टप्सी रो मत। मिस इवा स्वर्ग गयी है, वहाँ जाकर वे देवता हो गयी है,

टप्सीने रोते-रोते कहा—मैं तो उन्हें नहीं देख पाती, अब तो मैं उन्हें फिर न देख पाऊँगी।

क्षण भरके लिए सभी चुप हो गये। उपरान्त टप्सीने फिर कहा—मिस इवा! मुझे प्यार करती थीं, मिस इवाने स्वयं कहा था कि वे मुझे चाहती हैं। हाय! हाय! अब और तो मेरे कोई नहीं हैं—अब मुझे कौन चाहेगा?

तब सेन्टक्लेयरने दीर्घ-निश्वास छोड़कर कहा—सचमुच बहिन! इवा टप्सीको बहुत चाहती थी। देखो, तुम इस चिर-दुःखिनी बालिकाको सान्त्वना दे सकती हो कि नहीं।

मिस अफिलिया आँखोंमें आँसू भरे उसको दूसरे घरमें ले गयी और उससे कहने लगीं—चिर दुखिनी टप्सी, मैं तुझे

प्यार करूँगी। इवाञ्जेलिनने मुझे प्यार करनेकी शिक्षा दी है। मैं उसकी भाँति कोमल-हृदय न होनेपर भी तुझे प्यार करूँगी, तुझे प्रेमभरी दृष्टिसे देखूँगी, उत्तम शिक्षायें दूँगी, और सत्पथपर चलानेकी चेष्टा करूँगी। मिस अफिलियाके अति सरल भाव तथा स्नेहसे टप्सीको यह सब समझाने और कहनेसे, आज उसका हृदय उनकी ओर आकृष्ट होगया। वास्तवमें सरल स्नेह क्या ही उत्तम वस्तु है, वह सहज ही पहिचाना जा सकता है। निष्कपट प्रेम तथा अकृत्रिम स्नेहके प्रभावसे पाषाण-हृदय भी मोमकी भाँति पिघल जाता है।

टप्सीका परिवर्तन देखकर सेन्टक्लेयर मन-ही-मन कहने लगे—हा मेरी इवाञ्जेलिन, प्राणप्रिय इवाञ्जेलिन! थोड़े ही दिन इस संसारमें रहकर तुमने इतने सत्कार्य किये, इतने पाषाण-हृदयोंको पिघला दिया, किन्तु मैं इतनी बड़ी अवस्था तक रहा, पर कुछ भी न कर सका! जीवनके दुरुपयोगके लिए ईश्वरके सामने क्या उत्तर दूगा?

देखते-देखते रात्रि बीत गयी, प्रातःकाल हो आया। चारो ओरसे आत्मीय जन और पड़ोसियोंने आकर घरको भर दिया। मधुरताकी प्रतिमा इवाञ्जेलिनकी देहको कफनमें लपेटकर उसका मुख बन्द कर दिया गया। वाटिकाके जिस स्थानपर बैठकर इवा तथा टाम बाइबिल पढ़ते थे, उसी स्थानपर यह क्षुद्र शव रक्खा गया। सेन्टक्लेयर खड़े होकर देखने लगे। वे सोचने लगे—यह स्वप्न है अथवा सत्य घटना? सचमुच ही क्या मेरी प्राणधन इवा भूगर्भमें रख दी गयी? नहीं, सेन्टक्लेयर! तुम्हारी इवाञ्जेलिन भूगर्भमें प्रविष्ट नहीं हुई, यह केवल उसकी अनित्य देह है, पुरातन वस्त्र है। आज इवाञ्जेलिन पुराने वस्त्रोंको छोड़कर नयी पोशाकसे सुसज्जित होकर स्वर्ग गयी है। उसका अमरत्व

कौन विनष्ट कर सकता है? इवाकी मृत्यु क्या! संसारके पापासक्त लोगोंके लिए जो मृत्यु है, वही इवाके लिए केवल वस्त्रका परित्याग मात्र है।

अन्त्येष्टि-क्रिया समाप्त हुई। सब लोग पूर्वानुसार अपने-अपने कार्योंमें लग गये। यह भूलगये कि यह संसार छोड़ना पड़ेगा।

इवाकी माता मेरी अपने कमरेमें जाकर नाना प्रकारका विलाप तथा आर्तनाद करने लगीं। इस विलाप और आर्तनादके समय समस्त दास-दासियोंको उसकी सेवामें नियुक्त रहना पड़ता है। इवाकी मृत्युसे सभी दास-दासी शोकाकुल हुए थे। किन्तु उनको शोक-प्रकाश करनेका समय न रहा। मेरीने सबको व्यस्त कर डाला था। जान पड़ता है, मेरी सोचती थी कि इस संसारमें शोक, दुख तथा प्रेम अन्य किसीके भी हृदयमें प्रवेश नहीं करते। ये सब केवल उसीकी सम्पत्ति हैं। समय-समयपर मेरी कहती थी कि मेरे स्वामीके नेत्रोंसे एक आंसूकी बूँद भी न गिरी, मेरे स्वामी एक बार भी उसे सान्त्वना देने न आये, उसके इस शोकके समय किंचिन्मात्र भी सहानुभूति प्रकट न की, एक भी सान्त्वना-सूचक वाक्य न बोले, मेरे स्वामीके समान निष्ठुर मनुष्य इस संसार और कोई नहीं है। नेत्र और कानके द्वारा लोग बहुत बार धोखा खाते हैं। इन दोनों बहिरिन्द्रियोंसे बाहरी वस्तुएँ ही देखी जा सकती हैं। अन्तरके निगूढतम भाव इनसे कदापि नहीं देखे जा सकते। इसलिए जो बाहरकी अवस्था देखकर ही भले-बुरेका निर्णय करते हैं, वे सहज ही दुःख पायेंगे, इसमें कुछ भी संदेह नहीं। टाम और मिस अफिलियाको छोड़कर, मेरीका यह बाहरी आर्तनाद सुनकर, सेन्टक्लेयरके घरमें रहने वाले अनेक दास-दासी समझते थे कि इवाकी मृत्युसे मेरी

अत्यन्त शोकाकुल हुई है। मेरी और भी अत्यन्त अस्थिर हो उठी और "मेरा भी अन्तकाल उपस्थित है" कहकर चीत्कार करने लगी। उसकी औषधि आदि जुटाने और चिकित्सा करनेमें दास-दासियाँ इतनी व्यस्त हो गयीं कि उन्हें इवाको एक बार स्मरण करने तकके लिए भी अवकाश न मिलता था।

ईश्वरमें जिसका दृढ़ विश्वास है, धर्ममें जिसकी बुद्धि रत है, वे सहजमें ही ज्ञानचक्षुकी सहायतासे, मानव-हृदय-स्थित गूढ़ भावको देख ले सकते हैं। वे कभी बाहरी इन्द्रियोंसे पीड़ित नहीं होते। वे दिव्य-दृष्टिसे सब देख लेते हैं। टाम सेन्टक्लेयरका हृदय-स्थित गंभीर शोकका अनुभव सरलतासे करनेमें समर्थ हुआ था। इसलिए इवाकी मृत्युके उपरान्त वह अपने मालिकका साथ कभी न छोड़ता। जिस समय सेन्टक्लेयर अति उदास मुखसे इवाके प्रकोष्ठमें बैठकर उसकी छोटी सी बाइबिलको हाथमें लेते, उसे एक बार खोलते और फिर बन्द करते, उस समय जो असह्य शोक-यंत्रणा उनके हृदयको बींधती थी, उसे टामके सिवा और कोई नहीं समझ सकता था। इस प्रकारकी, नीरव शोक-यंत्रणासे हृदय जिस प्रकार संतप्त हो जाता है, मेरीके बाह्य आर्त्तनादसे वैसा कभी नहीं हो सकता।

कुछ दिनके बाद सेन्टक्लेयर सपरिवार वह वाटिका-गृह छोड़कर अपने नगर-स्थित घरमें चले आये। वे अपनी हृदय-स्थित दुस्सह शोक-यंत्रणाको दूर करनेके लिए सदैव अनेक प्रकारके कामोंमें मन लगाये रहने लगे।

वे सबके साथ पूर्वके अनुसार सहर्ष मुखसे बात-चीत, तर्क-वितर्क करते थे। उनकी काली पोशाक देखकर कोई यह समझ भी न सकता था कि उन्हें संतान-वियोग हुआ है।

एक दिन मिस अफिलियासे मेरीने कहा—अफिलिया जीजी! सेन्टक्लेयर भी कैसे अजीब आदमी हैं! यह मैं समझती थी कि सेन्टक्लेयर इवाको बहुत प्यार करते हैं! किन्तु अब देखती हूँ कि यह भी नहीं है। सेन्टक्लेयर इस पृथिवीपर किसीको भी प्यार नहीं करते। चाहते होते तो क्या इतनी जल्दी इवाको भूल जाते। एक बार भूलकर भी इवाका नाम मुहँसे नहीं निकालते। पुरुषका मन क्या सचमुच ही दया-मायासे हीन होता है?

अफिलिया—ओह! तुम नहीं समझ सकती। स्थिर जलका श्रोत गंभीरतम प्रदेशमें ही प्रबल वेगसे बहता है।

मेरी—जीजी, मैं इन सब बातोंका विश्वास नहीं करती। मनुष्यके मनमें दया रहनेपर वह प्रकट अवश्य ही हो जायगी। दया-मायाको कोई छिपाकर नहीं रख सकता। किन्तु मनुष्यमें दया-मायाका न रहना ही अच्छा है। मैं भी यदि सेन्टक्लेयरके समान निर्दय हो सकती तो, इतना कष्ट काहेको सहना पड़ता। दया-माया अधिक होनेसे ही न इस प्रकार जली जा रही हूँ।

मामी—मेम साहब आप कहती हैं कि साहबके मनमें दया नहीं है; पर, साहब तो बड़े दयालु हैं। दिन-दिन वे सूखे चले जाते हैं। इवाकी मृत्युके उपरान्त वे एक दिन भी भोजन नहीं करसके। साहब इस समय कुछ भी भोजन नहीं करते, यह कहते-कहते उसके दोनों नेत्रोंसे जल गिरने लगा। वह बार-बार कहने लगी—बेटी इवा! यत्न-सञ्चित धन! तुम्हें जिसने एकबार भी देखा है, वह क्या भूल सकता है।

मामीकी बात सुनकर मेरीने कहा—साहबके मनमें दया होनेपर भी मेरे लिए उन्हें कुछ कष्ट नहीं होता। एक दिन भी मुझे सान्त्वना देनेकी चेष्टा न की।

अफिलिया—किसके मनमें कितना कष्ट है, यह कैसे कोई समझ सकता है। हर एक अपने-अपने हृदयमें अपना-अपना कष्ट भोगते हैं।

मेरी—यह बात ठीक है। मैं जो इतना कष्ट सहन कर रही हूँ, वह क्या कोई समझ सकता है। इवा कुछ-कुछ समझती थी, वह तो चली ही गयी।

जिस समय मेरीकी अफिलियाके साथ इस प्रकारकी बात-चीत हो रही थी, उसी समय घरके एक दूसरे कमरेमें बैठकर सेन्टक्लेयर एवं टाम क्या कह रहे थे, वह सुनो।

यह पहिले ही लिखा जा चुका है कि इवाकी मृत्युकेबाद टाम सदैव अपने स्वामीके साथ ही साथ रहता था। आज सेन्टक्लेयरने, घरके जिस कमरेमें उनकी पुस्तकें थीं उसमें, प्रवेश किया। टामने सोचा था कि वे शीघ्र ही बाहर चले आवेंगे। यह सोचकर वह बरामदेमें बैठकर स्वामीके आनेकी प्रतीक्षा करने लगा। किन्तु सेन्टक्लेयर बाहर न आये। तब टामने धीरे-धीरे उस कमरेमें घुसकर देखा कि उसके प्रभु इवाकी बाइबिलकी छोटी पुस्तकको अपने मुहँपर रखकर सो रहे हैं। वह चुप चाप उनकी शय्याके पास जाकर खड़ा हो गया। सेन्टक्लेयर उसे देखते ही उठ बैठे। किन्तु उसके मुखकी ओर देखकर दयार्द्रचित्त सेन्टक्लेयरका हृदय पिघल गया। वह सरलता और साधुता-पूर्ण मुख-मण्डल स्वामीके दुःखसे एकदम मलिन हो गया है। उस मुखसे कोई बात नहीं निकलती, किन्तु मुखकी कातरता और उसके कारणका भाव प्रभुके दुःखसे सुस्पष्ट रूपसें सहानुभूति प्रकट कर रहा था।

कुछ समयके बाद सेन्टक्लेयरने कहा—टाम, इस संसारकी सभी वस्तुएं असार हैं।

टाम—प्रभु, इस संसारमें जो असार है वह मैं जानता हूँ, किन्तु स्वर्गकी ओर—जहाँ हमारी इवा इस समय है—ईश्वरकी ओर—जिसकी अमृत-गोदमें वे इस समय विराज रही हैं—प्रभु, की दृष्टि पड़नेपर ही भला है।

सेन्टक्लेयर—टाम, मैं स्वर्गकी ओर देख रहा हूँ। ईश्वरकी ओर ताकनेकी चेष्टा करता हूँ, किन्तु कुछ देख नहीं पाता। कुछ देख पानेपर अपने मनको संतोष दे सकता हूँ।

टामने, यह बात सुनकर, एक दीर्घ निःश्वास छोड़ी। फिर सेन्टक्लेयरने कहा—टाम, मेरे पास धर्मचक्षु नहीं हैं। मुझे जान पड़ता है कि परमेश्वर, निर्मल चरित्र बालकको तथा तुम्हारी तरह सरल और साधु प्रकृति लोगोंको दिव्य-दृष्टि देते हैं। इसीसे तुमलोग स्वर्गकी चीजें देख सकते हो।

टाम—धर्म-शास्त्रमें भी यही लिखा है। ज्ञानाभिमानी और हिसाबी लोग ईश्वरको नहीं देख पाते। किन्तु बालककी भाँति सरल चित्तके लोग देख पावेंगे।

सेन्टक्लेयर—टाम, मैं धर्म-शास्त्रपर विश्वास नहीं कर सकता। मैं उसपर विश्वास करता भी नहीं। मेरे मनमें नाना प्रकारके संदेह उपस्थित होते हैं। पर मेरे विश्वास कर सकनेपर ही भला था।

टाम—आप, ईश्वरके निकट प्रार्थना करें। ईश्वर आपके मनके संदेह और अविश्वासको दूर करेंगे।

सेन्टक्लेयर टामकी यह बात सुनकर, स्वप्नावस्थामें जिस प्रकार मनुष्य कहता है, उसी प्रकार, बोल उठे—किसी विषयमें कुछ समझ नहीं पाता। संसारमें क्या प्रेम, प्यार, भक्ति आदि सभी निर्मूल हैं? ये सब क्या मृत्युके साथ ही नष्ट हो जाती है? मेरी इवा क्या नहीं है? क्या स्वर्ग नहीं है? अथवा क्या ईश्वर नहीं है?

टाम—(सजलनेत्र हो तथा घुटने टेककर) प्रभु, सब कुछ है, मैं निश्चय जानता हूँ। प्रभु, आप इन सबपर विश्वास करनेकी चेष्टा करें। अभी कीजिए, परमेश्वरसे प्रार्थना कीजिए।

सेन्टक्लेयर—तुमने कैसे जाना कि ईश्वर है? तुमने कभी उनको देखा तो नहीं?

टाम—मैंने अपने हृदयमें उसकी विद्यमानताका अनुभव किया है। अब भी वह मेरे हृदयमें हैं। प्रभो! पहिलेके मालिकने जब मुझे अपने स्त्री-पुत्रोंसे अलग करके बेच दिया, तब मैं एक दम निराश हो गया। मेरे मनमें किञ्चितमात्र बल न था। तब अनन्योपाय होकर मैंने ईश्वरको पुकारा। सहसा मेरे मनमें शान्तिका उदय हुआ। मुझसे मानो किसीने कहा—कुछ डर नहीं है टाम, मैं तुम्हारे साथ हूँ। इससे मेरे मनके सारे दुःख दूर हो गये। हृदयमें आशाका संचार हुआ। प्रभो! ऐसे भाव क्या अपने-आप ही हृदयमें उदय हो सकते हैं? ईश्वरने ही उस समय मेरे मनको बल दिया था।

ये बातें कहते समय टामका हृदय भक्ति और प्रेमसे गद्गद हो गया। उसके नेत्रोंसे अविरल धारसे आँसू गिरने लगे। तब सेन्टक्लेयरने उसके कंधेके ऊपर अपना मस्तक रखकर उसके गलेसे लिपट गये, एवं कुछ समयके पश्चात् फिर बोले—टाम, तू मुझे प्यार करता है?

टाम—प्रभु! दयालु प्रभु! यदि मेरे प्राण देदेनेपर भी आपको ईश्वरपर भक्ति हो जाय तो, विश्वास रखिये यह गुलाम इसी क्षण प्राण-देनेको प्रस्तुत है।

सेन्टक्लेयर—पागल! मेरे लिए किसीको प्राण विसर्जन न करना पड़ेगा। मैं तो तुम-सरीखे साधु और सहृदय मनुष्यके प्यार-योग्य भी नहीं हूँ।

टाम—प्रभु! ईश्वर, आपको मेरी अपेक्षा सहस्र-गुना अधिक प्यार करते हैं।

सेन्टक्लेयर—तुमने यह कैसे जाना कि ईश्वर मुझे प्यार करता है?

टाम—मेरे हृदयमें यह प्रत्यक्षरूपसे अनुभूत होता है। प्रभु, इवा मेरे पास बाइबिलका पाठ करती थी। उसकी मृत्युके पश्चात् मेरे पास कोई धर्म-पुस्तकका पाठ नहीं करता, एकबार आप पुस्तक पढ़ें।

सेन्टक्लेयर बाइबिलमें लेजारसके उद्धारका वृत्तान्त पढ़ने लगे।

टाम अर्धोन्मीलित नेत्रसे, भक्तिपूर्ण हो हाथ जोड़कर सुनने लगा। पाठ समाप्त होनेपर सेन्टक्लेयरने पूछा—टाम यह सब तुम्हें सत्य जान पड़ता है?

टाम—यह सब मैं प्रत्यक्ष देखता हूँ।

सेन्टक्लेयर—टाम! परमेश्वर यदि दया करके मुझे तुम्हारे नेत्र देता।

टाम—परमेश्वर आपको अवश्य देंगे।

सेन्टक्लेयर—किन्तु टाम, तुम जानते हो, मैंने ढेरकी ढेर पुस्तकें पढ़ी हैं। मैं यदि कहूँ कि धर्म-शास्त्र मिथ्या है, तो क्या तुम्हें धर्म-शास्त्रमें संदेह न होगा?

टाम—(बड़े अनादरके भावसे) कदापि नहीं। एक बूँद भी अविश्वासका भाव अथवा किसी भी प्रकारका संदेह मेरे मनमें उपस्थित न होगा।

सेन्टक्लेयर—क्यों, मेरी बात सुनकर तुम्हारे मनमें धर्म-शास्त्रके प्रति सन्देह-भाव क्यों न उत्पन्न होगा? तुम तो यह जानते ही हो कि मैंने तुम्हारी अपेक्षा कहीं अधिक ज्ञान प्राप्त किया है।

टाम—प्रभु ! इसी समय आपने धर्म-पुस्तकमें पढ़ा है कि ज्ञानाभिमानी तथा हिसाबी लोग ईश्वरको नहीं देख पाते। बालकके समान जिसका हृदय है, वही ईश्वरके दर्शन पा सकता है। जान पड़ता है आप मेरे मनकी परीक्षा कर रहे हैं। आपके मनमें वास्तवमें यह भाव जागा नहीं है।

सेन्टक्लेयर—हाँ टाम, मैंने तुम्हारे मनकी परीक्षा की है। मैं धर्म-शास्त्रमें अविश्वास नहीं करता। धर्म-शास्त्र युक्ति-संगत है, इसमें कोई संदेह नहीं। किन्तु दुःखका विषय यह है कि मैं चिराभ्यस्त संदेहका भाव दूर नहीं कर सकता।

टाम—प्रार्थना कीजिए, आपका यह अभ्यास दूर होजायगा।

सेन्टक्लेयर—मैं प्रार्थना नहीं करता, यह तुमने कैसे जाना?

टाम—आप क्या प्रार्थना करते हैं ?

सेन्टक्लेयर—मैं प्रार्थना कर सकता हूँ, किन्तु किसके निकट प्रार्थना करूँ यह नही समझ पाता। तुम प्रार्थना करो, मैं सुनूँ।

तब टामभक्ति भावसे ईश्वरके निकट प्रार्थना करने लगा। उसकी सरल प्रार्थनासे सेन्टक्लेयरका हृदय गद्गद हो गया। प्रार्थना-स्रोतमें उनका हृदय स्वर्गकी ओर बहने लगा। उन्होंने देखा—प्रत्यक्ष अनुभव किया—इवा अमृतमयके अमृत-गोदमें विराज रही है।

टामकी प्रार्थना समाप्त होनेपर सेन्टक्लेयरने कहा—टाम तुम समय-समयपर मेरे पास इसी प्रकारकी प्रार्थना करना। अभी जाओ। मैं कुछ समय तक एकान्तमें बैठकर विचारकरूँगा।

टाम तब उस कमरेसे चला गया।

एकतीसवाँ परिच्छेद

पुनर्मिलन

समय किसीकी प्रतीक्षा नहीं करता। दिन-पर-दिन, महीने-पर-महीने बीतते जाते हैं। काल-श्रोत संसारके सम्पूर्ण नर-नारियोंको अपनी छातीपर चढ़ाकर अनन्त सागरकी ओर बहाये लिये जाता है। इवाकी क्षुद्रजीवन-तरी अनन्त सागरमें निमग्न हो गयी। दो-चार दिन तक उसके सभी आत्मीय-जन उसके लिए शोकाश्रु बहाते रहे। किन्तु कालके साथ-साथ वें सभी शोक और दुःखको भूलने लगे। सभी पूर्वकी भाँति खान-पान क्रय-विक्रय आदि सब प्रकारके सांसारी कार्योंमें संलग्न हो गये। किन्तु क्या सेन्टक्लेयर भी पूर्वकी भाँति जीवन व्यतीत करनेमें समर्थ हुए?

इस संसारमें इवा ही सेन्टक्लेयरकी एकमात्र, जीवन-सर्वस्व थी। इवाके लिए ही उनका जीवन-धारण था। इवा ही उनके जीवनकी एक मात्र आधार थी, अतएव इवाके इहलोक परित्याग कर देनेपर उनका जीवन लक्ष्य-शून्य हो गया। अब वे किसके लिए जीवन-धारण करेंगे? किसके लिए अर्थ-संचय करेंगे? अब उनके जीवनका उद्देश्य क्या है?

ससारमें आशा-भरोसाका समूल नाश हो जानेपर क्या सत्य-सत्य ही मानव-जीवन उद्देश्य-हीन हो जाता है? इस पार्थिव आशाभरोसाके अतिरिक्त क्या मानव-जीवनका और कोई महान उद्देश्य नहीं है? विचार करनेपर सहजमें ही पाया जायगा कि मानव-जीवनका एक अन्य ही उच्चतर उद्देश्य

है। मानव-जीवनका वह महत् उद्देश्य केवल पार्थिव आशा-भरोसा, अथवा पार्थिव सुख-शान्तिसे सम्बद्ध नहीं है। जीवनका वह उच्चतर लक्ष्य, वह महान् उद्देश्य, सेन्टक्लेयरके निकट बिल्कुल ही अपरिचित न था, इसलिए उनका जीवन एकदम लक्ष्य-शून्य न हुआ। विशेषतः इवाकी अन्तिम वाक्यावलि सदैव उनके कर्ण-कुहरोंमें प्रतिध्वनित होने लगीं। क्या सोते, क्या जागते, सदैव इवाके वे वाक्य उनके हृदयमें जागते रहते थे। वे सर्वदा देखते कि इवाके वे छोटे हाथ, अँगुली उठाकर, उन्हें जीवन-पथ स्वर्गका भाव दिखा रहे हैं। किन्तु उनके चिरसंगी आलस्य तथा यह वर्तमान शोक, उनके कर्त्तव्य-पथमें उनके स्वर्ग मार्गमें, अग्रसर होनेमें बाधा डालने लगे, पर इन सभी विघ्न-बाधाओंको पैरोंसे ठुकराकर जीवनके महत् उद्देश्यके साधनकी शक्ति सेन्टक्लेयरमें थी। वे देश-प्रचलित किसी भी प्रकारकी धर्मोपासनामें योग न देते थे, पर वे लड़कपनसे ही बड़े सूक्ष्मदर्शी, एवं भावुक थे। उनके मनमें नित्य नये भाव उत्पन्न होते थे। वास्तवमें इस संसारमें जिसके मुखसे सर्वदा धर्म और परलोकके प्रति विशेष अश्रद्धा और अनास्था प्रकाशित होती है, उन्हींके मुखसे कभी-कभी धर्म-सम्बन्धी अति निगूढ-तत्त्व सुना जाता है। मूर, बाइरन, गेटे आदि महात्मा लोग जन्म भर धर्ममें अनास्था प्रकट करते रहे, किन्तु अनेकानेक धर्म-शिक्षक लोग, धर्मके जिन गम्भीर भावोंको समझनेमें सदा असफल हुए, इन लोगोंने उन्हीं विषयोंकी, उन्हीं भावोंकी, समुचित व्याख्या की है।

धर्मके प्रति सेन्टक्लेयरके मनमें किसी प्रकारकाद्वेष कदापि न था। वे जानते थे कि धर्मका पालन करना अत्यन्त कठिन कार्य है, दुर्बल मनुष्यके लिए तो नितान्त दुःसाध्य है।

इसीसे वे मनमें सोचते थे कि जो व्यक्ति धर्म-ग्रहण कर उसका पालन नहीं कर सकता, उसकी अपेक्षा धर्म-ग्रहण न करने वाला ही अच्छा है। यही सोचकर वे सदा धर्म-चर्चासे दूर ही दूर रहते थे। पर अब उस धर्मानुसरणके अतिरिक्त क्या और कोई उनके जीवनका लक्ष्य था? अब वे इवाकी बाइबिल, छोटी पुस्तकके पढ़नेमें ध्यान देने लगे। अपने दास-दासियोंके विषयमें क्या करना होगा, इस विषयकी चिन्ता करने लगे। अब उन्होंने भलीभाँति समझ पाया कि इवाने जो कहा था वही सत्य है, दास-दासियोंको दासत्व-शृंखलासे मुक्त कर देने में भलाई है। उन्होंने, अपने शहरवाले घरमें लौट आनेपर प्रथमतः टामको दासत्व-प्रथासे एकदम मुक्त करेंगे, यह संकल्प कर लिया। एवं अपने वकीलसे टामके मुक्ति-पत्रकी पाण्डु-लिपि तैयार करनेको कहा। टाम इस समय सदैव उनके साथ ही रहता था। टामको उनकी प्राणाधार इवा प्यार करती थी, टाम उनकी इवाका प्रिय-प्राण था। अतएव टामको देखते ही जिस प्रकार इवाका स्मरण हो आता था, वैसा और किसीसे नहीं होता था। इसीसे वे इवाकी स्मृति-चिह्न-स्वरूप टामको सदा अपने साथ रखते थे।

एक दिन सेन्टक्लेयरने टामको सम्बोधन कर कहा—टाम, मैं तुम्हें दासत्व-प्रथासे मुक्त कर दूँगा। तुम केन्टाकी जानेके लिए प्रस्तुत रहो। अपना सामान बाँध-छाँधकर ठीक रखो।

यह सुनकर टामका मुख अत्यन्त प्रफुल्लित हो उठा। उसने हाथ उठाकर कहा-परमेश्वर आपका मंगल करें। किन्तु सेन्टक्लेयर टामको इस प्रकार उल्लसित होते देखकर मन-ही-मन दुःखित हुए। उन्होंने पहिले यह न सोचा था कि टाम उन्हें छोड़कर जाता है, तो इतना आग्रह प्रकट करेगा। अतएव उन्होंने टामसे पूछा-टाम, तुमने तो हमारे घरमें कभी

किसी प्रकारका कष्ट नहीं पाया, फिर तुम मेरा घर छोड़कर जानेमें इतने प्रसन्न क्यों हो ?

टाम—प्रभु, आपका घर छोड़कर जानेके लिए इतना प्रसन्न नहीं हुआ। स्वाधीन होऊँगा, यह बात सोचकर बड़ा आनन्द होता है।

सेन्टक्लेयर—तुम स्वाधीन होकर जिस भाँति रहोगे, मेरे घर क्या उसकी अपेक्षा अधिक सुख नहीं भोग रहे हो ?

टाम—क्यों नहीं भोग रहा हूँ।

सेन्टक्लेयर—मैं तुम्हें पहिरनेके लिए जैसे वस्त्र देता हूँ, खानेके लिए जैसे उत्तम-उत्तम आहार्य द्रव्य देता हूँ, स्वाधीन होनेपर तुम इतना द्रव्य न कमा पाओगे कि ऐसा खा-पहिर सको।

टाम—प्रभु ! स्वाधीन होनेपर मेरे भाग्यसे जो कुछ मिल जायगा, वही अमृतकी भाँति मधुर होगा। पराधीन रहकर स्वर्ग-सुख भोगनेमें भी तृप्ति नहीं होती। यही मनुष्यका स्वभाव है।

सेन्टक्लेयर—यह हो सकता है, किन्तु तुम्हें एक मास ठहरकर जाना होगा।

टाम—प्रभु आपको ऐसी दुरवस्थामें छोड़कर मैं नहीं जाऊँगा। आप जितने दिन मुझे रखना चाहें, रखें। मेरे द्वारा यदि आपका कोई उपकार हो जाय,तो यह मेरे लिये बड़े सौभाग्य और सुखकी बात है।

सेन्टक्लेयर—मेरी यह दुरवस्था समाप्त होनेपर तुम जाओगे ? मेरी यह दुरवस्था कब समाप्त होगी ?

टाम—ईश्वरकी ओर, स्वर्गकी ओर, जिस दिन आपकी दृष्टि पड़ेगी, जिस दिन धर्ममें आपकी मति होगी।

सेन्टक्लेयर—इस समय तक तुम यहाँ रहना चाहते हो? नहीं, नहीं, मैं इतने दिनों तक तुम्हें यहाँ न रखूँगा। तुम्हें शीघ्र ही छुटकारा दे दूँगा। तुम अपने घर जाकर अपने पुत्र-कलत्रका मुख देखो। उन लोगोंको मेरा आशीर्वाद कह देना।

टामने सजल नयनोंसे कहा—प्रभु मेरा निश्चित विश्वास है कि वह दिन शीघ्र ही आवेगा और ईश्वर आपसे अपना कोई काम करा लेगा।

सेन्टक्लेयर—मैं ईश्वरका काम करूँगा? वह कौन सा कार्य है, बतलाओ तो?

टाम—क्यों प्रभु? मैं जब नितान्त गरीब और मूर्ख हूँ, तब परमेश्वर मुझे अपना कार्य करनेके लिए देता है। मेरे प्रभु सेन्टक्लेयर तो विद्वान हैं, धनी हैं, उनके कुटुम्ब हैं, इच्छा करनेपर परमेश्वरके अनेक प्रिय कर सकते हैं।

सेन्टक्लेयर—(हँसते-हँसते) टाम, तुम समझते हो कि परमेश्वरके बहुतसे कार्य मनुष्यको कर देने पड़ते हैं।

टाम—सभी मनुष्य ईश्वरकी सन्तान हैं। जभी हम किसी एक गरीब आदमीकी सहायता करते हैं, तभी ईश्वरका कार्य करते हैं।

सेन्टक्लेयर—टाम, तुम्हारा यह धर्म-शास्त्र, हमारे देशमें प्रचलित पादरियोंके धर्म-शास्त्रसे कहीं उत्कृष्ट जान पड़ता है।

सेन्टक्लेयर और टाममें जिस समय यह बात-चीत हो रही थी, उसी समय कई भले आदमी सेन्टक्लेयरसे भेंट करने आये। इसलिए उनकी बात-चीत वहीं बन्द हो गयी।

मेरी सेन्टक्लेयर इवाके शोकमें बड़ी उद्विग्न हो गयी थी। किन्तु उसमें यह एक विशेष गुण था कि किसी शोक-दुःखके कारण स्वयं अस्थिर हो जानेपर दास-दासियोंको उसकी अपेक्षा सहस्र गुणा अधिक अधीर कर देती थी। इवा जब

जीवित थी तब इस अत्याचारसे दास-दासियोंकी रक्षा करने· की चेष्टा करती थी। किन्तु इस समय इन निराश्रय दास-दासियोंकी और कौन रक्षा करेगा! इसीसे इवाके लिये ये सब विशेष शोकाकुल हुए। विशेषतः मामी अपनी संतानसे अलग होनेपर इतने दिनों तक इवाको अपनी छातीसे लगाकर अपना शोक कुछ-कुछ भूल गयी थी। इवाके मरजानेपर वह दिन-रात चुप-चाप रोया करती थी। इस शोकावस्थामें कभी-कभी मेरीकी सेवा-शुश्रूषामें त्रुटि हो जाती थी और वह इसके लिये सदा उसकी भर्त्सना किया करती। मिस अफि· लिया इवाको बहुत प्यार करती थीं, अब वे चुप-चाप गम्भीर भावसे उसका मृत्यु-शोक सहन करने लगीं। वे पहिलेकी भाँति सदैव कार्यमें लगी रहतीं। पूर्वकी अपेक्षा अब अधिक बल-पूर्वक टप्सीको शिक्षा देने लगीं अब टप्सीको निग्रो समझकर मन-ही-मन घृणा न करती थीं। अपनी कन्याकी भाँति उसे प्यार करने लगीं। टप्सीका चरित्र भी क्रमशः सुधरने लगा। वह एक ही दिनमें सच्चरित्र हो गयी हो, ऐसी बात न थी, किन्तु इवाके व्यवहारसे उसका मन बहुत परि-वर्तित हो गया था। पहिले कोई भी उपदेश उसके हृदयको स्पर्श तक न करता था। इस समय वह मानसिक जड़ताका भाव दूर हो गया।

एक दिन मिस अफिलियाने टप्सीको अपने पास बुला भेजा। टप्सी शीघ्रता पूर्वक अपने जामेके नीचे कोई वस्तु छिपाकर चली आ रही थी, किन्तु उसी समय रोज़ाने उसे पक-ड़कर कहा—जान पड़ता है तूने कोई वस्तु चुरायी है। बड़ी शीघ्रतासे चोलीके भीतर क्या छिपाया है?

टप्सीने जो चोलीके भीतर छिपाया था वह किसी प्रकार न छोड़ा। दोनों हाथोंसे ढाँप रखा! रोज़ा उसका हाथ

हटानेके लिए जोरसे उसका हाथ पकड़ कर खींचने लगी। टप्सी लोटकर चिल्लाती-चिल्लाती रोजाको लात मारने लगी। अफिलिया और सेन्टक्लेयरके, उसका चीत्कार सुनकर, नीचे आनेपर रोजाने कहा कि टप्सीने कुछ चुराया है। टप्सीने कहा—मैंने कुछ नहीं चुराया। तब मिस अफिलियाने टप्सी-से कहा—तुम्हारे हाथके नीचे जो कुछ है वह मुझे दे दो। टप्सीने देनेमें पहिले अनिच्छा प्रकट की। पर मिस अफिलिया-के दूसरी बार माँगते ही उसने फटेहुए मोजोंकी एक पोटरी उनके हाथमें दी। उस फटहे मोजोंकी गठरीमें से,/इवाकी दी हुई एक छोटीसी पुस्तक एवं उसके बालोंका वही गुच्छा बाहर निकला। यह देखकर सेन्टक्लेयरके नेत्रोंसे जल बहने लगा।

टप्सी रोते-रोते कहने लगी—मुझसे यह सब मत छीनिये। सेन्टक्लेयरके नेत्रोंसे जल गिरने लगा। उन्होंने टप्सीको सान्त्वना देते हुए कहा—तुम्हारी ये चीजें कोई न लेगा। यह कहकर वह सब उसके हाथमें देकर वे मिस अफिलियाके साथ वहाँ से चले गये। इसके पश्चात् उन्होंने अफिलियासे कहा—बहिन, मुझे जान पड़ता है, कि टप्सी अपना चरित्र सुधार लेगी। जिस मनमें शोक-दुःखका उदय होता है, वह सरलतासे सत्पथपर चलाया जा सकता है। तुम अब विशेष चेष्टा करो।

अफिलिया—टप्सी पूर्वापेक्षा बहुत सुधर गयी है। इसके सम्बन्धमें अब मुझे बड़ी आशा हो रही है। किन्तु, तुमसे पूछती हूँ—टप्सी मेरी है या तुम्हारी ?

सेन्टक्लेयर-क्यों, टप्सीको तो मैंने एकदम तुम्हें दे दिया है।

अफिलिया—आइनके अनुसार वह अभी मेरी नहीं है। आइनके अनुसार इसे मुझे देना होगा।

सेन्टक्लेयर—बहिन, तुम तो इसे नियमानुसार लेना चाहती हो पर तुम्हारे देशका दासत्व-प्रथा-विरोधीदल तुम्हें अपनी पंक्तिसे अलग कर देगा। तुम्हें दासाधिकारिणी समझेंगे।

अफिलिया-अपने देशमें जानेपर मैं इसे स्वाधीनता प्रदान करूँगी। मैं इसके लिए इतना परिश्रम करती हूँ, इसे साथ न ले जानेसे सारा परिश्रम व्यर्थ हो जायगा।

सेन्टक्लेयर—बहिन,कैसा अन्याय है! अच्छा फल लगेगा, कहकर कोई बुरा कार्य करनेके लिए मैं किसी भाँति सम्मति नहीं दे सकता।

अफिलिया—इस समय हँसी-दिल्लगी छोड़कर जरा ध्यानसे सोचकर देखो कि इसे दासत्व-प्रथासे मुक्त न करने-पर धर्म-शिक्षा देनेका कोई भी फल न होगा। तुम यदि सचमुच ही इसे मुझे देना चाहते हो,तो नियमानुसार लिखा-पढ़ी करके एकदम दे दो।

सेन्टक्लेयर—अच्छा, लिखा-पढ़ी करके ही दूँगा। यह कहकर सेन्टक्लेयरने संवाद-पत्र पढ़ना आरम्भ किया।

अफिलिया—तो अभी ही लिखा-पढ़ी कर दो।

सेन्टक्लेयर—तुम इतना घबड़ाती क्यों हो?

अफिलिया—कोई करनेका कार्य, कलपर टाल देना, क्या उचित है? जो कुछ करना हो अभी करो। यह कलम-दावात तथा कागज लो, और अभी ही लिख दो।

सेन्टक्लेयर स्वभावसे ही कुछ आलसी थे। 'करूँगा' ही उनके मुँहसे सुना जाता था। 'करता हूँ' शब्दका प्रयोग वे कभी न करते थे। इसलिए अफिलियाकी व्यस्तता, देख कुछ विरक्त हो बोले—बहिन, भला तुम्हें क्या हुआ है? तुम क्या मेरी बातपर विश्वास नहीं करतीं? तुमने अब ठीक यहूदियोंकासा व्यवहार आरम्भ किया।

अफिलिया—मैं यह काम एकदम पक्का कर देना चाहती हूँ। तुम्हारी मृत्यु हो जा सकती है, तुम ऋण-ग्रस्त हो जा सकते हो। उस समय टप्सी नीलाम-घरमें भेज दी जायगी।

सेन्टक्लेयर—तुम बड़ी हिसाबी हो, तुम्हारे हाथसे अब निस्तार नहीं,यह कहकर सेन्टक्लेयरने उसी क्षण एक दान-पत्र लिखकर टप्सीको मिस अफिलियाके हाथ सौंप दिया और दान-पत्र मिस अफिलियाकी ओर रखते हुए बोले—वारसीन्ट! कन्या ग्रहण करो।

अफ़िलियाने दान-पत्र हाथमें ले कुछ हँसकर कहा—यह काम तो हुआ, पर इसमें किसी एक आदमीको साक्षी भी तो होना पड़ेगा।

ओह! इस यंत्रणाका अभी अन्त नहीं! यह कहकर सेन्टक्लेयरने दरवाजा खोलकर अपनी स्त्रीको बुलाया—मेरी, तुम्हें बहिन इस कागजपर हस्ताक्षर करनेके लिए, बुला रही हैं। एक बार यहाँ आओ।

मेरीने कागजको पढ़कर कहा—यह क्या! कैसी दिल्लगी-की बात है! इसकी भी लिखा-पढ़ी! किन्तु मैं समझती हूँ कि बहिन, जैसी धर्म-भीरु हैं, उससे तो वे दास रखनेकी भाँति भयंकर कुकार्य न करेंगी। जो कुछ भी हो, इसे लेने-की इनकी ऐसी ही इच्छा हुई है, तो मैं प्रसन्नताके साथ उसे पूरी करूँगी।

यह कहकर मेरी हस्ताक्षर करके चली गयी। सेन्टक्लेयर वह कागज अफ़िलियाके हाथमें देकर बोले—अब टप्सी सब प्रकारसे तुम्हारी हुई। उसकी देह और आत्मा सभी तुम्हारे अधिकारमें हैं।

अफिलिया—वह पहिले जैसी मेरी थी, अब भी वैसी ही मेरी है। ईश्वरके अतिरिक्त और किसीकी क्षमता नहीं कि

इसे मेरे हाथमें समर्पण कर सके। अब मैंने इसकी रक्षाकी क्षमता प्राप्त की।

नवीन कानूनके अनुसार वह तुम्हारी हुई, यह कहकर सेन्टक्लेयर दूसरे कमरेमें चले गये। अफिलिया भी दानपत्र-को सावधानीसे अपनी सन्दूकमें रखकर उन्हींके पीछे-पीछे चली गयीं, क्योंकि मेरीके साथ बड़ी देर तक बैठकर बात-चीत करना उसे अच्छा न लगता था।

कुछ समयके पश्चात् मिस अफिलिया बोलीं—अगष्टिन, तुम्हारी मृत्यु होनेपर इन दास-दासियोंकी क्या दशा होगी, इसके सम्बन्धमें तुमने कुछ प्रबन्ध किया है?

सेन्टक्लेयरने उत्तर दिया—नहीं, कोई प्रबन्ध नहीं किया।

अफिलिया—तब, तुम इस समय जो इन्हें इतने सुखसे रखते हो, उससे क्या लाभ होगा?

यह चिन्ता सेन्टक्लेयरके चित्तमें कई बार उपस्थित हुई थी, किन्तु अबतक उन्होंने इसके सम्बन्धमें कुछ किया न था। उन्होंने अफिलियाके प्रश्नके उत्तरमें कहा—मैं इनके लिए कोई न कोई अवश्य प्रबन्ध करूँगा।

अफिलिया—कब करोगे?

सेन्टक्लेयर—इसी बीचमें किसी दिन कर दूँगा।

अफिलिया—प्रबन्ध करनेसे पूर्व ही यदि तुम्हारी मृत्यु हो जाय?

सेन्टक्लेयर—बहिन, तुम्हें क्या हो गया है? मेरे शरीरमें मृत्युके कोई लक्षण देखती हो, जो तुमने अन्तिम समयका सब प्रबन्ध करना आरम्भ कर दिया?

अफिलिया—हमलोग सदा मृत्युके ही मुखमें पड़े रहते हैं।

सेन्टक्लेयर यह सुनकर उठ खड़े हुए और संम्वाद-पत्र रखकर धीरे-धीरे बाहर बरामदेकी ओर चले गये। यह सब

बातें उन्हें अच्छी न लगती थीं। इसीलिए वे उठकर बरामदे-में चले गये। किन्तु अपने आपही उनके मुखसे "मृत्यु" यह शब्द उच्चरित होने लगा। सोचने लगे, कि यह बड़े आश्चर्य की बात है कि संसारमें 'मृत्यु' नामक एक शब्द तथा एक अवस्था विद्यमान है, किन्तु हम लोग उसे एक दम भूले हुए हैं। आज जिस मनुष्यको इतना आशा-भरोसा तथा अहंकार है, वह कल मृत्युके मुखमें गिरकर चिरकालके लिए चला जाता है। सोचते-सोचते, बरामदेके दूसरे किनारे जानेपर उन्होंने टामको देख पाया। वह अपने सामने बाइबिल रखकर अत्यन्त मनोयोगके साथ एक-एक शब्द पढ़ रहा था। वे टामके पास बैठकर बोले—मैं तुम्हारे पास बाइबिल पढ़ूँगा।

टामने कहा—प्रभु, यदि आप अनुग्रह करके पढ़ें, तो बहुत अच्छा हो। आपके पढ़नेसे मैं सहजमें ही समझ लेता हूँ।

टामने जिस स्थानपर बड़े-बड़े चिह्न रख छोड़े थे, बाइबिलके उसी स्थानसे सेन्टक्लेयर यों पढ़ने लगे—

"जब सारे स्वर्गीय दूतोंसे परिवेष्टित होकर मनुष्य-संतान सिंहासनपर बैठकर विचार करने लगेंगे, तब वे पापियोंको पुण्यात्माओंसे अलग करेंगे। पश्चात् पापियोंको समुचित दण्डाज्ञा देकर कहेंगे—नराधमो! दूर हो! मैं जिस समय प्यासा हुआ था, तुम लोगोंने मुझे पानी नहीं दिया, मैं जब भूखा हुआ था, तब तुम लोगोंने मुझे भोजन नहीं दिया, मैं जिस समय वस्त्राभावसे नंगा हो रहा था, उस समय तुमने मुझे वस्त्र नहीं दिया; मैं जिस समय बन्दी हुआ था, उस समय तुमने मुझसे पुकारकर कुछ पूछा नहीं। पापी लोग यह बात सुनकर कहेंगे—प्रभु! आपको हमने कब भूखे-प्यासे असहाय तथा बन्दी देखा है, और आपकी सहायता नहीं की? यह प्रश्न सुनकर वे उत्तर देंगे—इन मेरे भाइयों में से जो अ-

त्यन्त दीन, क्षुद्रतम व्यक्ति हैं, उनके साथ जिसने जिस सीमा तक निष्ठुराचरण किया है, मेरे साथ भी उसका उतना ही वह कठोर आचरण हुआ है।

बाइबिलमें यह पाठ पढ़ते-पढ़ते सेन्टक्लेयरका हृदय काँप उठा। वे बार-बार यह पाठ पढ़ने लगे, एकाग्र चित्त होकर सब बातें विचारने लगे। इसके पश्चात् टामको सम्बोधन कर कहने लगे—टाम, मुझ सरीखे जो लोग जीवन-व्यतीत करते हैं, वे ही तो ईश्वरके विचारमें ऐसा दण्ड पावेंगे। मैं निश्चिन्त होकर आत्म-सुखमें रत हो रहा हूँ, किन्तु जो सैकड़ों ईश्वर-संतान, अनाहार रहकर अनेक प्रकारके कष्ट सहते हुए, जीवन बिता रहे हैं उनके विषयमें भूलकर भी कोई चिंता नहीं करता।

टामने कुछ उत्तर नहीं दिया। सेन्टक्लेयर चिन्ता-मग्न होकर बरामदेमें इधर-उधर टहलने लगे। वे इतनी गम्भीर चिन्तामें मग्न हो गये थे कि चाय पीनेका घंटा बजनेपर वे सुन नहीं सके। टामके घण्टा बजनेकी बातको क्रमशः दो बार याद दिलानेपर वे चाय पीने गये। चाय पीते-सयम भी वे चिन्तामग्न थे। चाय-पान समाप्त होनेपर वे, उनकी स्त्री मेरी, तथा अफिलिया चुपचाप बैठनेके कमरेमें आयी।

मेरी देखते-ही-देखते सो गयी। अफिलिया सिलायी करने लगीं। सेन्टक्लेयर पियानोंके पास जाकर धीरे-धीरे एक करुणस्वर बजाने लगे। वे उस समय भी गम्भीर चिन्तामें मग्न थे। उन्हें देखकर जान पड़ता था मानो वे स्वयं बाजेके मुख-द्वारा कुछ कह रहे हैं। कुछ क्षणके पश्चात् दराजसे एक पुरानी संगीत-पुस्तक बाहर निकाली और उसके पन्ने उलटते-उलटते अफिलियाकी ओर देखकर कहने लगे—यहाँ आओ देखो, यह मेरी माताकी पुस्तक है। ये मेरी माताके हस्ता-

क्षर हैं। मोजारेटकी वाद्य-पुस्तकसे माने इसे उतारा था। अफिलियाने उठकर उसे देखा। सेन्टक्लेयरने कहा—माता यह गीत प्रायः गाया करती थीं। मुझे ऐसा ज्ञान होता है, मानों अभी मैं उनका गान सुन रहा हूँ। यह कहकर सेन्ट-क्लेयर पियानोंके दो-एक गम्भीर कार्ड बजाकर, उसके साथ "डिसइरि" नामक एक अत्यन्त गम्भीर प्राचीन गीत गाने लगे।

टाम बाहर बरामदेमें बैठा था। गाना सुनकर द्वारपर आकर खड़ा हो गया। वह संगीतका अर्थ कुछ भी न समझ सका। किन्तु बाजे और गानेके भावसे उसका हृदय एक दम पिघल गया। विशेषत जब सेन्टक्लेयर गीतका करुण-तर अंश गाने लगे, तो वह विमुग्ध हो गया।

गाना समाप्त होनेपर सेन्टक्लेयर हाथपर गाल रखकर स्थिर चित्तसे न जाने क्या विचारने लगे। एवं कुछ क्षणके पश्चात् उठकर घरके भीतर टहलने लगे। इसके उपरान्त अफिलियाके पास आकर बोले—बहिन परलोक सम्बन्धी विश्वास मानव-हृदयमें कैसी अपूर्व शान्ति उपस्थित कर देता है। केवल अपूर्व शान्ति ही उपस्थित कर देता हो, सो भी नहीं, वरन् यही विश्वास मनुष्यको संसारके अत्याचार अन्याय-व्यवहार तथा कठोर कष्ट सहन करनेमें समर्थ बनाता है। सभी को यह आशा रहती है कि किसी समय संपूर्ण कष्ट, सब अन्याय-व्यवहार दूर होंगे।

अफिलिया—हम-सरीखे पापियोंके लिए परलोक एक भयावनी वस्तु है।

सेन्टक्लेयर—मेरे लिए भयंकर है। मैं आज टामके पास बाइबिलमें परलोक-सम्बन्धी पाठ पढ़ रहा था। पढ़ते-पढ़ते हृदय काँप उठा। मैं समझता था कि कुकार्य करना ही पाप है, एवं भयंकर कुकार्यके फलसे ही लोग स्वर्ग-धामसे वंचित

हो जाते हैं, किन्तु बाइबिलकी सम्मति ऐसी नहीं है। प्रकृत-पक्षमें सत्कार्य न करना ही घोर पाप है। इसी पापके लिए ही परलोकमें असद्गति प्राप्त होती है।

अफिलिया—मेरी समझसे तो इस संसारमें जन्म ग्रहण कर जो सत्कार्य नहीं करता, वह असत्कार्य न करे, ऐसा नहीं हो सकता। यहां मनुष्यके लिए सत और असत केवल यही दो मार्ग हैं। सत्पथपर न चलनेसे असत्यका अवलम्बन करना ही पड़ेगा।

सेन्टक्लेयर व्याकुल-चित्तसे अपने आप कह उठे—तब—तब जिस मनुष्यको, उसके हृदय, उसकी उच्च-शिक्षा, एवं समाजकी अभाव-राशिने, उच्च-स्वरसे आह्वान करके भी, किसी महाव्रतका व्रती नहीं बना पाया, जो नितान्त उदासीन दर्शककी भाँति, सहस्रों मनुष्योंकी यंत्रणा, दुर्गति, अविचार और अत्याचार पीड़ा देखकर भी कार्य-क्षेत्रमें प्रवेश न कर स्वप्न समुद्रमें इधर-उधर बहता फिरता है, उसके लिए क्या कहना होगा?

अफिलिया—मैं तो कहती हूँ कि उस व्यक्तिका, पश्चात्ताप करते हुए इसी क्षण कार्यक्षेत्रमें प्रवेश करना, कर्त्तव्य है।

सेन्टक्लेयर—(कुछ हँसकर) जो सच्ची कामकी बात है, जो वास्तविक पदार्थ है, तुम सदैव उसे ही पकड़ती हो। बहिन, तुम चिन्ता तथा आलोचनाके लिए मुझे कुछ भी समय देना नहीं चाहतीं। मेरी दीर्घ चिन्ताका स्रोत बन्द करके तुम मुझे वास्तविक वर्त्तमानकी ओर फिराये लिये जाती हो। तुम्हारी आँखोंके सामने एक अनन्त वर्तमान विराज रहा है।

अफिलिया—मेरा यह सिद्धान्त है कि जो कुछ करना हो वह तुरन्त कर डालो। इस समय, इस वर्तमान मुहूर्तके अतिरिक्त अन्य किसी समय पर, मनुष्यका कोई अधिकार नहीं।

सेन्टक्लेयर—प्राणधन इवा, मेरे मंगल-साधनके लिए मुझे कार्यमें प्रवृत्त करनेकी प्राणपणसे चेष्टा करती थी।

इवाकी मृत्युके पश्चात् कभी सेन्टक्लेयरने उसके सम्बन्धमें अधिक बात-चीत नहीं की, किन्तु इस समय अत्यन्त गम्भीर शोकको बलपूर्वक रोक कर ये थोड़ी सी बातें कहीं। उसी समय फिर उन्होंने कहा:—

"धर्मके सम्बन्धमें मेरा यह मत है, कि—जो मनुष्य देश-प्रचलित सब प्रकारके सामाजिक अथवा राजनैतिक अत्याचार, दुःख और कष्ट निवारणार्थ आत्मोत्सर्ग नहीं कर देता, देश-प्रचलित कुप्रथाको जड़से उखाड़ फेंकनेका प्रबल प्रयत्न नहीं करता, संसारके दुःख दारिद्र्यको दूर करनेकी अविरल चेष्टा नहीं करता, संसार-वासी सम्पूर्ण नर-नारियोंका समानाधिकार संस्थापित करनेके लिए संग्राममें प्रवृत्त नहीं होता, एवं उस संग्राममें निर्भीकता, निर्ममतासे अपना जीवन विसर्जन करनेमें सक्षम नहीं होता, उसे कदापि धर्म-जीवन प्राप्त नहीं होता। पर जो लोग धर्म-शिक्षक कहे जाते हैं, जिन्होंने धर्म-प्रचारका कार्य ग्रहण किया है, वे निर्बलके ऊपर बलवान्‌के अत्याचार आदि सामाजिक दोषोंकी नितान्त उपेक्षा करते हैं। इसलिए सूक्ष्मदर्शी लोग उनका कार्य-कलाप देखकर धर्मके प्रति आस्थाहीन हो जाते हैं।

अफिलिया—तुम सभी कुछ भली-भाँति समझते हो, फिर धर्म-जीवनके लाभ करनेकी चेष्टा क्यों नहीं करते?

सेन्टक्लेयर—मैं सब समझता हूँ सही, किन्तु मेरी सहृदयता ऐसी है कि मैं स्वयं कोई कार्य न करूँगा। दुग्ध-फेनकी भाँति निर्मल शय्यापर पड़ा-पड़ा धर्मयाजकों को, चाहे वे

बड़े धर्मवीर ही क्यों न हों, चाहे सत्यके लिए प्राण ही क्यों न विसर्जन कर सकते हों, गालियाँ देता रहूँगा। दूसरोंको, जो धर्मके लिए कर्तव्यके लिए प्राण तक दे डालना चाहिए, वह मैं अच्छी तरह जानता हूँ और जो अपना कर्तव्य पालन नहीं करते उन्हें गालियाँ देना भी जानता हूँ। पर मैं स्वयं कुछ न करूँगा।

अफिलिया—तो अब इस समय क्या तुम नवीन भावसे जीवन व्यतीत करोगे।

सेन्टक्लेयर—भविष्यकी बात परमेश्वर जाने। तो भी इस समय पहिलेकी अपेक्षा मेरा साहस बढ़ गया है, क्योंकि मैंने अपना सर्वस्व गवाँ दिया है। जिसके पास कुछ गँवानेको नहीं है, उसे विपत्तिका भय क्या ?

अफिलिया—तुमने अब क्या करनेका निश्चय किया।

सेन्टक्लेयर—मैं अपने दास-दासियोंको मुक्त करके उन्हें उन्नत बनानेकी चेष्टा करूँगा। पश्चात् जिससे हमारा देश इस नीच दासत्व प्रथासे रहित हो जाय वही उपाय करूँगा।

अफिलिया—तुम क्या यह समझते हो, समग्र-देश अपनी इच्छासे इस प्रथाको दूर करेगा ?

सेन्टक्लेयर—यह मैं नहीं कह सकता। पर तो भी आजकल त्याग-स्वीकार एवं निःस्वार्थ प्रेमके दृष्टान्त अनेक स्थानोंमें दिखायी पड़ रहे हैं। अभी उस दिन योरपमें हंगरीके भूम्याधिकारियोंने विशेष हानि कर भी अपनी भूमि-हीन प्रजाके लिए अपनी भूमिका स्वत्व छोड़ दिया था। वे नितान्त पराधीन थे। उनलोगोंको स्वाधीनता प्रदान कर दी गयी है। हमारे देशमे क्या ऐसे दो-चार भी सहृदय व्यक्ति न मिलेंगे जो जातीय गौरव और न्यायके लिए अर्थ-हानि सहन करेंगे ?

अफिलिया—मुझे तो ऐसा विश्वास नहीं होता—अँगरेज जाति बड़ी ही अर्थ-पिशाच है। वरन फरांसीसी लोग इनकी अपेक्षा अधिक सहृदय हैं।

ये सब बातें समाप्त होनेपर सेन्टक्लेयरने अफिलियासे कहा—मैं नहीं समझ सकता कि आज बार-बार मुझे माताका स्मरण क्यों हो आता है? मुझे ऐसा जान पड़ता है मानो वे मेरे पास ही हैं। यह कहकर कुछ समय तक घरमें टहलते रहे। इसके पश्चात् बोले—मैं एकबार बाहर जाकर आजका समाचार जान आऊँगा, यह कहकर टोपी हाथमें ले वे घरसे बाहर निकले। टाम उनके पीछे-पीछे चला। सेन्टक्लेयरने उसे देखकर कहा—टाम मैं शीघ्रही लौट आऊँगा तुम्हारे जानेकी कोई आवश्यकता नहीं।

टाम बरामदेमें बैठा रहा। उस समय रात्रिके नौ बज गये थे। सुस्निग्ध चन्द्रालोकसे धरणीतला धोया हुआ था। टाम उसी चन्द्रालोकमें बैठकर सोचने लगा कि अब कुछ दिनके पश्चात् ही मैं दासत्व-शृंखलासे मुक्त होकर अपने घरकी ओर प्रत्यागमन करूँगा। सोचते-सोचते उसे अपने स्त्री-पुत्रकी बात स्मरण हो आयी। अन्तस्तलमें नयी-नयी आशाएँ उत्पन्न होने लगीं। उसने मनमें समझा कि स्वयं शारीरिक परिश्रम करके द्रव्योपार्जन कर अपनी पत्नी तथा सन्तानको दासत्व-शृङ्खलासे मुक्त कर सकूँगा। इसी चिन्ता-स्रोतके साथ-ही-साथ उसके हृदयमें आनन्द-स्रोत भी प्रवाहित होने लगा। फिर अपने स्वामी सेन्टक्लेयरकी सहृदयता और दयाका स्मरण होते ही हृदय कृतज्ञताके रससे भर गया। उनके आध्यात्मिक मंगलके लिए, वह जो सर्वत्र ईश्वरके निकट प्रार्थना करता रहता है, उसके आत्म-प्रसादका सम्भोग करने लगा। इसके कुछ समयोपरान्त ही इवाका स्मरण हो आया।

जान पड़ा मानो इवा स्वर्ग-दूतोंसे परिवेष्टित होकर उसके सम्मुख खड़ी हुई है। इस प्रकार सोचते-सोचते टाम सो गया। निद्रावस्थामें वह स्वप्न देखने लगा—मानो नाना प्रकारकी पुष्प-मालाओंसे सुसज्जित होकर इवा उसके पास आ रही है। उसके मुख-कमलने अत्यन्त उज्ज्वल प्रभा धारण किया है। उसके नेत्र-द्वय अविरल सुधा-वर्षण कर रहे हैं। किन्तु उसके मुखकी ओर देखते ही वह पृथ्वीसे आकाश-मण्डलमें उड़ गयी। उसके दोनों गाल मलीन हो गये, उसके नेत्रोंसे ईश्वरी-ज्योति विकीर्ण होने लगी। कुछ देरमें वह अदृश्य हो गयी। इवाके नेत्रोंसे ओझल होते ही टाम जाग पड़ा, जागते ही द्वारपर बहुतसे लोगोंको गड़बड़ करते सुनकर शीघ्रही द्वार खोलने गया। द्वार खोलते ही देखा कि कई आदमी वस्त्राच्छादित एक मनुष्य-देहको कंधेपर लेकर खड़े हैं। मृत-प्राय मनुष्यके मुखकी ओर देखते ही टाम नैराश्य और दुःखसे उच्चैस्वरसे आर्तनाद कर उठा। जो लोग उस मुमूर्ष-व्यक्तिको कंधेपर उठाकर लाये थे,उन्होंने घरमें आकर जहां मिस अफिलिया बैठी थी, वहीं उसे सुला दिया।

सायंकालिक संवाद-पत्र पढ़नेके लिए सेन्टक्लेयरने किसी काफी-घरमें प्रवेश किया था। वहाँ जब वे बैठे संवाद-पत्र पढ़ रहे थे कि उसी समय दो भद्र व्यक्ति सुरापानसे उन्मत्त होकर आपसमें मारपीट कर रहे थे। सेन्टक्लेयर तथा और दो-एक आदमी उन्हें छुड़ा देनेकी चेष्टा करने लगे। इनलोगों-में से एकके पास एक तीक्ष्ण छुरी थी। हठात् उसी छुरीका एक घाव सेन्टक्लेयरको बगलमें लगा। वे उसी क्षण अचेत हो गये। तब वहीं आये हुए लोग उन्हें कन्धेपर उठाकर घर तक ले आये हैं। सेन्टक्लेयरके इस प्रकार मुमूर्ष-अवस्था-में घर आनेपर गृहके सारे दासी-दासोंके चीत्कारसे घर पूर्ण

हो गया। सभी हत-बुद्धि हो गये। कोई पृथ्वीपर लोटकर रोने लगा—कोई उन्मत्तकी भाँति रोते-रोते भाग चला। केवल मिस अफिलिया तथा टाम विशेष प्रत्युत्पन्नमतिके साथ सेन्टक्लेयरको चैतन्य लाभ करानेके लिए अनेक उपाय करने लगे। अफिलियाके आदेशानुसार टामने शीघ्रही एक शय्या प्रस्तुत की, एवं सेन्टक्लेयरको उसीपर लिटाकर औषधि-प्रयोग द्वारा उन्हें चैतन्य करनेकी चेष्टा करने लगा। अनेक क्षणके पश्चात् उन्होंने चैतन्य-लाभ किया। एवं आँखें खोलकर एक-एक करके सबको देखने लगे। सबके अन्तमें कमरेमें लटकते हुए उनकी माताके चित्रपर, उनकी दृष्टि रुकी। अनिमेष दृष्टिसे वे उसे देखते रहे। शीघ्रही चिकित्सक आकर उनके घावकी परीक्षा करने लगा। चिकित्सकके मुखकी भाव भंगीसे सबने जान लिया कि उनके जीनेकी अब कोई आशा नहीं। चिकित्सक घाव बाँधने लगा। टाम और मिस अफिलिया विशेष धैर्यके साथ उसकी सहायता करने लगीं। अन्यान्य दास-दासीगण नानाप्रकारके विलाप-प्रलाप करने लगीं। चिकित्सकने कहा कि इन सब दास-दासियोंको बाहर करके रोगीको निर्जन-स्थानमें रखना होगा। इसी समय सेन्टक्लेयरने फिर आँखें खोलीं। जिन सब दास-दासियोंको चिकित्सक तथा अफिलियाने बाहर जानेको कहा, उनलोगोंके मुखकी ओर देखकर दीर्घ-निस्वास-परित्याग-पूर्वक अस्फुट-स्वरसे उन्होंने कहा—हा! निराश्रय! हतभाग्यगण! यह कहनेके समय जान पड़ा मानो उनके हृदयमें घोर आत्म-ग्लानिकी अग्नि प्रज्वलित हो रही है। दासोंमें से अडाल्फ किसी भी प्रकारसे बाहर जानेको राजी न हुआ। वह वहीं जमीनपर पड़ा रहा। अन्यान्य दास-दासियोंको मिस अफिलियाने जब बार-बार समझाया कि उनके दूसरे स्थानमें न जानेसे उनके

प्रभुके आरोग्य होनेकी कोई सम्भावना नहीं, तब वे नितान्त अनिच्छा-पूर्वक बाहर आनेपर सहमत हुईं।

सेन्टक्लेयरकी वाक्-शक्ति बिल्कुल बन्द हो गयी। वे आँखें बन्द किये हुए पड़े रहे। उनके मुखका भाव देखकर यह ज्ञात होने लगा कि उनका हृदय माना दुर्विसह अनुतापानलमें जल रहा है। उनकी बगलमें टाम घुटने मोड़कर बैठा हुआ था। कुछ समयके उपरान्त टामका हाथ पकड़कर सेन्टक्लेयर बोले—आह! चिरदुखी टाम!

टामने व्याकुलतासे कहा—प्रभु, क्या चाहते हैं?

सेन्टक्लेयरने अस्फुट स्वरमें कहा—मेरा मृत्यु-काल उपस्थित है। प्रार्थना—प्रार्थना करो।

यह बात सुनकर चिकित्सकने पूछा—एक पादरी बुला दिया जाय?

सेन्टक्लेयरने माथा हिलाकर असम्मति प्रकट की एवं फिर टामसे कहा—टाम प्रार्थना कर—

गम्भीर दुःखके बोझसे दबे हुए हृदयसे, नितान्त व्याकुल मनसे टाम, स्वर्गकी ओर जानेके लिए प्रस्तुत आत्माके मंगलके लिए, प्रार्थना करने लगा। टामकी प्रार्थना समाप्त होनेपर भी सेन्टक्लेयर उसका हाथ पकड़े हुए उसकी ओर देखते रहे, किन्तु और कुछ कह न सके। क्रमशः उनके दोनों नेत्र मुँदने लगे। पर उस समय भी वे टामका हाथ पकड़े हुए थे। उनका जीवन-वायु समाप्तप्रायः हो आयी। उस अनन्त अमृत राज्यके द्वारपर वह श्वेत हाथ प्रगाढ़ प्रेमके साथ कृष्ण-हस्त धारण किये रहा।

मृत्युकालमें भी माताका वह प्रिय गान उनके मुखसे निकलने लगा। उनके दोनों ओठ हिलते देखकर चिकित्सकने कहा—इनका चित्त विक्षिप्त हो गया है। सेन्टक्लेयरने कुछ

आवेशसे कहा—नहीं, पागल नहीं हुआ। साम्यावस्था प्राप्त हो रही है। असत्यसे सत्यकी ओर लौट रहा हूँ। अपने घर जा रहा हूँ।

ये कई एक बातें करनेमें सेन्टक्लेयर, जो कुछ उत्तेजित हो गये थे, उसीसे उनका शरीर एक दम निस्तेज हो गया। मृत्युकी मलिन छायाने उनके मुख-मण्डलको घेर लिया! किन्तु इस मलिन छायाके साथ ही साथ प्रशान्त शान्तिके विकासमें उस मुखने मधुर कान्ति धारण, की ज्ञात होने लगा मानो स्वर्गसे किसी दयामयी आत्माने सहसा अवतीर्ण होकर शान्तिकी मृदुल प्रभासे उनके मुख-मण्डलको अनुरञ्जित कर दिया है।

मृत्यु-कालमें सेन्टक्लेयरके मुखसे और कोई बात न निकली। "जननी"—केवल यही शब्द कहते ही उनकी आत्माने इस अनित्य देहका परित्याग किया, मानो सामने अपनी माताको देख दुग्धपीता बच्चा उसकी गोदमें कूद पड़ा।

बत्तीसवाँ परिच्छेद

अनाथ और अनाथा

दासाधिकारियोंके मर जानेपर अथवा उनके ऋणग्रस्त हो जानेपर उनकी क्रीत दास-दासियोंके लिए घोर विपत्ति उपस्थित हो जाती है। ऐसी अवस्थामें मृत मालिकके उत्तराधिकारी लोग किंवा महाजन इन हतभाग्य निराश्रय अनाथ

दास-दासियोंको प्रायः नीलाम कर देते हैं। इस समय माताके वक्षसे, सन्तानको, स्वामीके निकटसे पत्नीको, भाईके पाससे वहिनको जन्म भरके लिए अलग होना पड़ता है। बालकके पितृ-हीन हो जानेसे उसके आत्मीयजन उसकी रक्षाका उपाय करते हैं। उसका सारा भार अपने ऊपर ले लेते हैं। देश-प्रचलित नियमके अनुसार मनुष्योचित अधिकारोंसे वञ्चित नहीं होते। किन्तु क्रीतदासोंका किसी प्रकारका मनुष्योचित अधिकार नहीं। गृहकी सामग्री किंवा अन्यान्य बाजारू वस्तुओंकी भाँति इनका भी क्रय-विक्रय होता है।

सेन्टक्लेयरकी मृत्यु होनेपर उनके दास लोग अत्यन्त चिन्ताकुल हो गये। सभी सोचने लगे—नहीं जानते किस निष्ठुर मालिकके हाथ पड़ें। सेन्टक्लेयरके समान दयालु मालिक तो इस दासत्व-प्रथा-प्रचलित देशमें एक दम दुष्प्राप्य हैं। ऐसे सहृदय मालिकको गवाँकर हतभाग्य दास-दासी कैसे शोकाकुल होते हैं, यह सहज ही समझा जा सकता है।

मेरी सेन्टक्लेयरने आत्म-प्रश्रय द्वारा अपना शरीर और मन नितान्त निस्तेज कर डाला था। अतएव स्वामीकी आकस्मिक मृत्युके समय धीर-चित्त हो उसकी सेवा-शुश्रूषा करना तो दूर रहा, उनके सामने ठहर तक न सकी। भयके मारे विह्वल होकर बार-बार मूर्छित हो जाने लगी। जिसके साथ मेरी पवित्र, दृढ़ विवाह-बँधनसे बँधी थी, वे पत्नीसे बिना बोले ही आजन्मके लिए विदा हुए।

मिस अफिलियाने सेन्टक्लेयरकी मृत्यु-पर्यन्त मनोवचकायसे उनकी सेवा-शुश्रूषा की। अफिलियाको छोड़कर इन निराश्रय दास-दासियोंकी ओर करुणदृष्टिसे देखनेवाला अब कोई न रहा। इसलिए सबलोग अब व्याकुल चित्तसे अफिलियाके मुखकी ओर देखने लगे।

सेन्टक्लेयरके शवको समाधि-क्षेत्रमें रखनेके समय उनके वक्षस्थलपर एक स्त्रीका एक छोटासा चित्र, एवं उनके पीछे-की ओर रखे हुए बालोंका एक गुच्छा पाया गया। समाधिकालमें, वह शत आशामय, स्वप्नमय तरुण-जीवनका स्मृति-चिह्न उस जीवन-शून्य वक्षस्थलपर ही स्थिर रह गया।

टामका हृदय परलोककी चिन्तामें निमग्न हुआ। सेन्ट-क्लेयरकी आकस्मिक मृत्युके कारण उसे आजीवन इस दासत्व शृंखलामें ही बँधे रहना पड़ेगा, इस समय यह बात एक बार भी उसके हृदयमें न आयी। प्रभुकी मृत्युके समय उसने उनके कल्याणके लिए विशेष आग्रहके साथ प्रगाढ़ विश्वास और भक्तिपूर्ण हृदयसे परमेश्वरसे प्रार्थना की थी। प्रार्थना कर चुकनेपर दृढ़ विश्वास हो गया कि ईश्वरने उसकी प्रार्थना सुन ली। इसलिए वह मन-ही-मन विशेष शान्तिका अनुभव करने लगा।

काले वस्त्रोंका आडम्बर, पादरियोंकी अभ्यस्त प्रार्थना, एवं वाह्य गाम्भीर्यके साथ सेन्टक्लेयरकी अंत्येष्टि-क्रिया समाप्त हुई। तब "अब क्या करना होगा?" यह चिरागत प्रश्न सबके सामने उपस्थित हुआ।

मेरी के मनमें भी दासियोंसे परिवेष्टित होकर नानाप्रकारके काले वस्त्रोंका नमूना देखते हुए उस के मनमें भी यही प्रश्न उदित हुआ। मिस अफिलियाके हृदयमें भी यही प्रश्न उठा। उन्होंने अपने पिताके घर लौट जानेका निश्चय किया। किन्तु अनाथ दास-दासियोंके मनमें यह प्रश्न उठते ही, उनके प्राण सूख गये। जिसके ऊपर अब उनलोगोंका भार पड़ा है, उसकी कठोरता किसीसे छिपी नहीं है। उन्हें भली-भाँति ज्ञात है कि केवल सेन्टक्लेयरके प्रतिबन्धक होनेसे अब तक मेरी इन

लोगोंपर अत्याचार नहीं कर सकी, किन्तु अब उनलोगोंका निस्तार नहीं है।

सेन्टक्लेयरकी अन्त्येष्टि-क्रिया समाप्त होनेके एक--दो सप्ताह बाद एक दिन अफिलिया अपने कमरे में बैठी हुई काम कर रही थीं। इसी समय उनके द्वारपर कोई धीरे-धीरे आघात करने लगा। द्वार खोलकर देखा, सुन्दर वर्ण-संकर बालिका रोजा द्वार-पार्श्वमें खड़ी है। उसके बाल बिखरे हुए हैं। रोते-रोते दोनों नेत्र सुज आये हैं। उन्हें देखते ही रोजा घुटनों-के बल बैठकर उनका वस्त्र पकड़ रोते-रोते बोली—मिस फिली, एक बार मिसेस मेरीके पास जाकर मेरे लिए दो बातें कह दो। मेरी रक्षा करो! वह मुझे बेत लगवानेके लिए दण्ड-गृह भेज रही हैं। यह देखिये! यह कहकर उसने मिस अफि-लियाको एक कागज दे दिया।

मिस अफिलियाने वह कागज पढ़कर देखा, मेरीने दण्ड-गृहके कार्याध्यक्षको आज्ञा दी है कि रोजाको पन्द्रह बेत लगाना। मिस अफिलियाने रोजासे पूछा—तूने कोई अप-राध किया है?

रोजाने उत्तर दिया—मिस फिली, मेरा स्वभाव बड़ा खराब है, मुझे छोटी सी ही बातपर क्रोध आ जाता है। मैं मालकिनका कपड़ा पहिनकर नाच रही थी, इसीसे उन्होंने मेरे गालमें एक थप्पड़ जड़ दिया। मुझे क्रोध आ गया। भले-बुरेका कुछ ध्यान न कर मालिकिनको मैंने बहुत सी उद्दण्डताकी बातें कह डालीं। इसपर उन्होंने कहा—देख, अब तेरा यह ऊँचा माथा मैं कैसे नीचा करती हूँ, अब तू जानेगी कि मैं कैसी हूँ। इतने दिनों तक आदर पाते-पाते बड़ा अहंकार बढ़ गया है। यह अहंकार अब न रहेगा।

मिस अफिलिया खड़ी होकर सोचने लगीं। तब रोज़ा फिर बोली—मिस फिली, मैं मारसे नहीं डरती। मुझे घर पर बैठा कर चाहे आप, चाहे मालिकिन पचास कोड़े लगावें, उसमें मुझे लज्जा न लगेगी, किन्तु मैं स्त्री हूँ, मेरे शरीरका कपड़ा खोलकर एक नीच आदमी मुझे मारेगा, इससे बढ़कर और कौन लज्जाकी बात होगी?

मिस अफिलियाने पहिले भी सुना था कि दासत्व-प्रथावलम्बी प्रदेशोंमें दासाधिकारीगण वालिका एवं युवती दासियोंको बड़ी नीच-प्रकृतिके मनुष्यके पास दण्ड देने के लिए भेजते हैं। मिस अफिलियाने यह भी सुना था कि इन हतभागिनियोंको ऐसा दण्ड पानेके कारण लज्जा, शीलता, यही क्यों मनुष्यत्व तकका, बलिदान कर देना पड़ता है! किन्तु केवल दण्डकी बात सुनकर ही यह हृदयंगम न कर सकी थीं कि ऐसे दण्ड पानेसे स्त्री लोगोंको कैसा भयानक कष्ट होता है। आज भय अथवा दुखके कारण विवर्ण-मुख, कम्पित देह, रोजाको देखकर सब बात दिल में बैठ गयी। साधु स्त्रियोंके योग्य, अपने इंग्लैण्डकी स्वाधीन-प्रकृति-सुलभ घृणासे उनका मुख-मण्डल लाल हो उठा। किन्तु चिराभ्यस्त आत्म-संयम एवं परिणाम-दर्शिताके द्वारा कागजको दृढ़तासे पकड़कर उन्होंने रोजासे कहा—बेटी, तुम यहीं बैठी रहो, मैं तुम्हारी मालकिनके पास जाती हूँ।

जाते-जाते मनमें कहने लगीं, "कैसी लज्जाकी बात है, कैसा पैशाचिक दण्ड है!"

अफिलियाने मेरीके कमरेमें घुसकर देखा कि मेरी अर्द्धोन्मिलित नेत्र किये आराम कुर्सी पर बैठी है। मामी उसके पीछे खड़ी होकर उसके बाल झाड़ रही है और जेन सामने बैठी पैर दबा रही है।

मिस अफिलियाने उससे पूछा—कैसी तबियत है ?

यह प्रश्न सुनकर मेरीने लम्बी साँस लेकर नेत्र मूँद लिये, क्षण भरके पश्चात् बोली—नहीं जानती बहिन। जान पड़ता है, जैसी बराबर रहती हूँ, वैसी ही हूँ।

मिस अफिलिया—मैं रोज़ाके सम्बन्धमें तुमसे एक बात पूछने आयी हूँ।

यह बात सुनते ही मेरीके वे अर्द्धोन्मीलित नेत्र पूर्ण विस्फारित हो गये, मुहँ लाल हो गया। उसने कर्कश स्वरमें पूछा—रोजाके सम्बन्धमें कौन बात ?

अफिलिया—रोजाने जो अपराध किया है, उसके लिए वह अनुताप कर रही है ?

मेरी—अनुताप कर रही है! अभी और अनुताप करना पड़ेगा। मैं इतनेसे ही छोड़नेवाली नहीं। मैंने बहुत दिनोंतक इस छोकड़ीकी धृष्टता सही है। अब मैं इसे अच्छी तरहसे सुधार दूँगी, इसका सारा घमण्ड मिट्टीमें मिला दूँगी।

अफिलिया—किन्तु क्या और किसी दूसरे प्रकारसे दण्ड नहीं दिया जा सकता ? ऐसा लज्जा-जनक दण्ड न देकर और कोई दूसरा दण्ड दो।

मेरी—मैं तो लज्जित करना ही चाहती हूँ। नीचा दिखाना ही मेरा उद्देश्य है। यह छोकड़ी जन्मभरकी शीलता, सौन्दर्य, भद्र-महिला-सुलभ रीति-नीतिके घमण्डमें फूलकर, अपनी प्रकृत अवस्था भूल गयी है। मैं ऐसी शिक्षा दूँगी कि सारा गर्व चूर हो जायगा।

अफिलिया—किन्तु बहिन, तनिक विचारकर देखो कि किसी तरुणवयस्का रमणीकी लज्जा तथा चरित्रकी कोमलता नष्ट कर देना, उसके अधःपातका मार्ग खोलना होता है।

मेरी—(घृणापूर्वक हँसकर) लज्जाकी कैसी बात है!

ऐसे लोगोंकी लज्जा-शीलता और चरित्रकी कोमलता! मैं उसे समझा दूँगी कि रास्तेमें फटे, चिथड़े कपड़े पहनकर मारी-मारी फिरनेवालियोंसे किसी अंशमें वह अच्छी नहीं है। मेरे सामने वह भले आदमियोंका सा ठाट न चलेगा।

अफिलिया—इस निष्ठुरताके लिए परमेश्वरके सामने उत्तर देना पड़ेगा।

मेरी—निष्ठुरता! समझकर बतलाओ, इसमें कौन सी निष्ठुरता हुई। मैंने केवल पंद्रह बेत लगानेको लिखा है, उसपर भी लिख दिया है कि अधिक जोरसे न मारे जायँ। मैं तो इसमें कोई निष्ठुरता नहीं देखती।

अफिलिया—नहीं, कुछ निष्ठुरता नहीं है! मैं यह कह सकती हूँ कि इस दण्डकी अपेक्षा स्त्री-मात्र मर जानेको सहस्र गुण अधिक अच्छा समझती हैं।

मेरी—तुम्हारे हृदयमें ऐसे भाव हो सकते हैं। किन्तु इन दासियोंको ऐसा दण्ड भोगनेका अभ्यास है। ऐसी ताड़ना दिये बिना ये सब अवाध्य हो जाते हैं। यदि एक-बार इन लोगोंको अवसर मिल जाय, तो सिरपर चढ़ बैठते हैं। अब तक क्रमश सहारा पाकर नष्ट हो गये हैं। मैं अब इन लोगोंको अपने शासनमें रखूँगी। जो अब अन्याय करेगा, उसे उसी क्षण दण्ड-गृहमें भेज दूँगी।

जेन मेरीका पैर दबा रही थी। मेरीकी बात सुनकर उसकी तिल्ली चौंक उठी। सोचा यह बात मुझे ही सुनाकर कही गयी है। रोजाके पश्चात् कदाचित् दण्ड-गृह जानेकी मेरी ही पारी है।

मिस अफेलिया मेरीके मुखकी ओर देखती रहीं। मारे क्रोधके उनका शरीर काँपने लगा, किन्तु फिर सोचकर देखा कि मेरीके साथ विवाद करनेसे कोई लाभ नहीं। इसलिए

धीरे-धीरे अपने कमरेमें चली गयीं। रोज़ाके दु:खसे वे इतनी दुखी हुईं, कि मेरीने जो उनका अनुरोध नहीं माना, वह भी जाकर रोज़ासे नहीं कह सकीं।

इसके भी कुछ देर बाद एक काला दास, मेरीके आज्ञानुसार, रोज़ाको पकड़कर दण्ड-गृहमें गया। रोज़ाने कितनी ही विनती-प्रार्थना की, वह कितना ही रोयी-चिल्लायी, किन्तु किसीसे भी मेरीका पाषाण-हृदय न पिघला।

अडाल्फके प्रति मेरी विशेष क्रुद्ध थी। किन्तु सेन्टक्लेयर किसी दास-दासीपर वेत्राघात न करने देते थे। इसलिए वह अब तक अडाल्फको किसी प्रकारका दण्ड नहीं दे सकी। सेन्टक्लेयरकी मृत्यु हो जानेपर अडाल्फ एकदम दुःख तथा निराशमें डूब गया। मेरीके भयसे उसके प्राण सदैव सशंक रहते थे। मेरीने सेन्टक्लेयरके भाई अल्फ्रेड और अपने वकीलके साथ परामर्श करके अन्तमें स्थिर किया कि घर-सहित सेन्टक्लेयरकी दास-दासी आदि बेचकर, तथा जो दास-दासियाँ मेरी निजकी सम्पत्ति हैं उन्हें लेकर, अपने पिताके घर जाकर निवास करूँगी। अडाल्फ यह बात सुनकर टामके पास जाकर बोला—टाम, क्या तुम जानते हो कि मालकिन हम लोगोंको बेचेंगी।

टाम—तुमने यह बात किससे सुनी?

अडाल्फ—मालकिन जिस समय वकीलसे बातें कर रही थीं, उस समय मैं परदेके आड़से सुन रहा था। वे कुछ दिनके बाद ही हम लोगोंको बेच देंगी।

टामने दीर्घ निस्वास छोड़कर कहा—ईश्वरकी जो इच्छा है, वही होगा।

अडाल्फने कहा—फिर ऐसा मालिक न मिलेगा। किन्तु मेमसाहबके हाथसे बिक जाना ही अच्छा है।

टामका हृदय विषादसे परिपूर्ण हो गया। वह और कुछ न कहकर पीछेकी ओर मुहँ फेरकर खड़ा हो गया। सोचने लगा—समझा था, बहुत दिनोंके पश्चात् अब अदृष्ट प्रसन्न हुआ है। शीघ्र ही स्त्री-पुत्रका मुख देखकर सब दुःख भूल जाऊँगा। किन्तु क्या होनेको, क्या हो गया ? किनारे पहुँचते-पहुँचते नाव अतलमें डूब गयी। स्वाधीन होनेकी जो आशा थी, उसका परिणाम यह हुआ। टाम स्वाधीनताको बड़ा अमूल्य धन समझता था, तथापि ईश्वरकी निर्भरतामें अक्षुण्ण रहा। उसने आकाशकी ओर दृष्टिकर हाथ उठाकर कहा—प्रभो ! आपकी इच्छा पूर्ण हो। किन्तु यह बात कहते समय उसके प्राण मानो निकले जाते थे।

कुछ समयके पश्चात् टाम मिस अफिलियाके कमरेमें गया। इवाकी मृत्युके पश्चात्से मिस अफिलिया टामके प्रति विशेष स्नेह रखने लगी हैं। टाम मिस अफिलियाके पास जाकर कहने लगा—मिस फिली, मिस्टर सेन्टक्लेयरने यह स्वीकार कर लिया था कि मुझे दासतासे मुक्त कर देंगे। उनके वकीलके साथ इस विषयकी लिखा-पढ़ी भी आरम्भ हो चुकी है। इस समय यदि आप जाकर मेम साहबसे कहें, तो वे मृत मालिककी स्वीकृतिकी रक्षा कर सकती हैं। अफिलियाने कहा—टाम, मैं तुम्हारे लिए तुम्हारी मालकिनसे प्रार्थना कर सकती हूँ, किन्तु इससे तुम्हारा कुछ उपकार होगा, इसपर मुझे कुछ भी विश्वास नहीं।

मिस अफिलिया, यह कह टामको वहाँसे विदाकर सोचने लगीं "रोजाके लिए अनुरोध करते समय मैंने कुछ कठोर भाषाका प्रयोग किया था, इसीसे मेरीने मेरी बातोंपर कुछ ध्यान ही नहीं दिया। इसलिए अबकी बार मीठी-मीठी बातोंसे प्रसन्न कर लेनेपर कदाचित् टामको छोड़ देनेमें संदे-

मत हो जाय। यह सोचकर दयावती मिस अफिलियाने मेरी-के घरमें प्रवेश किया।

मेरी उस समय शय्यापर सो रही थी। जेन नाम्नी दासी, उसे अनेक प्रकारके काले कपड़ोंका नमूना दिखा रही थी। मेरीने उन नमूनोंमें से एक कपड़ा छाँटकर कहने लगी—यह कुछ बुरा तो नहीं है, किन्तु यह ठीक शोक सूचक है या नहीं, यह मैं निश्चय नहीं जानती।

जेन तुरन्त बोल उठी—यह क्या? यह शोक-सूचक नहीं है? अभी उस दिन जनरल डार्विनसाहबके मर जानेपर उनकी मेम साहबने यही पोशाक पहनी थी। यह पहिननेपर बहुत सुन्दर लगती है। इससे दर्शकोंका मन आकृष्ट हो जाता है।

मेरीने अफिलियाको ओर देखकर कहा-तुम क्या कहती हो, बहिन?

अफिलियाने उत्तर दिया—जहांपर जैसी रीति हो। इस विषयमें तुम मुझसे अधिक जानकार हो।

मेरी—असल बात तो यह है कि मेरे पहिरने योग्य कोई पोशाक है ही नहीं। पर मैं अगले सप्ताहमें ही चली जाऊँगी, इसलिए कोई न कोई कपड़ा अवश्य पसंद करना ही पड़ेगा।

अफिलिया—तुम इतना शीघ्र जाओगी?

मेरी—हाँ, सेन्टक्लेयरके भाईने लिखा है और हमारा वकील भी कहता है कि दास-दासी और घरका सब सामान बेच डालना ही कर्त्तव्य है।

अफिलिया—तुमसे मुझे एक बात कहनी है। अगष्टिनने टामको स्वाधीन कर देना स्वीकार कर लिया था, इतना ही क्यों, इस विषयमें कानूनके अनुसार लिखा-पढ़ी भी आरम्भ हो गयी थी। मैं आशा करती हूँ कि तुम यत्न करके शीघ्र ही एक मुक्ति-पत्र वकीलसे लिखवा लोगी।

मेरी—भला! मैं ऐसा काम करनेवाली औरत नहीं। टामका अधिक मूल्य होगा। टाम किसी प्रकारसे भी छोड़ा नहीं जा सकता। फिर टामको स्वाधीनताकी आवश्यकता ही क्या है? टाम अभी जिस अवस्थामें है, स्वाधीन होनेपर उसे अच्छी अवस्थामें न रह सकेगा।

अफिलिया—किन्तु टामकी एकमात्र इच्छा यह है कि मैं स्वाधीन हो जाऊँ टामके मालिकने भी स्वीकार कर लिया था कि उसे स्वाधीनता देंगे।

मेरी—टामकी इच्छा हो सकती है। ये दास किसी भी अवस्थामें सन्तुष्ट नहीं रह सकते। इसीसे इन लोगोंकी ऐसी ही इच्छा रहा करती है। मैं सदैव दासत्व-उन्मोचनकी विरोधिनी रही हूँ। जब तक ये निग्रोलोग किसी मालिकके आधीन रहते हैं, तभी तक सच्चरित्र रहते हैं, किन्तु ज्योंही इन लोगोंको स्वाधीनता दी जायगी, त्योंही ये सुस्त हो जायँगे, शराब पीने लगेंगे, अर्थात् जहाँ तक सम्भव है ये नीच हो जायँगे। मैंने सैकड़ों बार ऐसी दशा देखी है। दासोंको मुक्तकर देनेसे उनके साथ वास्तविक दया नहीं होती, वरन उनका विशेष अनिष्ट करना होता है।

अफिलिया-किन्तु टाम, सच्चरित्र, परिश्रमी और धार्मिक है।

मेरी—ओह, इन बातोंसे मैं बहक नहीं सकती। मैंने ऐसे सैकड़ों धर्मात्मा दास देखे हैं। जब तक वह मालिकके देख-रेखमें रहेगा तभीतक भला रहेगा, यही सार बात है।

अफिलिया—किन्तु, जब तुम इसे नीलाममें बेचोगी तो कोई निष्ठुर स्वामी इसे क्रयकर लेगा यह भी विचारकर देखो।

मेरी—ये सब केवल बातें ही बातें हैं। अच्छा नौकर होनेसे, सौमेंसे एक भी नीच स्वामी पाता है कि नहीं इसमें संदेह है। लोग चाहे कितना भी कहें, पर प्रायः सभी मालिक अच्छे

हैं। मैं जन्मसे ही इस दक्षिण-प्रदेशमें हूँ, मैंने ऐसा कोई मालिक ही नहीं देखा जो दासोंके साथ उपयुक्त व्यवहार न करता हो। टामका भावी मालिक टामपर अत्याचार करेगा, मैं इसपर विश्वास नहीं करती।

अफिलिया--अच्छा, वैसा न सही, किन्तु सेन्टक्लेयर मरनेके कुछ पूर्व टामको दासतासे मुक्त करनेकी चेष्टा करते थे। उन्होंने इवाके मृत्यु-कालमें इवासे ही ऐसी प्रतिज्ञा की थी कि वे शीघ्र ही टामको स्वाधीन कर देंगे। स्वामी और पुत्रीकी अन्तिम इच्छाको अग्राह्य कर, इन लोगोंकी की हुई प्रतिज्ञाओंके उलंघन करनेका क्या तुम्हें कोई अधिकार है।

इस बातपर मेरीने कुछ कहा नहीं। वह रुमालसे मुहँ ढाँककर रोने लगी। एवं रोते-रोते कहीं मूर्छित न हो जाय इसलिए बार-बार एमोनियाकी शीशी सूँघती हुई, गद्गद-कण्ठ-से कहने लगी—सभी मेरे साथ लड़ने ही लगते हैं। दुःखपर तो कोई ध्यान ही नहीं देता। मैं तो कदापि ऐसा न समझती थी कि तुम मेरे हृदयमें फिर दुःखकी स्मृति जगाने आओगी। तुम भी मेरे मनको सतानेमें किञ्चित कुण्ठित न हुई। किन्तु मेरी दशा कौन समझ सकता है ? मेरे एक ही तो कन्या थी वह भी मर गयी, उसपरसे मेरे स्वामी, ठीक मेरे मनके योग्य स्वामी—मेरे मनके योग्य मनुष्य मिलना भी दुस्कर है, की भी मृत्यु हो गयी। तुम्हारे हृदयमें रत्तीभर भी ममता नहीं, इसीसे तुमने मेरे स्वामी तथा मेरी कन्याका उल्लेख करके मेरे हृदय-में शोककी अग्नि प्रज्ज्वलित कर दी।

मेरी क्रमशः दूने स्वरसे रोने लगी। हिस्टीरियाके लक्षण दिखायी पड़ने लगे। उसेने मामीसे कहा—खिड़की खोल दो, कपूरकी शीशी ले आओ। मेरे सिरपर पानी छोड़ो। मेरे शरीरके कपड़े ढीले कर दो।

चारो ओर बड़ा गुल-गपाड़ा मचा। इसी बीचमें मिस अफिलिया अपने प्राण लेकर अपने कमरेमें भाग आयीं।

मिस अफिलियाने देखा मेरीके साथ वाक्य-व्यय करना नितान्त वृथा है। मूर्च्छा बुला लेनेकी मेरीमें आश्चर्य-जनक क्षमता है। अतएव जभी दास-दासियोंके सम्बन्धमें सेन्ट-क्लेयर और इवाकी इच्छाकी बात उसके सामने चलायी जाती है तभी वह एक महा काण्ड उपस्थित कर देती है। मिस अफिलियाने टामकी मुक्तिका और कोई उपाय न देखकर मिसेस शेल्बीके निकट उसकी सारी दुःख-कथा स्पष्टाक्षरोंमें लिख भेजा एवं उसीमें टामका उद्धार शीघ्र ही करनेके लिये विशेष अनुरोध भी कर दिया था।

इसके दूसरे ही दिन टाम, अडाल्फ तथा अन्यान्य छः दास नीलममें वेचनेके लिए गुलाम-बाज़ारमें भेजे गये।

तेतीसवाँ परिच्छेद

दास-विक्रयकी आढ़त

पाठक गण, दास-विक्रयकी आढ़तका नाम सुनते ही समझ गये होंगे कि यह एक बडा भयंकर स्थान होगा। माल-गुदामकी भाँति अन्धकार-पूर्ण ही गन्दा होगा। किन्तु ऐसी बात नहीं है। सभ्यताकी उन्नतिके साथ-ही-साथ लोग सुसभ्य प्रणालीसे तथा विशेष कौशलके साथ पापाचार करनेकी शिक्षा प्राप्त करते हैं। बाज़ारमें जब मनुष्य रूपी वस्तु जीवात्मारूपी मालका क्रय-विक्रय होता है तब जिसमें ऐसे मूल्यवान मालका दाम किसी प्रकार कम न हो इसके लिए

दास व्यवसायी लोग बड़ा उद्योग करते हैं। विक्रीके पूर्व वे दास-दासियोंको उत्तम आहार और उत्तम वस्त्र देते हैं। उन्हें किसी प्रकारका रोग न हो जाय, इस विषयमें वे बहुत साव-धान रहते हैं। इसीलिए अर्लिन्सकी दास-व्यवसाइयों की आढ़त देखनेमें साफ-सुथरी है। ये आढ़तें मकानके सामने खुले हुए बरामदे हैं। वहाँ दास-दासीगण पंक्तिबद्ध हो खड़े रहते हैं। बाहरके लोग उन्हें देखते ही समझ जाते हैं कि यहाँ दास-दासियाँ वेची जाती हैं।

आढ़तदार लोग बड़े आदरके साथ क्रेताओंको घरमें ले जाकर दास-दासियोंकी परीक्षा करनेको कहते हैं। किन्तु उस घरमें जाकर लोग क्या देखते हैं? वे देखते हैं कि स्वामि, स्त्री, पिता, माता, शिशु सन्तान—ये एक दूसरेके पास बैठकर, जन्मभरके लिए अलग जानेकी सम्भावनासे, रोते हैं। कोई कहता है, ईश्वर करें हम दोनों आदमियोंको एक ही क्रेता साथ खरीद ले। कहीं स्वामी अपनी स्त्रीके गलेसे लिपट कर कह रहा है कि—मेरा यह जीवन ही व्यर्थ है, मैंने क्यों पुरुष होकर जन्म-ग्रहण किया। कहीं माता अपने बच्चोंको अपनी छातीसे लगाये हुए, बार-बार उसका मुख चुम्बन कर रही है, और सिर पीट कर कह रही है—परमेश्वरने क्यों मुझे संतान दी! मृत्यु तुम कहाँ भाग गयी हो! कहीं बालक-बालिकायें दृढ़तासे अपनी माताका वस्त्र पकड़े बैठी हैं। मनमें सोच रही हैं कि माताको छोड़कर और कहीं नहीं जायँगी। ऐसा दृश्य देखकर तो पाषाण-हृदय भी पिघल जाय। किन्तु उन नराधम अर्थ-पिशाच गोरे बनियोंकी भाँति पशुके समान कठोर प्रकृतिके मनुष्य भूमण्डलमें और कहाँ नहीं दिखायी पड़ते।

जो अविनाशी आत्मा अमृतकी अधिकारिणी है, जिसके लिए विश्व-पतिकी अमृत-गोद सदैव प्रसारित रहती है, स्वयं-

के लोभसे उसी अमर आत्माका क्रय-विक्रय होता है। इसपर भी यह गोरी-जाति अपनी सभ्यतापर गर्व करती है, अन्य जातियोंको प्रवञ्चक कहकर घृणा करती है।

टाम, अडाल्फ तथा सेन्टक्लेयरकी अन्यान्य दास-दासियाँ स्केगसाहबकी विक्रयकी आढ़तमें आकर रहने लगे। इस स्थानपर और भी बहुतसे दासी-दास भेजे गये हैं। जिस प्रकारसे इन्हें सर्वदा प्रसन्न रखा जा सके, उसके लिए आढ़तके अध्यक्ष लोग विशेष चेष्टा करते रहते हैं। दास-दासियोंका मुख विषाद-पूर्ण देखकर क्रेता कहीं उपयुक्त मूल्य देना अस्वीकार न करे, इसलिए नाना उपायोंका अवलम्बन कर इनलोगोंको सदा हँसानेकी चेष्टा की जाती है। चारो ओर नाना प्रकारकी हँसी-दिल्लगी, तमासा, होने लगा। पर क्या टामकी भाँतिके लोग ऐसे समयमें हँसी-दिल्लगी कर सकते हैं? एक तो इवा और सेन्टक्लेयरके शोकसे उसका हृदय जल रहा है, दूसरे उसकी अपनी यह दुर्दशा उपस्थित है। जिसके हृदयमें मनुष्यात्मा है, वह इस अवस्थामें कदापि नहीं हँस सकता।

टाम अन्यान्य दासोंसे कुछ दूर हटकर घरके एक कोनेमें विषण्ण मुख हो, अपने सन्दूकसे ओठंगकर बैठ गया। किन्तु दास विक्रयके गोदामके अध्यक्ष-गण किसीको म्लान-मुख ही नहीं बैठने देते। वे इनलोगोंको प्रसन्न रखनेके लिए, उन्हें बाजा देते हैं, एवं उनको नाचने-गानेको कहते हैं। जो हतभाग्य दास-दासी, पिता, माता, स्वामी स्त्री अथवा सन्तानसे अलग हो जानेके कारण दुर्निवार शोकवश हो हास-परिहास एवं आमोद-प्रमोद करनेमें असमर्थ होते हैं, यहाँ उन्हें 'बदमाश' की उपाधि मिलती है। इन बदमाशोंको नानाप्रकारका दण्ड-भोगना पड़ता है। क्रेताके सामने प्रफुल्ल मुखसे न खड़े होनेपर इन लोगोंकी कुशल न थी।

साम्बो नामक एक निग्रो स्केगसाहबके आढ़तका उप-कार्याध्यक्ष था। यह आदमी सबको हँसानेकी चेष्टा करता-एवं जो विषण्ण भावसे बैठे रहते, उन्हें बेतोंसे पीटता था। पाठक, यहाँपर पूछ सकते हैं कि यह व्यक्ति निग्रो होकर भी सजातीय लोगोंपर क्यों इतना अत्याचार करता था? इसका उत्तर यह है कि संसारमें पराधीन अथवा पराजित जातिके लोग सदैव नितान्त स्वार्थपर तथा नीचाशय हो जाते हैं। स्वयं एक पद अथवा प्रभुत्व पा जानेसे भिन्न जातिके मालिक-को प्रसन्न करनेके लिए व्यर्थमें ही सजातीय बन्धु-बान्धवों-पर अत्याचार करनेपर तुल जाते हैं। इसका उत्कृष्ट दृष्टान्त हमारे भारतवर्षीय कोई-कोई डिप्टी कोई-कोई सब जज, अथवा चा-बगीचा या नीलकी कोठीके गुमाश्ता लोग हैं। इसलिए अशिक्षित साम्बो, जो अपने सजातीय लोगोंपर अत्याचार कर-ता है, इसके लिए हम उसे विशेष अपराधी नहीं कह सकते।

साम्बो टामको घरके एक कोनेमें विषण्ण भावसे बैठे देख, दौड़ उसके पास आकर बोला—तुम क्या करते हो। टामने कहा—मुझे कल बेचोगे? साम्बोने टामकी बात सुनकर उसे हँसानेके विचारसे, हो-हो कर हँसते हुए कहने लगा—'मुझे भी कल बेचेंगे। उसने सोचा कि यह बड़ी रसिकताकी बात कही है। टाम इसे सुनकर अवश्य ही हँस पड़ेगा। इसके पश्चात् अडाल्फके कंधेपर हाथ रखकर फिर हँसते-हँसते कहा—ये सभी कल बेचे जायँगे।

अडाल्फने अत्यन्त विरक्ति प्रकट कर कहा—हमारे पास-से चले जाओ। तब साम्बोने कहा—बाबा! यह तो श्वेताङ्ग निग्रो है। इसे तो अपनी दुकानपर काम करने देना अच्छा है।

अडाल्फ—देखो, हट जाओ। तुम नहीं हटते हो?

हमारे श्वेताङ्ग निग्रो लोगोंको, बहुत शीघ्र ही क्रोध आ

जाता है। यह कहकर साम्बो अडाल्फका अनुकरण करता हुआ हाथ चमकाने लगा। एवं व्यंगसे कहा—जान पड़ता है, ये किसी बड़े आदमीके घर थे।

अडाल्फ—मैं जिसके घर था, वे तुझ-सरीखे बीसों गुलाम खरीद सकते थे।

साम्बो-बाप रे! तब तो वे एक भले आदमी ही होंगे।

अडाल्फ-मैं सेन्टक्लेयर साहबके घरमें था।

सम्बो-हाँ! बड़े आदमी न होते तो कई फुटहे चादानों-के साथ तुम्हें बेचते ही क्यों?

यह हँसी सुनकर अडाल्फने क्रोधमें भरकर साम्बोपर आक्रमण किया। अन्यान्य लोग यह देखकर थपोड़ी पीटने लगे। इसलिए बड़ी गड़बड़ी मची। गड़बड़ी सुनकर आढ़त-का प्रधान-अध्यक्ष हाथमें चाबुक लेकर वहाँ आया। उसे देखकर सब अपने-अपने स्थानमें जाकर बैठ गये। साम्बो उसे देखकर बोला—हजूर, पहिलेका कोई गुलाम गड़बड़ नहीं करता। मैंने इन लोगोंको अच्छी तरहसे शान्त और शिष्ट कर दिया है, किन्तु जो कई-एक नये गुलाम आये हैं ये भारी उपद्रव करते हैं। यह बात सुन अध्यक्षने और कुछ न पूछा। वह सीधे टाम और अडाल्फके पास जा, उन्हें कई कोड़े जड़कर चला गया। जाते समय वह कहता गया—सब लोग चुप-चाप शान्त होकर सो जाओ। कुछ गड़बड़ मत करना।

दासोंके सोनेके कमरेमें जब इस प्रकारके नानाकाण्ड हो रहे थे, तब दासियोंके कमरेमें क्या हो रहा था, यह जाननेके लिए पाठकोंके हृदयमें कौतूहल उत्पन्न हो सकता है। अच्छा तो पाठक, इस सामनेवाले कमरेमें प्रवेश करें। यहाँ आप बहुत सी दासियाँ देखेंगे। इनमें वृद्ध, युवती, तथा बालिका सभी श्रेणियोंकी दासियाँ हैं। अस्सी वर्षकी वृद्धासे लेकर तीन

वर्षकी अवस्थावाली बालिका तक यहाँ बैठी हैं । यह देखिए, दस वर्षकी एक बालिका रो रही है। कल इसकी माता बेच दी गयी है, आज इसके मुखकी ओर देखे ऐसा कोई नहीं है। बालिका मा, मा, चिल्ला कर रो रही है। कोई उसे चुप कराकर उसके दुःखका हाल पूछनेवाला नहीं।

इधर देखिए, अत्यधिक शारीरिक परिश्रम करनेके कारण वात-व्याधिसे पीड़ित एक अस्सी वर्षकी वृद्धा चुप-चाप बैठी अश्रुपात कर रही है। तीन बार यह नीलामकी बोलीपर चढ़ायी गयी, पर काम करनेमें असक्त समझकर इसको कोई लेता ही नहीं। इसके पाँच-छः सन्तानें भिन्न-भिन्न लोगों द्वारा खरीद ली गयीं हैं। शोकाकुल जननी, उन्हींके लिए रो रही है।

इस साधारण दासीसे कुछ दूर हटकर दो स्त्रियाँ एक साथ बैठ हुई हैं। इन दोनोंके वस्त्र भद्र लोगोंके योग्य हैं। इनका वर्ण प्रायः अंग्रेजों की भाँति है। एककी अवस्था अनुमानतः चालीस, पैंतालीस वर्षकी है। इसका अंग-गठन सुन्दर है। इसके बगलमें बैठी हुई युवतीकी अवस्था पन्द्रह वर्षकी होगी। इन दोनोंके मुखोंमें विलक्षण साहृश्य है। यह युवती पहिली स्त्रीकी कन्या होगी। अधिक अवस्थावाली रमणी अँग्रेजके औरससे निग्रो दासीके गर्भसे उत्पन्न हुई है। युवतीने भी अँग्रेजके औरससे जन्म-ग्रहण किया है, इसमें कुछ सन्देह नहीं। इनके पहिराव-ओढ़ावकी परिपाटी एवं इनके कोमल हाथ देखकर यह ज्ञात होता है, कि इनको कभी कोई कठिन कार्य नहीं करना पड़ा अथवा न कभी कष्ट कर जीवन ही बिताना पड़ा। ये दोनों कल बेची जायँगी।

न्यूयार्क-निवासी एक धार्मिक क्रिश्चियन इन्हें बेचनेके लिए यहाँ भेजा है। इनके मूल्यका रुपया उसे ही मिलेगा। यह जैसा धार्मिक क्रिश्चियन है, उससे इन रुपयोंमेंसे कुछ

गिर्जाघरको बनवानेके लिए तथा लार्ड विशेपके निर्वाहके लिए देगा। इसमें कुछ सन्देह नहीं।

उक्त दोनों स्त्रियोंमेंसे माताका नाम सूसन और पुत्रीका एमलिन है। ये नव-अर्लिन्समें एक भद्र सहृदया, सम्भ्रान्त महिलाकी दासी थीं। उसने यत्नपूर्वक इन लोगोंको शिक्षा प्रदान की थी। इसलिए ये दोनों अच्छी तरहसे लिखना-पढ़ना जानती हैं। किन्तु उन भद्र महिलाका एकमात्र पुत्र अपरिमित व्ययके कारण बड़ा ऋण-ग्रस्त हो गया था। न्यू-यार्ककी एक वणिक् कम्पनीसे उसने सबसे अधिक रुपये ऋणमें लिये थे। उसने नालिश करके उनपर डिग्री प्राप्तकर ली। किन्तु डिग्री हो जानेसे स्थावर सम्पत्ति कुर्क अथवा नीलाम करानेमें बहुत व्यय होगा तथा समय भी बहुत लगेगा, इसलिए उनके नव-अर्लिन्स निवासी वकीलने उन्हे अस्थावर सम्पत्ति नीलाम करानेका उपदेश लिख भेजा। अस्थावर सम्पत्तिमें और सबकी अपेक्षा दास-दासी ही अधिक मूल्य वान हैं। किन्तु कम्पनीके साहब लोग उत्तर-प्रदेशीय हैं। वे कुछ विशेष प्रकारके क्रिश्चियन हैं। वे भला इस नर-नारी विक्रयकी प्रथाको कैसे आश्रय देंगे? इस विषयमें अनेक पत्र-व्यवहार होने लगा। अस्थावर सम्पत्ति न बेचनेसे तीस हजार रुपयोंके चुकाये जानेकी कोई सम्भावना नहीं। एक ओर तीस सहस्र रुपये हैं, और दूसरी ओर खीष्टीय धर्म है; किसका मूल्य अधिक है? प्रश्नके उत्तरमें तीस हजार रुपयेका मूल्य ही अपेक्षाकृत अधिक मूल्यवान जँचा। अतएव कम्पनीके साहबोंने अस्थावर सम्पत्ति कुर्क और नीलाम करवानेके लिए वकीलको लिख भेजा। वकीलने आज्ञा-पत्र पाते ही सूसन और उसकी कन्या एमलिनको कुर्ककर नीलाम

घरमें भेज दिया। वही सूसन और एमलिन यहाँ इस दास विक्रयके गुदाममें बैठी रो रही हैं।

एमलिनने कहा—मा! तुम मेरी गोदमें माथा रख लेटकर देखो थोड़ी नींद आसकती है कि नहीं?

सूसन—बेटी, मेरी आंखोंमें नींद कहां, जान पड़ता है बस आज ही हम लोगोंका यह अन्तिम मिलाप तथा साक्षात् है।

एमलिन—मा! सम्भव है हम दोनोंको एक ही मालिक खरीद करे।

सूसन—बेटी एमलिन, मुझे ऐसी आशा नहीं। मैं व्यर्थका भरोसा देकर मनको नहीं समझा सकती।

एमलिन—क्यों? उन नीलाम करनेवालोंने तो कहा है कि वे हम दोनोंको एक ही लाटमें बेच सकते हैं।

सूसनकी अवस्था अधिक हो गयी है। कौन कैसा आदमी है यह वह समझ ले सकती है। नीलामकारी लोगोंकी बात-चीत सुनकर तथा उनकी भाव-भङ्गी देखकर वह हताश हो गयी है। उस गुदामके रक्षकने जब एमलिनका हाथ पकड़ तथा उसके सुन्दर कोमल बाल खींच-खाँचकर देखा और कहा—यह अच्छा माल है, इसका मूल्य बहुत होगा, उसी समय सूसनके प्राण सूख गये। सूसन धार्मिक स्त्री है, इसलिए उसके गर्भसे उत्पन्न कन्याको कोई लम्पट, पिसाच अँगरेज खरीदकर अपनी उपपत्नी बनावेगा, इस चिन्तासे उसका हृदय जलने लगा।

एमलिनने फिर कहा—मा, भोजन बनानेमें तुम्हारी बड़ी क्षमता है। इसलिए किसी भद्र परिवारमें तुम्हें यदि—पाचिकाके तथा मुझे दर्जीके, कार्यमें लगा दिया जाय तो हम लोग बड़े सुखसे रह सकेंगी।

सूसन—बेटी एमलिन, कल तुम अपने बाल खींचकर पीछे कर लेना जिससे बाल सब घने न दिखाकर सीधे दिखेंगे।

एमलिन—क्यों ? ऐसा कर देनेसे तो मैं अच्छी न लगूँगी। बाल सीधे कर लेनेसे, क्या भद्र लोग मुझे खरीदेंगे ?

सूसन—हाँ खरीदेंगे।

एमलिन—वह कैसे खरीदेंगे ?

सूसन—धार्मिक और सम्भ्रान्त लोग सीधे-सादे तथा स्वच्छ लोगोंको ही प्यार करते हैं। वे वेश-विन्यास नहीं चाहते। केवल लम्पट लोग ही, वेश विन्यास तथा सौन्दर्य देखकर क्रय करनेका विशेष आग्रह करते हैं। मैं ये सब बातें तुमसे अधिक जानती हूँ। बेटी, एक बात कहती हूँ। यदि तुम्हें एक अन्य स्थानमें और मुझे दूसरे स्थानमें बेंचे और हम लोगोंमें परस्पर देखने-सुननेकी सम्भावना न रहे तो मेरी यह बात स्मरण रखना कि प्राण-विसर्जन कर देनेपर भी धर्म विसर्जन मत करना अन्ततः यदि तुम्हारा धर्म नष्ट करनेके लिए कोई गोरा बनियाँ अत्याचार करना आरम्भ करे तो आत्म-हत्या कर अपने धर्मकी रक्षा करना। मेमसाहबने जो उपदेश दिये हैं कभी मत भूलना। अपनी बाइबिल और संगीत-की पुस्तक सदा अपने पास रखना। परमेश्वरको मत भूलना। वे ही उस समय तुम्हारी रक्षा करेंगे।

नितान्त निराश होकर सूसन कन्याको ऐसे उपदेश दे रही थी। वह सोचती थी कि कल उसकी परम सुन्दरी पवित्र हृदया कन्याको, जिस किसी नीचाशय अँगरेजके पास धन है वही, खरीदनेमें समर्थ होगा। वह बार-बार कहने लगी कि मेरी प्राण-धन एमलिन यदि ऐसी रूपवती न होकर कुरूपा, शिक्षिता न होकर मूर्खा होती वह भी अच्छा था।

इस समय ईश्वरसे प्रार्थना, ईश्वरपर आत्म-निर्भरताके अतिरिक्त और किसी प्रकार भी सान्त्वना नहीं मिल सकती। किन्तु इस गुदाम घरसे ईश्वरके समीप हार्दिक प्रार्थना, ऐसी

कातरोक्ति कितनी वार पहुँची होगी, इसकी गणना नहीं की जा सकती। ईश्वर क्या इन लोगोंकी प्रार्थना श्रवण नहीं करते? क्या ईश्वर इन लोगोंको भूल गये हैं? कदापि नहीं। वह परम कारुणिक, परम न्यायवान् परमेश्वर एक क्षण भरके लिए भी एक तुच्छ आत्माको भूल नहीं सकता। रे पाखंडी गोरे अँगरेजो! अर्थ-लोलुप बनियों! तुम्हें अवश्य ही इसका समुचित प्रतिफल भोगना पड़ेगा। वंश-परम्परासे रक्त-द्वारा इस पापका प्रायश्चित्त करना पड़ेगा। जिस बाइ-बिलको तुम अपना धर्म-शास्त्र कहते हो उसी बाइबिलमें लिखा हुआ है—

"गलेमें पत्थर बाँधकर समुद्रमें डुबा देनेसे जो क्षति होती है तदपेक्षा अधिकतर क्षति उन सब लोगोंको सहनी पड़ेगी जो एक भी तुच्छतम मनुष्यका अनिष्ट करते हैं।"

देखते-देखते रात्रि गम्भीर हो गयी। सूसन और उसकी कन्या हृदय-कपाट खोलकर एकाग्र चित्तसे ईश्वरको पुका-रने लगीं। नाना प्रकारकी धार्मिक गीतें गाने लगीं।

हा सूसन! हाय एमलिन! तुम लोग जन्मभरके लिए परस्पर विदा हो। आजकी रात्रिकी समाप्तिके साथ-ही-साथ तुम्हारा मुखचन्द्र भी अदृश्य हो जायगा।

रात्रि समाप्त हुई। सब लोग व्यस्तताके साथ अपने-अपने निर्दिष्ट कार्योंमें प्रवृत्त हुए। स्केग साहब आजके नीला-मका प्रबन्ध करने लगा। बिक्रीके लिए भेजे हुए दास-दा-सियोंको अवस्थानुसार सुसज्जित करने लगा। नीलाममें उठानेके पहिले क्रेताओंको अन्तिम बार देखनेके लिए सबको एक पंक्तिमें खड़ाकर दिया।

स्केग साहब एक हाथमें नीलामकी पुस्तक तथा दूसरे हाथमें चुरुट लिये हुए इस ओरसे उस ओर घूमने तथा सब-

को देखने लगा। नीलाम-माल उपयुक्त रूपसे सुसज्जित हुआ है कि नहीं उसकी परीक्षा करते-करते सूसन और एमलिनके पास आकर उसने एमलिनसे पूछा—तेरे घुंघराले बाल कहाँ गये ?

एमलिनने भयसे उसके मुखकी ओर देखा। तब उसकी माताने कहा—मैंने इसे साफ करके बाल बाँधनेको कहा है। घुँघराले बाल उड़-उड़कर इसके मुखपर पड़ते थे। उससे तो जूड़ा अधिक साफ और अच्छा जान पड़ता है।

स्केगसाहबने चाबुक उठाकर एमलिनको धमकाते हुए कहा—जा, शीघ्रतासे बालको पहिलेकी भाँति बना आ, और उसकी मातासे कहा—तू जाकर उसकी सहायता कर। घुँघराले बाल रहनेसे एक सौ रुपये अधिक दाम मिलेंगे।

क्रमशः नीलामका घर लोगोंसे परिपूर्ण हुआ। क्रेतागण आपसमें नाना प्रकारकी कथा-वार्ताएँ करने लगे। एक क्रेता अडालफके शरीरकी परीक्षा कर रहा था कि इसी समय एक दूसरे आदमीने कहा—अल्फ्रेड! तुम कहाँसे आते हो ?

उसके उत्तरमें अल्फ्रेडने कहा—भाई, मुझे एक अर्दलीकी आवश्यकता है। सुना है, सेन्टक्लेयरके गुलाम लोग बिक रहे हैं, उन्हें ही खरीदने आया हूँ।

पहिले व्यक्तिने कहा—सेन्टक्लेयरके गुलाम खरीदोगे ? मैं तो कदापि ऐसा नहीं कर सकता। सेन्टक्लेयरके गुलाम लोग आदर पाकर बड़े बदमाश हो गये हैं।

अल्फ्रेड—इसका मुझे कुछ डर नहीं। एक बार मेरे हाथमें आनेपर उनकी आई-बाई पच जायगी। दो ही दिनमें समझ जायेंगे कि मैं सेन्टक्लेयर नहीं हूँ। यह आदमी देखनेमें अच्छा है इसे ही खरीदूँगा।

पहिला आदमी-ओह! यह तो अपरिमित व्ययी है।

अल्फ्रेड–मेरे घर अमित व्यय करेगा ? मेरे घर तो ऐसा हो ही नहीं सकता। जहाँ तीन बार दण्ड–गृह भेजा नहीं कि ठीक हुआ नहीं।

टाम सजल नेत्रोंसे प्रत्येक क्रेताओंके मुखकी ओर देखने लगा। वह देखने लगा कि इनमें कोई दयालु क्रेता है कि नहीं। किन्तु जितने मनुष्योंको उसने देखा, उनमेंसे कितनोंके मुखसे तो क्रोधका भाव प्रकट हो रहा था; कितनोंके चेहरेसे निष्ठुरता झलक रही थी; किसी–किसीके अंग–प्रत्यंगोंसे इन्द्रियासक्तता टपकी पड़ती थी। इस प्रकार सैकड़ों मुख उसने देखा, किन्तु कहीं भी उसे सेन्टक्लेयर किसी मधुर, सौम्य, शान्तमूर्ति न दिखायी पड़ी।

नीलाम आरम्भ होनेके समयसे पूर्व एक नाटे डीलका बलिष्ठ मनुष्य आगे बढ़कर दास–दासियोंको, एक–एक करके परीक्षाकर देखने लगा। मुख देखनेसे, तो वह नरक लोकका द्वारपाल जान पड़ता था। इसको देखते ही इसके प्रति टामके हृदयमें एक साथ ही भय और घृणाका संचार हुआ। वह व्यक्ति क्रमशः सब दास–दासियोंको देखता तथा उनकी परीक्षा करता हुआ आकर अन्तमें टामके पास ठहरा एवं टामके मुँहमें अँगुली डालकर उसकी दन्त–पाटीकी परीक्षा की। कुरतेके बटन खोलकर तथा हाथ निकलवाकर उसके मांस–पेशियोंकी परीक्षा की, पश्चात् उसकी पद–संचालन–शक्तिकी परीक्षा करनेके लिए उसे उछलने तथा टहलनेको कहा। परीक्षा समाप्त होते ही टामसे पूछा—किस स्थानसे दास–व्यवसायीने तुझे सबसे पहिले खरीदा था ?

टाम—केन्टाकी प्रदेशसे।

क्रेता—वहाँ कौन काम करता था ?

टाम—अपने मालिकके खेतका काम देखता था।

क्रेता—ठीक है।

यह कहकर वह व्यक्ति अडाल्फके पास आया। घृणाके साथ अडाल्फके मुखकी ओर देखकर धीरेसे आगे बढ़ गया। अब वह वहाँ आया जहाँ सूसन और उसकी कन्या एमलिन खड़ी थीं। उसने अपना वज्रकी भाँति कठोर हाथ फैलाकर एमलिनको अपने पास खींच लिया। एमलिन मारे भयके काँपने लगी। क्रेताने उसके कन्धे तथा वक्षस्थलपर हाथ लगाकर उसके शरीरकी परीक्षा की। पश्चात् बार-बार सतृष्ण नेत्रोंसे उसके मुखकी ओर देखकर गर्दनिया दे उसे उसकी माताकी ओर ढकेलकर वह चला गया।

जिस समय नर-पिशाच सदृश यह क्रयार्थी एमलिनकी परीक्षा करने लगा उस समय उसकी माताका हृदय भय और त्राससे काँपने लगा था। एमलिन स्वयं भी उसकी निष्ठुर मुखाकृति देखकर अत्यन्त भय-भीत हो गयी थी तथा उसने रोना आरम्भ कर दिया था।

एमलिनका रोना सुनकर नीलामकारी लोग बड़े क्रुद्ध हो कर कहने लगे—चुप रहो, रोनेसे दण्ड पाओगी।

नीलाम आरम्भ हुआ। नीलामके बक्सपर अडाल्फको खड़ा किया। दो-चार डाकोंके पश्चात् पहिले जिस क्रेताने उसे क्रय करनेको कहा था। उसने उपयुक्त मूल्यमें उसे खरीद लिया। सेन्टक्लेयरके अन्यान्य दास-दासी लोगोंको एक-एक करके भिन्न-भिन्न लोगोंके खरीदलेनेपर टामकी डाक आरम्भ हुई।

टाम नीलामके बक्सपर खड़ा होकर इधर-उधर देखने लगा। पाँच-सात डाकके पश्चात् टाम बिक गया। जिसको देखते ही टामके हृदयमें घृणा और भयका संचार हुआ था उसी ठिगने बलवान् पुरुषने उसे खरीद लिया। मूल्य देकर

टामका गला पकड़कर नीलामके बक्स परसे कुछ दूर लेजाकर रखा।

नीलामकी डाक फिर आरम्भ हुई। इसबार सूसन नीलामके बक्सपरसे उतरते समय सतृष्ण नेत्रोंसे पीछेकी ओर फिरकर अपनी कन्याकी ओर देखने लगी। उसकी कन्याने उसकी ओर हाथ फैलाया। सूसन अपने क्रेतासे कातर स्वरसे कहने लगी—प्रभो!, मेरी कन्याको भी आप ही खरीद लीजिए। उसका क्रेता कुछ दयालु था। उसने सूसनसे कहा—मैं तुम्हारे कन्याके क्रय करनेकी चेष्टा करूँगा। किन्तु इसका मूल्य अधिक होगा। कदाचित् मैं इतना मूल्य न दे सकूँ।

एमलिन नीलामके बक्सपर चढ़ायी गयी उसका वह सरलता पूर्ण मुख त्राससे पाण्डु वर्ण हो गया था, किन्तु इस अवस्थामें भी उसके सौन्दर्यमें किंचितमात्र भी न्यूनता न हुई वरन् एक अन्य प्रकारके अपरूप सौन्दर्यका भाव उसके मुख-कमलमें विकसित हुआ। उसकी माता यह देखकर अत्यन्त भीत हुई। वह सोचने लगी, मेरी प्राणधन एमलिन यदि कुत्सिता होती तभी उत्तम था। इसे खरीदनेके लिए अनेक लोगोंने डाक बोलना आरम्भ किया। एमलिन की माताको जिसने क्रय किया था उसने भी दो-तीन डाक लगायी। परन्तु देखते-देखते इतने अधिक मूल्यकी डाक लगी कि वह उसकी शक्तिसे बाहर हो गयी। अतएव वह चुप हो गया। इस प्रकार क्रमशः अनेक लोगोंको चुप होना पड़ा। अन्तमें केवल दो व्यक्ति प्रतिद्वन्द्वी होकर परस्पर मूल्य बढ़ाने लगे। इन दोमेंसे एक टामका क्रेता, वही नाटा पुरुष था और दूसरा था इस प्रदेशका एक समृद्धशाली अभिजात-सन्तान। अन्तमें टामके क्रेताने ही अन्तिम डाक बोलकर एमलिनको खरीदा। नर-पिशाच साइमन लेग्री उस सरल

हृदय, सच्चरित्र पञ्चदश वर्षीय कन्याके जीवनका अधिकारी हुआ। इस दुरात्माके हाथसे उसकी रक्षा करनेके लिए परमेश्वरको छोड़कर और कोई दूसरा बन्धु नहीं रहा।

सावधान एमलिन! अपनी माताके अन्तिम उपदेश-वाक्य स्मरण रखना। प्राण-विसर्जन कर देना पर धर्म-विसर्जन न करना।

एमलिनके इस प्रकार बिक जानेपर उसकी माता विक्षिप्तकी भाँति नानाप्रकारका विलाप-परिताप करने लगी। एमलिनकी माताका क्रेता कुछ सहृदय था, वह मन-ही-मन कुछ कष्टका अनुभव करने लगा। किन्तु इस देशके लोग ऐसे दृश्य सदैव देखा करते हैं। अतएव वह अम्लान मुख हो अपनी क्रीत सम्पत्ति सूसनको साथ लेकर अपने घरकी ओर चला गया।

इस नीलामके दो दिन बाद नीलाम-घरके अध्यक्ष सेमुयल मन्टो और फ्लेचर मेक्लित दोनों साहबोंने सूसन और एमलिनके मूल्यके रुपयोंमेंसे नीलाम-खर्च एवं कमीशन काटकर शेष सब रुपये कम्पनीके वकीलके पास भेज दिया। रुपयोंके बिलके पृष्ठपर ये वाक्य लिख देनेसे उत्तम होता—

"परमेश्वर कदापि निराश्रय, अनाथोंका क्रय अग्राह्य नहीं करते।"

चौंतीसवाँ परिच्छेद

नौका-पथ

रेड नदी बह रही है। नदीके वक्षस्थलपर एक छोटी सी नौका पाल तानकर दक्षिणकी ओर आगे बढ़ रही है। नावमेंसे कितनी ही दास-दासियोंकी क्रन्दन-ध्वनि सुनायी पड़ती है। टाम इन लोगोंमें अवनत मस्तक हो बैठा हुआ है। उसके हाथ-पैर लोहेकी सिकड़ियोंसे बँधे हुए हैं। किन्तु उसके हृदयपर लोहेसे अधिक गुरुतर भार रखा हुआ है, उसका हृदय दुःख-भारसे दबा हुआ है। आशा-आकाशका चन्द्र तथा उसके तारे विलीन हो गये हैं। सामने जो था वह पश्चात्-गामी नदीके किनारेके पेड़ोंकी भाँति एक-एक करके सभी पीछे चला गया। अब वह फिर कभी न दिखायी पड़ेगा, अब कभी न लौटेगा। आज उसका केन्टाकीका घर-द्वार, स्त्री-पुत्र तथा सदय प्रभु-परिवार, कहाँ है? सेन्टक्लेयर-का घर, उस घरकी अमित शोभा-समृद्धि, इवा देवोपम मुख-शशि, उन्नत चेता सुन्दर प्रफुल्ल मूर्ति कोमल हृदय सेन्ट-क्लेयर, वह आयास-हीन जीवन, वे सुख तथा विश्रामके दिन-सभी चले गये। उनके स्थानमें रहा क्या?-उनकी स्वप्न-वत् स्मृति।

टामके नूतन क्रेता लेग्रीसाहबने नव-अर्लिन्सकी भिन्न-भिन्न आढ़तोंसे आठ-दास-दासियोंको खरीदा था। इन लोगोंको, दो-दोको एकमें बाँधकर कुछ दूर नावपर चढ़ा नदीके मुख-

स्थानपर जाकर 'पाइरेट' नामके जहाजपर चढ़ा। दास-दासियोंको जहाजपर चढ़ानेके पश्चात् लेग्री स्वयं टामके समीप आया। टाम सेन्टक्लेयरके घरपर सदैव भद्रोचित वस्त्र पहिनता था। बिक्रीके पहिले आढ़तके मालिकोंने उसे अपने सर्वोत्कृष्ट वस्त्र पहिननेको कहा था। इसलिए इस समय वह वे ही वस्त्र पहिने हुए है। लेग्रीने उसे खड़े होनेको कहा,—टाम उसी क्षण खड़ा हो गया। लेग्रीने उससे उत्कृष्ट कपड़े त्याग देनेको कहा। टाम अपना जामा और कोट खोलने लगा। किन्तु उसके हाथ लोहेकी सिकड़ियोंसे बँधे थे। इस लिए शीघ्रतासे नहीं खोल सकता था। यह देखकर लेग्री स्वयं बलपूर्वक खींचकर उसके वस्त्र उतानेलगा उसके पश्चात् टामके पास सेन्टक्लेयरका दिया हुआ जो एक सन्दूक था उसमेंसे एक फटा—मैला कोट और एक पतलून बाहर निकाला। इस सन्दूकमें क्या है—यह पहिले ही खोलकर लेग्रीसाहबने देख लिया था, उस सन्दूकमेंसे सहजमें ही वे पुराने कपड़े बाहर निकाल लिए। टाम सेन्टक्लेयरकी अश्वशालामें जब काम करता था तभी यह मैला कोट और पतलून पहिनता था। इस समय लेग्रीकी आज्ञासे वही पतलून पहिन लिया। पश्चात् लेग्रीने उसे बूट उतारनेको कहकर एक पुराना जूता पहिननेको दिया। टामने वही फटा जूता पहिन लिया। किन्तु वस्त्र परिवर्त्तनके समय उसके पहिलेवाले कोटके जेबसे अपनी बाइबिल निकाल न लेनेसे उसे अपनी बाइबिल खोदेनी पड़ती। टामके पहिलेके कपड़े उतारते ही लेग्री, उसके कपड़ोंमें कुछ है कि नहीं, यह परीक्षाकर देखने लगा। टामके जेबसे इवाकी दी हुई एक रुमाल निकली। लेग्रीने उसी क्षण उसे अपनी बनानेके लिए जेबमें रख लिया। उसके पश्चात् एक दूसरे जेबसे एक संगीत पुस्तक निकाली। टाम शीघ्रता·

में इससे पहिले नहीं निकाल सका था। लेग्री इस पुस्तकको देखते ही क्रोधित होकर बोला—क्या तू गिरजा जाता है ?

टामने स्थिर कण्ठसे कहा—हाँ प्रभु ! मैं बराबर गिरजा-घर जाता हूँ।

लेग्री—मैं किसीको गिरजा घर नहीं जाने देता। अपने खेतके कुलियोंको मैं उपासना करने या धर्म-गीत गाने नहीं देता। यह बात अच्छी तरह स्मरण रखना। अब मैं ही तेरा एक मात्र धर्म हूँ, एक मात्र गिरजा हूँ, मैं ही तेरा ईश्वर हूँ, मैं जो कुछ कहूँगा वही तुझे करना पड़ेगा।

लेग्री लाल-लाल आँखें किये तीव्र दृष्टिसे टामके मुखकी ओर देखकर यह बात कह रहा था। उस समय टाम चुप-चाप सुनता रहा। किन्तु उसकी अन्तरात्मा कह उठी—नहीं, तू मेरा धर्म नहीं, तू मेरा ईश्वर नहीं। इसी समय बाइबिलका जो वाक्य इवा सदैव उसे पढ़कर सुनाया करती थी, वही वाक्य उसके मनमें उदित हुआ। ज्ञात होता था, उसे आश्वासन देनेके लिए मानो किसी अदृश्य कण्ठसे फिर उच्चरित हो रहा है-"भय-भीत मत हो; इससे मैंने ही तुम्हारा उद्धार किया है। मैंने तुम्हें अपने नामसे परिचित किया है। तुम मेरे ही हो।"

लेग्रीके कानोंमें वह स्वर प्रविष्ट न हुआ। पापसे बधिर कानोंमें ये सब बातें प्रवेश नहीं कर सकतीं। वह कुछ देर तक टामके मुखकी ओर देखता रहा, फिर एक ओर चला गया।

इसके पश्चात् लेग्री टामके सन्दूकमें जितने अच्छे-अच्छे कपड़े थे उन्हें नीलाम कराने गया। सेन्टक्लेयरने उसे कई मूल्यवान कपड़े दिये थे। अर्थ-पिशाच लेग्री धनके लोभको न रोक सका। वह टामके सम्पूर्ण वस्त्र, यहाँ तक कि वह सन्दूक भी नीलाम कराकर जो कुछ मिला उसे अपने जेबके

हवाले किया। कानूनन दास लोगोंका किसी भी वस्तुपर कोई अधिकार नहीं। इसलिये टामको लेग्रीने जय क्रय किया था, तब कानूनन वह टामकी सब चीज़ोंका मालिक हो गया था। इस सबके नीलामके समय टामके उद्देश्यका कितना ही हंसी-ठट्ठा होने लगा।

सामानोंके नीलाम हो जानेपर लेग्री फिर टामके पास आकर बोला—टाम, तेरा आवश्यकतासे अधिक जो सामान था वह बिक गया। अब अपने शरीरके वस्त्र सावधानीसे रखना। एक वर्षके भीतर अब फिर नये कपड़े नहीं पावेगा। मेरे खेतके गुलाम लोग वर्ष भरमें एक बारसे अधिक कपड़े नहीं पाते। इसके पश्चात् लेग्री एमलिनके पास आया। एमलिन एवं एक दूसरी स्त्री एक साथ बंधी हुई थी। लेग्रीने एमलिनकी ठुड्डी पकड़कर कहा—तुम्हें कुछ डर नहीं। किन्तु सच्चरित्र बालिका भय और घृणापूर्ण दृष्टि से उसकी ओर देखने लगी। यह देखकर उसने एमलिनसे कहा—मेरे साथ यह न चलेगा। मैं जब तेरे साथ बातें करूंगा तब तुझे प्रसन्न-मुख होना पड़ेगा—सुनती है?

तत्पश्चात् एमलिनके साथ एक सिकड़ीसे बंधी हुई जो वयोवृद्ध स्त्री थी, उसे एक धक्का देकर कहा-अरी बुढ़िया! ऐसा हांड़ीकी भांति मुंह मत बना। तुझसे कहे देता हूं, प्रसन्न चित्त होकर रहना होगा। उसी समय कुछ पीछे हट कर फिर कहा—तुम सब लोगोंसे कहता हूं कि सिर उठाकर एक बार मेरी ओर देखो। ठीक नेत्रोंकी ओर देखो। (बड़े वेगसे पृथ्वीपर पैर पटककर)-एक बार, एक टक तो, मेरे मुखकी ओर देखते रहो।

डरकेमारे सभी उसके नेत्रोंकी ओर देखने लगे, उसके बाद लेग्री अपनी लोहेकी मुद्गरके समान मुष्टि दिखाकर कहने

लगा—इस वज्रमुष्टिकी ओर देखो। यह मुष्ठी लोहेकी मुट्ठीसे भी कठिन है। निग्रो लोगोंको मारते-मारते हाथ इतने कठोर हो गये हैं। यह कहते-कहते इसने टामके मुखकी ओर वह मुष्टिका-घात-उद्यत हाथ बढ़ाया। यह देखकर टाम भयसे पीछे हट गया। लेग्री फिर कहने लगा—मैं खेतमें निरीक्षक रखकर काम नहीं कराता। खेतका काम मैं स्वयं देखता-सुनता हूं। तुम लोगोंको बड़े परिश्रमके साथ काम करना पड़ेगा। विलम्ब न करने पावोगे। इसी रीतिसे मैं काम करता हूं। मेरे खेतमें दया-मायाकी कोई बात-चीत ही नहीं है। वह सब मैं पसंद नहीं करता।

लेग्रीकी यह बात सुनकर क्रीत-दास-दासी गण भय और त्राससे एक दम काँपने लगे और नितान्त निरास हो सिर झुकाकर बैठे रहे। इसके पश्चात् वह सुरापान करनेके लिये जहाजके दूसरे कमरेमें चला गया। उसके बगलमें एक अन्य व्यक्ति खड़ा था। उसे सम्बोधनकर लेग्री कहने लगा—महाशय, दास-दासियोंके साथ मैं ऐसा ही व्यवहार करता हूं। इन लोगोंको क्रय करके ले आते ही समझा देता हूँ कि मेरे साथ कैसे रहना होगा। यह अपरिचित भद्र पुरुष विशेष कौतूहल-पूर्ण नेत्रोंसे लेग्रीकी ओर देखने लगा। ज्ञात होता था मानो कोई प्राकृत-विज्ञान विद् पण्डित एक अभिनव पदार्थको पाकर उसकी प्रकृतिका निर्णय करनेके लिए उसे देख रहा है।

लेग्री फिर कहने लगा—महाशय, मैं कोमल हाथोंका क्षेत्राधिकारी नहीं हूँ कि कुलियोंको बेत लगवानेका कार्य परिदर्शकके हाथमें सौंपू। यह देखिए, मेरी मुट्ठी और अँगुलियाँ कितनी कठोर हैं। हाथके अनेक स्थानोंका मांस पत्थरकी भाँति कठोर हो गया है। यह केवल निग्रोलोगोंको मारते

मारते ऐसा हो गया है। अपरिचित व्यक्तिने लेग्रीका हाथ पकड़कर कहा—हाँ, यथेष्ट कठिन हो गया है। ऐसा आचरण करते-करते जान पड़ता है कि तुम्हारा हृदय भी ऐसा ही कठिन हो गया है।

लेग्री-(हँसते-हँसते) यह तो ठीक ही है। मैं कार्यके समय दया-माया नहीं करता।

अपरिचित—तुमने अच्छी, दास-दासियाँ खरीदी हैं।

लेग्री—हाँ, इस बार अच्छी ही खरीदी है। यह जो टाम-को आप देखते हैं इसकी सभीने प्रशंसा की है। इसके लिए मुझे कुछ अधिक मूल्य देना पड़ा। इसके रहनेसे भली-भाँति कार्य चलेगा। किन्तु यह कुछ कुशिक्षा पा गया है। धर्मकी ओर इसका बड़ा झुकाव है। सो वह भी मैं चार दिनमें दूर कर दूँगा। इस अधेड़को तो मैं बहुत सस्ते दरमें पा गया हूँ। जान पड़ता है इसमें कुछ रोग है। कदाचित यह दो-तीन वर्ष और बचे। मेरे खेतमें दिन-रात काम करना पड़ेगा। मैं किसीके काममें त्रुटि नहीं होने देता। कोई-कोई क्षेत्राधिकारी कुलियोंके बीमार हो जानेपर, मर जानेके भयसे, उनसे कम काम लेते हैं। किन्तु मेरा वैसा हिसाब नहीं है। बीमार हो चाहे अच्छा हो, नित्यके अनुसार ही कार्य करना पड़ेगा। थोड़ा-थोड़ा कामकर चार वर्ष तक बचे रहनेसे जो फल होगा, परिश्रम करके दो वर्ष तक बच-नेका भी वही फल होगा। एक निग्रोसे कम काम कराकर बहुत दिन तक बचा रखनेसे कुछ अधिक लाभ होता हो, ऐसी तो कोई बात नहीं है। अधिक काम करके एकके मर जानेपर दूसरा एक नया गुलाम खरीद लेनेपर अधिक लाभकी सम्भावना है।

अपरिचित—तुम्हारे खेतमें निग्रो लोग साधारणतः कितने वर्ष जीते हैं ?

लेग्री—इसका कुछ ठीक नहीं। युवा पुरुष होनेसे छः सात वर्ष तक बच जाते हैं। पर जो चालीस पार कर जाते हैं वे दो-तीन वर्षसे अधिक नहीं चलते। पाहले मैं भी निग्रो लोगोंके बिमार होनेपर औषधि देता था, ओढ़नेके लिए कम्बल देता था। पर पीछेसे देखा कि वह सब बिल्कुल व्यर्थ खर्च होता है। उससे उन्हें कुछ लाभ नहीं होता। इसी लिए अब वह सब कुछ नहीं करता। अस्वस्थ होनेपर भी उनसे पूरा काम लेता हूँ। और मर जानेपर दूसरा नया गुलाम खरीद लेता हूँ। इससे न तो खेतके काममें ही हानि होती है और न रुपयोंका ही नुकसान होता है।

अपरिचित व्यक्ति लेग्रीकी यह सब बातें सुनकर जहाजके एक दूसरे युवकके पास जा बैठा। वह युवक कुछ दूर बैठकर इनलोगोंकी सारी बात-चीत सुन चुका था। पहिले व्यक्तिने युवकसे कहा—दक्षिण-देशके सम्पूर्ण क्षेत्राधिकारी लोग इस व्यक्तिकी तरह निष्ठुर नहीं हैं।

युवक—ऐसा न हो तभी अच्छा है।

प्रथमव्यक्ति—यह आदमी नितान्त नीचाशय है, पाखण्डी है। इसका व्यवहार सचमुच ही पशुवत् है।

युवक—आपके देशमें जो कानून प्रचलित है, वह भी तो ऐसे निष्ठुर और नीचाशय मनुष्यको, असंख्य नर-नारियोंके जीवनका अधिकारी बननेका सुयोग प्रदान कर रहा है। परन्तु ऐसो निष्ठुर, पशुवत अत्याचारसे; उन अनाथोंको बचानेके लिए तो कोई भी विधान विधि-बद्ध नहीं है। अधिकांश क्षेत्राधिकारी लोग इसीकी भाँति निष्ठुर प्रकृतिके हैं।

प्रथमव्यक्ति—क्षेत्राधिकारियोंमें भी भले आदमी हैं।

युवक—तर्कमें यदि थोड़ी देरके लिए यह मान भी लिया जाय कि तुम लोगोंके क्षेत्राधिकारियोंमें भी कुछ भले आदमी हैं, तो ऐसे अत्याचार और निष्ठुरताका दोषारोप उन्हीं लोगों पर करना पड़ेगा। इस प्रकारके दो-चार व्यक्ति हैं इसी कारण यह घृणित प्रथा अब तक समाप्त नहीं हुई। सभी क्षेत्राधिकारी यदि इसी लेग्रीसाहबकी भाँति होते तो क्या यह घृणित प्रथा अब तक प्रचलित रह सकती?

जिस समय इन दो आदमियोंमें ऐसा कथोपकथन हो रहा था उस समय जहाजके अन्य स्थानमें एक ही सिकड़ीमें बँधी हुई एमलिन और लूसी आपसमें क्या कह रह थीं, सो सुनिये।

एमलिन—तुम किसके घर थी?

लूसी—मैं एलिस साहबके घर थी। कदाचित् तुमने उन्हें देखा होगा।

एमलिन—क्या वे सज्जन व्यक्ति थे? तुम्हारे साथ सज्जनताका व्यवहार करते थे?

लूसी—अस्वस्थ होनेके पूर्व वे मेरे प्रति अच्छा व्यवहार करते थे। अस्वस्थ होनेपर सभीके साथ कठोर व्यवहार करने लगे। उनकी सेवा-शुश्रूषा करनेके लिए प्रति रात्रि जागते रहना पड़ता था। किन्तु एक दिन सो जानेके कारण उन्होंने क्रुद्ध होकर कहा कि तुझे एक बड़े निष्ठुर व्यक्तिके हाथ बेचेंगे।

एमलिन—तुम्हारा कोई आत्मीय-जन है?

लूसी—मेरे स्वामी हैं। वे लोहारका काम करते हैं। मालिकने उन्हें एक दूसरे स्थानमें भाड़ेपर रख दिया है। मेरे चार लड़के हैं। मुझे अचानक उसने नीलामघर भेज दिया, इसलिए न तो स्वामीसे और न लड़कोंसे ही आनेके समय भेंट हो सका।

यह कहते-कहते लूसी रोने लगी। दूसरेका दुःख देखकर स्वभावतः उसे सान्त्वना देनेकी इच्छा होती है। एमलिन भी लूसीकी दुखकी कहानी सुनकर उसे कुछ सान्त्वना देनेका विचार करने लगी। किन्तु क्या कहूँ, यह कुछ स्थिर न कर सकी। अपने वर्तमान मालिककी भाव-भङ्गी देखकर दोनों ही सर्वान्तःकरणसे उससे घृणा करती थीं, दोनों इस नर-पिशाचके भयसे शंकित हो रही थीं।

घोर विपत्तिके समयमें भी ईश्वर-प्रति निर्भरताका भाव मनुष्यको कुछ सान्त्वना दे सकता है। लूसी अशिक्षिता होनेपर भी विलक्षण धर्म-भावसे पूर्ण थी। एमलिनने भी धर्मके सम्बन्धकी उचित शिक्षा पायी थी। उसका हृदय भी धर्म-भावसे परिपूर्ण था। पर ये लोग जैसे दुरवस्थामें फँसी थीं, जैसे राक्षस-प्रकृति लम्पट अंग्रेजके हाथमें पड़ गयी थीं, उस अवस्थामें अत्यन्त धार्मिक मनुष्यका भी ईश्वरके ऊपर निर्भर रह सकना संदिग्ध है।

जहाज क्रमशः आगे बढ़ने लगा। अन्तमें एक छोटेसे शहरके पास आकर उसने लङ्गर डाला। लेग्रीसाहब अपने क्रीत दास-दासियोंको साथ लेकर उसी शहरमें उतरा।

पैंतीसवाँ परिच्छेद

नरकादर्श

एक दुर्गम ऊबड़-खाबड़ मार्गसे होकर एक टूटी-फूटी गाड़ी तथा उसीके पीछे टाम एवं कई अन्य क्रीत दास अत्यन्त कष्टसे चले जा रहे हैं। गाड़ीमें लेग्रीसाहब बैठा है उसके

पीछे कितनी ही वस्तुएं तथा एक सिकड़ीमें बँधी हुई दो स्त्रियाँ हैं। दोनों स्त्रियां वस्तुओंके साथ जड़ी हुई सी हैं। दास लोग गाड़ीके साथ लेग्रीके खेतकी ओर बढ़े जा रहे हैं। यह जन-शून्य मार्ग पथिक-मात्रको कष्ट कर हैं, किन्तु, जिन क्रीत-दासियोंको यह मार्ग, स्त्री-पुत्र, पिता-माता आदिसे दूर किये जा रहा है उनके लिए तो और भी अधिक कष्ट कर होता है। केवल लेग्रीसाहब ही मनमें प्रसन्न होता हुआ चला जा रहा है। बीच-बीचमें ब्रान्डीकी बोतल निकालकर थोड़ा थोड़ा पीता भी जाता है। कुछ दूर जानेपर लेग्रीने, अपरिमित सुरापानसे उत्तेजित होकर क्रीत-दासोंको गाना गानेका आदेश किया। उन भाराक्रान्त हृदयोंसे भला क्या उस समय गानेकी उमंग उठ सकती थी? इसलिए वे परस्पर एक दूसरेका मुहँ देखकर रह गये। इसपर लेग्री चाबुकसे उनको मारते-मारते बोला—गाना गाओ! तब टामने गाना आरम्भ किया—

हे! हे! यिरूशलीम सुख-धाम,
कैसा मधुतर तेरा नाम।
दुःख रात्रि कब अवसान होइ,
मिलि हैं आनन्द॥

यह गाना सुनकर क्रुद्ध हो एक चाबुक उसकी पीठपर जड़कर लेग्रीने कहा—मैं तेरा यह गिरजाका गाना नहीं सुनना चाहता। मैं सुन्दर आमोद-प्रमोदका गाना चाहता हूं। तब लेग्रीका एक पुराना दास यह गाना गाने लगा—

(रागिनी मतवाली—ताला—बेताला)

साहब! कौन कहे तुम मानव सार
बाबा, तुम हो राक्षस-अवतार।

पति-उरसे छीन पत्नीको, तोड़ो गर्दन, मार।
पिता-पुत्रका भगिन-बन्धुका कर दो प्यार निसार॥
नहीं परस्परकर पाते प्यार। बाबा तुम०
मिली प्रकृति बन्दरकी, हो तुम हनुमतके चेला।
पाश्चात्य सभ्यता दिखनी भारी निरी वक्तृता-वेला॥
नहीं अन्य ढिग उसका विस्तार।
बाबा! तुम हो राक्षस-अवतार॥
ईश-मूसकी खोय खोपड़ी, उपदेशन बाँयें कीन्ह।
परम धर्म-मय बाइबिल-पुस्तक, रद्दीमें धर दीन्ह।
जान्यो यही धर्मको सार।
बाबा! तुम हो राक्षस-अवतार॥
हाः—हाः—हा!!

लेग्री साहबका जो निग्रोदास यह गाना गा रहा था वह सुर-तालकी ओर कुछ ध्यान न देता था। केवल तुक मिला कर चिल्ला रहा था। लेग्री साहब इसका गाना सुनकर स्वयं भी तालपर हो! हो! करके चिल्लाने लगा। लेग्री और उसका नौकर ये दोनों रास्ते भर इसी प्रकार चिल्लाते गये। कुछ देर बाद लेग्री एमलिनकी ओर फिरकर तथा उसके कन्धेपर हाथ रखकर कहने लगा-मेरे घरके बहुत पास आ गयी हो। लेग्रीने जिस समय एमलिनका तिरस्कार किया था, उस समय उसके हृदयमें बड़ा भय उत्पन्न हुआ था; किन्तु इस नीचाशयने नव प्रिय-संभाषण कर उसके कन्धेपर हाथ रखा तब एमलिनने सोचा कि ऐसा मधुर व्यवहार न करके यदि लेग्री उसे पैरोंकी ठोकरें मारता तो वही उत्तम था। लेग्रीकी आँखोंका भाव देखकर ही एमलिनके प्राण काँप उठता। इस समय लेग्रीके हस्त-स्पर्शसे वह कुछ हटकर सम शृंखलाबद्ध पूर्वोक्त रमणीके शरीरसे सटकर बैठ गयी। जिस

प्रकार सन्तान विपन्नावस्थामें माताकी ओर देखती है उसी प्रकार वह कातर नेत्रोंसे उस स्त्रीकी ओर देखने लगी। लेग्रीने फिर उसके कान छूकर कहा—तुमने कभी झूमक नहीं पहिना है ? मैं समझता हूं कि तेरे पास झूमक हैं नहीं ?

एमलिन—जी नहीं, मैं झूमक नहीं पहिरना चाहती।

लेग्री—तुम यदि मेरी बात मानो तो मैं घर पहुँचकर एक जोड़ा झूमक तुम्हें खरीद दूँगा। तुम्हें डर क्या है ? मैं तुमसे कोई मिहनतका काम न कराऊँगा। तुम मेरे साथ सुखसे रहोगी, बड़े आदमीकी भाँति रहोगी। केवल मेरी बात माननी पड़ेगी।

एमलिनके साथ जब लेग्री इसी प्रकारसे बात-चीत कर रहा था तभी गाड़ी उसके खेतके पास पहुँच गयी। इस खेत-का पूर्वाधिकारी एक दूसरा अंग्रेज था। वह लेग्रीकी भाँति नीचात्मा नहीं था। उस समयमें यह स्थान भी देखनेमें इतना भयानक तथा घृणोत्पादक नहीं था। उसके दीवालिया हो जानेपर लेग्रीने अल्पमूल्यमें ही इस खेतको क्रय कर लिया था। इस समय यह स्थान देखनेमें सचमुच ही नरकके समान जान पड़ता है।

गाड़ीके घरके आँगनमें पहुँचते ही तीन-चार दास तथा शिकारी कुत्ते गाड़ीका शब्द सुनकर घुर्र-घुर्र करते हुए, बाहर आये। ये कुत्ते टाम तथा अन्य नवागत दासोंका निश्चय ही प्राण-वधकर डालते, किन्तु पीछेसे गृहस्थित एक निग्रो गुलाम उनको लौटानेकी चेष्टा करने लगा एवं लेग्री स्वयं गाड़ीसे उतरकर दोनों हाथोंसे दो कुत्तोंको पकड़कर बैठ गया।

टाम एवं अन्यान्य दासोंकी ओर फिरकर लेग्रीने कहा—देखते हो मैंने कैसे कुत्ते पाल रखे हैं। भागनेकी चेष्टा करते ही इनके दाँतों-द्वारा प्राणोंसे हाथ धोना पड़ेगा।

इसके उपरान्त 'साम्बो' कहकर पुकारते ही नर-पिशाचके समान एक निग्रो दास आकर सामने खड़ा हुआ। लेग्रीने उससे पूछा—काम-काज तो भली-भाँति चला जा रहा है न ?

साम्बो—हुजूर, बहुत अच्छी तरहसे चला जा रहा है। पश्चात् 'कुइम्बो' कहकर बुलाते ही एक और पिशाच वहाँ आ उपस्थित हुआ। वह अब तक एक ओर खड़ा होकर अपने स्वामीका ध्यान आकर्षित करनेकी चेष्टा कर रहा था। लेग्रीने उससे कहा—तुमको जो सब काम करनेको कह गया था वह किया है ?

कुइम्बोने उत्तर दिया—हाँ सब किया है।

ये दोनों काले देव लेग्रीके खेतके प्रधान कार्याध्यक्ष थे। चिरकालसे निष्ठुराचरण करते-करते ये इतने नृशंस हो गये थे कि किसी प्रकारका भी जघन्य निष्ठुराचरण करनेमें कभी कुण्ठित न होते थे। लेग्रीसाहबने शिकारी कुत्तोंको जैसी हिंसक प्रकृतिका बना रखा था, इनदोनों गुलामोंको भी ठीक वैसा ही हिंसक बना रखा था। उस दासत्व-प्रथा- प्रचलित देशमें ये निग्रो परिदर्शक लोग अँग्रेजोंकी अपेक्षा भी अधिक-तर नृशंसाचारमें रहते थे। इसका मूल कारण और कुछ नहीं था। केवल निग्रो लोगोंकी अन्तरात्मा अपेक्षासे अधिक विकृतिको प्राप्त हो गयी थी। संसारके किसी भी स्थानमें अत्याचार निपीड़ित किंवा चिरपराजित जातिके लोगोंके मनमें किसी प्रकारका वीरोचित भाव स्थान नहीं पाता। निपीड़ित और पराजित जातिका अन्तस्तल नीचाशयता, स्वार्थपरता, द्वेष, हिंसादि विविध दोषोंका आकर हो जाता है। इसलिये ही निग्रोदास लोग वर्तमान समयके अनेकानेक देशी बाबुओंकी भाँति स्वजातीय लोगोंपर निष्ठुराचरण करनेमें किंचित्मात्र भी कुण्ठित नहीं होते।

लेग्रीने अपने खेतके कार्यके लिए एक विशेष प्रकारका कौशल कर रखा था। वह भली-भाँति जानता था कि अत्याचार निपीड़ित जातिमें परस्पर सहानुभूति नहीं रहती। साम्बो, कुइम्बोकी हिंसा करता था। कुइम्बो सुयोग पाते ही साम्बोका अनिष्ट करता था। खेतके अन्यान्य दास भी इनलोगोंके प्रति विद्वेष भाव रखते थे। लेग्री इनलोगोंमेंसे किसी एकके पक्षमें होकर दूसरेकी त्रुटियाँ तथा अपराध जान लेता था।

लेग्रीके खेतके पास और कोई श्वेताङ्ग क्षेत्राधिकारी न था। किन्तु मनुष्य, समाज-विहीन होकर रह नहीं सकता। इसलिए लेग्री समय-समयपर साम्बो तथा कुइम्बोको लेकर आमोद-प्रमोद करता था। एवं उस समय उनलोगोंके साथ समकक्ष लोगोंकी भाँति व्यवहार करता था।

लेग्रीके सामने तातार-परिषद् साम्बो और कुइम्बोके खड़े होनेपर उन तीनों आदमियोंकी प्रतिकृति देखनेसे स्पष्ट जान पड़ने लगा कि पशुवृत्तिधारी था निष्ठुर प्रकृतिके लोग हिंस्र-जन्तुकी अपेक्षा और भी अधिक भयानक होते हैं। उनलोगोंकी वह भीषण मूर्ति, उनकी हिंसा-विस्फारित आँखें, उनकी कर्कश भाषा सर्वतोभावेन इस स्थानपर उपयोगी जान पड़ने लगी।

लेग्रीने कहा—साम्बो, इन सब दासोंको यथा स्थानमें ले जा। इस औरतको मैं तेरे लिए ले आया हूँ। मैं तो तुझसे कह गया था कि इस बार तुझे एक श्वेतांगी मेम ले आऊँगा। ले, इसको ले जा।

यह कहकर अधिक अवस्थावाली लूसी नाम्नी स्त्रीको साम्बोकी ओर ढकेल दिया।

वह स्त्री चौंककर पीछे हट गयी और बोली—प्रभु! नव अर्लिंसमें मेरे स्वामी मौजूद हैं।

लेग्री—उससे क्या। यहाँ तुझे एक पति न चाहिए वह सब मैं कुछ नहीं सुनूँगा। (चाबुक उठाकर) जा साम्बोके साथ चली जा। पश्चात् एमलिनको सम्बोधन कर कहा—प्रिये! तुम मेरे साथ आओ।

लेग्रीने जिस समय आँगनमें खड़े होकर एमलिनको 'प्रिये' कहकर पुकारा, उसी समय घरकी एक खिड़कीमें से स्त्रीका मुख दिखायी पड़ा। द्वार खोलकर लेग्रीके घरके भीतर प्रवेश करते ही उस स्त्रीने क्रुद्ध होकर कुछ कहा। लेग्रीने उत्तर दिया—चुप रहो, मेरी जो इच्छा होगी वह करूँगा। एक नहीं तीन लाऊँगा।

टामने आंसू भरे नेत्रोंसे एमलिनकी ओर देख रहा था; इसलिए यह सब दशा उसने देख ली। उसके बाद साम्बोके साथ चला गया।

लेग्रीके दासोंके घर बड़े मैले थे। कोठरियाँ अश्वशालाकी भाँति सूखे तृणोंसे छाई हुई थीं। ये सब गन्दी कोठरियाँ देखकर टामकी जान सुख गयी। वह पहिले अपनी बाइबिल रखनेके लिए एक ताक खोजने लगा। पश्चात् साम्बोसे पूछा—मैं किसमें रहूँगा?

साम्बो—सो इस समय नहीं कह सकता। सभी घर तो बन्द हैं। कहाँ तुम्हें रखूँ, यह समझमें नहीं आता।

कुछ देर बाद टामको रहनेके लिए स्थान मिला, किन्तु वह स्थान कैसा था, यह लिखनेकी आवश्यकता नहीं।

* * * * *

सायंकाल दास-दासीगण खेतोंसे काम करके अपने-अपने घरकी ओर लौटे। इनमेंसे सब जीर्ण-वस्त्र पहिने हुए थे। सभोंका शरीर धूलसे भरा था; मुहँ सूखा हुआ था। दुर्भिक्ष-पीडित लोगोंकी भाँति ये भूख-प्याससे कातर होकर

अपने-अपने घरोंमें प्रवेश कर रहे हैं। सवेरेसे सन्ध्या तक लोगोंने खेतमें लगातार परिश्रम किया है। कितनो ही बार कारिन्दोंका वेत्रप्रहार सहना पड़ा है। इस समय भोजनके लिए प्रत्येक मनुष्यको एक-एक पाव गेहूँ दिया गया। वही गेहूँ पीसकर भोजनके लिए रोटी तय्यार करेंगे। टाम प्रत्येक पुरुष और स्त्रीका मुख देखने लगा, देखने लगा कि इन लोगोंमें मेरा बन्धु बननेके योग्य कोई आदमी है या नहीं। पर इनमेंसे एक बालकमें भी मनुष्यात्मा न मिली। पुरुष लोग पशुवत् हिंस्र, स्वार्थपर तथा निर्दय हैं, स्त्रियाँ दुखी, दीन हैं। उनमें से दूसरो जो कुछ सबल हैं वे दुर्ब्बलोंको धक्का देकर कुकार्य साधनेके लिए चली जाती हैं। किसीके मुखपर थोड़ा भी दयाका भाव नहीं है। एक दूसरेको वैर-भावसे घूरते हैं। सभी अपना पेट पालनेकी चिन्ता करते हैं। वास्तवमें घोर अत्याचार सहन करते-करते इनका हृदय पत्थरकी भाँति कठोर हो गया है। भूख-प्यासके अतिरिक्त मानव-प्रकृतिकी अन्य सब प्रकारकी स्वभाव-सिद्ध आकांक्षायें नष्ट हो गयी हैं। संध्या-समय प्रत्येकको जो एक-एक पाव गेहूँ मिलता था उसे वे पारी-पारी जाँतेमें पीस लेते थे। किन्तु दासोंकी संख्याकी अपेक्षा जातोंकी संख्या नितान्त अल्प थी। इसलिए बहुत रात्रि बीतनेतक वे जाँते चलाते रहते थे। जो बलवान् थे, वेही पहिले अपना कार्य साधन करते थे। दुर्ब्बल और रोगी लोगोंको सबके अन्तमें भोजन प्रस्तुत करनेका अवसर प्राप्त होता था।

साम्बोको लेग्रीने जो स्त्री दी थी, उसके वृथा हाथमें एक थाली गेहूँ देकर साम्बोने पूछा—तुम्हारा नाम क्या है?

स्त्रीने कहा—मेरा नाम लूसी है।

साम्बो—लूसी, अब तुम मेरी स्त्री हो। तुम ये गेहूँ लेकर अपने और मेरे लिए भोजन प्रस्तुत करो।

लूसी—मैं तेरी स्त्री नहीं हूँ, और न कभी हूँगी ही। तू चला जा।

साम्बो—ऐसी बात करोगी तो मारे लाठियोंके खोपड़ा चूर कर दूँगा।

लूसी—तेरी इच्छा हो तो मेरा खून कर डाल; जितनी शीघ्र मृत्यु हो जाय उतना ही अच्छा है। इतने दिन जीनेसे मरना ही अच्छा है।

साम्बोके उस स्त्रीको मारनेके लिए उद्यत होते ही कुइम्बोने कहा—सावधान साम्बो लोगोंको मारकर कामकी हानि करते हो। मैं मालिकसे कह दूँगा। कुइम्बो, अपना गेहूँ पीस रहा था। उसके पहिले तीन-चार स्त्रियाँ गेहूँ पीसने आयी थीं। वह उन्हें धक्का देकर अलग हटाकर पहिले अपना गेहूँ पीस रहा था। इसीसे साम्बोने कहा—मैं भी मालिकसे कह दूँगा कि तू चार औरतोंको धक्का मारकर अलग हटा अपना गेहूँ पीस रहा है।

टाम दिनभर पैदल आया है। इस समय अत्यन्त क्षुधार्त्त हो रहा है। किन्तु कब भोजन मिलेगा, यह नहीं जानता। कुइम्बोने इसके हाथमें एक थाली गेहूँ देकर कहा—जाओ, इस गेहूँको पीसकर रोटी बना खा लो, यह एक सप्ताहकी खुराक है। टाम प्रायः दो प्रहर रात्रि तक अपेक्षा करता रहा, किन्तु गेहूँ पीसनेका सुयोग न प्राप्त हुआ। रात्रिके बारह बजेके समय उसने देखा कि दो रुग्ण स्त्रियाँ अत्यन्त क्लान्त हुई पड़ी हुई हैं। उनके शरीरमें बल नहीं है, इसलिए सभी उनको ठेल-ठालकर अपना-अपना गेहूँ पीस चुके। टामने अपने हाथसे पहिले उनका गेहूँ पीस दिया, तत्पश्चात् अपना गेहूँ पीसा।

ऐसा दृष्टान्त इस स्थानमें और कभी नहीं दिखाई पड़ता। दयाका काम यहाँ कभी कोई नहीं करता। ऐसे स्थानमें यह अलौकिक कार्य है। अतिशय साधारण दयाका कार्य होनेपर भी टामका ऐसा आचरण देखकर दोनों स्त्रियोंका हृदय कृतज्ञतासे पूर्ण हो गया। उनका वह श्रम-क्लिष्ट, कठोर मुख स्त्री-सुलभ ममताके भावसे परिपूर्ण हो गया। उनलोगोंने टामकी रोटी बना दी। वे दोनों स्त्रियाँ जब रोटी बना रही थीं, तब टामने चूल्हेके पास बैठकर अपने जेबसे बाइबिल निकाली। उसके हाथमें पुस्तक देखकर एक स्त्रीने पूछा—तुम्हारे हाथमें यह क्या है?

टाम—बाइबिल। हमारी धर्म-पुस्तक।

स्त्रियाँ—केन्टाकी छोड़नेपर फिर धर्म-पुस्तकका नाम नहीं सुना।

टाम—तुम क्या पहिले केन्टाकीमें थीं?

पहिली स्त्री—हाँ, वहाँ सुखसे थीं। ऐसी दशा होगी, यह कभी स्वप्नमें भी नहीं सोचा था।

दूसरी स्त्री—कौन सी पुस्तक बतलाया?

टाम—बाइबिल।

दूसरी स्त्री—बाइबिल किसे कहते हैं?

पहिली स्त्री—तुमने क्या कभी इस पुस्तकका नाम सुना ही नहीं? केन्टाकीमें मेरे पहिलेके मालिक कभी-कभी यह पुस्तक पढते थे, तब मैं उसे सुनती थी। यहाँ तो केवल गाली-गलौज और शपथ करते सुनती हूँ। अच्छा, तुम कुछ पढ़ो तो सुनूँ।

टाम बाइबिल पढ़ने लगा—"हे परिश्रान्त, भाराक्रान्त लोग तुम मेरे निकट आओ, मैं विश्राम प्रदान करूँगा।"

प्रथम स्त्री—यह बड़ी सुन्दर बात है। यह बात कौन कहता है ?

टाम—ईश्वर कहते हैं।

पहिली स्त्री—वे कहाँ हैं ? यदि जान पाती तो उनके पास जाती। मैं वहाँ न जानेसे और कहीं शान्ति न पाऊँगी। मेरा शरीर जीर्ण-शीर्ण हो गया है। और ऊपरसे साम्बो मुझे प्रति दिन धमकाता है कि बेतोंसे तुम्हारी खबर लूँगा। एक दिन भी रातके दो प्रहरके पहिले खाना नहीं पाती। अन्त में जब जाकर थोड़ा लेट रहती हूँ, तब एक ही करवटमें सवेरा हो जाता है। खेतमे जानेका घंटा बजता है। यदि जान पाती कि परमेश्वर कहाँ हैं, तो उनके पास यह सब दुखड़ा रोती। हा ! ईश्वर यह यंत्रणा अब नहीं सही जाती।

टाम—परमेश्वर सर्वत्र ही हैं।

स्त्री—परमेश्वर इस स्थानमें हैं, इसपर मैं विश्वास नहीं कर सकती। यह बात मैंने कई बार सुनी है कि परमेश्वर यहाँ हैं, वहाँ हैं, किन्तु मेरा दुख देखकर तो वे कुछ करते नही। तुम्हारी इस बातपर मै विश्वास नहीं करती। मैं अब घर जाकर सोती हूँ। ईश्वर कहीं भी नहीं हैं।

वह स्त्री यह कहकर चली गयी। टाम अकेला बैठकर प्रार्थना करने लगा।

जिस प्रकार इस नीले आकाशमें उदित होकर चन्द्रमा चुपचाप गम्भीर भावसे इस संसारके प्रति दृष्टिपात करता है, उसी प्रकार परमेश्वर भी निशब्द गम्भीर भावसे इस संसारके पाप तथा अत्याचार आदि देखते हैं। यह कृष्ण-काय दास जब बाइबिल हाथमें लेकर निस्सहाय अवस्थामें उसे पुकारता है, तब इसके प्रत्येक शब्द उसके कानोंमें प्रविष्ट होते हैं, किन्तु ईश्वर इस स्थानमें वर्त्तमान है, इसपर किस

प्रकार वह अशिक्षित स्त्री विश्वास करेगी। इस अत्याचार और यंत्रणासे दुखी, ऐसी अशिक्षित स्त्रीके हृदयमें, ईश्वरकी स्थितिका विश्वास कराना क्या कभी सम्भव है !

टाम उपासनाके अन्तमें आज पूर्ण शान्ति प्राप्त न कर सका। अत्यन्त उद्विग्न चित्त हो शयन करने गया। घरकी वायु दूषित तथा दुर्गन्धिमय थी। उसकी वहांसे बाहर चले आनेकी इच्छा हो रही थी, किन्तु करे क्या। नितान्त क्लान्त और शीतार्त हो गया था। इसलिए वहीं जाकर चुपचाप सो रहा। लेटते ही सो गया। सुप्तावस्थामें वह स्वप्न देखने लगा—मानो वह झीलके निकटस्थ उद्यानमें सिधारपर बैठा हुआ है, और इवा गम्भीर स्वरसे उसके पास बैठी हुई बाइबिलकी निम्न कथा पढ़ रही है।

"जब तुम जलपरसे चलकर जाओगे, मैं तुम्हारे साथ रहूँगा, इसलिए नदी तुम्हें अपने जलमें डुबा न सकेगी। जब तुम अग्निमें कूद पड़ोगे, तब वह तुम्हें जला न सकेगी, उस समय भी मैं तुम्हारे पास रहूँगा। मैं तुम लोगोंका एकमात्र प्रभु वा परमेश्वर हूं।"

यह शब्द-समूह मधुर संगीतकी भांति टामके कर्ण-कुहरोंमें प्रवेश करने लगे। इवा मानो सस्नेह बारम्बार उसकी ओर देखकर स्वर्ण-विनिर्मित रथपर चढ़ कर आकाशमें उड़ गयी। रथसे सुगन्धित पुष्प भूमितलपर गिरने लगे।

टाम जाग पड़ा। किन्तु यह क्या स्वप्न है ? अविश्वासी लोगोंके लिए यह स्वप्न ही है, किन्तु जिस दयार्द्र-चित्त बालिकाने इस संसारमें रहनेके समय दूसरेके दुःखसे कातर होकर सर्वदा अश्रु-विसर्जन किया है, मृत्युके पश्चात् क्या चिर दुःखीको सान्त्वना देनेके लिए वह नहीं आ सकती ? यह क्या असम्भव है ? कदापि नहीं।

छत्तीसवाँ परिच्छेद



कासी

टामने अल्पकालमें ही लेग्रीके खेतकी कार्य-प्रणाली एवं स्थानकी भाव-गति (विचार-प्रवाह) समझ लिया। वह बड़ा कार्य-पटु था। पूर्वके अभ्यासके अनुसार एवं चरित्रकी शुद्धताके कारण वह किसी काममें त्रुटि अथवा वेगारी न करता था। सोचा कि परिश्रममें किसी प्रकारकी न्यूनता न करनेसे वेत्रा-घातका भय नहीं है। इस स्थानमें होनेवाले नाना प्रकारके अत्याचार और उत्पीड़नोंको देखकर उसका हृदय त्राससे परिपूर्ण हो गया था। वह ईश्वरको आत्म-समर्पणकर धैर्य-धारण-पूर्वक कार्य करने लगा। उसका मन एक दम निरास हो जाता था। उसका यह दृढ़ विश्वास था कि परमेश्वर कभी उसे परित्याग नहीं करेगा। किसी न किसी प्रकारसे मंगलमय भगवान उसका उद्धार करेंगे ही।

लेग्री टामका काम विशेष मनोयोग-पूर्वक देखने लगा एवं शीघ्र ही उसने समझ लिया कि टाम बड़ा ही कार्य-दक्ष व्यक्ति है। यह सब हुआ, पर टामके प्रति उसका विद्वेष-भाव किसी प्रकार भी कम न हुआ। इसका मूल कारण क्या था, यह जानना लेग्रीकी तरह लोगोंके लिए साध्य नहीं। वस्तुतः टामके प्रति लेग्रीका विद्वेषभाव कदापि दूर नहीं हो सकता था। झूठेका सच्चेके प्रति, पापीका पुण्यात्माके प्रति अधर्मीका धर्मात्माके प्रति, एक प्रकारका स्वभाव-सिद्ध विद्वेष का भाव रहता है। इसलिए संसारमें परम धार्मिक देश-

संस्कारकगण उस देशके निवासियोंके परम अश्रद्धाके भाजन होते हैं, एवं जिसके उपकारके लिए वे अपना जीवन-उत्सर्ग करते हैं, वे ही उनके प्राण-नाश करते हैं।

लेग्री भली भाँति समझ गया था कि उसके क्रीत-दासोंके साथ निष्ठुराचरण अथवा अत्याचारको टाम बड़ी घृणाकी दृष्टि से देखता है। पर संसारमें भले बुरे सभी प्रकारके लोग दूसरे से अपनी प्रशंसा कराना चाहते हैं। किसीके आचरण और मतामतका अन्यान्य लोगोंके अनुमोदन न करने पर वे व्यक्ति संतोष नहीं प्राप्त कर सकते। इसलिए एक दासका भी अपने प्रतिकूल मत कभी-कभी असह्य हो उठता है। इसके अतिरिक्त लेग्रीने और देखा कि टाम समय-समय पर अन्यान्य दास-दासियों पर दया प्रकट करता है। उन लोगोंको कोई कष्ट होनेपर वह स्वयं भी उस कष्टका अनुभव करता है। दास-दासियोंमें आपसमें एक दूसरेके प्रति सहानुभृति लेग्रीके खेतमें किसी भी समय दिखायी नहीं पड़ी थी, अतएव टामका आचरण लेग्रीको असह्य हो उठा। टामको एक परिदर्शकके कार्यके लिए ही उसने इतने अधिक मूल्यमें उसे क्रय किया था, किन्तु घोर निष्ठुर प्रकृतिका मनुष्य न होनेसे कोई कदापि परिदर्शकके कार्यमें नियुक्त नहीं हो सकता परिदर्शक को सदैव वेत्राघात करना होता है। टामके कार्य-पटु होनेपर भी इतना अधिक आवश्यक गुण उसमें रत्ती भर भी न था। अब लेग्री सोचने लगा, कि टामका हृदय कठोर और निष्ठुर बनानेके लिए शीघ्र ही कोई उपाय करना पड़ेगा। बिना किसी विलम्बके ही हृदय-निष्ठुर करनेकी नयी शिक्षा-पद्धति अवलम्बित हुई।

एक दिन टाम और अन्यान्य दास-दासियोंके खेतमें जानेके लिए एकत्रित होनेपर एक नवीन स्त्री भी उन लोगोंमें

आकर मिल गयी। स्त्री दीर्घाकृति तथा कृशाङ्गी है, उसके हाथ पैर कोमलताके परिचायक हैं, उसके वस्त्र भले आदमियोंकी भाँति हैं। उसकी अवस्था चालीस-पैंतालीस वर्षकी होगी। इसके मुखका भाव ऐसा है कि एक बार देख लेने पर फिर कोई उसे सहजही भूल नहीं सकता। देखने से जान पड़ता है कि इसका जीवन-इतिहास अनेक कष्टकर और अद्भुत घटनाओं-से परिपूर्ण है। इसका प्रशस्त ललाट, इसके विशाल उज्ज्वल नेत्र, टेढ़ी-टेढ़ी सघन भौंहें, मुखकी शोभा और भी बढ़ा रही हैं। अङ्ग-सौष्ठव देखकर ऐसा जान पड़ता है कि यौवनकाल-में यह स्त्री अपूर्व रूप, लावण्यवती थी, किन्तु इस समय शोक और चिन्ताके चिह्नोंके कारण उसका वह रूप-लावण्य अने-कांशमें नष्ट हो गया है। इसके मुखसे अन्तरस्थित घोर विद्वेष, नैराश्य एवं अहंकार-सम्भूत एक आश्चर्य-जनक सहिष्णुता प्रकाशित हो रही है।

यह स्त्री कौन है? एवं कहाँसे आयी है? टाम इसके विषयमें बिन्दुमात्र भी नहीं जानता। पर खेतमें जानेके समय वह बराबर टामके पासही पास चलती थी। खेतके अन्यान्य दासियों तथा दासोंके निकट, जान पड़ता है, यह स्त्री कुछ-कुछ परिचित थी। क्योंकि उन जीर्ण-शीर्ण वस्त्रावृत कुलियोंमें से कोई उसे देखकर कुछ हँसा, किसीने उसकी दिल्लगी उड़ायी, कोई उसको देखता रह गया, तथा कोई-कोई आनन्द प्रकट करने लगा।

एकने कहा—क्यों? अब तो हम लोगोंके साथ खेतमें काम करना पड़ेगा। अच्छा हुआ। मैं बड़ा प्रसन्न हुआ। दूसरेने कहा—अब जान पड़ेगा कि खेतके काममें कितना कष्ट होता है। तीसरेने कहा—देखूँगा कैसा काम करती है। इसे भी

हम लोगोंकी भाँति वेत खाना पड़ेगा। चौथेने भी कहा—जब इसके पीठ पर वेत पड़ेगा, तब मैं बड़ा प्रसन्न हूँगा।

उस स्त्रीने इन बातोंपर एक बार भी कुछ ध्यान न दिया। अभिमान-पूर्ण मुख-मण्डल लिए वह धीरे-धीरे चली जा रही है। टाम चिरकालसे भद्र-समाजमें था। इसकी भाव-भङ्गी देखकर उसने समझ लिया कि ये निश्चय ही कोई भद्र महिला होंगी। किन्तु किसलिए इनकी यह दुर्दशा हुई है, इसका निश्चय वह न कर सका। मार्गमें चलते समय वह स्त्री बराबर टामके बगलमें थी, पर एक बार भी उसने टामके साथ बात-चीत न किया। खेतका काम आरम्भ होनेपर टाम बराबर उसकी ओर देखने लगा। वह स्त्री बड़ी शीघ्रतासे कार्य कर रही थी। अन्यान्य कुलियोंकी अपेक्षा वह सहज ही कपास उठाने लगी, पर उसका भाव देखकर यह जान पड़ने लगा कि वह विरक्ति, घृणा और अभिमानके साथ कार्य कर रही हैं। टाम अपने साथकी खरीदी हुई दासी लूसीके पास ही बैठा हुआ कपास बीन रहा था। वह स्त्री यहाँ आकर अत्यन्त दुर्बल और रुग्ण हो गयी है। वह कपास इकट्ठा कर रही थी और पलपल-प्रतिमें मृत्युकी कामना कर रही। कभी-कभी नितान्त थककर भूमिमें लोट जाती थी। टामने अपनी झोली-में से थोड़ासा कपास निकालकर उसकी झोलीमें रख दिया। लूसीने उसी क्षण टामसे कहा—बाबा, मेरी सहायता मत करो, नहीं तो तुम स्वयं विपत्तिमें पड़ जाओगे।

इसी समय परिदर्शक साम्बो वहाँ आया। लूसी उसे उपपतिके रूपमें ग्रहण नहीं करती थी, इसलिए वह लूसीपर विशेष क्रुद्ध था। उसने तुरन्त जाकर लूसीको भरपूर पैरकी एक ठोकर मारी। लूसी मूर्च्छित हो गयी। तब साम्बो आकर गायके चमड़ेके बने हुए चाबुकसे टामको मारने लगा।

वह चुप-चाप फिर कपास बीनने लगा। लूसीको मूर्च्छित देख कर साम्बोके अधीनस्थ एक परिचालकने कहा—इस हराम-ज़ादीको मैं अभी जगाये देता हूँ। यह कहकर उसने जेबसे एक आलपीन निकाली और उसे लूसीके ललाटमें धँसा दिया। स्त्री, यंत्रणा-सूचक एक अस्फुट आर्त्तनाद कर उठी। परिचा-लकने कह—"उठ, हरामज़ादी, यह सब चालाकी मुझसे न लगेगी।

लूसी चैतन्य लाभकर कुछ उत्तेजित होकर शीघ्रतासे कपास चुनने लगी। परिचालकने कहा—इसी प्रकार शीघ्रता-से काम न करेगी तो यमके घर भेज दूँगा।

रमणीने कहा—यमके घर जानेपर ही बच सकूँगी। हा परमेश्वर ! क्या मुझे न बुलाओगे ?

टाम जानता था कि लूसी झोली भर कपास न दे सकेगी, तो लेग्री साहब इसको संध्या समय मारते-मारते अधमरा ही कर देगा। इसलिए अपने विपदकी कुछ भी परवा न करके अपने झोलीसे जितनी तौल थी उतनी कपास छिपाकर लूसीकी झोलीमें भर दिया। लूसीने कहा—तुम फिर ऐसा मत करना। तुम्हें बेत लगावेगा।

टामने कहा—तुम्हारा कष्ट मुझसे नहीं सहा जाता। तुम्हें जिससे फिर न मारे इसीलिए ऐसा किया।

हठात् वह अपरिचित रमणी टामके पास आयी, उसने कुछ रूई टामकी झोलीमें डालकर कहा—तुम यहाँ अभी नये आये हो, इसलिए यहाँकी कार्य-प्रणाली कुछ नहीं जानते। यहाँपर एक मास रहनेके पश्चात् दूसरेकी सहायता करना तो दूर रहा स्वयं अपने प्राणोंकी रक्षाके लिए व्यस्त हो पड़ोगे।

एक परिचालक इस स्त्रीकी कार्यावली देख रहा था। वह चाबुक लेकर वहाँ आ धमका और उसको सुनाकर कहा—

क्या हो रहा है ? मैं तुम्हारी सब करतूत देख रहा हूँ। तुम इस समय मेरे अधीन हो, यह सब चालाकी न लगेगी।

रमणी बड़ी तीव्र दृष्टिसे परिचालककी ओर देखती रही। उसके ओंठ काँपने लगे, नेत्रोंसे मानो अग्निकी चिनगारियाँ निकलने लगीं। वह परिचालकको सम्बोधनकर कहने लगी—कुत्ते, तनिक मेरे पास आओ तो देखूँ! अब भी मेरी इतनी क्षमता है कि शिकारी कुत्तोंसे तुझे नुचवाकर तेरा प्राणान्त करा सकती हूँ। मेरे कहने ही तुझे इसी समय अग्निमें जलाकर मार डालेंगे। तू मेरे पास दर्प करता है ?

परिचालक ये बातें सुनकर, शंकित हो बोला—तब तुम खेतमें काम करने क्यों आयी ? मिस कासी। तुम मेरा कुछ अनिष्ट न करना।

रमणीने कहा—तो फिर मेरे पाससे दूर रहना।

परिचालक खेतकी दूसरी ओर अन्यान्य कुलियोंका कार्य देखने चला गया। वह स्त्री फिर कपास इकट्ठा करने लगी। उसका व्यवहार देखकर टाम चकित हो गया। दिन समाप्त होनेके पूर्व ही उसने अपनी झोली पूरी कर ली एवं बीच-बीचमें टामकी झोलीमें रूई फेंक देने लगी। सन्ध्याके पश्चात् अन्धकारके सघन हो जानेपर दास लोग अपनी-अपनी कपासकी टोकरी मस्तकपर रखकर रूई-गोदामकी ओर चले। लेग्री प्रत्येक कुलीके संगृहीत कपासको तौलनेके लिए वहां आकर बैठा हुआ था। उस समय दो परिचालकोंके साथ उसकी यों बात-चीत हो रही थी—

लेग्रीने कहा—इस काले गुलाम टामको ठीक करना होगा, किन्तु यह सहज ही रास्तेपर न आवेगा।

निग्रो परिचालक दो दाँत बाहर निकालकर विकट हास्य करने लगा। कुइम्बोने कहा—यह आपके स्वयं ठीक किये

विना न चनेगा। आप जैसा अच्छा चाबुक लगाना जानते हैं, स्वयं शैतान भी वैसा नहीं जानता।

लेग्री–इसे रास्तेपर लाने और शिक्षा देनेका एक उत्तम उपाय है। अन्यान्य स्त्री लोगोंको बेत लगानेका भार इसे देना चाहिए।

कुइम्बो–जी हुजूर, पर वह ऐसा करना पसंद न करेगा। लोगोंको मारना-पीटना वह किसी प्रकार भी स्वीकार न करेगा। उसका जैसा धर्म-भाव है, उसे उसके मनसे दूर करना कोई सरल कार्य नहीं है।

लेग्री–अभी इसका धर्म-भाव दूर किये देता हूँ।

इसी समय साम्बोने आकर कहा–इधर देखिये, लूसी कोई कार्य नहीं करती। कुलियोंमें इसके समान दूसरा कोई बुरा नहीं है। बड़ी सुस्त है।

कुइम्बो–साम्बो, लूसीके ऊपर तुम्हें क्यों क्रोध है, यह मैं जानता हूँ, सावधान!

साम्बो—(लेग्रीकी ओर संकेत कर) आपने ही तो उसे मेरी स्त्री होनेको कहा था। देखिये, वह आपकी आज्ञाका भी पालन नहीं करती।

लेग्री—मैं मारते-मारते उसे यमलोक भेज देता, किन्तु इस समय काममें हानि होगी। इसीसे चुप हूँ।

साम्बो—लूसी बड़ी सुस्त है। कोई काम नहीं करती, केवल सताती रहती है। और यह टाम उसकी सहायता करता है।

लेग्री—टाम सहायता करता है? तो टामको ही इसके लिए बेत लगाना होगा। ऐसा करनेसे टामको भली शिक्षा मिलेगी। यह स्त्री अधमरी हो रही है। टाम तुम लोगोंको

भाँति इसे जोरसे नहीं मारेगा। इसलिए इसके हाथसे इसके मर जानेकी आशंका भी अधिक नहीं है।

यह बात सुनकर साम्बो और कुइम्बो, हीं-हीं कर हँसने लगे।

परिचालकने कहा—मिस कासी और टाम, लूसीकी टोकरीमें रूई भर देते थे।

लेग्री—मिस कासीने अपना काम तो किया है न?

परिचालक—काम आरम्भ करनेपर वह भूतकी भाँति काम कर सकती है।

लेग्रीने कपास तौलनेकी आज्ञा दी। सब कुली अत्यन्त क्लान्त हो गये थे। बड़े कष्टके साथ उन्होंने अपनी-अपनी टोकरी तराजूपर रखी। लेग्री हाथमें स्लेट लेकर लिखने लगा। टामकी टोकरीका कपास तौलकर देखा गया, और उसका कार्य संतोषप्रद माना गया। अब टाम उत्कंठित चित्तसे लूसीकी टोकरीकी ओर देखने लगा। लूसीने काँपते-काँपते आकर अपनी टोकरी लेग्रीके पास रखी। किन्तु लेग्री उसको दण्ड देनेके अभिप्रायसे कृत्रिम क्रोध दिखाकर कहने लगा—आज भी कम हुआ है। उसको एक ओर खड़ी कर दो।

लूसी निरास होकर मारे भयके रो उठी। इसके पश्चात् कासी नाम्नी उस नवीन स्त्रीने औद्धत्य और अवज्ञाके साथ अपनी टोकरी उपस्थित की। लेग्रीने विद्रूप-सूचक, कौतूहल-पूर्ण दृष्टिसे उसके मुखकी ओर देखा। रमणी स्थिर नेत्रोंसे उसे देखने लगी। उसके ओष्ठाधर कुछ काँपने लगे। वह फ्रेंच-भाषामें लेग्रीको कुछ कहने लगी। उसने क्या कहा, यह कोई न समझ सका। किन्तु कासी जब लेग्रीसे यह बात कह रही थी, तब लेग्रीके मुखने वास्तवमें पैशाचिक भाव धारण

किया।' उसने कासीको मारनेके लिए हाथ उठाया। रमणी घृणा दिखाती हुई निर्भय चित्तसे धीरे-धीरे चली गयी।

कुछ देरके पश्चात् लेग्रीने टामको बुलाकर कहा—टाम, तुमको मैंने साधारण कुलीके कार्यमें लगानेके लिए नहीं खरीदा है। मैं तुम्हें एक परिचालकके कार्यमें नियुक्त करूँगा। क्रमशः तुम्हें परिदर्शकका पद दिया जा सकता है। किस अपर-अपर कुलियोंको बेत लगाना चाहिए, यह इतने दिनों तक देख-सुनकर भली भाँति जान गये होंगे। आज इस कुलीको बेत लगाओ। यह स्त्री बड़ी सुस्त है।

टाम—प्रभु! मुझे क्षमा कीजिए। मैं स्त्रीको बेत नहीं लगा सकता। मुझे इस काममें नियुक्त न कीजिए। मैंने कभी यह काम नहीं किया और न करूँगा ही।

टामकी यह बात सुनकर लेग्रीने क्रुद्ध होकर कहा—तू अवश्य कर सकेगा।—

यह कहकर लेग्री गोचर्म-निर्मित चाबुकसे टामको मारने लगा एवं उसके मुखपर बार-बार घूँसे मारने लगा। प्रायः १५ मिनट तक उसे इस प्रकार पीटकर फिर कहा—फिर कहेगा कि बेत न लगा सकूँगा? इस समय स्त्रीको मारेगा कि नहीं?

टामकी नाकसे रक्त निकल रहा था। रक्त पोछते-पोछते वह कहने लगा—प्रभु, मैं सब काम कर सकता हूँ, इस देहमें जब तक प्राण हैं, प्राण-पनसे दिन-रात आपका कार्य करूँगा। किन्तु स्त्रियोंपर हाथ छोड़ना मैं अनुचित समझता हूँ—मैं इसे कदापि नहीं मार सकता—कदापि नहीं—कदापि नहीं।'

टाम सदैव अति विनम्र भावसे बात-चीत करता था। उसके बात-चीत करनेका ढंग विशेष सज्जनता-सूचक था। लेग्रीने समझा कि टाम डर गया है, शीघ्र ही वशीभूत हो

जायगा। किन्तु टामकी अन्तिम बात सुनकर कुली लोग चकित हो गये। लूसीने अञ्जलिबद्ध हो कहा—हे परमेश्वर! सभी उस समय—एक दूसरेका मुख देखने लगे। सभी सशंक हो, आसन्न-विपत्तिकी प्रतीक्षा करने लगे।

लेग्री कुछ समय तक हत-बुद्धि तथा निस्तब्ध रहा, किन्तु शीघ्र ही उठकर बोला—क्यों रे हरामजादा, मैं जो कुछ तुझे करनेको कहता हूँ, उसे तू अनुचित समझता है। तू साला, पशु है। क्या अनुचित है क्या उचित, इसका विचार करनेकी तुझे क्या आवश्यकता? तू अपनेको क्या समझता है? तू अपनेको भला आदमी समझता है, जो मालिकको यह समझाता है, कि यह उचित है यह अनुचित है? इस छोकड़ीको बेत लगाना तू अनुचित समझता है, कहकर बहाना करता है।

टाम—प्रभु! मैं इसे मारना अन्याय समझता हूँ। यह स्त्री अत्यन्त रुग्ण है, बहुत दुर्बल है, इसे मारना बड़ी ही निष्ठुरताका काम है। ऐसा कार्य मैं कदापि न करूँगा। प्रभु, यदि आप मुझे मार डालना चाहते हैं तो मार डालें, मैं मरते दम तक भी इन लोगोंको मारनेके लिए हाथ न उठाऊँगा।

टामने धीर शब्दोंमें ये बातें कहीं। पर उसके वाक्योंने उसके हृदयकी स्थिरता तथा दृढ़-प्रतिज्ञाको पूर्ण रूपसे प्रकट कर दिया। लेग्री क्रोधसे काँपने लगा। उसके शृगाल-नेत्रोंसे आगकी चिनगारियाँ निकलने लगीं। किसी-किसी जातिके हिंस्र जन्तु जिस प्रकार पराभूत जीवको लेकर कुछ देरतक उसके साथ क्रीड़ा करके उसे अपने उदरस्थ कर लेते हैं, ठीक उसी प्रकारसे लेग्री भी उस क्षण टामको कठोर शास्ति न देकर, अपने क्रोधावेगको किंचित् दमनकर उसके प्रति तीव्र विद्रूप बरसाते हुए कहने लगा—

जो हो, अन्तमें हमलोग सरीखे पापियोंमें एक धार्मिक

कुत्ता आया है। ये एक महर्षि हैं, एक सज्जन हैं। इस उपाधिसे किसी प्रकार भी कम नहीं हैं। हमलोग पाखण्डी हैं। ये महाशय हमको हमारा पाप बतला देते हैं। अहा! क्या ही महान् पुण्यात्मा जीव हैं! रे बज्जात्, तू जो धर्मका बड़ा पाखण्ड करता है, तो क्या तूने बाइबिलकी यह कथा नहीं सुनी—"दासों तुम लोग अपने मालिक की आज्ञाका पालन करो।" मैं क्या तेरा मालिक नहीं हूं? मैंने तेरे इस काले शरीरके लिए क्या बारह सौ रुपये नहीं दिये हैं? बतला, तू मेरा है या नहीं? तेरा शरीर और तेरी आत्मा मेरी है या नहीं? यह कह लेग्रीने बल-पूर्वक टामको एक लात मारी और फिर कहा—बोल!

इस गम्भीरतम शारीरिक यंत्रणामें, इस घोर पाशव-अत्याचारसे मृत-प्राय होनेपर भी लेग्रीके इस प्रश्नपर टामके हृदयमें आनन्द तथा जयोल्लास प्रवाहित होने लगा। टाम सहसा मस्तक उठाकर खड़ा हो गया। आहत मुखसे जो रक्तकी धारा बह रही थी, उसी शोणितके साथ अश्रु-धारा गिरने लगी, टाम विश्वास पूर्ण उर्द्ध-दृष्टि हो कहने लगा—

"नहीं, महाशय, नहीं! मेरी आत्मापर आपका कोई अधिकार नहीं! आपने यह आत्मा क्रय नहीं की। जो इस आत्माकी रक्षा करनेमें समर्थ है, उसने इस आत्माको क्रय किया है। इस शरीरका मूल्य दिया है, इसको आप यंत्रणा दे सकते हैं, किन्तु आत्माका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते।"

लेग्री—मैं कुछ नहीं कर सकता? तो अभी दिखाऊँ? अरे साम्बो, कुइम्बो, ले इस कुत्तेको अच्छी तरह ठीक कर। एक महीने तक उठनेकी शक्ति न रहे, इतना पीटो।

ये दो यमदूत सरीखे नर-पिशाच उसी क्षण टामको घसीट कर बाहर ले आये और मारने लगे। लूसी यह देखकर बार-बार चीत्कार करने लगी।

सैंतीसवाँ परिच्छेद

कासीका पूर्व वृत्तान्त

रात्रि प्रायः दो पहर बीत चुकी है। अन्धकारने चारो दिशाओंको घेर लिया है। कई एक टूटी चौकियों तथा सड़े-गले कपासके फलोंसे परिपूर्ण एक छोटी कोठरीमें टाम मार-के घावोंकी व्यथासे मूर्छित अवस्थामें पड़ा है। दिन भर वह कुछ भी भोजन नहीं कर सका। उसके कण्ठ-तालु सूख गये हैं। घर मच्छड़ोंसे भरा हुआ है। इसलिए कष्टपर और कष्ट मिल रहा है। एक झपकी लेनेका भी सुयोग नहीं।

इस यंत्रणाके समय टाम क्या करता है? वह भूमिपर पड़ा हुआ कह रहा है—हे परमेश्वर! हे दीनबन्धु, एक बार इस दीनकी ओर कृपा-दृष्टि करो। पाप और अत्याचारके ऊपर विजय प्राप्त करनेमें समर्थ बनाओ।

इसके उपरान्त घरमें किसीके पैरोंकी आहट सुनायी पड़ी। तत्क्षणात् एक लालटेनकी किरणें उसके मुखपर पड़ीं। टामने पूछा—यहाँ कौन है? मुझपर दयाकर एक घूँट पानी दे दो, मेरा गला सूख गया है।

तब कासीने, उसीकी पदध्वनि थी, हाथसे दीपक भूमिपर रख दिया और जल लेकर टामके पास गयी। टाम जल पीकर कुछ स्वस्थ हुआ एवं उसने एक गिलास पानी और चाहा। कासी क्रमशः दो-तीन गिलास जल टामको दिया और कहा—मेरे साथ पर्याप्त जल है, तुम्हारी जितनी इच्छा हो, पीओ। इस अवस्थामें तुम्हें जलकी आवश्यकता होगी, यह मैं भली-भाँति जानती

हूँ। कुलियोंमें से, जिस दिन जो, तुम्हारी भाँति पीटा गया है उसीको, रात्रिमें आकर मैंने जल दिया है। तुम्हारे ही पास पहिले-पहिल आयी होऊँ, ऐसी बात नहीं है।

टाम जल पीकर बोला—मेम साहब ! मेरा धन्यवाद ग्रहण करो।

कासी—मुझे मेम साहब कहकर क्यों बुलाते हो ? जैसे तुम हत-भाग्य, क्रीतदास हो, मैं भी उसी प्रकार हतभागिनी क्रीतदासी हूँ। वरन् तुम्हारी अपेक्षा सहस्रगुणी निकृष्ट हूँ।

यह कहकर कासी द्वारपर जाकर, जो शय्या और विछौना साथ ले आयी थी, वह टामके सामने ले आयी। विछौना बिछाकर उसने उसे एक जलसे भींगे हुए अस्तरसे आवृत कर दिया और टामसे कहा—देखो तो जरा, किसी प्रकार से खिसकते-खिसकते इस विछौनेपर आकर सो सकते हो कि नहीं ?

टामका सारा शरीर क्षत-विक्षत हो गया था। उसे हिलने तकका सामर्थ्य नहीं था। बड़े कष्टसे एवं बहुत देरके पश्चात् वह घसीटते-घसीटते उस जलसिक्त शय्याके पास आकर उस पर सोया। शय्यापर लेटते ही उसकी यंत्रणा कुछ शान्त हुई।

चिरकालसे पाशव-अत्याचार—पूर्ण स्थानमें रहते-रहते कासीने क्षतादिकी चिकित्साके सम्बन्धमें बहुत कुछ अभिज्ञता प्राप्त कर लिया है। वह टामके क्षत-पूर्ण देहमें औषध लगाने लगी। औषधके गुणसे टामकी यंत्रणा बहुत कम हो गयी। तब कासीने फिर टामका मस्तक अपने हाथोंसे उठा कर उसके नीचे रुईकी एक अव्यवहृत गाईट रख दिया और कहा—बाबा, जहाँतक मेरा साध्य था, मैंने कर दिया।

टामने उसके प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट की। रमणी पृथ्वीपर दोनों हाथोंसे अपने घुटनोंको लपेटकर बैठ गयी।

उसका मुख तीव्र यंत्रणा-व्यंजक था, वह स्थिर नेत्रोंसे सम्मुख देखने लगी। उसके मस्तकपर का वस्त्र उसके पीछेकी ओर गिर गया। अनावृत होनेसे उसकी सघन, कृष्ण केशराशि उसके विषादावृत मुखके चारो ओर छा गयी।

कुछ समयोपरान्त रमणी बोल उठी—इससे कुछ लाभ नहीं। हत भाग्य ! तुम्हारी सम्पूर्ण चेष्टायें व्यर्थ हैं। आज तुमने विलक्षण साहस दिखाया था। न्याय तुम्हारे ही पक्षमें था। पर यह संग्राम व्यर्थ है। इसमें तुम्हें जय प्राप्त न होगी। तुम स्वयं शैतानके हाथमें पड़े हो, इसकी क्षमता अपरिमित है। अन्तमें तुम्हें परास्त होना पड़ेगा, आत्म-समर्पण करना पड़ेगा। न्यायका पक्ष परित्याग करना पड़ेगा।

"न्यायका पक्ष परित्याग करोगे", मानव-हृदयकी दुर्बलताने, शरीरकी असहनीय यंत्रणाने, क्या इसके पूर्वही उसके कानोंमें यह बात नहीं कही थी ? टाम काँप उठा। जिस प्रलोभनके साथ टाम इतने दिनोंतक झगड़ रहा था, इस विषादमयी रमणीको वह उस प्रलोभनकी जीवित प्रतिमूर्त्ति ही समझने लगा। टामने आर्त स्वरसे कहा—हा परमेश्वर ! हा ईश्वर ! मैं कैसे न्यायका पक्ष परित्याग करूँगा ?

रमणीने स्थिर कंठसे कहा—परमेश्वरको पुकारनेसे कुछ लाभ नहीं। परमेश्वर कुछ नहीं सुनते। मुझे ऐसा विश्वास है कि परमेश्वर हैं ही नहीं, और यदि है भी, तो वे हमलोगोंके विपक्षमें हैं। स्वर्ग, मृत्यु सभी हमलोगोंके विपक्षमें हैं। सभी एकत्र होकर हमलोगोंको नरककी ओर ढकेल रहे हैं। तब फिर कैसे न नरकमें जायँगे ?

टामने आँखें बन्द कर लीं। रमणीके मुखसे ये नास्तिकता-पूर्ण बातें सुनकर उसका हृदय काँप उठा।

रमणी फिर कहने लगी—देखो, तम इस स्थानके विषयमें

रहो। अत्याचारसे सतायी हुई भ्राता-भगिनियोंके लिए प्राण देनेको सदा प्रस्तुत रहना उचित है। और अत्याचारको रोकनेके लिए भी अवस्था उपस्थित करना ठीक है, किन्तु हमारे सम्प्रदायके धर्म-शिक्षकोंने इस विषयमें इनकी अपेक्षा और भी अच्छा मार्ग ग्रहण किया है। उन्होंने कहा है कि किसी भी अवस्थामें मनुष्यको क्रोधान्ध होकर कार्य-क्षेत्रमें प्रवेश करना उचित नहीं है। ऐसी अवस्थामें मनुष्यको भले-बुरेका ज्ञान नहीं रहता। अत्याचारको रोकनेके लिए कभी शत्रुके वश होकर कार्य न करो! क्रोधके वशीभूत होकर मनुष्य अनेक स्थानोंपर हिताहितका ज्ञान भूल जाता है। इसलिए सब अवस्थामें ईश्वरपर भरोसा रखते हुए कार्य करना होगा। इस समय शान्त-चित्तसे यह विचार करो कि क्या उपाय ग्रहण करना चाहिए!

साइमन साहबका यह उपदेश सुनकर फिनियासका मन बहुत न बदला। किन्तु उससे वह अपनी प्रचण्ड-प्रकृतिको वशीभूत करनेकी चेष्टा करने लगा। पहले ही लिखा जा चुका है कि फिनियास एक भयंकर व्यक्ति है। वह बड़ा संग्राम-प्रिय है। युद्ध-क्षेत्रमें प्रवेश करनेपर वह कालान्तक यमकी भाँति लड़ा करता है। विपत्ति किसे कहते हैं, यह स्वप्नमें भी न जानता था। वास्तवमें वह केवल शरीरके बल वालोंकी भाँति लड़ता हो, ऐसी बात न थी। युद्ध-क्षेत्रमें मानसिक बलकी ही विशेष आवश्यकता है। जो मृत्युसे ड़रता है, वह कदापि युद्ध-क्षेत्रके योग्य नहीं! वह कभी देव-दुर्लभ वीर नामसे नहीं पुकारा जा सकता। फिनियास मृत्युसे जरा भी न डरता था। किन्तु वर्तमान समयमें उसकी पूर्वकी उस भीम-प्रकृतिने कुछ सौम्यरूप धारण किया है। प्रेमाग्निके संसर्गसे लौह-हृदय भी पिघल जाता है।

कोयेकार सम्प्रदायकी किसी एक सुशिक्षिता, सहृदया 'युवतीके प्रेम-पाशमें बँध जानेसे उसका हृदय और मन कुछ शान्त हुआ है। किन्तु इधर फिर उसकी पर-सेवा-वृत्ति विशेष प्रबल हो उठी है। अब भी वह परोपकारके लिए प्राण-देनेको प्रस्तुत है। किन्तु पहले जिस प्रकार वह हिताहित ज्ञान-शून्य होकर सब प्रकारके विवादोंमें भिड़ पड़ता था। अब इस समय उसका वैसा स्वभाव न था। अपनी प्रणयिनीका शान्त मुख-कमल स्मृति-पथपर सामने आते ही वह अपनीदुर्दम्य-प्रकृतिको वशीभूत करनेकी चेष्टा करता था। अब वह सदुपदेशके सामने अपना मस्तक झुकाता है। फिनियासको युद्धके लिए तैयार होते देख साइमन साहबकी स्त्रीने मुसकराकर कहा—फिनियासको क्या कोई उसके इच्छित कार्यसे रोक सकता है? किन्तु इस समय उसका हृदय अति पवित्र स्थानपर पहुँच चुका है। इसलिए उसका दुर्दम्यमन इस क्षण बन्दी हो रहा है।

जार्ज—पिता साइमन! यदि आप पकड़नेवालोंसे मिलनेसे रोकते हैं तो इसी समय यहाँसे भाग जानेके सिवा और कोई दूसरा उपाय नहीं है। शीघ्र ही यहाँसे न भागनेसे फिर रक्षा नहीं हो सकती।

फिनियास—जार्ज, तुमने अच्छा ही कहा है! इसी क्षण यह स्थान छोड़ देनेसे वे तुम लोगोंको नहीं पकड़ सकते। मैं दो घंटे रात रहते ही यहाँसे चल कर दौड़ा आ रहा हूँ। वे आज प्रात:काल तुमलोगोंकी खोजमें निकले हैं। इसलिए यहाँसे इसी समय चल देनेसे वे हम लोगोंसे चार कोस पीछे रह जायँगे। मैं शीघ्रही माइकेलक्रसको बुला लाता हूँ। उसको अपने लोगोंके पीछे-पीछे घोड़ेपर चलनेके लिए कहूँगा। वह पीछे रहकर उनलोगोंकी गति-विधि लक्ष्य

करता रहेगा। हमलोग आगे गाड़ीपर चढ़ चलेंगे। यह कहकर वह माइकेलक्रूसको बुलाने चला गया। तब साइमन साहबने कहा—जार्ज! फिनियास एक बड़ा विलक्षण चतुर एवं कार्य-दक्ष व्यक्ति है। तुम इसके परामर्शके अनुसार चलना। उसके शरीरमें प्राण रहते तुम लोगोंको किसी विपत्तिकी आशंका नहीं है!

जार्ज—पिता साइमन! मेरे मनमें बड़ी आशंका हो रही है कि हमारे लिए कहीं आपको विपत्तिमें ग्रस्त होना न पड़े!

साइमन—हमारी विपत्तिके लिए तुम पलभरके लिए भी चिन्ता न करना। हमने कर्त्तव्यके अनुरोधसे, धर्मकी आज्ञासे, विवेकके आदेशानुसार, ऐसा व्रत धारण किया है। हम लोगोंको, इस देश-प्रचलित घृणित आईनके अनुसार पशु-आचारी गोरे विचारक लोगोंके विचार-द्वारा दण्डित होनेपर भी किसी प्रकारकी, लज्जा नहीं लगती। इसके पश्चात् साइमन साहब अपनी स्त्री से कहने लगे—प्रिये! तुम शीघ्रही इनलोगोंके भोजनका प्रबंध कर दो। जिसमें हमारे घरसे इनलोगोंको भूखे ही न जाना पड़े। वृद्धा रावेल अपनी संतानको लेकर शीघ्रता-पूर्वक उनलोगोंके भोजनका प्रबन्ध करने लगीं। इधर गाड़ी तैयार होने लगी। कमरेसे सबके चले जानेपर जार्ज इलाइजाके गलेमें हाथ डालकर सजल नेत्र हो कहने लगा-इलाइजा! जिसके अनेक बन्धु-बान्धव हैं, बाग हैं, घर हैं, धन-सम्पत्ति है, वे लोग तो अपने स्त्री-पुत्रसे वियोग होनेपर, इतना कष्ट नहीं भोगते। क्योंकि उनलोगोंको प्रेम करनेकी अनेक सामग्रियाँ हैं। मन बहलावके अनेक साधन हैं, किन्तु तुम्हारे अथवा इस संतानके अतिरिक्त इस संसारमें क्या मेरे और कुछ है! तुमसे विवाह होनेके पूर्व मेरी उन चिरदुःखिनी माता और बहिनके सिवा

और कोई मुझे चाहने वाला इस संसारमें न था। किन्तु क्या उनलोगोंका अब फिर कभी इस जीवनमें देख पाऊंगा। जिस दिन मेरी बड़ी बहिन एमिलिको दक्षिण प्रदेशीय वणिक क्रय कर लेगया, उस दिनके कष्टका ध्यान आनेसे आज भी मन चञ्चल हो जाता है। मैं किसी प्रकार धीरज नहीं धर सकता। मैं उस दुरात्मा मालिकके खुले बरामदेमें भूमिपर पड़ा सोया करता था। दिनमें जो वस्त्रलज्जा निवारण करनेके लिए पहिनता था, रात्रिमें भी वे ही मेरे एक मात्र बिछौने थे। जानेके समय मेरी बड़ी बहिनने रोते-रोते आ, मेरा हाथ पकड़कर मुझे जगाया। मैं चौंककर उठ बैठा! तब वे अत्यन्त कातर-स्वरमें कहने लगीं—आर्ज! तुम्हीं मेरे सबसे छोटे भाई हो। इसी लड़कपनमें तुम्हें कुटुम्बियोंसे हीन होकर अकेले ही इस निर्दय-मालिकके घर रहना पड़ा। इस संसारमें तुम्हारा और कोई बन्धु-बान्धव न रहा। मैं जो इतने दिनों तक तुम्हारे पास रही, सो आज मुझे भी जन्मभरके लिए तुम्हें छोड़कर दूसरे स्थानमें जाना पड़ा! मुझे मालिकने दक्षिण-प्रदेशके एक बनियेके हाथ बेच दिया है। नहीं जानती कि इस जीवनमें हमलोगोंको कितने कष्ट सहने पड़ेंगे! इस जीवनमें फिर कभी तुम्हें देख पाऊंगी, इसकी कोई सम्भावना नहीं। यह कहकर एमिलि मेरा गला कसकर पकड़के मुझसे लिपट गयी। मैं भी उसके गले लगकर रोने लगा। इलाइजा, अठारह वर्ष हुए अब एमिलिके उन स्नेह-पूर्ण वाक्योंने मेरे कानमें प्रवेश किया था। उस समयसे मैंने फिर कभी वैसे स्नेह-पूर्ण वाक्य नहीं सुन पाये। इतने पर मालिकके निष्ठुर व्यवहारसे मेरा मन तथा हृदय सूखने लगा। मैं अधमरेके समान रहने लगा। किन्तु तुम्हारे मिलनेपर मैं पुनः जीवित हो गया!

तुम्हारे निष्कपट प्रेमने, तुम्हारे पवित्र सहवासने मेरे मृत शरीरमे पुनः जीवन डाल दिया है। पापी इस समय फिर तुमको मुझसे छुडाना चाहते हैं। तुम्हें बल-पूर्वक मेरे सामनेसे ले जाना चाहते हैं। किन्तु प्राण रहते क्या मैं तुम्हे ले जाने दूँगा! इन गोरोंके अत्याचारोंसे यदि स्त्री-को न बचा सका, संतानकी रक्षा न कर सका, तो जीवित रहना केवल विडम्बना है। तब इस जीनेसे लाभ क्या? किसलिए मैं यह जीवन धारण कर रहा हूं? ऐसे अत्याचार-पीड़ित जीवनमें क्या सुख है? अथवा कोई शान्ति है? प्राण-प्रिय इलाइज़ा! जन्मभरके लिए विदा दो। मैं इन दुराचारी गोरोंके मस्तक चूर-चूर करके, इनके सिरोंको छेदकर हृदयसे मातृ-विच्छेद तथा भ्राता-भगिनी-विच्छेदका दुःख दूर करूं। अब नहीं सहा जाता। दुःख पर दुःख, यन्त्रणा पर यन्त्रणा! यह जीवन अत्यन्त कष्टकर हो गया है।

इलाइजाने, जार्जकी बातें सुनकर उसे कोई उत्तर न दे, जैसे कोई स्वप्नमें बातें करता है; अपने आप कह उठीं—कहाँ हो अनाथ-शरण, दीनबन्धु! इस गरीबिनी पर दया करो। जगदीश! इस चिरदुखी संतानका दुःख दूर करो! पिता आशीर्वाद दो, जिसमें हम सब निर्विघ्न यह देश छोड़कर जासकें!

जार्ज—परमेश्वर क्या अत्याचारका पक्ष समर्थन करते हैं? वे एक बार भी नहीं देखते कि कैसे घोर अत्याचारसे मैं पीड़ित हो रहा हूँ। ये अत्याचारी गोरे अँगरेज सदैव कहते हैं कि उनका यह निष्ठुराचरण बाइबिलके द्वारा अनुमोदित तथा न्याय-सङ्गत है। ईश्वरने उन लोगोंकी दासता करनेके लिए हम लोगोंकी सृष्टि की है। सचमुच ही क्या, ईश्वरने उनकी दासता करनेके लिए हमारी सृष्टि की है? ये स्वार्थी धर्माधर्म-ज्ञान-शून्य गोरे गिर्जाघरमें जाकर धर्मोपासना

करते हैं। अपनेको खीष्ट धर्मावलम्बी बतलाते हैं। किन्तु जो सब निरीह-प्रकृति दास-दासियां सत्य-सत्य ईसाके उत्तम दृष्टान्तका अनुसरण करते हैं, काले होनेपर भी अपने हृद-यमें धर्मका भाव रखते हैं, सदा पवित्र भावोंका पोषण करते हैं, उनको वे गोरे बेतोंसे पीटते हैं। उन लोगोंको ये स्त्री-पुत्रसे अलग करके भिन्न-भिन्न स्थानोंमें बेचते हैं। उनके करुण-क्रन्दनसे आकाश गूँज रहा है। उनकी अविरल अश्रु-धाराओंसे देश आप्लावित हो रहा है, तो भी ईश्वर इसका कुछ भी विचार नहीं करते। इन निराश्रय दास-दा-सियोंको सन्ध्यासमय भी एक मुट्ठी अन्न नहीं मिलता। किन्तु अत्याचारी नाना प्रकारकी धन-सम्पत्ति और ऐश्वर्यका भोग करते हैं: इन्द्र-भवनकीसी अट्टालिकाओंमें निवास करते हैं, यह क्या ईश्वर देखकर भी नहीं देखते। हा! परमेश्वर, हा विधाता! क्या तुम इस संसारसे भागकर चले गये हो? तुम हो, यह निश्चय-पूर्वक जान लेनेपर एक बार तुम्हें देख लेनेपर, तुम्हारे ही द्वारपर आकर यह दुखी प्राण त्याग देता। तुम्हारे द्वारपर इन स्त्री-पुत्रको मारकर अत्याचारके कठोर आक्रमण से इनकी रक्षा करता। रन्धन-शालामें बैठे हुए साइमन साहबने जब जार्जका ऐसा आर्तनाद सुना तो वे उसके पास चले आये। कहने लगे-बेटा जार्ज! धैर्य धारण करो! मेरी बात सुनो। ईश्वर परम न्यायवान है। संसारके मोहान्धकारमें पड़ जानेसे हम यह नहीं समझ पाते कि क्या भला है और क्या बुरा। संसारमें जो ऐश्वर्यशाली लोग धनके गर्वसे गर्वित होकर, मदान्ध होकर, दूसरोंपर अन्याय करते हैं, तथा अपना प्रभुत्व स्थापित करनेके लिए अनेक प्रकारके अवैध उपायोंका उपयोग करते हैं, वे निरे मूर्ख हैं। वे इस संसारमें रत्तीभर भी सत्य-सुखका अनुभव नहीं कर

पाते। उनकी अन्तरात्मा जिस प्रकार अशान्तिमें मग्न रहती है, उनके हृदयकी प्रकृत अवस्था जैसी शोचनीय होती है, उसे तुम यदि एक बार भी देख पाते तो फिर इस प्रकारकी धन-सम्पत्तिके लिए कभी लालायित न होते। बेटा! हृदयका मोहान्धकार दूर हो जानेपर अनायास ही समझ लोगे कि विपत्ति, दुःख और दरिद्रता समय-समयपर मनुष्यको पवित्र सुख और शान्तिका भोग करनेके योग्य बनाती है। ऐश्वर्यके मदमें गर्वित होकर मनुष्य सदा परमेश्वरको भूल जाता है। वह परम दुर्लभ मानव-जीवनका महत्व नष्टकर डालता है। किन्तु विपत्ति अनेक स्थानोंपर मनुष्यके नेत्र, ईश्वरकी ओर फेर देती है। वत्स, जिसके हृदयमें ईश्वर सदैव निवास करते हैं, वे वृक्षोंके नीचे रहनेमें भी अपार सुख और शान्ति पाते हैं। जो ऐश्वर्य और प्रभुत्व ईश्वरकी ओरसे मनुष्यको हटाता है, वही ऐश्वर्य, वही प्रभुत्व, विषके समान मनुष्यकी जीवन-ग्रन्थिको छिन्न-भिन्न करके, अन्तमें उसको निःसीम दुःख-सागरमें डुबा देता है।

भक्ति और विश्वासकी कैसी चमत्कारिणी शक्ति है! साइमन हेलिड साहबने निज हृदयके प्रगाढ़ विश्वासके साथ जार्जको जो ऐसा उपदेश दिया, उससे उसका हृदय धीरे-धीरे शान्त होने लगा। ऐसा उपदेश जार्ज अन्य खीष्ट पादरियोंके मुखसे अनेक बार सुन चुका है। परन्तु उससे उसका मन रत्तीभर भी नहीं बदला। वह उपदेश उसके हृदयको कभी स्पर्श तक न करसका। वास्तवमें यदि उपदेशकके चित्तमें भक्ति, विश्वास अथवा आकुलता न रहे, उपदेशकके प्रत्येक शब्दोंके साथ-साथ हृदयमें रहने वाला दृढ़ विश्वास, यदि प्रकट न हो तो वह उपदेश कभी कार्यकारी नहीं होता! साइमन हेलिड साहब इन असहाय दास दासियोंके उपकारके लिए

सदा जेल जानेको तैयार रहते हैं, अपना जीवन देकर इन लोगोंका उद्धार करनेमें वे एक पल भरके लिए भी कुण्ठित नहीं होते। इसलिए ऐसा त्याग, ऐसा निःस्वार्थ प्रेम, जिसके जीवनका एक मात्र व्रत है उसका उपदेश अवश्य हृदय-ग्राही होगा। इसमें कोई सन्देह नहीं। ऐसे लोगोंके उपदेशसे तो पाषाण-हृदय भी पिघल जाता है।

इसके पश्चात् राचेल इलाइजाका हाथ पकड़कर, उसे भोजनालयमें ले गयीं। सब लोग खाने बैठे। इसी समय रूथने आकर इलाइजाके हाथमें कई जोड़े मोजे और कुछ खाद्य-पदार्थ दिये। इस सहृदया रमणीके साथ जो यहां आकर इलाइजासे परिचय हुआ, यह बात इससे पहले लिखी जा चुकी है। रूथ ये सब वस्तुएँ इलाइजाके हाथमें देकर कहने लगी-बहिन! तुम्हारे बच्चेके पैरमें मोजा न देखकर जब यह सुना कि आज ही तुम यहांसे चली जाओगी तो झटपट मैंने हेरीके लिए कई एक मालपूए तैयार कर लायी हूं। कई दिन हुए मैंने वे मोजे तैयार कर रखे थे। रास्तेमें समय-समयपर कुछ खानेको न देनेसे इसे बड़ा कष्ट होगा! यह कहकर रूथने हेरीको अपनी गोदमें लेकर उसका मुख चुम्बन किया। उसके जेबमें कई एक मालपूए रख दिये। इलाइजा सजल नेत्रोंसे रूथको धन्यवाद देकर कहने लगी-बहिन! तुम्हारी दया और तुम्हारे स्नेहके लिए मैं तुम्हारी चिरऋणी रहूँगी। इससे अधिक इलाइजा और कुछ न कह सकी। कृतज्ञताके उमड़े हुए वेगने उसका गला रुँध दिया। राचेलने रूथको वहीं एकत्र बैठकर भोजन करनेको कहा। पर रूथने बड़ी व्यस्तताके साथ कहा—नहीं मा! मैं इस समय अधिक देरतक नहीं ठहर सकती, क्योंकि अपने बच्चेको जानकी गोदमें दे आयी हूं और चूल्हेपर भात चढ़ा

आयी हूँ। मेरे विलम्ब करनेपर, ज्ञानकी असावधानीसे भात नष्ट हो जायगा। और लड़केके रोनेपर जान उसे चीनी खिला-खिलाकर चुप कराते-कराते, घरकी सारी चीनी नष्ट कर डालेगा! रूथ यह कहकर उसी क्षण इलाइजा तथा उसके स्वामीसे विदाई लेकर चली गयी।

भोजन कर लेनेपर सब लोग गाड़ीपर बैठे। इलाइजा एवं जिमकी वृद्धा माता गाड़ीके बीचमें बैठीं। और जिम तथा जार्ज सामने बैठे। फिनियास गाड़ीके पीछे खड़ा रहा। जार्जने गाड़ीपर चढ़ते ही धीरे-धीरे जिमसे पूछा—भाई! तुमने बन्दूक तो ठीक करली है न? पकड़ने वालोंसे सामना हो जानेपर, बन्दूककी आवश्यकता होगी। जिमने कहा—सब ठीक है। प्राण रहते क्या अपनी वृद्धा माताको लेजाने दूँगा?

गाड़ी चलानेकी तैयारी करनेपर साइमन हेलिडने कहा-इस समय विदा हुआ। दयामय परमेश्वरके आशीर्वादसे तुम लोगोंके निर्विघ्न पहुँच जानेपर ही मैं परम सुखी हूँगा। ईश्वर तुम लोगोंको निरापद रखें। तब गाड़ीमेंसे इलाइजा, जिमकी माता, जिम तथा जार्ज एक साथ ही बोल उठे-पिता साइमन! परमेश्वर आपको सुखी रखें! आपका मङ्गल हो!

घड़-घड करती हुई गाड़ी चली। गाड़ीपर बैठ जानेपर किसीके साथ किसीको बात-चीत करनेकी कोई सुविधा न थी। गाड़ी शब्दके कारण कोई किसीकी बात न सुन पाता था। विशेषतः वे लोग शान्तिके साथ भागे जा रहे थे। हेरी, इलाइजाकी गोदमें बडे शीघ्र ही सो गया। इलाइजा और जिमकी माताकी आँखोंमें निद्रा न थी। भय और त्राससे वे दोनों उत्कण्ठित चित्तसे समय विताने लगीं। थोडी रात रहते उन लोगोंने देखा कि वे लोग पाँच-सातकोस चले आये हैं। अब चिन्ता कुछ कम हुई! इलाइजाका

अब कुछ नींद मालूम होने लगी। फिनियास सारी रात खड़ा रहा। रास्तेकी थकावट दूर करनेके लिए वह रात भर लड़ाईके गाने गाता रहा।

अन्तमें रात्रिके समाप्त होनेके तीन घन्टे पूर्व, पीछेसे आते हुए घोड़ेके टापोंके शब्द जार्जको सुन पड़े। उसने उसी समय फिनियासको उससे सचेत किया। उसने कहा—जान पड़ता है, माइकलक्रूस घोड़ेपर बड़े वेगसे आ रहा है। फिर कुछ देर रुककर कहा—ठीक है, ठीक है! वही है! मैंने शब्द-से ही समझ लिया कि ये उसीके घोड़ेके पैरोंके ही शब्द हैं। गाड़ी रोकनी होगी। देखें क्या समाचार ले आ रहा है! रात उँजेली थी। गाड़ी रुकी। चन्द्रमाके प्रकाशमें दिखायी पड़ा कि एक आदमी घोड़ेपर चढ़कर पहाड़ीके ऊपरसे दौड़ा चला आ रहा है। एक पहाड़ीसे दूसरी पहाड़ीपर चढ़नेके समय, वह बीच-बीचमें अदृश्य हो जाता है, फिर पहाड़ीके ऊँचे स्थानपर चढ़नेपर ही वह दिखायी पड़ता था। उस अश्वारोहीके पासकी पहाड़ीपर चढ़ते ही फिनियासने कहा-कुछ दूर नहीं, वही आ रहा है! दस-बारह मिनटमें उत्कंठा-के साथ उससे पूछा—कहो, क्या समाचार है? क्रूसने कहा भाई, बड़ी विपत्ति है। प्रायः दस-बारह आदमी पक्के शराबी-की भाँति घोड़ोंपर चढे चले आ रहे हैं। बाघकी भाँति दाँत पीसकर कह रहे हैं कि आज अवश्य ही उनको पकड़ेंगे। क्रूस-की बातसमाप्त भी न हो पायी थी कि फिर घोड़ोंकी टापोंके शब्द सुनायी पड़ने लगे। तब फिनियास उछलकर गाड़ीसे कूद पड़ा और घोड़ोंके मुँहकी रास पकड़कर बल पूर्वक गाड़ी खींचते-खींचते रास्ता छुड़ाकर एक पहाड़ीकी जड़के पास ले गया। पकड़ने वाले स्पष्ट रूपसे आगे बढ़ते हुए दिखायी पड़ने लगे। इलाइजाने चिल्लाकर अपने पुत्रको खूब कस-

कर अपने हृदयसे लिपटा लिया। जिमकी वृद्धा माता "परमेश्वर रक्षा करो! ईश्वर बचाओ' यह कहकर बड़े जोरसे चीत्कार करने लगी। जार्ज एवं जिम रिवाल्वर और पिस्तौल हाथमें लेकर नीचे खड़े हुए। फिनियास इलाइजाके पुत्रको कंधे पर चढ़ाकर, इलाइजा और जिमकी माताका हाथ पकड़कर पहाड़ीपर चढ़ने लगा। इस पहाड़ीके सम्पूर्ण स्थानोंसे फिनियास भली-भाँति परिचित था। इसके शिखरपर चढ़ना बड़ा कठिन है। उसपर एक साथ ही कई आदमी नहीं चढ़ सकते। एक-एक करके चढ़ना पड़ता है। इसीलिए उसने चतुराई करके पहिले ही इस पहाड़ीके निकट आकर पहाडपर चढ़ा देनेके पश्चात् फिनियासने जार्ज और जिमको उनके पास आनेके लिए कहा, एवं स्वयं फिर नीचे जाकर क्रूससे कहा-भाई क्रूस! तुम शीघ्रतासे गाड़ी लेकर जाओ और पासकी कायेकार-बस्तीसे आमारिया और उसके पुत्रोंको साथ लेते आओ! यह कह और उसे भेजकर वह फिर पहाड़ीपर चढ़ा। वहाँ पहुँचकर वह जार्ज तथा जिमसे बोला-किसलिए इस पहाड़ीपर ले आया, यह तो तुम समझ गये न? यहाँपर एक रिवाल्वर हाथमें लेकर खड़ा होकर केवल एक आदमी अपने सैकड़ों शत्रुओंपर विजय प्राप्तकर सकता है। इस पहाड़ीपर कई आदमी एक साथ नहीं चढ़सकते। जो कोई इसपर चढ़नेकी चेष्टा करेगा, तुरंत उसपर गोली छोड़दूँगा।

जार्ज—आपकी चतुराई मैं अच्छी तरह समझता हूँ! किन्तु अब आप बैठें। आपको अब इस झगड़ेमें पड़नेकी कोई आवश्यकता नहीं है। क्या जानें, कदाचित् आपको भी न इसके कारण देश-प्रचलित अनर्थक कानूनके अनुसार कहीं दण्ड भोगना पड़े! इस समय जो कोई विपत्ति आवेगी,

उसका सामना मैं अकेले ही कर लूँगा। फिनियासने हँसते-हँसते कहा—अच्छा, तुम अकेले ही युद्ध करो! यहाँ खड़े होकर गोली चलानेके लिए अधिक आदमियोंकी आवश्यकता नहीं। इधर देखो, पकड़नेवाले आपसमें क्या परामर्श कर रहे हैं। मैं पहले इनसे पूछूँगा कि ये यहाँ किस-लिए आये हैं, और क्या चाहते हैं! यदि ये कहेंगे कि तुम लोगोंको पकड़ने आये हैं तो केवल इतना कहूँगा कि जो कोई हमलोगोंको पकड़नेकी चेष्टा करेगा, वही मारा जायगा! इस-पर यदि वे लौट जायँगे तो झगड़ेकी कोई आवश्यकता नहीं!

पकड़नेवालोंमें पाठकोंके पूर्व परिचित टमलकार और मार्क ये दोनों सबसे आगे खड़े थे। उनके पीछे दो पुलिसके सिपाही! इनके अतिरिक्त और कई एक शराबी थे। उनमेंसे एक शराबीने कहा—साले, अच्छी जगह पहुँच गये हैं!

टमलकार—इसी रास्तेसे चढ़े हैं। हम लोग भी इधर सेही चढ़ेंगे। आज, अब साले नहीं भाग सकते! कूदकर भागनेमें तो उनकी हड्डी-पसलीका पता न लगेगा। और दूसरा कोई मार्ग है ही नहीं!

मार्क-लकार बड़ी सावधानीसे आगे बढ़ो! पहाड़ीके ऊपरसे बन्दूक चलानेपर ये एक बार ही हमलोगोंके प्राण ले सकते हैं!

लकार—बचा, केवल अपने प्राणोंका ही सोच करते हो! तुम्हारे प्राण क्या बड़े मूल्यवान् हैं? तुम मेरे पीछे-पीछे आओ न। डर क्या है? काले निग्रो लोग—ये गुलाम लोग और गोली! काले गुलाम क्या कभी गोली चला सकते हैं, या युद्ध कर सकते हैं? एक घुड़कीमें तो ये रोते-रोते नीचे आवेंगे!

मार्क—नहीं, मैं अपने प्राणोंकी चिन्ता न करूँगा! दो-चार रुपयोंके लिए अपने प्राण गँवाऊँगा! प्राण रहनेपर ही सब है। तुम काले निग्रो समझकर इतना साहस मत करना! यह गुलामोंकी जाति बन्दूक पा जानेपर यमकी भाँति युद्ध करती है। एक काला गुलाम तीन गोरोंके सिर फोड़ दे सकता है!

इसी समय जार्जने पीछेसे सामने आकर पकड़नेवालोंको पुकारकर अत्यन्त धीरे और गम्भीर स्वरसे पूछा—महाशय! आप लोग कौन हैं? किस लिए यहाँ आये हैं? हम लोगोंसे आपका क्या प्रयोजन है?

लकार—हम लोग कई भग्गू दास-दासियोंको पकड़नेके लिए आये हैं। जार्ज हेरिस, इलाइजा हेरिस तथा उसका पुत्र और जिम सेल्डन तथा,उसकी माता। इन्हीं लोगोंको हम लोग पकड़ेंगे। हमारे साथ गिरफ्तारीके परवानेको लिये हुए पुलिस भी आयी है। अब समझ न गये कि हमलोग किस लिए आये हैं? तुम्हीं न जार्ज हेरिस हो, केन्टाकी प्रदेशके हेरिससाहबके खरीदे हुए गुलाम हो।

जार्ज—हाँ, मेरा ही नाम जार्ज हेरिस है! केन्टाकी प्रदेशका एक हेरिस नामका व्यक्ति मुझे अपना क्रीतदास कह कर, अपनी सम्पत्ति समझकर, दावा करता है। किन्तु मैं किसीकी सम्पत्ति नहीं हूँ! मैं स्वाधीन हूँ! परमेश्वरके राज्यमें स्वाधीनताके साथ विचरण करता हूँ। मेरे स्त्री-पुत्रपर किसीका कुछ अधिकार नहीं। जिम सेल्डन तथा उसकी माता यहीं हैं। उनके ऊपर भी किसीका कोई अधिकार नहीं। हमलोगोंको अपनी रक्षाके लिए ईश्वरने ये बलिष्ठ भुजाएँ दी हैं! तुम लोग यदि अपनी मृत्युको चाहते हो तो हमलोगोंके पास आ सकते हो। हमलोगोंको पकड़-

नेके लिए इस पहाड़ीपर चढ़नेका उद्योग करनेसे, निश्चय ही मैं प्राण ले लूँगा!

जार्जकी ऐसी बातें सुनकर पकड़नेवालोंमेंसे मार्क बोला—तुम लोग शीघ्र ही नीचे उतर आओ। इधर देखो, ये पुलिसके सिपाही है। हमलोगोंने कानूनका आश्रय लिया है। कानूनके अनुसार हमलोगोंको तुमलोगोंके पकड़नेका अधिकार है। कानूनके सामने ऐसी बातें नहीं ठहरतीं। अतएव, कुछ चाँचपड़ न कर धीरेसे शीघ्र हमलोगोंके पास चले आओ!

जार्ज—तुमलोगोंने जिस कानूनका आश्रय लिया है, उसे मैं भली-भाँति जानता हूँ। आईन केवल तुम्हीं लोगोंका पक्ष समर्थन करता है, यह भी मैं बहुत दिनोंसे जानता हूँ। तुम्हारी यह इच्छा है कि मेरी स्त्रीको बल-पूर्वक लेजाकर नव अर्लिन्समें बेचोगे। मेरे पुत्रको लेजाकर भेड़के बच्चेके समान बाड़ेमें रखोगे। जिम तथा उसकी माताको उनके उस निष्ठुर मालिकके हाथ सौंपोगे और वह निष्ठुर मालिक पैरकी ठोकरोंसे इस वृद्धाका मस्तक चूर-चूर कर देगा तथा उसके सामने उसके पुत्र जिमको मार डालेगा। यही तो तुमलोगोंका मतलब है! अच्छा, तो मेरी बात सुनो—तुम लोग अपनेको खीष्टान कहते हो इसलिए तुमलोगोंका व्यवहार पिशाचके समान है। धिक्कार है, तुम्हारे देश-प्रचलित आईनको। ऐसे जघन्य और पक्षपात-पूर्ण कानूनको मैं सहस्र बार पैरों तले कुचलता हूँ! तुम्हारे देशके कानूनको मैं नहीं मानता। तुम्हारे इस देशको मैं नरक समझता हूँ। इसीसे तुम्हारा देश छोड़कर जा रहा हूँ। तुम्हारे देशमें जो कानून बनाते हैं, उन्हें धिक्कार है! तुम्हारे देशके जो विचारक उस जघन्य आईनके अनुसार विचार करते हैं, उन्हें सहस्र बार धिक्कार है। धनके लोभसे तुमलोग सब प्रकारकी

धोखेबाजी और शठताके कार्य और निष्ठुर व्यवहारोंसे अपने हाथ कलङ्कित करते हो। तुमलोग निराधार, दीन, गरीबोंका रक्त चूसनेके लिए नानाप्रकारकी चतुराइयाँ करके नित्य-प्रति नये-नये कानून प्रचलित करते हो! तुमलोगोंके इन क़ानूनोंका उद्देश्य न्याय-संगत विचार है, अथवा दुर्बल और असहायोंकी सम्पत्तिका अपहरण? तुम समझते हो कि मैं ऐसे कानूनोंको मानूंगा? कदापि नहीं! मैं पूर्ण स्वाधीनताके साथ इस स्थानपर खड़ा हूँ। जिस परमेश्वरने मुझे उत्पन्न किया है, जिसने मेरी भुजाओंमें बल दिया है, जो सदा मेरा सहायक है, उसीका पवित्र नाम स्मरण करता हुआ, अपनी स्वतंत्रताकी रक्षाके लिए प्राण-पणसे चेष्टाकरूँगा। 'जीऊँगा तो स्वाधीन, नहीं तो मृत्यु' यही मेरा जप-मन्त्र है। मनुष्य शरीर पाकर जो अपनी स्वतंत्रताके लिए मर नहीं मिटता, उसके जीनेको धिक्कार है! तुमलोग आजीवन हमलोगोंको काले कहकर घृणा करते रहे हो, हमलोगोंके प्रतिघोर निष्ठुराचरण करते रहे हो, आज देखूँगा कि तुम गोरोंमें कितना बल, कितनी शक्ति है!

जिस समय ये बातें जार्जके मुखसे निकलने लगीं, उस समय उसका मुख बड़ा भयङ्कर हो गया। उसके दोनों नेत्र, अग्निके समान लाल लाल हो गये, मानो उसके नेत्रोंसे अग्नि-वर्षा हो रही थी, ओंठ फड़क रहे थे। जिस समय वह दाहिना हाथ उठाकर बातें करता था, उस समय जान पड़ता था कि वह इस देश-प्रचलित अत्याचार और अन्यायपूर्ण व्यवहारके सम्बन्धमें परमेश्वरसे निवेदन कर रहा है—न्याय का पक्ष समर्थन कर रहा है!

यदि कोई अंगरेज युवक इँग्लैंडसे अमेरिका भागते समय ऐसा वीरत्व दिखलाता तो इतिहासके सुन्दर पन्नोंमें स्वर्णा-

क्षरोंसे उसका नाम लिखा जाता। किन्तु जार्ज अफ्रिका-वासिनी क्रीता-दासीके गर्भसे उत्पन्न-संतान है, उसकी वीरता गोरे इतिहास-लेखक, लौह-लेखनीसे कज्जलाक्षरोंमें भी लिखना स्वीकार नहीं करेंगे !

जार्जकी ऐसी बातें सुन तथा उसके मुखकी भाव-भङ्गी देखकर पकड़ने वाले डर गये। वस्तुतः सत्साहस और दृढ़ प्रतिज्ञता कभी-कभी बड़े-बड़े बलवानोंको भी भयभीत कर दे सकती है। वे सभी हत-बुद्धि हो गये! तब मार्क निर्भीकताके साथ आगे बढ़ा। उसने जार्जको लक्ष्यकर गोली चलायी एवं मन ही मन सोचने लगा कि इसको मार डालनेपर भी नियमित पुरस्कार पाऊँगा। इसका मृत-शरीर इसके मालिकको देनेपर, वह विज्ञापनमें लिखा हुआ पुरस्कार देगा। किन्तु बन्दूककी गोली जार्जके शरीरमें लगी नहीं। वह केवल उसके बायें कानके ऊपरी भागको छेदती हुई चली गयी। यह देखकर इलाइजा बड़े जोरसे चिल्ला उठी ! जार्जने उससे कहा-इलाइजा कुछ डर नहीं कुछ भय नहीं फिनियासने आगे बढ़कर जार्जसे कहा-इस समय 'इलाइजा को सान्त्वना देनेका अवसर नही है। देखते नहीं हो कि ये सब बड़े कठोर प्रकृतिके मनुष्य हैं। शीघ्र ही मार्ग बन्द करो !

जार्ज—जिम, तुम्हारी बन्दूक तो भरी है न? पहिले जो व्यक्ति चढ़नेकी चेष्टा करेगा, उसपर मैं गोली चलाऊँगा और दूसरे व्यक्तिपर तुम। एक आदमीपर दो बार गोली न चलायेंगे !

जिम—तुम्हारी गोली यदि पहिले व्यक्तिको न लगी, तो ?

जार्ज—उसके लिए तुम चिन्ता मत करो! मैं जिसे लक्ष्य बनाऊँगा, उसका फिर निस्तार नहीं है। किन्तु जिसमें इनका प्राण न निकल जाय, उस बातका ध्यान रखना होगा !

कुछ दिनोंके पश्चात् कप्तान स्टूअर्टकी, अतिसार रोगसे, मृत्यु हो गयी। किन्तु मुझे मृत्युने न पूछा! उनके उत्तराधिकारियोंने मुझे बेच दिया। इस प्रकार क्रमसे मैं चार-पांच आदमियोंके हाथों बिकी। अन्तमें इस वर्तमान नर-पिशाचके हाथ पड़ी। पांच वर्ष हुए इसने मुझे खरीदा था। तबसे मैं अबतक इसीके साथ रहती हूँ। इतना कहते ही कासीका गला रुँध गया, वह और आगे कुछ न कह सकी। ज्ञात होता था कि लेग्रीका नाम स्मरण आते ही उसके हृदयमें किसी विशेष प्रकारका नवीन शोक-दुःख किम्वा विद्वेष भाव उद्दीप्त हुआ।

पूर्वोक्त सकल आत्म-विवरण कहनेके समय वह कभी तो टामको सम्बोधनकर कहती और कभी ठीक पागलकी भांति अपने आप ही बकने लगती थी।

टाम कासीका पूर्व वृत्तान्त सुनते-सुनते अपनी सारी शारीरिक यन्त्रणा एकदम भूल गया था एवं अपने दोनों हाथोंपर सारे शरीरका बोझा देकर एकाग्र चित्तसे कासीके मुखकी ओर अनिमेष दृष्टिसे देख रहा था।

कुछ कालके उपरांत कासीने फिर कहा—"तुम कहते हो कि पृथ्वीपर परमेश्वर हैं, वे यह सब देखते हैं। हो सकता है, परमेश्वर हों! मैं जब धर्माश्रममें थी, तब वहांकी बहिनें कहती थीं कि एक दिन सब मनुष्योंके पाप-पुण्यका विचार होगा। क्या उस दिन इन गोरोंको इन अत्याचारोंका फल न भोगना पड़ेगा? इन पापोंके लिए क्या ये दण्डित न होंगे? ये सोचते हैं कि हमलोगोंको कष्ट कुछ भी नहीं है। हमारे मनमें सन्तान-सन्ततिके लिए कुछ शोक नहीं होता। हमारी सन्तानोंको कोई कष्ट नहीं होता। किन्तु मैं समझती हूँ कि मेरे हृदयमें इतनी भारी शोक-राशि है कि

उसके भारसे देश रसातलको चला जा सकता है। केवल मेरे हृदयकी शोकाग्नि ही सम्पूर्ण श्वेताङ्ग-समूहको भस्मीभूत कर सकती है। मैं ईश्वरसे यही प्रार्थना करती हूँ कि मेरे सहित यह सारा देश भूगर्भमें प्रवेश करे, और भूगर्भसे अग्नि उत्पन्न होकर इस संपूर्ण देशको भस्म करदे, वह विचारका दिन आजाय। जिन अत्याचारी अँग्रेजोंने मेरा तथा मेरी सन्तानका सर्वनाश किया है, जिन्होंने मेरे शरीर तथा मेरी आत्माको एकदम नष्ट कर डाला है, उनके विरुद्ध, उस राजाधिराज परमेश्वरके सम्मुख खड़ी होकर साक्षी दूँगी। कातरस्वरसे उसीसे न्यायकी प्रार्थना करूँगी।

बाल्यावस्थामें धर्मके प्रति मेरी विशेष भक्ति थी। मैं ईश्वरको प्यार करती थी, प्रार्थनामें मेरी पूर्ण रुचि थी। किन्तु इस समय मेरी देह तथा आत्माकी पूर्णतया अधोगति हो गयी है, शैतान सदैव मेरे सिरपर सवार रहता है। वही शैतान मुझे सदा अपने हाथसे अत्याचार तथा निष्ठुरताका प्रतिफल देनेको उत्तेजित करता रहता है। इसी बीचमें एक दिन इस अत्याचारका प्रतिफल प्रदान करूँगी। इस वर्तमान नर-पिशाचको उसके निजके स्थानमें भेज दूँगी। किसी भी रात्रिमें सुयोग पाते ही अपना निश्चय कार्यरूपमें परिणत करूँगी यह कहकर कासी ही-ही शब्द करती विकट हँसी हँस उठी। किन्तु फिर सहसा मूर्च्छित हो गयी। कुछ समयोपरान्त चैतन्य लाभकर, आत्मसंयम पूर्वक उठकर बैठ गयी एवं टामसे बोली–तुम्हारे लिए और कुछ करना होगा, और जल दूँ?

जब कासीके मुखसे दयाकी बातें निकलती थीं तब वह दयाकी मूर्ति जान पड़ती थी, किन्तु जब वह प्रतिहिंसाके भावसे उत्तेजित हो जाती थी तब वह ठीक राक्षसी ज्ञात होने

लगती थी। इस संसारमें मनुष्य कभी देवता तथा कभी राक्षस हो जाता है। जब दया, स्नेह, प्रेम तथा भक्तिके द्वारा वह परिचालित होता है तब वह देवता जान पड़ता है और जब प्रतिहिंसाके भावसे उत्तेजित हो जाता है तभी राक्षस जान पड़ने लगता है।

टाम पानी पीकर दयार्द्रचित्त तथा आकुलित नेत्रोंसे कासीके मुखकी ओर देखकर कहनेलगा—मेम साहब, मेरी यह इच्छा है कि आप उस प्रभुके निकट गमन करें—जो दुखी, पापी, मूर्ख, ज्ञानी सभीको समान रूपसे शान्ति-वारि प्रदान करते हैं। जिसकी अमृतमयी गोद सबके लिए फैली रहती है।

कासी—उसके पास जाऊँगी। वह कौन है? कहां रहता है?

टाम—जिसके विषयमें अभी धर्मपुस्तकमें पढ़ा है।

कासी—वे यहां नहीं हैं। यहां पाप और अत्याचारके अतिरिक्त और कुछ नहीं देखती।

यह कहकर कासी बार-बार छाती पीटने लगी। टामने उससे फिर कुछ कहना चाहा, किन्तु कासीने उसे बोलनेका सुअवसर न दिया। "अब तुम सोओ। अब बात-चीत मत करो" यह कहकर उसने टामको रोक दिया और उसके पास जल-पात्र रखकर तथा उसको स्वस्थ रखनेके लिए अन्यान्य प्रबन्ध कर वह वहांसे चली गयी।

—:※:—

अड़तीसवाँ परिच्छेद

कुलक्षण

लेग्री घरमें बैठा ग्लासमें ब्रान्डी ढ़ाल रहा है और चिर-किके साथ कह रहा है—साम्बोने ही यह सब गोलमाल किया है। टाम अभी और एक महीने तक उठ-बैठ नहीं सकेगा। अब कपास चुननेका समय है। इस समय काम-काजी लोगोंकी कमी होनेसे व्यापार ही बन्द हो जायगा। साम्बो यदि नालिश न करता तो यह गड़बड़ी न होती।

लेग्रीकी बात समाप्त भी न होने पायी थी कि, पीछेसे किसीने कहा—यही बात तो ठीक है, ऐसी गड़बड़ीसे हानि-के सिवा लाभ नहीं है। लेग्रीने पीछे घूमकर देखा कासी खड़ी है।

लेग्री—फिर आयी, शैतान कहीं की!

कासी—हां, आयी तो।

लेग्री—तू सदा सताती है। मैं जैसा कहता हूं वही कर। शिष्ट होकर रह। ऐसा न करेगी तो तुझे खेतमें काम करने-के लिए भेज दूंगा।

कासी—मैं खेतका काम करूंगी। कुलियोंकी भांति झोप-ड़ीमें रहूंगी तो भी तेरे पैरके नीचे न रहूंगी।

लेग्री—तुम मेरे पैरोंके नीचे अब भी हो। जो हो, झगड़ने-की आवश्यकता नहीं। (कासीकी कमरमें हाथ डालते हुए) प्रिये, तुम मेरी गोदमें बैठो और जिसमें तुम्हारी भलाई है उसे सुनो।

कासी—सावधान लेग्री ! मुझे छूना मत। सचमुच ही मेरे सिरपर शैतान सवार है।

कासीके इस प्रकार आँखें लालकर क्रोधके साथ सम्बोधन करनेपर लेग्री कुछ डर गया। वास्तवमें लेग्रीके भीत होनेका एक कारण था। तो भी वह मनका भाव छिपाकर पूर्वकी भाँति भय दिखाते हुए बोला—जा, चली जा। फिर कुछ देरके बाद बोला—कासी तुम क्यों ऐसा करती हो ? पहिले जिस प्रकार हमलोगोंमें बन्धुत्व था, जैसा प्रणय था, मैं अब भी वैसा ही व्यवहार रख सकता हूँ।

कासीने कहा—प्रणय था ! परस्पर बन्धुत्व था ! इसके आगे वह और कुछ न कह सकी। क्रोधसे गला रुँध गया।

उन्मत्त स्त्रियां पशुवत् आचरण करनेवाले पुरुषोंको सहजमें ही दबा सकती हैं। कासीका भी लेग्रीपर वैसा ही दबाव था। इस समय कासी दासत्व-बन्धनके उत्पीड़नसे पूर्वापेक्षा कुछ अधिक कुपित स्वभाव तथा अधीर हो गयी है। समय-समयपर क्रोधानलके प्रज्वलित होनेपर वह एक दम पागल हो जाती है। इससे लेग्री बहुत चिन्तित होता है। विशेषतः आजकल कासीके साथ लेग्रीका विवाद चल रहा है। वह अपनी उपपत्नी बनानेके लिए एमलिनको ले आया है, पर एमलिन अपना धर्म छोड़नेपर किसी प्रकार भी तैयार न थी, इसलिए दुराचारी लेग्री एमलिनपर नाना प्रकारके अत्याचार कर रहा था। कभी-कभी उसपर आक्रमण भी करता था एमलिनकी दुर्दशा देखकर कासीके हृदयकी—भस्माच्छादित अग्निकी भाँति—स्त्री जाति-सुलभ सहानुभूति उद्दीप्त हो उठी है। इसलिए वह एमलिनका पक्ष लेकर लेग्रीके आक्रमणोंसे अनेक कौशलोंसे उसकी रक्षा करती है। इसी लिए लेग्रीका कासीके साथ विवाद होने लगा। लेग्रीने कासीको दुःख देने-

के लिए अन्यान्य कुलियोंकी भाँति खेतमें काम करनेको भेज दिया। कासी इससे भी लेग्रीके वशीभूत न होकर उसे घृणा-से देखती हुई खेतमें काम करनेको उद्यत हो गयी। इसके पहिले दिन, इसी लिए कासी अन्यान्य कुलियोंके साथ खेतमें आकर काम करती थी। कासीका ऐसा आचरण देखकर लेग्री मन-ही-मन अत्यन्त कुण्ठित होने लगा। पहिले दिन काम जाँचनेके समय लेग्री उसके साथ सन्धि करनेके उद्देश्य-से कुछ सान्त्वनाके साथ कुछ घृणाके साथ बातें की थीं। किन्तु कासी उसे घृणासे देखती हुई चली गयी। आज लेग्री फिर कहने लगा—कासी, तुम शान्त-शिष्ट होकर रहो।

कासी—तुम मुझे शान्त-शिष्ट होनेको कहते हो, पर तुम स्वयं कैसा आचरण करते हो? तुम्हें कुछ भी समझ नहीं है कि यह कामका समय है। इसी समय अपने एक अत्यन्त परिश्रमी आदमीको मारकर निकम्मा बना दिया। तुम स्वयं तनिक शान्त-शिष्ट तो बनो, तब दूसरेको कहना।

लेग्री—मैंने बड़ी मूर्खताकी है। किन्तु एक बात यह भी तो है कि जब कोई हठी हो जाय तब उसे ठीक भी तो करना चाहिए।

कासी—तुम कभी उसे उस विषयमें दुरुस्त न कर सकोगे।

लेग्री—(अत्यन्त क्रोध प्रकाश-पूर्वक) क्या दुरुस्त न सकूँ-गा? देखना, कर सकता हूँ कि नहीं! आज तक मैंने तो ऐसा आदमी ही नहीं देखा जो मेरे हाथों दुरुस्त न हो जाय। मैं उसकी हड्डी-हड्डी गढ़ डालूँगा।

लेग्रीकी बात समाप्त होते न होते द्वार खुला एवं साम्बो-ने, एक काली गठरी हाथमें लिए हुए, घरमें प्रवेश किया। उसे देखकर लेग्रीने कहा—साले, कुत्ते। तेरे हाथमें यह क्या है?

साम्बो—जादूगरकी औषधि।

लेग्री—क्या कहता है ?

साम्बो—जी हजूर! निग्रो लोग जादूगरकी औषधि अपने साथ रखते हैं। इसके साथ रहनेसे बेत मारनेपर उन्हें लगते नहीं। टाम इसे काले सूतमें गुथकर अपने गलेमें बांधे हुए था।

ईश्वर-शून्य हृदय कापुरुषता और कुसंस्कारका आधार होता है। लेग्रीका ईश्वरके प्रति कुछ भी विश्वास न था। इसीसे उसका मन नाना भाँतिके कुसंस्कारोंसे भरा था। गठरी खोलते ही एक रौप्य मुद्रा और एक गुच्छा लम्बे घुंघुरालेवालोंका निकला। वह स्वर्णकी भाँति चमकीला केश-गुच्छ किसी सजीव वस्तुकी भाँति लेग्रीके हाथमें लिपट गया। वह शंकित होकर चिल्ला उठा और कहने लगा—चूल्हे-भाड़में जाओ। उसका उस समयका भाव देखकर जान पड़ा मानो उन केशोंके स्पर्श करनेसे उसका हाथ जल रहा है। बड़े वेगसे भूमिमें पैर पटककर और बालोंको फेंककर साम्बोंसे कहने लगा—ये बाल कहाँसे लाया है? अभी ले जाकर जला डाल। यह कहकर सामने रखी हुई आगमें उसने वे बाल फेंक दिये एवं साम्बोको धमका कर कहा—खबरदार! ये सब मेरे पास फिर मत ले आना।

साम्बो आश्चर्यसे देखता खड़ा रहा। कासी भी यह सब देखकर अत्यन्त चमत्कृत हो लेग्रीका मुँह देखने लगी। लेग्रीने कुछ स्थिर हो, घूँसा दिखलाते हुए साम्बोसे कहा—भविष्यमें ये सब जादू-टोनेकी वस्तुएँ मेरे पास मत ले आना। साम्बोके चले जानेपर लेग्री, इस तुच्छ विषयपर क्रोध प्रकाशित करनेपर कुछ लज्जित हुआ, और फिर ग्लासमें ब्राँडी ढालने लगा। कासी धीरे-धीरे घरसे बाहर हो, छिपकर टामको कछ औषधि-पथ्य देने चली गयी।

पाठक गण ! आपको यह जाननेका विशेष कौतूहल होगा कि वह केश-गुच्छ देखकर लेग्रीका क्रोधानल इतना क्यों भभक उठा था। उसने इतना भय क्यों दिखाया। इस विषयका मूल कारण कहनेके लिए लेग्रीके पूर्व जीवनकी दो-एक घटनाओंका उल्लेख करना पड़ेगा।

यह नराधम बचपनमें एक स्नेहमयी सच्चरित्रा जननीके गोदमें पला था। सुमधुर भजन और ईश्वरका नाम अनेक बार इसके कानोंमें पड़ा था। किन्तु इसका पिता बड़ा दुराचारी था। उस दुरात्मा अँग्रेजके वीर्यसे उत्पन्न होकर लेग्री वयोवृद्धिके साथ-साथ पिताकी प्रकृति भी पाने लगा। इसकी माता आयरलैंड निवासी एक कृषककी कन्या थीं। उन सहृदय रमणीका अकपट प्रेम तथा विशुद्ध प्रणय पशु-प्रकृति-विशिष्ट अनुपयुक्त पात्रमें पड़ा था। युवावस्थाके प्रारम्भमें ही लेग्री अपनी स्नेहमयी जननीके रोने-धोनेपर कुछ भी ध्यान न देकर नाना प्रकारके बुरे कामोंमें प्रवृत्त हुआ। रुपया कमाकर उसके द्वारा इन्द्रिय सेवन ही उसके जीवनका एक मात्र उद्देश्य था। सत्रह-अठारह वर्षकी अवस्थामें अर्थोपार्जनके लिए लेग्रीने देश छोड़कर जहाजमें काम करने लगा उस समय भी यात्री रमणियोंके साथ कभी-कभी वह घोर अत्याचार करता था। इसके बाद यह केवल एक बार अपने घर लौटकर आया था। उस समय इसकी माताने अश्रुपूर्ण नेत्रोंसे, इसे घरमें रहकर भद्रोचित जीवन बितानेके लिए कहा था। माताके करुण-क्रन्दनसें क्षणभरके लिए लेग्रीका मन पिघल गया। इसके जीवन भरमें केवल वही एक क्षण इसके सुधारके लिए अनुकूल था। उस समय चाहता तो सुधर सकता था। किन्तु इसका पाषाण हृदय नहीं फिरा। यह माताकी आज्ञाका उल्लंघन करनेको उद्यत हुआ। स्नेह-मूर्त्ति माता

उस समय इसके गलेसे लिपटकर रोने लगीं, किन्तु यह नर-पशु, उन्हें पैरसे ढकेलकर चला गया। इसकी माता मूर्च्छित हो भूमिपर पड़ी रहीं। विदेश जाकर यह कभी माताकी खोज-खबर न लेता था। एक दिन यह अपने ही सदृश दुराचारी युवकमित्रोंके साथ बैठकर सुरापान कर रहा था और दो-तीन अनाथ कुली-रमणियोंका, बल-पूर्वक, धर्म-नष्ट करनेका उपक्रम कर रहा था कि इसी समय नौकरने आकर इसके माताके हाथका लिखा एक पत्र इसको दिया। वह पत्र खोलते ही उसमें से बालोंका एक गुच्छा गिर पड़ा। वह केश-गुच्छ उसकी अँगुलीसे लिपट गया। उस पत्रमें उसकी माताका मृत्यु-संवाद था एवं मृत्यु-कालमें उन्होंने, जो इसके सम्पूर्ण अपराध क्षमाकर, इसके मंगलके लिए ईश्वरके निकट बारम्बार प्रार्थना की थी, वही वृत्तान्त सविस्तर लिखा हुआ था। पत्र पढनेपर लेग्रीके मनमें भयका संचार हुआ। इसकी माताके वे सजल-नेत्र, मृत्युके समयकी प्रार्थना उसको स्मरण पड़ते ही, हृदय काँप उठा, किन्तु ब्रान्डीकी बोतल तथा कुली-रमणियाँ उसके सम्मुख ही थीं। शीघ्र माताकी स्मृति हृदयसे निकाल न देनेसे, उपस्थित भोग-सम्भोग नहीं हो सकता था। लेग्रीने अपनी माताके केश-गुच्छ तथा पत्रको अग्निमें फेंक दिया। केशोंके धक-धक करके जलते ही फिर उसी भयङ्कर नरकका स्मरण हुआ। इसका हृदय काँप उठा। समुखस्थ बोतलसे बारम्बार ब्रान्डी ढालकर, उस भयानक चिन्ताको दूर करनेकी चेष्टा करने लगा। ब्रान्डीने कुछ समयके लिए माताकी स्मृतिको भुला दी, किन्तु इसके बाद गम्भीर रात्रिमें प्रायः वह अपनी माताको विषण्ण मुख तथा सजल नेत्र अपने बिस्तरके बगलमें खड़ी देखता था। वे ही केश आकर उसकी अँगुलीसे लिपट जाते थे। जाग उठने-

पर वह भयसे काँप उठता था। केशोंको जलानेके सम्बन्धमें लेग्रीके जीवनमें यही एक घटना हुई है, इसीसे, आज फिर केश जलानेके समय विशेष त्रस्त हुआ था। इसीसे साम्बोके ऊपर इतना क्रुद्ध हुआ था। साम्बो और कासीके चले जाने· पर भी वह अपना मन स्थिर न कर सका। कुछ देरके बाद वह बोल उठा—दूर हटो! यह सब सोचकर क्या होगा? ब्रान्डी ढालकर फिर मन-ही-मन सोचने लगा—वे केश जैसे अँगुलीसे लिपट गये थे ये केश भी ठीक वैसे ही क्यों लिपट गये। क्या केशोंमें भी जीव है? क्या केश अग्निमें जलते नहीं? फिर कहने लगा—मैं अब और अधिक इन सब चिन्ताओंको अपने मनमें स्थान न दूँगा। मैं एमलिन-के पास जाता हूँ। सुन्दरी मुझसे घृणा करती है किन्तु मैं उसे ठीक मार्गपर ले आऊँगा। मैं आज उसे किसी प्रकार भी न छोड़ूँगा।

यह कहकर लेग्री ऊपर एमलिनके पास जाने लगा। सीढ़ीपर पैर रखते ही उसे गाना सुन पड़ा। गाना सुनकर वह रुक गया। केश जला देनेसे उसका मन अस्थिर हो गया था। फिर यह करुण-स्वरमें गाना सुनकर और भी अस्थिर हो उठा।

कोई गा रहा था—

अब छोड़ूँगी यह संसार।
कब तक रो-रोकर डूबूँगी नरक-कुण्ड मझधार।
दुःखरात्रि, ग्रसने आती है, यंत्रणा अपार॥

यह गाना सुनकर लेग्रीका मन और भी चञ्चल हो उठा। वह मन-ही-मन सोचने लगा—भाड़में जाय यह हतभागिनी। मैं इसका गला घोंटकर मार डालूँगा। यह सोचकर शीघ्रता-से वह पुकारने लगा—एम!—एम! पर प्रतिध्वनि होने

लगी, मा !—मा ! किन्तु बालिकाका गाना रुका नहीं। वह फिर सुनायी पड़ा—

आता है वह दिवस भयंकर, जब जलकर हूँगी छार।

लेग्री फिर रुका। उसके ललाटपर पसीना चुचुआ आया, उसका हृदय काँपने लगा, उसे जान पड़ने लगा, मानो उसकी माता उदास मुख, सजल नेत्र खड़ी हुई हैं। तब वह सोचने लगा—यह क्या हुआ ? सचमुच ही यह साला, जादू करना जानता है क्या ? जो हो, अब उसे न मारूँगा। पर यह बालोंका गुच्छा उसने पाया कहाँ ? ये क्या मेरी माताके बाल हैं ? वे कैसे हो सकते हैं। उन्हें तो मैंने कभी जला डाला था। यह बालोंका गुच्छा ठीक उसी प्रकारका क्यों दिखायी पड़ता था।

रे नराधम लेग्री ! इन बालोंमें कैसी शक्ति है। यह तुझ सरीखा नर-पशु क्या जान पावेगा ? ये इवाञ्जेलिनके केश हैं। इन केशोंने ही आज तुम्हारे हाथ-पैर बाँध दिये। यदि ऐसा न होता तो इसी क्षण तू निरपराध निर्मल चरित्रा एम-लिनका जीवन-सर्वस्व नष्ट कर देता, उसका चिरपवित्र शरीर अपवित्र करता। निर्मल हृदयमें कलंक-कालिमा पोत देता।

लेग्री आज किसी प्रकार भी हृदयकी यंत्रणानलको बुझा नहीं पाता, इसलिए मन-ही-मन सोचने लगा कि आज अकेले न रहूँगा। साम्बो और कुइम्बोको बुला लिया। सम्पूर्ण रात्रि उन्हें लेकर गाना-बजाना तथा ब्रान्डी-पान करता रहा। इन लोगोंके गाने-बजाने तथा चीत्कारके मारे आस-पासके लोगोंको भी नींद नहीं आई। कासी टामको औषध-पथ्य देकर रात्रिके एक प्रहर बीतनेके बाद लौटी आ रही थी। घर-मे घुसते ही देखा कि सारा घर इन लोगोंके चीत्कारसे गूँज रहा है। सुरापानकर साम्बो, कुइम्बो, तथा लेग्री तीन-के-

तीनों हाथा-पाई कर रहे हैं। कासी दरवाजेमें आकर, पर्दा उठा एकटक इनको देखने लगी। उसके नेत्रोंमें घोर विद्वेष तथा घृणाका भाव झलकने लगा। मन-ही-मन चिन्ता करने लगी, मानव-समाजको ऐसे नर पिशाचके स्पर्शसे अलग करनेमें क्या कोई पाप होगा? यह सोचते हुए उसने घरमें प्रवेश किया एवं धीरे-धीरे एमलिनके द्वारपर ठोकर मारने लगी।



उनतालीसवाँ परिच्छेद



कासी और एमलिन

कासीने घरमें जाकर देखा कि एमलिन घरके एक कोनेमें बैठी हुई है। उसका मुख-भयसे पीला पड़ गया है। कासीके घरमें प्रवेश करनेका शब्द सुनकर वह चौंक पड़ी। जब कासीको देखा तब एमलिन झपटकर आगे बढ़ी और उसके गलेसे लगकर कहने लगी—कासी तुम हो! मैंने समझा था कि कोई दूसरा आ रहा है। तुम आगई, यह अच्छा ही हुआ। मुझे बड़ा डर लग रहा था, तुम जानती नहीं हो, उस नीचके घरमें कैसा चीत्कार हो रहा है।

कासी—मैं सब जानती हूँ। ऐसा चीत्कार मैं कितने ही वर्षोंसे सुन रही हूँ।

एमलिन—कासी, भला बतलाओ तो मैं इस स्थानसे कहीं अन्यत्र चली जा सकती हूँ कि नहीं? यहाँ रहनेकी अपेक्षा जंगलमें रहना अच्छा है। यहाँसे भाग जानेका क्या कोई उपाय नहीं है?

कासी—समाधिस्थानके अतिरिक्त और कोई भी जानेका स्थान नहीं।

एमलिन—तुमने कभी चेष्टा करके देखा है?

कासी—मैं इस विषयमें अनेक चिन्ताकर देख चुकी हूँ।

एमलिन—मैं वन तथा ऊजड़ भूमिमें जाकर वृक्षोंकी जड़ें अथवा फल-फूल खाकर जीवन यापन करूँगी, किन्तु इस नरकमें मैं नहीं रह सकती। इस नराधम लेग्रीके पास आनेपर मुझे जितना भय लगता है, उतना तो बाघ और साँपके पास आनेपर भी नहीं लगता।

कासी—यहाँ जो आये हैं उनमें से अनेक लोग यही कहते हैं। भाग जानेपर क्या उद्धार है? शिकारी कुत्तोंके द्वारा यह पकड़वा मँगवावेगा। पकड़वा कर—

एमलिन—पकड़वाकर क्या करेगा?

कासी—क्या करेगा, यह न पूछकर यह पूछो, क्या न करेगा? इसके लिए कोई कार्य असाध्य नहीं। जल-डाकुओंके साथ रहकर इसने उत्तम रूपसे अपना कार्य करनेकी शिक्षा प्राप्त की है। मैंने यहाँपर आकर जैसा लोमहर्षण, नृशंस व्यापार देखा है, उसे सुननेपर तुम्हें फिर नींद न आवेगी। इस घरके पीछेकी ओर एक अधजला वृक्ष है। उस वृक्षके नीचे बहुतसे कोयले देखोगी। वहाँ क्या-क्या हुआ है, यह यहाँ किसी आदमीसे पूछना तो सही, वह तुम्हारे प्रश्नका उत्तर देता है या नहीं।

एमलिन—तुम क्या कहती हो, मैं नहीं समझ पाती। स्पष्ट रूपसे कहो न।

कासी—मैं तुम्हें स्पष्टरूपसे न बतलाऊँगी। केवल इतना बतलाती हूँ कि टाम यदि कल भी इसके इच्छानुसार कार्य न करेगा तो देखना कि कैसा भयानक काण्ड उपस्थित होता है।

एमलिनने भयसे काँपते हुए पूछा—क्यों कासी, कैसा भयानक काण्ड होगा। बतलाओ, मैं क्या करूँ?

कासी—मैंने जो कुछ किया है और जो. अन्तमें तुम्हें भी करना पड़ेगा, वही करो।

एमलिन—मुझे वही घृणित ब्रान्डी पीनेको कहता है। ब्रान्डी पीनेमें मुझे बड़ी घृणा होती है।

कासी—ब्रान्डी पीना ही बहुत अच्छा है। मैं भी पहिले ब्रान्डी पीनेमें घृणा करती थी, पर अब तो पीये बिना रहा भी नहीं जाता। यह सब खाये-पिये बिना नहीं बनता। एक बार पी लेनेपर फिर वैसा बुरा भी नहीं जान पड़ता।

एमलिन—मेरी माताने तो सुरापानकी कौन कहे, उसे छूने तकको मना किया है।

कासी—माताने मना किया है, माताकी कोई बात कहनेकी आवश्यकता क्या? आदमी हमको रुपया देकर खरीदते हैं। जो खरीदेगा वह आत्मा तथा देहपर अपना अधिकार कर लेगा। मैं तुमसे कहती हूं कि ब्रान्डी पीओ। जितनी पी सको उतनी पीओ। ऐसा करनेसे मानसिक कष्ट इतना न सतावेगा।

एमलिन—ओह! कासी, मुझपर दया करो। मेरा दुःख देखकर दुखित हो।

कासी—तुमपर क्या मेरी दया नहीं है? तुम्हारा दुःख देखकर मुझे क्या दुःख नहीं होता? तुम्हारी ही भांति मेरे भी एक कन्या थी। वह अब कहाँ है? वह इस समय किसकी है? उसकी माताने जो पथ ग्रहण किया है कदाचित् वह भी इस समय उसी पथपर चलती हो। उसकी सन्तानें भी उसी मार्गपर चलेंगी। इस अनन्त दुर्गतिका अन्त नहीं है।

एमलिन—यदि मेरा जन्म न होता तभी अच्छा था।

कासी—ऐसी प्रार्थना मैंने अनेक बार की है। मरनेकी इच्छा होती है, किन्तु आत्म-हत्या करनेमें भय लगता है।

एमलिन—आत्म-हत्या करना महापाप है।

कासी—आत्म-हत्या महापाप क्यों है, यह मेरी समझमें नहीं आता। प्रतिदिन जो अनेक पापोंका अनुष्ठान करते हैं, तदपेक्षा गुरुतर पाप क्या और कोई है, किन्तु मैं जब धर्माश्रममें थी तब वहाँकी बहिनोंके पास जो बातें सुनीं हैं, उनके स्मरण होनेपर, आत्म-हत्या करनेमें भय लगता है। यदि आत्म-हत्याके साथ-ही-साथ आत्माका अस्तित्व भी लुप्त हो जाता तो,—

एमलिनने भयसे पीछे हटकर दोनों हाथोंसे अपना मुँह ढाँक लिया।

एमलिनके साथ जब कासीकी यह बात-चीत हो रही थी उस समय लेग्री अत्यधिक सुरापान कर सो रहा था।

निद्रावस्थामें वह स्वप्न देख रहा था—मानो श्वेतवस्त्रावृत एक मानवाकृति उसके पास खड़ी होकर कोमल, बर्फके समान शीतल हाथोंसे उसका शरीर स्पर्श कर रही है। वह आकृति उसकी परिचित जान पड़ती है। भयके मारे उसका सारा शरीर संज्ञा-शून्य हो गया है। उसके पश्चात् ही वही केश-गुच्छ आकर उसकी अँगुलीसे लिपट गया। देखते-ही-देखते वह केश-गुच्छ उसके गलेकी ओर बढ़ा और बढ़कर गलेसे लिपट गया। उसकी साँस बन्द हो गयी। तब वह श्वेतवस्त्रावृत मानवाकृति उसके कानोंमें कुछ कहने लगी। वह बात सुनकर उसका हृदय सूख गया। इसके पश्चात् उसने फिर देखा कि वह एक गम्भीर कुएँके किनारे खड़ा है। कासी हँसते-हँसते धक्का देकर उसे कुएँमें ढ़केल रही है। उस समय फिर वही श्वेतवस्त्र-धारिणी प्रशान्त मूर्त्ति उसके

सम्मुख उपस्थित हुईं एवं अपने मुखपरका कपड़ा हटा लिया। ये उसकी माता हैं। जननी उसे देखकर पीछे घूमकर चली गयीं। और वह उसी क्षण गहिरे-से-गहिरे एक अतल गर्त्तमें गिर पड़ा। उसके चारो ओर घोर चीत्कार, आर्तनाद, प्रेत-पिशाचोंका विकट हास्य-रव हो रहा था! उसी घोर शब्दसे लेग्रीकी निद्रा भंग हो गयी। प्रातःकाल हो गया था।

प्रत्येक दिवसका नवोदित सूर्य मनुष्यके हृदयमें नवीन भाव उत्पन्न करता है। प्रभात समीर मधुर स्वरसे कहता है-मनुष्य! तुम्हारे पापासक्त मनका परिवर्त्तन करनेके लिए, तुम्हारा हृदय पवित्र करनेके लिए, ईश्वर तुम्हें यह फिर एक नया सुयोग प्रदान कर रहे हैं। किन्तु क्या आरम्भिक प्रभात-रश्मि, क्या प्रभात-कालीन गगनस्थित सुख तथा उसकी प्रशान्त दृष्टि, अथवा क्या हृदय प्रफुल्लकर प्रातःकालीन सजीवता, कुछ भी इस लेग्रीके समान संसारासक्त पापात्माके हृदयमें परिवर्त्तन करनेमें समर्थ हुई? लेग्रीके कानोंमें प्रभातका यह उपदेश कभी भी प्रवेश न करता था। बिस्तर परसे उठते ही ब्रान्डी ढालने लगा। कासीको देखते ही बोला—कैस! गत रात्रि मुझे बड़ा कष्ट मिला।

कासी—ऐसा कष्ट तुम बराबर पाओगे।

लेग्री—इसका क्या अर्थ?

कासी—कुछ दिनमें तुम स्वयं इसका अर्थ समझ जाओगे। किन्तु, लेग्री तुम्हारी भलाईके लिए एक बात कहती हूँ, सुनो।

लेग्री—कौनसी बात?

कासी—तुम टामको अब न मारना।

लेग्री—उसे मैं मारूँ या न मारूँ, इसमें तेरा क्या?

कासी—मुझसे कुछ प्रयोजन नहीं। किन्तु देखो, यह कामका समय है। इस समय मारनेसे तुम्हारे ही काममें

क्षति होगी। विशेषतः बारह सौ रुपयेका एक दास खरीदकर लाओ और उसे मार डालो तो कितनी हानि होगी ? मैं तुम्हारी भलाईके लिए ऐसी ही चेष्टा करती हूँ, जिसमें वह शीघ्र ही अच्छा हो जाय।

लेग्री—तुम उसे आरोग्य करने क्यों गयी ? तुम्हें इस सबसे क्या प्रयोजन है ?

कासी—मुझे किसीसे कुछ प्रयोजन नहीं। किन्तु मैंने समय-समयपर ऐसा करके कई सौ रुपयोंका माल बचाया है। यदि फसल अच्छी न हो तो जान पड़ेगा।

कपासकी फसल जिससे अच्छी हो उसके लिए लेग्री प्राण-पनसे चेष्टा करता था। कासीने इसीसे विशेष चतुरतापूर्वक टामका मारना बन्द करानेके अभिप्रायसे इस विषयका उल्लेख किया।

कासीकी बात सुनकर लेग्रीने कहा—टाम यदि क्षमा-प्रार्थना पूर्वक भविष्यमें मेरी बात मानना स्वीकार करे, तो मैं उसे इस बार क्षमा कर दूँ।

कासी—टाम ऐसा कभी नहीं कर सकता।

लेग्री—क्या कभी नहीं करेगा ?

कासी—कभी नहीं।

लेग्री—क्यों क्षमा नहीं चाहेगा, बोलो ?

कासी—उसे इसपर दृढ़ विश्वास है कि वह कोई अन्याय कार्य नहीं करता।

लेग्री—निग्रो गुलाम! और न्यायान्यायका विचार! मैं जो कुछ करनेको कहता हूँ वही करना होगा।

कासी—ऐसा करनेसे इस कामके समयमें उसे शय्यापर सोना होगा। इसलिए तुम्हारी फसल नष्ट होगी।

लेग्री—मेरी समझसे आज वह अवश्य क्षमा माँगेगा। मैं क्या निग्रो लोगोंका स्वभाव जानता नहीं?

कासी—लेग्री, मैं तुमसे निश्चय-पूर्वक कहती हूँ कि वह कदापि क्षमा-प्रार्थना न करेगा। तुम चाहे उसके प्राण तक लेलो तो भी वह क्षमा-प्रार्थना न करेगा। प्राणत्याग देगा पर धर्म विश्वास न त्यागेगा।

लेग्री—मैं देखूँगा, वह त्यागता है या नहीं। वह इस समय कहाँ है?

कासी—जिस कोठरीमें सड़ी-गली पुरानी वस्तुएँ पड़ी हैं उसीमें पड़ा है।

कासीके सामने इतनी प्रभुता प्रकट करनेपर भी लेग्रीके मनमें यह शंका हो रही थी कि, ज्ञात होता है, टाम क्षमा-प्रार्थना न करेगा। इसलिए अकेला ही टामके पास गया। मन-ही-मन सोचा कि यदि एकान्तमें ही टाम क्षमा-प्रार्थना न करेगा तो उसको कभी फिर न मारूँगा। फसल समाप्त हो जानेपर उसे दुरुस्त करूँगा।

मैंने पहिले ही बतला दिया है प्रातःकालका वायु तथा प्रभात-सौन्दर्य, लोगोंकी प्रकृतिकी विभिन्नताके अनुसार भिन्न-भिन्न प्रकारके भाव उत्पन्न करता है किन्तु लेग्रीके समान भाव-हीन, चिन्ता-शून्य, अर्थ-लोलुप, इन्द्रियासक्त पिशाचके हृदयमें किसी प्रकारका भाव प्रवेश नहीं कर पाता था। उसकी चिन्ताके विषय थे, केवल कपासके खेत, अर्थ-संचय तथा कुली लोग। अशिक्षित होनेपर भी टामका हृदय-भाव पूर्ण और चिन्तामय था। प्रातःकालकी सजीवताने उसके हृदयमें नया बल उत्पन्न कर दिया। उसे ज्ञान पड़ा, मानो प्रभातका सुख तारा आकाशमें अवतीर्ण होकर उससे कह रहा है, कुछ भय नहीं है, टाम! ईश्वर तुम्हारे साथ

है। टाम मन-ही-मन अत्यन्त आनन्दका अनुभव करने लगा, विशेषतः वह पहिले न जानता था कि लेग्री साहब उसका प्राण-विनास करेगा। किन्तु कासीकी उस दिनकी भाव-भङ्गीसे उसने समझ लिया था कि मेरी मृत्यु बहुत निकट है। इसलिए इस मृत्यु-संवादसे एकबार उसकी आत्मा विमलानन्दसे परिपूर्ण हो गयी। वह सोचने लगा कि मृत्युके उपरांत उस अमृतमयकी अमृत गोदमें विश्राम करूँगा, द्वेष, हिंसा, तथा अत्याचार-शून्य प्रेम-राज्यमें अवस्थान करूँगा। प्राणोंकी अपेक्षा प्रियतरा इवान्जेलिनका मुख-कमलका दर्शन करूँगा। प्रथम दयालु स्वामी सेन्ट-क्लेयरको स्वर्गमें जानेपर धर्ममें विश्वास हुआ या नहीं, देखूँगा। अहा! टामको इसकी अपेक्षा सुख और आनन्द-का विषय और क्या हो सकता है? इस समय टामको शरीरका सारा कष्ट भूल गया। वह आनन्दसे विह्वल हो पड़ा। उसके मुखमंडलमें प्रीतिका आभास एवं ईषत् हास्यका भाव परिलक्षित हो रहा है। इसी समय नर-पिशाच लेग्रीने उसके घरमें आकर उसे पुकारा और पैरोंसे ठोकर मार कर कहा—कैसा है? मैंने तुझे बुलाया है कि कुछ शिक्षा दूँ। यह शिक्षा कैसी लगती है? आज भी इस पापीको कुछ धर्म-शिक्षा देगा या नहीं? जान पड़ता है आज शिक्षा देनेकी शक्ति नहीं है। टामने कुछ उत्तर न दिया। वह चुप-चाप पड़ा रहा।

लेग्रीने फिर पूर्वकी भांति कुछ अधिक जोरसे ठोकर मार कर कहा—उठ कुत्ते।

पहिले दिनकी मारसे टाम उठने-बैठनेके योग्य न था, इसलिए बड़े कष्टसे वह उठनेकी चेष्टा करने लगा। यह देखकर लेग्रीने हँसते-हँसते कहा—क्यों, तुझे क्या हो गया

है ? जान पड़ता है, ठण्डी हवा लगनेसे सर्दी हो गयी है।

टाम बड़े कष्टसे अपने उत्पीड़कके सामने भय त्यागकर खड़ा हुआ। तब लेग्री उससे कहने लगा—अरे शैतान, मुझे जान पड़ता है कि इतनेपर भी अभी तेरी शास्ति नहीं हुई। अच्छा घुटनोंके बल बैठकर मुझसे क्षमा मांग। शीघ्रता कर। अब भी देरी करता है ? यह कहकर अपने हाथके चाबुकसे उसे पीटने लगा।

तब टामने विनीत भावसे कहा—मिस्टर लेग्री, मैं क्षमा न मांगूँगा। मैं जो धर्म-संगत और न्याय-संगत समझता हूँ वही करता हूँ। मैं आपके कहनेसे कदापि किसी स्त्रीको बेंत न लगाऊँगा। ऐसा निष्ठुर व्यवहार मैं कदापि न करूँगा।

लेग्री—किन्तु मिस्टर टाम, आप अब भी नहीं समझ सके कि इसके उपरांत आपका क्या होगा। ज्ञात होता है आप समझते हैं कि कलकी मार ही पर्याप्त थी किन्तु कलकी मार तो कुछ भी नहीं है। वह तो केवल जलपान है। आपको पेड़के साथ बांधकर चारो ओर आग लगा देनेसे कैसा होगा, बतलाइये तो ?

टाम—महाशय, आप ऐसा भयानक कार्य भी कर सकते हैं, यह मैं जानता हूं। यह कहते ही टामकी आंखोंसे आंसू बह आये। वह सजल नेत्रों सहित हाथ जोड़कर कहने लगा—किन्तु इस शरीरका नाश हो जानेपर फिर आपका कोई अधिकार न रह जायगा। इसके बाद मैं अनन्त जीवन प्राप्त करूँगा।

"अनन्त जीवन" यह कौनसा चमत्कारी शब्द है ! इसमें भय और आनन्द दोनों निहित हैं। कृष्णकाय टामके हृदयमें इस शब्दसे शान्ति और आनन्द प्राप्त हुआ। यह शब्द सुन-

कर लेग्रीने मन-ही-मन वृश्चिक-दंशनका कष्ट अनुभव किया। वह दांत किड़किड़ाने लगा।

टाम फिर स्वाधीन भावसे कहने लगा—सिस्टर लेग्री, आपने मुझे खरीदा है, इसलिए मैं आपका दास हूं। मैं अवश्य ही प्राण-पनसे आपका कार्य करूंगा। मेरे शरीरमें जितना बल है, मेरे पास जो कुछ समय है, वह सब आपके कामके लिए समर्पित है। किन्तु अपनी आत्मा मैं कदापि आपके हाथ समर्पण न करूंगा। मेरे प्राण रहें चाहे जायें, पर मैं ईश्वरका आदेश अवश्य पालन करूंगा। उन्हींके चरणोंमें मैं अपनी यह आत्मा अर्पण करूंगा। उनकी आज्ञा का उल्लंघनकर मैं कदापि कोई निष्ठुर व्यवहार न करूंगा। कदापि नहीं! कदापि नहीं! तुम्हारी इच्छा हो मुझे लाठी मारो, बेत मारो, मारडालो, किन्तु किसी प्रकार भी मैं धर्म-विसर्जन न करूंगा। कभी नहीं—कभी नहीं!

लेग्री-(क्रोध पूर्वक) उपयुक्त शास्ति देनेपर अवश्य करोगे।

टाम—मैं धर्म-पालनमें सहायता पाऊंगा।

लेग्री—(घृणा प्रकट करते हुए) कौन साला तेरी सहायता करेगा?

टाम—सर्व-शक्तिमान ईश्वर मेरी सहायता करेंगे।

लेग्रीने यह बात सुनते ही चपेटाघातकर, उसे भूमिपर गिरा दिया। एवं कहा—देखूंगा तेरा ईश्वर कैसे सहायता करता है।

इसी समय पीछेसे एक सुकोमल हाथने लेग्रीका शरीर स्पर्श किया। उसने पीछे घूमके देखा-कासी खड़ी है। इस शीतल हस्त-स्पर्शसे गत रात्रिका स्वप्न उसे स्मरण हो आया। रात्रिमें जैसे भयका संचार हुआ था, वैसे ही इस समय भी भयका संचार हुआ।

कासीने फ्रांसीसी भाषामें कहा—लेग्री, तुम कैसे मूर्ख हो ? इसे छोड़ दो। देखूं मैं इसकी सेवा-शुश्रूषा कर शीघ्र ही खेतमें काम करने योग्य कर पाती हूं या नहीं। इस समय कैसे कामका समय है। ज़रा सोचकर देखो तो।

जैसे मकर और घड़ियाल आदि जन्तुओंके शरीरमें, अभेद चमडेसे आवृत रहनेपर भी, ऐसे स्थान हैं, जहां गोली लग-सकती है, वैसे ही दुश्चरित्र, इन्द्रियासक्त, निर्दय, अविश्वासी, नास्तिकोंके हृदयमें भी भयका संचार करनेके लिए कोई मार्ग न रहनेपर भी एक मार्ग है। भ्रान्त-संस्कारका भय उनके मनमें सदैव प्रवेश कर जाता है। गत रात्रिकी स्वप्नाव-स्थाकी मातृमूर्तिका स्मरण होते ही लेग्रीके मनमें भयका सं-चार हुआ। उसने टामसे कहा—अब तुझे और न मारूंगा। अभी कामके दिन हैं, काममें हानि होगी। इसके पश्चात् देखा जायगा। यह कहकर वह चला गया।

कासी मन-ही-मन कहने लगी—अभी जाओ, तुम्हारा समय भी आ रहा है। इसके पश्चात् वह टामकी ओर घूमकर बोली—कैसे हो ? टामने कहा—प्रभु परमेश्वरने, अपना दूत भेजकर आज सिंहका मुहँ बन्दकर दिया था। कासीने कहा—देखो अब तुम्हारा निस्तार नहीं है। यह धीरे-धीरे तुम्हारे प्राण लेगा। मैं इस नराधमकी प्रकृति भली-भांति जानती हूँ।

चालीसवाँ परिच्छेद

स्वाधीनता-लाभ

अब टामको लेग्रीके घर छोड़ते हैं और इलाइजा एवं जार्जकी स्वाधीनता-प्राप्तिका हाल लिखते हैं।

टमलकार, एक वृद्धा कोयेकार स्त्रीके यहाँ खटिएपर पड़ा-पड़ा शरीरकी पीड़ाके मारे चिल्ला रहा है, अश्लील बातें बक रहा है। बार-बार शपथ खाता है। अपने साथी मार्कको खूब गालियाँ दे रहा है। बुद्धिमती, सहृदया, कोयेकार रमणी उसके बगलमें बैठकर माताकी भाँति स्नेह-पूर्वक उसकी चिकित्सा तथा सेवा-शुश्रूषा कर रही है। इस रमणीका नाम डर्कास है। इन्हें सब लोग डर्कास मामी कहा करते हैं। इनका कद लम्बा है। इनका मुख-कमल दया-मया, स्नेह और धर्म-भावसे पूर्ण है। इनका परिधान श्वेत वस्त्र है। ये दिन-रात स्वयं लकारको औषधि देती हैं। लकारने बिछौनेकी चादरको समेटकर कहा—यह शैतान चादर कैसी गरम है।

डर्कास मामीने मधुर स्वरसे कहा—बेटा लकार, ऐसी भाषा मत बोलो।

लकार—डर्कास मामी, मेरा शरीर जल रहा है, इसलिए ऐसा न करूँ, तो मुझसे रहा ही न जाय।

डर्कास मामीने उसका बिछौना ठीक करके कहा—बेटा, दुर्वाक्य, शपथ, और अश्लील भाषाकोछोड़नेका प्रयत्न करो।

लकार—यह साला मार्क बड़ा शैतान है, साला पहिले वकालत करता था, इसीसे इतना अर्थ-लोभी भी है। उसके ऊपर मुझे बड़ा क्रोध चढ़ा है। मुझे ऐसी अवस्थामें छोड़कर भाग गया।

यह कहकर उसने फिर चादर समेट ली। डर्कास मामीने फिर शय्या ठीक कर दी। कुछ देर बाद फिर लकारने कहा—वे भग्गू दासी-दास अभी यहाँ हैं? यदि हों तो शीघ्र ही झील-में जाकर जहाजपर चढ़ जानेके लिए कह दो।

डर्कास—वे शीघ्र ही चले जायँगे।

लकार—उन लोगोंको सावधानीसे भेजना। झीलके पार्श्वमें

स्यालडाकी नगरीके जहाजके कार्यालयमें हमारे आदमी हैं। विशेष अनुसन्धानके साथ यात्रियोंकी परीक्षा करेंगे। मार्क सालेको जिससे एक कौड़ी भी न मिले, मैं वही करूंगा।

इर्कास—अच्छा, उन लोगोंको मैं यह सब बतला दूंगी। तुम ऐसे दुर्वाक्य मुखसे न निकालो।

लकार—मामी, मुझे इतना मत कसो। इतनी दृढ़तासे बाँधनेसे बन्धन टूट जायगा। मैं धीरे-धीरे सुधर जाऊंगा। हाँ,उन दास-दासियोंकी बात कहता हूँ। उस स्त्री को पुरुषके वेश-में जहाजपर चढ़नेको कह देना, और उस लड़केको लड़कीकी पोशाक पहना देना। इन लोगोंकी हुलिया सन्डाकी कर्यालयमें हुँच गयी है।

इर्कास—अच्छा, इस विषयमें हमलोग विशेष सावधान रहेंगे।

इसके पश्चात् लकारने आरोग्य-लाभ करनेपर भग्गू दास-दासियोंको पकड़नेके व्यापारको बिलकुल छोड़ दिया। कोयेकार लोगोंके प्रति उसकी विशेष भक्ति हो गयी। जब कभी कोई कोयेकारकी बात उठाता, तभी उसके आँखोंसे आँसू गिरने लगते। वह कहता—मैं माताकी अपेक्षा इर्कास मामीकी अधिक भक्ति करता हूँ। उनको कितनी यंत्रणा दी, कितना कष्ट दिया, किन्तु वे तनिक भी दुखी न हुईं।

धूतकारी लोग सन्डाकीमें हैं, एवं भागे हुए लोगोंकी हुलिया भी वहाँ पहुँच गयी है, यह बात लकारसे सुनकर जार्ज और जिम विशेष सावधान रहने लगे। एक साथ जाने-से पकड़े जानेके भयसे जिम और उसकी माता दो दिन पहिले ही चले गये। बादमें जार्ज और इलाइजा अपनी संतान-के साथ रात्रिमें सिण्डाकी आ पहुँचे। रात्रि प्रायः समाप्त होने-को आयी। निसावसान होते ही स्वाधीनताका सुख-सूर्य

हृदयाकाशमें समुदित होगा। आहा! स्वाधीनता! कैसी मधुर बात है! कैसा हृदयोत्फुल्लकर शब्द है! तुझे लेकर वृक्ष-तले रहनेमें भी सुख है, किन्तु बिना तुम्हारे क्या संसारमें कहीं भी सुख है? तुझे पानेके लिए अमेरिका-वासी अँगरेज लोग रण-क्षेत्रमें प्राण-विसर्जन करनेमें किञ्चित् भी कुण्ठित नहीं हुए। तुम्हारे लिए ही सम्पूर्ण-संसार लालायित है। तुम भीरुता, कापुरुषता, एवं स्वार्थपरताका साथ सदैव त्यागे रहती हो। इस संसारमें कितनी ही दुर्बल, भीरु, तथा स्वार्थपरायण जातियाँ हैं। वे तुम्हारे मुख-चन्द्रका दर्शन करेंगी, इसकी कोई आशा नहीं। चन्द्रमाकी सुधामयी चन्द्रिका पराधीन हृदयको कभी प्रफुल्लित नहीं कर सकती। सूर्य्यकी प्रखर रश्मि-राशि पराधीनके हृदयान्धकारको कदापि दूर नहीं कर सकती। किन्तु तुम्हारी अमृत-मय समुज्वल किरणें पराधीनके हृदयको स्पर्श करते ही स्वार्थपरताके घोर अन्धकारको दूर कर देती हैं, दुर्बल सबल हो जाता है, मानव-हृदयमें सार्वभौम प्रेम-चन्द्रमाका उदय होता है।

अमेरिका निवासी अँगरेज लोग स्वाधीनताके लिए संग्राममें प्राण-विसर्जन करनेके लिए प्रस्तुत हुए। किन्तु जातीय स्वाधीनता और जन विशेषकी स्वाधीनतामें क्या कुछ अन्तर है? जातीय स्वाधीनता क्या है? समाजके प्रत्येक नर-नारी की स्वतंत्रताकी समष्टि ही जातीय-स्वाधीनता है। ऐसी दशामें व्यक्तिगत स्वाधीनता न रहनेपर क्या जातीय स्वाधीनता प्राप्त हो सकती है? यह जो पलातक युवक म्लान मुख चिन्ताकुल चित्त हो बैठा है—जार्ज हेरीस—वह कैसी स्वाधीनताके लिए व्याकुल हो रहा है। यह किन अधिकारोंकी चिन्ता कर रहा है। अपनी स्त्रीको पीकत्नी भाँति ग्रहणकर,

उसे दूसरोंके अत्याचारसे बचा, सन्तानको अपनी समझकर सुशिक्षा प्रदान कर सके, अपनी गाढ़ी कमाईका द्रव्य अपने पास रख सके, अपने धर्म-विश्वासके अनुसार धर्मानुष्ठान कार्य कर सके—केवल येही अधिकार वह चाहता है। स्वार्थ-परायण नर पिशाचो! तुम लोग क्या उसे ये मनुष्योचित अधिकार भी न दोगे? इतने भी अधिकार न रहनेपर कोई मानव-तन-धारी प्राणी क्या कभी जीवित रह सकता है। ये थोड़ेसे मानव-प्रकृति-सिद्ध अधिकार प्राप्तिके लिए आज जार्ज तुम्हारा देश छोड़कर भागा जाता है। अपनी स्त्रीको पुरुष-वेषमें सुसज्जित कर रहा है, उसके सुदीर्घ आजानु-लम्बित केश काट रहा है।

इलाइजा केश कट जानेपर हँसकर बोली—जार्ज, इस समय क्या मैं एक सुन्दर युवककी भाँति ज्ञात नहीं होती।

जार्ज—तुम चाहे जो वेष भी क्यों न धारण करो, मैं सदैव तुम्हें सुन्दर देखता हूँ।

इलाइजा—तुम्हें इतना विमर्ष क्यों हो रहा है? यहाँसे कनाडा तक केवल पचीस घन्टेका मार्ग है। एक दिन और एक रात।

जार्ज—इलाइजा, मुझे बड़ा कष्ट हो रहा है। इतनी दूर आकर यदि पकड़ा जाऊँगा, तो यह दुःख मुझसे न सहा जायगा। मेरी मृत्यु हो जायगी।

इलाइजा—तुम कुछ भय न करो। यदि पकड़ ही जाना होता, तो दयामय ईश्वर हमलोगोंको इतनी दूर न ले आते। मङ्गलमय अवश्य ही इस बार हमलोगोंका उद्धार करेंगे।

जार्ज—इलाइजा तुम देवी हो। तुम सदैव उस मङ्गलमयके मङ्गलकारी हाथ देखती हो। अच्छा बताओ, क्या अब हम-

लोगोंकी दुर्दशाका अन्त होगा, मैं क्या मनुष्यके अधिकार प्राप्त कर सकूँगा ?

इलाइजा—मैं निश्चयपूर्वक कहती हूँ कि इस बार हम-लोगोंका उद्धार होगा। सुनो, वह दीनबन्धु परम पिता पर-मात्मा कह रहा है—मत डरो ! मैं तुम लोगोंके साथ हूँ।

इसके उपरान्त जार्जने इलाइजाको टोपी लगाकर कहा—मिस स्मिथ अभीतक नहीं आई। हमलोगोंके गाड़ीपर चढ़नेका समय आ गया।

इसी समय घरका दरवाजा खुला। एक कुलीन वयो-धिका महिला हेरीको बालिकाके वेषमें सुसज्जित कर उस घरमें आयीं। इलाइजा हेरीको बालिकाके वेषमें देखकर बोली—ओह ! यह तो एक सुन्दर बालिका ज्ञात होता है। अब मैं उसे हेरियट कहा करूँगी। बालक माताको पुरुष-वेषमें देखकर एक बार हतबुद्धि हो गया। वह बार-बार दीर्घ निःश्वास छोड़ने लगा। तब इलाइजाने उसकी ओर हाथ फैलाकर कहा—हेरी ! माताको पहचान सकता है ? किन्तु हेरीने उस वयोधिका महिलाका हाथ और कसकर पकड़ लिया। जार्जने कहा—इलाइजा, अब तुम उसे प्यार मत करो। जानती हो, उसे अन्यत्र रहना होगा। यह सुनकर इलाइजाने कहा—यह मैं समझती हूँ किन्तु इसे क्षण भरके लिए भी छोड़नेकी मेरी इच्छा नहीं होती।

इसके पश्चात् इलाइजाके पुरुषोंका लबादा पहिर लेनेपर जार्जने मिस स्मिथसे कहा—आपको हमलोग बुआ कहकर पुकारेंगे। हमलोग अपनी बुआके साथ जा रहे हैं, यही प्रकट करना होगा। मिसेस स्मिथने कहा—मैंने यहाँतक सुना है, कि तुम लोगोंको पकड़नेके लिए पकड़नेवाले लोग टिकट घरमें बैठे हुए तुम लोगोंकी अपेक्षा कर रहे हैं।

गाड़ी तैयार हो जानेपर इनके आश्रयदाता सज्जनो, सपरिवार इनकी गाड़ीके समीप आकर खड़े हो गये, और वारम्वार इनके उद्धारके लिए ईश्वरसे प्रार्थना करने लगे।

टमलकारके उपदेशानुसार ही लोगोंने छद्मवेष धारण किया था। वस्तुतः सत्कार्य और सदाचरणका फल कभी-कभी मनुष्यको हाथो-हाथ प्राप्त हो जाता है। वैरका बदला चुकानेके भावसे टामलकार यदि रात्रिमें वहाँ छोड़ दिया जाता तो जार्ज आज अवश्य पकड़ जाता। टमलकारके साथ उसने जो सदाचरण किया था, परमेश्वरने आज उसे उसीका पुरस्कार दिया।

मि० स्मिथ केनाडा निवासिनी एक सम्भ्रान्त रमणी है। वे केनाडा लौट रही हैं। वे इन लोगोंकी दुरवस्थाकी बात सुनकर, सहायतार्थ सहमत हो गयी हैं। दो दिन पूर्वसे ही हेरी उनके साथ रहता है। इन दो दिनोंमें उन्होंने नाना प्रकारकी मिठाइयाँ आदि देकर हेरीको इस प्रकार अपने वशमें कर लिया है कि अब वह उन्हें एक क्षण भी नहीं छोड़ता।

वे तीनों हेरीको ले बग्गीपर चढ़ जहाजके घाटपर आये। जार्जने टिकट लेने जानेके समय टिकट घरमें सुना कि एक व्यक्ति दूसरे आदमीसे कह रहा है—भाई, सब यात्रियोंको भली-भाँति देख चुका हूँ, विशेष परीक्षा भी कर चुका हूँ, इन लोगोंमें आपके पलातक नहीं हैं। इसके पश्चात् जार्जने देखा कि यह बात मार्कसे जहाजका कप्तानी कह रहा है।

मार्कने कहा—वे देखनेमें श्वेताङ्ग अँगरेजकी भाँति हैं। किन्तु पुरुषके हाथ पर एच० [H] अक्षर छपा हुआ है।

जार्ज इस समय हाथ बढ़ाकर टिकट ले रहा था। उसका हाथ काँप उठा, किन्तु आत्म-संवरण-पूर्वक वह धीरे-धीरे इलाइजा और मिसेज स्मिथके पास आया। मिसेज स्मिथ

हेरीको लेकर स्त्रियोंके विभागमें चली गयीं। अब जहाजकी सीटी बजी। जार्जके हृदयमें आनन्द-श्रोत प्रवाहित होने लगा। मार्क निरास मनसे दीर्घ निस्वास छोड़ता हुआ, धीरे-धीरे जहाजपरसे किनारे आया। वह मन-ही-मन सोचने लगा, वकालतके व्यवसायमें अनिश्चित आय है, यह समझकर मैंने उसे छोड़ दिया और प्रकारान्तरसे उसी देश-प्रचलित आइनके गौरवरक्षार्थ यह नूतन व्यवसाय ग्रहण किया, किन्तु इससे भी देखता हूँ कि कोई बहुत लाभ नहीं है। यह सोचकर मार्क हतोत्साह स्वदेश लौट आया।

दूसरे दिन जहाजने अमहर्स्ट नगरमें आकर लंगर डाला। जार्ज इलाइजा आदि सबके सब किनारेपर आये। स्वाधीन भूमिपर पदार्पण करते ही उनका हृदय आनन्द-रससे आप्लावित हो उठा। आज उनकी दासताका अन्त हुआ। आज जार्जके स्त्री-पुत्र उसके हुए। आज उसको मानवोचित सम्पूर्ण अधिकार प्राप्त हुए। स्वामी तथा स्त्री दोनोंने एक दूसरेका प्रेमपूर्वक गाढ़आलिङ्गन किया। दोनोंके नेत्रोंसे आनन्दाश्रुओंकी धारा बह चली। दोनों घुटनोंके बल बैठकर उच्चस्वरसे ईश्वरके प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए यह धर्म-गान गाने लगे—

प्रभु तुम हो भवसागरके पोत।
कौन बचावै दीन जनोंको तुम बिन हे करुणाश्रोत॥
घोर निराशा अन्धकारमें तजते थे जो जन प्रान।
प्रकट कियो अब प्राचीदिशिमें, तिनको शुभ सौख्य-सुभान।
हो कातर दुखसे प्रभुवर इक, दिन करते थे तव ध्यान।
हो आनन्द-मग्न अब ध्याते हैं, हे दीनबन्धु भगवान॥
तव करुणा पा हे भक्त-सदय, जन्मसिद्ध यह पर दास।
मुक्त कंठसे करता है अब, परवशताका उपहास॥

प्रार्थना समाप्त होनेपर मिसेज स्मिथ इन लोगोंको एक धर्म-प्रचारकके घर ले गयीं। वे वहाँ रहकर इसी प्रकारके भागे हुए निराश्रय दास-दासियोंको आश्रय-दान देते थे।

जार्ज और इलाइजाको आज जितना आनन्द है, उसका वर्णन क्या भाषा-द्वारा किया जा सकता है? आज रात्रिमें उनके नेत्रोंमें नींद नहीं। सम्पूर्ण रात्रि आनन्दोच्छ्वास तथा आमोद-प्रमोदमें बीत गयी। एकबार भी यह न सोचा कि भविष्यमें जीवन-यापनका कौनसा मार्ग होगा। इनके घर नहीं, द्वार नहीं, ठहरनेका कोई ठिकाना नहीं। कल क्या खायेंगे, इसका भी कोई ठिकाना नहीं। तो भी आज स्वाधीनता प्राप्त की है, दासत्व-श्रृङ्खलासे मुक्त हुए हैं, यह जानकर इनके आनन्दकी सीमा नहीं है। वास्तवमें मानवजीवनमें स्वाधीनताके अतिरिक्त क्या और कोई अमूल्य रत्न है? किन्तु जो प्रभुत्व प्राप्त करनेके लिए, अथवा अर्थ-लोलुपतासे मनुष्य-समाजको इस अमूल्य रत्नकी प्राप्तिसे वञ्चित करते हैं, जो लोग व्यक्ति विशेष अथवा जाति विशेषकी स्वाधीनताकी जड़में कुठाराघात करते हैं, जो लोग एकाधिपत्य स्थापित करनेके लिए यथोपयुक्त अधिकारोंसे मानव-सन्तानको वंचित रखनेकी अनधिकार चेष्टा करते हैं, वे एक न एक दिन अवश्यमेव परमपिता परमात्माके कठिन कोपानलमें पड़कर भस्मीभूत होंगे। पीढ़ी-दर-पीढ़ी उनको इस पापका फल भोगना पड़ेगा।

इकतालीसवाँ परिच्छेद

——*——

जयोल्लास

मृत्यु क्या सभी अवस्थाओंमें कष्टकर ज्ञात होती है ? इस दु:खमय संसारमें समय-समयपर अनेक लोग तो मृत्युकी कामना करते हैं, उनको तो मृत्यु कष्टकर ज्ञात नहीं होती। धर्म-वीरोंने अनेक अवसरोंपर प्रसन्नता-पूर्वक मृत्युका गाढ़ आलिङ्गन किया है। सत्यके लिये, धर्मके लिए, संसारमें न्याय-व्यवहार स्थापित करनेके लिए, कितने ही धर्मवीर तथा साधु-स्वभाव सज्जनोंने अम्लान मुख हो प्राण-विसर्जन किये हैं। उस समय क्या उन लोगोंको मृत्यु कष्टकर बोध हुई थी ? कदापि नहीं। पूर्ण विश्वास द्वारा एक बार उत्तेजित होने पर, हृदयस्थित उच्छ्वसित धर्मावेग और प्रेमानुरागके कारण मनुष्य आत्मविस्मृत हो जाता है। उस समय उसका बाह्य-ज्ञान सर्वथा शून्य हो जाता है, किसी प्रकारका भी शारीरिक कष्ट उसकी अन्तरात्माको स्पर्श नहीं कर सकता।

किन्तु प्रति दिन जो मारका कष्ट सहन करता है, अत्याचारीगण क्रमशः एक-एक बूँद रक्त-चूसकर जिसकी परमायु समाप्त करते हैं, निष्ठुराचरण द्वारा जिसके हृदयस्थित दया-माया और न्याय सर्व प्रकारके सद्भाव क्रमशः विनष्ट हो रहे हैं, उनकी मृत्यु क्या कष्ट कर नहीं है ? इनकी अपेक्षा कष्टकर मृत्यु क्या संसारमें और किसी की है ?

नर-पिशाच लेग्री जब टामको मारता, "तेरा प्राण ले

लूँगा" कहकर उसे धमकाता, तब टाम मनमें सोचता कि इसी समय मुझे संसार-त्याग करना पड़ेगा। इसी क्षण मृत्यु आकर मेरी सारी यन्त्रणायें, मेरे सारे कष्टोंका अन्त कर देगी, इसलिए भयभीत होनेका कोई कारण नहीं। इसी जीवन्त-धर्म-विश्वाससे उत्तेजित होकर, वह धर्म-वीरोंकी भाँति निर्भयतासे लेग्रीके सम्मुख खड़ा हो जाता, एवं "ईसाके दृष्टान्तका अनुसरण करूँगा" यह सोचकर बड़ा प्रसन्न होता। किन्तु मार चुकनेपर जब लेग्री उसके पाससे चला जाता, जब वह देखता कि उसका पूर्णतया प्राणान्त नहीं हुआ, तो हृदयस्थित वह उच्छ्वसित धर्म-वेग, मार खानेके समयका वह उत्तेजित-भाव, धीरे-धीरे शान्त हो जाता था। उस समय मारके कष्टका ज्ञान होता; शरीर अवसन्न हो जाता और उसके साथ ही साथ अन्तरात्मा भी अवसन्न हो जाती। हृदयमें निराशाका उदय होता। अपनी दुरवस्थाका स्मरण होते ही हृदयमें दुर्विसह यंत्रणानल प्रज्वलित हो उठता था।

पहिले दिनकी मारसे ही टामका शरीर स्थान-स्थानपर क्षत-विक्षत हो गया, एवं वह अत्यन्त दुर्बल और रुग्ण हो गया था। किन्तु बीमारीसे आरोग्य-लाभ करनेके पूर्व ही लेग्रीने उसे खेतका नियमित कार्य करनेके लिए बाध्य किया। वह प्रतिदिन उसी रुग्णावस्थामें ही अन्यान्य कुलियोंके साथ खेतमें काम करने जाने लगा। इस दुर्बलावस्थामें भी वह प्राण-पनसे काम करता था, किन्तु परिदर्शक गण केवल अपनी-अपनी हिंसावृत्ति चरितार्थ करनेके लिए कभी-कभी उसे बेत लगाते थे। ऐसा निष्ठुराचरण क्या कोई सहिष्णुताके साथ सहन कर सकता है? टाम स्वभावतः अतिशय शान्त प्रकृतिका मनुष्य था। उसके धैर्य और सहिष्णुताकी सीमा न थी। किन्तु साम्बो और क्ुइम्बोका

निष्ठुराचरण कभी-कभी उसको असहिष्णु बना देता था। अब टामने जाना कि लेग्रीके खेतके कुली लोग क्यों इस प्रकार मनुष्यत्व-हीन तथा दुश्चरित्र हो गये हैं? क्यों उनका हृदय केवल द्वेष, हिंसा, स्वार्थपरता एवं निष्ठुरतासे पूर्ण है? किस कारण उनके जड़ हृदयोंमे सहानुभूतिका प्रकाश प्रवेश नहीं कर पाता। उसने सहजमें ही समझ लिया कि कुलियोंकी यह दुरवस्था निष्ठुराचरणके अवश्यम्भावी फलके अतिरिक्त और कुछ नहीं है। किन्तु उसके हृदयमें बड़े भयका संचार हुआ। वह सोचने लगा कि यही निष्ठुराचरण समयान्तरमें मुझे भी प्रकृति भ्रष्ट कर सकता है। क्षणभरका भी अवकाश पाते ही वह बैठकर अपनी जीर्ण बाइबिल पढ़ने लगता, किन्तु आज-कल कामकी बहुत भीड़ है। पलमात्रका अवकाश नहीं। रविवारको भी खेतमें काम करना पड़ता है। कपास चुननेके कई महीनोंमें रविवारको भी लेग्रीने कुलियोंको छुट्टी नहीं दी। देगा ही क्यों? धर्मसे उसका कोई सम्पर्क तो है नही। कपासका खेत ही उसका एकान्त भजनालय था और अखण्ड-मण्डलाकार ही उसके एक आराध्य देवता थे।

पहिले टाम खेतसे लौटनेपर प्रतिदिन भोजन बनाते समय, चूल्हेकी अग्निके प्रकाशमें अपनी बाइबिलसे दो-चार उपदेश पढ़ा करता था। किन्तु आजकल उसका शरीर नितान्त दुर्बल हो गया है। खेतसे लौटनेपर वह एक क्षणभर भी बैठ नही सकता। घर आते ही क्लान्त होकर सो जाता, एवं उसका शरीर वेदनासे अस्थिर हो जाता है।

आश्चर्यका विषय तो यह था कि टामका धर्म-विश्वास भी कभी-कभी विचलित सा हो जाता था। जिस धर्मविश्वासके कारण आजीवन वह किसी कष्टको कष्ट नहीं समझता था, किसी दुःखको दुःख नहीं गिनता था, उसी अदृश्य

धर्म-विश्वासके निष्ठुराचरणसे परास्त होनेकी तैयारी हुई। अज्ञात, तमसाच्छन्न जीवन-पहेलिकाके सम्बन्धमें कभी-कभी उसके मनमें अनेक प्रकारके प्रश्न उठने लगे। उसका हृदय, तथा उसका मन अवसन्न होने लगा। उसने आत्मासे प्रश्न किया—जगत्पिता कहां हैं ? वे चुप-चाप क्यों हैं ? सचमुच ही क्या पापकी जय होगी ! इस प्रकारके प्रश्न उपस्थित होनेपर वह तुरंत सोचने लगता-नहीं, दीनवन्धु, मुझे कदापि न भूलेंगे ! बहुत सम्भव है कि मिस अफिलियाका पत्र पाते ही कोई न कोई केन्टाकीसे आकर मेरा उद्धार करे। इसी भाँति चिन्ता करते-करते आकुल चित्तसे वह ईश्वरसे अपने उद्धारार्थ प्रार्थना करने लगता। प्रतिदिन प्रातः काल उठकर वह आशासे पथकी ओर घंटों देखा करता और सोचता कि सम्भवतः आज कोई मेरा उद्धार करनेके लिए केन्टाकीसे आवेगा। किन्तु जब दिन-पर-दिन बीतने लगे और केन्टाकीसे कोई न आया, तब उसके मनमें फिर वही प्रश्न उठने लगा—क्या ईश्वरने मुझे छोड़ दिया ?

इसी समय कभी-कभी टामके साथ कासीका साक्षात् होने लगा एवं कभी-कभी, जब वह कार्यवशतः घरमें जाता तो एमलिनका नैराश्यपूर्ण परिशुष्क मुख-कमल देखता, किन्तु वह किसीसे कुछ बोलता न था। वास्तवमें तो उसे किसी-से कुछ कहने-सुननेका अवकाश ही न था।

एक दिन संध्याके पश्चात् खेतसे आते ही टाम एकदम क्लान्त हो पड़ा। वह उसी क्षण भूमिपर गिरकर लोटने लगा। आज उसमें उठनेकी शक्ति तनिक भी न थी। लेटे-लेटे ही वह अपनी रोटी बनाने लगा। उसी समय बाईबिलसे दो एक उपदेश पढ़नेकी इच्छा हुई। चूल्हेमें दो-चार लकड़ीकें टुकड़े फूँककर अग्नि जलायी एवं अपने जेबसे बाइ-

बिल निकाली, बाइबिलके जिन-जिन अंशोको पढ़नेसे उसके हृदयमें विशेष उल्लास होता, आशाका संचार होता, हृदय, दृढ़ विश्वाससे पूर्ण हो जाता, वे सब चिहित थे। दो-एक उपदेश पढ़ते-पढ़ते उसने अपने मनमें यह प्रश्न किया—पृथ्वी क्या शून्य हो गयी? यह धर्म-शास्त्र क्या भग्न-हृदयोंको बल प्रदान नहीं करता? ज्योति-हीनको क्या ज्योति-प्रदान न करेगा? इन प्रश्नोंके उठते ही उसने दीर्घ-निस्वास छोड़कर बाइबिल बन्द कर दिया। पुस्तक बंद करते ही,पीछे उसने एक विकट हंसीका शब्द सुना। तब पीछेसे घूमकर उसने देखा कि लेग्री खड़ा है। लेग्री कह उठा—क्यों, अब समझे! इस धर्मसे तेरा कुछ भी उपकार न होगा? मैंने तो पहिले ही कहा था कि तेरा यह सब धर्मज्ञान दूर कर दूँगा।

लेग्रीके,धर्मकी इस प्रकार दिल्लगी उड़ानेसे टामके हृदयको बड़ी चोट लगी। इससे उसे इतना कष्ट हुआ, जितना कि इधर कई दिनकी क्षुधा-तृष्णासे भी नहीं हुआ था।

लेग्रीने पुनः कहा—तू बिल्कुल गधा है। तुझे खरीदनेके समय मैंने सोचा था कि किसी उच्चपदपर रखूँगा? यहाँ तक कि साम्बो,कुइम्बोसे भी अधिक ऊँचा पद देनेका विचार मैंने किया था, किन्तु अब तो तुझे मेरे चाबुकका शिकार बनना पड़ेगा। हाँ, यदि अबसे भी तू मेरी बात मानकर उसीके अनुसार चलने लगे, तो जहाँ तू चाबुक खाता है, वहाँ दूसरेको तू स्वयं चाबुक लगा सकता है। बीच-बीचमें मैं तुझे कभी-कभी ह्विस्की अथवा ब्रांडी भी दे दिया करूँगा। अब भी कहता हूँ कि यह सब पाखण्ड छोड़ दे। अपनी फटी-पुरानी किताब इसी चूल्हेकी आगमें जलादे और मेरा धर्म ग्रहण करले।

टाम-ईश्वर, मुझे ऐसी बुद्धि कभी न दें।

लेग्री-अब तो तू समझ गया न, कि तेरा ईश्वर तेरी सहायता न करेगा। वह यदि तेरी सहायता करना चाहता तो तू मेरे हाथ पड़ता ही क्यों ? तेरी प्रार्थना, तेरा यह धर्म-कर्म सब ढोंग है। अपना भला चाहता हो तो, जो कुछ मैं कहता हूँ, उसे सुन। मैं एक सामर्थ्यवान आदमी हूँ, मैं तेरा अनेक उपकार कर सकता हूँ।

टाम—मै अपना संकल्प न छोड़ूँगा ईश्वर मेरी सहायता करें, चाहे न करें, मैं उनके चरणोंमें ही पड़ा रहूँगा। अन्त समयतक उनमें अटल विश्वास रखूँगा।

लेग्री घृणाके साथ उसके शरीरपर थूककर एक लात जमाकर बोला—तू बिल्कुल ही मूर्ख है। जो हो, मैं तुझे छोड़ूँगा नहीं। तुझे परास्त करूँगा ही, कहकर लेग्री चला गया।

जिस समय यंत्रणाके गुरुभारसे आत्मा नितान्त अवसन्न हो जाती है, धैर्य एकदम सीमाके बाहर चला जाता है, उस समय शरीर तथा मनके प्रति स्नायु उस भारको दूर करनेके लिए एकबार शेष साहस तथा उत्साहसे उत्तेजित हो उठते हैं। इसलिए प्रायः घोरतर मानसिक यातनाका अन्त होते ही हृदयको आनन्द और साहसके श्रोतमें प्रवाहित होते ही देखा जाता है। टामके सम्बन्धमें भी यही घटित हुआ। निष्ठुर स्वामीके उस व्यंगने उसके दुःख-भाराक्रान्त हृदयको और भी अधिक अवसन्न कर दिया। विश्वासके हाथसे वह उस अनन्त, अटल आश्रय पर्वतको बड़ी दृढतासे पकड़े हुए था, किन्तु आज उसका वह हाथ भी निराशामें नितान्त असक्त हो गया। टाम संज्ञा-शून्यकी भाँति उसी चूल्हेके बगलमें बैठा रहा। सहसा उसके चारो ओरके पदार्थ विलीनसे हो गये; एवं उसके सन्मुख कण्टकमुकुट भूषित, रक्ताक्त,

आहत यीशुकी मूर्ति आ उपस्थित हुई । टाम भय तथा विस्मयके साथ उस मुखके सहिष्णु-भावकी निरीक्षण करने लगा । यीशुके उन दोनों गंभीर, करूणोद्दीपक नेत्रोंने टामके हृदयके अन्तस्तलको स्पर्श किया । उसकी अवसन्न, मुमूर्षु आत्मा जाग उठी । वह दोनों हाथ आगेकी ओर पसार-कर घुटनोंके बल बैठ गया । उसी समय धीरे-धीरे वह मूर्ति परिवर्तित होने लगी । उसका तीक्ष्ण कन्टक-समूह गौरवकी किरण-रेखाओंमें परिणत हो गया । अननुभवनीय प्रभा-मण्डलसे परिवेष्टित वह मुख, स्नेहार्द नेत्रोंसे उसकी ओर देखने लगा । उस कण्ठ-कुण्डसे वचन-सुधा निकली । टामने सुना—मैं जिस प्रकार इस संसारकी यंत्रणा और अत्याचारपर जय-लाभकर पिताके साथ एक सिंहासनपर बैठता हूँ, उसी प्रकार इस पृथ्वीपर पाप और अत्याचारपर विजय-प्राप्त करनेवाले लोग मेरे साथ एक सिंहासनपर बैठनेके अधिकारी हो सकते हैं ।

टाम जब स्वस्थ हुआ, तो उसने देखा कि रात्रि बहुत बीत गयी है । रात्रिकी ओससे उसके पहिननेके कपड़े भीग गये हैं, तथा उसका शरीर शीतार्त हो रहा है । कब तक वह इस अवस्थामें पड़ा रहा, यह उसे स्मरण नहीं था । उसकी आत्माका वह संकट-काल निकल गया, उसका हृदय एक अपूर्व आनन्दकी धारासे परिपूर्ण हो गया है, उसी आनन्दके उच्छ्वाससे वह क्षुधा, तृषा, शीत, अपमान, नैराश्य, यंत्रणा सभी भूल गया । इस जीवनके सम्पूर्ण आशाओंसे विनिर्मुक्त हो उसीक्षण अपनी इच्छा-शक्तिको उसने अनादि-देवके श्री चरणोंमें उत्सर्ग कर दिया । टाम तब आकाशकी उज्ज्वल तारकावलीकी ओर दृष्टि करके गम्भीर आत्मानन्दसे पूर्ण हो

नैशाकाशको प्रतिध्वनित करता हुआ यह गीत गाने लगा—

"तुहिन समान गले यह पृथ्वी,
रवि-किरणोंका भी हो जावे अवसान।
तो भी हे परम पिता मेरे,
हूँगा मैं तेरा, तू मेरा भगवान॥
मृत्युलोकके जीवन का अन्त-
होगा इस जड़ शरीरका भी जब नास।
ब्रह्मानन्द-मग्न जब इन्द्रियाँ—
होंगी, तब शान्तितालमें करूँ निवास॥
रहकर वर्ष सहस्र वहाँ पर,
बना दीप्तमान मैं नित भानु समान।
गाता रहूँ वही निरन्तर,
जो था आरम्भ-कालमें मेरा गान॥

उपर्युक्त घटनाकी भाँति आश्चर्यकरी घटनायें धर्म-विश्वासी दासोंमें प्रायः। संघटित हुआ करती हैं। मनोविज्ञानवेत्ता विद्वानोंने कहा है-अवस्था-विशेषमें मनका भाव और कल्पना-समूह इतना उत्तेजित एवं प्रबल हो उठता है, कि उस समय वह सम्पूर्ण बाह्येन्द्रियोंको अपने अधिकारमें कर लेता है। मनके कल्पित पदार्थको इन्द्रिय-गोचर एवं बाह्याकार-विशिष्ट कर देता है। सर्वव्यापी परमेश्वर मनुष्यों को ये शक्तियाँ देकर उसके जीवनमें कितनी घटनायें संघटित कर सकते हैं, क्या इसकी कोई गिनती कर सकता है? किस उपायसे वे असहाय,निराशा-भग्न आत्मामें नव-बलका संचार कर देते हैं, उसका क्या कोई निर्णय कर सकता है? यदि यह दुखी, अज्ञान दास विश्वास करे, कि प्रभु यीशु उसके सम्मुख प्रकट हुए थे, तथा उससे वार्तालाप किया था, तो क्या कोई उसका प्रतिवाद करेगा?

दूसरे दिन प्रातःकाल जब सब दास खेतको चले, तब जीर्ण-वसन, खिन्न-देह, शीत-कम्पित हतभाग्योंमें केवल एक आदमी बड़े उल्लासके साथ आगे पैर बढ़ाकर जा रहा था, क्योंकि ईश्वरके अनन्त-प्रेमपर उसका अटल विश्वास हो गया है। लेग्री ! तुझमें जितनी क्षमता है, उन सबका प्रयोग करके देख ! निदारुण यन्त्रणा, शोक, अपमान, अभाव आदि सभी इसके लिए शान्ति-निकेतनकी सीढ़ियाँ होकर इसे स्वर्ग-द्वारकी ओर आगे बढ़ानेमें सहायक होंगी।

इस समयसे टामका उत्पीड़ित हृदय शान्तिसे पूर्ण हो गया। नित्य विराजमान, पावन-स्वरूप परमात्माने उसके हृदयको अपना पवित्र मंदिर बना लिया। इस जीवनके उस मर्मान्तिक परितापका अन्त हो गया। इस जीवनकी आशाओं, भय तथा आकाङ्क्षाओंका आन्दोलन शान्त हुआ। प्रति क्षण संग्राम-संलग्न रुधिराक्त मानवी इच्छा पूर्णरूपेण ईश्वरीय इच्छामें विलीन हो गयी। टामको अपनी जीवन-यात्राके शेष दिन इतने थोड़े प्रतीत होने लगे, अनन्त शान्ति, अनन्त सुख, इस समय निकटस्थ हो, इतने स्पष्ट जान पड़ने लगे, कि जीवनके दुःसहतम कष्ट भी उसके हृदयको रञ्चमात्र दुखित न कर सके।

सब लोग उसके बाह्याकारके परिवर्त्तनको लक्ष्य करने लगे। उसका मुख सदैव प्रफुल्लित रहता है। सभी कार्योंमें उसकी शीघ्रता दिखाई पड़ती है। धैर्य, सहिष्णुता तथा शान्तिके साथ वह अत्याचार और निष्ठुर व्यवहारका सामना करने लगा। कुछ भी उसे उद्विग्न अथवा उत्कंठित नहीं बना सका। यह देखकर लेग्रीने एक दिन साम्बोसे कहा—टामके सिरपर क्या भूत सवार है ? कुछ दिन पहिले तो यह नितान्त

दुर्बल हो गया था, एक दम निराश हो गया था, पर अब भली-भाँति काम-काज करता है।

साम्बो—इसका कारण, मैं नहीं समझ सकता। ज्ञान पड़ता है, भाग जानेकी चेष्टा कर रहा है।

लेग्री—एकवार भागनेकी चेष्टा करता, तब तो अच्छा ही होता। मैं भी यही चाहता हूँ।

साम्बो—ज्ञान पड़ता है, यही हम लोगोंको देखना पड़ेगा। निश्चय ही वह भागनेकी चेष्टा कर रहा है। भागनेपर शिकारी कुत्तोंसे पकड़वा लूँगा। एक वार जब वह भोली दासी भागी थी, तब कैसा तमासा हुआ था। मेरा तो हँसते-हँसते पेट फूलने लगा था। शिकारी कुत्तोंने उसे जाकर पकड़ लिया था, और मेरे वहाँ पहुँचनेके पहिले ही उन्होंने उसका शरीर नोच डाला था। मुझे तो देखकर बड़ी हँसी आयी थी।

लेग्री—ज्ञान पड़ता है, लूसी शीघ्र ही कब्रमें सोयगी। देख, साम्बो! ज्योंही किसी दास-दासीको इतना-प्रसन्न पाओ, त्योंही उसे ठीक करने की चेष्टा करो।

साम्बो—उसकी आप चिन्ता न करें, मैं स्वयं सब ठीक करलूँगा।

लेग्री, सायंकाल किसी समीपवर्त्ती शहरमें जानेके समय ये सब बातें साम्बोसे कह रहा था। उसने सोच रक्खा था कि शहरसे लौटते समय दासोंके झोपड़ोंका निरीक्षण करता आऊंगा। निश्चयानुसार लौटते समय ज्योंही वह झोपड़ोंके पास पहुँचा कि उसे गानेके शब्द सुनायी पड़े। वह वहीं ठहर कर सुनने लगा। टाम गा रहा था:—

"देखूँगा जब लिखा हुआ अपना भी नाम।
मैं उस स्वर्ग-द्वारपर शोभाधाम ललाम॥

भीति भावनाको करदूँगा विदा तुरन्त।
नेत्रोंकी अश्रु-धारका कर दूँगा अन्त ॥ १ ॥
हो विपक्ष यदि पूर्णधरा भी लड़ने आये।
घाग सहस्रों बनकर क्रुद्ध नर्क बरसाये ॥
देखूँ निर्भय चितसे भूका भृकुटी विलास।
होवे यदि शैतान गिनूँगा तुच्छ सहास ॥ २ ॥
चिन्ता नहीं तनिक भी आवे प्रलय-समुद्र।
चाहे शोक-वायुका वहे झकोरा रुद्र ॥
इनका नहीं रहेगा मुझको कुछ भी ध्यान।
मिले यदि गेह-स्वर्ग, पिता भगवान् निदान ॥ ३ ॥"

यह गाना सुनकर लेग्रीने मन ही मन कहा—हँहँ! शाला समझता है कि मैं स्वर्ग जाऊँगा। ये सब गाने सुनकर मेरे कान जलने लगते हैं। टामके सामने जाकर चाबुक तानते हुए कहा—रातमें बाहर बैठकर यह गड़बड़-सड़बड़ क्यों बकरहा है? इसी क्षण घरके भीतर जा, अपना यह सब पचड़ा बंदकर।

टाम अति नम्रता-पूर्वक प्रसन्न वदनसे "जो आज्ञा प्रभुकी" कहकर भीतर जाने लगा। टामको इस प्रकार प्रसन्न मुखसे बात-चीत करते देखकर लेग्रीके क्रोधकी सीमा न रही। उसने उसी क्षण टामके कँधे तथा पीठपर चाबुक लगाते हुए कहा—क्यों वे कुत्ते इस समय कैसी चैनकी बंशी बज रही है।

चाबुककी यह ताड़ना टामके हृदयको स्पर्श तक न कर सकी। उसे इससे कुछ भी कष्ट न हुआ। उसकी आत्मा जीवन-मुक्त हो गयी है। उसका यह पञ्चभौतिक शरीर आत्मासे विच्छिन्न हो गया है। इसलिये ऊपरका कोई भी कष्ट उसे कष्टकर नहीं ज्ञात होता। वह विनीत भावसे खड़ा रहा। लेग्रीने समझ लिया कि अब इसके ऊपर प्रभुत्व संस्थापनकी आशा करना दुराशा मात्र है। उसकी समझमें आया कि

ईश्वरही मेरे अत्याचारोंसे इसकी रक्षा कर रहा है। इसलिए वह ईश्वरको ही गाली देने लगा। विद्रूप, भय-प्रदर्शन, वेत्राघात एवं अन्यान्य निष्ठुराचरणआदि कुछ भी टामकी हृदयस्थित शान्तिका विनाश न कर सके। इसको विनीत-भाव एवं प्रफुल्ल चित्तसे दिन व्यतीत करते देखकर, लेग्री किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गया। पूर्व कालमें जिस प्रकार यीशुके उत्पीड़कोंने, उसे प्रसन्नताके साथ सब कष्टोंको सहते देखकर कहा था—"यीशु, क्या तुम असमयमें ही हमलोगोंके हृदयानलको प्रज्वलित करोगे"? उसी प्रकार लेग्रीके मनमें भी आज यही भाव उदित हुआ। लेग्री टामको कष्ट देनेके अभिप्रायसे बेत लगाता, किन्तु उससे टाम कुछ भी दुखी न होता, अतएव यह देख कर उसका हृदय स्वयं ही यन्त्रणानलमें विदग्ध होने लगा।

लेग्रीके खेतमें अन्यान्य जो दीन-दुखी कुली लोग थे, उनकी दुर्दशा देखकर टामके हृदयको दारुण दुख होने लगा। उसका आत्म-कष्ट नष्ट हो चुका है,' उसने स्वर्गीय शान्तिलाभ कर ली है। अब वह इस शान्तिका कुछ अंश उन दीन-दुखियोंमें भी वितरण करनेका उपाय सोचने लगा। अन्यान्य कुलियोंके साथ धर्मालाप करने तथा धर्मकथा कहनेका क्षण भर भी अवकाश न मिलता था। हाँ, खेतमें काम करनेके लिए जानेके समय तथा सायंकाल कामपरसे लौटनेके समय अवश्य एक सुयोग था। इस सुयोगमें ही टामने, इन हतभाग्योंके साथ, धर्म-चर्चा करनी आरम्भ की। पहिले तो उसके इस सदभिप्रायका मर्म कोई भी न समझ सका, किन्तु क्रमशः उन कुलियोंका वह वज्र-हृदय पिघलने लगा। टाम प्राण-पनसे, शक्तिभर, इन लोगोंका शारीरिक कष्ट-निवारण की चेष्टा करने लगा। वह कभी-कभी स्वयं भोजन न करके, अपने आहार्य पदार्थ दूसरेको दे देता, कभी किसी

रुग्ण, शीतार्त कुलीकी यन्त्रणा देखकर, अपना फटा-पुराना कम्बल उसे दे देता और स्वयं यों ही भूमिपर पड़ा रहता, कभी किसी दुर्बल स्त्रीको कपास चुननेमें असमर्थ देखकर अपनी झोलीमेंसे कपास निकालकर उसकी झोलीमें डाल देता। इससे मेरे पीठकी पूजा होगी, इसकी चिन्ता वह कुछ भी न करता था।

उसका ऐसा आचरण देखकर धीरे-धीरे सब कुलियोंका हृदय उसकी ओर आकृष्ट हुआ। कुछ दिनोंके पश्चात् ही कपास चुननेका समय समाप्त हो गया। इसलिए अब कुलियोंको उतनी दूर जाना भी न पड़ता था। अब उन लोगों को पर्याप्त अवकाश मिलता था। इस समय प्रायः वे सभी टामके पास जाकर धर्म-कथा सुनते, टामके साथ मिलकर प्रार्थना करते।

इधर लेग्री किसीको प्रार्थना न करने देता। वह ज्योंही सुन पाता कि कुलीलोग टामके साथ धर्मालोचना कर रहे हैं, त्यों ही आकर उनको पीटने लगता। इससे उन लोगोंकी धर्मालोचनाकी तृष्णा और भी प्रबल हो उठी। वास्तवमें कभी-कभी धर्म-विद्वेषी लोग भी धर्म-प्रचारमें सहायक होते हैं।

अत्याचार और निष्ठुरताके कारण लूसीके हृदयका धर्म-भाव एक दम विनष्ट सा हो गया, किन्तु टामके उपदेश और धर्म-संगीतसे उसके विश्वासका पुनरोदय हुआ। दूसरेकी बात तो दूर रही, उस प्रतिहिंसा-परतन्त्र, उन्मत्त कासीके विक्षुब्ध हृदय तकमें भक्ति, विश्वास और प्रेमका संचार होने लगा।

कासीका हृदय पहिलेसे ही दुस्सह दुखाग्निसे जल रहा था। सन्तान-शोकमें वह प्रायः विक्षिप्त हो गयी थी। उसने अपने मनमें स्थिर किया था कि एक न एक दिन सुयोग

पाते ही इस अत्याचारी लेग्रीके निष्ठुराचरणका प्रतिफल प्रदान करूँगी।

एक दिन गम्भीर रात्रिमें जब टामके गृहस्थित सभी लोग विनिद्रित हो रहे थे, उस समय टामने देखा कि बाहरसे कासी उसे अपने पास आनेका संकेत कर रही है। टाम बाहर आया। रात्रिके प्रायः दो बजे हैं। समस्त भूमि-प्रान्त चन्द्र-ज्योत्स्ना-मंडित हो रहा है। टामने कासीके मुख-मण्डल पर आशा और उत्साहका भाव व्यंजित पाया।

कासीके मुखपर टाम सदैव निराशाका भाव ही देखता था, किन्तु आज उस निराशाका कहीं चिह्न भी उसे दिखायी न पड़ा।

कासी अत्यन्त व्यस्तताके साथ टामके कटि-प्रदेशमें हाथ डालकर खींचते खींचते बोली—पिता टाम! इधर आओ। तुमसे एक विशेष बात कहनी है।

टाम—कौनसी बात मिस कासी?

कासी—स्वाधीन होनेकी इच्छा करते हो?

टाम—ईश्वर जब देगा, तब स्वाधीनता पाऊँगा।

कासीने उल्लास से कहा—तुम आज रातको ही स्वाधीनता पा सकते हो। इधर आओ।

कासी धीरे-धीरे टामके कानमें कहने लगी-अब भी सो रहा है। नींद शीघ्र न टूटेगी। ब्रान्डीमें अहिफेन मिला दिया है। इधर आओ! पिछवाड़े द्वार खुला हुआ है। वहाँ एक कुदारी मैंने पहिलेसे ही रखली है। उसके शयनागारका द्वार भी खुला हुआ है, मैं तुम्हें मार्ग दिखाये देती हूं। मैं स्वयं ही कार्य-साधनकर सकती हूं, किन्तु मेरी बाहुओंमें इतना बल नहीं है। आओ, आओ।

टाम—कभी नहीं, कभी नहीं। संसारका राज्य पानेपर भी नहीं। ऐसा पाप-कर्म मैं कदापि न करूँगा।

कासी—किन्तु इन सब हतभाग्योंकी दुरवस्था देखते हो न। मैं इन लोगोंको दासत्वसे मुक्त कर दूँगी एवं इसके पश्चात् किसी एक द्वीपमें जाकर हम सब लोग एकत्र होकर रहेंगे।

टाम—नहीं। इस कर्मका कोई उत्तम फल न मिलेगा। यदि कोई मेरा यह दाहिना हाथ काट डाले, तो भी यह कार्य न करूँगा।

कासी—अच्छा, तो मैं स्वयं ही करूंगी।

टाम—ओह मिसकासी, ऐसा पतित कार्य कभी न करना। इसका फल कदापि उत्तम नहीं होगा। लाख कष्ट सहो, किन्तु ईश्वरके लिए ऐसे पाप-कर्मसे अपना हाथ कलंकित न करो। आह मिस कासी! ऐसा कार्य न करना। नहीं, नहीं, तुम एक दम पाप-सागरमें डूब रही हो। देखो, प्रभु यीशु खीष्टने अम्लान वदन हो, अपना रक्त दिया, किन्तु उन्होंने किसीका रक्त-पात नहीं किया। हमें अपने शत्रुके साथ प्रेम करना होगा।

कासी—प्रेम करूँगी। ऐसे शत्रुसे भला मैं कभी प्रेम कर सकती हूँ। क्या मेरा शरीर रक्त-मासका नहीं है?

टाम—जब हम शत्रुको क्षमा कर सकेंगे, उसकी मंगल-कामनाके लिए ईश्वरके सम्मुख नत-मस्तक हो सकेंगे, तभी हम लोगोंको विजय-प्राप्ति होगी!

यह कहकर टाम अश्रु-पूर्ण नेत्रोंसे स्वर्गकी ओर देखने लगा।

टामका ऐसा हृदय-ग्राही उपदेश सुनकर कासीका हृदय पीघल गया। वह कहने लगी—पिता टाम! मैंने तो पहिले ही कह दिया है कि मेरे सिरपर भूत सवार है। पिता टाम, मैं कभी प्रार्थना नहीं कर सकती। मेरी दो सन्तानें बेच दी गयी

हूँ, अब मैं प्रार्थना नहीं कर सकती। तुमने जो कुछ कहा है; वह सब सत्य है; किन्तु मेरा हृदय ऐसी प्रतिहिंसासे परिपूर्ण हो रहा है कि प्रार्थना आरम्भ करते ही आँसुओंके स्थान पर मेरे नेत्रोंसे हृदयस्थित विद्वेषानल प्रज्ज्वलित हो उठती है।

टाम--हाय, तुम्हारे आत्माकी कैसी शोचनीय अवस्था है। मैं तुम्हारे कल्याणके लिए ईश्वरसे प्रार्थना करूंगा। "ईश्वरकी ओर तुम्हारा मन आकृष्ट हो।"

कासी अश्रु-पूर्ण नेत्रों सहित खड़ी रही। टामने फिर कहा--मिस कासी, तुम यदि भाग सकती हो, तो मैं तुम्हें तथा एमिलिनको यहाँसे भाग जानेकी सम्मति देता हूँ।

कासी--क्या तुम भी हमलोगोंके साथ भाग चलोगे?

टाम--मैं भाग नहीं सकता। यदि पहिले होता तो भाग जाता। किन्तु अब देखता हूँ कि यहाँ मेरा एक कर्त्तव्य रह गया है। मैं यहां रहकर इन दीन-दुखी दासी-दासोंको धर्मकी ओर ले जानेकी चेष्टा करूंगा। ईश्वरने मुझे यह कार्य सौंपा है। किन्तु तुम लोगोंका भाग जानाही अच्छा है। तुम लोग यहाँ रह कर और भी कुमार्गपर ही जाओगी।

कासी-भाग जानेकी कोई सुविधा नहीं है। कहाँ जायँगी? क्या समाधि-क्षेत्रके अतिरिक्त हम लोगोंको और कहीं छिप कर रहनेका स्थान है? जहाँ कहीं भी जायंगी, शिकारी कुत्तोंसे पकड़वा मँगावेगा। सर्प और मकर आदि हिंसक जन्तुओंके रहनेका स्थान है, किन्तु इस संसारमें हम लोगोंके रहनेका स्थान कहीं भी नहीं है।

टाम कुछ समय तक निस्तब्ध होकर कासीकी बातें सुनता रहा, फिर बोला--जिसने डैनियलकी रक्षा सिंह-गह्वरमें भी की, जिसने अपने विश्वासी संतानोंको अग्नि कुण्डमें भी बचाया, जो समुद्र परसे पैदल चले गये थे एवं जिनके आ-

देश मात्रसे वायु शान्त हो गया था वे अब भी विद्यमान हैं। मुझे निश्चय है कि वे अवश्य ही इस नगरसे भाग जानेमें तुम्हारी सहायता करेंगे। तुम एकबार चेष्टा करके देखो। मैं तुम लोगोंके उद्धारके लिए ईश्वरसे प्रार्थना करूँगा।

ईश्वरकी महिमा महान् आश्चर्य करी है। किन आश्चर्य मय नियमों-द्वारा हमारे मानसिक कार्य-कलाप तथा चिन्ता परिशासित होते हैं यह क्याजाना जा, सकता है, टामकी बातें सुनकर अकस्मात् कासीके मनमें एक चिन्ता उत्पन्न हुई, भागनेके जिस उपायको वह पहिले असम्भव समझती थी, अब वही उपाय उसे अत्यन्त सहज-सम्भव जान पड़ने लगा। कासीने पहिले भी भागने के सम्बन्धमें बहुत विचार किया था किन्तु उसके निश्चयमें पलायनका मार्गही नही हैं, आया था। पर आज उसे जान पड़ा कि मार्ग कहीं है, । इसलिए उसके हृदयमें आशाका सञ्चार हुआ। उसने टामसे कहा—पिता टाम, मैं चेष्टा करूँ। टामने अर्द्धनेत्रोंसे स्वर्गकी ओर देखकर कहा—मङ्गलमय परमेश्वर तुम्हारी सहायता करें।

बयालीसवां—परिच्छेद

पलायन—षड्यन्त्र

यह पहिले ही लिखा जा चुका है कि अत्यन्त धनी क्षेत्राधिकारीके दिवालिया हो जानेपर लेग्रीने उसका यह घर और खेत अति अल्प मूल्यमें क्रय कर लिया था। इस घरमें बहुत सी कोठरियाँ थीं। पूर्वाधिकारीके समयमें इतने असंख्य लोग निवास करते थे। जबसे यह घर लेग्रीने क्रय कर लिया

है, तबसे इसकी चार-पाँच कोठरियाँ सदैव रिक्त ही रहती हैं। लेग्रीका कार-बार उतना विस्तृत न था और वह उतना धनी भी न था। इसके पहिले वह जहाज़का कप्तान था। वहाँ उसने नाना प्रकारके अवैध उपायों द्वारा दो-चार हज़ार रुपये एकत्र कर लिये थे एवं उन्हीं रुपयोंसे सुलभ मूल्यमें यह घर और खेत क्रय करके कपासका व्यवसाय करना आरम्भ किया है। इस खेतके पूर्व अधिकारीके यहाँ अन्यून पाँच सौ कुली थे। किन्तु इस समय लेग्री उसके आधे कुलियोंसे काम चला रहा है। इसी कारणसे लेग्रीके खेतमें जो काम करते थे, वे दो-तीन वर्षसे अधिक नहीं बचते थे।

घरके भीतर जो चार-पाँच कोठरियाँ रिक्त हो गयी थीं, उनमेंसे उत्तरकी ओरकी एक कोठरी बहुत बड़ी थी। यह कोठरी कासीके सोनेवाली कोठरीसे सटी हुई थी, और कासी-के शयन-गृहकी बाईं ओर ही लेग्रीका शयनागार था। गृह-स्थित समस्त लोगोंका यह विश्वास था कि कासीके शयन-गृहके उत्तरकी ओर वाली निर्जन कोठरीमें भूत तथा अन्यक्रूर अपदेवताओंका वास है। दास-दासी तथा अन्यान्य लोग रातकी बात तो दूर रही, दिनमें भी अकेले इस कोठरीमें जाने-का साहस न करते थे। कई वर्ष हुए, लेग्रीने एक कुली रमणीको तीन सप्ताह तक इसीमें बन्दकर रखा था। इसके पश्चात् अनाहार और वेत्राघातसे उस रमणीकी मृत्यु हो गयी। इसीसे लोगोंका विश्वास था, कि इस कोठरीमें दो-तीन भूत रहते हैं। इस घटनासे ही भूतकी कथाकी उत्पत्ति हुई है। लेग्री स्वयं भी उस घरमें जानेका अधिक साहस न करता। किन्तु वह अपनी इस दुर्बलताकी बात कभी किसीसे प्रकट न करता।

एक दिन कासी अत्यन्त त्रस्तताके साथ अपने शयनगृह-

से अपना बिछौना इत्यादि किसी दूसरी कोठरीमें ले जाने लगी। दास-दासियोंको बुलाकर उस कोठरीकी सब वस्तुएँ दूसरे स्थानमें ले जानेको कहा। दास-दासियाँ अत्यन्त भय-भीत होकर उस कोठरीकी सब सामग्री अन्य कोठरीमें ले जाने लगीं। लेग्री उस समय घरमें नहीं था। लौटकर घर आते ही उसने कासीको इस प्रकार बिछौना इत्यादि सब सामान स्थानान्तरित करते देखकर पूछा—तुम इस कोठरीसे सब सामान क्यों उठवाये लिये जाती हो?

कासी—इस कोठरीमें मुझे नींद नहीं आती।

लेग्री—यह क्यों? इस कोठरीमें नींद क्यों नहीं आती?

कासी—वे सब बातें मैं नहीं कहना चाहती।

लेग्री—बोलो न, क्या हुआ है?

कासी—इस उत्तरकी ओरवाली कोठरीसे सदैव न जाने कैसा शब्द सुनायी पड़ता है, इससे मुझे बड़ा भय लगता है।

लेग्री—उत्तरवाली कोठरीमें से कोई शब्द सुनायी पड़ता है! वह कैसा शब्द है?

कासी—कौन शब्द करता है, कैसा शब्द होता है, यह क्या तुम जानते नहीं!

यह बात सुनकर लेग्री बड़ा क्रुद्ध हुआ। बड़े वेगसे भूमि-पर पैर पटककर उसने कासीके मुखपर एक चाबुक जड़ दिया। उस घरमें जो कुली रमणीकी मृत्यु हुई थी, उसे लेग्री किसीको भी प्रकट न करने देता। इसीलिए वह कासी पर क्रुद्ध हो गया था। चाबुककी चोट लगनेसे कासी एक ओर हट गयी एवं बारम्बार कहने लगी—लेग्री! एक दिन तुम स्वयं इस घरमें सोकर देखो न, डर लगता है कि नहीं।

कासीकी इन बातोंसे लेग्रीके मनमें एक विचित्र प्रकारके भयका सञ्चार हुआ। वस्तुतः अशिक्षित लोगोंका धर्ममें

विश्वास न रहनेसे उनके मनमें सहजमें ही इस कुसंस्कार-मूलक भूतका भय उत्पन्न हो जाता है।

कासीने भली-भाँति समझ लिया कि लेग्री भयभीत हो गया है। इसलिए उसे बड़ा आनन्द हुआ। इसके पश्चात् कासी उस उत्तर ओरवाली कोठरीके एक भागमें बिछौना तथा सात-आठ दिनके भोजन करने योग्य पदार्थ रख आयी। बीच-बीचमें गम्भीर रात्रिमें उस स्थानपर जाकर वह अलक्षित-भावसे लेग्रीके शयनागारके किवाड़ोंको ठेलती तथा धीरे-धीरे, गुन-गुन शब्द करती। इससे दिन-पर-दिन लेग्रीका वह भूतका भय क्रमशः बढ़ने लगा। गृहस्थित दास-दासियोंको भयभीत करनेके अभिप्रायसे वह प्रतिदिन उस उपर्युक्त गृहस्थित भूतके नवीन उपद्रवका वर्णन करती। इससे उस घरके लोग रातमें उस कोठरीकी ओर देखनेमें भी डरने लगे।

तीन-चार दिनके पश्चात् जब कासीने जान लिया कि भूत-सम्बन्धी संस्कार अब सबके मनमें जम गया है, तब भागनेका आयोजन करने लगी। वह अपने एवं एमलिनके वस्त्रादि लेकर उसी सूनी कोठरीमें रख आयी। बिस्तरा तथा भोज्य-द्रव्य तो वह पहिले ही रख आयी थी।

अपराह्नमें लेग्री साहब कार्यवशात् किसी पड़ोसी खेतमें गया था। यह सुयोग पाकर संध्याके बीतनेपर जब चारो ओर अंधकार छा गया, तब कासीने ऊपर जाकर एमलिनसे कहाकि-अभी ही झट-पट चली चल। भागनेका इससे बढ़कर सुयोग फिर न मिलेगा। तब दोनों घरसे बाहर निकलकर दल-दलकी ओर चलीं। पहिले ही उन्होंने निश्चय कर लिया था कि पहिले घरसे पश्चिमकी ओरके दल-दलमें चलेंगी? किन्तु वहाँ रहनेसे लेग्री अपने शिकारी कुत्तोंसे सहज ही पकड़वा लेगा। इसलिए पहिले कुछ दूर पश्चिमकी

ओर आनेके पश्चात् फिर उत्तरकी ओर जायँगी। उत्तरकी ओरसे कुछ दूर पूर्वकी ओर आगे बढ़कर उसी भूतवाले घरके सामनेवाले छोटे नालेके पार आकर, उसघरमें प्रवेश करके पाँच-छ दिन यहाँ रहेंगी। उनके भागनेके पश्चात लेग्री बहुत करेगा चार-पाँच दिन उसी दल-दल तथा अन्यान्य स्थानोंमें ढुँढ़वावेगा तथा शिकारी कुत्ते भेजेगा। पाँच-छः दिनके पश्चात् जब खोज बन्द हो जायगी, तब किसी दिन रात्रिके समय इस घरसे निकल चलेंगी। इस प्रकार स्थिर करके कासी तथा एमलिन दोनों घरसे बाहर निकलीं। इस प्रकार अभी वे दल-दलके पास पहुँची ही थीं कि पीछेसे "पकड़ो-पकड़ो, दासी भागी जा रही है" की चिल्लाहट सुनायी पड़ी। कासीने पहिले सोचा था कि साम्बो चिल्लाता होगा, किन्तु वह फिरकर देखने लगी तो स्वयं लेग्री दिखलायी पड़ा। चिल्लानेका शब्द सुन-एमलिन अत्यन्त भयभीत होकर बोली-कासी मुझे मूर्च्छा आ रही है। कासीने कहा—सावधान! यदि अभी मूर्च्छित होगी, तो मैं तेरे प्राण ले लूँगी। मेरे साथ-साथ दौड़ी आओ। कासीके धमकानेपर एमलिन उसके डरके मारे प्राणपनसे दौड़ने लगी। एवं शीघ्र ही लेग्रीकी दृष्टि से छिप गयी। अब लेग्रीने देखाकि बिना शिकारी कुत्तोंके काम न चलेगा; इसलिए वह कुत्ते तथा और आदमियोंको साथ लेनेके लिए घरकी ओर लौटा। घर आकर उसने साम्बो-कुइम्बो तथा अन्यान्य दास, कुत्तों और बन्दूकें साथ लेकर, इन्हें पकड़नेके लिए चला। लेग्री सोच रहा था कि इतना शीघ्र वे बहुत-दूर न जा सकेंगी। उसके निग्रो दासों-मेंसे कोई इधर कोई उधर दौड़ा। साम्बोने लेग्रीसे पूछा-उनलोगोंको देखनेपर क्या गोली मारूँगा? लेग्रीने कहा—कासीको गोली मार सकते हो, एमलिनके प्राण मत लेना।

उनलोगोंको जो पकड़ ले आवेगा, उसे पाँच रुपये पारितोषिक दूँगा।

इधर कासी और एमलिन धीरे-धीरे नाला पारकर उसी पूर्व-निश्चित घरमें घुस गयी। घरमें घुस जानेपर एक खिड़कीके पास खड़ी होकर एमलिनने कासीको पुकारकर कहा—देख, शिकारी कुत्तोंको लेकर कितने लोग जा रहे हैं, चलो हम लोग किसी अन्धकार पूर्ण कोठरीमें छिप रहे। कासीने कहा—कुछ डर नहीं। इसी बरामदेमें बैठकर इनका तमाशा देखूँगी। ये सब कभी इधर न आवेंगे।

लेग्री अपने समस्त दास-दासियों, शिकारी कुत्तों तथा बन्दूकके साथ दल-दलकी ओर गया। घर बिल्कुल सूना हो गया था। कासीने एमलिनको लेकर धीरे-धीरे दक्षिण ओरका द्वार खोलकर लेग्रीके शयन-कक्षमें प्रवेश किया।

उस व्यस्ततामें शीघ्रतापूर्वक जानेके समय लेग्री अपने सन्दूककी ताली बिछौनेपर ही छोड़ गया था। कासी ताली पाकर बड़ी प्रसन्न हुई। उसी क्षण लेग्रीका सन्दूक खोलकर तीन-चार हजार रुपयेके नोट निकाल, उसने अपने जामेके भीतर छिपा लिये। एमलिन यह देखकर अत्यन्त भीत होकर बोली—सर्वनाश! कासी तुम क्या करती हो? ऐसा अन्याय-पूर्ण कार्य मत करो। कासीने विरक्त होकर कहा—रुपये साथ न रहनेसे हमलोगोंके मार्गका व्यय कहाँसे मिलेगा। जहाजका व्यय कहाँसे दूँगी। एमलिनने कहा—तो इसके लिए चोरी करोगी? किन्तु कासीने अत्यन्त घृणासे कहा—यह क्या चोरी है? ये लोग तो मनुष्यके शरीर और आत्माकी चोरी करते हैं! लेग्रीने ये सब रुपये कहाँसे पाये? इन कुलियोंका रक्त चूसकरके ही तो ये रुपये इकट्ठे

किये हैं न। चोरका धन ले जानेमें क्या अपराध होगा ? यह सभी चोरीका धन है।

कासी यह कहकर एमलिनका हाथ पकड़ उत्तरवाली कोठरीमें चली गयी। वहाँ जाकर बोली—मैंने पर्याप्त प्रकाश का प्रबन्ध कर रखा है। पुस्तकें लाकर रख लीं हैं। समय बितानेमें कोई कष्ट न होगा। मुझे निश्चय है कि वे इधर कभी नहीं आवेंगे, और यदि आवेंगे, तो सचमुच भूत बनकर उन्हें डरवाऊँगी।

एमलिन—तुम क्या निश्चय जानती हो कि वे हमलोगोंको यहाँ खोजने न आवेंगे ?

कासी—आते तो अच्छा ही होता। मेरी इच्छा है कि लेग्री एक बार यहाँ आवे, किन्तु वह क्यों आने लगा और दूसरा कोई यहाँ आना स्वीकार न करेगा।

एमलिन—तुमने उस समय मुझे मार डालनेकी धमकी क्यों दी थी ?

कासी—जिसमें तुम्हें मूर्च्छा न आ जाय, इसलिए भय-प्रदर्शन किया था। यदि कहीं मूर्च्छा आजाती, तो वह तुरन्त ही तुम्हें पकड़ लेता।

एमलिन यह बात सुनकर काँप उठी। कुछ समय तक दोनों स्तब्ध रहीं। तत्पश्चात् कासी पुस्तक पढ़ने लगी और पढ़ते-ही-पढ़ते सो गयी।

रात्रिके दोपहरको लेग्रीके, दास-दासी तथा शिकारी-कुत्तोंको लेकर, घरमें प्रवेश करते ही बड़ा गोलमाल मचा। इस गोलमालका शब्द सुनकर कासी तथा एमलिन जाग पड़ीं। एमलिन जागते ही चिल्ला उठी। तब कासीने उसे शान्त किया। उसने कहा—कुछ डर नहीं है। ये हमलोगों-को खोज कर दल-दलपरसे लौट रहे हैं। इधर देख, लेग्रीके

घोड़ेके शरीरमें कितना कीचड़ लगा है। लेग्रीके भी बहुतसा कीचड़ लगा है। कुत्ते सब क्लान्त हो गये हैं।

घमलिन—धीरे-धीरे बातें करो, चुप रहो।

किन्तु कासी और भी उच्चस्वरसे कहने लगी—भय क्या है, हमलोगोंकी बातें सुनकर और भी भूतका भय बढ़ेगा।

रात्रि क्रमशः अधिक हुई। लेग्री बहुत थक गया है। वह अपने दुर्भाग्यके विषयमें सोचता एवं कासीको गालियाँ देता हुआ अपने शयनागारमें आया।

तैंतालीसवाँ परिच्छेद

धर्म-वीर

चलते-चलते अत्यन्त दीर्घ मार्ग भी समाप्त हो जाता है। देखते-देखते घोर तिमिराच्छन्न कुहूनिशाका अवसान होकर प्रभात-सूर्यका उदय होता है। कालका अनन्त स्रोत पापात्माओंको क्रमशः उसी तमोमयी कुहूनिशाकी ओर घसीट ले जाता है। किन्तु साधु-महात्माओंको वही, संसारके अत्याचारों तथा यंत्रणाओंसे क्रमशः मुक्तकर उस शतसूर्य-किरण-प्रदीप्त समुज्ज्वल दिवसके निकटतम स्थानकी ओर ले जाता है।

पार्थिव-पद-प्रभुत्व-शून्य टामके जीवनमें कितने ही परिवर्त्तन हुए। पहिले वह अपने पुत्र-कलत्रके साथ सुख-स्वच्छन्दतासे दिन व्यतीत कर रहा था, अकस्मात् उसके वे सुखके दिन दुर्दिनोंमें परिणत हुए, स्त्री-पुत्रोंसे विच्छिन्न होना पड़ा। उस समय दासत्व-शृंखला अत्यन्त कठिन जान पड़ी। उसके सहृदय हाथ, कठिन शृंखला-पुष्पाभरणसे सुशोभित हुए। किन्तु

वह अवस्था भी अधिक दिन न ठहरी। देखते-ही-देखते सांसारिक सुखोंकी आशा समूल नष्ट हो गयी। अब उस सांसारिक मोहके गम्भीर अन्धकार-राशिको भेदकर नैसर्गिक समुज्ज्वल तारोंकी अपूर्व ज्योति उसके पथपर पड़ी। स्वर्गका द्वार उसके लिए उन्मुक्त हो गया।

कासी और एमलिनके भाग जानेके पश्चात् लेग्री अत्यन्त क्रोधान्वित हो उठा, एवं केवल असहाय टाम ही उसके उद्दीप्त कोपानलकी आहुति हुआ। लेग्री जिस समय उन दोनों पलातक दासियोंको पकड़नेके लिए अपने सब दासोंको बुला रहा था, उस समय टामके नेत्रोंसे आनन्दकी ज्योति प्रकट हो रही थी, तथा उसने जो हाथ उठाकर स्वर्गकी ओर देखा था, वह सब लेग्रीने देख लिया था। और फिर जब अन्य समस्त दास उन दोनों पलातकोंको पकड़नेके लिए आगे बढ़े, तब टामने उनका अनुकरण न किया। लेग्रीने पहिले सोचा था, कि टामको बलपूर्वक धूतकारी लोगोंके साथ भेजूंगा, किन्तु उसके पूर्वाचरणका स्मरण करके वह विचारने लगा कि टाम जिसे अन्याय समझेगा, उसे करनेके लिए वह कदापि सम्मत न होगा, अतएव इस समय उसके साथ विवाद करके समय नष्ट करनेमें बड़ी हानि होगी।

लेग्रीके, और लोगोंको साथ लेकर, चले जानेपर टाम तथा और कई व्यक्ति, जिन्होंने टामसे प्रार्थना करनी सीखी थी, उसीके घरमें बैठकर पलातक द्वयके मंगलके लिए परमेश्वरसे प्रार्थना करने लगे।

अनेक अनुसन्धान करनेपर जब गंभीर रात्रिमें लेग्री हताश होकर घर लौटा, तब टामके प्रति उसकी क्रोधाग्नि भभक उठी। वह मन-ही-मन सोचने लगा कि टाम क्रयकरनेके समयकी अपेक्षा अब मेरी आज्ञाका नित्य ही उल्लंघन करने

लगा है। यह चिन्ता नरकाग्निकी भाँति उसके हृदयको भूँजने लगी। उसी क्षण वह अपने आप ही कह उठा,—उसके प्रति मेरा-घोर विद्वेष-ज्वलन्त विद्वेष है। वह क्या मेरी सम्पत्ति नहीं है? अच्छा, देखूँगा कौन मुझे रोक रखता है। यह कहते-कहते वह बार-बार भूमिपर पैर पटकने लगा।

इसके पश्चात् उसे तुरन्त ही स्मरण हुआ कि टाम को मैंने बहुत अधिक मूल्यमें क्रय किया है, ऐसे मूल्यवान पदार्थको इस प्रकार नष्ट करडालूँ?

प्रातःकाल टामको कुछ न कहना ही लेग्रीने स्थिर किया।

उसने निकटके अन्यान्य खेतोंसे परिदर्शक, शिकारी कुत्ते बन्दूकें और आदमी इकट्ठे किये। सारे दलदलका खण्ड-खण्ड खोज डालनेका, उसने मन-ही-मन निश्चय किया। यदि कासी और एमलिनको पकड़ पाया, तो अच्छा ही है, नहीं तो लौटकर टामके प्राण-हरण करूँगा लेग्रीने अपने मनमें यही संकल्प किया। उसके दाँत किटकिटाने लगे, उसका रक्त उत्तप्त होकर उबल उठा। उसके पापासक्त मनने उसके इस भयानक नर-हत्याके संकल्पका समर्थन किया।

नियम बनाने वालेलोग कहते हैं कि लोग स्वार्थकी प्रेरणासे अपने दास-दासियोंके प्राण नहीं ले सकते। किन्तु क्रोधान्ध होनेपर इन पश्वाचारी अँग्रेजोंको हिताहित, नियमा-नियमका कुछ भी ज्ञान नहीं रह जाता; अतएव इन लोगोंके हाथमें इन निराश्रयोंका जीवन-समर्पणकर निस्सन्देह उन लोगोंने घोर पाप किया है।

प्रातःकाल इधर लेग्री लोगोंको एकत्र करने लगा, उधर कासी उसरकी टालानसे एक छिद्रमेंसे उसका सारा काम तथा उसकी बात-चीत सुनने लगी।

पकड़नेवालोंमें से दो व्यक्ति तो पासके खेतोंके परिदर्शक थे, तथा और कई आदमी लेग्रीकी शराबकी दूकानके मित्र थे। सभी बड़े उत्साहसे तैयारी कर रहे थे, एवं रह-रह कर ब्रान्डी छानते जाते थे। कासी उन लोगोंकी बात-चीत सुननेके अभिप्रायसे घरके एक छिद्रके पास कान लगाये खड़ी थी। एक परिदर्शक कह रहा था कि उसके शिकारी कुत्ते पलातक लोगोंको पकडते ही मार डालते हैं। दूसरेने कहा—दोनों पलातकोंको देखते ही गोली मार दूँगा।

कासी उन लोगोंकी बातें सुनकर कह उठी—हे परमेश्वर इस पृथ्वीपर सभी पापी हैं, किन्तु क्या हम लोगोंने कोई गुरुतर पाप किया है जिसके कारण हम लोगोंके प्रति ये इतना अत्याचार करते हैं। पश्चात् एमलिनको पुकारकर कहा—बेटी, यदि तुम मेरे साथ न होती, तो मैं इसी क्षण उन लोगोंके पास जाकर गोली मार देनेको कहती। मैं स्वाधीन होकर ही क्या करूँगी? मैं क्या अपनी दोनों सन्तानोंको देख पाऊँगी। किम्वा जिस प्रकार पवित्र जीवन-व्यतीत कर सकूँ, वैसी पवित्र हो सकूँगी?

एमलिन उसकी उस समयकी मुख-भङ्गी देखकर भय भीत हो गयी। वह कोई बात न कह सकी। उसने स्नेह पूर्वक सन्तानकी भाँति उसका हाथ पकड़ लिया। कासीने तीव्रस्वर में कहा—मेरा हाथ मत पकड़ो, मैं तुम्हें प्यार नहीं करना चाहती। मेरी इच्छा नहीं होती कि मैं संसारमें किसीको प्यार करूँ।

एमलिनने कहा—कासी, दुःखिनी कासी! यदि स्वाधीन हो जायगी, तो परमेश्वरके आशीर्वादसे कदाचित् तेरी दोनों सन्तानें फिर तुझे मिल जायँगी। और यदि ऐसा न होगा तो मैं तेरी कन्या हो जाऊँगी। अपनी दुःखिनी माताको तो अब

न पाऊँगी, मैं तुम्हींको माताकी भाँति प्यार करती हूँ। तुम मुझे न भी चाहोगी, तो भी मैं तुम्हें प्यार करूँगी।

स्नेहमें कैसी अपूर्व शक्ति है! एमलिनके मृदुल, बाल-सुलभ मधुर सम्भाषणसे कासीका हृदय द्रवित हो गया। कासीने एमलिनको गोदमें लेलिया और वह उसके शरीरपर हाथ फेरने लगी। एमलिनने उसके मुखकी ओर देखने पर जाना कि वह अपूर्व सुन्दरी है। उसके नेत्रोंसे बूंद-बूंद आंसू गिर रहे हैं।

कुछ देरबाद कासीने कहा—बेटी एम! मेरी दोनों संतानों के लिए मेरे प्राण, हा-हाकार कर रहे हैं। उनलोगोंको देखने पर मेरे नेत्र ठंढे होंगे। फिर छाती पीटकर कहा—ईश्वर जब मेरी संतानें फिर मुझे दे देंगे तभी मैं उनकी प्रार्थना करूँगी·

एमलिन—उनपर विश्वास करो। वे हमारे पिता हैं।

कासी—मैं समझती हूं वे हमारे प्रति कठोर हो गये हैं।

एमलिन—नहीं कासी! वे अवश्य ही हमलोगोंके प्रति सहृदय होंगे। उनके ऊपर हमलोगोंको निर्भर रहना उचित है।

इधर इनलोगोंमें इस प्रकार बात-चीत हो रही थी और उधर लेग्री अपने आदमियोंके साथ हतोत्साह होकर घर लौट आया। लेग्री जिस समय विषण्ण-वदन हो घोड़े परसे उतरा, कासी उस समय सहास्य मुख हो उसकी ओर देख रही थी। घोड़े परसे उतरते ही उसने कुइम्बोसे कहा—

शीघ्र ही टामको यहाँ ले आ। टाम निश्चय ही इनलोगोंसे मिला है। उसके उस काले चमड़ेके भीतरसे सब बातें बाहर निकालनी होंगी।

साम्बो और कुइम्बो दोनों विशेष उत्साहके साथ टामको ले आने चले। इन दोनोंमें आपसमें एक दूसरेके प्रति घोर विद्वेष-भाव था, किन्तु टामके प्रति इनदोनोंका विशेष आक्रोश

था। इसका कारण, लेग्रीका टामको सर्व-प्रधान परिदर्शक बनानेका संकल्प था।

साम्बो और कुइम्बो दोनों टामको पकड़कर ले चले। टाम समझ गया कि कासी और एमलिनके भागनेके सम्बन्ध में पूछ-ताछ करनेके लिए ही लेग्री उसे बुला रहा है। टाम पलातकोंके सम्पूर्ण षड्यन्त्रसे परिचित था, और इस समय जहाँ वे हैं यह भी वह जानता था। पर उसने अपने मनमें यह स्थिर कर लिया था कि अपना सर्वनाश हो जानेपर भी इस गुप्तभेदको प्रकट कर उनदोनों अनाथोंका सर्वनाश न कराऊँगा। यह निश्चयकर ईश्वरको आत्मसमर्पण कर वह मृत्युके लिए प्रस्तुत हो गया। वह करबद्ध हो ईश्वरसे कहने लगा—हे ईश्वर! इस समय मैं अपनेको आपके कर-कमलोंमें समर्पण करता हूँ। आपने ही सदैव विपत्तिसे मेरा उद्धार किया है।

उसे ले जानेके समय कुइम्बो कहने लगा—हा! हा! अब देखूँगा। इस बार मालिक इतने क्रुद्ध हो गये हैं जितना कि चाहिए। इस बार चुराने-छिपाने की जगह नहीं है। सब बातें पेटसे बाहर निकालनी पड़ेंगी। देखूँ अब तेरे भाग्य में क्या है।

कुइम्बोके ये असभ्य निष्ठुर वाक्य, टामके कानमें प्रवेश नहीं कर सके। उसी समय एक मृदुतर कण्ठ-ध्वनि, उसके कानमें प्रवेशकर, कहने लगी—जो शारीरिक कष्टमें उनसे तनिक न डरना, क्योंकि ऐसा दण्ड दे लेनेके पश्चात् वे और कुछ न कर सकेंगे। टामके शरीरका रोवाँ-रोवाँ; उस वाक्यको सुनकर, पुलकित हो गया। उसे जान पड़ने लगा—मानो, ईश्वरके करस्पर्शसे उसके शरीरमें नव-बलका सञ्चार होने लगा, सहस्रों आत्माओंका बल मानो उसके शरीरमें प्रविष्ट हुआ। जाते-जाते उसके मनमें यह विचार आयाकि

मार्ग, वृक्ष, लता तथा दासोंकी झोपड़ियोंके साथ उसकी अव-नतावस्था भी पीछे हटती जा रही है। उसकी अन्तरात्मा आनन्दसे नाचने लगी। उसके पिताका घर अत्यन्त निकट आ गया। अब वह बन्धन-मुक्त होगा।

टाम लेग्रीके सामने उपस्थित किया गया। लेग्री उसके जामेका गलबन्द पकड़कर खींचते-खींचते क्रोध-पूर्वक कहने लगा—टाम, तू जानता है कि मैंने तेरे प्राण ले लेनेका संक-ल्प किया है?

टामने धीर भावसे उत्तर दिया—आपके लिए सब सम्भव है।

लेग्री—'इन पलातक दासियोंका पता यदि तू न बतावेगा तो मैं तेरे प्राण ले लूँगा, यह मैंने दृढ़ संकल्प किया है।

टाम चुप रहा।

लेग्रीने क्रुद्धसिंहकी भाँति गर्ज तथा पैर पटककर कहा—मेरी बात तू सुनता है! अब भी बतला दे।

टामने धीरे-धीरे स्पष्ट शब्दोंमें कहा—प्रभो! मुझे कुछ नहीं कहना है।

लेग्री-बच्चू। काले क्रिस्तान! तू यह कहनेका साहस करता है कि मैं इस विषयमें कुछ नहीं जानता। टाम चुपरहा।

लेग्री टामको बलपूर्वक मारकर वज्र स्वरसे बोला—बोल, बोल, तू इस विषयमें कुछ जानता है कि नहीं?

टाम-जी, मैं जानता तो हूँ, किन्तु बतलाऊँगा नहीं।'

लेग्री टामकी यह बात सुनकर क्रोध दबाकर बोला—"सुन! मैंने तुझे छोड़ देनेका विचार किया था, अब भी छोड़ दूँगा। अबकी मैंने पक्का विचार किया है। कुछ रुपयोंकी हानि होगी, तो हो। आज या तो तुझे अपने वशमें करूँगा, या तेरा खून ही करूँगा।

टाम लेग्रीके मुखकी ओर देखकर कहने लगा—प्रभो, यदि आप रोगी होते या कोई विपत्तिमें पड़े होते, अथवा आप मरणासन्न होते और मेरे प्राण देनेसे आप बच सकते, तो मैं हर्षपूर्वक अपना जीवनोत्सर्ग कर देता। इस समय भी यदि इस क्षीण देहके रक्तकी बूंदोंसे आपकी आत्माका कल्याण हो सकता हो, तो मैं प्रसन्नतासे अपना रक्त बहादेनेके लिए तय्यार हूँ। प्रभो! इस नरहत्या-रूप भयंकर पापसे अपनी आत्माको कलंकित न कीजिए। इसमें मेरी अपेक्षा आपकी ही अधिक हानि है। मेरे प्राण लेना चाहें, तो ले लीजिये,मेरे कष्टोंका अन्त ही हो जायगा, किन्तु यदि आप इससे पूर्वके कुकर्मोंके लिए पश्चाताप न कर, नवीन पापद्वारा अपना हाथ कलंकित करेंगे, तो आपका बड़ा अनिष्ट होगा। प्रभो, एकबार इसपर विचार करके देखिये।

यह बात सुनकर क्षणभरके लिए उस पाषाण-हृदय नर-पिचाश अंग्रेज-पुत्रके मनमें भी भयका सञ्चार हुआ। उसे ऐसा जान पड़ा मानो स्वर्गसे कोई देवदूत मधुर कंठसे उसे सदुपदेश दे रहा है। लेग्री स्तम्भित होकर टामका मुख देखने लगा। सब सन्नाटे में आ गये। वहाँ इतनी शान्ति थी कि उस समय यदि एक सुई भी गिरती, तो उसका शब्द भी सुन पड़ता। यही लेग्रीके चरित्र-संशोधनका अन्तिम सुयोग था।

कल्याण-भवन भगवान् पापीको पाप-कर्मोंसे विरक्त करनेके लिए समय-समयपर सुयोग-प्रदान करते रहते हैं। अनेक अवसरोंपर पापियोंकी आँखोंके सामने ऐसी अवस्था आ उपस्थित होती है कि वह इस ईश्वर-दत्त सुयोगका सदुव्यवहार कर सहजमें ही अपने जीवन-प्रवाहको बदल सकता है। लेग्री, अब भी खूब विचार ले, यही तेरा अन्तिम सुयोग है!

पर सदैव नर-हत्या करते-करते इस अर्थलोभी, स्वार्थ परायण गोरेका हृदय पत्थरसे भी अधिक कठोर हो गया था। यह साधुभाव अधिक समय तक उसके हृदयमें न टिक सका। एक बार कुछ रुका। अब क्या करूँ—इसी चिन्ताने उसके मनको अस्थिर कर दिया, किन्तु दूसरे ही क्षणमें उस अभ्यस्त पैशाचिक भावके हृदयमें आते ही वह क्रोधसे भभक उठा। गोचर्म-निर्मित चाबुकसे टामको पीटने लगा।

उस दिनके भीषण कष्टका वर्णन करनेमें लेखनी असमर्थ है। नृशंस-प्रकृतिके लोग प्रसन्नता-पूर्वक जिन लोमहर्षण अत्याचारोंका अनुष्ठान करते हैं, सहृदय लोग उन्हें सुननेमें भी असमर्थ हैं। केवल असमर्थ ही क्यों? कभी-कभी तो ऐसे निष्ठुराचरणोंको सुनकर उनका हृदय बाण-विद्ध हो जाता है, और वे मृत्युके मुखमें पड़जाते हैं। इसीसे इवाञ्जेलि-नकी हृदय-ग्रन्थि दूसरेका दुःख देखकर छिन्न हो गयी थी। और उन्होंने इस संसारको त्यागकर अमृतमयकी अक्षय गोदमें आश्रय ग्रहण किया।

महात्मा ईसाने संसारके कल्याणके लिए भीषणतम यंत्रणा और घोरतर अपमान सहन किये थे, इसीलिए मृत्युके पश्चात् उनकी गिनती देवताओंमें होने लगी। तब उसी ईसाका प्रचारित धर्म ही जिसका सम्बल है, वह भला ऐसी यंत्रणाके सहन करनेमें असमर्थ क्यों होगा? जिन राजाधिराज परमेश्वरने उन्नीस सौ वर्ष पूर्व ईसाके क्रूस यंत्रके पास खड़े होकर कहा था—"बेटा, मत डरो, स्वर्गराज्यका द्वार तुम्हारे लिए खुला है," वही अनन्त कल्याणकर जगत्पिता आज लौकिक पद-प्रभुत्व-हीन असहाय टामके पार्श्वमें खड़े होकर उसे आश्वासन दे रहे हैं, और मधुर कण्ठसे कह रहे हैं—"कुछ भय नहीं है टाम! तुम्हारी दुःखनिशाका अन्त हुआ। स्वर्गका

द्वार खुला है, राजमुकुट धारणकर स्वर्ग-राज्यमें प्रवेश करो। मेरी अमृतमयी अक्षय गोद तुम्हारे लिए फैली हुई है।" मारते-मारते जब टाम बेदम हो गया, तब भी उसे लुभानेके लिए लेग्रीने कहा—बोल, भागी हुई दासियाँ कहाँ हैं—अभी तुझे छोड़े देता हूँ। किन्तु जिसने ईश्वरको आत्म-समर्पण कर दिया है, उसे कौन लुभा सकता है? टामके मुखसे पिता परमेश्वर! पिता परमेश्वरके अतिरिक्त और कोई बात निकलती ही न थी।

टामका धैर्य-धारण देखकर अब साम्बोका हृदय भी पिघल गया। उसने लेग्रीसे कहा—प्रभो! अब और अधिक मारनेकी कोई आवश्यकता नहीं, उसके प्राण यों ही निकल जायँगे। लेग्रीने फिर भी कहा—और मार, और मार। कोई बात नहीं बतलाता है। मैं उसके शरीरका बूंद-बूंद रक्त सोख लूंगा।

धराशायी टामने लेग्रीकी ओर देखकर कहा—हा हतभाग्य! अब तू मेरा और क्या करेगा! मैं तेरे सम्पूर्ण अपराध क्षमा करता हूँ। यह कहते-कहते टाम अचेत हो गया।

लेग्री तब, टामके पास आकर उसके शरीरको हिलाडुला कर, बोला—जान पड़ता है, इसके प्राणान्त हो गया। अच्छा हुआ, इस बदमाशका मुँह बन्द होगया। यह कहकर लेग्री वहाँसे चला गया।

टामके प्राण उस समय तक भी नहीं निकले थे। मार खानेके समय उसने जो प्रार्थना की थी, उसे सुनकर साम्बो और कुइम्बोके प्राण पसीजने लगे। लेग्रीके चले जानेपर वे दोनों टामके शरीरको गोदमें उठाकर एक कोठरीमें ले गये। अज्ञानतावश वे सोचने लगे कि हमलोग टामके प्राण बचा लेंगे।

साम्बोने कहा—हमलोग बड़ा पाप-कर्म करते हैं, इनके

लिए केवल मालिकको ही जवाबदेह होना पड़ेगा हम लोगों-का इसमें कुछ अपराध नहीं। हमलोगोंका कुछ न होगा।

इसके पश्चात् वे दोनों टामके घावोंको धोने लगे। घावों-के धो जानेपर एक शय्यापर सुला दिया। तत्पश्चात् उनमेंसे एकने जाकर लेगूीसे अपने पीनेका बहाना करके शराब ले आया और धीरे-धीरे टामके मुखमें टपकाने लगा।

कुछ समयके पश्चात् कुइम्बो बोला—टाम! हमने तुम्हारे प्रति बड़ा निष्ठुर व्यवहार किया है। टामने क्षीण-स्वरमें कहा—मैं सर्वान्त करणसे तुम लोगोंको क्षमा करता हूँ। साम्बोने कहा—टाम! एकबार हमें बतलाओ, ईसा कौन है? जिसे तुमने पुकारा था, वे कौन हैं?

ईसाका मधुर नाम सुनकर टामके शरीरमें कुछ शक्ति आ गई। वह सहज ही ईसाके दयाकी कथा कहने लगा। उसे सुनकर इन दोनों नराधमोंके हृदय भी पसीज गये। उन्होंने रोते-रोते कहा—आहा! ऐसा मधुर नाम तो पहिले कभी नहीं सुना। हे ईश्वर! हमलोगोंपर दया कर।

टाम—हा चिरदुखी लोगों! तुम लोगोंको धर्म-मार्गपर लानेके लिए मैं सब कष्ट सह सकता हूँ। यह कहकर उसने प्रार्थना की, हे परमेश्वर! इन दोनों आत्माओंका उद्धार कर।

टामकी प्रार्थना पूरी हुई। साम्बो और कुइम्बोने जगाई और मधाईकी भाँति (जगाई और मधाई ये दोनों भाई बंगाल-के प्रसिद्ध डाकू थे। इन्हें भगवद्भक्तके सदुपदेशसे ज्ञान-लाभ हुआ था, उसीसे इनका पापाचार छूटा।) कुपथ-परित्यागकी प्रतिज्ञा की।

चवालीसवाँ परिच्छेद

जार्ज-शेल्बी

टाम इस भयंकर मारसे घायल होकर मृत्युशय्यापर पड़ा हुआ है। इसके दो दिनके पश्चात् एक छोटी सी गाड़ीपर चढ़कर एक युवक लेग्रीके यहाँ आया, एवं बड़ी शीघ्रतासे गाड़ी परसे उतर कर गृह-स्वामीके साथ भेंट करनेके लिए कहा। ये जार्ज शेल्बी थे। किस लिए यहाँ आये थे, उसे बतलानेके लिये कुछ पिछली घटनायें लिखनी पड़ेंगी।

पाठक! आपको स्मरण होगा कि टामके नीलाम घरमें लेजाने के पहिले ही मिस अफिलियाने शेल्बी साहबकी पत्नीके पास एक पत्र टामका उद्धार करनेके लिये भेजा था। दुर्भाग्य वश उनका वह पत्र पोस्टआफिसकी गलतीसे किसी दूसरे पोस्टआफिसमें जा पहुँचा। प्रायः दो मासके पश्चात् वह पत्र मिसेज शेल्बीको मिला। वे टामके भावी अमङ्गलकी बात सुनकर अत्यन्त व्याकुल हुईं। किन्तु उस समय टामको छुड़ानेमें वे असमर्थ थीं। उनके स्वामी उस समय मृत्युशय्यापर पड़े हुए थे। स्वामीके देख-भाल वे घरके काम-काज करने में वे अत्यन्त व्यस्त रहती थीं। कुछ दिनोंके पश्चात् शेल्बी साहबकी मृत्यु हो गयी। इसलिए अब सम्पूर्ण काम-काजका भार उन्हींके ऊपर आ पड़ा। उनके स्वामीपर बहुत लोगोंका ऋण था। किस प्रकारसे वह ऋण चुकाया जाय, इसके लिए वे अत्यन्त चिन्तित हो उठीं। किन्तु इन सुशिक्षिता, सहृदया रमणीका हृदय केवल स्त्री-सुलभ कोमलता, स्नेह, दया और धर्म-भावसे ही पूर्ण नहीं था, वरन् गृह-प्रवन्धमें भी ये असाधारण बुद्धिमती थीं। इन्होंने खेतका

कुछ अंश एवं घरकी बहुत सी अनावश्यक वस्तुएँ वेचकर शीघ्र ही अपने पतिका ऋण चुका दिया। सम्पूर्ण कार्यका सिलसिला ठीक हो गया। उनका तरुण पुत्र सब प्रकार माता-की सहायता करने लगा।

गृहस्थीका सब ठीक-ठाक हो जानेपर, टामके उद्धार-की चिन्ता लगी। जिस वकीलने सेन्टक्लेयरके दास-दासियों तथा घरके अन्यान्य पदार्थोंके विक्रयका भार ग्रहण किया था, बुद्धिमती अफिलियाने उनके नाम-ग्रामादि लिख दिया था। इसलिए पहिले टामका पता लगानेके लिए उनके पास पत्र लिखा गया। किन्तु टामके क्रय-कर्त्ताका पता उन्हें नहीं मालूम था। पत्रके उत्तरमें उन्होंने केवल इतना ही लिखा कि टाम नामक एक गुलाम मृत सेन्ट-क्लेयरके गुलामोंके साथ विका अवश्य था, किन्तु मुझे नहीं मालूम कि उसे किसने क्रय किया है। इस सम्वादसे माता-पुत्र बड़े चिन्तित हुए। इसके छः मासके पश्चात् जार्ज-शेल्बीको माताके किसी कार्यसे दक्षिणकी ओर आना पड़ा। इस समय उन्होंने यह संकल्प किया कि नव आर्लिन्समें जाकर वे स्वयं टामका अनुसन्धान करेंगे। किन्तु दो मास-के बहुत खोजने-ढूढ़नेपर भी कुछ पता न लगा। अन्तमें एक दिन अकस्मात् एक ऐसा आदमी मिला, जिससे यह मालूम हुआ कि लेग्री नामक एक व्यक्तिने उसे खरीदा है। यह समाचार पाकर वह तुरन्त रेड नदीस्थित एक जहाज़पर चढ़ गये और आज यहाँ पहुँचे हैं।

लेग्री साहबके साथ साक्षात होते ही जार्ज शेल्बीने पूछा-महाशय! मैंने सुना है कि आप टाम नामक दासको नव आर्लिन्समें नीलाममें खरीदा है। वह आदमी पहिले मेरे पिताके खेतमें काम करता था, मैं उसे फिर क्रय करनेके लिए आया हूँ।

इनकी बात सुनकर लेग्रीका मुहँ मुरझा गया। उसने वि-रक्तिके साथ कहा—हाँ, टाम नामका एक गुलाम खरीदा था। उसके क्रय करनेमें मुझे बड़ा 'लाभ' हुआ। इतना उद्दण्ड, असभ्य, दुर्वृत्त कुत्ता किसीने कभी न देखा होगा। मेरे गुलामों को भाग जानेका परामर्श देता है। दो दासियाँ जिसमेंसे एक-का दाम आठ-दस सौ रुपये होगा-इसके परामर्शसे भाग गयी हैं। इसने स्वीकार किया है कि मैंने उन्हें भागनेका परामर्श दिया था; किन्तु जब पूछा कि वे इस समय कहाँ है ? तब उसने बतलानेसे इन्कार कर दिया। इतनी मार खाने पर भी, जितनी कि दूसरा कोई गुलाम नहीं खा सकता, नहीं बतलाया ! जान पड़ता है, अब वह मरनेके निकट है। वह मर जायगा पर बतलावेगा नहीं।

यह सुनकर जार्जका मुख क्रोधसे लाल हो गया, उसके नेत्रोंसे चिनगारियाँ निकलने लगीं। किन्तु झगड़ा करनेमें कोई बुद्धिमानी न समझकर उसने केवल इतना ही पूछा—वह है कहाँ ? मैं उसे देखना चाहता हूँ।

बाहर जो गुलाम जार्जका घोड़ा पकड़े हुए था, वह कह उठा—टाम इसी घरमें है। लेग्रीने तुरन्त ही उस गुलामको एक लात जमाया, किन्तु जार्ज अब एक पलका भी विलम्ब न करके उस कुटीकी ओर बढ़ा।

टाम दो दिनसे इसी कुटीमें पड़ा हुआ है। उसकी शारीरिक कष्टानुभव करनेकी शक्ति नष्ट हो गयी थी, आत्मा-जीवन-मुक्त हो गयी है। किन्तु पहिलेके स्वास्थ्यके कारण आत्मा देह-पिञ्जरसे सहजमें ही बाहर नहीं निकलने पाती, इसीसे वह अभी तक जीवित है। टाम, लेग्रीके निराश्रय, क्षुधार्त दुखी दास-दासियोंको सदा सहायता करता, अपने खानेका सामान स्वयं न खाकर कभी-कभी उन लोगोंको दे देता।

इससे वे लोग टामके लिए अत्यन्त शोकाकुल हो रहे थे। ये लेग्रीके भयके मारे उसे देखने जाने तकका साहस न करते। हाँ, रात्रिमें छिपकर आते और उसकी सेवा-शुश्रूषा करते। इससे अधिक वे बेचारे और कर ही क्या सकते थे! इनका सामर्थ्य ही कितना था? केवल समय-समय पर दो-एक घूँट जल उसके मुँहमें डाल देते थे।

कासीने टामकी मारका सारा वृत्तान्त सुन लिया। टामके दुःखसे उसका हृदय शोकाकुल हो गया। टामने उसके तथा एमलिनके लिए ही यह अलौकिक त्याग स्वीकार किया है—सोचकर उसका हृदय कृतज्ञतासे भर गया। वह सम्पूर्ण विपत्तियोंको तुच्छ मानकर गत रात्रिमें टामको देखनेके लिए गयी थी। टाम उस अन्तिमकालमें अस्फुटस्वरसे प्रेम-पूर्वक कासीको जो धर्मोपदेश देने लगा, उसे सुनकर उसके हृदयाकाशसे निराशाका अन्धकार एक दम दूर हो गया। शोक-दग्ध पत्थरके समान कठिन हृदय भी पिघल गया। वह टामके साथ बार-बार प्रार्थना करने लगी। 'पिता टाम!' 'पिता टाम!' कहकर वह उसके गलेसे लिपटकर रोने लगी।

टामके घरमें प्रवेश करते ही उसकी दुर्दशा देखकर जार्जका माथा चक्कर खाने लगा। उनके हृदयमें बाण बिंध गया। टामके पार्श्वमें घुटनोंके बल बैठकर वे उच्चस्वरसे बोले—ओह! यह भी क्या सम्भव है! यह भी क्या सम्भव है! मनुष्य क्या मनुष्यपर इतना घोर अत्याचार कर सकता है! टामकाका! ओ मेरे दुखी टामकाका!

मृतप्राय टामके कर्ण-कुहरोंमें इन शब्दोंने अमृतकी वर्षा की। वह संज्ञा-हीनकी भाँति पड़ा था। उसने इस कण्ठ-स्वरको सुनकर, धीरे-धीरे सिर हिलाया, ओंठोंपर कुछ मुसकुराहट दिखायी पड़ी। अस्फुट स्वरमें उसने कहा—"क्या

नहिं सम्भव ईशु कृपातें मृत्यु-सेजपर सुख सुमन-सेजसों ।"

जार्ज सिर झुकाकर एकटक टामके मुहँकी ओर देखता रह गया। उसके नेत्रोंसे अविरल अश्रु-धारा बहने लगी। शोकावरुद्ध कण्ठसे वह कहने लगा—टाम काका ! प्राणप्रिय टामकाका ! एकबार जागो, एकबार मेरे साथ बात-चीत करो, एकबार आँखें खोलकर देखो, तुम्हारा जार्ज आया है, क्या तुम मुझे नहीं पहिचानते ?

टामने नेत्र खोलकर क्षीण कण्ठसे पूछा—मेरा जार्ज ! यह कहकर वह पागलकी भाँति देखने लगा। उसने फिर कहा—मेरा जार्ज ! अन्तमें धीरे-धीरे माना यह बात उसके समझमें आयी। उसके दृष्टि-शून्य चक्षु क्रमशः ज्योतिवान होने लगे। उसका मुख प्रफुल्लित हुआ, नेत्रोंसे अविरल अश्रु बहने लगे। हाथ जोड़कर वह क्षीणस्वरसे कहने लगा—धन्य हो मङ्गल-मय परमेश्वर ! मैं जो चाहता था वही हुआ। मुझे वे भूले नहीं। कैसा आनन्द है ! कैसा आनन्द है ! धन्य परमेश्वर ! धन्य ! अब मैं सुखसे मरूँगा।

यह सुनकर जार्जने कहा—तुम मरोगे ? नहीं, तुम कभी न मरोगे ! मरनेकी बात मनमें भी मत लाओ। मैं तुम्हें खरीद करके गाड़ीपर चढ़ाकर घरले चलनेके लिए आया हूँ।

टाम—बेटा जार्ज ! तुम बहुत विलम्ब करके आये हो, अब समय नहीं है। परमेश्वरने मुझे खरीद लिया है। वे मुझे अपने साथ अपने अमृत-धाममें ले जायँगे। वहीं जानेकी मेरी भी इच्छा हो रही है। केण्टाकीसे स्वर्गधाम ही अच्छा है।

जार्ज—ओ टाम काका ! दुखी टाम काका ! ऐसी बात मत करो, ऐसी बातें सुनकर मेरी छाती फटी जाती है। हाय ! हाय ! तुमको इतना कष्ट दे रखा है। ऐसे मैलेमें रखे हुए हैं ! ओह, तुम इतने दुःखमें थे, ओ टाम काका ! दुःखी टामकाका !

टाम—मुझे दुःखी मत कहो। मैं दुखी था सही, किन्तु अब मेरे दुःखोंका अन्त हो गया। मैं परम-पिताकी गोदमें जा रहा हूँ। जार्ज, यह देखो, स्वर्गका द्वार खुला हुआ है। धन्य यीशु, धन्य परमेश्वर!

जार्ज टामके ऐसे विश्वासपूर्ण वाक्य सुनकर चकित हो गया। वह निर्वाक् हो उसके मुखकी ओर ताकने लगा।

टाम जार्जका हाथ पकड़कर कहने लगा—जार्ज! तुम रोओ मत। मेरी कैसी अवस्था देखते हो, जो क्लोई से कहोगे! क्लोई बहुत ही दुखी होगी, किन्तु उससे कहना कि मैं अक्षय धाम को जा रहा हूँ-अब मैं यहाँ नहीं रह सकता। उससे यह विशेष करके कहना कि इस एक वर्षमें मुझे कष्ट नहीं मिला। ईश्वर मेरे साथ-साथ रहकर मेरी रक्षा करते थे, मेरे दुख दूर करते थे। मुझे लड़के-लड़कियोंके लिए सदैव दुःख होता था। उनलोगोंसे कहना कि वे मेरे ही मार्गका अनुकरण करेंगे, सदैव मेरेही मार्गका अनुकरण करेंगे। मेरे पिता-मातासे मेरे प्यारकी बात कहना। घरमें और सबसे भी मेरा प्रेम जनाना। मैं सभीको बहुत प्यार करता था। मैं जहाँ-जहाँ गया, सभीको प्राणोंकी भाँति प्यार करता था। जार्ज, संसारमें प्रेम बड़ाही अमूल्य पदार्थ है। आहा! धर्म-मार्गपर चलनेमें कितना आनन्द है!

उसी समय लेग्री उस कुटीके द्वारपर आकर खड़ा हुआ और घृणाका भाव प्रकट करके, वहांसे उसी क्षण चला गया। जार्जने उसे देखकर सक्रोध कहा—यह शैतान आया है! परमेश्वर एक-न-एक दिन इसे पापका प्रतिफल अवश्य देगा।

टाम—जार्ज! ऐसी बातें न कहनी चाहिए। यह आदमी बड़ा हतभाग्य है। उसके दुःखकी बात सोचनेपर भी दुख होता है। अभी पश्चाताप करनेसे परमेश्वर इसे क्षमा कर देंगे।

किन्तु मुझे दुःख है कि वह अब भी अनुताप नहीं करेगा।

जार्ज—अनुताप न करे तभी अच्छा है, जिससे कि फिर स्वर्गराज्यमें उसका मुख न देखना पड़े।

टाम—नहीं, बेटा जार्ज! ऐसा न कहो, ऐसी बातें सुनने से मुझे कष्ट होता है। ऐसे भावोंको मनमें स्थान मत दो। उसने मेरी कुछ भी हानि नहीं की, हाँ, केवल स्वर्गका द्वार खोल दिया है।

जार्जकी भेंटसे टाम आनन्दसे उत्तेजित हो उठा था, उस उत्तेजनाके कारण उसका शरीर और भी अधिक अवसन्न हो गया, उसकी, आँखें मुँद गयीं, वेगके साथ स्वास-प्रस्वास फेंकती हुई उसकी आत्मा, कुछ देरमें परलोक सिधारी। मृत्युकालमें उसके मुखसे यही दो-एक बातें निकली थीं—ईश्वरके चरणोंसे मुझे कौन अलग करेगा? सत्यके पथसे मुझे कौन भ्रष्ट करेगा।

जार्ज स्तब्ध होकर एकटक उस मृतकके मुखकी ओर देख रहा था। उसके मनमें आ रहा था कि टामका यह मृत्युगृह ही सबसे बढ़कर पवित्र स्थान है। कुछ काल पश्चात् उसने पीछे फिरकर देखा कि लेग्री खड़ा है।

टामके अन्तिम वाक्य सुनकर जार्जका यौवन-सुलभ उत्तेजित भाव कुछ शान्त हो गया था। नहीं तो आज वह लेग्रीको अवश्य ही बेत्राघातका स्वाद चखाता। इस समय उसका मुख देखकर जार्जको घृणा उत्पन्न हो आयी। वह उसी क्षण उसके पाससे चले जानेको उद्यत हुए, एवं उसे पुकार कर कहा—तुम्हारी जहाँ तक शक्ति थी तुमने किया, अब मैं इस मृतक शरीरको ले जाना चाहता हूँ। बोलो, इस मृतक शरीरके लिए तुम्हे कितना देना होगा? मैं भद्रोचित रीतिसे इसे समाधि दूँगा।

लेग्रीने कहा—मैं मरा गुलाम नहीं बेचता। तुम्हारी इच्छा हो, शव ले जाओ। तब जार्जने, लेग्रीके उन दो-चार दासोंसे जो वहाँ दिखायी पड़े, कहा—तुमलोग आकर मेरे साथ इस शवको गाड़ीपर चढ़ा दो, और मुझे एक कुदाली ला दो।

यह बात सुनकर लेग्रीके किसी आदेशकी अपेक्षा न कर, एक आदमी कुदाली लेने दौड़ा और दो आदमी जार्जके साथ, मिलकर टामके शवको लेकर गाड़ीपर चढ़ाने चले। लेग्री वहाँ खड़ा था, वह भी टहलते-टहलते इन लोगोंके पीछे-पीछे गाड़ीके पास आकर देखने लगा।

जार्जने अपने पहिननेके लवादेको उतारकर गाड़ीपर बिछाया और उसीपर टामके शवको यत्नपूर्वक रख दिया। इसके पश्चात् गाड़ी हाँककर चलनेके समय लेग्रीको पुकार कर कहा—तुमने जो यह नर-हत्याकी है, इसका दण्ड पाओगे। यह न समझना कि मैं तुम्हें कोरा छोड़ दूँगा। मैं अभी ही मजिस्ट्रेटके सामने इजहार दूँगा।

यह सुनकर लेग्रीने उपेक्षाके साथ हँसकर कहा—जाओ, जो तुम्हारी इच्छा हो, वह इजहार दो। मैं समझता हूँ कि मारे डरके मुझे रातको नींद भी न आवेगी। अँग्रेज साक्षी कहाँ पाओगे? इस प्रकारके मुकद्मोंमें गुलामोंकी साक्षीका कोई प्रमाण नहीं माना जाता।

जार्जने सोचा, बात तो ठीक है। इजहार देनेसे तो कोई लाभ न होगा। देश-प्रचलित आईनके अनुसार गोरोंके विरुद्ध कालोंकी साक्षीका कोई मूल्य नहीं। इसलिए उसे मन-ही-मन बड़ा कष्ट हुआ।

इसके पश्चात् लेग्री अपने-आप कहने लगा—मेरी समझमें नहीं आता कि एक मुर्दा निग्रोके लिए एक सुशिक्षित अँग्रेज क्यों इतना गोलमाल कर रहा है? ऐसे कुली और कुली-

रमणियाँ तो कितनी ही मरती हैं। फिर यह उसके लिए मुकदमा चलावेगा! कोई बुद्धिमान अँग्रेज-विचारक इसके विषयमें कर्णपात भी न करेगा। एक कुली मार डाला है, बस यही न!

बारूदके गोलेमें आग लग जानेसे जैसे वह भभक उठता है, ठीक उसी प्रकार यह बात सुनकर जार्जका क्रोध भी भभक उठा। जार्ज वकीलोंकी भाँति कानूनकी पोथियोंके पन्ने उलट कर कर्त्तव्य निश्चित नहीं करता था। उसमें मानुषिक तेज, मानुषिक वीर्य विद्यमान था। आईनका अध्ययनकर वह मनुष्यत्व-विहीन नहीं हो गया था। वह उसी क्षण गाड़ीसे कूद पड़ा और लेग्रीके मुखपर तड़ातड़ भरपूर मुक्के लगाने लगा। लेग्रीकी नाकसे तर-तर खून बहने लगा। कापुरुष लेग्री और अधिक न सह सका। वह मृतककी भाँति भूमिपर गिर पड़ा। जार्जने विदेशमें अकेले ही ऐसी वीरता प्रकटकर "जार्ज वाशिंगटन" के प्रातः स्मरणीय नामको सार्थक कर दिया।

संसारमें एक सी श्रेणीके लोग होते हैं, जो लात खानेपर ही लोगोंके साथ सद्व्यवहार करना सीखते हैं। लेग्री इसी श्रेणीका आदमी था। इसलिए अब उसने भद्रोचित भावका अवलम्बन किया। वह धीरे-धीरे उठा और बड़े भयके साथ जार्जकी ओर देखने लगा।

लेग्रीके खेतोंको छोड़कर कुछ दूरपर एक वृक्ष-लता परिपूर्ण सुन्दर स्थानमें जार्जने कुली लोगोंको एक समाधि खोदनेकी आज्ञा दी। कब्र तैयार हो जानेपर, कुली लोग टामके शवके निकट आकर जार्जसे कहने लगे—हुजूर, लबादा उतार लिया जाय। जार्जने कहा—नहीं, लबादा नहीं उतारा जायगा, उसीके साथ ही वह सब कब्रमें रखदो। पश्चात् टामके शवको सम्बोधित कर कहा—हा टाम काका! मेरे पास इस

समय ऐसा कोई सुन्दर वस्त्र नहीं है, जो तुम्हारे कफनका काम दे। यही मेरी श्रद्धाका शोक चिह्न है।

टामकी कब्र मिट्टीसे पाट दी गयी और उसपर फूल फैला दिये गये। तब जार्जने उन कुली लोगोंको कुछ पैसे देकर बिदा किया। वे सब जार्जसे कहने लगे—हुजूर, हम लोगोंको आप खरीद लीजिये। हम लोग दिन-रात आपका काम करेंगे। यहां हम लोगोंको बहुत दुःख है।

जार्जने कहा-मैं अभी यहाँ किसीको नहीं खरीद सकता, तुमलोग अपने स्थानको लौट जाओ। वे सब निराश होकर चले गये। जार्ज टामके कब्रपर घुटनोंके बल बैठकर, ऊर्द्ध्व-नेत्रोंसे ताकता हुआ, अञ्जलि बद्ध होकर कहने लगा—हे अनन्त परमेश्वर! आपको साक्षी बनाकर प्रतिज्ञा करता हूँ कि देश-से इस घृणित प्रथाको दूर करनेके लिए तथा गोरोंके अत्याचारको निर्मूल कर देनेके लिए, मैं अपने तन-मन अर्पण कर दूँगा। आप मेरे इस सत्संकल्पके पालनमें चिर सहायक हों।

टामके समाधि-स्थानपर कोई स्मृति चिह्न स्थापित न हुआ। किन्तु उसका पवित्र जीवन ही उसका सबसे उत्तम स्मृति-चिह्न होकर रह गया।

पाठको! टामके लिए दुःखी होनेका कोई कारण नहीं है। क्या आप सोचते हैं कि टाम दयाका पात्र है, वह दुःखी है। टाम जिस धनका धनी था उसके दर्शन तो बड़े-बड़े राज भाण्डारोंमें भी दुर्लभ हैं।

टामकी हृदयस्थित सत्य-प्रियता, न्याय परता, धर्म-तृष्णा, प्रीति, भक्ति और दृढ़ विश्वास क्या संसारके समस्त धनोंकी अपेक्षा अधिक मूल्यवान नहीं हैं?

पैंतालीसवाँ परिच्छेद

भूतकी कथा

फासी और एमलिनके भाग जानेपर लेग्रीके दास-दासियोंमें सदैव भूतकी चर्चा और उसकी आलोचना होने लगी। रातको द्वार बन्दकर देनेपर भी प्रातःकाल खुला हुआ पाया जाता है और रातमें कोठरीके दरवाजेपर ठक्-ठक् शब्द होता है। इसलिए सब लोगोंने एक मतसे यह निश्चित किया कि वह सब भूतके कार्योंके अतिरिक्त और कुछ नहीं है। कोई-कोई कहता कि भूतके पास सब घरोंकी ताली है, यदि ऐसा न होता, तो वह द्वार कैसे खोल सकता? दूसरे लोग कहते कि भूत तो अपनी, इच्छासे बिना तालीके भी द्वार खोल ले सकता है।

भूतकी आकृतिके सम्बन्धमें भी नाना प्रकारका मतभेद होने लगा। एकने कहा कि भूतके सिर नहीं होता। उसके दोनों नेत्र, दोनों कन्धोंपर रहते हैं। इसका प्रतिवाद करते हुए दूसरेने कहा "मैंने अपनी आँखोंसे दो-तीन भूतोंको देखा है, उन सभोंके सिर थे।" यह सुनकर तीसरेने कहा, "भाई, भूतके सिर हो सकता है, परन्तु वह पीठकी ओर फिरा रहता है, छातीकी ओर कभी नहीं होता। मैंने जितने भूत देखे हैं उन सबके सिर पीठकी ओर थे।" इसपर चौथेने कहा, "भाई, तुमने जितने भूत देखे हैं, वे सब विलायती भूत थे, उनमेंसे एक भी देशी नहीं था।"

दास-दासियोंमें इस प्रकार भूतकी आकृतिके विषयमें नाना प्रकारके तर्क-वितर्क होने लगे, किन्तु अनेक तर्क-वितर्क और गवेषणा हो जानेपर भी आपसका मत-भेद ज्यों-का त्यों बना रहा।

दास-दासियोंकी भूत-सम्बन्धी यह आलोचना और कथोपकथन दिन-प्रति-दिन लेग्रीके कानमें प्रवेश करने लगा। लाख चेष्टा करनेपर भी वह भूतकी इस गल्पको न भुलासका। उत्तरके घरमें प्रायः ही आदमीके चलनेकी पद-ध्वनि सुनायी पड़ जाती है। इसलिये प्रातःकाल उठते ही इस विषयकी कथा-वार्ता छिड़ जाती। प्रति दिन भूतकी चर्चा सुनते-सुनते अशिक्षित धर्माधर्म-ज्ञान-शून्य लेग्रीके मनमें भी भली भाँति भयका सञ्चार हो गया। इसने अब अपने मनसे इस बातको भुलानेके लिए प्रति रात्रिको अत्यधिक परिमाणमें ब्रान्डी पीना आरम्भ किया।

जिस दिन प्रातःकाल टामकी मृत्यु हुई थी, उस दिन लेग्री अपने पड़ोसके किसी खेतमें गया था। उसे वहाँसे अपने घर लौटनेमें रात्रि अधिक हो गयी थी। उस गंभीर रात्रिमें घर आते ही वह अपने शयन-कक्षमें चला गया। बड़ी सावधानीसे उसने सब किवाड़ बन्द किये। उत्तर दिशाके किवाड़े बन्द करके उसके पीछे एक कुर्सी रख दी। सिरहाने अपनी पिस्तौल रखली, एवं अत्यधिक परिमाणमें शराब पीकर सो रहा। कुछ समयके पश्चात् उसे नींद आगयी। निद्रितावस्थामें उसने पहिलेकी ही भाँति पुनः अपनी माता-को देखा और चीत्कार सुना। इससे वह जाग पड़ा। जागकर उसने घरके भीतर स्पष्ट रूपसे मनुष्यके पैरोंकी ध्वनि सुनी। आँखे मलकर देखनेपर उसने देखा कि उसके शयन-गृहका द्वार खुला हुआ है, दीपक बुझा हुआ है। इसी अन्धकारमें एक शीतल हाथने उसके शरीरको स्पर्श किया। उसके स्पर्श करते ही वह उछलकर बिस्तरसे अलग जा खड़ा। वह श्वेत-वस्त्रावृत्त मूर्त्ति तुरन्त अदृश्य हो गयी। लेग्रीने द्वारके पास आकर देखा कि कोई बाहरसे किवाड़े बन्द कर गया है।

किवाड़ बन्द पाते ही वह मारे भयके मूर्छित होकर भूमिपर गिर पड़ा। प्रभात कालमें उसने जागकर देखा कि वह शय्या छोड़कर भूमिपर पड़ा हुआ है।

इसके दूसरे दिनसे लेग्री और भी अधिक ब्रान्डी-पान करने लगा। मनमें सोचा कि दो-चार रात अचैतन्य अवस्थामें ही व्यतीत करूँगा, किसी प्रकार इस दुश्चिन्ताको मनमें न रहने दूँगा। किन्तु दो-चार दिन तक इस प्रकार सुरा-पान करनेसे भयानक ज्वर चढ़ा। वह अचेत हो गया। अज्ञानावस्थामें वह पागलकी भाँति अपने पूर्वकृत पापकर्म और निष्ठुराचरणकी बातें बकने लगा। उन लोमहर्षण व्यवहारोंकी कथा सुनकर ही लोगोंका हृदय काँप उठता है। इसलिए क्या अँग्रेज, क्या निग्रो कोई भी उसके बिस्तरेके पास ठहर न सका। दिन-रात वह उसी अचेतन अवस्था में अकेला पड़ा रहा। तीन दिनके पश्चात् उसके मुखसे अविरल रक्त-स्राव होने लगा, एवं इसके थोड़ी ही देर पश्चात् उस पापात्मा, नराधम अँग्रेजके पुत्रने अपने चिरकलंकित जीवनके संस्पर्शसे मानव-समाजको निर्मुक्त किया। उसके इहलोक-परित्यागसे पृथ्वी पवित्र हुई।

इसकी मृत देहको इसके निग्रो दासोंने रेड नदीमें बहा दिया और इसकी जो कुछ नकद सम्पत्ति थी, उसे उन लोगोंने अपने हाथमें करके स्वाधीन भूमि उत्तरकी ओर पलायन किया।

जिस रात्रिमें लेग्री भयसे मूर्च्छित हो गया था, उसी रात्रिमें तीन-चार निग्रो दासोंने देखा कि श्वेत-वस्त्रावृत्त दो स्त्रियाँ घरसे बाहर चली गयीं। उसके दूसरे दिन सवेरे घरका बाहरवाला दरवाजा भी खुला हुआ पाया गया। इसीसे लेग्रीको और भी अधिक भय लग गया था। उसी रात्रिके अवसान तथा सूर्योदयके कुछ पहिले, कासी एवं एमलिन पासके एक

शहरके वृक्ष-तले बैठकर विश्राम कर रही हैं। वृक्षकी ओटमें बैठकर कासीने स्पेन-देशीय भद्र महिलाकी भाँति वस्त्र पहिने एवं एमलिनने उसकी दासीका वेष धारण किया।

कासी भद्र-वंश-जात थी एवं बाल्यकालसे ही उसने भद्रोचित शिक्षा पायी थी, इसलिए उसे देखकर कोई पला-तक दासी नहीं समझ सकता था। शहरमें जाकर उसने एक सन्दूक खरीदा। उस सन्दूकमें उसने वस्त्रादि रखे एवं उसे एक मोटियेके सिरपर रखवाकर पासके एक होटलमें आयी और वहीं जहाज़के आसरे ठहरी रही।

उस होटलमें आते ही पहिले उसका जार्ज शेल्बीके साथ साक्षात्कार हुआ। जोर्ज शेल्बी भी यहाँ जहाजकी अपेक्षा कर रहा था। कासीने अपने गुप्त-स्थानसे जार्जको टामका शव ले जाते देखा था एवं जार्जने जो लेग्रीको मारा था वह भी उसने अपनी आँखों देखा था, इसलिए जार्जका मुख उसके निकट बिलकुल अपरिचित न था। विशेषतः लेग्रीके घरसे जार्जके चले आनेपर कासीने छिप-छिपकर दास-दासियोंकी बात-चीतसे यह जान लिया था कि टामके पूर्व स्वामीके पुत्र हैं। इसलिए वह आग्रहके साथ जार्जसे घनिष्टता करनेमें यत्नवती हुई।

कासीका भद्रोचित व्यवहार, तथा पहिनावा-ओढ़ावा देखकर किसीको उसपर संदेह न हुआ। विशेषतः वह होटल-की वस्तुओंका मूल्य देनेमें किञ्चित् भी नहीं सकुचती थी इसीसे, सब लोग और भी संतुष्ट थे। कासीको इन सब विषयोंकी विशेष अभिज्ञता थी, इसीसे उसने पहिले ही लेग्री-के सन्दूकमेंसे पर्याप्त द्रव्य निकाल लिया था।

जहाज़ आ पहुँचा। जार्ज शेल्बीने बडी शिष्टताके साथ कासीका हाथ पकड़कर उसे जहाज़पर चढ़ाया। स्वयं कष्ट

उठा उसके लिए जहाज़के मध्यमें एक सुन्दर कमरा किराये पर ले दिया। जहाज़ जब तक रेड नदीपर था, तब तक कासी अपने कमरेमें से फिर बाहर न निकली। शारीरिक अस्वस्थताका बहाना करके वहीं अपने कमरेमें सोयी रही। किन्तु मिसीसिपी नदीके मुहानपर जहाज़के पहुँचते ही वह बाहर निकली और जार्जने फिर उसके लिए इस नदीपर खड़े हुए जहाज़में एक कमरा किरायेपर ले लिया। इस जहाज़पर आते ही कासीकी अस्वस्थता दूर हो गयी। वह जहाजके इस कोनेसे उस कोनेतक टहलती हुई घूमने लगी।

जहाज़के अन्यान्य यात्री लोग उसका परिधान और सौन्दर्य देखकर कहते कि यौवनकालमें सचमुच यह भद्र महिला अत्यन्त श्रेष्ठ रूपवती रही होगी। इसीको प्रकृत रूपवती कह सकते हैं।

जार्ज कासीको देखते ही सोचने लगा था कि इस प्रकार॰ की मुखाकृति उसने कभी कहीं देखी है। इसलिए वह सदैव कासीके मुखकी ओर देखता रहता। भोजन करनेके समय जार्जकी दृष्टि कासीके मुखपर ही थी, यह देखकर कासी उद्विग्न हो उठी। उसने सोचा कि यह व्यक्ति मुझपर संदेह करता है, अतएव उसने जार्जकी दयापर भरोसा करके अपना समस्त वृत्तान्त उसको सुना दिया।

जार्ज उसके जीवनका इतिहास सुनकर बहुत ही दुखी हुए थे। उसके प्रति बड़ी सहानुभूति प्रकट करने लगे, एवं उसे आस्व॰ स्त किया। लेग्रीके दास-दासी जो अत्यन्त कष्ट भोग करते थे, वह वे आँखों देख आये थे। इसलिए उसके खेतमें से जो भाग आये थे, उनके प्रति उसके हृदयमें सहज ही दयाका भाव सञ्चरित हुआ। कासीसे वे बारम्बार कहने लगे—आपको कुछ भय नहीं, मैं प्राण-पनसे आपकी रक्षा करूँगा।

कासीने जो कमरा भाड़ेपर लिया था उसीसे सटेहुए कमरेको मैडम डियो नामक एक फरासीसी भद्रमहिलाने किराये-पर लिया। इस रमणीके साथ एक और छोटी सी बालिका थी। जब इस फरासीसी रमणीने, जार्जकी बात-चीत सुनकर, जान पाया कि ये केन्टाकी प्रदेशके निवासी हैं, तब वे इनके साथ परिचय करनेके लिए विशेष उत्सुक हुईं। उस समयसे जार्ज प्रायः ही उनके कमरेके दरवाजेपर बैठकर बात-चीत करता। कासी अपने कमरेसे उन लोगोंकी बातें भलीभाँति सुन सकती थी।

एक दिन मैडम डियोने बातों ही बातोंमें जार्ज शेल्बीसे कहा कि पहिले वे केन्टाकीमें थी। उन्होंने केन्टाकी प्रदेशके जिस ग्रामका नाम बतलाया, उसी ग्राममें जार्जका भी घर था। यह सुनकर जार्ज अत्यन्त आश्चर्यान्वित हुए।

इसके पश्चात् किसी दूसरे दिन मैडम डियोने जार्जसे पूछा—आपके गाँवमें हेरिस नामक कोई व्यक्ति रहता है?

जार्ज—हाँ, हेरिस नामका एक वृद्ध मनुष्य हमारे गांवमें रहता है।

मैडम डियो—उसके बहुतसे दास-दासी हैं न?

शेष बातें, मैडम डियोको, अत्यन्त आग्रहके साथ पूछते देखकर जार्ज कुछ विस्मित हुए। कहा—हाँ हैं तो।

मैडम डियो—उसके जार्ज नामक एक वर्ण-संकर दासको क्या आपने कभी देखा है, अथवा उसका नाम तो सुना ही होगा?

जार्ज—जार्ज हेरिसको मैंने देखा ही क्यों है, मैं उसे अच्छी प्रकारसे जानता हूँ। उसके साथ मेरी माताकी एक दासी-का विवाह हुआ है। किन्तु वह कनाडा भाग गया है।

मैडम डियो—कनाडा भाग गया? ईश्वरको धन्यवाद है!

जार्ज शेल्बी मैडमडिथोकी बातें सुनकर बड़े चकित हुए किन्तु उन्होंने उससे कोई बात पूछी नहीं। मैडमडिथो दोनों हाथसे मुहँ ढाककर मारे आनन्दके रो उठीं। उन्होंने कहा—जार्ज मेरा भाई है।

जार्ज शेल्बीने नितान्त विस्मित होकर पूछा—यह क्या, जार्ज आपका भाई है!

मैडमडिथोने सगर्व मस्तक उठाकर उत्तर दिया-हाँ, मिस्टर शेल्बी! जार्ज हमारा भाई है।

मिस्टर शेल्बीने कहा—मैं आपकी बातें सुनकर बड़ा आश्चर्यान्वित हुआ।

मैडमडिथो—मिस्टर शेल्बी, जार्ज उससमय निरा बालक था जब हेरिसने मुझे एक दक्षिण देशीय दासव्यवसायीके हाथ बेच दिया था। एक सहृदय फरासीसी संभ्रान्त व्यक्तिने मुझे उस दास-व्यवसायीसे खरीद लिया एवं दास-बन्धनसे मुक्तकर शास्त्रोक्त विधिसे मेरा पाणि-ग्रहण किया। इस समय मेरे स्वामी मर गये हैं। मैं अपने उस कनिष्ट सहोदर जार्जको खरीद करके दासत्व-शृंखलसे मुक्त करनेके लिए केन्टाकी जा रही हूँ।

जार्ज शेल्बी—जार्जने मुझसे कई बार कहा था कि एमिली नाम्नी मेरी एक बहिनको मेरे मालिकने दक्षिण-प्रदेशमें बेच दिया है।

मैडमडिथो—मेरा ही नाम एमिली है।

आर्जशेल्बी—आपका भ्राता एक सच्चरित्र युवक है। जैसा बुद्धिमान है वैसा ही सच्चरित्र है। किन्तु दासताकी कलंक-कालिमा लगी रहनेसे, कौन उसे आदृत कर सकता है। उसने मेरे घरमें अपना विवाह किया है, इसीसे मैं भलीभाँति जानता हूँ।

मैडमडिथो—उसकी स्त्री कैसी है ?

जार्ज शेल्वी—एक रत्न है। परम सुन्दरी, बुद्धिमती, मधुर प्रकृति एवं धर्म-परायणा है। मेरी माताने उसे अपनी कन्याकी भाँति यत्नपूर्वक पाला है। वह अच्छी तरह लिख-पढ़ सकती है। सीना-पिरोना जानती है, गृहकार्य और संगीत-विद्यामें वह पारंगत है।

मैडमडिथो—वह क्या आपके घर पैदा हुई है ?

जार्जशेल्वी—नहीं ! मेरे पिताजीने उसे न्यूआलिन्ससे खरीद लाकर मेरी माताको उपहारमें दिया था। उससमय उसकी अवस्था आठ-नौ वर्षकी थी। पिताजीने कितने रुपये देकर उसे क्रय किया था, यह बात उन्होंने कभी माताजीको नहीं बतलायी। अभी थोड़े दिन हुए, जब हम लोगोंने कागज-पत्रोंकी जांचकी, तब ज्ञात हुआ कि वे उसे बहुत अधिक मूल्य देकर क्रयकर लाये थे। कदाचित् उसके रूपके लिए ही इतना अधिक मूल्य देना पड़ा था।

कासी जार्जके पीछे वैठी थी। इसलिए कासी जो अत्यन्त मनोयोगसे इनकी बातें सुन रही थी, वह ये लक्ष्य नहीं कर सके। जार्जकी बात समाप्त होते ही उसने उनके हाथपर अपना हाथ रखकर पूछा—मिस्टर जार्ज, आप बतला सकते हैं कि आपके पिताजीने किसके पाससे उस कन्याको क्रय किया था ?

जार्जशेल्वी—सिमन्स नामक एक व्यक्तिसे लिया था, ऐसा ध्यानमें आता है।

"हे परमेश्वर !" यह कहकर कासी उसी क्षण मूर्च्छित हो गयी। जार्ज एवं मैडमडिथो कासीकी इस आकस्मिक मूर्च्छाके कारणका निर्णय न कर सके। सब लोग एकत्र होकर

उसकी मूर्च्छा दूर करनेका उपाय करने लगे। कासी चैतन्य होनेपर बालिकाकी भाँति उच्चस्वरसे रोने लगी।

पाठिकाओंमेंसे जो सन्तानवती होंगी वे 'मा' इस मधुर नाम से परिचित होंगी। वे कासीके हार्दिक भावोंको हृदयङ्गम करनेमें समर्थ होंगे। कासीका क्रन्दन, विषादका क्रन्दन नहीं था। कासी अपनी कन्याको पुनः देख पानेसे निराश हो गयी थी, किन्तु अब ईश्वरकी कृपासे फिर उसे देख पायेगी, इस आशाका संचार हुआ। इसलिए उच्छ्वसित् हृदयावेग सम्वरण न कर सकनेके कारण वह बालिकाकी भाँति रोने लगी।



छियालीसवाँ परिच्छेद



स्वाधीनताका दाता

जार्ज शेल्बीने घर लौटनेके कुछ ही दिन पहिले जो पत्र अपनी माताको लिखा था, उसमें टामके सम्बन्धकी कोई बात नहीं थी। किस दिन घर पहुँचेंगे, केवल इतनी ही बात उस पत्रमें सूचित की थी। टामकी मृत्युका संवाद लिखनेका उनको साहस न हुआ। अनेक बार उसके मृत्यु-कालकी घटनाओंको लिखनेकी चेष्टा की, किन्तु पत्रमें उन बातोंको आरम्भ करते ही उनका हृदय दु:ख-शोकसे भर आता, दोनों नेत्र आँसुओंसे पूर्ण हो जाते, तब वे उसी क्षण काग़ज़ फाड़ डालते तथा फेंककर आँसू पोंछते-पोंछते अन्य स्थानमें जाकर हृदयको ढ़ाढ़स देनेकी चेष्टा करने लगते।

जिस दिन जार्ज घर पहुचनेवाले थें उस दिन उनके घरके सब लोग हर्षोत्फुल्ल चित्तसे उनके आनेकी प्रतीक्षा कर रहे थे। समीको यह आशा हो रही थी, कि आज वे टामकाका-को साथ लेकर आयेंगे।

दोपहरके समय मिसेज शेल्वी अपने कमरेमें बैठी हुई हैं। क्लोई उनके पास खड़ी होकर भोजन करनेके टेबुलपर काँटा-चम्मच आदि सजाकर रख रही है। आज वह बड़ी प्रसन्न है। पाँच वर्षोंके पश्चात् आज स्वामीका मुख देखेगी। वह आज एक-एक वस्तुको पाँच-पाँच वार सजाती। इच्छा होती है कि इस समय उस विषयमें मिस शेल्वीसे दो-चार बातें करें। टेबुलके किस ओर जार्ज बैठेगा, किस आसन पर जार्ज बैठेगा, इस विषयपर गृहिणीके साथ अनेक बातें हो रही हैं। अन्तमें क्लोईने कहा—मेमसाहब आपने जार्जका पत्र आया है?

मेमसाहब—हाँ, पाया है, किन्तु केवल एक पंक्ति है। वह यही कि आज घर पहुँचूँगा।

क्लोई—जान पड़ता है, मेरे बुड्ढे की कोई बात नहीं लिखी।

मेमसाहब—नहीं क्लोई! टामकी कोई बात नहीं लिखी। उसने लिखा है कि अन्यान्य विषय मैं घर आकर कहूँगा।

क्लोई—मास्टर जार्जका स्वभाव ही ऐसा है। वे अधिक लिखना पसंद नहीं करते। वे सब अपने मुखसे कहना ही अधिक पसंद करते हैं। लड़के हैं, और लिखेंगे ही क्या! मेरी समझमें नहीं आता कि आप लोग इतना कैसे लिख डालती हैं। साहब लोग बहुत लिख सकते हैं।

मेमसाहब कुछ मुसकरायीं।

क्लोई—बूढ़ा, घर आनेपर लड़कोंको न पहिचानेगा। बेटीको भी नहीं पहिचान सकेगा। इस समय वह बहुत बड़ी-

हो गयी है। पोली मेरी जितनी भोली है उतनी चतुर भी है। वह घरमें बैठकर भोजन ताकती रहती है। जिस दिन बूढ़ा गया था, उस दिन जैसा भोजन बनाया था आज भी वैसा ही भोजन तैयार किया है। हा परमेश्वर, उस दिन मेरे मनमें क्या होने लगा था।

मिसेज शेल्बीने क्लोईकी यह बात सुनकर एक दीर्घ निःश्वास फेंकी। उनका मन उचट गया। जिस दिनसे जार्जका पत्र पाया है उसी दिनसे उनके मनमें अनेक प्रकारकी आशंकाएँ उत्पन्न हो रही हैं। सोचती हैं कि जार्जके पत्रमें टामकी कोई बात न लिखनेका, कोई-न-कोई विशेष कारण है।

क्लोई—मेमसाहब। आपने मेरे भाड़ेके रुपये तो मँगा लिये हैं न ?

मेमसाहब—हाँ मँगा लिये हैं।

क्लोई—बूढ़ेको यह बिल और रुपये दिखाऊँगी। बूढ़ा देखेगा कि मैंने कितने रुपये पाये हैं। उस मिठाईवालेने तो मुझसे और कुछ दिन रहनेको कहा था और मैं भी रहना चाहती थी, किन्तु बूढ़ेके घर आनेके कारण मेरा मन वहाँ नहीं लगता था। मिठाईवाला बड़ा भला आदमी है।

मैंने कितने रुपये पाये हैं, यह उसे दिखाऊँगी, इसके लिए क्लोई पहिले से ही बड़ा आग्रह प्रकट कर रही थी। मिसेज शेल्बीने उसके मनस्तुष्टिके लिए वह बिल और सब रुपये मँगाकर वहीं रख लिया था।

क्लोई—मेरा बूढ़ा पोलीको न पहिचान सकेगा। वह पहिचानेगा ही कैसे! बाप रे! पाँच वर्ष हुए, वे उस लड़केको ले गये थे। उस समय पोली बहुत छोटी थी। केवल थोड़ी-थोड़ी खड़ी हो सकती थी। चलनेके समय उसे उठते देखकर बूढ़ा कितना प्रसन्न होता था, और दौड़कर गोदमें

उठा लेता था। आहा! इसी समय गाड़ीका घड़-घड शब्द सुनायी पड़ा। "मास्टर जार्ज" कहती हुई क्लोई खिड़कीके पास दौड़ी गयी। मिसेज शेल्बीने शीघ्र ही बाहर आकर पुत्रका आलिङ्गन किया।

जार्ज उस अन्धकारमें उत्साहपूर्ण नेत्रोंसे चारों ओर किसीको खोजने लगा। जार्ज क्लोईको देखते ही उसके गलेसे लिपट गया और कहने लगा—दुःखिनी क्लोई काकी! यदि मैं अपना सर्वस्व देकर भी टामकाकाको ले आ सकता, तो ले आता, किन्तु वह तो इस लोकसे बढ़कर उच्चलोकमें चला गया।

यह सुनते ही मिसेज शेल्बी, हा-हाकार करने लगी, किन्तु क्लोई निर्वाक रही।

सब लोग घरमें गये। क्लोईके उपार्जित किये हुए वे रुपये उस समय भी टेबुलपर पड़े थे।

क्लोई काँपते हुए स्वरसे रुपये मेमसाहबके पास रखकर बोली—मैं अब और इन रुपयोंको देखना नहीं चाहती। इनके विषयमें एक बात भी सुनना नहीं चाहती। मैं जानती थी कि अन्तमें यही होगा। उन सबोंने उसे मार ही डाला।

यह कहकर क्लोई घरसे बाहर निकल आयी। मिसेज शेल्बी स्वयं जाकर उसे पकड़कर फिर घरमें ले आयीं और अपने पास बैठाकर कहने लगीं "दुखिनी क्लोई"!

क्लोई उनके कन्धेपर मस्तक रखकर रोते-रोते बोली—क्षमा कीजियेगा। मेरा हृदय चूर-चूर हो गया है।

मिसेज शेल्बीने कहा—यह मैं समझती हूँ। मुझमें इतनी क्षमता नहीं है कि तुम्हारी व्यथाको शान्त करूँ, परन्तु ईश्वर सब कुछ कर सकता है। भग्न-हृदयको वे ही सुस्थ करते हैं, वे ही हृदयका घाव भरते हैं, यह कहते-कहते उनके

कपोलको धोते हुए अश्रु बहने लगे। कुछ काल तक सभी लोग चुप-चाप आँसू बहाते रहे। अन्तमें जार्ज धीरे-धीरे आकर उस शोकार्त्त विधवाके पास बैठ गये और उसका हाथ अपने हाथमें लेकर गद्गद कण्ठसे उसके स्वामीकी वीरोचित मृत्यु-वार्ता पूर्वानुसार वर्णन करने लगे, एवं अपनी पत्नीके प्रति टामने जो अन्तिम प्रेम-वाक्य कहे थे, उन्हें भी उसे बतला दिया।

इस घटनाके प्रायः एक मासके पश्चात् एक दिन प्रातःकाल शेल्वीके घरके सब दास-दासी अपने नवीन मालिकके आदेशानुसार एक-एक करके एक स्थानपर एकत्रित हुए।

कुछ समयोपरान्त सबने विस्मित होकर देखा कि जार्ज बहुतसे कागज हाथमें लिये हुए घरमें घुसे। उन्होंने प्रत्येकको एक-एक कागज देकर कहा कि ये सब दासत्वसे मुक्त कर देनेके प्रमाण-पत्र हैं। मैंने आज अपने घरके सम्पूर्ण दास-दासियोंको दासत्व-बन्धनसे एकदम निर्मुक्त कर दिया। उन्होंने प्रत्येकको एक-एक कर उसका प्रमाण-पत्र पढ़कर सुनाया। उनके चारो ओर दास लोगोंमें से कोई तो आनन्द-विह्वल होकर नाचने लगा, कोई रोने लगा, कोई उल्लास-ध्वनि करने लगा। अनेक फिर अत्यन्त चिन्ताकुल चित्तसे जार्जके पास आकर कागज लौटा लेनेका अनुरोध करने लगे। वे कहने लगे—हम जितने स्वाधीन हैं, उससे अधिक स्वाधीन नहीं होना चाहते। हम यह घर छोड़कर, मेम साहबको तथा आपको छोड़कर कहीं भी नहीं जाना चाहते।

जार्जने उन लोगोंको सब बातें समझा देनेकी चेष्टा की, किन्तु उन लोगोंने उनकी बातोंपर कुछ ध्यान न दिया और बार-बार कहने लगे कि हमलोग यहाँसे कहीं न जायँगे। अन्तमें जब सब शान्त हुए, तब जार्ज बोले—तुम लोगोंको

मेरा घर छोड़कर जानेकी कोई आवश्यकता नहीं है। पहिले जितने भृत्योंकी आवश्यकता, थी अब भी है। घरमें पहिले जो-जो काम थे वे सब अब भी ज्योंके त्यों बने हैं। किन्तु अब तुम लोग पूर्ण स्वाधीन पुरुष और स्वाधीन रमणी हुई। मैं तुम लोगोंसे परामर्श करके प्रतिमास प्रत्येकको वेतन दूँगा। तुम लोगोंको स्वाधीन कर देनेसे, तुम्हारा यह लाभ हुआ कि अब यदि मैं ऋण-ग्रस्त हो जाऊँ अथवा मरजाऊँ, तो तुम लोगोंको कोई भी पकड़ ले जाकर बेच नहीं सकता। मैं अपने कामोंको स्वयं करनेकी चेष्टा करूँगा। और तुम लोगोंने जो स्वाधीनता पायी है, किस प्रकारसे इसका सदुव्यवहार कर सकते हो, तुम लोगोंको इस विषयकी शिक्षा देनेकी चेष्टा करूँगा। इस विषयकी शिक्षा प्राप्त करनेमें तुम लोगोंको बहुत दिन लगेंगे, पर तुम लोग यदि सच्चरित्र हो जाओगे, शिक्षामें मनोयोग दोगे, तो ईश्वरके आशीर्वादसे मैं भी तुम लोगोंको शिक्षा देनेमें सक्षम होऊँगा। अब तुम लोग स्वाधीनता ऐसे अमूल्य पदार्थको पानेपर ईश्वरके चरणोंमें कृतज्ञता प्रकट करो।

जार्जकी यह बात सुनकर एक बड़ा वृद्ध निग्रोदास खड़ा हो, हाथ उठाकर कहने लगा—धन्य परमेश्वर! तुम्हारी ही अनुकम्पासे आज मैं दासत्वसे निर्मुक्त हुआ। इस वन्धनसे वृद्धके ही साथ अन्यान्य दास-दासी भी सकृतज्ञ चित्तसे ईश्वरके निकट प्रार्थना करने लगे। इनलोगोंकी प्रार्थनाके समाप्त होनेपर जार्ज टामके मृत्यु-समयकी घटनाका, इन लोगोंके सम्मुख आद्योपान्त वर्णन कर कहने लगे—तुम सब लोग कृतज्ञतापूर्वक हमारे टाम काकाका स्मरण करो। उन्होंने ही आज अपने प्राण-विसर्जन करके तुम लोगोंको स्वाधीनता प्रदान की है। उनकी यह शोचनीय मृत्यु देखकर मेरा हृदय नितान्त आर्द्र हो गया

था। मैंने उनके समाधिस्थलपर बैठकर सर्व-व्यापी परमेश्वर को साक्षी बनाकर यह प्रतिज्ञा की थी कि भविष्यमें फिर कदापि इस नीच दासत्व-प्रथाको आश्रय न दूँगा; स्वयं कभी दास न रखूँगा; भविष्यमें मेरे ऋणके परिशोधमें किंवा मेरी मृत्यु हो जानेपर किसीको अपने स्त्री-पुत्रोंको छोड़ना अथवा अपने आत्मीयोंसे विछोह करना न पड़ेगा।

आज मेरी वह प्रतिज्ञा पूर्ण हुई। आज तुम सब लोग स्वाधीन हुए। अतएव इस स्वाधीनताका उपभोग करनेके कारण जब तुमलोग आनन्दसे उल्लसित होना तब हमारे परमबन्धु टाम काकाको स्मरण करना, उनके परिवारके साथ कृतज्ञता और प्रेम प्रकट करना, एवं आमरण टामके सद्दृष्टान्त का अनुकरण करना।

टामका साधु जीवन ही उसका एकमात्र चिह्न है। तुम सब टामकाकाकी भाँति सच्चरित्र, विश्वस्त एवं धर्म-परायण होनेकी चेष्टा करते हुए अपने-अपने हृदयोंमें उनका स्मृति-मन्दिर निर्माण करो।



विनीत भाव तथा अन्य अनेक सद्गुण देखकर, उसके साथ विवाह करनेकी इच्छा प्रकट की एवं फ्रान्स पहुँचते ही उसके साथ विवाह कर लिया। जार्जने क्रमशः चार वर्ष तक फ्रान्स में रहकर अनेक शास्त्रोंका अध्ययन किया। पश्चात् किसी राजनैतिक घटनाके कारण उन लोगोंको फ्रान्स छोड़ना पड़ा। अतएव वे फिर केनाडा चले आये।

अब जार्ज एक सुशिक्षित युवक है। जार्जका लिखा हुआ एक पत्र हम नीचे उद्धृत करते हैं। यह पत्र जार्जने कार्य क्षेत्रमें प्रवेश करनेके पूर्व ही अपने किसी मित्रको लिखा था। शिक्षा-द्वारा उसका हृदय कितना समुन्नत हो गया है पाठक गण पत्र पढ़कर ही समझ जाइयेगा।

"प्रिय मित्र !"

"मैं यह जानकर बड़ा दुखी हुआ कि तुम मुझे गोरोंके साथ मिलकर एक समाज-भुक्त हो जानेका अनुरोध करते हो! तुम कहते हो कि मैं स्वयं गोरा हूँ, मेरी स्त्री भी गोरी है और हमारे संताने भी गोरी हैं, इसलिए मैं अनायास ही देशीय समाज-युक्त हो जा सकता हूँ। किन्तु इसप्रकार भद्र-समाजयुक्त होनेकी मेरी रत्तीभर भी इच्छा नहीं है। देशीय समाज अथवा संभ्रान्त-समाज किसीसे भी मेरी किंचित्मात्र भी सहानुभूति नहीं है। मानव समाजकी एक श्रेणीके लोगोंको पशुओंकी भाँति रखकर उनके साथ पशुसा व्यवहार करके यदि अपर श्रेणीस्थ लोगोंको भद्रवस्था प्राप्त करनी हो तो उससे समग्र मानव-समाजका, कदापि कोई उपकार नहीं हो सकता। उससे मानव-समाजका उपकार होना तो दूर रहा, उल्टा उससे समाजका घोर अनिष्ट होता है। जिस श्रेणीके लोग केवल पशुकी भाँति रहते हैं, वे कभी कोई ज्ञानोपार्ज्जन नहीं कर सकते, आजीवन मूर्ख ही रहते हैं। इसलिए उनमें धर्माधर्मका

उपसंहार

इलाइज़ाके सम्बन्धमें जार्ज शेल्बीने जो बातें मैडमडिह्थोसे कही थीं, उन्हें सुनकर कासीने निश्चय-पूर्वक समझ लिया कि यही उसकी कन्या है। उसकी ऐसी धारणा बँधनेका एक विलक्षण कारग था। वह यह कि जिस तारीखको उसकी कन्या बिकी थी, ठीक उसी तारीखके हस्ताक्षर पत्र-द्वारा जार्जके पिताने इलाइज़ाको खरीदा था। इस प्रकार तिथिका ऐक्य होनेसे यह निश्चय ही अनुमान किया जा सकता है, कि मृत शेल्बी साहबने कासीकी कन्या इलाइज़ाको क्रय किया था।

अब कासी और मैडमडिथोमें विशेष घनिष्ठता स्थापित हो गयी। इन दोनोंने एकत्र होकर केनाडाकी ओर यात्रा आरम्भ की। सौभाग्य-कालमें जीवन मार्गमें सदैव ही अनुकूल घटनायें संघटित होती हैं। इन लोगोंके अमहर्ष्ट नगरमें पहुँचते ही इनसे एक पादरी साहबसे साक्षात् हुआ। जार्ज एवं इलाइज़ाने केनाडो पहुँचकर इन पादरी साहबके घरमें ही प्रथम रात्रि व्यतीत की थी; इसलिए ये उनको भली-भाँति जानते थे। इन नवागत रमणियोंका सम्पूर्ण विवरण सुनकर वे आश्चर्य चकित हो गये। उनके हृदयमें इन लोगोंके प्रति दया-भावका सञ्चार हुआ। अतएव वे भी इन लोगोंके साथ जार्जको खोजने मेन्ट्रिल नगर चले।

प्रायः पाँच वर्ष हुए जार्ज दासत्व-शृंखलासे मुक्त होकर अपने स्त्री-पुत्रोंके साथ मेन्ट्रिल नगरमें निर्विघ्न निवास कर रहा है। एक कल-बनानेवालेकी दूकानपर काम करके जो अर्थ प्राप्ति करता था उससे उसकी जीविका बड़े आनन्दसे चल

जाती थी। यहाँ आनेपर इलाइजाके एक और कन्या उत्पन्न हुई है। उसकी अवस्था प्रायः पाँच वर्षकी है। उसके पुत्र हेरी की अवस्था इस समय लगभग दस-ग्यारह वर्षकी है। वह इसी नगरकी एक पाठशालामें विद्याभ्यास कर रहा है।

इनका घर देखनेमें स्वच्छ है। सामने एक छोटी सी वाटिका है। जो अपने मालिककी विशेष सुरुचिका, पूर्ण परिचय-प्रदान कर रहा है। घरमें तीन-चार कमरे हैं। उन्हींमें से एकमें बैठकर जोर्ज पढ़ रहा है। जार्जकी बाल्यकालसे ही लिखने-पढ़नेकी बड़ी प्रबल इच्छा थी। नाना विघ्न-बाधाओं-के होते हुए भी उसने लिखना-पढ़ना सीखा है। इस समय अपने कामोंसे छुट्टी पाते ही वह पुस्तक लेकर पढ़ने बैठ जाता है।

संध्याका समय है। जार्ज अपने कमरेमें बैठा हुआ एक पुस्तक पढ़ रहा है। इलाइजा उसकी बगलवाली कोठ-रीमें चाय तैयार कर रही है। कुछ देर बाद इलाइजाने कहा—जार्ज! तुम दिन-भर कठिन परिश्रम करके आये हो, इस समय पुस्तक रखकर यहाँ आओ। मैं अकेली चाय बना रही हूं। यहाँ बैठकर कुछ बात-चीत करो। इतना परिश्रम करनेसे तुम्हारा स्वास्थ्य बिगड़ जायगा। इतनेमें उसकी कन्याने पिताकी गोदमें बैठकर उसके सामने रखी हुई पुस्तक हटाकर फेंक दी। यह देखकर इलाइजाने कहा—अच्छा हुआ, अब इधर आओ।

इसी समय हेरी भी स्कूलसे आ गया। जार्जने उसे देखकर पूछा—बेटा, वह हिसाब तो तुम्हीने किया है न?

हेरी—हाँ, मैंने स्वयं किया है, किसीकी सहायता नहीं ली।

जार्ज—यह बहुत अच्छा किया। बाल्यकालसे ही इस प्रकार आत्मावलम्बन करना सीखना चाहिए। दुर्भाग्यके कारण तुम्हारे पिताको यह अवसर नहीं मिला कि लिखना-

पढ़ना सीखे। किन्तु तुम्हें बहुत अच्छा योग है। प्राण-पणसे चेष्टा करके लिखना-पढ़ना सीख लो।

जार्ज जिस समय हेरीसे इस प्रकार बातें कर रहा था, उसी समय उनके द्वारके किवाड़ोंपर धड़ाधड़ धक्के पड़ने लगे। इलाइजाने द्वार खोलकर देखा कि वही एमहर्स्ट नगरके पादरीसाहब तीन स्त्रियोंको साथ लेकर आये हैं। पादरीसाहब इनलोगोंके एक परोपकारी मित्र हैं, निराश्रय अवस्थामें इन्होंने इनलोगोंको सहारा दिया था। इसलिए उनको देखते ही इलाइजा अत्यन्त उल्लसित होकर जार्जको पुकारने लगी। पादरीसाहबने अपने साथकी रमणियोंके संग घरमें प्रवेश किया। इलाइजाने सबको बैठाया।

एमहर्स्ट नगरसे यहाँ आनेके समय पादरीसाहबने मैडम-डियो तथा कासीको, जार्जके घरमें प्रवेश करते ही आत्म-परिचय-प्रदान करनेके लिए मना किया था। उन्होंने अपने मनमें सोचा था कि एक विस्तृत भूमिका बाँधकर बड़ी वक्तृ-ताकी प्रणाली द्वारा जार्ज और इलाइजासे इनका परिचय कराऊँगा। ज्ञात होता है, वह मार्गमें यही सोचते आये थे कि किस रीतिसे व्याख्यान देंगे तथा कैसे शब्दोंका प्रयोग करेंगे। इसलिए सबके बैठ जानेपर वे जेबसे रुमाल निका-लकर अपना मुहँ पोछते-पोछते खड़े हुए। किन्तु उनके वक्तृता आरम्भ करनेके पूर्व ही मैडमडियोने सारा प्रबन्ध ही एक दम नष्ट कर दिया। जार्जको देखते ही वे उसके गलेसे लिपटकर अश्रुपूर्ण नेत्रोंसे रोते-रोते कहने लगीं—जार्ज! तुम मुझे पहिचान नहीं सकते!—ओह जार्ज! तुमने मुझे नहीं पहिचाना!—मैं तुम्हारी बहिन एमिलि हूँ।

कासी अबतक धैर्य-धारण किये हुए चुप-चाप बैठी थी। जान पड़ता है, यदि मैडम डियो गड़बड़ न कर देतीं तो वह

पूर्व प्रवन्धानुसार चुप-चाप रहनेमें समर्थ हो जाती। इसी समय इलाइज़ाकी एक कन्या वहाँ आयी। इसकी आकृति ठीक उसकी माताकी ही भाँति थी। इसी अवस्थामें इलाइज़ा कासीकी गोदसे छीन ली गयी। इसे देखते ही कासी पागलकी भाँति उसे छातीसे लगाकर कहने लगी—बेटी! मैं तुम्हारी माता हूँ। बेटी तुम मेरा खोया हुआ धन हो! कासीने इसे अपनी बेटी ही समझ लिया था।

इनलोगोंके इस प्रकार आत्म-परिचय देनेसे इलाइज़ा और जार्ज दोनों ही विस्मित और चकित हो गये। उन्हें यह सब स्वप्नकीभाँति ज्ञात होने लगा। अन्तमें इनलोगोंके हर्ष-सम्भूत क्रन्दनके रुकनेपर पादरी साहबने पुनः खड़े होकर सम्पूर्ण वृत्तान्त कह सुनाया। ये सब बातें ज्योंही उनके मुँहसे निकलने लगीं त्योंही सब लोग आँसुओंकी अविरल धार बहाने लगे। वास्तवमें आज पादरीसाहबकी बात सुनकर उनके सम्मुखस्थ श्रोतागण जिसप्रकार द्रवित हो गये हैं, जान पड़ता है, क्या प्राचीनकालमें क्या वर्तमान समयमें, कभी कोई भी वक्ता अपने श्रोताओंके मनको इस प्रकार द्रवित नहीं कर पाया।

इसके पश्चात् सब लोग घुटनोंके बल बैठ गये और उन सहृदय पादरीसाहबने ईश्वरको धन्यवाद देते हुए, प्रार्थना की। वास्तवमें परमेश्वरके चरणोंमें कृतज्ञता-प्रकाश करनेके अतिरिक्त और किसी भी अन्य उपायसे इसप्रकार उच्छ्वासित हृदयावेग संवरन नहीं किया जा सकता। प्रार्थना समाप्त होनेपर सब लोग उठकर परस्पर एक दूसरेको आलिङ्गन करने लगे एवं सजल नेत्र हो सोचने लगे कि परमेश्वरकी महिमा कैसी अनन्त है। जार्ज और इलाइज़ाने तो ऐसे सम्मि-

लनकी आशा स्वप्नमें भी न की थी। किन्तु दयालु परमेश्वरने आज उन्हें यह अयाचित सुख प्रदान किया।

केनेडा—प्रदेशके धर्म प्रचारकी किसी एक स्मृति-पुस्तकमें, पलातक दास-दासियोंके इस प्रकारके आश्चर्यकारी सम्मिलनके दृष्टान्त बहुतसे हैं। इस पुस्तकके पढ़नसे पाया जाता है कि इस दासत्व-प्रथाके कारण मनुष्यके प्रकृत जीवन में, उपन्यासान्तर्गत-वर्णित काल्पनिक घटनाओंकी अपेक्षा अधिकतर आश्चर्य मयी घटनायें संघटित होती हैं। छः वर्षकी अवस्थाकी सन्तान माताकी गोदसे छीन ली गयी है, फिर तीस वर्षकी अवस्थामें केनेडामें माता और संतानकी भेंट हुई है, परन्तु उनमेंसे कोई किसीको नहीं पहिचान सका। अनेकानेक पलातक क्रीत-दासोंकी जीवनीमें वीरत्व और त्याग-स्वीकारके दृष्टान्त भी पाये जाते हैं। अपनी माता और बहिनोंका दासत्वके अत्याचारोंसे उद्धार करनेमें ये लोग अपने प्राणहोम देनेमें किञ्चित्मात्र भी कुण्ठित नहीं हुए। एक युवक पहिले अकेले यहाँ भाग आया था, फिर अपनी बहिनका उद्धार करने जाकर क्रमशः तीनवार पकड़ा गया। कितनी ही यन्त्रायें, कितने ही कष्ट सहे। एक-एक बारके वेत्राघातसे ५-७ मास तक विस्तर-सेवन किया, किन्तु किसी प्रकार भी वह भग्नोद्यम न हुआ। अन्तमें चौथे बारके प्रयासमें उसने अपनी बहिन का उद्धार किया ही।

पाठको! यह युवक क्या प्रकृत चोर नहीं है? किन्तु पक्षाचारी अमेरिका निवासी अँग्रेज इसे चोरके नामसे सम्बोधित करते हैं! न्यायतः विचार करनेपर ये अर्थ-लोलुप श्वेताङ्ग ही सच्चे चोर ठहरते हैं। इस अत्याचार निपीड़ित वीर युवकने वास्तवमें वीरता प्रकट की है।

कासी, मैडमडिथो एवं एमलिन, जार्ज और इलाइजाके साथ एकत्र होकर, निवास करने लगीं। कासी कुछ दिनतक कुछ विक्षिप्तसी रही। वह कभी-कभी आत्म-विस्मृतिके कारण इलाइजाकी पुत्रीको इतने वेगसे अपनी छातीसे लगा लेती कि उसे देखकर सबको आश्चर्य होता। पर दिन-पर-दिन उसकी यह दशा दूर होती गयी। इलाइजा अपनी माताकी यह अवस्था देखकर सदा उसके पास बैठकर बाइबिल पढ़ती, परमेश्वरकी करुणाकी कथा सुनाती। कुछ दिनोंके बाद कासीका मन धर्मकी ओर आकृष्ट हुआ। उसके हृदयमें भक्ति तथा प्रेमका श्रोत प्रवाहित होने लगा एवं शीघ्र ही उसने पवित्र जीवन-लाभ किया।

कुछ दिनोंके पश्चात् मेडमडिथोने जार्जसे कहा-भैया ! मेरे स्वामीकी मृत्यु हो जानेपर उनकी उस अतुल सम्पत्तिकी अधिकारिणीमैं ही हुई हूं। इस सम्पत्तिसे तुम्हारी जो इच्छा हो करो। मैं तुम्हारे साथ एकत्र रहकर ही उसका सम्भोग करनेकी इच्छा करती हूं। जार्जने यह सुनकर कहा-एमिली! मेरी बड़ी इच्छा होती है कि मैं भली-भाँति अध्ययन करूँ। तुम मेरी शिक्षाका कोई प्रबन्ध कर दो। इस प्रकार इतनी अधिक अवस्था हो जानेपर अब जार्जकी शिक्षाका क्या प्रबंध किया जाय, यही सब लोग विचारने लगे। अन्तमें सबने एकमत होकर विचार-स्थिर किया कि हम सब लोग फ्रान्स-में जाकर रहें और वहीं जार्ज किसी विश्व-विद्यालयमें नाम लिखाकर विद्याभ्यास करे।

इस प्रकार स्थिर करके सब लोग एमलिनको साथ लेकर जहाजमें चढ़ फ्रान्सकी यात्रा की। जहाजका कप्तान बड़ा सच्चरित्र पुरुष था। उसने, एमलिनका सदाचरण, रूप-लावण्य

दुःख-कष्ट सहन किये हैं, यह स्मरण होनेपर, तथा मेरी स्त्रीने पुत्रको छातीसे लगाकर जो नदी पार की, और जिस वीरताके साथ उसने सम्पूर्ण यन्त्रणाओंका सामना किया, उसके स्मरण होनेपर, मेरा हृदय उद्वेलित हो उठता है। किन्तु जिन लोगोंने हमारे प्रति ऐसे अत्याचार किये हैं, उनके प्रति मैं विशेष नहीं करता, वरन ईश्वरके निकट उनकी मङ्गल कामना करता हूँ।

"मेरी माता अफ्रिका-वासिनी थीं। इसलिए अफ्रिका ही मेरी मातृ-भूमि है। उन पराधीन, अत्याचार-निपीड़ित अफ्रिका-वासियोंको समुन्नत करनेमें ही अपने इस जीवनका उत्सर्ग करूँगा। देश-हित व्रतावलम्बन करके बलवानोंके अत्याचारसे दुर्बलोंकी रक्षा करनेकी चेष्टा प्राण-पनसे करूँगा।

"तुमने मुझे धर्म-प्रचारकका कार्य करनेको लिखा है। मैं यह भली-भाँति समझता हूँ कि बिना धार्मिक-जीवनके मनुष्य आत्मोन्नति नहीं कर सकता। किन्तु क्या ये ज्ञानहीन, अशिक्षित लोग सहज ही धर्म-पथपर चलाये जा सकते हैं? विशेषतः अत्याचार-निपीड़ित जाति कभी प्रकृत-धर्मका मर्म ग्रहण नहीं कर सकती। उनकी अन्तरात्मा जड़वत् हो गयी है।

"अत्याचार-निपीड़ित पराधीन जातिको समुन्नत करनेके लिए, सबसे पहिले देश-प्रचलित शासन-प्रणालीका संशोधन करना होगा। पराधीनताकी श्रृंखलासे इन्हें मुक्त करना होगा। अफ्रिका-वासीगण जिससे जातीय-जीवन प्राप्त कर-सकें, स्वतन्त्र-जातिके कहलाकर सभ्य-समाजमें परिगणित हो सकें, उसीके लिए मैं प्राण-पनसे चेष्टा करूँगा। वर्तमान समयमें अफ्रिकाके लाइबिरिया-उपकूलमें साधारण-तंत्र स्थापित हुआ है। मैंने वहीं जानेका संकल्प किया है।

"तुम मनमें सोचते होगे कि मैं घोर अत्याचार संत्रस

अमेरिकाके इन क्रीत-दासोंको भूल गया हूँ ? कदापि नहीं। मैं यदि इस जीवनमें एक पलभरको भी इन्हें भूल जाऊँ, तो समझ लेना कि परमेश्वर भी मुझे भूल गये। किन्तु यहाँ रहकर मैं उनका कुछ भी हित-साधन न कर सकूँगा। क्या मैं इन लोगोंकी कठिन दासत्वकी बेड़ियाँ काट दे सकूँगा ? मैं अकेले कदापि कुछ भी नहीं कर सकता। पर यदि मैं इस प्रकारकी एक जातिके अन्तर्भूत हो जाऊँगा, जिसके वाक्योंपर अन्यान्य जातिकी प्रतिनिधि-सभा कर्णपात करे, तब हम लोगोंको जो कुछ कहना है वह दूसरोंको सुना सकेंगे, और तभी कुछ लाभ होगा। एक महान् जातिके कल्याणके लिए किसी एक व्यक्ति-विशेषको वादानुवाद, अनुयोग या अनुरोध करनेका कोई अधिकार नहीं है, उस सम्पूर्ण जातिको ही यह अधिकार प्राप्त हो सकता है।

"यदि किसी समयमें समग्र यूरप स्वाधीन जाति-समूहकी एक महासमितिके रूपमें परिणत हो जाय, यदि अधीनता, अन्याय एवं सामाजिक-वैषम्य-जनित उत्पीड़न सारे यूरोपसे दूर हो जाय, एवं यदि समस्त यूरप, इंग्लैंड तथा फ्रान्सकी भाँति हमलोगोंको भी स्वतंत्र जाति मानले, तो उस समय हमलोग, उस विभिन्न जाति-समूहकी, महा प्रतिनिधि-सभाके, सम्मुख अपना आवेदन उपस्थित करेंगे। बलपूर्वक दासत्वमें लगाये हुए, यथेच्छोत्पीड़ित, दुर्दशा-ग्रस्त अपने स्वजातीय भाइयोंके लिए न्यायकी प्रार्थना करेंगे। उसी समय स्वाधीन, सुसभ्य अमेरिका भी अपने वक्षसे इस सर्व-जन-घृणित घोर कलङ्क-स्वरूप दासत्व-प्रथाको दूरकर देनेका इच्छुक हो जायगा।

"तुम कहोगे कि आइरिश, जर्मन, और सुइड् जातियोंकी भाँति हमलोगोंको भी अमेरिका साम्राज्यान्तर्गत साधारण-तंत्र-युक्त होनेका अधिकार है। मैं भी स्वीकार करता हूँ

कि है। समकक्षकी भाँति हमलोगोंको भी सबके साथ मिलने-जुलने देना उचित है; जाति-वर्णका विचार न कर हमारी योग्यताके अनुसार समाजमें उन्नत स्थान प्राप्त करने देना सर्वथा कर्त्तव्य है। विशेषतः इस देशमें हमलोग, केवल इस देशके जन-साधारण-प्राप्त अधिकारोंके ही दावी नहीं हैं वरन अमेरिका-द्वारा क्षतिग्रस्त जातिकी क्षति-पूर्ति करानेके हम विशेष दावी हैं। किन्तु ये अधिकार-प्राप्त होनेपर भी हम किसी प्रकारका दावा नहीं करना चाहते। हम चाहते हैं, केवल एक स्वदेश, केवल एक स्वजाति। अफ्रिकावासियोंकी प्रकृति अँगरेजोंकी प्रकृतिसे विभिन्न होनेपर भी इन विशेष गुणों-के सहारे सभ्यता और ज्ञानके साथ-ही-साथ उन्हें नीति और धर्ममें उच्चत्तम शक्तिसे सम्पन्न कर दूँगा।

मैं और भी एक नवीनयुगके अभ्युत्थानकी प्रत्याशा करता हूँ। मेरा विश्वास है कि मैं उस नव-युगकी पूर्व दिशामें खड़ा हूँ। वर्तमान समयमें भिन्न-भिन्न जातियाँ जिस भयानक वेदनासे कातर हो रही हैं, उसी वेदनासे, मुझे आशा है, सार्वभौमिक प्रेम और शान्तिका जन्म होगा।

मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि अफ्रीका धर्म-बलसे ही उन्नतिके सोपानपर चढ़ेगा। अफ्रीका-वासी क्षमतावान तथा शक्ति-सम्पन्न चाहे न हों, किन्तु वे महानुभाव, हृदय-वान एवं क्षमाशील हैं। अत्याचारकी प्रचण्डअग्निमें जिन्हें जलना पड़ता है, वे यदि स्वर्गीयप्रेम और क्षमा गुणसे अपना हृदय पूर्ण न करेंगे तो उनके हृदयाग्निको ठंडी करनेका और कोई उपाय ही नहीं। इसी प्रेम और क्षमा गुणसे वे जय-लाभ करेंगे। अफ्रीका महाप्रदेशमें प्रेम और क्षमारूपी महान धर्मका प्रचार करना ही मेरे जीवनका व्रत होगा।

इस विषयमें मुझमें स्वयं कुछ दुर्बलता है, क्योंकि मेरी

धमनीमें आधेसे अधिक अंग्रेजका रक्त है। किन्तु मेरे पार्श्वमें सदैव एक मधुरभाषिणी धर्म-शिक्षयित्री रहती हैं। यह हैं मेरी लावण्यवती सहधर्मिणी। मुझे मार्ग-भ्रम हो जानेपर, ये ही धीरे-धीरे पुनः मुझे कर्त्तव्य-पथ प्रदर्शन करती हैं। हमारी जातिका उद्देश्य, हमारे जीवनका उद्देश्य सदैव नेत्रोंके सम्मुख रखे रहती हैं। देव-हितैषीके रूपमें, धर्म-शिक्षकके रूपमें, मैं स्वदेश, अपने प्रिय-प्राण अफ्रीकाको गमन करता हूँ।

"सम्भवतः तुम मुझे कल्पना-विलासी कहोगे। तुम कहोगे कि मैं जिस कार्यमें हाथ डाल रहा हूँ, उसके विषयमें भली भाँति सोच-विचार नहीं किया। किन्तु मैंने सब अच्छी तरह समझ लिया है, उसकी लाभ-हानिका विचार कर लिया है। मैं काव्यवर्णित स्वर्गधाममें जानेका विचार करके लाइबेरिया नहीं जा रहा हूँ, मैं कार्यक्षेत्रमें दृढ़ता-पूर्वक कार्य करनेके विचारसे ही जा रहा हूँ। बड़ी दृढ़तासे जमकर कार्य करनेका संकल्प किया है। मुझे आशा है, मैं स्वदेशके लिए अकेले ही लड़ूंगा, किन्तु बाधा-विघ्नोंके होते हुए भी मैं अविराम कार्य करूँगा। जब तक शरीरमें प्राण हैं, और उन प्राणोंमें कुछ भी शक्ति है तबतक मैं स्वदेश-हित-साधनमें डटा ही रहूंगा।

"मैं आशा करके जा रहा हूँ। मुझे ध्रुव निश्चय है कि इस विषयमें मुझे निराश न होना पड़ेगा।

"मेरे संकल्पके सम्बन्धमें तुम चाहे जो सोचो, मुझपर अविश्वास न करना। यह स्मरण रखना कि मैं चाहे जो कुछ भी करूं, मनमें देशकी मङ्गल-कामनाको लेकर ही कार्यमें प्रवृत्त हूंगा।

तुम्हारा—
जार्ज हेरिस

इसके कई सप्ताहके पश्चात् जार्ज अपनी स्त्री, पुत्र तथा पुत्री, भगिनी और सासको लेकर अफ्रीकाकी यात्रा की।

मिस अफिलिया और टप्सीको छोड़कर ग्रंथोल्लिखित और किसीके सम्बन्धमें अब कुछ कहना नहीं रहा।

मिस अफिलिया टप्सीको वारमेण्ट प्रदेश ले गयीं। पहिले तो मिस अफिलियाके पिताके घरके सब लोग उसे देखकर कुछ विस्मित और विरक्त हुए, किन्तु मिस अफिलिया किसी प्रकार भी अपने कर्त्तव्यसे विचलित न हुईं। क्योंकि यह उनका स्वभाव था। उनके अशेष स्नेह और यत्नसे इस दास बालिकाने अल्प कालमें ही सेन्टक्लेयर-परिवार तथा उनके पड़ोसियोंके स्नेहको आकर्षित किया। वयःप्राप्त होनेपर टप्सी स्वेच्छासे क्रिस्तान-धर्मसे दीक्षित हो गयी। इसकी तीक्ष्ण बुद्धि कर्म्मनिष्ठता, तथा उसका धर्मोत्साह देखकर कोई-कोई मित्र इसे अफ्रीकामें जाकर धर्म-प्रचार करनेकी सलाह देने लगे। तदनुसार टप्सीने अफ्रीका जाकर प्रचारव्रत धारण किया।

पाठक तथा पाठिकाएं सुनकर सुखी होंगी, कि मैंडमडिथोके प्रयत्नसे कासीके पुत्रका भी पता मिल गया। यह वीर युवक माताके भागनेके पूर्व ही केनाडा भाग आया था। यहाँ उसके दासत्व-प्रथा-विरोधी, अनाथ-सहायक कई सहृदय महात्माओंकी सहायतासे उत्तम शिक्षा प्राप्त की है। जब उसने यह जान पाया कि उसकी माता और वहिन अफ्रिका जा रही है। तब वह भी उन्हींका मार्ग अनुसरण कर वहीं चला आया।

दास-जनोंके शोक-कष्टका करुण कलाप।
सहृदय वाचक-वृन्दोंका बढ़ा महा संताप।
उनके उरको ग्लानि-रोषसे करके व्यापूर्ण।
आत्मोन्नतिका मार्ग दिखाकर हुआ समाप्त।

पृष्ठ सं० ५८३+९=५९२